वखत अवकाश लेवानुं बने तेटलो लक्ष राखवो योग्य छे. कृष्णदासे चित्तमांथी विक्षेपनी निवृत्ति करवायोग्य छे.

४५४. मुंबई. कार्तिक शुद ९ बुध. १९५१.

छूटा मनथी खुलासो अपाय एवी तमारी इच्छा रहे छे, ते इच्छा होवाने लीधे ज छूटा मनथी खुलासो आपवानुं बन्युं नथी, अने हवे पण ते इच्छा निरोध्या शिवाय तमने बीजुं विशेष कर्त्तव्य नथी. अमे छूटा चित्तथी खुलासो आपशुं एम गणीने इच्छा निरोधवी घटे नहीं, पण सत्पुरुषनां संगनुं महात्म्य जाळववा ते इच्छा शमाववी घटे छे, एम विचारीने शमाववी घटे छे. सत्संगनी इच्छाथी ज जो संसार प्रतिबंध टळवाने स्थिति सुधारणानी इच्छा रहेती होय तोपण हाल जती करवीयोग्य छे, केमके अमने एम लागे छे के वारंवार तमे लखो छो, ते कुटुंब-मोह छे, संक्लेश परिणाम छे, अने अशाता नहीं सहन करवानी कंईपण अंशे बुद्धि छे. अने जे पुरुषने ते वात भक्तजने लखी होय तो तेथी तेनो रस्तो करवाने बदले एम थाय छे के आवी निदान बुद्धि ज्यांसुधी रहे त्यांसुधी सम्यक्त्वनो रोध रहे खरो. एम विचारी खेद थई आवे छे. तेने लखवुं ते तमने योग्य नथी.

४५५. मुंबई कार्तिक शुद १४ सोम. १९५१.

(१)

सर्व जीव आत्मापणे समस्वभावी छे. बीजा पदार्थमां जीव जो निजबुद्धि करे तो परिभ्रमण दशा पामे छे; अने निजने विषे निजबुद्धि थाय तो परिभ्रमण दशा टळे छे. जेनां चित्तमां एवो मार्ग विचारवो अवश्यनो छे, तेणे ते ज्ञान जेना आत्मामां प्रकाश पाम्युं छे, तेनी दासनुदासपणे अनन्य भक्ति करवी ए परम श्रेय छे.

अने ते दासानुदास भक्तिमाननी भक्ति प्राप्त थये जेमां कंई विषमता आवती नथी, ते ज्ञानीने धन्य छे. तेटली सर्वांश दशा ज्यांसुधी प्रगटी नहोय त्यांसुधी आत्माने कोई गुरुपणे आराधे त्यां प्रथम ते गुरुपणुं छोडी ते शिष्य विषे पोतानुं दासानुदासपणुं करवुं घटे छे.

(२)

हे जीव! स्थिर दृष्टिथी करीने तुं अंतरंगमां जो, तो सर्व परद्रव्यथी मुक्त एवुं तारूं स्वरूप तने परम प्रसिद्ध अनुभवाशे.

हे जीव! असम्यग्दर्शनने लीधे ते स्वरूप तने भासतुं नथी. ते स्वरूपमां तने शंका छे, व्यामोह अने भय छे.

सम्यग्दर्शननो योग प्राप्त करवाथी ते अभासतादिनी निवृत्ति थशे.

हे सम्यग्दर्शनी! सम्यक्चारित्र ज सम्यग्दर्शननुं फळ घटे छे, माटे तेमां अप्रमत्त था.

जे प्रमत्तभाव उत्पन्न करे छे ते कर्मबंधनी तने सुप्रतीतिनो हेतु छे.

हे सम्यक्चारित्री! हवे शिथिळपणुं घटतुं नथी. घणो अंतराय हतो ते निवृत्त थयो; तो हवे निरंतराय पदमां शिथिळता शा माटे करे छे?

वर्ष २८ मुं.

परमपद प्राप्तिनी भावना.

(अंतर्गत)

गुणश्रेणीस्वरूप.

४५६. मुंबई. कार्त्तिक. १९५१.

ॐ.

१. अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे?
क्यारे थइशुं बाह्यांतर निर्ग्रंथ जो?
सर्व संबंधनुं बंधन तिक्ष्ण छेदीने,
विचरशुं कव महत्पुरुषने पंथ जो? अपूर्व०

२. सर्व भावथी औदासीन्यवृत्ति करी,
मात्र देह ते संयमहेतु होय जो;
अन्य कारणे अन्य कशुं कल्पे नहीं,
देहे पण किंचित् मूर्छा नव जोय जो. अपूर्व०

३. दर्शनमोह व्यतीत थई उपज्यो बोध जे,
देह भिन्न केवल चैतन्यनुं ज्ञान जो;
तेथी प्रक्षीण चारितमोह विलोकियें,
वर्त्ते एवुं शुद्धस्वरूपनुं ध्यान जो. अपूर्व०

४. आत्मस्थिरता त्रण संक्षिप्त योगनी,
मुख्यपणे तो वर्त्ते देहपर्यंत जो;
घोर परिषह के उपसर्गभये करी,
आवी शके नहीं ते स्थिरतानो अंत जो. अपूर्व०

५. संयमना हेतुथी योगप्रवर्त्तना,
स्वरूपलक्षे जिनआज्ञा आधीन जो,
ते पण क्षण क्षण घटती जाती स्थितिमां,
अंते थाये निजस्वरूपमां लीन जो. अपूर्व०

श्रीमद् राजचंद्र

वर्ष ३३ मुं. वि. सं. १९५६.

Lakshmi Art, Bombay 8

६. पंच विषयमां रागद्वेष विरहितता,
पंच प्रमादे न मळे मननो क्षोभ जो.
द्रव्य, क्षेत्र ने काळ, भाव प्रतिबंधवण,
विचरवुं उदयाधीन पण वीतलोभ जो. अपूर्व०

७. क्रोधप्रत्ये तो वर्त्ते क्रोधस्वभावता,
मानप्रत्ये तो दीनपणानुं मान जो;
मायाप्रत्ये माया साक्षी भावनी,
लोभप्रत्ये नहीं लोभ समान जो. अपूर्व०

८. बहु उपसर्गकर्त्ताप्रत्ये पण क्रोध नहीं,
वंदे चक्रि तथापि न मळे मान जो;
देह जाय पण माया थाय न रोममां,
लोभ नहीं छो प्रबळ सिद्धि निदान जो. अपूर्व०

९. नग्नभाव, मुंडभाव सह अस्नानता,
अदंतधोवन आदि परम प्रसिद्ध जो.
केश, रोम, नख के अंगे शृंगार नहीं,
द्रव्यभाव संयममय निर्ग्रंथ सिद्ध जो. अपूर्व०

१०. शत्रु मित्रप्रत्ये वर्त्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्त्ते ते ज स्वभाव जो,
जीवित के मरणे नहीं न्यूनाधिकता,
भव मोक्षे पण शुद्ध वर्त्ते समभाव जो. अपूर्व०

११. एकाकी विचरतो वळी स्मशानमां,
वळी पर्वतमां वाघ सिंह संयोग जो;
अडोल आसन, ने मनमां नहीं क्षोभता,
परममित्रनो जाणे पाम्या योग जो. अपूर्व०

१२. घोर तपश्चर्यामां पण मनने ताप नहीं,
सरस अन्ने नहीं मनने प्रसन्नभाव जो;
रजकण के रिद्धि वैमानिकदेवनी,
सर्वे मान्या पुद्गल एक स्वभाव जो. अपूर्व०

१३. एम पराजय करीने चारितमोहनो,
आवुं त्यां ज्यां करण अपूर्व भाव जो;
श्रेणी क्षपकतणी करीने आरूढता,
अनन्य चिंतन अतिशय शुद्ध स्वभाव जो. अपूर्व०

१४. मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्यां ज्यां क्षीणमोह गुणस्थान जो;
अंत समय त्यां पूर्णस्वरूप वीतराग थइ,
प्रगटावुं निज केवळज्ञान निधान जो. अपूर्व०

१५. चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां,
भवनां बीजतणो आत्यंतिक नाश जो;
सर्वभाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो. अपूर्व०

१६. वेदनीयादि चार कर्म वर्ते जहां,
बळी सींदरीवत् आकृति मात्र जो;
ते देहायुष् आधीन जेनी स्थिति छे,
आयुष् पूर्णे, मटियें दैहिकपात्र जो. अपूर्व०

१७. मन, वचन, काया ने कर्मनी वर्गणा,
छूटे जहां सकळ पुद्गल संबंध जो;
एवुं अयोगि गुणस्थानक त्यां वर्त्ततुं,
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अबंध जो. अपूर्व०

१८. एक परमाणु मात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्णकलंकरहित अडोलस्वरूप जो;
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्त्ति अनन्यमय,
अगुरु, लघु, अमूर्त्त सहजपदरूप जो. अपूर्व०

१९. पूर्व प्रयोगादि कारणना योगथी,
ऊर्ध्वगमन सिद्धालय प्राप्त सुस्थित जो;
सादि अनंत अनंत समाधिसुखमां,
अनंत दर्शन, ज्ञान अनंत सहित जो. अपूर्व०

२०. जे पद श्री सर्वज्ञे दीठुं ज्ञानमां,
कही शक्या नहीं पण ते श्री भगवान जो;
तेह स्वरूपने अन्य वाणी ते शुं कहे?
अनुभवगोचर मात्र रह्युं ते ज्ञान जो. अपूर्व०

२१. एह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजावगरने हाल मनोरथरूप जो;
तोपण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभुआज्ञाए थाशुं ते ज स्वरूप जो. अपूर्व०

४५७.

केवळ समवस्थित शुद्ध चेतन मोक्ष.
ते स्वभावनुं अनुसंधान ते मोक्षमार्ग.

प्रतीतिरूपे ते मार्ग ज्यां शरू थाय छे त्यां सम्यग्‌दर्शन.
देश आचरणरूपे ते पंचम गुणस्थानक.
सर्व आचरणरूपे ते छट्ठुं गुणस्थानक.
अप्रमत्तपणे ते आचरणमां स्थिति ते सप्तम.
अपूर्व आत्म जागृति ते अष्टम.

सत्तागत	स्थूळ	कषायबळपूर्वक	स्वस्वरूप	स्थिति ते	नवम.
,,	सूक्ष्म	,,	,,		दशम.
,,	उपशांत	,,	,,		एकादश.
,,	क्षीण	,,	,,		द्वादश.

४५८.

ज्ञानी पुरुषोने समये समये अनंता संयम परिणाम वर्धमान थाय छे, एम सर्वज्ञे कह्युं छे ते सत्य छे.

ते संयम, विचारनी तीक्ष्ण परिणतिथी तथा ब्रह्मरसप्रत्ये स्थिरपणाथी उत्पन्न थाय छे.

४५९.

अकिंचिनपणाथी विचरतां एकांत मौनथी जिन सदृश्य ध्यानथी तन्मयात्मस्वरूप एवो क्यारे थईश?

४६०.

एकवार विक्षेप शम्या विना बहु समीप आवी शकवा योग्य अपूर्व संयम प्रगटशे नहीं. केम, क्यां, स्थिति करीए?

४६१. मुंबई. कार्तिक सुद १५ सोम. १९५१.

श्री ठाणांग सूत्रनी एक चोभंगीनो उत्तर संक्षेपमां अत्रे लख्यो छे.

(१) एक, आत्मानो भवांत करे, पण परनो न करे. ते प्रत्येकबुद्ध के अशोच्चा केवली. केमके तेओ उपदेश मार्ग प्रवर्त्तावता नथी, एवो व्यवहार छे,

(२) एक, आत्मानो भवांत न करी शके, अने परनो भवांत करे ते अचरिम शरीर आचार्य, एटले जेने हजु अमुक भव बाकी छे, पण उपदेश मार्गना आत्माए करी जाण छे, तेथी तेनाथी उपदेश सांभळी सांभळनार जीव ते भवे भवनो अंत पण करी शके; अने आचार्य ते भवे भवांत करनार नहीं होवाथी तेमने बीजा भंगमां मवेष्या छे. अथवा कोई जीव पूर्व काळे ज्ञानाराधन करी प्रारब्धोदये मंद क्षयोपशमथी वर्त्तमानमां मनुष्यदेह पामी जेणे मार्ग नथी

जाण्यो एवा कोई उपदेशक पासेथी उपदेश सांभळतां पूर्व संस्कारथी, पूर्वनां आराधनथी एवो विचार पामे, के आ प्ररूपणा जरूर मोक्षनो हेतु न होय, केमके अंधपणे ते मार्ग कहे छे; अथवा आ उपदेश देनारो जीव पोते अपरिणामी रही उपदेश करे छे ते महा अनर्थ छे एम विमासतां पूर्वाराधन जागृत थाय अने उदय छेदी भवांत करे, तेथी निमित्तरूप ग्रहण करी तेवा उपदेशकनो पण आ भंगने विषे समास कर्यो होय एम लागे छे.

(३) पोते तरे अने बीजाने तारे. ते श्री तीर्थंकरादि.

(४) चोथो भंग. पोते तरे पण नहीं अने बीजाने तारी पण न शके ते अभव्य के दुर्भव्य जीव. ए प्रकारे समाधान कर्युं होय तो जिनागम विरोध नहीं पामे.

४६२. मुंबई. कार्त्तिक. १९५१.

अन्यसंबंधी जे तादात्म्यपणुं छे, ते तादात्म्यपणुं निवृत्त थाय तो सहज स्वभावे आत्मा मुक्त ज छे. एम श्री ऋषभादि अनंत ज्ञानीपुरुषो कही गया छे, यावत् तथारूपमां शमाया छे.

४६३. मुंबई. कार्त्तिक वद १३ रवि. १९५१.

ज्यारे प्रारब्धोदय द्रव्यादि कारणोमां निर्बळ होय त्यारे विचारवान जीवे विशेष प्रवृत्ति करवी न घटे, अथवा आजुबाजुनी घणी संभाळथी करवी घटे; एक लाभनो ज प्रकार देख्या करी करवी न घटे.

मुंझावाथी कंई कर्मनी निवृत्ति इच्छीए छीए ते थती नथी, अने आर्त्तध्यान थई ज्ञानीना मार्गपर पग मुकाय छे.

४६४. मुंबई. मागशर सुद ३ शुक्र. १९५१.

प्र०–जेनुं मध्य नहीं, अर्ध नहीं, अछेद्य, अभेद्य ए आदि परमाणुनी व्याख्या श्री जिने कही छे, त्यारे तेने अनंत पर्याय शी रीते घटे? अथवा पर्याय ते एक परमाणुनुं बीजुं नाम हशे के शी रीते? ए प्रश्ननुं पत्र पहोंच्युं हतुं. तेनुं समाधान.

उ०–प्रत्येक पदार्थने अनंत पर्याय (अवस्था) छे. अनंत पर्याय विनानो कोई पदार्थ होई शके नहीं एवो श्री जिननो अभिमत छे, अने ते यथार्थ लागे छे. केमके प्रत्येक पदार्थ समये समये अवस्थांतरता पामता प्रत्यक्ष देखाय छे. क्षणे क्षणे जेम आत्माने विषे संकल्प विकल्प परिणति थई अवस्थांतर थया करे छे, तेम परमाणुने विषे वर्ण, गंध, रस, रूप अवस्थांतरपणुं भजे छे, तेवुं अवस्थांतरपणुं भजवाथी ते परमाणुना अनंत भाग थया कहेवा योग्य नथी; केमके ते परमाणु पोतानुं एकप्रदेशक्षेत्रअवगाहीपणुं त्याग्या शिवाय ते अवस्थांतर पामे छे. एकप्रदेशक्षेत्रअवगाहीपणानां ते अनंत भाग थई शक्या नथी. एक समुद्र छतां तेमां जेम तरंग उठे छे, अने ते तरंग तेमांज शमाय छे. तरंगपणे ते समुद्रनी अवस्था जुदी थया करतां छतां पण समुद्र पोताना अवगाहक क्षेत्रने त्यागतो नथी, तेम कंई समुद्रना अनंत जुदा जुदा कटका थता नथी, मात्र पोताना स्वरूपमां ते

रमे छे, तरंगपणुं ए समुद्रनी परिणति छे. जो जळ शांत होय तो शांतपणुं ए तेनी परिणति छे, कंई पण परिणति तेमां थवी ज जोईए. तेम वर्ण, गंधादि परिणाम परमाणुमां बदलाय छे, पण ते परमाणुना कंई कटका थवानो प्रसंग थतो नथी; अवस्थांतरपणुं पाम्या करे छे. जेम सोनुं कुंडळपणुं त्यागी मुकटपणुं पामे तेम परमाणु आ समयनी अवस्थाथी बीजा समयनी अवस्था कंईक अंतरवाळी पामे छे. जेम सोनुं बे पर्यायने भजतां सोनापणामां ज छे, तेम परमाणु पण परमाणु ज रहे छे. एक पुरुष (जीव) बाळकपणुं त्यागी युवान थाय, युवानपणुं त्यागी वृद्ध थाय, पण पुरुष तेनो तेज रहे; तेम परमाणु पर्यायने भजे छे.

आकाश पण अनंत पर्यायि छे अने सिद्ध पण अनंत पर्यायि छे एवो जिननो अभिप्राय छे, ते विरोधी लागतो नथी. मने घणुं करी समजाय छे, पण विशेषपणे लखवानुं थई शक्युं नहीं होवाथी तमने ते वात विचारमां कारण थाय एम उपर उपरथी लख्युं छे.

चक्षुने विषे मेषोन्मेष अवस्था छे ते पर्याय छे. दीपकनी चलन स्थिति ते पर्याय छे. आत्मानी संकल्प विकल्प दशा के ज्ञान परिणति ते पर्याय छे, तेम वर्ण गंध पलटनपणुं पामे ते परमाणुना पर्याय छे. जो तेवुं पलटनपणुं थतुं नहोय तो आ जगत् आवां विचित्रपणाने पामी शके नहीं. केमके एक परमाणुमां पर्यायपणुं नहोय तो सर्व परमाणुमां पण नहोय. संयोग, वियोग, एकत्व, पृथकत्व ए आदि परमाणुना पर्याय छे अने ते सर्व परमाणुमां छे. ते भाव समये समये तेमां पलटनपणुं पामे तोय परमाणुनो व्यय (नाश) थाय नहीं, जेम मेषोन्मेषथी चक्षुनो थतो नथी तेम.

४६५. मोहमयि. (मुंबई) मागशर वद ८ बुध. १९५१.

अत्रेथी निवृत्तवा पछी घणुंकरी ववाणीआ एटले आ भवना जन्म गाममां साधारण व्यवहारिक प्रसंगे जवानुं कारण छे. चित्तमां घणा प्रकारे ते प्रसंगथी छूटी शकवानुं विचारतां छूटी शकाय तेम पण बने, तथापि केटलाक जीवोने अल्प कारणमां विशेष असमाधान वखते थवानो संभव रहे; जेथी अप्रतिबंध भावने विशेष दृढ करी जवानो विचार रहे छे. त्यां गये वखते एक मासथी विशेष वखत जवानो संभव छे. वखते बे मास पण थाय. त्यार पछी पाछुं त्यांथी वळी आ क्षेत्र तरफ आववानुं करवुं पडे तेम छे, छतां बनेत्यांसुधी वच्चे बेएक महिना एकांत जेवो निवृत्ति जोग बने तो तेम करवानी इच्छा छे. अने ते जोग अप्रतिबंधपणे थई शके ते माटे विचारूं छुं.

सर्व व्यवहारथी निवृत्तथाविना चित्त ठेकाणे बेसे नहीं एवो अप्रतिबंध असंगभाव चित्ते बहु विचार्यो होवाथी तेज प्रवाहमां रहेवुं थाय छे. पण उपार्जित प्रारब्ध निवृत्त थये तेम बनी शके एटलो प्रतिबंध पूर्वकृत छे. आत्मानी इच्छानो प्रतिबंध नथी.

सर्वसामान्य लोकव्यवहारनी निवृत्ति संबंधी प्रसंगनो विचार बीजे प्रसंगे जणाववो राखी आ क्षेत्रेथी निवृत्तवा विषे विशेष अभिप्राय रहे छे. ते पण उदय आगळ बनतुं नथी. तोपण अहोनिश एज चिंतन रहे छे, तो ते वखते थोडा काळमां बनशे एम रहे छे. आ क्षेत्रमत्ये कंई द्वेष

परिणाम नथी, तथापि संगनुं विशेष कारण छे. प्रवृत्तिना प्रयोजन विना अत्रे रहेवुं कंई आत्माने तेवा लाभनुं कारण नथी एम जाणी, आ क्षेत्रथी निवृत्तवानो विचार रहे छे.

प्रवृत्ति पण निज बुद्धिथी प्रयोजनभूत कोईपण प्रकारे लागती नथी, तथापि उदय प्रमाणे वर्तवानो ज्ञानीनो उपदेश अंगीकार करी उदय वेदवा प्रवृत्ति जोग वेठीए छीए.

ज्ञाने करीने आत्मामां उत्पन्न थयेलो एवो निश्चय बदलतो नथी, के सर्व संग मोटा आस्रव छे; चालतां, जोतां, प्रसंग करतां, समय मात्रमां निजभावने विस्मरण करावे छे; अने ते वात प्रत्यक्ष जोवामां आवी छे, आवे छे अने आवी शके तेवी छे. तेथी अहोनिश ते मोटा आस्रवरूप एवा सर्व संगमां उदासपणुं रहे छे; अने ते दिवस दिवस प्रत्ये वधता परिणामने पाम्या करे छे; तेथी विशेष परिणामने पामी सर्व संगथी निवृत्ति थाय एवी अनन्य कारण योगे इच्छा रहे छे.

आ पत्र प्रथमथी व्यवहारिक आकृतिमां लखायो होय एम वखते लागे, पण तेमां ते सहज मात्र नथी. असंगपणानो आत्मभावनानो मात्र अल्प विचार लख्यो छे.

४६६. मुंबई. मागशर वद ९ शुक्र. १९५१.

ॐ ज्ञानी पुरुषनो सत्संग थये, निश्चय थये अने तेना मार्गने आराध्ये जीवने दर्शनमोहनीय कर्म उपशमे छे के क्षय थाय छे, अने अनुक्रमे सर्व ज्ञाननी प्राप्ति थई जीव कृतकृत्य थाय छे ए वात प्रगट सत्य छे; पण तेथी उपार्जित प्रारब्ध पण भोगववुं पडतुं नथी एम सिद्धांत थई शकतो नथी. केवळज्ञान थयुं छे एवा वीतरागने पण उपार्जित प्रारब्धरूप एवां चार कर्म वेदवां पडे छे; तो तेथी ओछी भूमिकामां स्थित एवा जीवोने प्रारब्ध भोगववुं पडे तेमां आश्चर्य कांई नथी. जेम ते सर्वज्ञ एवा वीतरागने घनघाति चार कर्म नाश पामवाथी वेदवां पडतां नथी अने फरी ते कर्म उत्पन्न थवानां कारणनी ते सर्वज्ञ एवा वीतरागने स्थिति नथी, तेम ज्ञानीनो निश्चय थये अज्ञान भावथी जीवने उदासीनता थाय छे; अने ते उदासीनताने लीधे भविष्य काळमां ते प्रकारनुं कर्म उपार्जवानुं मुख्य कारण ते जीवने थतुं नथी. क्वचित् पूर्वानुसार कोई जीवने विपर्यय उदय होय, तोपण ते उदय अनुक्रमे उपशमी क्षय थई जीव ज्ञानीना मार्गने फरी पामे छे; अने अर्धपुद्गलपरावर्त्तनमां अवश्य संसारमुक्त थाय छे; पण समकिती जीवने, के सर्वज्ञ वीतरागने, के कोई अन्य योगी के ज्ञानीने ज्ञाननी प्राप्तिने लीधे उपार्जित प्रारब्ध वेदवुं पडे नहीं के दुःख होय नहीं एम सिद्धांत न होई शके.

तो पछी अमने तमने मात्र सत्संगनो अल्प लाभ होय त्यां संसारी सर्व दुःख निवृत्त थवां जोईए एम मानीए तो पछी केवळज्ञानादि निरर्थक थाय छे; केमके उपार्जित प्रारब्ध अवेद्युं नाश पामे तो पछी सर्व मार्ग मिथ्या ज ठरे. ज्ञानीना सत्संगे अज्ञानीना प्रसंगनी रुचि मोळी अने सत्यासत्य विवेक थाय; अनंतानुबंधी क्रोधादि खपे; अनुक्रमे सर्व राग द्वेष क्षय थाय; ए बनवा योग्य छे अने ज्ञानीना निश्चये ते अल्प काळमां अथवा सुगमपणे बने

ए सिद्धांत छे; तथापि जे दुःख अवश्य भोगव्ये नाश पामे एवुं उपार्जित छे ते तो भोगववुं ज पडे एमां कांई संशय थतो नथी.

मारूं अंतरनुं अंग एवुं छे के परमार्थ प्रसंगथी कोई मुमुक्षुजीवने मारो प्रसंग थाय तो जरूर तेने मारा प्रत्ये परमार्थना हेतुनी ज इच्छा रहे तो ज तेनुं श्रेय थाय; पण द्रव्यादि कारणनी कांई पण वांच्छा रहे अथवा तेवा व्यवसायनुं मने तेनाथी जणाववुं थाय, तो पछी अनुक्रमे ते जीव मलिन वासनाने पामी मुमुक्षुतानो नाश करे, एम मने निश्चय रहे छे. अने ते ज कारणथी तमने घणीवार तमारा तरफथी व्यवहारिक प्रसंग लखाई आव्यो होय त्यारे ठपको आपी जणाव्युं पण हतुं के माराप्रत्ये तमे आवो व्यवसाय जणाववानुं जेम न थाय तेम जरूर करी करो. अने मारी स्मृतिप्रमाणे आपे ते वात ग्रहण करी हती; तथापि ते प्रमाणे थोडो वखत बनी पाछुं व्यवसाय विषे लखवानुं बने छे; तो आजना मारा पत्रने विचारी जरूर ते वात तमे विसर्जन करशो; अने नित्य तेवी वृत्ति राखशो, तो अवश्य हितकारी थशे; अने मारी आंतर् वृत्तिने अवश्य उल्लासनुं कारण आप्युं छे एम मने थशे. कोई पण सत्संग प्रसंगमां एम करे तो मारूं चित्त बहु विचारमां पडी जाय छे के गभराय छे; केमके परमार्थने नाश करनारी आ भावना आ जीवने उदयमां आवी एम तमे ज्यारे ज्यारे व्यवसाय विषे लख्युं हशे, त्यारे त्यारे मने घणुंकरीने थयुं हशे; तथापि आपनी वृत्ति विशेष फेर होवाने लीधे कंईक गभराट चित्तमां ओछो थयो हशे. परमार्थनी इच्छा तमने छे, जेथी आ वात पर तमारे जरूर स्थिर थवुं.

४६७. मुंबई. वि. सं. १९५१. मागशर वद ११ रवि.

गया परम दिवसे लखेला पत्रमां जे गंभीर आशय लख्या छे ते विचारवान जीवने आत्माना परम हितस्वी थाय तेवा छे. ए उपदेश अमे तमने घणी वार सहेजसाज कर्यो छे, छतां ते उपदेश आजीविकाना कष्टक्लेशथी तमने घणीवार विसर्जन थयो छे, अथवा थई जाय छे. अमाराप्रत्ये मावित्र जेटलो तमारो भक्तिभाव छे; एटले लखवामां अडचण नथी एम गणीने तथा दुःख सहन करवानी असमर्थताने लीधे अमारी पासेथी तेवा वहेवारनी याचना बे प्रकारे तमाराथी थई छेः—एक तो कंई सिद्धियोगथी दुःख मटाडी शकाय तेवा आशयनी, अने बीजी याचना कंई वेपार रोजगारादिनी. बेमांनी एके याचना तमारी अमारी पांसे थाय, ते तमारा आत्माने हितनुं कारण रोधनार, अने अनुक्रमे मलिन वासनानो हेतु थाय; केमके **जे भूमिकामां जे घटे नहीं ते जीव ते करे तो ते भूमिकानो तेने सहेजे त्याग थाय**, एमां कंई संदेह नथी. तमारी अमारा प्रत्ये निष्काम भक्ति जोईए, अने तमने गमे तेटलुं दुःख होय छतां तेने धीरजथी वेदवुं जोईए. तेम न बने तोपण एक अक्षर अमारी पासे तो तेनी सूचना पण न करवी जोईए. ए तमने सर्वांग योग्य छे. अने तमने तेवी ज स्थितिमां जोवाने जेटली मारी इच्छा छे, अने जेटलुं तमारूं ते स्थितिमां हित छे, ते पत्रथी के वचनथी अमाराथी जणावी शकाय तेवुं नथी; पण

पूर्वेना कोई ते ज उदयने लीधे तमने ते वात विसर्जन थई पाछी अमने जणाववानी इच्छा रह्या करे छे.

ते बे प्रकारनी याचनामां प्रथम जणावी छे ते याचना तो कोई पण निकटभवीने करवी घटे ज नहीं, अने अल्पमात्र होय तोपण तेने मूळथी छेदवी घटे; केमके लोकोत्तर मिथ्यात्वनुं ते निबंधन छे एवो तीर्थंकरादिनो निश्चय छे; ते अमने तो सप्रमाण लागे छे. बीजी याचना छे ते पण कर्त्तव्य नथी, केमके ते पण अमने परिश्रमनो हेतु छे. अमने वेहवारनो परिश्रम आपीने वहेवार निभाववो ए आ जीवनी सद्वृत्तिनुं घणुं ज अल्पत्व बतावे छे; केमके अमारा अर्थे परिश्रम वेठी तमारे वहेवार चलावी देवो पडतो होय तो ते तमने हितकारी छे, अने अमने तेवा दुष्ट निमित्तनुं कारण नथी; एवी स्थिति छतां पण अमारा चित्तमां एवो विचार रहे छे के, ज्यांसुधी अमारे परिगृहादिनुं लेवुं देवुं थाय, एवो वहेवार उदयमां होय त्यांसुधी जाते ते कार्य करवुं, अथवा वहेवारीक संबंधी धारादिथी करवुं, पण ते संबंधी मुमुक्षु पुरुषने तो परिश्रम आपीने न करवुं, केमके जीवने मलिन वासना तेवा कारणे उद्भव थवी संभवे; कदापि अमारूं चित्त शुद्ध ज रहे एवुं छे; तथापि काळ एवो छे के, जो शुद्धि द्रव्यथी पण राखिये तो सामा जीवने विषमता उद्भव न थाय; अने अशुद्ध वृत्तिवान जीव पण तेम वर्त्ती परमपुरुषोना मार्गनो नाश न करे. ए आदि विचारपर मारूं चित्त रहे छे.

तो पछी जेनुं अमाराथी परमार्थबळ, के चित्तशुद्धिपणुं ओछुं होय तेणे तो जरूर ते मार्गणा बळवानपणे राखवी, ए ज तेने बळवान श्रेय छे, अने तम जेवा मुमुक्षु पुरुषे तो अवश्य तेम वर्त्तवुं घटे; केमके तमारूं अनुकरण सहेजे बीजा मुमुक्षुओने हिताहितनुं कारण थई शके. प्राण जवा जेवी विषम अवस्थाए पण तमने निष्कामता ज राखवी घटे छे, एवो अमारो विचार ते तमारा आजीविकाथी गमे तेवा दुःखनी अनुकंपा प्रत्ये जतां पण मटतो नथी; पण सामो वधारे बळवान थाय छे. आ विषयपरत्वे तमने विशेष कारणो आपी निश्चय कराववानी इच्छा छे, अने ते अशे एम अमने निश्चय रहे छे.

आ प्रमाणे तमारा अथवा बीजा मुमुक्षु जीवना हितना अर्थे मने जे योग्य लाग्युं ते लख्युं छे. आटलुं जणाव्या पछी मारो पोतानो मारा आत्माअर्थे ते संबंधमां कंईक बीजो पण विचार रहे छे ते लखवो घटतो नहोतो पण तमारा आत्माने कंईक अमे दुभववा जेवुं लख्युं छे, त्यारे ते लखवो घटारत गणी लख्यो छे; ते आ प्रमाणे छे के, ज्यांसुधी परिगृहादिनुं लेवुं देवुं थाय तेवो वहेवार अमने उदयमां होय त्यांसुधी जो कोई पण निष्काम मुमुक्षु के सत्पात्र जीवनी, के तेनी अमाराथी अनुकंपायोगनी जे कांई अमाराथी तेने जणाव्या शिवाय सेवा चाकरी थई शके ते द्रव्यादि पदार्थथी पण करवी, केमके एवो मार्ग ऋषभादि महापुरुषे पण क्यांक क्यांक जीवनी गुणनिष्पन्नतार्थे गण्यो छे. ते अमारा अंगना विचारनो छे अने तेवी आचरणा सत्पुरुषने निषेध नथी, पण कोई रीते कर्त्तव्य छे. मात्र सामा जीवने परमार्थनो रोध करनार ते विषय के सेवा चाकरी थती होय तो तेने सत्पुरुषे पण उपशमाववो जोईए.

४६८. मुंबई. मागशर. १९५१.

श्री जिन आत्म परिणामनी स्वस्थताने समाधि अने आत्म परिणामनी अस्वस्थताने असमाधि कहे छे. ते अनुभव ज्ञाने जोतां परम सत्य छे.

अस्वस्थ कार्यनी प्रवृत्ति करवी, अने आत्म परिणाम स्वस्थ राखवां एवी विषम प्रवृत्ति श्री तीर्थंकर जेवा ज्ञानीथी बनवी कठण कही छे, तो पछी बीजा जीवने विषे ते वात संभवित करवी कठण होय एमां आश्चर्य नथी.

कोईपण परपदार्थने विषे इच्छानी प्रवृत्ति छे, अने कोईपण परपदार्थना वियोगनी चिंता छे तेने श्री जिन आर्त्तध्यान कहे छे, तेमां अंदेशो घटतो नथी.

त्रण वर्षना उपाधि योगथी उत्पन्न थयो एवो विक्षेप भाव ते मटाडवानो विचार वर्ते छे. दृढ वैराग्यवानना चित्तने जे प्रवृत्ति बाध करी शके एवी छे, ते प्रवृत्ति अदृढ वैराग्यवान जीवने कल्याण सन्मुख थवा न दे एमां आश्चर्य नथी.

जेटली संसारने विषे सार परिणति मनाय तेटली आत्मज्ञाननी न्यूनता श्री तीर्थंकरे कही छे.

परिणाम जड होय एवो सिद्धांत नथी. चेतनने चेतन परिणाम होय अने अचेतनने अचेतन परिणाम होय एवो जिने अनुभव कर्यो छे. कोईपण पदार्थ परिणाम के पर्यायविना होय नहीं एम श्री जिने कह्युं छे; अने ते सत्य छे.

श्री जिने जे आत्म अनुभव कर्यो छे, अने पदार्थनां स्वरूप साक्षात्कार करी निरूपण कर्युं छे, ते सर्व मुमुक्षु जीवे परम कल्याणने अर्थे निश्चय करी विचारवा योग्य छे. **जिने कहेला सर्व पदार्थना भावो एक आत्मा प्रगट करवाने अर्थे छे.** अने मोक्ष मार्गमां प्रवृत्ति बेनी घटे छे, एक आत्मज्ञाननी अने एक आत्मज्ञानीना आश्रयवाननी, एम श्री जिने कह्युं छे.

आत्मा सांभळवो, विचारवो, निदिध्यासवो, अनुभववो एवी एक वेदनी श्रुति छे; अर्थात् जो के एक एज प्रवृत्ति करवामां आवे तो जीव तरी पार पामे एवुं लागे छे. बाकी तो मात्र कोई श्री तीर्थंकर जेवा ज्ञानीविना, सर्वने आ प्रवृत्ति करतां कल्याणनो विचार करवो अने निश्चय थवो तथा आत्मस्वस्थता थवी दुर्लभ छे.

४६९.

ईश्वरेच्छा बळवान छे, अने काळनुं पण दुषमपणुं छे. पूर्वे जाण्युं हतुं अने स्पष्ट प्रतीति स्वरूप हतुं के ज्ञानीपुरुषने सकामपणे भजतां आत्माने प्रतिबंध थाय छे, अने घणीवार परमार्थ दृष्टि मटी संसारार्थ दृष्टि थई जाय छे. ज्ञानी प्रत्ये एवी दृष्टि थये फरी सुलभबोधिपणुं पामवुं कठण पडे छे; एम जाणी कोई पण जीव सकामपणे समागम न करे, एवा प्रकारे वर्त्तवुं थतुं हतुं. तमने तथा श्री•••वगेरेने आ मार्ग संबंधी अमे कह्युं हतुं, पण अमारा बीजा उपदेशनी पेठे तत्काळ तेनुं प्रजवुं कोई प्रारब्धयोगथी न थतुं. अमे ज्यारे ते विषे कंई जणावता त्यारे पूर्वना ज्ञानीओए आचर्युं छे, एवा प्रकारादिथी प्रत्युत्तर कहेवा जेवुं थतुं हतुं. अमने तेथी चित्तमां

मोटो खेद थतो हतो के आ सकामवृत्ति दुषम काळने लीधे आवा मुमुक्षु पुरुषने विषे वर्त्ते छे, नहीं तो तेनो स्वप्ने पण संभव न होय. जो के ते सकामवृत्तिथी तमे परमार्थदृष्टिपणुं विसरी जाओ एवो संशय थतो न होतो, पण प्रसंगोपात्त परमार्थदृष्टिने शिथिलपणानो हेतु थवानो संभव देखातो हतो; पण ते करतां मोटो खेद ए थतो हतो के आ मुमुक्षुना कुटुंबमां सकामबुद्धि विशेष थशे, अने परमार्थदृष्टि मटी जशे, अथवा उत्पन्न थवानो संभव टळी जशे; अने तेने लीधे बीजा पण घणा जीवोने ते स्थिति परमार्थ अप्राप्तिमां हेतुभूत थशे. वळी सकामपणे भजनारनी अमाराथी कंई वृत्ति शांत करवानुं बनवुं कठण, तेथी सकामी जीवोने पूर्वापर विरोध बुद्धि थाय अथवा परमार्थपूज्यभावना टळी जाय एवुं जे जोयुं हतुं, ते वर्त्तमानमां न थाय ते विशेष उपयोग थवा सहेज लख्युं छे. पूर्वापर आ वातनुं महात्म्य समजाय अने अन्य जीवोने उपकार थाय तेम विशेष लक्ष राखशो.

४७०. मोहमयि क्षेत्रथी. पोष शुद १ शुक्र. १९५१.

जे प्रकारे असंगताए आत्मभाव साध्य थाय ते प्रकारे प्रवर्त्तवुं ए ज जिननी आज्ञा छे.

आ उपाधिरूप व्यापारादि प्रसंगथी निवर्त्तवा वारंवार विचार रह्या करे छे, तथापि तेनो अपरिपक्व काळ जाणी उदयवशे व्यवहार करवो पडे छे. पण उपर कही छे एवी जिननी आज्ञा ते घणुं करी विस्मरण थती नथी; अने तमने पण हाल तो ते ज भाव विचारवानुं कहीए छीए.

४७१. मुंबई. पोष शुद १० रवि. १९५१.

प्रत्यक्ष काराग्रह छतां तेना त्यागने विषे जीव इच्छे नहीं, अथवा अत्यागरूप शिथिळता त्यागी शके नहीं, के त्याग बुद्धि छतां त्यागतां त्यागतां काळ व्यय करवानुं थाय; ते सौ विचार जीवे केवी रीते दूर करवा, अल्प काळमां तेम कई रीते बने ते विषे ते पत्रमां लखवानुं थाय तो करशो.

४७२. मुंबई. पोष वद २. १९५१.

२-२-३मा-१९५१

द्रव्य,	एक लक्ष.
क्षेत्र,	मोहमयी.
काळ,	-मा. व. ८-१.
भाव,	उदय भाव.

द्रव्य-	एक लक्ष.	उदासीन.
क्षेत्र-	मोहमयी.	
काळ-	८-१.	इच्छा.
भाव-	उदयभाव.	प्रारब्ध.

४७३. मुंबई. पोष वद १० रवि. १९५१.

(१)

विषम संसारबंधन छेदीने चाली नीकळ्या ते पुरुषोने अनंत प्रणाम.

चित्तनी व्यवस्था यथायोग्य नहीं होवाथी उदय प्रारब्ध विना बीजा सर्व प्रकारमां असंगपणुं राखवुं योग्य लागे छे; ते एटले सुधी के जेमनो ओळखाण प्रसंग छे तेओ पण हाल भूली जाय तो सारूं, केमके संगथी उपाधि निष्कारण वध्या करे छे, अने तेवी उपाधि सहन करवा योग्य एवुं हाल मारूं चित्त नथी. निरुपायता शिवाय कंईपण व्यवहार करवानुं हाल चित्त होय एम जणातुं नथी; अने जे व्यापार व्यवहारनी निरुपायता छे तेथी पण निवृत्त थवानी चिंतना रह्यां करे छे. तेम चित्तमां बीजाने बोध करवा योग्य एटली मारी योग्यता हाल मने लागती नथी; केमके **ज्यांसुधी सर्व प्रकारना विषम स्थानकोमां समवृत्ति न थाय त्यांसुधी यथार्थ आत्मज्ञान कह्युं जतुं नथी,** अने ज्यांसुधी तेम होय त्यांसुधी तो निज अभ्यासनी रक्षा करवी घटे छे, अने हाल ते प्रकारनी मारी स्थिति होवाथी हुं आम वर्तुं छुं ते क्षमायोग्य छे, केमके मारा चित्तमां अन्य कोई हेतु नथी.

(२)

मिथ्या जगत् वेदांत कहे छे ते खोटुं शुं छे?

४७४. मुंबई. पोष. १९५१.

ॐ

जो ज्ञानीपुरुषना दृढ आश्रयथी सर्वोत्कृष्ट एवुं मोक्षपद सुलभ छे तो पछी क्षणे क्षणे आत्मोपयोग स्थिर करवो घटे एवो कठण मार्ग ते ज्ञानीपुरुषना दृढ आश्रये थवो केम सुलभ न होय? केमके ते उपयोगना एकाग्रपणाविना तो मोक्षपदनी उत्पत्ति छे नहीं. **ज्ञानीपुरुषना वचननो दृढ आश्रय जेने थाय तेने सर्व साधन सुलभ थाय एवो अखंड निश्चय सत्पुरुषोए कर्यो छे;** तो पछी अमे कहीए छीए के आ वृत्तिओनो जय करवो घटे छे. ते वृत्तिओनो जय केम न थई शके? आटलुं सत्य छे के आ दुषमकाळने विषे सत्संगनी समीपता के दृढ आश्रय विशेष जोईए अने असत्संगथी अत्यंत निवृत्ति जोईए; तोपण मुमुक्षुने तो एम ज घटे छे के कठणमां कठण आत्मसाधन होय तेनी प्रथम इच्छा करवी, के जेथी सर्व साधन अल्प काळमां फळीभूत थाय.

श्री तीर्थंकरे तो एटला सुधी कह्युं छे के जे ज्ञानीपुरुषनी दशा संसारपरिक्षीण थई छे ते ज्ञानीपुरुषने परंपराकर्मबंध संभवतो नथी, तोपण पुरुषार्थ मुख्य राखवो, के जे बीजा जीवनो पण आत्मसाधनपरिणामनो हेतु थाय.

ज्ञानीपुरुषने आत्मप्रतिबंधपणे संसारसेवा होय नही, पण प्रारब्धप्रतिबंधपणे होय एम छतां पण तेथी निवृत्तवारूप परिणामने पामे एम ज्ञानीनी रीत होय छे; जे रीतनो आश्रय करतां हाल त्रण वर्ष थयां विशेष तेम कर्युं छे अने तेमां जरूर आत्मदशाने भूलावे एवो संभव रहे तेवो

उदय पण जेटलो बन्यो तेटलो समपरिणामे वेद्यो छे; जो के ते वेदवाना काळने विषे सर्वसंग-निवृत्ति कोई रीते थाय तो सारूं एम सूज्यां कर्युं छे; तोपण सर्वसंगनिवृत्तिए जे दशा रहेवी जोईए ते दशा उदयमां रहे, तो अल्पकाळमां विशेष कर्मनी निवृत्ति थाय एम जाणी जेटलुं बन्युं तेटलुं ते प्रकारे कर्युं छे; पण मनमां हवे एम रहे छे के आ प्रसंगथी एटले सकळ गृहवासथी दूर थवाय तेम न होय तोपण व्यापारादि प्रसंगथी निवृत्त, दूर थवाय तो सारूं, केमके आत्मभावे परिणाम पामवाने विषे जे दशा ज्ञानीनी जोईए ते दशा आ व्यापारव्यवहारथी मुमुक्षु जीवने देखाती नथी. आ प्रकार जे लख्यो छे ते विषे हमणां विचार क्यारेक क्यारेक विशेष उदय पामे छे. ते विषे जे परिणाम आवे ते खरूं.

४७५. मुंबई. महा शुद २ रवि. १९५१.

चित्तमां कंई पण विचारवृत्ति परिणमी छे, तेम जाणी हृदयमां आनंद थयो छे. असार अने क्लेशरूप आरंभ परिग्रहना कार्यमां वसतां जो आ जीव कंई पण निर्भय के अजागृत रहे तो घणा वर्षनो उपासेलो वैराग्य पण निष्फळ जाय एवी दशा थई आवे छे, एवो नित्य प्रत्ये निश्चय संभारीने निरूपाय प्रसंगमां कंपतां चित्ते न ज छूट्ये प्रवर्त्तवुं घटे छे, ए वातनो मुमुक्षु जीवे कार्ये कार्ये, क्षणे क्षणे अने प्रसंगे प्रसंगे लक्ष राख्या विना मुमुक्षुता रहेवी दुर्लभ छे. अने एवी दशा वेद्याविना मुमुक्षुपणुं पण संभवे नहीं. मारा चित्तमां मुख्य विचार हाल ए वर्त्ते छे.

४७६. मुंबई. महा शुद ३ सोम. १९५१.

जे प्रारब्ध वेद्या विना बीजो कोई उपाय नथी, ते प्रारब्ध ज्ञानीने पण वेदवुं पडे छे. ज्ञानी अंतसुधी आत्मार्थनो त्याग करवा इच्छे नहीं, एटलुं भिन्नपणुं ज्ञानीने विषे होय एम मोटा पुरुषोए कह्युं छे ते सत्य छे.

४७७.

महाशुद ७ शनीवार–विक्रम संवत् १९५१. त्यार पछी दोढ वर्षथी वधारे स्थिति नहीं. अने तेटला काळमां त्यार पछी जीवन काळ शी रीते वेदवो ते विचारवानुं बनशे.

४७८. मुंबई. महा शुद ८ रवि. १९५१.

तमे पत्रमां जे कंई लख्युं छे, ते पर वारंवार विचार करवाथी, जागृति राखवाथी, जेमां पंच विषयादिनुं अशुचि स्वरूप वर्णव्युं होय एवां शास्त्रो अने सत्पुरुषनां चरित्रो विचारवाथी तथा कार्ये कार्ये लक्ष राखी प्रवृत्तवाथी जे कंई उदास भावना थवी घटे ते थशे.

४७९. मुंबई. फागण शुद १२ शुक्र. १९५१.

जे प्रकारे बंधनथी छूटाय ते प्रकारे प्रवर्त्तवुं, ए हितकारी कार्य छे. बाह्य परिचयने विचारी विचारीने निवृत्त करवो ए छूटवानो एक प्रकार छे जीव आ वात जेटली विचारशे तेटलो ज्ञानीपुरुषनो मार्ग समजवानो समय समीप प्राप्त थशे.

४८०. मुंबई. फागण शुद १४ रवि. १९५१.

अशरण एवा संसारने विषे निश्चित बुद्धिए व्यवहार करवो जेने योग्य जणातो न होय अने ते व्यवहारनो संबंध निवृत्त करतां तथा ओछो करतां विशेष काळ व्यतीत थया करतो होय तो ते काम अल्पकाळमां करवा माटे जीवने शुं करवुं घटे? **समस्त संसार मृत्यु आदि भये अशरण छे ते शरणनो हेतु थाय एवुं कल्पवुं ते मृगजळ जेवुं छे.** विचारी विचारीने श्री तीर्थंकर जेवाए पण तेथी निवृत्तवुं, छूटवुं ए ज उपाय शोध्यो छे. ते संसारनां मुख्य कारण प्रेमबंधन तथा द्वेषबंधन सर्व ज्ञानीए स्वीकार्यां छे. तेनी मुंझवणे जीवने निज विचार करवानो अवकाश प्राप्त थतो नथी, अथवा थाय एवा योगे ते बंधननां कारणथी आत्मवीर्य वर्त्ती शकतुं नथी, अने ते सौ प्रमादनो हेतु छे. अने तेवा प्रमादे लेशमात्र समय काळ पण निर्भय रहेवुं के अजागृत रहेवुं ते आ जीवनुं अतिशय निर्बळपणु छे, अविवेकता छे, भ्रांति छे, अने टाळतां अत्यंत कठण एवो मोह छे.

समस्त संसार बे प्रवाहथी वहे छे, प्रेमथी अने द्वेषथी. प्रेमथी विरक्त थया विना द्वेषथी छूटाय नहीं, अने प्रेमथी विरक्त थाय तेणे सर्वसंगथी विरक्त थया विना व्यवहारमां वर्त्ति अप्रेम (उदास) दशा राखवी ते भयंकर वृत्त छे. जो केवळ प्रेमनो त्याग करी व्यवहारमां प्रवर्त्तवुं कराय तो केटलाक जीवोनी दयानो, उपकारनो, अने स्वार्थनो भंग करवा जेवुं थाय छे; अने तेम विचारी जो दया उपकारादि कारणे कंई प्रेम दशा राखतां चित्तमां विवेकीने क्लेश पण थया विना रहेवो न जोईए, त्यारे तेनो विशेष विचार कया प्रकारे करवो?

४८१. मुंबई. फागण शुद १५. १९५१.

श्री वीतरागने परमभक्तिए नमस्कार.

श्री जिन जेवा पुरुषे गृहवासमां जे प्रतिबंध कर्यो नथी ते प्रतिबंध न थवा, आववानुं के पत्र लखवानुं थयुं नथी ते माटे अत्यंत दीनपणे क्षमा इच्छुं छउं. संपूर्ण वीतरागता नहीं होवाथी आ प्रमाणे वर्त्ततां अंतरमां विक्षेप थयो छे, जे विक्षेप पण शमाववो घटे ए प्रकारे ज्ञानीए मार्ग दीठो छे. जे आत्मानो अंतर्व्यापार (अंतर्‌परिणामनी धारा) ते, बंध अने मोक्षनी (कर्मथी आत्मानुं बंधावुं अने तेथी आत्मानुं छूटवुं.) व्यवस्थानो हेतु छे; मात्र शरीर चेष्टा बंध-मोक्षनी व्यवस्थानो हेतु नथी.

विशेष रोगादि योगे ज्ञानीपुरुषना देहने विषे पण निर्बळपणुं मंदपणुं, म्लानता, कंप, स्वेद, मूर्च्छा, बाह्य विभ्रमादि दृष्ट थाय छे. तथापि जेटलुं ज्ञानेकरीने, बोधेकरीने, वैराग्येकरीने आत्मानुं निर्मळपणुं थयुं छे तेटलां निर्मळपणांए करी ते रोगने अंतर्परिणामे ज्ञानी वेदे छे, अने वेदतां कदापि बाह्य स्थिति उन्मत्त जोवामां आवे तोपण अंतर्परिणाम प्रमाणे कर्म बंध अथवा निवृत्ति थाय छे.

४८२. मुंबई. फा. वद ५ शनि. १९५१.

सुज्ञ भाई श्री मोहनलाल प्रत्ये, श्री डरबन.

पत्र १ मळ्युं छे. जेम जेम उपाधिनो त्याग थाय तेम तेम समाधिसुख प्रगटे छे. जेम जेम उपाधिनुं ग्रहण थाय तेम तेम समाधि सुख हानि पामे छे. विचार करीए तो आ वात प्रत्यक्ष अनुभवरूप थाय छे.

जो कंई पण आ संसारना पदार्थोनो विचार करवामां आवे, तो ते प्रत्ये वैराग्य आव्या विना रहे नहीं; केमके मात्र अविचारे करीने तेमां मोह बुद्धि रहे छे.

आत्मा छे, आत्मा नित्य छे, आत्मा कर्मनो कर्त्ता छे, आत्मा कर्मनो भोक्ता छे, तेथी ते निवृत्त थई शके छे, अने निवृत्त थई शकवानां साधन छे, ए छ कारणो जेने विचारे करीने सिद्ध थाय, तेने विवेकज्ञान अथवा सम्यग्दर्शननी प्राप्ति गणवी एम श्री जिने निरुपण कर्युं छे. जे निरुपण मुमुक्षु जीवे विशेष करी अभ्यास करवा योग्य छे.

पूर्वना कोई विशेष अभ्यासबळथी ए छ कारणोनो विचार उत्पन्न थाय छे; अथवा सत्संगना आश्रयथी ते विचार उत्पन्न थवानो योग बने छे.

अनित्य पदार्थ प्रत्ये मोहबुद्धि होवाने लीधे आत्मानुं अस्तित्व, नित्यत्व, अने अव्याबाध समाधि-सुख भानमां आवतुं नथी. तेनी मोहबुद्धिमां जीवने अनादिथी एवुं एकाग्रपणुं चाल्युं आवे छे, के तेनो विवेक करतां करतां जीवने मुंझाईने पाछुं वळवुं पडे छे, अने ते मोहग्रंथी छेदवानो वखत आववा पहेलां ते विवेक छोडी देवानो योग पूर्वकाळे घणीवार बन्यो छे, केमके जेनो अनादिकाळथी अभ्यास छे ते, अत्यंत पुरुषार्थ विना, अल्प काळमां छोडी शकाय नहीं.

माटे फरिफरी सत्संग, सत्शास्त्र अने पोतामां सरळ विचारदशा करी ते विषयमां विशेष श्रम लेवो योग्य छे, के जेना परिणाममां नित्य शाश्वत सुखस्वरूप एवुं आत्मज्ञान थई स्वरूप-आविर्भाव थाय छे. एमां प्रथमथी उत्पन्न थता संशय धीरजथी अने विचारथी शांत थाय छे. अधीरजथी अथवा आडी कल्पना करवाथी मात्र जीवने पोताना हितनो त्याग करवानो वखत आवे छे. अने अनित्य पदार्थनो राग रहेवाथी तेना कारणे फरिफरी संसार भ्रमणनो योग रह्या करे छे.

कंई पण आत्मविचार करवानी इच्छा तमने वर्त्ते छे, एम जाणी घणो संतोष थयो छे. ते संतोषमां मारो कंई स्वार्थ नथी. मात्र तमे समाधिने रस्ते चडवा इच्छो छो तेथी संसारक्लेशथी निवृत्तवानो तमने प्रसंग प्राप्त थशे एवा प्रकारनो संभव देखी स्वभावे संतोष थाय छे, एज विनंति. ता. १६–३–९५. आ. स्व. प्रणाम.

४८३. मुंबई. फागण वद ५ शनि. १९५१.

वधारेमां वधारे एक समये १०८ जीव मुक्त थाय, एथी विशेष न थाय, एवी लोकस्थिति जिनागममां स्वीकारेली छे, अने प्रत्येक समये एक सो आठ एक सो आठ जीव मुक्त थया ज

करे छे, एम गणीए तो ते परिणामे त्रणे काळमां जेटला जीव मोक्ष प्राप्त थाय, तेटला जीवनी जे अनंत संख्या थाय ते करतां संसार निवासी जीवोनी संख्या अनंतपणे जिनागममां निरूपी छे. अर्थात् त्रणे काळमां मुक्त जीव जेटला थाय ते करतां संसारमां अनंत गणा जीव रहे; केमके तेनुं परिणाम एटलुं विशेष छे. अने तेथी मोक्ष मार्गनो प्रवाह वहा करतां छतां संसार मार्ग उच्छेद थई जवो संभवतो नथी, अने तेथी बंधमोक्ष व्यवस्थामां विपर्यय थतुं नथी. आ विषे वधारे चर्चा समागममां करशो तो अडचण नथी.

जीवना बंधमोक्षनी व्यवस्था विषे संक्षेपमां पत्तुं लख्युं छे. सौ करतां विचारवा योग्य वात तो हाल ए छे के उपाधि करवामां आवे, अने केवळ असंग दशा रहे एम बनवुं अत्यंत कठण छे. अने उपाधि करतां आत्म परिणाम चंचळ न थाय, एम बनवुं असंभवित जेवुं छे. उत्कृष्ट ज्ञानीने बाद करतां आपणे सौए तो आत्मामां जेटलुं असंपूर्ण असमाधिपणुं वर्त्ते छे ते अथवा वर्त्ति शके तेवुं होय ते उच्छेद करवुं ए वात लक्षमां वधारे लेवायोग्य छे.

४८४. मुंबई. फागण वद ७ रवि. १९५१.

सर्व विभावथी उदासीन अने अत्यंत शुद्ध निज पर्यायने सहज पणे आत्मा भजे तेने श्री जिने तीव्रज्ञान दशा कही छे. जे दशा आव्याविना कोई पण जीव बंधन मुक्त थाय नहीं एवो सिद्धांत श्री जिने प्रतिपादन कर्यो छे, जे अखंड सत्य छे.

कोईक जीवथी ए गहन दशानो विचार थई शकवा योग्य छे, केमके अनादिथी अत्यंत अज्ञान-दशाथी आ जीवे प्रवृत्ति करी छे, ते प्रवृत्ति एकदम असत्य, असार समजाई तेनी निवृत्ति सूजे एम बनवुं बहु कठण छे; माटे ज्ञानीपुरुषनो आश्रय करवारूप भक्तिमार्ग जिने निरुपण कर्यो छे, के जे मार्ग आराधवाथी सुलभपणे ज्ञानदशा उत्पन्न थाय छे.

ज्ञानीपुरुषना चरणने विषे मन स्थाप्याविना ए भक्तिमार्ग सिद्ध थतो नथी. जेथी फरिफरी ज्ञानीनी आज्ञा आराधवानुं जिनागममां ठेकाणे ठेकाणे कथन कर्युं छे.

ज्ञानीपुरुषना चरणमां मननुं स्थापन थवुं प्रथम कठण पडे छे, पण वचननी अपूर्वताथी, ते वचननो विचार करवाथी तथा ज्ञानीप्रत्ये अपूर्व दृष्टिए जोवाथी मननुं स्थापन थवुं सुलभ थाय छे.

ज्ञानीपुरुषना आश्रयमां विरोध करनारा पंचविषयादि दोषो छे. ते दोष थवानां साधनथी जेम बने तेम दूर रहेवुं, अने प्राप्तसाधनमां पण उदासीनता राखवी, अथवा ते ते साधनोमांथी अहंबुद्धि छोडी दई रोगरूप जाणी प्रवर्त्तवुं घटे. अनादि दोषनो एवा प्रसंगमां विशेष उदय थाय छे, केमके आत्मा ते दोषने छेदवा पोतानी सन्मुख लावे छे, ते स्वरूपांतर करी तेने आकर्षे छे; अने जागृतिमां शिथिळ करी नाखी पोताने विषे एकाग्रबुद्धि करावी दे छे. ते एकाग्रबुद्धि एवा प्रकारनी होय छे के मने आ प्रवृत्तिथी तेवो विशेष बाध नहीं थाय, हुं अनुक्रमे तेने छोडीश अने करतां जागृत रहीश; ए आदि भ्रांत दशा ते दोष करे छे; जेथी ते दोषनो संबंध जीव छोडतो नथी, अथवा ते दोष वधे छे तेनो लक्ष तेने आवी शकतो नथी.

ए विरोधी साधननो बे प्रकारथी त्याग थई शके छे, एक ते साधनना प्रसंगनी निवृत्ति, बीजो प्रकार विचारथी करी तेनुं तुच्छपणुं समजावुं.

विचारथी करी तुच्छपणुं समजावा माटे प्रथम ते पंच विषयादिनां साधननी निवृत्ति करवी वधारे योग्य छे, केमके तेथी विचारनो अवकाश प्राप्त थाय छे.

ते पंच विषयादि साधननी निवृत्ति सर्वथा करवानुं जीवनुं बळ न चालतुं होय त्यारे क्रमे क्रमे, देशे देशे तेनो त्याग करवो घटे, परिग्रह तथा भोगोपभोगना पदार्थनो अल्प परिचय करवो घटे. एम करवाथी अनुक्रमे ते दोष मोळा पडे, अने आश्रय भक्ति दृढ थाय तथा ज्ञानीनां वचनोनुं आत्मामां परिणाम थई तीव्र ज्ञान दशा प्रगटी जीवन् मुक्त थाय.

जीव कोईक वार आवी वातनो विचार करे, तेथी अनादि अभ्यासनुं बळ घटवुं कठण पडे, पण दिन दिन प्रत्ये, प्रसंगे प्रसंगे अने प्रवृत्ति प्रवृत्तिए फरिफरी विचार करे तो अनादि अभ्यासनुं बळ घटी अपूर्व अभ्यासनी सिद्धि थई सुलभ एवो आश्रयभक्तिमार्ग सिद्ध थाय.

४८५. मुंबई. फागण वद १२ शुक्र. १९५१.

जन्म, जरा मरणादि दुःखे करी समस्त संसार अशरण छे. सर्व प्रकारे जेणे ते संसारनी आस्था तजी ते ज निर्भय थया छे, अने आत्मस्वभावने पाम्या छे. विचारविना ते स्थिति जीवने प्राप्त थई शकती नथी, अने संगना मोहे पराधीन एवा आ जीवने विचार प्राप्त थवो दुर्लभ छे.

४८६. मुंबई. फागण. १९५१.

ॐ

तृष्णा ओछी करवी जोईए. जन्म, जरा, मरण कोनां छे? के जे तृष्णा राखे छे तेनां जन्म, जरा, मरण छे. माटे जेम बने तेम तृष्णा ओछी करता जवुं.

४८७.

जेम छे तेम निजस्वरूप संपूर्ण प्रकाशे, त्यांसुधी निजस्वरूपना निदिध्यासनमां स्थिर रहेवाने ज्ञानीपुरुषनां वचनो आधारभूत छे, एम परम पुरुष श्री तीर्थंकरे कह्युं छे, ते सत्य छे. बारमे गुण स्थानके वर्त्तता आत्माने निदिध्यासनरूप ध्यानमां श्रुतज्ञान एटले मुख्य एवां ज्ञानीना वचनोनो आशय त्यां आधारभूत छे, एवुं प्रमाण जिन मार्गने विषे वारंवार कह्युं छे. बोध बीजनी प्राप्ति थये, निवार्ण मार्गनी यथार्थ प्रतीति थये पण ते मार्गमां यथास्थित स्थिति थवाने अर्थे ज्ञानीपुरुषनो आश्रय मुख्य साधन छे; अने ते ठेठ पूर्ण दशा थतां सुधी छे. नहीं तो जीवने पतित थवानो भय छे एम मान्युं छे. तो पछी पोतानी मेळे अनादिथी भ्रांत एवा जीवने सद्गुरुना योगविना निजस्वरूपनुं भान थवुं अशक्य होय, एमां संशय केम होय! निजस्वरूपनो दृढ निश्चय वर्त्ते छे, तेवा पुरुषने जगद्व्यवहार वारंवार चुकवी दे एवा प्रसंग प्राप्त करावे छे. तो पछी तेथी न्यून दशामां चूकी जवाय एमां आश्चर्य शुं छे? पोताना विचारना बळे करी, सत्संग–सत्शास्त्रनो आधार न होय तेवा प्रसंगमां आ जगद्व्यवहार विशेष बळ करे छे, अने

त्यारे वारंवार श्री सद्गुरुनुं महात्म्य अने आश्रयनुं स्वरूप तथा सार्थकपणुं अत्यंत अपरोक्ष सत्य देखाय छे.

४८८. मुंबई. चैत्र सुद १ सोम. १९५१.

आजे पत्र १ पहोंच्युं छे. अत्र कुशळता छे. पत्र लखतां लखतां अथवा कंई कहेतां कहेतां वारंवार चित्तनी अप्रवृत्ति थाय छे, अने कल्पितनुं आटलुं बधुं महात्म्य शुं? कहेवुं शुं? जाणवुं शुं? श्रवण करवुं शुं? प्रवृत्ति शी? ए आदि विक्षेपनी चित्तनी तेमां अप्रवृत्ति थाय छे; अने परमार्थ संबंधी कहेतां लखतां तेथी बीजा प्रकारना विक्षेपनी उत्पत्ति थाय छे, जे विक्षेपमां मुख्य आ तीव्र प्रवृत्तिना निरोध विना तेमां (परमार्थ) कथनमां पण अप्रवृत्ति हाल श्रेयभूत लागे छे. आ कारण विषे आगळ एक पत्र सविगत लख्युं छे, एटले विशेष लखवा जेवुं अत्रे नथी, मात्र चित्तमां अत्रे विशेष स्फुर्ति थवाथी लख्युं छे.

मोतीना वेपार वगेरेनी प्रवृत्ति वधारे न करवा संबंधीनुं बने तो सारूं, एम लख्युं ते यथायोग्य छे; अने चित्तनी नित्य इच्छा एम रह्या करे छे. लोभ हेतुथी ते प्रवृत्ति थाय छे के केम? एम विचारतां लोभनुं निदान जणातुं नथी. विषयादिनी इच्छाए प्रवृत्ति थाय छे, एम पण जणातुं नथी, तथापि प्रवृत्ति थाय छे एमां संदेह नथी.

जगत् कंई लेवाने माटे प्रवृत्ति करे छे, आ प्रवृत्ति देवाने माटे थती हशे एम लागे छे, अत्रे ए लागे छे ते यथार्थ हशे के केम? ते माटे विचारवान् पुरुष जे कहे ते प्रमाण छे.

४८९. मुंबई. चैत्र सुद १२. १९५१.

हाल जो कोई वेदांत संबंधी ग्रंथो वांचवा अथवा श्रवण करवानुं रहेतुं होय तो ते विचारनो विशेष विचार थवा थोडो वखत श्री आचारांग, सूयगडांग तथा उत्तराध्ययन वांचवा विचारवानुं बने तो करशो.

वेदांतना सिद्धांतमां तथा जिनना आगमना सिद्धांतमां जुदापणुं छे, तोपण जिनना आगम विशेष विचारनुं स्थळ जाणी वेदांतनुं पृथक्करण थवा ते आगम वांचवा, विचारवा योग्य छे.

४९०. मुंबई. चैत्र वद ८ बुध. १९५१.

चेतनने चेतन पर्याय होय, अने जडने जड पर्याय होय, ए ज पदार्थनी स्थिति छे. प्रत्येक समये जे जे परिणाम थाय छे ते ते पर्याय छे. विचार करवाथी आ वात यथार्थ लागशे.

लखवानुं ओछुं बनी शके छे तेथी केटलाक विचारो जणाववानुं बनी शकतुं नथी, तेम केटलाक विचारो उपशम करवा रूप प्रकृतिनो उदय होवाथी कोईकने स्पष्टताथी कहेवानुं बनी शकतुं नथी. हाल अत्रे एटली बधी उपाधि रहेती नथी, तोपण प्रवृत्तिरूप संग होवाथी तथा क्षेत्र उतापरूप होवाथी थोडा दिवस अत्रेथी निवृत्त थवानो विचार थाय छे. हवे ते विषे जे बने ते खरूं,

४९१. मुंबई. चैत्र वद ८. १९५१.

आत्मवीर्य प्रवर्त्तावबामां अने संकोचवामां बहु विचार करी प्रवर्त्तवुं घटे छे.

शुभेच्छासंपन्न भाई....प्रत्ये. ते तरफ आववा संबंधीमां नीचे प्रमाणे स्थिति छे.

लोकोने अंदेशो पडे एवी जातनो बाह्य व्यवहारनो उदय छे, अने तेवा व्यवहार साथे बळवान निर्ग्रंथ पुरुष जेवो उपदेश करवो ते मार्गनो विरोध करवा जेवुं छे, अने एम जाणीने तथा तेनां जेवां बीजां कारणोनुं स्वरूप विचारी घणुं करीने लोकोने अंदेशानो हेतु थाय तेवा प्रसंगमां मारूं आववुं थतुं नथी. वखते क्यारेक कोई समागममां आवे छे अने कंई स्वाभाविक कहेवा करवानुं थाय छे, एमां पण चित्तनी इच्छित प्रवृत्ति नथी.

पूर्वे यथास्थित विचार कर्या विना जीवे प्रवृत्ति करी तेथी आवा व्यवहारनो उदय प्राप्त थयो छे. एथी घणीवार चित्तमां शोच रहे छे; पण यथास्थित समपरिणामे वेदवुं घटे छे, एम जाणी घणुं करी तेवी प्रवृत्ति रहे छे. वळी आत्मदशा विशेष स्थिर थवा असंगपणामां लक्ष रह्या करे छे. आ व्यापारादि उदय व्यवहारथी जे जे संग थाय छे, तेमां घणुं करी असंग परिणामवत् प्रवृत्ति थाय छे, केमके तेमां सारभूतपणुं कंई लागतुं नथी; पण जे धर्मव्यवहारना प्रसंगमां आववुं थाय त्यां ते प्रवृत्ति प्रमाणे वर्त्तवुं घटे नहीं. तेम बीजो आशय विचारी प्रवृत्ति करवामां आवे तो तेटलुं समर्थपणुं हाल नथी, तेथी तेवा प्रसंगमां घणुं करीने मारूं आववुं ओछुं थाय छे; अने ए क्रम फेरववानुं चित्तमां हाल बेसतुं नथी, छतां ते तरफ आववाना प्रसंगमां तेम करवानो कंई पण विचार में कर्यो हतो, तथापि ते क्रम फेरवतां बीजां विषम कारणोनो आगळ पर संभव थशे एम प्रत्यक्ष देखावाथी क्रम फेरववा संबंधी निवृत्ति उपशम करवी योग्य लागवाथी तेम कर्युं छे. आ आशय शिवाय चित्तमां बीजा आशय पण ते तरफ हाल नहीं आववाना संबंधमां छे, पण कोई लोक व्यवहाररूप कारणथी आववा विषेनो विचार विसर्जन कर्यो नथी.

चित्तपर वधारे दबाण करीने आ स्थिति लखी छे, तेपर विचार करी जो कंई अगत्य जेवुं लागे तो वखते रतनजीभाईने खुलासो करशो. मारा आववा नहीं आववा विषे जो कंई वात नहीं उच्चरवानुं बने तो तेम करवा विनंति छे.

४९२. मुंबई. चैत्र वद १० शुक्र. १९५१.

एक आत्मपरिणति शिवायना बीजा जे विषयो तेने विषे चित्त अव्यवस्थितपणे वर्त्ते छे; अने तेवुं अव्यवस्थितपणुं लोकव्यवहारथी प्रतिकूळ होवाथी लोकव्यवहार भजवो गमतो नथी; अने तजवो बनतो नथी, ए वेदना घणुं करीने दिवसना आखा भागमां वेदवामां आव्या करे छे.

खावाने विषे, पीवाने विषे, बोलवाने विषे, शयनने विषे, लखवाने विषे के बीजां व्यवहारिक कार्योने विषे जेवां जोईए तेवां भानथी प्रवर्त्तातुं नथी, अने ते प्रसंगो रह्या होवाथी आत्मपरिणतिने स्वतंत्र प्रगटपणे अनुसरवामां विपत्ति आव्या करे छे. अने ते विषेनुं क्षणे क्षणे दुःख रह्या करे छे.

अचलित आत्मरूपे रहेवानी स्थितिमां ज चित्तेच्छा रहे छे, अने उपर जणाव्या प्रसंगोनी आपत्तिने लीधे केटलीक ते स्थितिनो वियोग रह्या करे छे; अने ते वियोग मात्र परेच्छाथी रह्यो छे, स्वेच्छाना कारणथी रह्यो नथी; ए एक गंभीर वेदना क्षणे क्षणे थया करे छे.

आ ज भवने विषे अने थोडा ज वखत पहेलां व्यवहारने विषे पण स्मृति तीव्र हती. ते स्मृति हवे व्यवहारने विषे क्वचित् ज, मंदपणे प्रवर्त्ते छे. थोडा ज वखत पहेलां एटले थोडां वर्षो पहेलां वाणी घणुं बोली शकती, वक्तापणे कुशळताथी प्रवर्त्ती शकती. ते हवे मंदपणे अव्यवस्थाथी प्रवर्त्ते छे. थोडां वर्ष पहेलां, थोडा वखत पेहेलां लेखन शक्ति अति उग्र हती; आजे शुं लखवुं? ते सूजतामां सूजतामां दिवसना दिवस व्यतीत थई जाय छे; अने पछी पण जे कंई लखाय छे, ते इच्छेलुं अथवा योग्य व्यवस्था वाळुं लखातुं नथी, अर्थात् एक आत्मपरिणाम शिवाय सर्व बीजां परिणामने विषे उदासीनपणुं वर्त्ते छे; अने जे कंई कराय छे ते जेवा जोईए तेवा भावना सोमा अंशथी पण नथी थतुं. जेम तेम अने जे ते कराय छे. लखवानी प्रवृत्ति करतां वाणीनी प्रवृत्ति कंईक ठीक छे; जेथी जे कंई आपने पूछवानी इच्छा होय, जाणवानी इच्छा होय तेना विषे समागमे कही शकाशे.

कुंदकुंदाचार्य अने आनंदघनजीने सिद्धांत संबंधी ज्ञान तीव्र हतुं. कुंदकुंदाचार्यजी तो आत्म स्थितिमां बहु स्थित हता. नामनुं जेने दर्शन होय ते बधा सम्यक्ज्ञानी कही शकाता नथी.

४९३. मुंबई. चैत्र वद ११ शुक. १९५१.

जेम निर्मळता रे रत्न स्फटिक तणी, तेम ज जीवस्वभाव रे,
ते जिनवीरे रे धर्म प्रकाशियो, प्रबळ कषायअभाव रे.

सहज द्रव्य अत्यंत प्रकाशित थये एटले सर्व कर्मनो क्षय थये जे असंगता अने सुखस्वरूपता कही छे, ज्ञानीपुरुषोना ते वचन अत्यंत साचां छे. केमके सत्संगथी प्रत्यक्ष, अत्यंत प्रगट ते वचनोनो अनुभव थाय छे.

निर्विकल्प उपयोगनो लक्ष स्थिरतानो परिचय कर्याथी थाय छे. सुधारस, सत्समागम, सत्शास्त्र, सद्विचार अने वैराग्य उपशम ए सौ ते स्थिरताना हेतु छे.

४९४. मुंबई. चैत्र वद १२ रवि. १९५१.

ॐ

वधारे विचारनुं साधन थवा आ पत्र लख्युं छे.

पूर्ण ज्ञानी श्री ऋषभदेवादि पुरुषोने पण प्रारब्धोदय भोगव्ये क्षय थयो छे. तो अम जेवाने ते प्रारब्धोदय भोगववो ज पडे एमां कंई संशय नथी. मात्र खेद एटलो थाय छे के अमने आवा प्रारब्धोदयमां श्री ऋषभदेवादि जेवी अविषमता रहे एटलुं बळ नथी; अने तेथी प्रारब्धोदय छतां वारंवार तेथी अपरिपक्व काळे छूटवानी कामना थई आवे छे; के जो आ विषम प्रारब्धोदयमां कंई पण उपयोगनी यथातथ्यता न रही तो फरी आत्मस्थिरता थतां वळी अवसर शोधवो जोईशे; अने पश्चात्ताप पूर्वक देह छूटशे; एवी चिंता घणीवार थई आवे छे.

आ प्रारब्धोदय मटी निवृत्ति कर्म वेदवारूप प्रारब्धनो उदय थवा आशय रह्या करे छे, पण ते तरतमां एटले एकथी दोढ वर्षमां थाय एम तो देखातुं नथी. अने पळ पळ जवी कठण पडे छे. एकथी दोढ वर्ष पछी प्रवृत्ति कर्म वेदवारूप केवळ परिक्षीण थशे, एम पण लागतुं नथी, कंईक उदय विशेष मोळो पडशे एम लागे छे.

आत्मानी केटलीक अस्थिरता रहे छे. गया वर्षनो मोती संबंधी व्यापार लगभग पतवा आव्यो छे. आ वर्षनो मोती संबंधी व्यापार गया वर्ष करतां लगभग बमणो थयो छे. गयां वर्ष जेवुं तेमां परिणाम आववुं कठण छे. थोडा दिवस करतां हाल ठीक छे, अने आ वर्ष पण तेनुं गयां वर्ष जेवुं नहीं तोपण कंईक ठीक परिणाम आवशे एम संभव रहे छे; पण घणो वखत तेना विचारमां व्यतीत थवा जेवुं थाय छे, अने ते माटे शोच थाय छे के आ एक परिग्रहनी कामनाना बळवान प्रवर्त्तन जेवुं थाय छे, ते शमाववुं घटे छे. अने कंईक करवुं पडे एवां कारणो रहे छे. हवे जेम तेम करी ते प्रारब्धोदय तरत क्षय थाय तो सारूं, एम मनमां घणीवार आवी रह्या करे छे.

अत्रे जे आडत तथा मोती संबंधी वेपार छे तेमांथी माराथी छूटवानुं बने अथवा तेनो घणो प्रसंग ओछो थवानुं थाय तेवो कोई रस्तो ध्यानमां आवे तो लखशो; गमे तो आ विषे समागममां विशेषताथी जणावी शकाय तो जणावशो. आ वात लक्षमां राखशो.

त्रण वर्षनी लगभगथी एवुं वर्त्ताया करे छे के परमार्थ संबंधी के व्यवहार संबंधी कंईपण लखतां कंटाळो आवी जाय छे, अने लखतां लखतां कल्पित जेवुं लागवाथी वारंवार अपूर्ण छोडी देवानुं थाय छे. परमार्थमां चित्त जे वखते एकाग्रवत् होय त्यारे जो परमार्थ संबंधी लखवानुं अथवा कहेवानुं बने तो ते यथार्थ कहेवाय, पण चित्त अस्थिरवत् होय अने परमार्थ संबंधी लखवानुं के कहेवानुं करवामां आवे तो ते उदीरणा जेवुं थाय; तेम ज अंतवृर्त्तिनो यथातथ्य तेमां उपयोग नहीं होवाथी ते आत्म बुद्धिथी लख्युं के कह्युं नहीं होवाथी कल्पितरूप कहेवाय. जेथी तथा तेवां बीजां कारणोथी परमार्थ संबंधी लखवानुं तथा कहेवानुं घणुं ओछुं थई गयुं छे. आ स्थळे सहज प्रश्न थशे के चित्त अस्थिरवत् थई जवानो हेतु शो छे? परमार्थमां जे चित्त विशेष एकाग्रवत् रहेतुं ते चित्त परमार्थमां अस्थिरवत् थवानुं कारण कंई पण जोईए. जो परमार्थ संशयनो हेतु लाग्यो होय तो तेम बने, अथवा कोई तथाविध आत्मवीर्य मंद थवा रूप तीव्र प्रारब्धोदयना बळथी तेम थाय. आ बे हेतुथी परमार्थ विचार करतां, लखतां के कहेतां चित्त अस्थिरवत् वर्त्ते.

तेमां प्रथम कह्यो ते हेतु वर्त्तवानो संभव नथी. मात्र बीजो हेतु कह्यो ते संभवे छे. आत्मवीर्य मंद थवारूप तीव्र प्रारब्धोदय होवाथी ते हेतु टाळवानो पुरुषार्थ छतां काळ क्षेप थया करे छे; अने तेवा उदय सुधी ते अस्थिरता टळवी कठण छे; अने तेथी परमार्थ स्वरूप चित्तविना ते संबंधी लखवुं, कहेवुं ए कल्पित जेवुं लागे छे. तोपण केटलाक प्रसंगमां विशेष स्थिरता रहे छे.

व्यवहार संबंधी कंईपण लखतां ते असारभूत अने साक्षात् भ्रांतिरूप लागवाथी ते संबंधी जे कंई लखवुं के कहेवुं ते तुच्छ छे, आत्माने विकळतानो हेतु छे, अने जे कंई लखवुं कहेवुं

छे ते न कर्युं होय तो पण चाली शके एवुं छे, माटे ज्यांसुधी तेम वर्त्ते त्यांसुधी तो जरूर तेम वर्त्तवुं घटे छे, एम जाणी घणी व्यवहारिक वात लखवा, करवा, कहेवानी टेव नीकळी गई छे. मात्र जे व्यापारादि व्यवहारमां तीव्र प्रारब्धोदये प्रवृत्ति छे, त्यां कंईक प्रवृत्ति थाय छे. जो के तेनुं पण यथार्थपणुं जणातुं नथी.

श्री जिन वीतरागे द्रव्य–भाव संयोगथी फरिफरी छूटवानी भलामण कही छे अने ते संयोगनो विश्वास परम ज्ञानीने पण कर्त्तव्य नथी, एवो निश्चळ मार्ग कह्यो छे ते श्री जिन वितरागनां चरणकमळने विषे अत्यंत नम्र परिणामथी नमस्कार छे.

दर्पण, जळ, दीपक, सूर्य अने चक्षुनां स्वरूप पर विचार करशो तो केवळज्ञानथी पदार्थनुं प्रकाशपणुं थाय छे एम जिने कह्युं छे, ते समजवाने कंईक साधन थशे.

४९५.

केवळज्ञानथी पदार्थ केवा देखाय? ए प्रश्ननो उत्तर विशेष करी समागममां समजवाथी स्पष्ट समजी शकाय एवो छे, तोपण संक्षेपमां नीचे लख्यो छे:—

जेम दिवो ज्यां ज्यां होय छे, त्यां त्यां प्रकाशकपणे होय छे, तेम ज्ञान ज्यां ज्यां होय छे त्यां त्यां प्रकाशकपणे होय छे. दिवानो सहज स्वभाव ज जेम पदार्थ प्रकाशक होय छे, तेम ज्ञाननो सहज स्वभाव पण पदार्थ प्रकाशक छे. दिवो द्रव्य प्रकाशक छे, अने ज्ञान द्रव्य–भाव बंनेने प्रकाशक छे. दिवाना प्रगटवाथी तेना प्रकाशनी सीमामां जे कोई पदार्थ होय छे ते सहज देखाई रहे छे, तेम ज्ञानना विद्यमानपणाथी पदार्थनुं सहज देखावुं थाय छे. जेमां यथातथ्य अने संपूर्ण पदार्थनुं सहज देखाई रहेवुं थाय छे, तेने केवळज्ञान कह्युं छे, जो के परमार्थथी एम कह्युं छे के केवळज्ञान पण अनुभवमां तो मात्र आत्मानुभव कर्त्ता छे, व्यवहार नयथी लोकालोक प्रकाशक छे. आरीसो, दीवो, सूर्य, अने चक्षु जेम पदार्थ प्रकाशक छे, तेम ज्ञान पण पदार्थ प्रकाशक छे.

४९६. मुंबई. चैत्र वद १२ रवि. १९५१.

श्री जिन वीतरागे द्रव्य–भाव संयोगथी फरिफरी छूटवानी भलामण कही छे, अने ते संयोगनो विश्वास परम ज्ञानीने पण कर्त्तव्य नथी, एवो अखंड मार्ग कह्यो छे, ते श्री जिन वीतरागनां चरणकमळ प्रत्ये अत्यंत भक्तीथी नमस्कार.

आत्मस्वरूपनो निश्चय थवामां जीवनी अनादियी भूल थती आवी छे. समस्त श्रुतज्ञानस्वरूप एवां द्वादशांगमां सौथी प्रथम उपदेश योग्य एवुं आचारांगसूत्र छे. तेना प्रथम श्रुत स्कंधमां प्रथम अध्ययनना प्रथम उद्देशामां प्रथम वाक्ये जे श्री जिने उपदेश कर्यो छे ते सर्व अंगना सर्व श्रुतज्ञाननो सारस्वरूप छे, मोक्षना बीज भूत छे, सम्यक्त्वस्वरूप छे. ते वाक्य प्रत्ये उपयोग स्थिर थवाथी जीवने निश्चय आवशे के, **ज्ञानीपुरुषना समागमनी उपासना विना जीव स्वछंदे निश्चय करे ते छूटवानो मार्ग नथी.**

सर्व जीवनुं परमात्मापणुं छे एमां संशय नथी तो पछी श्री······पोताने परमात्मस्वरूप मावे तो ते वात असत्य नथी, पण ज्यांसुधी ते स्वरूप यथातथ्य प्रगटे नहीं त्यांसुधी मुमुक्षु, जिज्ञासु रहेवुं ते वधारे सारूं छे; अने ते रस्ते यथार्थ परमात्मपणुं प्रगटे छे. जे, मार्ग मुकीने प्रवर्त्तवाथी ते पदनुं भान थतुं नथी तथा श्री जिन वितराग, सर्वज्ञपुरुषोनी आसातना करवारूप प्रवृत्ति थाय छे. बीजो कंई भेद नथी. मृत्युनुं आववुं अवश्य छे.

५९७.

तमारे वेदांत ग्रंथ वांचवानो के ते प्रसंगनी वातचीत श्रवण करवानो प्रसंग रहेतो होय तो ते वांचनथी तथा श्रवणथी जीवमां वैराग्य अने उपशम वर्धमान थाय एम करवुं योग्य छे. तेमां प्रतिपादन करेला सिद्धांतनो जो निश्चय थतो होय तो करवामां बाध नथी, तथापि ज्ञानी-पुरुषना समागम उपासनाथी सिद्धांतनो निश्चय कर्याविना आत्म विरोध थवा संभव छे.

५९८. मुंबई. चैत्र वद १४ बुध. १९५१.

ॐ

चारित्रदशा संबंधी (चारित्र श्री जिनना अभिप्रायमां शुं छे? ते विचारी समवस्थान थवुं) अनुप्रेक्षा करवाथी जीवमां स्वस्थता उत्पन्न थाय छे. ते विचारे करी उत्पन्न थयेली चारित्र परिणाम स्वभावरूप स्वस्थता विना ज्ञान अफळ छे, एवो जिननो अभिमत ते अव्याबाध सत्य छे.

ते संबंधी अनुप्रेक्षा घणीवार रह्या छतां चंचळ परिणतिनो हेतु एवो उपाधियोग तीव्र उदयरूप होवाथी चित्तमां घणुं करी खेद जेवुं रहे छे, अने ते खेदथी शिथिळता उत्पन्न थई विशेष जणाववानुं थई शकतुं नथी. बाकी कंई जणाववा विषे तो चित्तमां घणीवार रहे छे. एज विनंति.

५९९. मुंबई. चैत्र. १९५१.

विषयादि इच्छित पदार्थ भोगवी तेथी निवृत्त थवानी इच्छा राखवी अने ते क्रमे प्रवर्त्तवाथी आगळपर ते विषयमूर्च्छा उत्पन्न थवी न संभवे एम थवुं कठण छे. केमके ज्ञानदशाविना विषयनुं निर्मूळपणुं थवुं संभवतुं नथी.

मात्र उदय विषयो भोगव्याथी नाश थाय; पण जो ज्ञानदशा न होय तो विषय आराधतां उत्सुक परिणाम थया विना न रहे; अने तेथी पराजित थवाने बदले विषय वर्धमान थाय.

जेने ज्ञानदशा छे तेवा पुरुषो विषयाकांक्षाथी अथवा विषयनो अनुभव करी तेथी विरक्त थवानी इच्छाथी तेमां प्रवर्त्तता नथी, अने एम जो प्रवर्त्तवा जाय तो ज्ञानने पण आवरण आववा योग्य छे. मात्र प्रारब्धसंबंधी उदय होय एटले छूटी न शकाय तेथी ज ज्ञानीपुरुषनी भोगप्रवृत्ति छे. ते पण पूर्वपश्चात् पश्चात्तापवाळी अने मंदमां मंद परिणाम संयुक्त होय छे.

सामान्य मुमुक्षु जीव वैराग्यना उद्भवने अर्थे विषय आराधवा जतां तो घणुं करी बंधावा संभव छे, केमके ज्ञानीपुरुष पण ते प्रसंगने मांड मांड जीती शक्या छे, तो जेनी मात्र विचार-दशा छे, एवा पुरुषनो भार नथी के ते विषयने एवा प्रकारे जीती शके.

५००.

जे जीवने मोहनीय कर्मरूपी कषायनो त्याग करवो होय, तेनो एकदम त्याग करवा धारशे त्यारे करी शकाशे तेवा विश्वास उपर रही तेनो क्रमे त्याग करवानो अभिप्राय नथी करतो, ते एकदम त्याग करवानो प्रसंग आव्ये मोहनीय कर्मना बळ आगळ टकी शकतो नथी; कारण कर्मरूप शत्रुने धीरे धीरे निर्बळ कर्या विना काढी मुकवाने ते एकदम असमर्थ बने छे. आत्माना निर्बळपणाने लईने तेना उपर मोहनुं बळवानपणुं छे. तेनुं जोर ओछुं करवाने आत्मा प्रयत्न करे, तो एकी वखते तेना उपर जय मेळववानी धारणामां ते ठगाय छे. ज्यांसुधी मोहवृत्ति लडवा सामी नथी आवी त्यांसुधी मोहवश आत्मा पोतानुं बळवानपणुं धारे छे, परंतु तेवी कसोटीनो प्रसंग आव्ये आत्माने पोतानुं कायरपणुं समजाय छे, माटे जेम बने तेम पांच इंद्रियना विषय मोळा करवा. तेमां मुख्यत्वे उपस्थ इंद्रिय अमलमां लाववी; एम अनुक्रमे बीजी इंद्रिय (अपूर्ण.)

५०१.

सं० १९५१ ना वैशाख शुद ५ सोमे—सायंकाळथी प्रत्याख्यान.
सं० १९५१ ना वैशाख शुद १४ भोमे.

५०२. मुंबई. वैशाख शुद ११ रवि. १९५१.

(१)

धर्मने नमस्कार.
वीतरागने नमस्कार.
श्री सत्पुरुषोने नमस्कार.

(२)

* सो धम्मो जथ्थ दया, दसठ्ठ दोसा न जस्स सो देवो,
सो हु गुरु जो नाणी, आरंभ परिग्गह विरओ.

५०३.

(१) सर्व क्लेशथी अने सर्व दुःखथी मुक्त थवानो उपाय एक आत्मज्ञान छे. विचार विना आत्मज्ञान थाय नहीं, अने असत्संग तथा असत्प्रसंगथी जीवनुं विचारबळ प्रवर्ततुं नथी, एमां किंचित् मात्र संशय नथी.

* ज्यां दया ते धर्म, अढार दोषरहित (वीतराग) ते देव, अने आरंभपरिग्रहथी रहित ज्ञानी ते गुरु (सत्पुरुष).

आरंभ परिग्रहनुं अल्पत्व करवाथी असत्प्रसंगनुं बळ घटे छे, सत्संगना आश्रयथी असत्संगनुं बळ घटे छे. असत्संगनुं बळ घटवाथी आत्मविचार थवानो अवकाश प्राप्त थाय छे. आत्मविचार थवाथी आत्मज्ञान थाय छे. अने आत्मज्ञानथी निजस्वभावस्वरूप, सर्व क्लेश अने सर्व दुःखथी रहित एवो मोक्ष थाय छे; ए वात केवळ सत्य छे.

जे जीवो मोहनिद्रामां सुता छे ते अमुनि छे; निरंतर आत्मविचारे करी मुनि तो जागृत रहे; प्रमादीने सर्वथा भय छे, अप्रमादीने कोई रीते भय नथी एम श्री जिने कह्युं छे.

सर्व पदार्थनुं स्वरूप जाणवानो हेतु मात्र एक आत्मज्ञान करवुं ए छे. जो आत्मज्ञान न थाय तो सर्व पदार्थना ज्ञाननुं निष्फळपणुं छे.

जेटलुं आत्मज्ञान थाय तेटली आत्मसमाधि प्रगटे.

कोई पण तथारूप जोगने पामीने जीवने एक क्षण पण अंतर्भेद जागृति थाय तो तेने मोक्ष विशेष दूर नथी.

अन्य परिणाममां जेटली तादात्म्यवृत्ति छे, तेटलो जीवथी मोक्ष दूर छे.

जो कोई आत्मजोग बने तो आ मनुष्यपणानुं मूल्य कोई रीते न थई शके तेवुं छे. प्राये मनुष्यदेहविना आत्मजोग बनतो नथी एम जाणी, अत्यंत निश्चय करी आ ज देहमां आत्मजोग उत्पन्न करवो घटे.

विचारनी निर्मळताए करी जो आ जीव अन्य परिचयथी पाछो वळे तो सहजमां हमणा ज तेने आत्मजोग प्रगटे.

असत्संग प्रसंगनो घेरावो विशेष छे, अने आ जीव तेथी अनादि काळनो हीनसत्त्व थयो होवाथी तेथी अवकाश प्राप्त करवा अथवा तेनी निवृत्ति करवा जेम बने तेम सत्संगनो आश्रय करे तो कोई रीते पुरुषार्थ योग्य थई विचार दशाने पामे.

जे प्रकारे अनित्यपणुं, असारपणुं आ संसारनुं अत्यंतपणे भासे ते प्रकारे करी आत्मविचार उत्पन्न थाय.

हवे आ उपाधि कार्यथी छूटवानी विशेष विशेष आर्त्ति थया करे छे, अने छूटवा विना जे कंई पण काळ जाय छे, ते आ जीवनुं शिथिळपणुं ज छे एम लागे छे; अथवा एवो निश्चय रहे छे.

जनकादि उपाधिमां रह्या छतां आत्मस्वभावमां वसता हता एवा आलंबन प्रत्ये क्यारेय बुद्धि थती नथी. श्री जिन जेवा जन्मत्यागी पण छोडीने चाली नीकळ्या एवा भयना हेतुरूप उपाधियोगनी निवृत्ति आ पामर जीव करतां करतां काळ व्यतीत करशे तो अश्रेय थशे एवो भय जीवना उपयोग प्रत्ये प्रवर्त्ते छे, केमके एम ज कर्त्तव्य छे.

जे रागद्वेषादि परिणाम अज्ञान विना संभवता नथी, ते रागद्वेषादि परिणाम छतां जीवन्मुक्त-

पणुं सर्वथा मानीने जीवन्मुक्त दशानी जीव आसातना करे छे, एम वर्त्ते छे. सर्वथा राग द्वेष परिणामनुं परिक्षीणपणुं ज कर्त्तव्य छे.

अत्यंत ज्ञान होय त्यां अत्यंत त्याग संभवे छे. अत्यंत त्याग प्रगट्या विना अत्यंत ज्ञान न होय एम श्री तीर्थंकरे स्वीकार्युं छे.

आत्मपरिणामथी जेटलो अन्य पदार्थनो तादात्म्य अध्यास निवृत्तवो तेने श्री जिन त्याग कहे छे.

ते तादात्म्यअध्यासनिवृत्तिरूप त्याग थवा अर्थे आ बाह्य प्रसंगनो त्याग पण उपकारी छे, कार्यकारी छे. बाह्य प्रसंगना त्यागने अर्थे अंतर्त्याग कह्यो नथी, एम छे तोपण आ जीवे अंतर्त्यागने अर्थे बाह्य प्रसंगनी निवृत्तिने कंई पण उपकारी मानवीयोग्य छे.

नित्य छूटवानो विचार करीए छैये अने जेम ते कार्य तरत पते तेम जाप जपीए छैये. जो के एम लागे छे के ते विचार अने जाप हजी तथारूप नथी, शिथिळ छे; माटे अत्यंत विचार अने ते जापने उग्रपणे आराधवानो अल्पकाळमां योग करवो घटे छे, एम वर्त्त्या करे छे.

प्रसंगथी केटलांक अरस्परस संबंध जेवां वचनो आ पत्रमां लख्यां छे, ते विचारमां स्फुरी आवतां स्व विचारबळ वधवाने अर्थे अने तमने वांचवा विचारवाने अर्थे लख्यां छे.

(२) जीव, प्रदेश, पर्याय तथा संख्यात, असंख्यात, अनंत आदि विषे तथा रसनां व्यापकपणां विषे क्रमे करी समजवुं योग्य थशे.

५०४. मुंबई. वैशाख सुद. १९५१.

श्री····प्रत्ये सुधारस संबंधी वातचित करवानो अवसर तमने प्राप्त थाय तो करशो.

जे देह पूर युवावस्थामां अने संपूर्ण आरोग्यतामां देखातां छतां पण क्षणभंगुर छे ते देहमां प्रीति करीने शुं करीए? जगत्ना सर्व पदार्थ करतां जे प्रत्ये सर्वोत्कृष्ट प्रीति छे एवो आ देह ते पण दुःखनो हेतु छे, तो बीजा पदार्थमां सुखना हेतुनी शुं कल्पना करवी? जे पुरुषोए वस्त्र जेम शरीरथी जूदुं छे, एम आत्माथी शरीर जूदुं छे एम दीठुं छे ते पुरुषो धन्य छे. बीजानी वस्तु पोताथी ग्रहण थई होय, ते ज्यारे एम जणाय के बीजानी छे, त्यारे ते आपी देवानुं ज कार्य महात्मा पुरुषो करे छे.

दुषम काळ छे, एमां संशय नथी. तथारूप परमज्ञानी आप्तपुरुषनो प्रायः विरह छे. वीरला जीवो सम्यग्दृष्टिपणुं पामे एवी काळ स्थिति थई गई छे. ज्यां सहजसिद्ध आत्मचारित्रदशा वर्त्ते छे एवुं केवळज्ञान पामवुं कठण छे, एमां संशय नथी.

प्रवृत्ति विराम पामती नथी; विरक्तपणुं घणुं वर्त्ते छे. वनने विषे अथवा एकांतने विषे सहज स्वरूपने अनुभवतो एवो आत्मा निर्विषय प्रवर्त्ते एम करवामां सर्व इच्छा रोकाणी छे.

५०५. मुंबई. वैशाख सुद १५ बुध. १९५१.

आत्मा अत्यंत सहज स्वस्थता पामे ए ज सर्व ज्ञाननो सार श्री सर्वज्ञे कह्यो छे.

अनादिकाळथी जीवे असत्सता निरंतर आराधी छे, जेथी सत्सता प्रत्ये आववुं तेने दुर्गम पडे छे. श्री जिने एम कह्युं छे के यथाप्रवृत्तिकरणसुधी जीव अनंतीवार आव्यो छे, पण जे समये ग्रंथीभेद थवा सुधी आववानुं थाय छे त्यारे क्षोभ पामी पाछो संसार परिणामी थया करे छे. ग्रंथीभेद थवामां जे वीर्यगति जोईए ते थवाने अर्थे जीवे नित्य प्रत्ये सत्समागम, सद्विचार अने सद्ग्रंथनो परिचय निरंतरपणे करवो श्रेयभूत छे.

आ देहनुं आयुष्य प्रत्यक्ष उपाधि योगे व्यतीत थयुं जाय छे, ए माटे अत्यंत शोक थाय छे, अने तेनो अल्प काळमां जो उपाय न कर्यो तो अम जेवा अविचारी पण थोडा समजवा.

जे ज्ञानथी काम नाश पामे ते ज्ञानने अत्यंत भक्तिए नमस्कार हो.

५०६.

सर्व करतां जेमां अधिक स्नेह रह्या करे छे एवी आ काया ते रोग, जरादिथी स्वात्माने ज दुःखरूप थई पडे छे; तो पछी तेथी दूर एवां धनादिथी जीवने तथारूप (यथायोग्य) सुख वृत्ति थाय एम मानतां विचारवान्नी बुद्धि जरूर क्षोभ पामवी जोईए; अने कोई बीजा विचारमां जवी जोईए, एवो ज्ञानी पुरुषोए निर्णय कर्यो छे, ते यथातथ्य छे.

५०७. मुंबई. वैशाख वद ७ गुरु. १९५१.

ॐ

वेदांतादिमां आत्मस्वरूपनी जे विचारणा कही छे, ते विचारणा करतां श्री जिनागममां आत्मस्वरूपनी विचारणा कही छे, तेमां भेद पडे छे.

सर्व विचारणानुं फळ आत्मानुं सहज स्वभावे परिणाम थवुं ए ज छे.

संपूर्ण राग द्वेषना क्षय विना संपूर्ण आत्मज्ञान प्रगटे नहीं एवो निश्चय जिने कह्यो छे ते, वेदांतादि करतां बळवान् प्रमाणभूत छे.

५०८.

सर्व करतां वीतरागनां वचनने संपूर्ण प्रतीतिनुं स्थान कहेवुं घटे छे. केमके ज्यां रागादि दोषनो संपूर्ण क्षय होय त्यां संपूर्ण ज्ञानस्वभाव प्रगटवा योग्य नियम घटे छे.

श्री जिनने सर्व करतां उत्कृष्ट वीतरागता संभवे छे. प्रत्यक्ष तेमनां वचननुं प्रमाण छे माटे. जे कोई पुरुषने जेटले अंशे वीतरागता संभवे छे, तेटले अंशे ते पुरुषनुं वाक्य मान्यता योग्य छे.

सांख्यादि दर्शने बंध, मोक्षनी जे जे व्याख्या उपदेशी छे, तेथी बळवान प्रमाणसिद्ध व्याख्या श्री जिन वीतरागे कही छे, एम जाणुं छउं.

५०९.

अमारां चित्तने विषे वारंवार एम आवे छे अने एम परिणाम स्थिर रह्या करे छे के जेवो आत्म कल्याणनो निर्धार श्री वर्धमान स्वामीए के श्री ऋषभादिए कर्यो छे, तेवो निर्धार बीजा संप्रदायने विषे नथी.

वेदांतादि दर्शननो लक्ष आत्मज्ञान भणी अने संपूर्ण मोक्ष प्रत्ये जतो जोवामां आवे छे ; पण तेनो यथायोग्य निर्धार संपूर्णपणे तेमां जणातो नथी ; अंशे जणाय छे, अने कंई कंई ते पण पर्यायफेर देखाय छे. जो के वेदांतने विषे ठाम ठाम आत्मचर्या ज विवेची छे, तथापि ते चर्या स्पष्टपणे अविरुद्ध छे, एम हजी सुधी लागी शकतुं नथी. एम पण बने के वखते विचारना कोई उदय भेदथी वेदांतनो आशय बीजे स्वरूपे समजवामां आवतो होय, अने तेथी विरोध भासतो होय, एवी आशंका पण फरिफरी चित्तमां करवामां आवी छे, विशेष विशेष आत्मवीर्य परिणमीने तेने अविरोध जोवा माटे विचार कर्या करेल छे, तथापि एम जणाय छे के वेदांत जे प्रकारे आत्मस्वरूप कहे छे, ते प्रकारे सर्वथा वेदांत अविरोधपणुं पामी शकतुं नथी. केमके ते कहे छे ते ज प्रमाणे आत्मस्वरूप नथी, कोई तेमां मोटो भेद जोवामां आवे छे, अने ते ते प्रकारे सांख्यादि दर्शनोने विषे पण भेद जोवामां आवे छे.

एक मात्र श्री जिने कह्युं छे ते आत्मस्वरूप विशेष विशेष अविरोधी जोवामां आवे छे ; ते प्रकारे वेदवामां आवे छे ; संपूर्णपणे अविरोधी जिननुं कहेलुं आत्मस्वरूप होवा योग्य छे, एम भासे छे. संपूर्णपणे अविरोधी ज छे, एम कहेवामां नथी आवतुं तेनो हेतु मात्र एटलो ज छे के संपूर्णपणे आत्मावस्था प्रगटी नथी, जेथी जे अवस्था अप्रगट छे, ते अवस्थानुं अनुमान वर्तमानमां करीए छैये ; जेथी ते अनुमान पर अत्यंत भार न देवा योग्य गणी विशेष विशेष अविरोधी छे, एम जणाव्युं छे ; संपूर्ण अविरोधी होवायोग्य छे, एम लागे छे.

संपूर्ण आत्मस्वरूप कोई पण पुरुषने विषे प्रगटवुं जोईए, एवो आत्माने विषे निश्चय प्रतीति भाव आवे छे. अने ते केवा पुरुषने विषे प्रगटवुं जोईए, एम विचार करतां जिन जेवा पुरुषने प्रगटवुं जोईए एम स्पष्ट लागे छे. कोईने पण आ सृष्टिमंडळने विषे आत्मस्वरूप संपूर्ण प्रगटवायोग्य होय तो श्री वर्धमानस्वामीने विषे प्रथम प्रगटवायोग्य लागे छे अथवा ते दशाना पुरुषोने विषे सौथी प्रथम संपूर्ण आत्मस्वरूप (अपूर्ण)

५१०. मुंबई. वैशाख वद १० रवि. १९५१.

अल्पकाळमां उपाधिरहित थवा इच्छनारे आत्मपरिणतिने क्या विचारमां आणवी घटे छे के जेथी ते उपाधिरहित थई शके ? ए प्रश्न अमे लख्युं हतुं तेना उत्तरमां तमे लख्युं के ज्यांसुधी रागबंधन छे त्यांसुधी उपाधिरहित थवातुं नथी, अने ते बंधन आत्मपरिणतिथी ओछुं पडी जाय तेवी परिणति रहे तो अल्प काळमां उपाधिरहित थवाय. ए प्रमाणे उत्तर लख्यां ते यथार्थ छे.

अहीं प्रश्नमां विशेषता एटली छे के पराणे उपाधियोग प्राप्त थतो होय, ते प्रत्ये राग, द्वेषादि परिणति ओछी होय, उपाधि करवा चित्तमां वारंवार खेद रहेतो होय, अने ते उपाधिने

त्याग करवामां परिणाम रह्यां करतां होय तेम छतां उदय बळथी उपाधि प्रसंग वर्त्ततो होय तो ते शा उपाये निवृत्त करी शकाय? ए प्रश्न विषे जे लक्ष पहोंचे ते लखशो.

'भावार्थ प्रकाश' ग्रंथ अमे वांच्यो छे, तेमां संप्रदायना विवादनुं कंईक समाधान थई शके एवी रचना करी छे, पण तारतम्ये वास्तव्य ज्ञानवानी रचना नथी; एम मने लागे छे.

श्री डुंगरे "अखे पुरुश एक वरख हे" ए सवैयो लखाव्यो ते वांच्यो छे. श्री डुंगरने एवा सवैयानो विशेष अनुभव छे, तथापि एवा सवैयामां पण घणुं करीने छांया जेवो उपदेश जोवामां आवे छे, अने तेथी अमुक निर्णय करी शकाय अने कदी निर्णय करी शकाय तो ते पूर्वापर अविरोध रहे छे, एम घणुं करीने लक्षमां आवतुं नथी. जीवना पुरुषार्थ धर्मने केटलीक रीते एवी वाणी बळवान करे छे, एटलो ते वाणीनो उपकार केटलाक जीवो प्रत्ये थवो संभवे छे.

तमारा आजना पत्रमां छेवटे श्री डुंगरे जे साखी लखावी छे, "व्यवहारनी जाळ पांदडे पांदडे परजळी" ए पद जेमां पहेलुं छे ते यथार्थ छे. उपाधिथी उदास थयेलां चित्तने धीरजनो हेतु थाय एवी साखी छे.

५११. मुंबई. वैशाख वद १४ गुरु. १९५१.

शरण (आश्रय) अने निश्चय कर्त्तव्य छे, अधीरजथी खेद कर्त्तव्य नथी, चित्तने देहादि भयनो विक्षेप पण करवो योग्य नथी. अस्थिर परिणाम उपशमाववायोग्य छे.

५१२. मुंबई. जेठ सुद २ रवि. १९५१.

अपारवत् संसारसमुद्रथी तारनार एवा सद्धर्मनो निष्कारण करुणाथी जेणे उपदेश कर्यो छे ते ज्ञानीपुरुषना उपकारने नमस्कार हो! नमस्कार हो!

मने निवृत्ति घणुं करी मळी शके तेम छे. पण आ क्षेत्र स्वभावे प्रवृत्तिविशेष वाळुं छे; जेथी निवृत्तिक्षेत्रे जेवो सत्समागमथी आत्मपरिणामनो उत्कर्ष थाय छे, तेवो घणुं करी प्रवृत्तिविशेष-क्षेत्रे थवो कठण पडे छे. कोई वखत विचारवानने तो प्रवृत्ति क्षेत्रमां सत्समागम विशेष लाभकारक थई पडे छे. **ज्ञानीपुरुषनी, भीडमां निर्मळ दशा जोवानुं बने छे.** ए आदि निमित्तथी विशेष लाभकारक पण थाय छे. परपरिणतिनां कार्य करवानो प्रसंग रहे अने स्वपरिणतिमां स्थिति राख्या करवी ते चौदमा जिननी सेवा श्री आनंदघनजीए कही छे, तेथी पण विशेष दोहलुं छे.

ज्ञानीपुरुषने नववाडविशुद्ध ब्रह्मचर्य दशा वर्त्ते त्यारथी जे संयम सुख प्रगटे छे ते अवर्णनीय छे. उपदेशमार्ग पण ते सुख प्रगट्ये प्ररूपवायोग्य छे.

५१३. मुंबई. जेठ सुद १० रवि. १९५१.

ॐ

घणा मोटा पुरुषोना रिद्धीयोग संबंधी शास्त्रमां वात आवे छे, तथा लोक कथामां तेवी वातो संभळाय छे, ते माटे आपने संशय रहे छे, तेनो संक्षेपमां आ प्रमाणे उत्तर छे:—

अष्ट महासिद्धि आदि जे जे सिद्धिओ कही छे, 'ॐ' आदि मंत्रयोग कह्या छे, ते सर्व साचां छे. आत्मैश्वर्य पासे ए सर्व अल्प छे. ज्यां आत्मस्थिरता छे, त्यां सर्व प्रकारना सिद्धियोग वसे छे. आ काळमां तेवा पुरुषो देखाता नथी, तेथी तेनी अप्रतीति आववानुं कारण छे, पण वर्त्तमानमां कोईक जीवमां ज तेवी स्थिरता जोवामां आवे छे. घणां जीवोमां सत्त्वनुं न्यूनपणुं वर्त्ते छे, अने ते कारणे तेवा चमत्कारादिनुं देखावापणुं नथी, पण तेनुं अस्तित्व नथी एम नथी. तमने अंदेशो रहे छे ए आश्चर्य लागे छे. जेने आत्मप्रतीति उत्पन्न थाय तेने सहेजे ए वातनुं निःशंकपणुं थाय छे. **केमके आत्मामां जे समर्थपणुं छे, ते समर्थपणा पासे ए सिद्धिलब्धिनुं कांई विशेषपणुं नथी.**

एवां प्रश्नो कोई कोई वार लखोछो तेनुं शुं कारण छे, ते जणावशो. ए प्रकारनां प्रश्नो विचारवानने केम होय?

५१४.

मनमां रागद्वेषादिनां परिणाम थयां करे छे, ते समयादि पर्याय न कही शकाय; केमके समयनुं अत्यंत सूक्ष्मपणुं छे, अने मनपरिणामनुं सूक्ष्मपणुं तेवुं नथी. पदार्थनो अत्यंतमां अत्यंत सूक्ष्म परिणतिनो प्रकार छे ते समय छे.

रागद्वेषादि विचारोनुं उद्भव थवुं ते जीवे पूर्वोपार्जित करेलां कर्मना योगथी छे; वर्त्तमानकाळमां आत्मानो पुरुषार्थ कंई पण तेमां हानिवृद्धिमां कारणरूप छे, तथापि ते विचार विशेष गहन छे.

श्री जिने जे स्वाध्याय काळ कह्या छे, ते यथार्थ छे. ते ते प्रसंगे प्राणादिनो कंई संधिभेद थाय छे. चित्तने विक्षेप निमित्त सामान्य प्रकारे होय छे, हिंसादि योगनो प्रसंग होय छे, अथवा कोमळ परिणाममां विघ्नभूत कारण होय छे, ए आदि आश्रये स्वाध्यायनुं निरुपण कर्युं छे.

अमुक स्थिरता थतांसुधी विशेष लखवानुं बनी शके तेम नथी; तो पण बन्यो तेटलो प्रयास करी आ ३ पत्तां लख्यां छे.

५१५. मुंबई. जेठ सुद १५ शुक्र. १९५१.

तथारूप गंभीर वाक्य नथी, तोपण आशय गंभीर होवाथी एक लौकिक वचननुं आत्मामां हाल घणी वार स्मरण थई आवे छे. ते वाक्य आ प्रमाणे छे.—"रांडी रूए, मांडी रूए, पण सात भरतार वाळी तो मोढुं ज न उघाडे." वाक्य अगंभीर होवाथी लखवामां प्रवृत्ति न थात, पण आशय गंभीर होवाथी अने पोताने विषे विचारवानुं विशेष देखावाथी तमने पत्तुं लखवानुं स्मरण थतां आ वाक्य लख्युं छे, तेना पर यथाशक्ति विचार करशो.

५१६. मुंबई. जेठ वद २ रवि. १९५१.

विचारवानने देह छूटवा संबंधी हर्ष विषाद घटे नहीं. **आत्मपरिणामनुं विभावपणुं ते ज हानि अने ते ज मुख्य मरण छे.** स्वभाव सन्मुखता,—तेवी इच्छा ते हर्ष विषाद टाळे छे.

५१७. मुंबई. जेठ वद ५ बुध. १९५१.

सर्वने विषे समभावनी इच्छा रहे छे.

ए श्रीपाळनो रास करतां, ज्ञान अमृत रस वुठ्यो रे, मुज०

(श्री यशोविजयजी.)

तीव्र वैराग्यवानने, जे उदयना प्रसंग शिथिळ करवामां घणीवार फळीभूत थाय छे, तेवा उदयना प्रसंग जोई चित्तमां अत्यंत उदासपणुं आवे छे. आ संसार क्यां कारणे परिचय करवायोग्य छे? तथा तेनी निवृत्ति इच्छनार एवा विचारवानने प्रारब्धवशात् तेनो प्रसंग रह्या करतो होय तो ते प्रारब्ध बीजे कोई प्रकारे त्वराए वेदी शकाय के केम? ते तमे तथा श्री डुंगर विचार करीने लखशो.

जे तीर्थंकरे ज्ञाननुं फळ विरति कह्युं छे, ते तीर्थंकरने अत्यंत भक्तिए नमस्कार हो.

नहीं इच्छवामां आवतां छतां जीवने भोगववुं पडे छे, ए पूर्वे कर्मनो संबंध यथार्थ सिद्ध करे छे.

५१८. मुंबई. जेठ. १९५१.

ज्ञानीना मार्गना आशयने उपदेशनारां वाक्यो.

१. सहज स्वरूपे जीवनी स्थिति थवी तेने श्री वीतराग मोक्ष कहे छे.

२. सहज स्वरूपथी जीव रहित नथी, पण ते सहज स्वरूपनुं मात्र भान जीवने नथी, जे थवुं ते ज सहज स्वरूपे स्थिति छे.

३. संगना योगे आ जीव सहज स्थितिने भूल्यो छे, संगनी निवृत्तिए सहज स्वरूपनुं अपरोक्ष भान प्रगटे छे.

४. एज माटे सर्व तीर्थंकरादि ज्ञानीओए असंगपणुं ज सर्वोत्कृष्ट कह्युं छे; के जेनां अंगे सर्व आत्मसाधन रह्यां छे.

५. सर्व जिनागममां कहेलां वचनो एक मात्र असंगपणामां ज शमाय छे, केमके ते थवाने अर्थे ज ते सर्व वचनो कह्यां छे. एक परमाणुथी मांडी चौद राजलोकनी अने मेषान्मेषथी मांडी शैलेशीअवस्थापर्यंतनी सर्व क्रिया वर्णवी छे, ते ए ज असंगता समजाववाने अर्थे वर्णवी छे.

६. सर्व भावथी असंगपणुं थवुं ते सर्वथी दुष्करमां दुष्कर साधन छे; अने ते निराश्रयपणे सिद्ध थवुं अत्यंत दुष्कर छे. एम विचारी श्री तीर्थंकरे सत्संगने तेनो आधार कह्यो छे; के जे सत्संगना योगे सहज स्वरूपभूत एवुं असंगपणुं जीवने उत्पन्न थाय छे.

७. ते सत्संग पण जीवने घणीवार प्राप्त थया छतां फळवान थयो नथी एम श्री वीतरागे कह्युं छे, केमके ते सत्संगने ओळखी आ जीवे तेने परमहितकारी जाण्यो नथी, परमस्नेहे उपास्यो नथी, अने प्राप्त पण अप्राप्त फळवान थवायोग्य संज्ञाए विसर्जन कर्यो छे, एम कह्युं छे. आ अमे कह्युं ते ज वातनी विचारणाथी अमारा आत्मामां आत्मगुण आविर्भाव पामी सहज समाधि पर्यंत प्राप्त थया एवा सत्संगने हुं अत्यंत अत्यंत भक्तिए नमस्कार करूं छुं.

८. अवश्य आ जीवे प्रथम सर्व साधनने गौण जाणी, निर्वाणनो मुख्य हेतु एवो सत्संग ज सर्वार्पणपणे उपासवो योग्य छे के जेथी सर्व साधन सुलभ थाय छे, एवो अमारो आत्मसाक्षात्कार छे.

९. ते सत्संग प्राप्त थये जो आ जीवने कल्याण प्राप्त न थाय तो अवश्य आ जीवनो ज वांक छे; केमके ते सत्संगना अपूर्व, अलभ्य, अत्यंत दुर्लभ एवा योगमां पण तेणे ते सत्संगना योगने बाध करनार एवां माठां कारणोनो त्याग न कर्यो!

१०. मिथ्याग्रह, स्वच्छंदपणुं, प्रमाद अने इंद्रिय विषयथी उपेक्षा करी होय तो ज सत्संग फळवान थाय नहीं, अथवा सत्संगमां एक निष्ठा, अपूर्व भक्ति आणी न होय तो फळवान थाय नहीं. जो एक एवी अपूर्व भक्तिथी सत्संगनी उपासना करी होय तो अल्पकाळमां मिथ्या ग्रहादि नाश पामे अने अनुक्रमे सर्व दोषथी जीव मुक्त थाय.

११. सत्संगनी ओळखाण थवी जीवने दुर्लभ छे. कोई महत् पुण्ययोगे ते ओळखाण थये निश्चय करी आ ज सत्संग, सत्पुरुष छे एवो साक्षीभाव उत्पन्न थयो होय ते जीवे तो अवश्य करी प्रवृत्तिने संकोचवी; पोताना दोष क्षणे क्षणे, कार्ये कार्ये अने प्रसंगे प्रसंगे तिक्ष्ण उपयोगे करी जोवा, जोईने ते परिक्षीण करवा; अने ते सत्संगने अर्थे देह त्याग करवानो योग थतो होय तो ते स्वीकारवो. पण तेथी कोई पदार्थने विषे विशेष भक्ति-स्नेह थवा देवो योग्य नथी. तेम प्रमादे रसगारवादि दोषे ते सत्संग प्राप्त थये पुरुषार्थ धर्म मंद रहे छे, अने सत्संग फळवान थतो नथी एम जाणी पुरुषार्थ वीर्य गोपववुं घटे नहीं.

१२. सत्संगनुं एटले सत्पुरुषनुं ओळखाण थये पण ते योग निरंतर रहेतो न होय तो सत्संगथी प्राप्त थयो छे एवो जे उपदेश ते प्रत्यक्ष सत्पुरुष तुल्य जाणी विचारवो तथा आराधवो के जे आराधनथी जीवने अपूर्व एवुं सम्यक्त्व उत्पन्न थाय छे.

१३. जीवे मुख्यमां मुख्य अने अवश्यमां अवश्य एवो निश्चय राखवो के **जे कंई मारे करवुं छे ते आत्माने कल्याणरूप थाय ते ज करवुं छे,** अने ते ज अर्थे आ त्रण योगनी उदयबळे प्रवृत्ति थती होय तो थवा दे, तोपण छेवटे ते त्रियोगथी रहित एवी स्थिति करवाने अर्थे ते प्रवृत्तिने संकोचतां संकोचतां क्षय थाय ए ज उपाय कर्त्तव्य छे. ते उपाय मिथ्याग्रहनो त्याग, स्वच्छंदपणानो त्याग, प्रमाद अने इंद्रिय विषयनो त्याग ए मुख्य छे. ते सत्संगना योगमां अवश्य आराधन कर्यां ज रहेवां अने सत्संगना परोक्षपणामां तो अवश्य अवश्य आराधन कर्यां ज करवां, केमके सत्संग प्रसंगमां तो जीवनुं कंईक न्यूनपणुं होय तो ते निवारण थवानुं सत्संग साधन छे, पण सत्संगना परोक्षपणामां तो एक पोतानुं आत्मबळ ज साधन छे. जो ते आत्मबळ सत्संगथी प्राप्त थयेला एवा बोधने अनुसरे नहीं, तेने आचरे नहीं, आचरवामां थता प्रमादने छोडे नहीं, तो कोई दिवसे पण जीवनुं कल्याण थाय नहीं.

संक्षेपमां लखायलां ज्ञानीनां मार्गना आशयने उपदेशनारां आ वाक्यो मुमुक्षु जीवे पोताना

आत्माने विषे निरंतर परिणामी करवा योग्य छे. जे पोताना आत्मगुणने विशेष विचारवा शब्द-रूपे अमे लख्यां छे.

५१९. मुंबई. जेठ शुद १० रवि. १९५१.

(१)

ज्ञानीपुरुषने जे सुख वर्त्ते छे, ते निज स्वभावमां स्थिरतानुं, स्थितिनुं वर्त्ते छे. अन्य, बाह्य पदार्थमां तेने सुखबुद्धि नथी, माटे ते ते पदार्थथी ज्ञानीने सुखदुःखादिनुं विशेषपणुं के ओछापणुं कही शकातुं नथी. जो के सामान्यपणे शरीरनां स्वास्थ्यादिथी शाता अने ज्वरादिथी अशाता ज्ञानी अने अज्ञानी बन्नेने थाय छे, तथापि ज्ञानीने ते ते प्रसंग हर्ष विषादनो हेतु नथी, अथवा ज्ञानना तारतम्यमां न्यूनपणुं होय तो कंईक हर्ष विषाद तेथी थाय छे, तथापि केवळ अजागृतताने पामवायोग्य एवा हर्ष विषाद थता नथी. उदयबळे कंईक तेवां परिणाम थाय छे, तोपण विचार जागृतिने लीधे ते उदय क्षीण करवा प्रत्ये ज्ञानीपुरुषनां परिणाम वर्त्ते छे.

वायु फेर होवाथी वहाणनुं बीजी तरफ खेंचावुं थाय छे, तथापि वहाण चलावनार जेम पहोंचवा योग्य मार्ग भणी ते वहाणने राखवाना प्रयत्नमां ज वर्त्ते छे, तेम ज्ञानीपुरुष मन वचनादि योगने निजभावमां स्थिति थवा भणी ज प्रवर्तावे छे; तथापि उदय वायुयोगे यत्किंचित् दशाफेर थाय छे, तोपण परिणाम प्रयत्न स्वधर्मने विषे छे.

ज्ञानी निर्धन होय अथवा धनवान होय, अज्ञानी निर्धन होय अथवा धनवान होय एवो कंई नियम नथी. पूर्व निष्पन्न शुभ–अशुभ कर्म प्रमाणे बन्नेने उदय वर्त्ते छे. ज्ञानी उदयमां सम वर्त्ते छे; अज्ञानी हर्ष विषाद प्राप्त थाय छे.

ज्यां संपूर्ण ज्ञान छे. त्यां तो स्त्रियादि परिग्रहनो पण अप्रसंग छे. तेथी न्यून भूमिकानी ज्ञान दशामां (चोथे, पांचमे गुणस्थानके ज्यां ते योगनो प्रसंग संभवे छे, ते दशामां) वर्त्तता ज्ञानी सम्यक्‌दृष्टिने स्त्रियादि परिग्रहनी प्राप्ति थाय छे.

(२)

पर पदार्थथी जेटले अंशे हर्ष विषाद तेटलुं ज्ञाननुं तारतम्य ओछुं एम सर्वज्ञे कह्युं छे.

५२०. मुंबई. अशाड शुद १ रवि. १९५१.

१. सत्यनुं ज्ञान थया पछी मिथ्या प्रवृत्ति न टळे एम बने नहीं. केमके जेटले अंशे सत्यनुं ज्ञान थाय तेटले अंशे मिथ्याभावप्रवृत्ति मटे, एवो जिननो निश्चय छे. कदी पूर्व प्रारब्धथी बाह्य प्रवृत्तिनो उदय वर्त्ततो होय तोपण मिथ्या प्रवृत्तिमां तादात्म्य थाय नहीं ए ज्ञाननुं लक्षण छे. अने नित्य प्रत्ये मिथ्या प्रवृत्ति परिक्षीण थाय एज सत्य ज्ञाननी प्रतीतिनुं फळ छे. मिथ्या प्रवृत्ति कंई पण टळे नहीं, तो सत्यनुं ज्ञान पण संभवे नहीं.

२. देवलोकमांथी जे मनुष्यमां आवे तेने लोभ वधारे होय ए आदि कह्युं छे ते सामान्यपणे छे, एकांत नथी.

५२१. मुंबई. अशाड शुद १ रवि. १९५१.

अमुक वनस्पतीनी अमुक ऋतुमां जेम उत्पत्ति थाय छे तेम अमुक ऋतुमां विपरिणाम पण थाय छे. सामान्य रीते केरीना रस स्पर्शनुं विपरिणाम आर्द्रा नक्षत्रमां थाय छे. आर्द्रा नक्षत्र पछी जे केरी उत्पन्न थाय छे तेनो विपरिणाम काळ आर्द्रा नक्षत्र छे, एम नथी. पण सामान्यपणे चैत्र वैशाखादि मासमां उत्पन्न थती केरी परत्वे आर्द्रा नक्षत्रे विपरिणामीपणुं संभवे छे.

५२२.

अहोरात्र घणुं करी विचार दशा रह्या करे छे; जे संक्षेपमां पण लखवानुं बनी शकतुं नथी. समागममां कंई प्रसंगोपात कही शकाशे तो तेम करवा इच्छा रहे छे, केमके तेथी अमने पण हितकारक स्थिरता थशे.

कबीरपंथी त्यां आव्या छे; तेमनो समागम करवामां बाध संभवतो नथी; तेम ज कोई तेमनी प्रवृत्ति यथायोग्य न लागती होय तो ते वातपर वधारे लक्ष न देतां कंई तेमना विचारनुं अनुकरण करवायोग्य लागे ते विचारवुं. वैराग्यवान होय तेनो समागम केटलाक प्रकारे आत्मभावनी उन्नति करे छे.

लोकसंबंधी समागमथी उदासभाव विशेष रहे छे. तेम ज एकांत जेवा योग विना केटलीक प्रवृत्तिनो रोध करवो बनी शके नहीं.

५२३. मुंबई. अशाड शुद ११ बुध. १९५१.

(१) जे कषाय परिणामथी अनंतसंसारनो संबंध थाय ते कषाय परिणामने जिनप्रवचनमां **अनंतानुबंधी** संज्ञा कही छे. जे कषायमां तन्मयपणे अप्रशस्त (माठा) भावे तीव्रोपयोगे आत्मानी प्रवृत्ति छे, त्यां अनंतानुबंधीनो संभव छे. मुख्य करीने अहीं कह्यां छे, ते स्थानके ते कषायनो विशेष संभव छेः—सत्देव, सद्गुरु अने सत्धर्मनो जे प्रकारे द्रोह थाय, अवज्ञा थाय तथा विमुख भाव थाय ए आदि प्रवृत्तिथी, तेम ज असत्देव, असद्गुरु तथा असत्धर्मनो जे प्रकारे आग्रह थाय, ते संबंधी कृतकृत्यता मान्य थाय ए आदि प्रवृत्तिथी प्रवर्त्ततां अनंतानुबंधी कषाय संभवे छे, अथवा ज्ञानीना वचनमां स्त्रिपुत्रादि भावोने जे मर्यादा पछी इच्छतां निर्ध्वंश परिणाम कह्यां छे, ते परिणामे प्रवर्त्ततां पण अनंतानुबंधी होवा योग्य छे. संक्षेपमां अनंतानुबंधी कषायनी व्याख्या ए प्रमाणे जणाय छे.

(२) जे पुत्रादि वस्तु लोकसंज्ञाए इच्छवायोग्य गणाय छे, ते वस्तु दुःखदायक अने असारभूत जाणी प्राप्त थया पछीं नाश पाम्या छतां पण इच्छवायोग्य लागती न होती, तेवा पदार्थनी हाल इच्छा उत्पन्न थाय छे, अने तेथी अनित्य भाव जेम बळवान थाय तेम करवानी जिज्ञासा उद्भवे छे, ए आदि उदाहरण साथे लख्युं ते वांच्युं छे. जे पुरुषनी ज्ञानदशा स्थिर रहेवायोग्य छे, एवा ज्ञानीपुरुषने पण संसार प्रसंगनो उदय होय तो जागृतपणे प्रवर्त्तवुं घटे छे, एम वीतरागे कह्युं छे, ते अन्यथा नथी; अने आपणे सौए जागृतपणे प्रवर्त्तवुं करवामां कंई शिथिळता राखीए

तो ते संसार प्रसंगथी बाध थतां वार न लागे एवो उपदेश ए वचनोथी आत्मामां परिणामी करवायोग्य छे, एमां संशय घटतो नथी. प्रसंगनी साव निवृत्ति अशक्य थती होय तो प्रसंग संक्षेप करवो घटे, अने क्रमे करीने साव निवृत्तिरूप परिणाम आणवुं घटे, ए मुमुक्षु पुरुषनो भूमिका धर्म छे. सत्संग, सत्शास्त्रना योगथी ते धर्मनुं आराधन विशेषे करी संभवे छे.

५२४. मुंबई. अशाड सुद १३ गुरु. १९५१.

श्रीमद् वीतरागाय नमः

(१) केवळज्ञाननुं स्वरूप शा प्रकारे घटे छे?

(२) आ भरतक्षेत्रमां आ काळे तेनो संभव होई शके के केम?

(३) केवळज्ञानीने विषे केवा प्रकारनी आत्मस्थिति होय?

(४) सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान अने केवळज्ञानना स्वरूपमां केवा प्रकारे भेद होवायोग्य छे?

(५) सम्यक्दर्शनवान पुरुषनी आत्मस्थिति केवी होय?

उपर जणावेला बोलपर यथाशक्ति विशेष विचार करवायोग्य छे. ते संबंधी पत्रवाटे तमाराथी लखावा योग्य ते लखशो.

हाल अत्रे उपाधिनुं केटलुंक ओछापणुं छे.

५२५. मुंबई. अशाड वद २ रवि. १९५१.

श्रीमद् वीतरागने नमस्कार.

सत्समागम अने सत्शास्त्रना लाभने इच्छता एवा मुमुक्षुओने आरंभ, परिग्रह अने रसस्वादादि प्रतिबंध संक्षेप करवायोग्य छे, एम श्री जिनादि महापुरुषोए कह्युं छे. ज्यांसुधी पोताना दोष विचारी संक्षेप करवाने प्रवृत्तिमान न थवाय त्यांसुधी सत्पुरुषनो कहेलो मार्ग परिणाम पामवो कठण छे. आ वातपर मुमुक्षु जीवे विशेष विचार करवो घटे छे.

५२६. अशाड. वद ७ रवि. १९५१.

ॐ नमो वीतरागाय.

(१) आ भरतक्षेत्रने विषे आ काळमां केवळज्ञान संभवे के केम? ए वगेरे प्रश्नो लख्यां हतां, तेना उत्तरमां तमारा तथा श्री लहेराभाईना विचार, मळेलां पत्रथी विशेष करी जाण्या छे. ए प्रश्नोपर तमने, लहेराभाईने तथा श्री डुंगरने विशेष विचार कर्त्तव्य छे. अन्य दर्शनमां जे प्रकारे केवळ ज्ञानादिनां स्वरूप कह्यां छे, तेमां अने जैन दर्शनमां ते विषयनां स्वरूप कह्यां छे, तेमां केटलोक मुख्यभेद जोवामां आवे छे, ते सौप्रत्ये विचार थई समाधान थाय तो आत्माने कल्याणना अंगभूत छे; माटे ए विषयपर वधारे विचार थाय तो सारूं.

(२) "अस्ति" * ए पदथी मांडीने आत्मार्थे सर्वभाव विचारवायोग्य छे; तेमां जे स्वस्वरूप प्राप्तिना हेतु छे, ते मुख्यपणे विचारवायोग्य छे, अने ते विचार माटे अन्य पदार्थना विचारनी पण अपेक्षा रहे छे, ते अर्थे ते पण विचारवायोग्य छे.

* अं. ४०६ (२).

एक बीजां दर्शननो मोटो भेद जोवामां आवे छे, ते सर्वनी तुल्यना करी अमुक दर्शन साचुं छे एवो निर्धार बधा मुमुक्षुथी थवो दुष्कर छे, केमके ते तुल्यना करवानी क्षयोपशमशक्ति कोईक जीवने होय छे. वळी एक दर्शन सर्वांशे सत्य अने बीजां दर्शन सर्वांशे असत्य एम विचारमां सिद्ध थाय तो बीजां दर्शननी प्रवृत्ति करनारनी दशा आदि विचारवायोग्य छे, केमके वैराग्य उपशम जेनां बळवान छे तेणे केवळ असत्यनुं निरुपण केम कर्युं होय? ए आदि विचारवा योग्य छे. वळी सर्व जीवथी आ विचार थवो दुलभ छे. अने ते विचार कार्यकारी पण छे, करवा योग्य छे, पण ते कोई महात्म्यवानने थवायोग्य छे. त्यारे बाकी जे मोक्षना इच्छक जीवो छे, तेणे ते संबंधी शुं करवुं घटे? ते पण विचारवायोग्य छे.

सर्व प्रकारनां सर्वांग समाधान विना सर्व कर्मथी मुक्त थवुं अशक्य छे, एवो विचार अमारा चित्तमां रहे छे, अने सर्व प्रकारनुं समाधान थवा माटे अनंतकाळ पुरुषार्थ करवो पडतो होय तो घणुं करी कोई जीव मुक्त थई शके नहीं, तेथी एम जणाय छे के अल्प काळमां ते सर्व प्रकारनां समाधानना उपाय होवायोग्य छे. जेथी मुमुक्षु जीवने निराशानुं कारण पण नथी.

(३) श्रावण शुद ५–६ उपर अत्रेथी निवृत्तवानुं बने एम जणाय छे. ज्यां क्षेत्र स्पर्शना हशे त्यां स्थिति थशे.

५२७.

	वेदांत,	जिन,	सांख्य,	योग,	नैयायिक,	बौध.
आत्मा.						
नित्य.						
अनित्य.	+	,,	+	+	+	,,
परिणामी.	+	,,	+	+	+	+
अपरिणामी.						
साक्षी.						
साक्षी–कर्त्ता.						

५२८.

(१) सांख्य कहे छे के बुद्धि जड छे. पातंजळी, वेदांत एम ज कहे छे.
जिन कहे छे के बुद्धि चेतन छे.

(२) वेदांत कहे छे के आत्मा एक ज छे. जिन कहे छे के आत्मा अनंत छे.
जाति एक छे. सांख्य पण तेम ज कहे छे; पातंजली पण तेम ज कहे छे,

(३) वेदांत कहे छे के आ समस्त विश्व वंध्यापुत्रवत् छे.
जिन कहे छे के आ समस्त विश्व शाश्वत छे.

(४) पातंजली कहे छे, के नित्य मुक्त एवो एक ईश्वर होवो जोईए.
सांख्य ना कहे छे. जिन ना कहे छे.

५२९. मुंबई. अशाड वद ११ गुरु. १९५१.

जे विचारवान पुरुषनी दृष्टिमां संसारनुं स्वरूप नित्य प्रत्ये क्लेशस्वरूप भास्यमान थतुं होय, संसारिक भोगोपभोग विषे विरसपणा जेवुं जेने वर्त्ततुं होय तेवा विचारवानने बीजी तरफ लोक व्यवहारादि, व्यापारादि उदय वर्त्ततो होय, तो ते उदय प्रतिबंध इंद्रियना सुखने अर्थे नहीं पण आत्महितार्थे टाळवो होय तो टाळी शकवाना शा उपाय जोईए? ते संबंधी कंई जणाववानुं थाय तो करशो.

५३०. मुंबई. अशाड वद १४ रवि. १९५१.

ॐ

जे प्रकारे सहज बनी आवे ते करवा प्रत्ये परिणति रहे छे, अथवा छेवटे कोई उपाय न चाले तो बळवान कारणने बाध न थाय तेम प्रवर्त्तवानुं थाय छे. केटलाक वखतना व्यवहारिक प्रसंगना कंटाळाथी थोडो वखत पण निवृत्तिथी कोई तथारूप क्षेत्रे रहेवाय तो सारूं, एम चित्तमां रह्या करतुं हतुं, तेम ज अत्रे वधारे वखत स्थिति थवाथी जे देहना जन्मना निमित्त कारण छे एवां मातापितादिना वचनार्थे, चित्तनी प्रियताना अक्षोभार्थे तथा कंईक बीजाओनां चित्तनी अनुप्रेक्षार्थे पण थोडा दिवस ववाणीए जवानो विचार उत्पन्न थयो हतो. ते बन्ने प्रकार माटे क्यारे योग थाय तो सारूं, एम चिंतव्याथी कंई यथायोग्य समाधान थतुं न होतुं. ते माटेना विचारनी सहज थयेली विशेषताथी हाल जे कंई विचारनुं अल्पपणुं स्थिर थयुं ते तमने जणाव्युं हतुं. सर्व प्रकारना असंग लक्षनो विचार अत्रेथी अप्रसंग गणी, दूर राखी अल्पकाळनी अल्प असंगतानो हाल कंई विचार राख्यो छे, ते पण सहज स्वभावे उदयानुसार थयो छे. श्रावण वद ११थी भादरवा शुद १०नी लगभग सुधी कोई निवृत्ति क्षेत्रे स्थिति थाय तेम यथाशक्ति उदय उपशम जेम राखी प्रवर्त्तवु, जो के विशेष निवृत्ति उदयनुं स्वरूप जोतां प्राप्त थवी कठण जणाय छे.

एक पण प्रसंगमां प्रवर्त्ततां तथा लखतां जे प्राये अक्रिय परिणति वर्त्ते छे, ते परिणतिने लीधे बराबर विचार हाल जणाववानुं बनतुं नथी. सहजात्मस्वरूपे यथायोग्य.

५३१. मुंबई. अशाड वद ,, सोम. १९५१.

ॐ नमो वीतरागाय.

(१) सर्व प्रतिबंधथी मुक्त थया विना सर्व दुःखथी मुक्त थवुं संभवतुं नथी.

(२) जन्मथी जेने मति, श्रुत अने अवधि ए त्रण ज्ञान हतां, अने आत्मोपयोगी एवी वैराग्य-दशा हती, अल्प काळमां भोगकर्म क्षीण करी संयमने ग्रहण करतां मनःपर्यव नामनुं ज्ञान पाम्या हता, एवा श्रीमद् महावीरस्वामी, ते छतां पण बार वर्ष अने साडा छ मास सुधी मौन पणे विचर्या! आ प्रकारनुं तेमनुं प्रवर्त्तन ते उपदेश मार्ग प्रवर्त्तावतां कोई पण जीवे अत्यंत पणे विचारी प्रवर्त्तवायोग्य छे एवी अखंड शिक्षा प्रतिबोधे छे. तेम ज जिन जेवाए जे प्रतिबंधनी

निवृत्तिमाटे प्रयत्न कर्युं, ते प्रतिबंधमां अजागृत रहेवायोग्य कोई जीव न होय एम जणाव्युं छे, तथा अनंत आत्मार्थनो ते प्रवर्चनथी प्रकाश कर्यो छे, जेवा प्रकारप्रत्ये विचारवानुं विशेष स्थिरपणुं वर्ते छे, वर्त्तावुं घटे छे.

जे प्रकारनुं पूर्व प्रारब्ध भोगव्ये निवृत्त थवायोग्य छे, ते प्रकारनुं प्रारब्ध उदासीनपणे वेदवुं घटे, जेथी ते प्रकारप्रत्ये प्रवर्त्तता जे कंई प्रसंग प्राप्त थाय छे ते ते प्रसंगमां जागृत उपयोग न होय, तो जीवने समाधि विराधना थतां वार न लागे, ते माटे, सर्वसंगभावने मूळपणे परिणामी करी, भोगव्या विना न छूटी शके तेवा प्रसंगप्रत्ये प्रवृत्ति थवा देवी घटे, तोपण ते प्रकार करतां सर्वांश असंगता जन्मे ते प्रकार भजवो घटे.

केटलाक वखत थयां **सहज प्रवृत्ति** अने **उदीरण प्रवृत्ति** एम विभागे प्रवृत्ति वर्ते छे. मुख्य पणे सहज प्रवृत्ति वर्ते छे. सहज प्रवृत्ति एटले प्रारब्धोदये उद्भव थाय ते, पण जेमां कर्त्तव्य परिणाम नहीं. बीजी उदीरण प्रवृत्ति–जे परार्थादियोगे करवी पडे ते. हाल बीजी प्रवृत्ति थवामां आत्मा संक्षेप थाय छे. केमके अपूर्व एवा समाधियोगने ते कारणथी पण प्रतिबंध थाय छे एम सांभळ्युं हतुं तथा जाण्युं हतुं; अने हाल तेवुं स्पष्टार्थे वेद्युं छे. ते ते कारणोथी वधारे समागममां आववानुं, पत्रादिथी कंई पण प्रश्नोत्तरादि जणाववानुं, तथा बीजा प्रकारे परमार्थादि लखवा करवानुं पण संक्षेप थवाना पर्यायने आत्मा भजे छे. एवा पर्यायने भज्याविना अपूर्व समाधिने हानि संभवती हती. एम छतां पण थवायोग्य एवी संक्षेप प्रवृत्ति थई नथी.

५३२. मुंबई. अशाड वद ,, १९५१.

अनंतानुबंधीनो बीजो * प्रकार लख्यो छे ते विषे विशेषार्थ नीचे लख्याथी जाणशो.

उदयथी अथवा उदासभावसंयुक्त मंदपरिणतबुद्धिथी भोगादिने विषे प्रवृत्ति थाय त्यांसुधीमां ज्ञानीनी आज्ञापर पग मुकीने प्रवृत्ति थई न संभवे, पण ज्यां भोगादिने विषे तीव्र तन्मयपणे प्रवृत्ति थाय त्यां ज्ञानीनी आज्ञानी कंई अंकुशता संभवे नहीं, निर्भयपणे भोग प्रवृत्ति संभवे, जे निर्ध्वंश परिणाम कह्यां छे; तेवां परिणाम वर्ते त्यां पण अनंतानुबंधी संभवे छे. तेम ज हुं समजुं छुं, मने बाध नथी एवानेएवा बफममां रहे, अने भोगथी निवृत्ति घटे छे, अने वळी कंई पण पुरुषत्व करे तो थई शकवा योग्य छतां पण मिथ्या ज्ञानथी ज्ञानदशा मानी भोगादिकमां प्रवर्त्तना करे त्यां पण अनंतानुबंधी संभवे छे.

जागृतमां जेम जेम उपयोगनुं शुद्धपणुं थाय, तेम तेम स्वप्नदशानुं परिक्षीणपणुं संभवे.

५३३. ववाणीआ. श्रावण शुद १०. १९५१.

सोमवारे रात्रे आशरे अगियार वाग्या पछी जे कंई माराथी वचनयोगनुं प्रकाशवुं थयुं हतुं तेनी स्मृति रही होय तो यथाशक्ति लखाय तो लखशो.

* (अं. ५२३.१)

पर्याय छे ते पदार्थनुं विशेष स्वरूप छे, ते माटे मनःपर्यवज्ञान पण पर्यायार्थिकज्ञान गणी विशेष एवा ज्ञानोपयोगमां गण्युं छे; तेनो सामान्य ग्रहणरूप विषय नहीं भासवाथी दर्शनोपयोगमां गण्युं नथी, एम सोमवारे बपोरे जणाववुं थयुं हतुं; ते प्रमाणे जैन दर्शननो अभिप्राय पण आजे जोयो छे.

आ वात वधारे स्पष्ट लखवाथी समजवानुं थई शके तेवी छे, केमके तेने केटलांक दृष्टांतादिकनुं सहचारीपणुं घटे छे, तथापि अत्रे तो तेम थवुं अशक्य छे.

मनःपर्यवसंबंधी लख्युं छे ते प्रसंग, चर्चवानी निष्ठाथी लख्युं नथी.

५३४. ववाणीआ. श्रावण शुद १२ शुक्रवार. १९५१.

निमित्तवासी आ जीव छे, एवुं एक सामान्य वचन छे. ते संगप्रसंगथी थती जीवनी परिणति विषे जोतां प्राये सिद्धांतरूप लागी शके छे.

५३५. ववाणीआ. श्रावण शुद १५ सोम. १९५१.

आत्मार्थे विचारमार्ग अने भक्तिमार्ग आराधवा योग्य छे; पण विचारमार्गने योग्य जेनुं सामर्थ्य नथी तेने ते मार्ग उपदेशवो न घटे ए वगेरे लख्युं छे, ते योग्य छे तोपण ते विषे कंईपण लखवानुं चित्तमां हाल आवी शकतुं नथी.

श्री.....ए केवळदर्शन संबंधी जणावेली आशंका लखी ते वांची छे. बीजा घणा प्रकार समजाया पछी ते प्रकारनी आशंका शमाय छे, अथवा ते प्रकार समजावायोग्य घणुं करीने थाय छे. एवी आशंका हाल संक्षेप करी अथवा उपशांत करी विशेष निकट एवा आत्मार्थनो विचार करवो घटे छे.

५३६. ववाणीआ. श्रावण वद ६ रवि. १९५१.

ॐ

अत्रे पर्युषण पुरां थतां सुधी स्थिति थवी संभवे छे. केवळज्ञानादि आ काळमां होय ए वगेरे प्रश्नो प्रथम लख्यां हतां ते प्रश्नोपर यथाशक्ति अनुप्रेक्षा तथा परस्पर प्रश्नोत्तर श्री...वगेरेए करवायोग्य छे.

गुणना समुदायथी जूदुं एवुं कंई गुणीनुं स्वरूप होवा योग्य छे के केम? आ प्रश्न प्रत्ये जो तम वगेरेथी बने तो विचार करशो. श्री...ए तो जरूर विचार करवायोग्य छे.

५३७. ववाणीआ. श्रावण वद ११ शुक्र. १९५१.

अत्रेथी प्रसंगे लखेलां चार प्रश्नोना उत्तर लख्या ते वांच्या छे. प्रथमनां बे प्रश्ननां उत्तर संक्षेपमां छे, तथापि यथायोग्य छे. त्रीजा प्रश्ननो उत्तर लख्यो ते सामान्यपणे योग्य छे, तथापि विशेष सूक्ष्म आलोचनथी ते प्रश्ननो उत्तर लखवायोग्य छे, ते त्रीजो प्रश्न आ प्रमाणे छे.

"गुणना समुदायथी जूदुं एवुं गुणीनुं स्वरूप होवा योग्य छे के केम? अर्थात् बधा गुणनो समुदाय ते ज गुणी एटले द्रव्य? के ते गुणना समुदायने आधारभूत एवुं पण कंई द्रव्यनुं

बीजुं होवापणुं छे? तेना उत्तरमां एम लख्युं के आत्मा गुणी छे, तेना गुण ज्ञान दर्शन वगेरे जूदा छे. एम गुणी अने गुणनी विविक्षा करी, तथापि त्यां विशेष विविक्षा करवी घटे छे. ज्ञान-दर्शनादि गुणथी जूदुं एवुं बाकीनुं आत्मापणुं शुं? ते प्रश्न छे. माटे यथाशक्ति ते प्रश्ननी परिचर्या करवायोग्य छे.

चोथो प्रश्न केवळज्ञान आ काळमां होवायोग्य छे के केम? तेनो उत्तर एम लख्यो के प्रमाणथी जोतां ते होवायोग्य छे. ए उत्तर पण संक्षेपथी छे; जे प्रत्ये घणो विचार करवायोग्य छे. ए चोथा प्रश्ननो विशेप विचार थवाने अर्थे तेमां आटलुं विशेष ग्रहण करशो के जे प्रमाणे जैनागममां केवळज्ञान मान्युं छे अथवा कह्युं छे ते केवळज्ञाननुं स्वरूप यथातथ्य कह्युं छे एम भास्यमान थाय छे के केम? अने तेवुं केवळज्ञाननुं स्वरूप होय एम भास्यमान थतुं होय तो ते स्वरूप आ काळमां पण प्रगटवा योग्य छे के केम? किंवा जैनागम कहे छे, तेनो हेतु कहेवानो जूदो कंई छे, अने केवळज्ञाननुं स्वरूप बीजा कोई प्रकारे होवायोग्य छे तथा समजवायोग्य छे? आ वार्त्तापर यथाशक्ति अनुप्रेक्षा करवायोग्य छे. तेम ज त्रीजो प्रश्न छे ते पण घणा प्रकारे विचारवायोग्य छे. विशेष अनुप्रेक्षा करी, ए बन्ने प्रश्नना उत्तर लखवानुं बने तो करशो. प्रथमना बे प्रश्न छे, तेना उत्तर संक्षेपमां लख्या छे, ते विशेषताथी लखवानुं बनी शके एम होय तो ते पण लखशो.

तमे पांच प्रश्नो लख्या छे, तेमांना त्रण प्रश्नना उत्तर अत्रे संक्षेपमां लख्या छे.

प्रथम प्रश्नः-जातिस्मरण-ज्ञानवान पाछळनो भव केवी रीते देखे छे? तेनो उत्तर आप्रमाणे विचारशो.

उ०-नानपणे कोई गाम, वस्तु आदि जोयां होय, अने मोटपणे कोई प्रसंगे ते गामादिनुं आत्मामां स्मरण थाय छे, ते वखते ते गामादिनुं आत्मामां जे प्रकारे भान थाय छे, ते प्रकारे जातिस्मरण ज्ञानवानने पूर्वभवनुं भान थाय छे. कदापि आ ठेकाणे एम प्रश्न थशे के पूर्वभवमां अनुभवेलां एवा देहादिनुं आ भवमां उपर कह्युं तेम भान थाय ए वात यथातथ्य मानीए तोपण पूर्वभवमां अनुभवेलां एवा देहादि अथवा कोई देवलोकादि निवासस्थान अनुभव्यां होय ते अनुभवनी स्मृति थई छे, अने ते अनुभव यथातथ्य थयो छे, ए शा उपरथी समजाय? तो ए प्रश्ननुं समाधान आ प्रमाणे छे. अमुक अमुक चेष्टा अने लिंग तथा परिणाम आदिथी पोताने तेनुं स्पष्ट भान थाय छे, पण बीजा कोई जीवने तेनी प्रतीति थवा माटे तो नियमितपणुं नथी.

क्वचित् अमुक देशमां अमुक गाम अमुक घेर पूर्वे देह धारण थयो होय अने तेनां चिन्ह बीजा जीवने जणाववाथी ते देशादिनुं अथवा तेना निशानादिनुं कंई पण विद्यमानपणुं होय तो बीजा जीवने पण प्रतीतिनो हेतु थवो संभवे; अथवा जातिस्मृति ज्ञानवान करतां जेनुं विशेष ज्ञान छे ते जाणे. तेम ज जेने जातिस्मृति ज्ञान छे, तेनी प्रकृत्यादिने जाणतो एवो कोई विचारवान पुरुष पण जाणे के आ पुरुषने तेवां कंई ज्ञाननो संभव छे, अथवा जातिस्मृति होवी संभवे छे,

अथवा जेने जातिस्मृति ज्ञान छे, ते पुरुषना सबंधमां कोई जीव पूर्व भवे आव्यो छे, विशेष करीने आव्यो छे, तेने ते संबंध जणावतां कंई पण स्मृति थाय तो तेवा जीवने पण प्रतीति आवे.

बीजो प्रश्न :—जीव समये समये मरे छे ते केवी रीते समजवुं; तेनो उत्तर आ प्रमाणे विचारशो :—

उ०—जेम आत्माने स्थूळ देहनो वियोग थाय छे, तेने मरण कहेवामां आवे छे, तेम स्थूळ देहना आयुष्यादि सूक्ष्म पर्यायनो पण समये समये हानि परिणाम थवाथी वियोग थई रह्यो छे, तेथी ते समये समये मरण कहेवायोग्य छे. आ मरण ते व्यवहार नयथी कहेवाय छे. निश्चयथी तो आत्माने स्वाभाविक एवा ज्ञान दर्शनादि गुण पर्यायनी विभाव परिणामना योगने लीधे हानि थया करे छे, अने ते हानि आत्माना नित्यपणांदि स्वरूपने पण ग्रही रहे छे, ते समये समये मरण छे.

त्रीजो प्रश्न —केवळज्ञानदर्शनने विषे गया काळ अने आवता काळना पदार्थ वर्त्तमान काळमां वर्त्तमानपणे देखाय छे, तेम ज देखाय के बीजी रीते? तेनो उत्तर आप्रमाणे विचारशो :—

उ०—वर्त्तमानमां वर्त्तमान पदार्थ जेम देखाय छे, तेम गया काळना पदार्थ गया काळमां जे स्वरूपे हता ते स्वरूपे वर्त्तमान काळमां देखाय छे, अने आवता काळमां ते पदार्थ जे पामशे ते स्वरूपपणे वर्त्तमानकाळमां देखाय छे. भूतकाळमां जे जे पर्याय पदार्थे भज्या छे, ते कारणपणे वर्त्तमानमां पदार्थने विषे रह्या छे अने भविष्यकाळमां जे जे पर्याय भजशे तेनी योग्यता वर्त्तमानमां पदार्थने विषे रही छे. ते कारण अने योग्यतानुं ज्ञान वर्त्तमानकाळमां पण केवळ ज्ञानीने विषे यथार्थ स्वरूपे होई शके. जो के आ प्रश्न प्रत्ये घणा विचार जणाववा योग्य छे.

५३८. ववाणीआ. श्रावण वद १२ शनि. १९५१.

गया शनिवारनो लखेलो कागळ पहोंच्यो छे. ते कागळमां मुख्य करी त्रण प्रश्नो लख्यां छे. तेना उत्तर निचे लख्याथी विचारशो :-

प्र०—प्रथम प्रश्नमां एम जणाव्युं छे के एक मनुष्य प्राणी दिवसने वखते आत्माना गुणवडीए अमुक हद सुधी देखी शके छे, अने रात्रिने वखते अंधारामां कशुं देखतो नथी; वळी बीजे दिवसे पाछुं देखे छे अने वळी रात्रिए अंधारामां कशुं देखतो नथी; तेथी एक अहोरात्रमां चक्षु आप्रमाणे आत्माना गुण उपर अध्यवसाय बदलाया विना नहीं देखवानुं आवरण आवी जतुं हशे? के देखवुं ए आत्मानो गुण नहीं पण सूरजवडीए देखाय छे, माटे सूरजनो गुण होईने तेनी गेरहाजरीमां देखातुं नथी? अने वळी आवी ज रीते सांभळवाना दृष्टांते कान आडुं राखवाथी नथी संभळातुं, त्यारे आत्माना गुण केम भूलाई जवाय छे? तेनो संक्षेपमां उत्तर :—

उ०—ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय कर्मनो अमुक क्षयोपशम थवाथी इंद्रियलब्धि उत्पन्न थाय छे. ते इंद्रियलब्धि सामान्यपणे पांच प्रकारनी कही शकाय छे. स्पर्शेंद्रियथी श्रवणेंद्रियपर्यंत सामान्यपणे मनुष्य प्राणीने पांच इंद्रियनी लब्धिनो क्षयोपशम होय छे. ते क्षयोपशमनी शक्ति अमुक व्याहति थाय त्यांसुधी जाणी देखी शके छे. देखवुं ए चक्षु इंद्रियनो गुण छे.

तथापि अंधकारथी के अमुक छेटे वस्तु होवाथी तेने पदार्थ जोवामां आवी शके नहीं; केमके चक्षु इंद्रियनी क्षयोपशम लब्धिने ते हदे अटकवुं थाय छे, अर्थात् क्षयोपशमनी सामान्यपणे एटली शक्ति छे. दिवसे पण विशेष अंधकार होय अथवा कोई वस्तु घणा अंधारामां पडी होय अथवा अमुक हदथी छेटे होय तो चक्षुथी देखाई शकती नथी; तेम बीजी इंद्रियोनी लब्धि संबंधी क्षयोपशमशक्ति सुधी तेना विषय ज्ञानदर्शननी प्रवृत्ति छे; अमुक व्याघात सुधी ते स्पर्शी शके छे, अथवा सुंघी शके छे, स्वाद ओळखी शके छे, अथवा सांभळी शके छे.

प्र०–बीजा प्रश्नमां एम जणाव्युं छे के आत्माना असंख्यात प्रदेश आखा शरीरमां व्यापक छतां, आंखना वचला भागनी कीकी छे तेथी ज देखी शकाय छे, ते ज प्रमाणे आखा शरीरमां असंख्यात प्रदेश व्यापक छतां एक नाना भाग कानवडीए ज सांभळी शकाय छे; अमुक जगोएथी गंध परीक्षा थाय; अमुक जगोएथी रसनी परीक्षा थाय; जेमके साकरनो स्वाद हाथ पग जाणता नथी, परंतु जीभ जाणे छे. आत्मा आखा शरीरमां सरखी रीते व्यापक छतां अमुक भागेथी ज ज्ञान थाय आनुं कारण शुं हशे? तेनो संक्षेपमां उत्तर:–

उ०–जीवने ज्ञान, दर्शन क्षायिकभावे प्रगट्यां होय तो सर्व प्रदेशे तथाप्रकारनुं तेने निरावरण-पणुं होवाथी एक समये सर्व प्रकारे भावनुं ज्ञायकपणुं होय; पण ज्यां सर्व क्षयोपशमभावे ज्ञानदर्शन वर्त्ते छे, त्यां भिन्न भिन्न प्रकारे अमुक मर्यादामां ज्ञायकपणुं होय. जे जीवने अत्यंत अल्पज्ञान दर्शननी क्षयोपशमशक्ति वर्त्ते छे, ते जीवने अक्षरना अनंतमा भाग जेटलुं ज्ञायकपणुं होय छे. तेथी विशेष क्षयोपशमे स्पर्शेंद्रियनी लब्धि कंईक विशेष व्यक्त (प्रगट) थाय छे; तेथी विशेष क्षयोपशमे स्पर्श अने रसेंद्रियनी लब्धि उत्पन्न थाय छे. एम विशेषताथी उत्तरोत्तर स्पर्श, रस, गंध अने वर्ण तथा शब्दने ग्रहण करवायोग्य एवो पंचेंद्रिय संबंधी क्षयोपशम थाय छे, तथापि क्षयोपशम दशामां गुणनुं समविषमपणुं होवाथी सर्वांगे ते पंचेंद्रिय संबंधी ज्ञान, दर्शन थतां नथी, केमके शक्तिनुं तेवुं तारतम्य (सत्त्व) नथी, के पांचेविषय सर्वांगे ग्रहण करे. यद्यपि अवधि आदि ज्ञानमां तेम थाय छे, पण अत्रे तो सामान्य क्षयोपशम, अने ते पण इंद्रिय सापेक्ष क्षयोपशमनो प्रसंग छे. अमुक नियत प्रदेशमां ज ते इंद्रिय लब्धिनुं परिणाम थाय छे तेनो हेतु क्षयोपशम तथा प्राप्त थयेली योनिनो संबंध छे, के नियत प्रदेशे (अमुक मर्यादा–भागमां) अमुक अमुक विषयनुं जीवने ग्रहण थाय.

प्र०–त्रीजा प्रश्नमां एम जणाव्युं छे के शरीरना अमुक भागमां पीडा होय त्यारे जीव त्यां वळगी रहे छे, तेथी जे भागमां पीडा छे ते भागनी पीडा वेदवा सारू तमाम प्रदेश त्यां खेंचाता हशे? जगत्मां कहेवत छे के ज्यां पीडा होय त्यां जीव वळगी रहे छे, तेनो संक्षेपमां उत्तर:–

उ०–ते वेदना वेदवामां केटलाक प्रसंगे विशेष उपयोग रोकाय छे अने बीजा प्रदेशनुं ते भणी केटलाक प्रसंगमां सहज आकर्षण पण थाय छे. कोई प्रसंगमां वेदनानुं बहुलपणुं होय तो सर्व प्रदेश मूर्च्छागत स्थिति पण भजे छे, अने कोई प्रसंगमां वेदना के भयना बहुलपणे सर्व

प्रदेश एटले आत्मानी दशमद्वार आदि एक स्थानमां स्थिति थाय छे. आम थवानो हेतु पण अव्याबाध नामनो जीव स्वभाव तथा प्रकारे परिणामी नहीं होवाथी, तेम वीर्यांतरायना क्षयोपशमनुं समविषमपणुं होय छे.

आवां प्रश्नो केटलाक मुमुक्षु जीवने विचारनी परिशुद्धिने अर्थे कर्त्तव्य छे, अने तेवां प्रश्नोनुं समाधान जणाववानी चित्तमां सहज क्वचित् इच्छा पण रहे छे. तथापि लखवामां विशेष उपयोग रोकाई शकवानुं घणी मुस्केलीथी थाय छे.

५३९. ववाणीआ. श्रावण वद १४ सोम. १९५१.

प्रथम पदमां एम कह्युं छे, के हे मुमुक्षु, एक आत्माने जाणता समस्त लोकालोकने जाणीश, अने सर्व जाणवानुं फळ पण एक आत्म प्राप्ति छे; माटे आत्माथी जूदा एवा बीजा भावो जाणवानी वारंवारनी इच्छाथी तुं निवृत्त अने एक निजस्वरूपने विषे दृष्टि दे, के जे दृष्टिथी समस्त सृष्टि ज्ञेयपणे तारे विषे देखाशे. तत्त्वस्वरूप एवां सत्शास्त्रमां कहेला मार्गनुं पण आ तत्त्व छे; एम तत्त्वज्ञानीओए कह्युं छे, तथापि उपयोग पूर्वक ते समजातुं दुर्लभ छे. ए मार्ग जूदो छे, अने तेनुं स्वरूप पण जूदुं छे, जेम मात्र कथन ज्ञानीओ कहे छे तेम नथी, माटे ठेकाणे ठेकाणे जईने कां पूछे छे; केमके ते अपूर्वभावनो अर्थ ठेकाणे ठेकाणेथी प्राप्त थवायोग्य नथी.

बीजां पदनो संक्षेप अर्थ :—हे मुमुक्षु! यमनियमादि जे साधनो सर्व शास्त्रमां कह्यां छे, ते उपर कहेला अर्थथी निष्फळ ठरशे एम पण नथी, केमके ते पण कारणने अर्थे छे, ते कारण आ प्रमाणे छे. आत्मज्ञान रही शके एवी पात्रता प्राप्त थवा, तथा तेमां स्थिति थाय तेवी योग्यता आववा ए कारणो उपदेश्यां छे. तत्त्वज्ञानीए एथी, एवा हेतुथी ए साधनो कह्यां छे, पण जीवनी समजणमां सामटो फेर होवाथी ते साधनोमां ज अटकी रह्यो अथवा ते साधन पण अभिनिवेश परिणामे ग्रह्यां. आंगळीथी जेम बाळकने चंद्र देखाडवामां आवे, तेम तत्त्वज्ञानीओए ए तत्त्वनुं तत्त्व कह्युं छे.

५४०. ववाणीआ. श्रावण वद १४ सोम. १९५१.

प्र०—बाळपणां करतां युवावस्थामां इंद्रियविकार विशेष करी उत्पन्न थाय छे, तेनां शुं कारण होवां जोईए? एम लख्युं ते माटे संक्षेपमां आ प्रमाणे विचारवायोग्य छे.

उ०—क्रमे जेम वय वधे छे, तेम तेम इंद्रियबळ वधे छे, तेम ते बळने विकारनां हेतु एवां निमित्तो मळे छे, अने पूर्व भवे तेवा विकारना संस्कार रह्या छे, तेथी ते निमित्तादि योग पामी विशेष परिणाम पामे छे. जेम बीज छे, ते तथारूप कारणो पामी क्रमे वृक्षाकारे परिणमे छे तेम पूर्वना बीजभूत संस्कारो क्रमे करी विशेषाकारे परिणमे छे.

५४१. ववाणीआ. भादरवा शुद ९ गुरु. १९५१.

निमित्ते करीने जेने हर्ष थाय छे, निमित्ते करीने जेने शोक थाय छे, निमित्ते करीने जेने इंद्रिय जन्य विषय प्रत्ये आकर्षण थाय छे, निमित्ते करीने जेने इंद्रियने प्रतिकूळ एवा प्रकारोने

विषे द्वेष थाय छे, निमित्ते करीने जेने उत्कर्ष आवे छे, निमित्ते करीने जेने कषाय उद्भवे छे, एवा जीवने जेटलो बने तेटलो ते ते निमित्तवासी जीवोनो संग त्यागवो घटे छे; अने नित्य प्रत्ये सत्संग करवो घटे छे; सत्संगना अयोगे तथा प्रकारनां निमित्तथी दूर रहेवुं घटे छे. क्षणे क्षणे प्रसंगे प्रसंगे अने निमित्ते निमित्ते स्वदशाप्रत्ये उपयोग देवो घटे छे.

आज पर्यंत सर्वभावे करीने खमावुं छउं.

५४२.

अनुभव प्रकाश ग्रंथमांनो श्री प्रल्हादजी प्रत्ये सद्गुरु देवे कहेलो उपदेश प्रसंग लख्यो ते वास्तव्य छे. तथारूपे निर्विकल्प अने अखंड स्वस्वरूपना अभिन्न ज्ञान शिवाय अन्य कोई सर्व दुःख मटवानो उपाय ज्ञानी पुरुषोए जाण्यो नथी.

५४३. राणपुर. (हडमतीआ) भादरवा वद १३ भोम. १९५१.

छेल्ला पत्रमां प्रश्नो लख्यां हतां ते पत्र क्यांक गत थयुं जणाय छे. संक्षेपमां उत्तर नीचे लख्याथी विचारशो.

(१) धर्म, अधर्म द्रव्य स्वभावपरिणामी होवाथी अक्रिय कह्यां छे. परमार्थथी ए द्रव्य पण सक्रिय छे. व्यवहारनयथी परमाणु, पुद्गल अने संसारी जीव सक्रिय छे, केमके ते अन्योन्य ग्रहण, त्याग आदिथी एक परिमाणवत् संबंध पामे छे. सडवुं यावत् विध्वंस पामवुं ए परमाणु पुद्गलना धर्म कह्या छे·········परमार्थथी शुभ वर्णादिनुं पलटनपणुं अने स्कंधनुं विखरावापणुं कह्युं···········(पत्र खंडित.)

५४४. राणपुर. आशो सुद २ शुक्र. १९५१.

कंई पण बने तो ज्यां आत्मार्थ चर्चित थतो होय त्यां जवा आववा, श्रवणादिनो प्रसंग करवायोग्य छे. गमे तो जैन शिवाय बीजा दर्शनथी व्याख्या थती होय तो ते पण विचारार्थे श्रवण करवायोग्य छे.

५४५. श्री खंभात. आशो सुद वि. सं. १९५१.

*** सत्य संबंधी उपदेशनो सार.**

वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप जेवुं जाणवुं, अनुभववुं तेवुं ज कहेवुं ते **सत्य** बे प्रकारे. **परमार्थसत्य** अने **व्यवहारसत्य.**

परमार्थसत्य एटले आत्मा शिवाय बीजो कोई पदार्थ आत्मानो थई शकतो नथी एम निश्चय जाणी भाषा बोलवामां व्यवहारथी देह, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, धान्य, गृह आदि वस्तुओना प्रसंगमां बोलतां पहेलां एक आत्मा शिवाय बीजुं कांई मारूं नथी; ए उपयोग रहेवो जोईए. अन्य आत्माना संबंधी बोलतां आत्मामां जाति, लिंग अने तेवा उपचारिक भेदवालो ते आत्मा न छतां मात्र व्यवहारनयथी कार्यने माटे बोलाववामां आवे छे; एवा उपयोगपूर्वक बोलाय तो ते पारमार्थिक भाषा छे एम समजवानुं छे. १. दृष्टांतः—एक माणस पोताना आरोपित देहनी, घरनी, स्त्रीनी, पुत्रनी के अन्य पदार्थनी वात करतो होय ते वखत स्पष्टपणे ते ते पदार्थथी वक्ता हुं भिन्न छुं, अने ते मारां नथी, एम स्पष्टपणे बोलनारने भान होय तो ते सत्य कहेवाय.

२. दृष्टांतः—जेम कोई ग्रंथकार श्रेणिक राजा अने चेलणा राणीनुं वर्णन करता होय, तो तेओ बंने आत्मा हता अने मात्र श्रेणिकना भव आश्रयी तेमनो संबंध, अगर स्त्री, पुत्र, धन, राज्य वगेरेनो संबंध हतो; ते वात लक्षमां राख्या पछी बोलवानी प्रवृत्ति करे ए ज परमार्थसत्य. व्यवहारसत्य आव्या विना परमार्थसत्य वचन बोलवानुं बने तेम न होवाथी व्यवहारसत्य नीचे प्रमाणे जाणवानुं छे.

व्यवहारसत्यः—जेवा प्रकारे वस्तुनुं स्वरूप जोवाथी, अनुभववाथी, श्रवणथी अथवा वांचवाथी आपणने अनुभववामां आव्युं होय तेवा ज प्रकारे यथातथ्यपणे वस्तुनुं स्वरूप कहेवुं अने ते प्रसंगे वचन बोलवुं तेनुं नाम व्यवहार सत्य. दृष्टांतः—जेम के अमुक माणसनो लाल अश्व जंगलमां दिवसे बार वागे दिठो होय, अने कोईना पूछवाथी ते ज प्रमाणे यथातथ्य वचन बोलवुं ते व्यवहारसत्य. आमां पण कोई प्राणीना प्राणनो नाश थतो होय, अगर उन्मत्तताथी वचन बोलायुं होय, यद्यपि खरूं होय तोपण असत्य तुल्य ज छे एम जाणी प्रवर्त्तवुं. सत्यथी विपरीत तेने असत्य कहेवाय छे.

क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगंछा अज्ञानादिथी बोलाय छे; क्रोधादि मोहनीयना अंगभूत छे. तेनी स्थिति बीजां बधां कर्मथी वधारे एटले (७०) सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनी छे. आ कर्म क्षय थया विना ज्ञानावरणादि कर्म संपूर्णपणे क्षय थई शकतां नथी. जो के गणितमां प्रथम ज्ञानावरणादि कर्मो कह्यां छे; पण आ कर्मनी घणी महत्वता छे, केमके संसारना मूलभूत रागद्वेषनुं आ मूळ स्थान होवाथी भवभ्रमण करवामां आ कर्मनी मुख्यता छे; आवुं मोहनीय कर्मनुं बळवानपणुं छे, छतां पण तेनो क्षय करवो सहेल छे; एटले के जेम वेदनीयकर्म वेद्या विना निष्फळ थतुं नथी तेम आ कर्मने माटे नथी. मोहनीय कर्मनी प्रकृतिरूप क्रोध, मान, माया, अने लोभादि कषाय तथा नोकषायना अनुक्रमे क्षमा, नम्रता, निरभिमानपणुं, सरळपणुं, निर्दंभता अने संतोषादिनी विपक्ष भावनाथी एटले मात्र विचार करवाथी उपर दर्शावेला कषायो निष्फळ करी शकाय छे. नोकषाय पण विचारथी क्षय पमाडी शकाय छे; एटले के तेने सारूं बाह्य कांई करवुं पडतुं नथी. 'मुनि' ए नाम पण आ पूर्वोक्त रीते विचारीने वचन बोलवाथी सत्य छे. घणुं करीने प्रयोजन विना बोलवुं ज नहीं तेनुं नाम मुनिपणुं. राग द्वेष ने अज्ञानविना यथास्थित वस्तुनुं स्वरूप कहेतां बोलतां छतां पण मुनिपणुं—मौनपणुं जाणवुं. पूर्वे तीर्थंकरादि महात्माओए आम ज विचार करी मौनपणुं धारण करेलुं; अने साडाबार वर्ष लगभग मौनपणुं धारण करनार भगवान् वीरप्रभुए आवा उत्कृष्ट विचारे करी आत्मामांथी फेरवी फेरवीने मोहनीय कर्मनो संबंध काढी नांखी केवलज्ञानदर्शन प्रगट कर्युं हतुं.

आत्मा धारे तो सत्य बोलवुं कंई कठण नथी. व्यवहारसत्यभाषा घणीवार बोलवामां आवे छे पण परमार्थसत्य बोलवामां आव्युं नथी; माटे आ जीवनुं भवभ्रमण मटतुं नथी. सम्यक्त्व थया बाद अभ्यासथी परमार्थ सत्य बोलवानुं थई शके छे; अने पछी विशेष अभ्यासे सहज उपयोग रह्या करे छे. असत्य बोल्याविना माया थई शकती नथी. विश्वासघात करवो तेनो पण असत्यमां

समावेश थाय छे. खोटा दस्तावेजो करवा ते पण असत्य जाणवुं. तप प्रमुख, मानादिनी भावनाथी करी, आत्महितार्थ करवा जेवो देखाव ते असत्य जाणवुं. अखंड सम्यक्दर्शन आवे तो ज संपूर्णपणे परमार्थसत्य वचन बोली शकाय; एटले के तो ज आत्मामांथी अन्यपणे पदार्थ भिन्नपणे उपयोग लई वचननी प्रवृत्ति थई शके. कोई पूछे के बोली शाश्वत केम कहेवामां आव्यो, तेनुं कारण ध्यानमां राखी ते बोले तो ते सत्य गणाय.

व्यवहारसत्यना पण बे विभाग थई शके छे. एक सर्वथा प्रकारे अने बीजो देशथी. निश्चय सत्यपर उपयोग राखी, प्रिय एटले जे वचन अन्यना अथवा जेना संबंधमां बोलायुं होय तेने प्रीतिकारी होय, अने पथ्य, गुणकारी होय एवुं ज सत्य वचन बोलनार सर्वविरति त्यागी प्राये होई शके छे. संसार उपर अभाव राखनार होवा छतां पूर्वकर्मथी, अथवा बीजा कारणथी संसारमां रहेनार गृहस्थ देशथी सत्य वचन बोलवानो नियम राखवा योग्य छे. ते मुख्य आ प्रमाणेः— मनुष्यसंबंधी (कन्यालिक), पशुसंबंधी (गोवालिक), भूमिसंबंधी (भोमालिक), खोटी साक्षी अने थापण, भरूसो एटले विश्वासथी राखवा योग्य आपेला द्रव्यादि पदार्थ ते पाछा मंगावी, ते संबंधी इनकार जवुं ते. आ पांच स्थूळ प्रकार छे. आ वचन बोलतां परमार्थसत्य उपर ध्यान राखी, यथास्थित एटले जेवे प्रकारे सम्यक् वस्तुओनां स्वरूप होय तेवा प्रकारे ज करवानो नियम तेने देशथी व्रत धारण करनारे अवश्य करवा योग्य छे. आ कहेला सत्य विषे * उपदेश विचारी ते क्रममां आववुं ए ज फळदायक छे.

५४६.

एवंभूत दृष्टिथी ऋजुसूत्र स्थिति कर.
ऋजुसूत्र दृष्टिथी एवंभूत स्थिति कर.
नैगम दृष्टिथी एवंभूत प्राप्ति कर.
एवंभूत दृष्टिथी नैगम विशुद्ध कर.
संग्रह दृष्टिथी एवंभूत था.
एवंभूत दृष्टिथी संग्रह विशुद्ध कर.
व्यवहार दृष्टिथी एवंभूतप्रत्ये जा.
एवंभूत दृष्टिथी व्यवहारविनिवृत्ति कर.
शब्द दृष्टिथी एवंभूतप्रत्ये जा.
एवंभूत दृष्टिथी शब्द निर्विकल्प कर.
समभिरूढ दृष्टिथी एवंभूत अवलोक.
एवंभूत दृष्टिथी समभिरूढ स्थिति कर.
एवंभूत दृष्टिथी एवंभूत था.
एवंभूत स्थितिथी एवंभूत दृष्टि शमाव.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

* श्री खंभातना एक जिज्ञासुए यथाशक्ति लिखेल. म. कि.

५४७.

हुं केवळ शुद्ध चैतन्यस्वरूप सहज निज अनुभवस्वरूप छुं
व्यवहारदृष्टिथी मात्र आ वचननो वक्ता छुं.
परमार्थथी तो मात्र ते वचनथी व्यंजित मूळ अर्थरूप छुं.
तमाराथी जगत् भिन्न छे, अभिन्न छे, भिन्नाभिन्न छे.
भिन्न, अभिन्न, भिन्नाभिन्न, एवो अवकाश स्वरूमां नथी.
व्यवहारदृष्टिथी तेनुं निरूपण करीए छीए.

—जगत् मारा विषे भास्यमान होवाथी अभिन्न छे. पण जगत् जगत्स्वरूपे छे, हुं स्वस्वरूपे छुं, तेथी जगत् माराथी केवळ भिन्न छे. ते बन्ने दृष्टिथी जगत् माराथी भिन्नाभिन्न छे.

ॐ शुद्ध निर्विकल्प चैतन्य.

५४८. मुंबई. आशो शुद १२ सोम. १९५१.

"देखत भूली टळे तो सर्व दुःखनो क्षय थाय,"

एवो स्पष्ट अनुभव थाय छे, तेम छतां ते ज देखत भूलीना प्रवाहमां ज जीव वह्यो जाय छे, एवा जीवोने आ जगत्ने विषे कोई एवो आधार छे के जे आधारथी, आश्रयथी ते प्रवाहमां न वहे?

५४९. मुंबई. आशो शुद १२. १९५१.

वेदांत कहे छे के आत्मा असंग छे, जिन पण कहे छे के परमार्थ नयथी आत्मा तेम ज छे. ए ज असंगता सिद्ध थवी, परिणत थवी ते मोक्ष छे. परभारी तेवी असंगता सिद्ध थवी घणुं करीने असंभवित छे, अने एज माटे ज्ञानीपुरुषोए सर्व दुःख क्षय करवानी इच्छा छे जेने एवा मुमुक्षुए सत्संगनी नित्य उपासना करवी एम जे कह्युं छे, ते अत्यंत सत्य छे.

५५०. मुंबई. आशो शुद १३ भोम. १९५१.

समस्त विश्व घणुं करीने परकथा तथा परवृत्तिमां वह्युं जाय छे, तेमां रही स्थिरता क्यांथी प्राप्त थाय? एवां अमूल्य मनुष्यपणांनो एक समय पण परवृत्तिए जवा देवायोग्य नथी, अने कंई पण तेम थया करे छे, तेनो उपाय कंई विशेषे करी गवेषवा योग्य छे.

ज्ञानीपुरुषनो निश्चय थई अंतर्भेद न रहे तो आत्मप्राप्ति साव सुलभ छे; एवुं ज्ञानी पोकारी गया छतां केम लोको भूले छे?

५५१.

करवा योग्य कंई कह्युं होय ते विस्मरण योग्य न होय एटलो उपयोग करी क्रमे करीने पण तेमां अवश्य परिणति करवी घटे. त्याग वैराग्य, उपशम अने भक्ति मुमुक्षु जीवे सेहेज स्वभावरूप करी मुक्या विना आत्मदशा केम आवे? पण शिथिलपणाथी, प्रमादथी ए वात विस्मृत थई जाय छे.

५५२. मुंबई. आसो वद ३ रवि. १९५१.

अनादिथी विपरीत अभ्यास छे, तेथी वैराग्य उपशमादि भावोनी परिणति एकदम न थई शके, किंवा थवी कठिन पडे; तथापि निरंतर ते भावो प्रत्ये लक्ष राख्ये अवश्य सिद्धि थाय छे. सत्समागमनो योग न होय त्यारे ते भावो जे प्रकारे वर्धमान थाय ते प्रकारनां द्रव्य क्षेत्रादि उपासवां; सत्शास्त्रनो परिचय करवो योग्य छे. सौ कार्यनी प्रथम भूमिका विकट होय छे, तो अनंतकाळथी अनभ्यस्त एवी मुमुक्षुता माटे तेम होय एमां कंई आश्चर्य नथी. सहजात्म स्वरूपे प्रणाम.

५५३. मोहमयि. आसो वद ११. १९५१.

"समज्या ते शमाई रह्या, तथा समज्या ते शमाई गया," ए वाक्यमां कंई अर्थांतर थाय छे के केम? तथा बेमां कियुं वाक्य विशेषार्थ वाचक जणाय छे, तेम ज समजवा योग्य शुं? तथा शमावुं शुं? तथा समुच्चय वाक्यनो एक परमार्थ शो? ते विचारवायोग्य छे; विशेषपणे विचारवा-योग्य छे. अने विचारगत होय ते तथा विचारतां ते वाक्योनो विशेष परमार्थ लक्षगत थयो होय ते लखवानुं बने तो लखशो.

५५४.

सुखने इच्छतो न होय ते नास्तिक, कां सिद्ध, कां जड.

५५५.

दुःखनो अभाव करवाने सर्व जीव इच्छे छे.

दुःखनो आत्यंतिक अभाव केम थाय? ते नहिं जणावाथी दुःख उत्पन्न थाय. ते मार्गने दुःखथी मुकावानो उपाय जीव समजे छे.

जन्म, जरा, मरण मुख्यपणे दुःख छे. तेनुं बीज कर्म छे. कर्मनुं बीज राग द्वेष छे, अथवा आ प्रमाणे पांच कारण छेः—

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग.

पहेला कारणनो अभाव थये बीजानो अभाव, पछी त्रीजानो, पछी चोथानो, अने छेवटे पांचमा कारणनो एम अभाव थवानो क्रम छे.

मिथ्यात्व मुख्य मोह छे. अविरति गौण मोह छे.

प्रमाद अने कषाय अविरतिमां अंतर्भावी शके छे. योग सहचारीपणे उत्पन्न थाय छे. चारे व्यतीत थया पछी पण पूर्व हेतुथी योग होई शके.

५५६. मुंबई. आसो. १९५१.

सर्व जीवने अप्रिय छतां जे दुःखनो अनुभव करवो पडे छे ते दुःख सकारण होवुं जोईए,

ए भूमिथी मुख्य करीने विचारवाननी विचारश्रेणी उदय पामे छे, अने ते परथी अनुक्रमे आत्मा, कर्म, परलोक, मोक्ष आदि भावोनुं स्वरूप सिद्ध थयुं होय एम जणाय छे.

वर्त्तमानमां जो पोतानुं विद्यमानपणुं छे, तो भूतकाळने विषे पण तेनुं विद्यमानपणुं होवुं जोईए, अने भविष्यमां पण तेम ज होवुं जोईए. आ प्रकारना विचारनो आश्रय मुमुक्षु जीवने कर्त्तव्य छे. कोई पण वस्तुनुं पूर्वपश्चात् होवापणुं न होय, तो मध्यमां तेनुं होवापणुं न होय एवो अनुभव विचारतां थाय छे.

वस्तुनी केवळ उत्पत्ति अथवा केवळ नाश नथी, सर्वकाळ तेनुं होवापणुं छे, रूपांतर परिणाम थयां करे छे, वस्तुता फरती नथी, एवो श्री जिननो अभिमत छे, ते विचारवायोग्य छे.

"षड्दर्शनसमुच्चय" कंईक गहन छे, तोपण फरिफरी विचारवाथी तेनो केटलोक बोध थशे.

जेम जेम चित्तनुं शुद्धिपणुं अने स्थिरत्व होय छे, तेम तेम ज्ञानीनां वचनोनो विचार यथायोग्य थई शके छे; सर्व ज्ञाननुं फळ पण आत्मस्थिरता थवी एज छे एम वीतराग पुरुषोए कह्युं छे, ते अत्यंत सत्य छे.

५५७.

अगम अगोचर निर्वाणमार्ग छे, एमां संशय नथी. पोतानी शक्तिए, सद्गुरुना आश्रय विना, ते मार्ग शोधवो अशक्य छे एम वारंवार देखाय छे एटलुं ज नहीं, पण श्री सद्गुरु चरणना आश्रये करी बोधबीजनी प्राप्ति थई होय एवा पुरुषने पण सद्गुरुना समागमनुं आराधन नित्य कर्त्तव्य छे; जगत्‌ना प्रसंग जोतां एम जणाय छे के तेवा समागम अने आश्रय विना निरालंब बोध स्थिर रहेवो विकट छे.

५५८.

ॐ दृश्यने अदृश्य कर्युं, अने अदृश्यने दृश्य कर्यु एवुं ज्ञानीपुरुषोनुं आश्चर्यकारक अनंत ऐश्वर्य वीर्य वाणीथी कही शकावुं योग्य नथी.

५५९.

गयेली एक पळ पण पाछी मळती नथी अने ते अमूल्य छे, तो पछी आखी आयुष्य स्थिति! एक पळनो हीन उपयोग ते एक अमूल्य कौस्तुभ खोवा करतां पण विशेष हानिकारक छे, तो तेवी साठ पळनी एक घडीनो हीन उपयोग करवाथी केटली हानि थवी जोईए? एम ज एकदिन, एक पक्ष, एक मास, एक वर्ष, अने अनुक्रमे आखी आयुष्य स्थितिनो हीन उपयोग ए केटली हानि अने केटलां अश्रेयनुं कारण थाय ए विचार शुक्लहृदयथी तरत आवी शकशे.

सुख अने आनंद ए सर्व प्राणी, सर्व जीव, सर्व सत्त्व अने सर्व जंतुने निरंतर प्रिय छे छतां दुःख अने आनंद भोगवे छे एनुं शुं कारण होवुं जोईए? अज्ञान अने ते वडे जींदगीनो हीन उपयोग. हीन उपयोग थतो अटकाववाने प्रत्येक प्राणीनी इच्छा होवी जोईए. परंतु क्या साधन वडे?

५६०.

अंतर्मुखदृष्टि जे पुरुषोनी थई छे, ते पुरुषोने पण सतत जागृति रूप भलामण श्री वीतरागे कही छे, केमके अनंतकाळना अध्यासवाळा पदार्थोनो संग छे, ते कंई पण दृष्टिने आकर्षे एवो भय राखवा योग्य छे.

आवी भूमिकामां आ प्रकारे भलामण घटे छे. एम छे तो पछी विचारदशा जेनी छे एवा मुमुक्षु जीवे सतत जागृति राखवी घटे एम कहेवामां न आव्युं होय, तोपण स्पष्ट समजी शकाय एम छे के मुमुक्षु जीवे जे जे प्रकारे पर अध्यास थवायोग्य पदार्थादिनो त्याग थाय, ते ते प्रकारे अवश्य करवो घटे. जो के आरंभ परिग्रहनो त्याग ए स्थूळ देखाय छे तथापि अंतर्मुखवृत्तिनो हेतु होवाथी वारंवार तेनो त्याग उपदेश्यो छे.

५६१.* मुंबई. कारतक. १९५२.

जेम छे तेम आत्मस्वरूप जाणवुं तेनुं नाम समजवुं छे. तेथी उपयोग अन्य विकल्प रहित थयो तेनुं नाम शमावुं छे. वस्तुताए बन्ने एक ज छे.

जेम छे तेम समजावाथी उपयोग स्वरूपमां शमायो, अने आत्मा स्वभावमय थई रह्यो ए प्रथम वाक्य "समजीने शमाई रह्या" तेनो अर्थ छे.

अन्य पदार्थना संयोगमां जे अध्यास हतो, अने ते अध्यासमां आत्मापणुं मान्युं हतुं, ते अध्यासरूप आत्मापणुं शमाई गयुं. ए बीजुं वाक्य "समजीने शमाई गया" तेनो अर्थ छे.

पर्यायांतरथी अर्थांतर थई शके छे. वास्तव्यमां बन्ने वाक्यनो परमार्थ एक ज विचारवायोग्य छे.

जे जे समज्या तेणे तेणे मारूं तारूं ए आदि अहंत्व ममत्व शमावी दीधुं; केमके कोई पण निजस्वभाव तेवो दीठो नहीं; अने निजस्वभाव तो अचिंत्य अव्याबाधस्वरूप, केवळ न्यारो जोयो एटले तेमां ज समावेश पामी गया.

आत्मा शिवाय अन्यमां स्वमान्यता हती ते टाळी परमार्थे मौन थया. वाणीए करी आ आनुं छे ए आदि कहेवानुं बनवारूप व्यवहार, वचनादि योग सुधी क्वचित् रह्यो, तथापि आत्माथी आ मारूं छे ए विकल्प केवळ शमाई गयो; जेम छे तेम अचिंत्य स्वानुभव गोचर पदमां लीनता थई.

ए बन्ने वाक्य लोक भाषामां प्रवर्त्यां छे, ते **आत्मभाषामांथी** आव्यां छे. जे उपर कह्या ते प्रकारे न शमाया ते समज्या नथी एम ए वाक्यनो सारभूत अर्थ थयो; अथवा जेटले अंशे शमाया तेटले अंशे समज्या, अने जे प्रकारे शमाया ते प्रकारे समज्या एटलो विभागार्थ थई शकवायोग्य छे, तथापि मुख्यार्थमां उपयोग वर्त्ताववो घटे छे.

* जुओ आंक ५५३.

अनंतकाळथी यम, नियम, शास्त्रावलोकनादि कार्य कर्या छतां समजावुं अने शमावुं ए प्रकार आत्मामां आव्यो नहीं, अने तेथी परिभ्रमण निवृत्ति न थई.

समजावा अने शमावानुं जे कोई ऐक्य करे, ते स्वानुभव पदमां वर्त्ते; तेनुं परिभ्रमण निवृत्त थाय. सद्गुरुनी आज्ञा विचार्या विना जीवे ते परमार्थ जाण्यो नहीं, जाणवाने प्रतिबंधक असत्संग, स्वछंद अने अविचार तेनो रोध कर्यो नहीं, जेथी समजावुं अने शमावुं तथा बेयनुं ऐक्य न बन्युं एवो निश्चय प्रसिद्ध छे.

अत्रेथी आरंभी उपर उपरनी भूमिका उपासे तो जीव समजीने शमाय; ए निःसंदेह छे.

अनंत ज्ञानीपुरुषे अनुभव करेलो एवो आ शाश्वत सुगम मोक्षमार्ग जीवने लक्षमां नथी आवतो एथी उत्पन्न थयेलुं खेद सहित आश्चर्य ते पण अत्रे शमावीए छैये. सत्संग, सद्विचारथी शमावा सुधीनां सर्व पद अत्यंत साचां छे, सुगम छे, सुगोचर छे, सहज छे अने निःसंदेह छे. ॐ ॐ ॐ ॐ

५६२. मुंबई. कारतक शुद ३ सोम. १९५२.

श्री वेदांते निरूपण करेलां एवां मुमुक्षु जीवनां लक्षण तथा श्री जिने निरूपण करेलां एवां सम्यग्दृष्टि जीवनां लक्षण सांभळवांयोग्य छे (तथारूप योग न होय तो वांचवांयोग्य छे), विशेषपणे मनन करवांयोग्य छे, आत्मामां परिणामी करवांयोग्य छे. पोतानुं क्षयोपशम बळ ओछुं जाणीने, अहं ममतादिनो पराभव थवाने नित्य पोतानुं न्यूनपणुं देखवुं; विशेष संग प्रसंग संक्षेपवायोग्य छे.

५६३. मुंबई. कार्तिक शुद १३ गुरु. १९५२.

(१) आत्महेतु भूत एवा संग विना सर्व संग मुमुक्षु जीवे संक्षेप करवा घटे छे. केमके ते विना परमार्थ आवीर्भूत थवो कठण छे. अने ते कारणे आ व्यवहार, द्रव्यसंयमरूप साधुत्व श्री जिने उपदेश्युं छे. सहजात्मस्वरूप.

(२) अंतर्लक्ष्यवत् हाल जे वृत्ति वर्त्तती देखाय छे ते उपकारी छे, अने ते वृत्ति क्रमे करी परमार्थना यथार्थपणामां विशेष उपकारभूत थाय छे. हाल सुंदरदासजीना ग्रंथ अथवा श्री योगवासिष्ठ वांचशो. श्री सोभाग अत्रे छे.

(३) १०-१०-१८९५.

निशदिन नैनमें निंद न आवे, नर तबहि नारायन पावे.

—सुंदरदासजी.

५६४. मुंबई. मागशर शुद १० मंगळवार. १९५२.

जे जे प्रकारे परद्रव्य(वस्तु)नां कार्यनुं संक्षेपपणुं थाय, निज दोष जोवानो दृढ लक्ष रहे, अने सत्समागम, सत्शास्त्रने विषे वर्धमान परिणतिए परमभक्ति वर्त्या करे ते प्रकारनी आत्मता कर्या जतां तथा ज्ञानीनां वचनोनो विचार करवाथी दशा विशेषता पामतां यथार्थ समाधिने योग्य थाय एवो लक्ष राखशो, एम कह्युं हतुं.

५६५.

शुभेच्छा, विचार, ज्ञान ए आदि सर्व भूमिकाने विषे सर्वसंगपरित्याग बळवान उपकारी छे, एम जाणीने ज्ञानीपुरुषोए अणगारत्व निरूपण कर्युं छे. यद्यपि परमार्थथी सर्वसंगपरित्याग यथार्थ बोध थये प्राप्त थवायोग्य छे, एम जाणता छतां पण सत्संगमां नित्य निवास थाय तो तेवो समय प्राप्त थवायोग्य छे, एम जाणी सामान्य रीते बाह्य सर्वसंगपरित्याग ज्ञानीपुरुषोए उपदेश्यो छे, के जे निवृत्तिने योगे शुभेच्छावान एवो जीव सद्गुरु, सत्पुरुष अने सत्शास्त्रनी यथायोग्य उपासना करी यथार्थ बोध पामे.

५६६. मुंबई. पोष शुद ६ रवि. १९५२.

बे अभिनिवेश आडा आवी उभा रहेता होवाथी जीव मिथ्यात्वनो त्याग करी शकतो नथी. ते आ प्रमाणे:—लौकिक अने शास्त्रिय. क्रमे करीने सत्समागमयोगे जीव जो ते अभिनिवेश छोडे तो मिथ्यात्वनो त्याग थाय छे, एम वारंवार ज्ञानीपुरुषोए शास्त्रादि द्वाराए उपदेश्युं छतां जीव ते छोडवा प्रत्ये उपेक्षित शा माटे थाय छे? ते वात विचारवायोग्य छे.

५६७.

सर्व दुःखनुं मूळ संयोग (संबंध) छे एम ज्ञानवंत एवा तीर्थंकरोए कह्युं छे. समस्त ज्ञानी-पुरुषोए एम दीठुं छे. जे सयोग बे प्रकारे मुख्यपणे कह्यो छे. अंतर संबंधिय, अने बाह्य संबंधिय. अंतर्संयोगनो विचार थवाने आत्माने बाह्य संयोगनो अपरिचय कर्त्तव्य छे, जे अपरिचयनी सपरमार्थ इच्छा ज्ञानीपुरुषोए पण करी छे.

५६८.

श्रद्धाज्ञान लह्यां छे तोपण, जो नवि जाय पमायो (प्रमाद) रे;
वंध्य तरू उपम ते पामे, संयम ठाण जो नायो रे:
गायोरे, गायो, भले वीर जगत् गुरु गायो.

५६९. मुंबई. पोष शुद ८ भोम. १९५२.

आत्मार्थ शिवाय, शास्त्रनी जे जे प्रकारे जीवे मान्यता करी कृतार्थता मानी छे, ते सर्व **शास्त्रिय अभिनिवेश** छे. स्वछंदता टळी नथी, अने सत्समागमनो योग प्राप्त थयो छे, ते योगे पण स्वछंदना निर्वाहने अर्थे शास्त्रना कोई एक वचनने बहु वचन जेवुं जणावी, छे मुख्य साधन एवा सत्समागम समान के तेथी विशेष भार शास्त्र प्रत्ये मुके छे, ते जीवने पण अप्रशस्त शास्त्रिय अभिनिवेश छे.

आत्मा समजवा अर्थे शास्त्रो उपकारी छे, अने ते पण स्वछंदरहित पुरुषने; एटलो लक्ष राखी सत्शास्त्र विचाराय तो ते शास्त्रिय अभिनिवेश गणवायोग्य नथी. संक्षेपथी लख्युं छे.

५७०.

मोहमयि क्षेत्र संबंधी उपाधि परित्यागवाने आठ महिना अने दश दिवस बाकी छे; अने ते परित्याग थई शकवायोग्य छे.

बीजे क्षेत्रे उपाधि (व्यापार) करवाना अभिप्रायथी मोहमयि क्षेत्रनी उपाधि त्यागवानो विचार रहे छे, एम नथी.

पण ज्यांसुधी सर्वसंगपरित्यागरूप योग निरावरण थाय नहीं, त्यांसुधी जे गृहाश्रम वर्त्ते ते गृहाश्रममां काळ व्यतीत करवा विषेनो विचार कर्त्तव्य छे. क्षेत्रनो विचार कर्त्तव्य छे. जे व्यवहारमां वर्त्तवुं ते व्यवहारनो विचार कर्त्तव्य छे, केमके **पूर्वापर अविरोधपणुं नहीं, तो रहेवुं कठण छे.**

५७१.

भू.*—	ब्रह्म.
स्थापना.—	ध्यान.
मुख.—	योगबळ.
ब्रह्मग्रहण.	निर्ग्रंथादि संप्रदाय.
ध्यान.	निरूपण.
योगबळ.	भू.* स्थापना. मुख. सर्व दर्शन अविरोध.
स्वायु स्थिति.	
आत्मबळ.	

५७२.

आहारनो जय,
आसननो जय,
निद्रानो जय,
वाक् संयम,
जिनोपदिष्ट आत्मध्यान.
,, आत्मध्यान शी रीते ?
ज्ञान प्रमाण ध्यान थई शके, माटे ज्ञानतारतम्यता जोईए.
शुं विचारतां, शुं मानतां, शी दशा थतां चोथुं गुणस्थानक कहेवाय ?
शाथी चोथे गुणस्थानकेथी तेरमे गुणस्थानके आवे ?

* भूमिका.

५७३. मुंबई. पोष वद. १९५२.

योग असंख जे जिन कह्या, घटमांही रीद्धि दाखी रे,
नवपद तेम ज जाणजो, आतमराम छे साखी रे.

श्री श्रीपाळरास.

५७४.

ॐ

गृहादि प्रवृत्तिना योगे उपयोग विशेष चलायमान रहेवायोग्य छे, एम जाणीने परमपुरुष सर्व संग परित्यागनो उपदेश करता हवा.

५७५. मुंबई. पोष वद २. १९५२.

ॐ

सर्व प्रकारना भयने रहेवाना स्थानकरूप आ संसारने विषे मात्र एक वैराग्य ज अभय छे.

मोटा मुनिओने जे वैराग्यदशा प्राप्त थवी दुर्लभ, ते वैराग्यदशा तो गृहवासने विषे जेने प्राये वर्त्तती हती, एवा श्री महावीर ऋषभादि पुरुषो पण त्यागने ग्रहण करी चाली नीकळ्या, ए ज त्यागनुं उत्कृष्टपणुं उपदेश्युं छे.

गृहस्थादि व्यवहार वर्त्ते त्यांसुधी आत्मज्ञान न थाय, के आत्मज्ञान होय तेने गृहस्थादि व्यवहार न होय एवो नियम नथी, तेम छतां पण ज्ञानीने पण त्याग व्यवहारनी भलामण परम पुरुषोए उपदेशी छे; केमके **त्याग आत्म ऐश्वर्यने स्पष्ट व्यक्त करे छे.** तेथी अने लोकने उपकारभूत छे तेथी त्याग अकर्त्तव्य लक्षे कर्त्तव्य छे; एमां संदेह नथी.

स्वस्वरूपने विषे स्थिति तेने **परमार्थसंयम** कह्यो छे. ते संयमने कारणभूत एवां अन्य निमित्तोनां ग्रहण **व्यवहारसंयम** कह्यो छे. कोई ज्ञानीपुरुषोए ते संयमनो पण निषेध कर्यो नथी. परमार्थनी उपेक्षा(लक्ष वगर)ए जे व्यवहार संयममां ज परमार्थसंयमनी मान्यता राखे तेना व्यवहारसंयमनो तेनो अभिनिवेश टाळवा निषेध कर्यो छे. पण व्यवहारसंयममां कंई पण परमार्थनी निमित्तता नथी, एम ज्ञानीपुरुषोए कह्युं नथी.

परमार्थना कारणभूत एवा व्यवहार संयमने पण परमार्थसंयम कह्यो छे.

प्रारब्ध छे, एम मानीने ज्ञानी उपाधि करे छे एम जणातुं नथी, पण परिणतिथी छूट्यां छतां त्यागवा जतां बाह्य कारणो रोके छे, माटे ज्ञानी उपाधिसहित देखाय छे, तथापि तेनी निवृत्तिना लक्षने नित्य भजे छे.

५७६. मुंबई. पोष वद ९ गुरु. १९५२.

ॐ

देहाभिमान रहित एवा सत्पुरुषोने अत्यंत भक्तिथी त्रिकाळ नमस्कार.

ज्ञानीपुरुषोए वारंवार आरंभ परिग्रहना त्यागनुं उत्कृष्टपणुं कह्युं छे, अने फरिफरी ते त्यागनो

उपदेश कर्यो छे, अने घणुं करी पोते पण एम वर्त्यां छे, माटे मुमुक्षु पुरुषने अवश्य करी तेनी संक्षेप वृत्ति जोईए, एमां संदेह नथी.

आरंभ परिग्रहनो त्याग क्या क्या प्रतिबंधथी जीव न करी शके, अने ते प्रतिबंध क्या प्रकारे टाळी शकाय ए प्रकारे मुमुक्षु जीवे पोतानां चित्तमां विशेष विचार अंकूर उत्पन्न करी कंई पण तथारूप फळ आणवुं घटे. जो तेम करवामां न आवे तो ते जीवने मुमुक्षता नथी एम प्राये कही शकाय.

आरंभ अने परिग्रहनो त्याग क्या प्रकारे थयो होय ते यथार्थ कहेवाय ते प्रथम विचार करी पछी उपर कह्यो ते विचार अंकुर मुमुक्षु जीवे पोतानां अंतःकरणमां अवश्य उत्पन्न करवो योग्य छे.

५७७. मुंबई. पोष वद १३ रवि. १९५२.

ॐ

उत्कृष्ट संपत्तिनुं ठेकाणुं जे चक्रवर्त्यादि पद ते सर्व अनित्य देखीने विचारवान पुरुषो तेने छोडीने चाली नीकळ्या छे. अथवा प्रारब्धोदये वास थयो तोपण अमूर्छितपणे उदासीनपणे तेने प्रारब्धोदय समजीने वर्त्यां छे; अने त्यागनो लक्ष राख्यो छे.

५७८.

महात्मा बुध (गौतम) जरा, दारिद्र, रोग अने मृत्यु ए चारने एक आत्मज्ञान विना अन्य सर्व उपाये अजित देखी, जेने विषे तेनी उत्पत्तिनो हेतु छे, एवा संसारने छोडीने चाल्या जता हवा. श्री ऋषभादि अनंत ज्ञानीपुरुषोए ए ज उपाय उपास्यो छे; अने सर्व जीवोने ते उपाय उपदेश्यो छे. ते आत्मज्ञान दुर्गम्य प्राये देखीने निष्कारण करुणाशील एवा ते सत्पुरुषोए भक्तिमार्ग प्रकाश्यो छे, जे सर्व अशरणने निश्चळ शरणरूप छे, अने सुगम छे.

५७९. मुंबई. महा शुद ४ रवि. १९५२.

असंग एवुं आत्मस्वरूप सत्संगने योगे सौथी सुलभपणे जणावायोग्य छे, एमां संशय नथी. सत्संगनुं महात्म्य सर्व ज्ञानीपुरुषोए अतिशय करी कह्युं छे, ते यथार्थ छे. एमां विचारवानने कोई रीते विकल्प थवायोग्य नथी.

५८०. मुंबई. फा. शुद १. १९५२.

ॐ सद्गुरुप्रसाद.

ज्ञानीना सर्व व्यवहार परमार्थमूळ होय छे, तोपण जे दिवसे उदय पण आत्माकार वर्त्तशे ते दिवसने धन्य छे.

सर्व दुःखथी मुक्त थवानो सर्वोत्कृष्ट उपाय आत्मज्ञानने कह्यो छे, ते ज्ञानीपुरुषनां वचन साचां छे, अत्यंत साचां छे.

ज्यांसुधी जीवने तथारूप आत्मज्ञान न थाय त्यांसुधी आत्यंतिक बंधननी निवृत्ति न होय एमां संशय नथी.

ते आत्मज्ञान थतां सुधी जीवे मूर्त्तिमान आत्मज्ञान स्वरूप एवा सद्गुरु देवनो निरंतर

आश्रय अवश्य करवायोग्य छे, एमां संशय नथी. ते आश्रयनो वियोग होय त्यारे आश्रय-भावना नित्य कर्त्तव्य छे.

उदयने योगे तथारूप आत्मज्ञान थया प्रथम उपदेश कार्य करवुं पडतुं होय तो विचारवान मुमुक्षु परमार्थना मार्गने अनुसरवाने हेतुभूत एवो सत्पुरुषनी भक्ति, सत्पुरुषना गुणग्राम, सत्पुरुष-प्रत्ये प्रमोदभावना अने सत्पुरुषप्रत्ये अविरोधभावनानो लोकोने उपदेश दे छे; जे प्रकारे मतमतांतरनो अभिनिवेश टळे, अने सत्पुरुषना वचन ग्रहण करवानी आत्मवृत्ति थाय तेम करे छे. वर्त्तमान काळमां ते प्रकारनी विशेष हानि थशे एम जाणी ज्ञानीपुरुषोए आ काळने दुसमकाळ कह्यो छे. अने तेम प्रत्यक्ष देखाय छे.

सर्व कार्यमां कर्त्तव्य मात्र आत्मार्थ छे, ए संभावना नित्य मुमुक्षु जीवे करवी योग्य छे.

५८१. मुंबई. फा. शुद १०. १९५२.

ॐ सद्गुरु प्रसाद.

(१) विस्तारपूर्वक कागळ लखवानुं हालमां थतुं नथी, तेथी चित्तमां वैराग्य, उपशमादि विशेष प्रदीप्त रहेवामां सत्शास्त्र एक विशेष आधारभूत निमित्त जाणी श्री सुंदरदासादिना ग्रंथनुं बने तो वेथी चार घडी नियमित वांचवुं पूछवुं थाय तेम करवाने लख्युं हतुं. श्री सुंदरदासना ग्रंथो प्रथमथी करीने प्रांत सुधी विशेष अनुप्रेक्षाथी हाल विचारवा माटे विनंति छे.

(२) काया सुधी माया(एटले कषायादिनो)नो संभव रह्या करे, एम श्री···ने लागे छे, ते अभिप्राय प्राये (घणुंकरीने) तो यथार्थ छे, तोपण कोई पुरुषविशेषने विषे केवळ सर्व प्रकारना संज्वलनादि कषायनो अभाव थई शकवायोग्य लागे छे, अने थई शकवामां संदेह थतो नथी, तेथी काया छतां पण कषायरहितपणुं संभवे; अर्थात् सर्वथा रागद्वेषरहित पुरुष होई शके. रागद्वेषरहित आ पुरुष छे, एम बाह्य चेष्टाथी सामान्य जीवो जाणी शके एम बनी शके नहीं, एथी ते पुरुष कषायरहित संपूर्ण वीतराग न होय एवो अभिप्राय विचारवान सिद्ध करता नथी; केमके बाह्य चेष्टाथी आत्मदशानी सर्वथा स्थिति समजाई शके एम न कही शकाय.

(३) श्री सुंदरदासे आत्मजागृत दशामां शूरातन अंग कह्युं छे तेमां विशेष उल्लासपरिणतिथी शूरवीरतानुं निरूपण कर्युं छे.

मारे काम क्रोध, सब लोभ मोह पीसि डारे, इन्द्रिहुं कतल करी, कियो रजपूतो है;
मार्यो महा मत्त मन, मारे अहंकार मीर, मारे मद मछर हू, ऐसो रन रूतो है.
मारी आशा तृष्णा पुनि, पापिनी सापिनी दोउ, सबको प्रहार करि, निजपद पहूतौ है;
सुंदर कहत ऐसो साधु कोई शूरवीर, वैरि सब मारिके निचिंत होई सूतो है.

श्री सुंदरदास—शूरातनअंग—११ कवित.

५८२.

ॐ नमः

सर्वज्ञ. जिन. वीतराग.

सर्वज्ञ छे.

रागद्वेषनो आत्यंतिक क्षय थई शके छे.

ज्ञानने प्रतिबंधक रागद्वेष छे.

ज्ञान, जीवनो स्वत्वभूत धर्म छे.

जीव, एक अखंड संपूर्ण द्रव्य होवाथी तेनुं ज्ञान सामर्थ्य संपूर्ण छे.

५८३.

सर्वज्ञपद वारंवार श्रवण करवायोग्य, वांचवायोग्य, विचार करवायोग्य, लक्ष करवायोग्य, अने स्वानुभवसिद्ध करवायोग्य छे.

५८४.

सर्वज्ञ देव.	सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु.	निर्ग्रंथ गुरु.
उपशम मूळ धर्म.	दया मूळ धर्म.

सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु.
सिद्धांत मूळ धर्म.

सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु.
जिनाज्ञा मूळ धर्म.

सर्वज्ञनुं स्वरूप.
निर्ग्रंथनुं स्वरूप.
धर्मनुं स्वरूप.

सम्यक् क्रियावाद.

५८५.

ॐ नमः

प्रदेश
समय
परमाणु

द्रव्य
गुण
पर्याय

जड
चेतन

५८६. मुंबई. फा. शुद ११ रवि. १९५२.

श्रीसद्गुरु प्रसाद.

यथार्थ ज्ञान उत्पन्न थया प्रथम जे जीवोने उपदेशकपणुं वर्त्ततुं होय ते जीवे जे प्रकारे वैराग्य, उपशम अने भक्तिनो लक्ष थाय ते प्रकारे प्रसंगप्राप्त जीवोने उपदेश आपवो घटे, अने जे प्रकारे तेने नाना प्रकारना असद् आग्रहनो तथा केवळ वेष व्यवहारादिनो अभिनिवेश घटे ते प्रकारे उपदेश परिणामी थाय तेम आत्मार्थ विचारी कहेवुं घटे. क्रमेकरीने ते जीवो यथार्थ मार्गनी सन्मुख थाय एवो यथाशक्ति उपदेश कर्त्तव्य छे.

५८७. मुंबई. फा. वद ३ सोम. १९५२.

ॐ सद्गुरु प्रसाद.

देहधारी छतां निरावरणज्ञान सहित वर्त्ते छे, एवा महापुरुषोने त्रिकाळ नमस्कार.

सर्व कषायनो अभाव देहधारी छतां परम ज्ञानीपुरुषने विषे बने, ए प्रकारे अमे लख्युं ते प्रसंगमां अभाव शब्दनो अर्थ क्षय गणीने लख्यो छे.

(प्र०).—जगत्वासी जीवने रागद्वेष गयानी खबर पडे नहीं. बाकी जे मोटा पुरुष छे ते जाणे छे के आ महात्मापुरुषने विषे रागद्वेषनो अभाव के उपशम वर्त्ते छे, एम लखी आपे शंका करी के जेम महात्मापुरुषने ज्ञानीपुरुषो अथवा दृढ मुमुक्षु जीवो जाणे छे, तेम जगत्ना जीवो शा माटे न जाणे? मनुष्यादि प्राणीने जेम जोईने जगत्वासी जीवो जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, अने महात्मापुरुषो पण जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, ए पदार्थो जोवाथी बेयनुं जाणवुं सरखुं वर्त्ते छे, अने आमां भेद वर्त्ते छे, तेवो भेद थवानां शुं कारण मुख्यपणे विचारवायोग्य छे? ए प्रकारे लख्युं तेनुं समाधान.

(उ०).—मनुष्यादिने जगत्वासी जीवो जाणे छे, ते दैहिक स्वरूपथी तथा दैहिक चेष्टाथी जाणे छे. एक बीजानी मुद्रामां तथा आकारमां इंद्रियोमां जे भेद छे, ते चक्षुआदि इंद्रियोथी जगत्वासी जीव जाणी शके छे, अने केटलाक ते जीवोना अभिप्राय पण अनुमानपरथी जगत्-वासी जीव जाणी शके छे; केमके ते तेना अनुभवनो विषय छे; पण ज्ञानदशा अथवा वीतरागदशा छे ते मुख्यपणे दैहिक स्वरूप तथा दैहिक चेष्टानो विषय नथी, अंतरात्म गुण छे. अने अंतरात्मपणुं बाह्य जीवोना अनुभवनो विषय न होवाथी, तेम ज तथारूप अनुमान पण प्रवर्त्ते एवा जगत्वासी जीवोने घणुं करीने संस्कार नहीं होवाथी ज्ञानी के वीतरागने ते ओळखी शकता नथी. कोईक जीव सत्समागमना योगथी सहज शुभकर्मना उदयथी तथारूप कंई संस्कार पामीने ज्ञानी के वीतरागने यथाशक्ति ओळखी शके. **तथापि खरेखरूं ओळखाण तो दृढ मुमुक्षता प्रगट्ये, तथारूप सत्समागमथी प्राप्त थयेल उपदेशने अवधारण कर्ये, अंतरात्मवृत्ति परिणम्ये जीव ज्ञानी के वीतरागने ओळखी शके.** जगत्वासी एटले जगत्दृष्टि जीवो छे तेनी दृष्टिए खरेखरूं ज्ञानी के वीतरागनुं ओळखाण क्यांथी थाय? अंधकारने विषे

पडेला पदार्थने मनुष्यचक्षु देखी शके नहीं, तेम देहने विषे रह्या एवा ज्ञानी के वीतरागने जगत्दृष्टि जीव ओळखी शके नहीं. जेम अंधकारने विषे पडेलो पदार्थ मनुष्यचक्षुथी जोवाने बीजा कोई प्रकाशनी अपेक्षा रहे छे, तेम जगतदृष्टि जीवोने ज्ञानी के वीतरागनां ओळखाण माटे विशेष शुभ संस्कार अने सत्समागमनी अपेक्षा योग्य छे. जो ते योग प्राप्त न होय तो जेम अंधकारमां पडेलो पदार्थ अने अंधकार ए बेय एकाकार भासे छे, भेद भासतो नथी, तेम तथारूप योगविना ज्ञानी के वीतराग अने अन्य संसारी जीवोनुं एक आकारपणुं भासे छे, देहादि चेष्टाथी घणुंकरीने भेद भासतो नथी.

जे देहधारी सर्व अज्ञान अने सर्व कषाय रहित थया छे ते देहधारी महात्माने त्रिकाळ परमभक्तिथी नमस्कार हो, नमस्कार हो. ते महात्मा वर्त्ते छे ते देहने, भूमिने, घरने, मार्गने, आसनादि सर्वने नमस्कार हो, नमस्कार हो.

५८८. मुंबई. चैत्र शुद १ रवि. १९५२.

(१)

प्रारब्धोदयथी जे प्रकारनो व्यवहार प्रसंगमां वर्त्ते छे, ते प्रत्ये दृष्टि देतां जेम पत्रादि लखवामां संक्षेपताथी वर्त्तवानुं थाय छे, तेम वधारे योग्य छे, एवो अभिप्राय घणुं करीने रहे छे.

आत्माने वास्तव्यपणे उपकारभूत एवो उपदेश करवामां ज्ञानी पुरुषो संक्षेपताथी वर्त्ते नही एम घणुंकरीने बनवायोग्य छे, तथापि बे कारणेकरीने ते प्रकारे पण ज्ञानी पुरुषो वर्त्ते छे:—

(१) ते उपदेश जिज्ञासु जीवने विषे परिणाम थाय एवा संयोगोने विषे ते जिज्ञासु जीव वर्त्ततो न होय, अथवा ते उपदेश विस्तारथी कर्ये पण ग्रहण करवानुं तेने विषे तथारूप योग्यपणुं न होय, तो ज्ञानीपुरुष ते जीवोने उपदेश करवामां संक्षेपपणे पण वर्त्ते छे.

(२) अथवा पोताने बाह्य व्यवहार एवा उदयमां होय के ते उपदेश जिज्ञासु जीवने परिणमतां प्रतिबंधरूप थाय; अथवा तथारूप कारणविना तेम वर्त्ती मुख्यमार्गने विरोधरूप के संशयना हेतुरूप थवानुं कारण बनतुं होय तो पण ज्ञानीपुरुषो संक्षेपपणे उपदेशमां प्रवर्त्ते अथवा मौन रहे.

(२)

सर्वसंगपरित्याग करीने चाली निकळ्यार्थी पण जीव उपाधिरहित थतो नथी. केमके **ज्यांसुधी अंतर्परिणतिपर दृष्टि न थाय अने तथारूप मार्गे न प्रवर्त्ताय त्यांसुधी सर्वसंगपरित्याग पण नाम मात्र थाय छे.** अने तेवा अवसरमां पण अंतर्परिणतिपर दृष्टि देवानुं भान जीवने आववुं कठण छे. तो पछी आवा गृहव्यवहारने विषे लौकिक अभिनिवेशपूर्वक रही अंतर्परिणतिपर दृष्टि देवानुं बनवुं केटलुं दुःसाध्य होवुं जोईए ते पण विचारवायोग्य छे, अने अवश्य तेम करवायोग्य छे.

वधारे शुं लखीए? जेटली पोतानी शक्ति होय ते सर्व शक्तिथी एक लक्ष राखीने, लौकिक अभिनिवेशने संक्षेप करीने, कंई पण अपूर्व निरावरणपणुं देखातुं नथी माटे समज्यानुं मात्र अभिमान छे एम जीवने समजावीने जे प्रकारे जीव ज्ञान, दर्शन, चारित्रने विषे सतत जागृत थाय ते ज

करवामां वृत्ति जोडवी, अने रात्रिदिवस तेज चिंतामां प्रवर्त्तवुं ए ज विचारवान जीवनुं कर्त्तव्य छे; अने तेने माटे सत्संग, सत्शास्त्र अने सरळतादि निजगुणो उपकारभूत छे, एम विचारीने तेनो आश्रय करवो योग्य छे.

ज्यांसुधी लौकिक अभिनिवेश एटले द्रव्यादि लोभ, तृष्णा, दैहिक मान, कुळ, जाति आदि संबंधी मोह के विशेषत्व मानवुं होय, ते वात न छोडवी होय. पोतानी बुद्धिए स्वेच्छाए अमुक गच्छादिनो आग्रह राखवो होय, त्यांसुधी जीवने अपूर्व गुण केम उत्पन्न थाय? तेनो विचार सुगम छे.

वधारे लखी शकाय एवो उदय हाल अत्रे नथी, तेम वधारे लखवुं के कहेवुं ते पण कोईक प्रसंगमां थवा देवुं योग्य छे एम छे.

तमारी विशेष जिज्ञासाथी प्रारब्धोदय वेदतां जे कंई लखी शकात ते करतां कंईक उदीरणा करीने विशेष लख्युं छे.

५८९.　　　　चैत्र शुद २ सोम. १९५२.

ॐ

जेमां क्षणवारमां हर्ष अने क्षणवारमां शोक थई आवे एवा आ व्यवहारमां जे ज्ञानीपुरुषो समदशाथी वर्त्ते छे, तेने अत्यंत भक्तिथी धन्य कहीए छैये; अने सर्व मुमुक्षुजीवने एज दशा उपासवायोग्य छे. एम निश्चय देखीने परिणति करवी घटे छे.

५९०.　　　　मुंबई. चैत्र शुद ११. १९५२.

ॐ सद्गुरुचरणाय नमः

१. जे ज्ञानमां देहादि अध्यास मट्यो छे, अने अन्य पदार्थने विषे अहंता ममता वर्त्ततां नथी, तथा उपयोग स्वभावमां परिणमे छे, अर्थात् ज्ञानस्वरूपपणुं भजे छे, ते ज्ञानने **निरावरणज्ञान** कहेवायोग्य छे.

२. सर्व जीवोने एटले सामान्य मनुष्योने ज्ञानी अज्ञानीनी वाणीनो भेद समजावो कठण छे. ए वात यथार्थ छे, केमके कैक शुष्कज्ञानी शीखी लईने ज्ञानीना जेवो उपदेश करे, एटले तेमां वचननुं समतुल्यपणुं जोयाथी शुष्कज्ञानीने पण सामान्य मनुष्यो ज्ञानी माने, मंददशावान मुमुक्षु जीवो पण तेवां वचनथी भ्रांति पामे, पण उत्कृष्टदशावान मुमुक्षु पुरुष शुष्कज्ञानीनी वाणी ज्ञानीनी वाणी जेवी शब्दे जोई प्राये भ्रांति पामवायोग्य नथी, केमके शुष्कज्ञानीनी वाणीमां आशये ज्ञानीनी वाणीनी तुलना होती नथी.

ज्ञानीनी वाणी पूर्वापर अविरोध, आत्मार्थ उपदेशक, अपूर्व अर्थनुं निरूपण करनार होय छे; अने अनुभव सहितपणुं होवाथी आत्माने सतत जागृत करनार होय छे.

शुष्कज्ञानीनी वाणीमां तथारूप गुणो होता नथी. सर्वथी उत्कृष्ट गुण जे पूर्वापर अविरोध-

पणुं ते शुष्कज्ञानीनी वाणीने विषे वर्त्तवायोग्य नथी, केमके यथास्थित पदार्थदर्शन तेने होतुं नथी; अने तेथी ठाम ठाम कल्पनाथी युक्त तेनी वाणी होय छे.

ए आदि नाना प्रकारना भेदथी ज्ञानी अने शुष्कज्ञानीनी वाणीनुं ओळखाण उत्कृष्ट मुमुक्षुने थवायोग्य छे. ज्ञानी पुरुषने तो सहजस्वभावे तेनुं ओळखाण छे, केमके पोते भानसहित छे, अने भानसहित पुरुष विना आ प्रकारनो आशय उपदेशी शकाय नहीं, एम सहेजे ते जाणे छे.

अज्ञान अने ज्ञाननो भेद जेने समजायो छे, तेने अज्ञानी अने ज्ञानीनो भेद सहेजे समजावायोग्य छे. अज्ञान प्रत्येनो जेनो मोह विराम पाम्यो छे, एवा ज्ञानीपुरुषने शुष्कज्ञानीनां वचन भ्रांति केम करी शके? बाकी सामान्य जीवोने अथवा मंददशा अने मध्यमदशाना मुमुक्षुने शुष्कज्ञानीनां वचनो सादृश्यपणे जोवामां आव्यांथी बन्ने ज्ञानीनां वचनो छे एम भ्रांति थवानो संभव छे. उत्कृष्ट मुमुक्षुने घणुंकरीने तेवी भ्रांतिनो संभव नथी, केमके ज्ञानीनां वचननी परीक्षानुं बळ तेने विशेषपणे स्थिर थयुं छे.

पूर्वकाळे ज्ञानी थई गया होय, अने मात्र तेनी मुखवाणी रही होय तोपण वर्त्तमान काळे ज्ञानीपुरुष एम जाणी शके के आ वाणी ज्ञानीपुरुषनी छे, केमके रात्रिदिवसना भेदनी पेठे **अज्ञानी ज्ञानीनी वाणीने विषे आशय भेद होय छे, अने आत्मदशाना तारतम्य प्रमाणे आशयवाळी वाणी निकळे छे,** ते आशय वाणीपरथी वर्त्तमान ज्ञानीपुरुषने स्वाभाविक दृष्टिगत थाय छे; अने कहेनार पुरुषनी दशानुं तारतम्य लक्षगत थाय छे. अत्रे जे वर्त्तमान ज्ञानी शब्द लख्यो छे, ते कोई विशेष प्रज्ञावंत प्रगट बोधबीज सहित पुरुष शब्दना अर्थमां लख्यो छे. **ज्ञानीनां वचननी परीक्षा सर्व जीवने सुलभ होत तो निर्वाण पण सुलभ ज होत.**

३. जिनागममां मति श्रुतआदि ज्ञानना पांच प्रकार कह्या छे. ते ज्ञानना प्रकार साचा छे, उपमावाचक नथी. अवधि, मनःपर्यवादि ज्ञान वर्त्तमानकाळमां व्यवच्छेद जेवां लागे छे, ते परथी ते ज्ञान उपमावाचक गणवांयोग्य नथी. ए ज्ञान मनुष्य जीवोने चारित्र पर्यायनी विशुद्ध तारतम्यताथी उपजे छे. वर्त्तमान काळमां ते विशुद्ध तारतम्यता प्राप्त थवी दुर्लभ छे; केमके काळनुं प्रत्यक्ष स्वरूप चारित्रमोहनीय आदि प्रकृतिना विशेष बळसहित वर्त्ततुं जोवामां आवे छे.

सामान्य आत्मचारित्र पण कोईक जीवने विषे वर्त्तवायोग्य छे, तेवा काळमां ते ज्ञाननी लब्धि व्यवच्छेद जेवी होय एमां कंई आश्चर्य नथी, तेथी ते ज्ञान उपमावाचक गणवायोग्य नथी. आत्मस्वरूप विचारतां तो ते ज्ञाननुं कंई पण असंभवितपणुं देखातुं नथी. सर्व ज्ञाननी स्थितिनुं क्षेत्र आत्मा छे, तो पछी अवधि, मनःपर्यवादि ज्ञाननुं क्षेत्र आत्मा होय एमां संशय केम घटे? यद्यपि शास्त्रना यथास्थित परमार्थना अज्ञजीवो तेनी व्याख्या जे प्रकारे करे छे, ते व्याख्या विरोधवाळी होय, पण परमार्थे ते ज्ञाननो संभव छे.

जिनागममां तेनी जे प्रकारना आशयथी व्याख्या कही होय ते व्याख्या अने अज्ञानी जीवो आशय जाण्याविना जे व्याख्या करे तेमां मोटो भेद होय एमां आश्चर्य नथी, अने ते भेदने लीधे ते ज्ञानना विषय माटे संदेह थवायोग्य छे, पण आत्मदृष्टिए जोतां ते संदेहनो अवकाश नथी.

४. काळनो सूक्ष्ममां सूक्ष्म विभाग समय छे, रूपी पदार्थनो सूक्ष्ममां सूक्ष्म विभाग परमाणु छे, अने अरूपी पदार्थनो सूक्ष्ममां सूक्ष्म विभाग प्रदेश छे. ए त्रणे एवा सूक्ष्म छे के अत्यंत निर्मळ ज्ञाननी स्थिति तेनां स्वरूपने ग्रहण करी शके. सामान्यपणे संसारी जीवोनो उपयोग असंख्यात समयवर्त्ति छे, ते उपयोगमां साक्षात्पणे एक समयनुं ज्ञान संभवे नहीं; जो ते उपयोग एक समयवर्त्ति अने शुद्ध होय तो तेने विषे साक्षात्पणे समयनुं ज्ञान थाय. ते उपयोगनुं एक समयवर्त्तिपणुं कषायादिना अभावे थाय छे, केमके कषायादि योगे उपयोग मूढतादि धारण करे छे, तेम ज असंख्यात समयवर्त्तिपणुं भजे छे; ते कषायादिना अभावे एक समयवर्तिपणुं थाय छे; अर्थात् कषायादिना योगे तेने असंख्यात समयमांथी एक समय जूदो पाडवानुं सामर्थ्य नहोतुं ते कषायादिने अभावे एक समय जूदो पाडीने अवगाहे छे. उपयोगनुं एक समयवर्त्तिपणुं कषायरहितपणुं थया पछी थाय छे. **माटे एक समयनुं, एक परमाणुनुं अने एक प्रदेशनुं जेने ज्ञान थाय तेने केवळज्ञान प्रगटे एम कह्युं छे ते सत्य छे.** कषायरहितपणाविना केवळज्ञाननो संभव नथी, अने कषायरहितपणाविना उपयोग एक समयने साक्षात्पणे ग्रहण करी शकतो नथी, माटे एक समयने ग्रहण करे ते समये अत्यंत कषायरहितपणुं जोईए, अने ज्यां अत्यंत कषायनो अभाव होय त्यां केवळज्ञान होय छे, माटे ए प्रकारे कह्युं के एक समय, एक परमाणु अने एक प्रदेशनो जेने अनुभव थाय तेने केवळज्ञान प्रगटे. जीवने विशेष पुरुषार्थने अर्थे आ एक सुगम साधननो ज्ञानीपुरुषे उपदेश कर्यो छे. समयनी पेठे परमाणु अने प्रदेशनुं सूक्ष्मपणुं होवाथी त्रणे साथे ग्रहण कर्यां छे. अंतर्विचारमां वर्त्तवाने अर्थे ज्ञानीपुरुषोए असंख्यात योग कह्या छे; ते मध्येनो एक आ विचारयोग कह्यो छे एम समजवायोग्य छे.

५. शुभेच्छाथी मांडीने सर्वकर्मरहितपणे स्वस्वरूपस्थितिसुधीमां अनेक भूमिकाओ छे. जे जे आत्मार्थि जीवो थया, अने तेमनामां जे जे अंशे जागृतदशा उत्पन्न थई ते ते दशाना भेदे अनेक भूमिकाओ तेमणे आराधी छे. श्री कबीर, सुंदरदास आदि साधुजनो आत्मार्थि गणवायोग्य छे; अने शुभेच्छाथी उपरनी भूमिकाओमां तेमनी स्थिति संभवे छे. अत्यंत स्वस्वरूपस्थिति माटे तेमनी जागृति अने अनुभव पण लक्षगत थाय छे; एथी विशेष स्पष्ट अभिप्राय हाल आपवानी इच्छा नथी थती.

६. केवळज्ञानना स्वरूपनो विचार दुर्गम्य छे, अने श्री डुंगर केवळ कोटीथी तेनो निर्धार करे छे, तेमां जो के तेमनो अभिनिवेश नथी, पण तेम तेने भासे छे, माटे कहे छे.

मात्र केवळ कोटी छे, अने भूत भविष्यनुं कंई पण ज्ञान कोईने न थाय एवी मान्यता करवी घटती नथी. भूत भविष्यनुं यथार्थ ज्ञान थवायोग्य छे, पण ते कोईक विरला पुरुषोने अने ते पण विशुद्ध चारित्र तारतम्ये. एटले ते संदेहरूप लागे छे, केमके तेवी विशुद्ध चारित्र तारतम्यता वर्तमानमां अभाव जेवी वर्त्ते छे.

केवळज्ञाननो अर्थ वर्त्तमानमां शास्त्रवेत्ता मात्र शब्दबोधथी जे कहे छे, ते यथार्थ नथी एम श्री डुंगरने लागतुं होय तो ते संभवित छे; वळी भूत भविष्य जाणवुं एनुं नाम केवळज्ञान छे, एवी व्याख्या मुख्यपणे शास्त्रकारे पण कही नथी. **ज्ञाननुं अत्यंत शुद्ध थवुं तेने केवळज्ञान ज्ञानीपुरुषोए कह्युं छे** अने ते ज्ञानमां मुख्यतो आत्मस्थिति अने आत्मसमाधि कह्यां छे. जगत्नुं ज्ञान थवुं ए आदि कह्युं छे, ते अपूर्व विषयनुं ग्रहण सामान्य जीवोथी थवुं अशक्य जाणीने कह्युं छे, केमके जगत्ना ज्ञानपर विचार करतां करतां आत्मसामर्थ्य समजाय.

श्री डुंगर महात्मा श्री ऋषभादिने विषे केवळ कोटी कहेता न होय, अने तेमना आज्ञावर्त्ति (एटले जेम महावीरस्वामीनां दर्शने पांचसें मुमुक्षुओ केवळज्ञान पाम्या ते आज्ञावर्त्ति) ने केवळज्ञान कह्युं छे ते केवळज्ञानने केवळ कोटी कहेता होय तो ते वात कोई पण रीते घटे छे. एकांत केवळज्ञाननो श्री डुंगर निषेध करे तो ते आत्मानो निषेध करवा जेवुं छे.

लोको हाल केवळज्ञाननी जे व्याख्या करे छे, ते केवळज्ञाननी व्याख्या विरोधवाळी देखाय छे, एम तेमने लागतुं होय तो ते पण संभवित छे. केमके मात्र जगत्ज्ञान ते केवळज्ञाननो विषय वर्त्तमानप्ररूपणामां उपदेशाय छे. आ प्रकारनुं समाधान लखतां घणा प्रकारना विरोध दृष्टिगोचर थाय छे. अने ते विरोधो दर्शावी तेनुं समाधान लखवानुं हाल तरतमां बनवुं अशक्य छे. तेथी संक्षेपमां समाधान लख्युं छे. समाधानसमुच्चयार्थ आ प्रमाणे छे:—

"**आत्मा ज्यारे अत्यंत शुद्धज्ञानस्थिति भजे, तेनुं नाम केवळज्ञान मुख्यपणे छे, सर्व प्रकारना रागद्वेषनो अभाव थये अत्यंत शुद्धज्ञानस्थिति प्रगटवायोग्य छे, ते स्थितिमां जे कंइ जाणी शकाय ते केवळज्ञान छे. अने ते संदेहयोग्य नथी.** श्री डुंगर केवळ कोटी कहे छे, ते पण महावीरस्वामी समीपे वर्त्तता आज्ञावर्त्ति पांचसें केवळी जेवा प्रसंगमां संभवित छे, जगत्ना ज्ञाननो लक्ष मूकी शुद्ध आत्मज्ञान ते केवळज्ञान छे, एम विचारतां आत्मदशा विशेषपणुं भजे," ए प्रमाणे आ प्रश्नना समाधाननो संक्षेप आशय छे.

जेम बने तेम जगत्ना ज्ञानप्रत्येनो विचार छोडी स्वरूपज्ञान थाय तेम केवळज्ञाननो विचार थवा अर्थे पुरुषार्थ कर्त्तव्य छे. जगत्नुं ज्ञान थवुं तेनुं नाम केवळज्ञान मुख्यार्थपणे गणवायोग्य नथी. जगत्ना जीवोने विशेष लक्ष थवा अर्थे वारंवार जगत्नुं ज्ञान साथे लीधुं छे; अने ते कंई कल्पित छे एम नहीं; पण ते प्रत्ये अभिनिवेश करवायोग्य नथी. आ ठेकाणे विशेष लखवानी इच्छा थाय छे, अने ते रोकवी पडे छे, तोपण संक्षेपमां फरी लखीए छैये.

आत्माने विषेथी सर्व प्रकारनो अन्य अध्यास टळी स्फटिकनी पेठे आत्मा अत्यंत शुद्धता भजे ते केवळज्ञान छे, अने जगत्ज्ञानपणे तेने वारंवार जिनागममां कह्युं छे, ते महात्म्यथी करी बाह्य-दृष्टि जीवो पुरुषार्थमां प्रवर्त्ते ते हेतु छे.

५९१. मुंबई. चैत्र वद ७ रवि. १९५२.

सत्समागमना अभावप्रसंगमां तो विशेषकरी आरंभपरिग्रहप्रत्येथी वृत्ति संक्षेपवानो अभ्यास

राखी, जेने विषे त्यागवैराग्यादि परमार्थसाधनो उपदेश्यां छे, तेवा ग्रंथो वांचवानो परिचय कर्त्तव्य छे, अने अप्रमत्तपणे पोताना दोष वारंवार जोवायोग्य छे.

५९२. मुंबई. चैत्र वद १४ रवि. १९५२.

अन्य पुरुषकी दृष्टिमें, जग व्यवहार लखाय;
वृंदावन जब जग नहीं, कौन व्यवहार बताय?

विहार वृंदावन.

५९३. मुंबई. वैशाख शुद १ भोम. १९५२.

ॐ

करवाप्रत्ये वृत्ति नथी, अथवा एक क्षण पण जेने करवुं भासतुं नथी, करवाथी उत्पन्न थतां फळप्रत्ये जेनी उदासीनता छे, तेवा कोई आप्त पुरुष तथारूप प्रारब्धयोगथी परिग्रह संयोगादिमां वर्त्तता देखाता होय, अने जेम इच्छक पुरुष प्रवृत्ति करे, उद्यम करे, तेवा कार्यसहित प्रवर्त्तमान जोवामां आवता होय, तो तेवा पुरुषने विषे ज्ञानदशा छे, एम शी रीते जाणी शकाय? एटले ते पुरुष आप्त (परमार्थ अर्थे प्रतीति करवायोग्य) छे, अथवा ज्ञानी छे, एम क्यां लक्षणे ओळखी शकाय? कदापि कोई मुमुक्षुने बीजा कोई पुरुषना सत्संगयोगथी एम जाणवामां आव्युं, तो ते ओळखाणमां भ्रांति पडे तेवो व्यवहार ते सत्पुरुष विषे प्रत्यक्ष देखाय छे, ते भ्रांति निवृत्त थवा माटे मुमुक्षु जीवे तेवा पुरुषने केवा प्रकारथी ओळखवा घटे के जेथी तेवा तेवा व्यवहारमां वर्त्ततां पण ज्ञानलक्षणपणुं तेना लक्षमां रहे?

सर्व प्रकारे जेने परिग्रहादि संयोगप्रत्ये उदासीनपणुं वर्त्ते छे, अर्थात् अहंममत्वपणुं तथारूप संयोगो विषे जेने थतुं नथी, अथवा परिक्षीण थयुं छे, अनंतानुबंधी प्रकृतिथी रहित मात्र प्रारब्धोदयथी व्यवहार वर्त्ततो होय, ते व्यवहार सामान्य दशाना मुमुक्षुने संदेहनो हेतु थई तेने उपकारभूत थवामां निरोधरूप थतो होय एवुं ते ज्ञानीपुरुष देखे छे, अने ते अर्थे पण परिग्रह संयोगादि प्रारब्धोदय व्यवहारनी परिक्षीणता इच्छे छे, तेम थतांसुधी केवा प्रकारथी ते पुरुष वर्त्या होय, तो ते सामान्य मुमुक्षुने उपकार थवामां हानि न थाय?

५९४. ववाणीआ. वैशाख वद ६ रवि. १९५२.

आर्य श्री माणेकचंदादिप्रत्ये—श्री स्थंभतीर्थ.

सुंदरलाले वैशाख वदी एकमे देह छोड्याना खबर लख्या ते वांच्या. विशेषकाळनी मांदगी-विना, युवान अवस्थामां अकस्मात् देह छोडवानुं बन्याथी सामान्यपणे ओळखता माणसोने पण ते वातथी खेद थयाविना न रहे, तो पछी जेणे कुटुंबादि संबंधस्नेहे मूर्छा करी होय, सहवासमां वस्यां होय, ते प्रत्ये कंई आश्रयभावना राखी होय तेने खेद थयाविना केम रहे? आ संसारमां मनुष्यप्राणीने जे खेदना अकथ्य प्रसंगो प्राप्त थाय छे, ते ज अकथ्य प्रसंगमांनो एक आ मोटो

खेदकारक प्रसंग छे. ते प्रसंगमां यथार्थ विचारवान पुरुषो शिवाय सर्व प्राणी खेदविशेषने प्राप्त थाय छे, अने यथार्थ विचारवान पुरुषोने वैराग्यविशेष थाय छे, संसारनुं अशरणपणुं, अनित्यपणुं अने असारपणुं विशेष दृढ थाय छे.

विचारवान पुरुषोने ते खेदकारक प्रसंगनो मूर्छाभावे खेद करवो ते मात्र कर्मबंधनो हेतु भासे छे, अने वैराग्यरूप खेदथी कर्मसंगनी निवृत्ति भासे छे, अने ते सत्य छे. मूर्छाभावे खेद कर्याथी पण जे संबंधीनो वियोग थयो छे तेनी प्राप्ति थती नथी, अने जे मूर्छा थाय छे ते पण अविचार दशानुं फळ छे, एम विचारी विचारवान पुरुषो ते मूर्छाभावप्रत्ययि खेदने शमावे छे, अथवा घणुंकरीने तेवो खेद तेमने थतो नथी. कोई रीते तेवा खेदनुं हितकारीपणुं देखातुं नथी, अने बनेलो प्रसंग खेदनुं निमित्त छे एटले तेवे अवसरे विचारवान पुरुषने जीवने हितकारी एवो खेद उत्पन्न थाय छे. सर्वसंगनुं अशरणपणुं, अबंधवपणुं, अनित्यपणुं, अने तुच्छपणुं तेम ज अन्यत्वपणुं देखीने पोताने विशेष प्रतिबोध थाय छे के हे जीव, तारे विषे कंई पण आ संसारने विषे उदयादि भावे पण मूर्छा वर्त्तती होय तो ते त्याग कर, त्याग कर, ते मूर्छानुं कंई फळ नथी, ते संसारमां क्यारेय पण शरणत्वादिपणुं प्राप्त थवुं नथी, अने अविचारपणाविना ते संसारने विषे मोह थवायोग्य नथी, जे मोह अनंत जन्ममरणनो अने प्रत्यक्ष खेदनो हेतु छे, दुःख अने क्लेशनुं बीज छे तेने शांत कर, तेनो क्षय कर. हे जीव, ए विना बीजो कोई हितकारी उपाय नथी, ए वगेरे भावितात्मताथी वैराग्यने शुद्ध अने निश्चल करे छे. जे कोई जीव यथार्थ विचारथी जुए छे, तेने आ ज प्रकारे भासे छे.

आ जीवने देहसंबंध होईने मृत्यु न होत तो आ संसार शिवाय बीजे तेनी वृत्ति जोडावानो अभिप्राय थात नहीं. मुख्य करीने मृत्युने भये परमार्थरूप बीजे स्थानके वृत्ति प्रेरी छे, ते पण कोईक वीरला जीवने प्रेरित थई छे, घणा जीवोने तो बाह्य निमित्तथी मृत्युभयपरथी बाह्य क्षणिक वैराग्य प्राप्त थई विशेष कार्यकारी थया विना नाश पामे छे; मात्र कोईक विचारवान अथवा सुलभबोधी के हळुकर्मि जीवने ते भयपरथी अविनाशी निःश्रेयम् पदप्रत्ये वृत्ति थाय छे.

मृत्युभय होत तोपण ते मृत्यु वृद्धावस्थाए नियमित प्राप्त थतुं होत तोपण जेटला पूर्वे विचारवानो थया छे तेटला न थात. अर्थात् वृद्धावस्था सुधी तो मृत्युनो भय नथी एम देखीने प्रमादसहित वर्त्ततां मृत्युनुं अवश्य आववुं देखीने, तथा तेनुं अनियमितपणे आववुं देखीने, ते प्रसंग प्राप्त थये स्वजनादि सौथी अरक्षणपणुं देखीने परमार्थ विचारवामां अप्रमत्तपणुं ज हितकारी लाग्युं, अने सर्वसंगनुं अहितकारीपणुं लाग्युं. विचारवान पुरुषोने ते निश्चय निःसंदेह सत्य छे, त्रणे काळ सत्य छे. मूर्छाभावनो खेद त्यागीने असंगभावप्रत्ययि खेद विचारवानने कर्त्तव्य छे.

जो आ संसारने विषे आवा प्रसंगोनो संभव न होत, पोताने अथवा परने तेवा प्रसंगनी अप्राप्ति देखाती होत, अशरणादिपणुं न होत तो पंचविषयनां सुखसाधननुं कशुं न्यूनपणुं प्राये नहोतुं एवा श्री ऋषभदेवादि परमपुरुषो, अने भरत जेवा चक्रवर्त्यादियो तेनो शा कारणे त्याग करत? एकांत असंगपणुं शा कारणे भजत?

हे आर्य माणेकचंदादि, यथार्थ विचारनां ओछापणांने लीधे, पुत्रादि भावनी कल्पना अने मूर्छाने लीधे तमने कंई पण खेद विशेष प्राप्त थवो संभवित छे, तोपण ते खेदनुं बेयने कंई पण हितकारी फळ नहीं होवाथी, हितकारीपणुं मात्र असंगविचारविना कोई अन्य उपाये नथी एम विचारी, थतो खेद यथाशक्ति विचारथी, ज्ञानीपुरुषोना वचनामृतथी, तथा साधुपुरुषना आश्रय समागमादिथी अने विरतिथी उपशांत करवो, ए ज कर्त्तव्य छे.

५९५. मोहमयी क्षेत्रथी द्वि. ज्येष्ठ शुद २ शनि. १९५२.

ॐ

जे हेतुथी एटले शारीरिक रोगविशेषथी तमारा नियममां आगार हतो, ते रोगविशेष वर्त्ते छे, तेथी ते आगार ग्रहण करतां आज्ञानो भंग अथवा अतिक्रम नहीं थाय; केमके तमारो नियम तथा प्रकारे प्रारंभित हतो. एज कारणविशेष छतां पण जो पोतानी इच्छाए ते आगार ग्रहण करवानुं थाय तो आज्ञानो भंग के अतिक्रम थाय. **सर्व प्रकारना आरंभ तथा परिग्रहना संबंधनुं मूळ छेदवाने समर्थ एवुं ब्रह्मचर्य परम साधन छे.**

संसारनुं अशरणादिपणुं लख्युं ते यथार्थ छे; तेवी परिणति अखंड वर्त्ते तो ज जीव उत्कृष्ट वैराग्यने पामी स्वस्वरूप ज्ञानने पामे; क्यारेक क्यारेक कोई निमित्तथी तेवां परिणाम थाय छे, पण तेने विघ्नहेतु एवा संग तथा प्रसंगने विषे जीवनो वास होवाथी ते परिणाम अखंड रहेतां नथी, अने संसाराभिरूचि थई जाय छे; तेथी अखंड परिणतिना इच्छावान मुमुक्षुने ते माटे नित्य सत्समागमनो आश्रय करवानी परम पुरुषे शिक्षा दीधी छे.

ज्यांसुधी जीवने ते योग प्राप्त न थाय त्यांसुधी कंई पण तेवा वैराग्यने आधारनो हेतु तथा अप्रतिकूळ निमित्तरूप एवा मुमुक्षु जननो समागम तथा सत्शास्त्रनो परिचय कर्त्तव्य छे. बीजा संग तथा प्रसंगथी दूर रहेवानी वारंवार स्मृति राखवी जोईए, अने ते स्मृति प्रवर्त्तन रूप करवी जोईए; वारंवार जीव आ वात विसरी जाय छे; अने तेथी इच्छित साधन तथा परिणतिने पामतो नथी.

५९६. मुंबई. बीजा जेठ वदी ६ गुरु. १९५२.

ॐ

वर्त्तमानकाळमां आ क्षेत्रथी निर्वाणनी प्राप्ति थाय नहीं, एम जिनागममां कह्युं छे. अने वेदांतादि एम कहे छे के (आ काळमां आ क्षेत्रथी) निर्वाणनी प्राप्ति थाय.

वर्त्तमानकाळमां आ क्षेत्रथी निर्वाणप्राप्ति न होय ए शिवाय बीजा केटलाक भावनी पण जिनागममां तथा तेना आश्रयने इच्छता एवा आचार्यरचित शास्त्रने विषे विच्छेदता कही छे. केवळज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अवधिज्ञान, पूर्वज्ञान, यथाख्यात चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र, परिहारविशुद्धि चारित्र, क्षायक समकित अने पुलाकलब्धि ए भावो मुख्य करीने विच्छेद कह्या छे.

वर्त्तमानकाळमां आ क्षेत्रथी आत्मार्थनी कइ कइ मुख्य भूमिका उत्कृष्ट अधिकारीने प्राप्त थई शके, अने ते प्राप्त थवानो मार्ग कयो? ते प्रश्नोना परमार्थ प्रत्ये विचारनो लक्ष राखशो.

५९७. मुंबई. अशाड सुद २ रवि. १९५२.

ज्ञान, क्रिया अने भक्तियोग.

जेने मृत्युनी साथे मित्रता होय अथवा जे मृत्युथी भागी छूटी शके एम होय अथवा हुं नहीं मरूं एम जेने निश्चय होय ते भले सुखे सुवे. (श्री तीर्थंकर–छजीवनिकाय अध्ययन.)

ज्ञानमार्ग दुराराध्य छे: परमावगाढदशा पाम्या पहेलां ते मार्गे पडवानां घणा स्थानक छे. संदेह, विकल्प, स्वच्छंदता, अतिपरिणामीपणुं ए आदि कारणो वारंवार जीवने ते मार्गे पडवाना हेतुओ थाय छे; अथवा ऊर्ध्वभूमिका प्राप्त थवा देतां नथी.

क्रियामार्गे असद् अभिमान, व्यवहार आग्रह, सिद्धिमोह, पूजासत्कारादि योग, अने दैहिक क्रियामां आत्मनिष्ठादि दोषोनो संभव रह्यो छे.

कोईक महात्माने बाद करतां घणा विचारवान जीवोए भक्तिमार्गनो ते ज कारणोथी आश्रय कर्यो छे, अने आज्ञाश्रितपणुं अथवा परमपुरुष सद्गुरुने विषे सर्वार्पण स्वाधीनपणुं शिरसावंद्य दीठुं छे, अने तेम ज वर्त्त्या छे, तथापि तेवो* योग प्राप्त थवो जोईए; नहीं तो चिंतामणि जेवो जेनो एक समय छे एवो मनुष्यदेह उलटो परिभ्रमणवृद्धिनो हेतु थाय.

५९८.

ॐ

श्री····ना अभिप्रायपूर्वक तमारो लखेलो कागळ तथा श्री···नो लखेलो कागळ पहोंच्या छे. श्री····ना अभिप्रायपूर्वक श्री····ए लख्युं के निश्चय अने व्यवहारनां अपेक्षितपणाथी जिनागम तथा वेदांतादि दर्शनमां वर्त्तमानकाळमां आ क्षेत्रथी मोक्षनी ना तथा हा कही होवानो संभव छे, ए विचार विशेष अपेक्षाथी यथार्थ देखाय छे; अने····ए जणाव्युं छे के वर्त्तमानकाळमां संघयणादि हीन थवानां कारणथी केवळज्ञाननो निषेध कर्यो छे, ते पण अपेक्षित छे.

आगळपर विशेषार्थ लक्षगत थवा माटे गयां पत्रनां प्रश्नने कंईक स्पष्टताथी लखीए छैये;— जेवो केवळज्ञाननो अर्थ वर्त्तमानमां जिनागमथी वर्त्तमान जैनसमूहने विषे चाले छे, तेवो ज तेनो अर्थ तमने यथार्थ भासे छे के कंई बीजो अर्थ भासे छे? सर्व देशकाळादिनुं ज्ञान केवळ-ज्ञानीने होय एम जिनागमनो हाल रूढीअर्थ छे; बीजा दर्शनमां एवो मुख्यार्थ नथी, अने जिनागमथी तेवो मुख्यार्थ लोकोमां हाल प्रचलित छे. ते ज केवळज्ञाननो अर्थ होय तो तेमां केटलाक विरोध देखाय छे. जे बधा अत्रे लखी शकवानुं बनी शक्युं नथी; तेम जे विरोध लख्या छे, ते पण विशेष विस्तारथी लखवानुं बन्युं नथी, केमके ते यथावसरे लखवायोग्य लागे छे. जे लख्युं छे ते उपकारदृष्टिथी लख्युं छे, एम लक्ष राखशो.

---

* तेवा परमपुरुष सद्गुरुनो योग.

योगधारीपणुं एटले मन, वचन अने कायासहित स्थिति होवाथी आहारादि अर्थे प्रवृत्ति थतां उपयोगांतर थवाथी कंई पण वृत्तिनो एटले उपयोगनो तेमां निरोध थाय. एक वखते बे उपयोग कोईने वर्त्ते नहीं एवो सिद्धांत छे त्यारे आहारादि प्रवृत्तिना उपयोगमां वर्त्तता केवळज्ञानीनो उपयोग केवळज्ञानना ज्ञेयप्रत्ये वर्त्ते नहीं, अने जो एम बने तो केवळज्ञानने अप्रतिहत कह्युं छे, ते प्रतिहत थयुं गणाय. अत्रे कदापि एम समाधान करीए के आरसीने विषे जेम पदार्थ प्रतिबिंबित थाय छे, तेम केवळज्ञानने विषे सर्व देशकाळ प्रतिबिंबित थाय छे, केवळज्ञानी तेमां उपयोग दईने जाणे छे एम नथी, सहज स्वभावे ज तेमनामां पदार्थ प्रतिभास्या करे छे, माटे आहारादिमां उपयोग वर्त्ततां सहज स्वभावे प्रतिभासित एवां केवळज्ञाननुं होवापणुं यथार्थ छे; तो त्यां प्रश्न थवायोग्य छे के आरसीने विषे प्रतिभासित पदार्थनुं ज्ञान आरसीने नथी, अने अत्रे तो केवळज्ञानीने तेनुं ज्ञान छे एम कह्युं छे, अने उपयोग शिवाय आत्मानुं बीजुं एवुं कयुं स्वरूप छे के आहारादिमां उपयोग प्रवर्त्त्यो होय त्यारे केवळज्ञानमां थवायोग्य ज्ञेय आत्मा तेथी जाणे?

सर्व देशकाळादिनुं ज्ञान केवळीने होय ते केवळी सिद्धने कहीए तो संभवित थवायोग्य गणाय केमके तेने योगधारीपणुं कह्युं नथी; आमां पण प्रश्न थवायोग्य छे, तथापि योगधारीनी अपेक्षाथी सिद्धने विषे तेवा केवळज्ञाननी मान्यता होय तो योगरहितपणुं होवाथी तेमां संभवी शके छे एटलुं प्रतिपादन करवाने अर्थे लख्युं छे, सिद्धने तेवुं ज्ञान होय ज एवो अर्थ प्रतिपादन करवाने लख्युं नथी. जो के जिनागमना रूढीअर्थ प्रमाणे जोतां तो देहधारी केवळी अने सिद्धने विषे केवळज्ञाननो भेद थतो नथी, बेयने सर्व देशकाळादिनुं संपूर्णज्ञान होय एम रूढीअर्थ छे. बीजी अपेक्षाथी जिनागम जोतां जूदी रीते देखाय छे. जिनागममां आप्रमाणे पाठार्थे जोवामां आवे छेः–

केवळज्ञान बे प्रकारे कह्युं ते आ प्रमाणे–सयोगी भवस्थ केवळज्ञान, अयोगी भवस्थ केवळज्ञान. सयोगी केवळज्ञान बे प्रकारे कह्युं ते आ प्रमाणे–प्रथम समय एटले उपजती वखतनुं सयोगी केवळज्ञान, अप्रथम समय एटले अयोगी थवाना प्रवेश समय पहेलानुं केवळज्ञान. एम अयोगी भवस्थ केवळज्ञान बे प्रकारे कह्युं ते आ प्रमाणे–प्रथम समय केवळज्ञान अने अप्रथम एटले सिद्ध थवा पहेलानां छेल्ला समयनुं केवळज्ञान.

ए आदि प्रकारे केवळज्ञानना भेद जिनागममां कह्या छे, तेनो परमार्थ शो होवो जोईए? कदापि एम समाधान करीए के बाह्य कारणनी अपेक्षाथी केवळज्ञानना भेद बताव्या छे, तो त्यां एम शंका करवायोग्य छे के कशो पण पुरुषार्थ सिद्ध थतो न होय अने जेमां विकल्पनो अवकाश न होय तेमां भेद पाडवानी प्रवृत्ति ज्ञानीना वचनमां संभवती नथी. प्रथम समय केवळज्ञान अने अप्रथम समय केवळज्ञान एवो भेद पाडतां केवळज्ञाननुं तारतम्य वधतुं घटतुं होय तो ते भेद संभवे, पण तारतम्यमां तेम नथी त्यारे भेद पाडवानुं कारण शुं ए आदि प्रश्न अत्रे संभवे छे, ते पर अने प्रथमना पत्रपर यथाशक्ति विचार कर्त्तव्य छे.

५९९.

हेतु अवक्तव्य !

एकमां पर्यवसान शी रीते थई शके छे ?
अथवा थतुं नथी ?
व्यवहार रचना करी छे एम कोई हेतुथी सिद्ध थाय छे ?

६००.

स्वस्थिति–आत्मदशा संबंधे विचार.
तथा तेनुं पर्यवसान ?
त्यार पछी लोकोपकार प्रवृत्ति ?
लोकोपकार प्रवृत्तिनुं धोरण.
वर्त्तमानमां केम वर्त्तवुं उचित छे ?
(हालमां)

६०१.

त्रणे काळमां जे वस्तु जात्यंतर थाय नहीं तेने श्री जिन द्रव्य कहे छे.

कोई पण द्रव्य परपरिणामे परिणमे नहीं. स्वपणानो त्याग करी शके नहीं.

प्रत्येक द्रव्य (द्रव्य–क्षेत्र–काळ–भावथी) स्वपरिणामी छे.

नियत अनादि मर्यादापणे वर्त्ते छे.

जे चेतन छे, ते कोई दिवस अचेतन थाय नहीं; जे अचेतन छे, ते कोई दिवस चेतन थाय नहीं.

६०२.

हे योग,

६०३.

चेतननी उत्पत्तिनां कंई पण संयोगो देखातां नथी, तेथी चेतन अनुत्पन्न छे. ते चेतन विनाश पामवानो कंई अनुभव थतो नथी, माटे अविनाशी छे.–नित्य अनुभवस्वरूप होवाथी नित्य छे.

समये समये परिणामांतर प्राप्त थवाथी अनित्य छे.

स्वस्वरूपनो त्याग करवाने अयोग्य होवाथी मूळ द्रव्य छे.

६०४.

सर्व करतां वीतरागनां वचनने संपूर्ण प्रतीतिनुं स्थान कहेवुं घटे छे, केमके ज्यां रागादि दोषनो संपूर्ण क्षय होय त्यां संपूर्ण ज्ञानस्वभाव प्रगटवायोग्य नियम घटे छे.

श्री जिनने सर्व करतां उत्कृष्ट वीतरागता संभवे छे. प्रत्यक्ष तेमनां वचननुं प्रमाण छे माटे, जे कोई पुरुषने जेटले अंशे वीतरागता संभवे छे, तेटले अंशे ते पुरुषनुं वाक्य मान्यता योग्य छे.

सांख्यादि दर्शने बंध, मोक्षनी जे जे व्याख्या उपदेशी छे, तेथी बळवान प्रमाणसिद्ध व्याख्या श्री जिनवीतरागे कही छे, एम जाणुं छउं.

शं० जे जिने द्वैतनुं निरूपण कर्युं छे, आत्माने खंड द्रव्यवत् कह्यो छे, कर्त्ता भोक्ता कह्यो छे, अने निर्विकल्प समाधिने अंतरायमां मुख्य कारण थाय एवी पदार्थव्याख्या कही छे, ते जिननी शिक्षा बळवान प्रमाणसिद्ध छे एम केम कही शकाय? केवळ अद्वैत—अने सहजे निर्विकल्प समाधिनुं कारण एवो जे वेदांतादि मार्ग तेनुं ते करतां अवश्य विशेष प्रमाणसिद्धपणुं संभवे छे.

उ० यद्यपि एकवार तमे कहो छो तेम गणीए, पण सर्व दर्शननी शिक्षा करतां जिननी कहेली बंध मोक्षना स्वरूपनी शिक्षा जेटली अविकळ प्रतिभासे छे, तेटली बीजां दर्शननी प्रतिभासती नथी.—अने जे अविकळ शिक्षा ते ज प्रमाणसिद्ध छे.

शं० एम जो तमे धारो छो तो कोई रीते निर्णयनो समय नहीं आवे, केमके सर्व दर्शनमां जे जे दर्शनने विषे जेनी स्थिति छे ते ते दर्शन माटे अविकळता माने छे.

उ० यद्यपि एम होय तो तेथी अविकळता न ठरे, जेनुं प्रमाणे करी अविकळपणुं होय ते ज अविकळ ठरे.

प्र० जे प्रमाणेकरी तमे जिननी शिक्षाने अविकळ जाणो छो ते प्रकारने तमे कहो; अने जे प्रकारे वेदांतादिनुं विकळपणुं तमने संभवे छे, ते पण कहो.

६०५.

प्रत्यक्ष अनेक प्रकारनां दुःखने तथा दुःखी प्राणीओने जोइने, तेम ज जगत्‌नी विचित्र रचना जाणीने तेम थवानो हेतु शो छे? तथा ते दुःखनुं मूळ स्वरूप शुं छे? अने तेनी निवृत्ति कया प्रकारे थई शकवा योग्य छे? तेम ज जगत्‌नी विचित्ररचनानुं अंतर्स्वरूप शुं छे—ए आदि प्रकारने विषे विचारदशा उत्पन्न थई छे जेने एवा मुमुक्षु पुरुष तेमणे, पूर्व पुरुषोए उपर कह्या ते विचारो विषे जे कंई समाधान आण्युं हतुं, अथवा मान्युं हतुं ते विचारना समाधान प्रत्ये पण यथाशक्ति आलोचना करी. ते आलोचना करतां विविध प्रकारना मतमतांतर तथा अभिप्रायसंबंधी यथाशक्ति विशेष विचार कर्यो. तेम ज नाना प्रकारना रामानुजादि संप्रदायनो विचार कर्यो. तथा वेदांतादि दर्शननो विचार कर्यो. ते आलोचनाविषे अनेक प्रकारे ते दर्शनना स्वरूपनुं मथन कर्युं, अने प्रसंगे प्रसंगे मथननी योग्यताने प्राप्त थयेलुं एवुं जैनदर्शन ते संबंधी घणा प्रकारे जे मथन थयुं, ते मथनथी ते दर्शनने सिद्ध थवा अर्थे—पूर्वापर विरोध जेवा लागे छे एवा नीचे लख्यां छे ते कारणो देखायां.

६०६.

धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय अरूपी छतां रूपीने सामर्थ्य आपे

छे, अने ए त्रण द्रव्य स्वभावपरिणामी कह्यां छे, त्यारे ए अरूपी छतां रूपीने सहायक केम थई शके ?

धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय एकक्षेत्रावगाही छे, अने परस्पर विरुद्धतावाळा तेना स्वभाव छे, छतां तेमां विरोध, गति पामेली वस्तुप्रत्ये स्थितिसहायकतारूपे अने स्थिति पामेली वस्तुप्रत्ये गति सहायकतारूपे थई शा माटे आवे नहीं ?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आत्मा एक ए त्रण समान असंख्यात प्रदेशी छे, तेनो कंई बीजो रहस्यार्थ छे ?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायनी अवगाहना अमुक अमूर्त्ताकारे छे, तेम होवामां कंई रहस्यार्थ छे ?

लोकसंस्थान सदैव एक स्वरूपे रहेवामां कंई रहस्यार्थ छे ?

एक तारो पण घटवध थतो नथी, एवी अनादिस्थिति शा हेतुथी मानवी ?

शाश्वतपणानी व्याख्या शुं ? आत्मा, के परमाणु कदापि शाश्वत मानवामां मूळ द्रव्यत्व कारण छे; पण तारा, चंद्र, विमानादिमां तेवुं शुं कारण छे ?

६०७.

सिद्ध आत्मा लोकालोकप्रकाशक छे, पण लोकालोकव्यापक नथी, व्यापक तो स्वअवगाहनाप्रमाण छे. जे मनुष्यदेहे सिद्धि पाम्या तेना त्रीजा भाग उणे ते प्रदेश घन छे, एटले आत्मद्रव्य लोकालोकव्यापक नथी पण लोकालोकप्रकाशक एटले लोकालोकज्ञायक छे, लोकालोक प्रत्ये आत्मा जतो नथी, अने लोकालोक कंई आत्मामां आवतां नथी, सर्वे पोतपोतानी अवगाहनामां स्वसत्तामां रह्यां छे, तेम छतां आत्माने तेनुं ज्ञानदर्शन शी रीते थाय छे ?

अत्रे जो एवुं दृष्टांत कहेवामां आवे के जेम आरीसामां वस्तु प्रतिबिंबित थाय छे, तेम आत्मामां पण लोकालोक प्रकाशित थाय छे, प्रतिबिंबित थाय छे तो ए समाधान पण अविरोध देखातुं नथी, केमके आरीसामां तो वीस्रसा परिणामी पुद्गल राशी(?)थी प्रतिबिंब थाय छे.

आत्मानो अगुरुलघु धर्म छे, ते धर्मने देखतां आत्मा सर्व पदार्थने जाणे छे, केमके सर्व द्रव्यमां अगुरुलघु गुण समान छे. एक कहेवामां आवे छे, त्यां अगुरुलघु धर्मनो अर्थ शुं समजवो ?

६०८.

वर्त्तमानकाळनी पेठे आ जगत् सर्व काळ छे.

पूर्वकाळे न होय तो वर्त्तमानकाळे तेनुं होवुं पण होय नहीं.

वर्त्तमानकाळे छे तो भविष्यकाळमां ते अत्यंत विनाश पामे नहीं.

पदार्थमात्र परिणामी होवाथी आ जगत् पर्यायांतर देखाय छे; पण मूळपणे तेनुं सदा वर्त्तमानपणुं छे.

६०९.

जे वस्तु समयमात्र छे, ते सर्व काळ छे.

जे भाव छे ते छे, जे भाव नथी ते नथी.

बे प्रकारनो पदार्थ स्वभावविभावपूर्वक स्पष्ट देखाय छे. जड स्वभाव, चेतन स्वभाव.

६१०.

गुणातिशयता शुं?

ते केम आराधाय?

केवळज्ञानमां अतिशयता शुं?

तीर्थंकरमां अतिशयता शुं? विशेष हेतु शो?

जो जिनसम्मत केवलज्ञान–लोकालोक ज्ञायक मानीए तो ते केवळज्ञानमां आहार, निहार, विहारादि क्रिया शी रीते संभवे?

वर्त्तमानमां तेनी आ क्षेत्रे अप्राप्ति तेनो हेतु शो?

६११.

मति,
श्रुत,
अवधि,
मनःपर्यव,
परमावधि,
केवळ,

६१२.

परमावधिज्ञान उत्पन्न थया पछी केवळज्ञान उत्पन्न छे, ए रहस्य अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे.

अनादि अनंतकाळनुं, अनंत एवा अलोकनुं? गणितथी अतीत अथवा असंख्यातथी पर एवो जीवसमूह, परमाणुसमूह अनंत छतां अनंतपणानो साक्षात्कार थाय ते गणितातीतपणुं छतां शी रीते साक्षात् अनंतपणुं जणाय? ए विरोधनी शांति उपर कह्यां ते रहस्यथी थवायोग्य समजाय छे.

वळी केवळज्ञान निर्विकल्प छे, उपयोगनो प्रयोग करवो पडतो नथी. सहज उपयोगे ते ज्ञान छे; ते पण रहस्य अनुप्रेक्षा करवायोग्य छे.

केमके प्रथम सिद्ध कोण? प्रथम जीवपर्याय कयो? प्रथम परमाणु–पर्याय कयो? ए केवळज्ञानगोचर पण अनादि ज जणाय छे; अर्थात् केवळज्ञान तेनी आदि पामतुं नथी, अने केवळज्ञानथी कंई छानुं नथी ए बे वात परस्पर विरोधी छे, तेनुं समाधान परमावधिनी अनुप्रेक्षाथी तथा सहज उपयोगनी अनुप्रेक्षाथी समजावायोग्य रस्तो देखाय छे.

६१३.

कंई पण छे?

शुं छे?

शा प्रकारे छे?

जाणवा योग्य छे?

जाणवानुं फळ शुं छे?

बंधनो हेतु शो छे?

पुद्गलनिमित्त बंध के जीवना दोषथी बंध?

जे प्रकारे मानो ते प्रकारे बंध न टाळी शकाय एवो सिद्ध थाय छे; माटे मोक्षपदनी हानि थाय छे. तेनुं नास्तित्व ठरे छे.

अमूर्त्तता ते कंई वस्तुता के अवस्तुता?

अमूर्त्तता जो वस्तुता तो कंई महत्ववान के तेम नहीं?

मूर्त्त एवां पुद्गलनो अने अमूर्त्त एवा जीवनो संयोग केम घटे?

धर्म अधर्म अने जीव द्रव्यनुं क्षेत्रव्यापीपणुं जे प्रकारे जिन कहे छे ते प्रमाणे मानतां ते द्रव्य उत्पन्नस्वभावीवत् सिद्ध थवा जाय छे, केमके मध्यमपरिणामीपणुं छे.

धर्म, अधर्म अने आकाश ए वस्तु द्रव्यपणे एक जाति अने गुणपणे भिन्न जाति एम मानवा योग्य छे, के द्रव्यता पण भिन्न भिन्न मानवा योग्य छे.

द्रव्य एटले शुं? गुणपर्यायविना तेनुं बीजुं शुं स्वरूप छे?

केवळज्ञान सर्व, द्रव्य, क्षेत्र, काळभावनुं ज्ञायक ठरे तो सर्व वस्तु नियत मर्यादामां आवी जाय–अनंतपणुं न ठरे, केमके अनंतपणुं–अनादिपणुं समज्युं जतुं नथी–अर्थात् केवळज्ञानमां तेनुं कयि रीते प्रतिभासवुं थाय? तेनो विचार बराबर बंध बेसतो नथी.

६१४.

जैन जेने सर्वप्रकाशता कहे छे, तेने वेदांत सर्वव्यापकता कहे छे.

दृष्ट वस्तुपरथी अदृष्टनो विचार अनुसंधान करवो घटे.

जिनने अभिप्राये आत्मा मानतां अत्र लख्या छे ते प्रसंगोमत्ये वधारे विचार करवो—

१. असंख्यात प्रदेशनुं मूळ परिमाण.

२. संकोच विकाश थई शके एवो आत्मा मान्यो छे ते संकोच, विकाश अरूपीने विषे होवायोग्य छे? तथा केवा प्रकारे होवायोग्य छे.

३. निगोद अवस्थाविषे विशेष कारण कंई छे?

४. सर्व द्रव्य क्षेत्रादिनी प्रकाशकता ते रूप केवळज्ञानस्वभावी आत्मा छे, के स्वस्वरूपावसान निजज्ञानमय केवळज्ञान छे?

५. आत्मामां योगे विपरिणाम छे, स्वभावे विपरिणाम छे. विपरिणाम आत्मानी मूळ सत्ता छे, संयोगी सत्ता छे. ते सत्तानुं कयुं द्रव्य मूळ कारण छे?

६. हीनाधिक अवस्था चेतन पामे तेने विषे कंई विशेष कारण छे. स्वस्वभावनुं? पुद्गल संयोगनुं के तेथी व्यतिरिक्त?

७. जे प्रमाणे मोक्षपदे आत्मता प्रगटे ते प्रमाणे मूळ द्रव्य मानीए तो लोकव्यापकप्रमाण आत्मा न थवानुं कारण शुं?

८. ज्ञान गुण अने आत्मा गुणी ए घटना घटाववा जतां आत्मा कथंचित् ज्ञानव्यतिरिक्त मानवो ते केवी अपेक्षाए, जडत्वभावे के अन्यगुण अपेक्षाए?

९. मध्यम परिणामवाळी वस्तुनुं नित्यपणुं शी रीते संभवे छे?

१०. शुद्धचेतनमां अनेकनी संख्यानो भेद शा कारणे घटे छे?

६१५.

सामान्य चेतन.	सामान्य चैतन्य.
विशेष चेतन.	विशेष चैतन्य.
निर्विशेष चेतन.	(चैतन्य.)

स्वभाविक अनेक आत्मा (जीव) निर्ग्रंथ.

सोपाधिक अनेक आत्मा (जीव) वेदांत.

६१६.

चक्षु अप्राप्यकारी.

मन अप्राप्यकारी.

चेतननुं बाह्य आगमन (गमन नहीं ते.)

६१७.

ज्ञानीपुरुषोने समये समये अनंता संयम परिणाम वर्धमान थाय छे, एम सर्वज्ञे कह्युं छे ते सत्य छे. ते संयम विचारनी तीक्ष्ण परिणतिथी तथा ब्रह्मरस प्रत्ये स्थिरपणाथी उत्पन्न थाय छे.

६१८.

श्री तीर्थंकर आत्माने संकोच विकाशनुं भाजन योगदशामां माने छे ते सिद्धांत विशेषे करी विचारवायोग्य छे.

६१९. मुंबई. अषाड सुद ४ सोम. १९५२.

जंगमनी जुक्ति तो सर्वे जाणिये, समीप रहे पण शरीरनो नहीं संग जो;
एकांते वसवुं रे, एक ज आसने, भूल पडे तो पडे भजनमां भंग जो;
ओधवजी अबळा ते साधन शुं करे!

६२०. मुंबई. अषाड सुद ५ बुध. १९५२.

ॐ

श्री सहजानंदनां वचनामृतमां आत्मस्वरूपनी साथे अहर्निश प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करवी, अने ते भक्ति स्वधर्ममां रहीने करवी, एम ठेकाणे ठेकाणे मुख्यपणे वात आवे छे. हवे जो स्वधर्म शब्दनो अर्थ आत्मस्वभाव अथवा आत्मस्वरूप थतो होय तो फरी स्वधर्मसहित भक्ति करवी एम आववानुं कारण शुं? एम तमे लख्युं तेनो उत्तर अत्रे लख्यो छे:—

स्वधर्ममां रहीने भक्ति करवी एम जणाव्युं छे त्यां स्वधर्म शब्दनो अर्थ वर्णाश्रम धर्म छे. जे ब्राह्मणादि वर्णमां देह धारण थयो होय, ते वर्णनो श्रुति स्मृतिए कहेलो धर्म आचरवो ते वर्ण धर्म छे, अने ब्रह्मचर्यादि आश्रम क्रमेकरी आचरवानी जे मर्यादा श्रुति, स्मृतिए कही छे, ते मर्यादासहित ते ते आश्रममां वर्त्तवुं ते आश्रमधर्म छे.

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शुद्र ए चार वर्ण छे, तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने संन्यस्त ए चार आश्रम छे. ब्राह्मणवर्णे आ प्रमाणे वर्णधर्म आचरवा एम श्रुति स्मृतिमां कह्युं होय ते प्रमाणे ब्राह्मण आचरे तो स्वधर्म कहेवाय, अने जो तेम न आचरतां क्षत्रियादिने आचरवा-योग्य धर्मने आचरे तो परधर्म कहेवाय; ए प्रकारे जे जे वर्णमां देह धारण थयो होय ते ते वर्णनां श्रुति स्मृतिए कहेला धर्मप्रमाणे वर्त्तवुं ते स्वधर्म कहेवाय, अने बीजा वर्णना धर्म आचरे तो परधर्म कहेवाय.

तेवी रीते आश्रमधर्मसंबंधी पण स्थिति छे. जे वर्णोने ब्रह्मचर्यादि आश्रमसहित वर्त्तवानुं श्रुति स्मृतिए कह्युं छे ते वर्णे प्रथम, चोवीश वर्षसुधी ब्रह्मचर्याश्रममां वर्त्तवुं, पछी चोवीश वर्षसुधी गृहस्थाश्रममां वर्त्तवुं, क्रमे करीने वानप्रस्थ अने संन्यस्ताश्रम आचरवा, ए प्रमाणे आश्रमनो सामान्य क्रम छे, ते ते आश्रममां वर्त्तवाना मर्यादाकाळने विषे बीजा आश्रमनां आचरणने ग्रहण करे तो ते परधर्म कहेवाय अने ते ते आश्रममां ते ते आश्रमनां धर्मोने आचरे तो ते स्वधर्म कहेवाय; आ प्रमाणे वेदाश्रित मार्गमां वर्णाश्रमधर्मने स्वधर्म कह्यो छे, ते वर्णाश्रमधर्मने स्वधर्म शब्दे समजवायोग्य छे; अर्थात् सहजानंदस्वामीए वर्णाश्रम धर्मने अत्रे स्वधर्म शब्दथी कह्यो छे.

भक्तिप्रधान संप्रदायोमां घणुंकरीने भगवद्भक्ति करवी ए ज जीवनो स्वधर्म छे, एम प्रतिपादन कर्युं छे, पण ते अर्थमां अत्रे स्वधर्मशब्द कह्यो नथी, केमके भक्ति स्वधर्ममां रहीने करवी एम कह्युं छे, माटे

स्वधर्मनुं जूदापणे ग्रहण छे, अने ते वर्णाश्रमधर्मना अर्थमां ग्रहण छे. जीवनो स्वधर्म भक्ति छे एम जणाववाने अर्थे तो भक्तिशब्दने बदले क्वचित् ज स्वधर्म शब्द संप्रदायोए ग्रहण कर्यो छे, अने श्री सहजानंदना वचनामृतमां भक्तिने बदले स्वधर्म शब्द संज्ञावाक्यपणे पण वापर्यो नथी, क्वचित् श्री वल्लभाचार्ये वापर्यो छे.

६२१. मुंबई. अशाड. वदी ८ रवि. १९५२.

ॐ

भुजाए करी जे स्वयंभूरमणसमुद्र तरी गया, तरे छे, अने तरशे ते सत्पुरुषोने निष्कामभक्तिथी त्रिकाळ नमस्कार.

एक धाराए वेदवायोग्य प्रारब्ध वेदतां कंईएक परमार्थव्यवहाररूप प्रवृत्ति कृत्रिम जेवी लागे छे. अने ते आदि कारणथी मात्र पहोंच लखवानुं पण कर्युं नथी; चित्तने सहेज पण अवलंबन छे ते खेंची लेवाथी आर्त्तता पामशे, एम जाणी ते दयाना प्रतिबंधे आ पत्र लख्युं छे.

सूक्ष्मसंगरूप अने बाह्यसंगरूप दुस्तर स्वयंभूरमणसमुद्र भुजाए करी जे वर्धमानादिपुरुषो तरी गया छे तेमने परमभक्तिथी नमस्कार हो! पडवाना भयंकर स्थानके सावचेत रही, तथारूप सामर्थ्य विस्तारी सिद्धि सिद्ध करी छे, ते पुरुषार्थने संभारी रोमांचित, अनंत अने मौन एवुं आश्चर्य उपजे छे.

६२२.

प्रारब्धरूप दुस्तर प्रतिबंध वर्त्ते छे, त्यां कंई लखवुं के जणाववुं ते कृत्रिम जेवुं लागे छे; अने तेथी हमणा पत्रादिनी मात्र पहोंच पण लखवानुं कर्युं नथी. घणां पत्रोने माटे तेम थयुं छे, तेथी चित्तने विशेष मुंझावारूप थशे, ते विचाररूप दयाना प्रतिबंधे आ पत्र लख्युं छे. आत्माने मूळज्ञानथी चलायमान करी नांखे एवा प्रारब्धने वेदतां आवो प्रतिबंध ते प्रारब्धने उपकारनो हेतु थाय छे, अने कोईक विकट अवसरने विषे एकवार आत्माने मूळज्ञान वमावी देवासुधीनी स्थिति पमाडे छे एम जाणी, तेथी डरीने वर्त्तवुं योग्य छे एम विचारी पत्रादिनी पहोंच लखी नथी; ते क्षमा करवानी नम्रतासहित प्रार्थना छे.

अहो! ज्ञानी पुरुषनी आशय गंभीरता, धीरज अने उपशम! अहो! अहो! वारंवार अहो! ॐ.

६२३. मुंबई. अशाड वद. ,, सोम. १९५२.

तमने तथा बीजा कोई सत्समागमनी निष्ठावाळा भाईओने अमारा समागम विषे जिज्ञासा रहे छे ते प्रकार जाण्यामां रहे छे, पण ते विषेनो अमुक कारणो प्रत्ये विचार करतां प्रवृत्ति थती नथी. घणुं करी चित्तमां एम रह्यां करे छे के हाल वधारे समागम पण करी शकवायोग्य दशा नथी. प्रथमथी आ प्रकारनो विचार रह्या करतो हतो, अने जे विचार वधारे श्रेयकारक लागतो हतो, पण उदयवशात् केटलाक भाईओनो समागम थवानो प्रसंग थयो; जे एक प्रकारे प्रतिबंध

थवा जेवुं जाण्युं हतुं, अने हाल कंई पण तेवुं थयुं छे एम लागे छे. वर्त्तमान आत्मदशा जोतां तेटलो प्रतिबंध थवा देवायोग्य अधिकार मने संभवतो नथी. अत्रे कंईक प्रसंगथी स्पष्टार्थ जणाववायोग्य छे.

आ आत्माने विषे गुणनुं विशेष व्यक्तत्व जाणी तम विगेरे कोई मुमुक्षु भाईओनी भक्ति वर्त्तती होय तोपण तेथी ते भक्तिनी योग्यता मारे विषे संभवे छे एम समजवाने योग्यता मारी नथी.

एक विनंति अत्रे करवायोग्य छे के आ आत्मा विषे तमने गुण व्यक्तत्व भासतुं होय, अने तेथी अंतरमां भक्ति रहेती होय तो ते भक्ति विषे यथायोग्य विचार करी जेम तमने योग्य लागे तेम करवायोग्य छो; पण बहार आ आत्मा संबंधी हाल कंई प्रसंग चर्चित थवा देवायोग्य नथी, केमके अविरतिरूप उदय होवाथी गुण व्यक्तत्व होय तोपण लोकोने भास्यमान थवुं कठण पडे; अने तेथी विराधना थवानो कंई पण हेतु थाय; तेम ज पूर्व महापुरुषना अनुक्रमनुं खंडन करवा जेवुं प्रवर्त्तन आ आत्माथी कंई पण थयुं गणाय.

६२४. मुंबई. श्रावण शुद ५ शुक्र. १९५२.

ॐ

१. प्र०—जिनागममां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि छ द्रव्य कह्यां छे, तेमां काळने द्रव्य कह्युं छे, अने अस्तिकाय पांच कह्यां छे, काळने अस्तिकाय कह्यो नथी; तेनो शो हेतु होवो जोईए? कदापि काळने अस्तिकाय न कहेवामां एवो हेतु होय के धर्मास्तिकायादि प्रदेशना समूहरूपे छे, अने परमाणु पुद्गल तेवी योग्यतावाळां द्रव्य छे, काळ तेवी रीते नथी, मात्र एक समयरूप छे; तेथी काळने अस्तिकाय कह्यो नथी. त्यां एम आशंका थाय छे के एक समय पछी बीजो पछी त्रीजो एम समयनी धारा वर्त्त्यां ज करे छे, अने ते धारामां वच्चे अवकाश नथी तेथी एक बीजा समयनुं अनुसंधानपणुं अथवा समूहात्मकपणुं संभवे छे जेथी काळ पण अस्तिकाय कही शकाय. वळी सर्वज्ञने त्रण काळनुं ज्ञान थाय छे, एम कह्युं छे तेथी पण एम समजाय के सर्वकाळनो समूह ज्ञानगोचर थाय छे, अने सर्व समूह ज्ञानगोचर थतो होय तो काळ अस्तिकाय संभवे छे, अने जिनागममां तेने अस्तिकाय गण्यो नथी, ए आशंका लखेल, तेनुं समाधान निचे लख्याथी विचारवायोग्य छे.

उ०—जिनागमनी एवी प्ररूपणा छे के काळ उपचारिक द्रव्य छे, स्वाभाविक द्रव्य नथी.

जे पांच अस्तिकाय कह्यां छे, तेनी वर्त्तनानुं नाम मुख्यपणे काळ छे. ते वर्त्तनानुं बीजुं नाम पर्याय पण छे. जेम धर्मास्तिकाय एक समये असंख्यात प्रदेशना समूहरूपे जणाय छे, तेम काळ समूहरूपे जणातो नथी. एक समय वर्त्ती लय पामे त्यारपछी बीजो समय उत्पन्न थाय छे. ते समय द्रव्यनी वर्त्तनानो सूक्ष्ममां सूक्ष्म भाग छे.

सर्वज्ञने सर्व काळनुं ज्ञान थाय छे एम कह्युं छे तेनो मुख्य अर्थ तो एम छे के पंचास्तिकाय द्रव्यपर्यायात्मकपणे तेमने ज्ञानगोचर थाय छे; अने सर्व पर्यायनुं ज्ञान ते ज सर्वकाळनुं ज्ञान

कहेलुं छे. एक समये सर्वज्ञ पण एक समय ज वर्त्ततो देखे छे. अने भूतकाळ के भाविकाळने वर्त्ततो देखे नहीं, जो तेने पण वर्त्तता देखे तो ते पण वर्त्तमानकाळ ज कहेवाय, सर्वज्ञ भूतकाळने वर्तिचूक्यापणे अने भाविकाळने हवे पछी आम वर्त्तशे एम देखे छे.

भूतकाळ द्रव्यने विषे शमाई गयो छे, अने भाविकाळ सत्तापणे रह्यो छे, बेमांथी एके वर्त्तवापणे नथी, मात्र एक समयरूप एवो वर्त्तमानकाळ ज वर्त्ते छे, माटे सर्वज्ञने ज्ञानमां पण ते ज प्रकारे भास्यमान थाय छे.

एक घडो हमणां जोयो होय, ते त्यार पछीने बीजे समये नाश पामी गयो त्यारे घडापणे विद्यमान नथी, पण जोनारने ते घडो जेवो हतो तेवो ज्ञानमां भास्यमान थाय छे; तेम ज हमणां एक माटीनो पिंड पड्यो छे, तेमांथी थोडो वखत गये एक घडो नीपजशे एम पण ज्ञानमां भासी शके छे, तथापि माटीनो पिंड वर्त्तमानमां कंई घडापणे वर्त्ततो होतो नथी, ए ज रीते **एक समयमां सर्वज्ञने त्रिकाळज्ञान छतां पण वर्त्तमान समय तो एक ज छे.**

सूर्यनेलीधे जे दिवसरात्रिरूप काळ समजाय छे ते व्यवहारकाळ छे, केमके सूर्य स्वाभाविक द्रव्य नथी.

दिगम्बर काळना असंख्यात अणु माने छे, पण तेनुं एक बीजानी साथे संधान छे, एम तेमनो अभिप्राय नथी, अने तेथी काळने अस्तिकायपणे गण्यो नथी.

२. प्रत्यक्ष सत्समागममां भक्ति वैराग्यादि दृढसाधनसहित, मुमुक्षुए सद्गुरुआज्ञाए द्रव्यानुयोग विचारवा योग्य छे.

३. अभिनंदनजिननी श्री देवचंदजीकृत स्तुतिनुं पद लखी अर्थ पूछाव्यो तेमां,

" पुद्गळअनुभवत्यागथी, करवी ज शुं परतीतहो "

एम लखायुं छे, तेम मूळ नथी.

" पुद्गळअनुभवत्यागथी, करवी जशु परतीत हो "

एम मूळपद छे. एटले वर्ण, गंधादि पुद्गळगुणना अनुभवनो अर्थात् रसनो त्याग करवाथी, ते प्रत्ये उदासीन थवाथी 'जशुं' एटले जेनी (आत्मानी) प्रतीति थाय छे, एम अर्थ छे.

६२५.

विश्व अनादि छे. जीव अनादि छे.

परमाणु पुद्गली अनादि छे. जीव अने कर्मनो संबंध अनादि छे.

संयोगीभावमां तादात्म्य अध्यास होवाथी जीव जन्म मरणादि दुःखोने अनुभवे छे.

६२६.

पांच अस्तिकायरूप लोक एटले विश्व छे. चैतन्य लक्षण जीव छे.

वर्ण गंध रस स्पर्शमान परमाणुओ छे, ते संबंध स्वरूपथी नथी विभावरूप छे.

६२७.

कम्म दव्वेहिं सम्मं संजोगो जो होई जीवस्स,
सो बंधो नायव्वो, तस्स वियोगो भवमोख्खो.

६२८. मुंबई. श्रावण १९५२.

ॐ

पंचास्तिकायनुं स्वरूप संक्षेपमां कहुं छेः—

जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म अने आकाश ए पांच अस्तिकाय कहेवाय छे.

अस्तिकाय एटले प्रदेशसमूहात्मक वस्तु. एक परमाणुप्रमाणे, अमूर्त वस्तुना भागने प्रदेश एवी संज्ञा छे. अनेकप्रदेशात्मक जे वस्तु होय ते अस्तिकाय कहेवाय.

एक जीव असंख्यातप्रदेशप्रमाण छे.

पुद्गल परमाणु जो के एक प्रदेशात्मक छे, पण बे परमाणुथी मांडीने असंख्यात, अनंत परमाणुओ एकत्र थई शके छे. एम अरसपरस मळवानी शक्ति तेमां रहेली होवाथी अनंत प्रदेशात्मकपणुं ते पामी शके छे; जेथी ते पण अस्तिकाय कहेवायोग्य छे.

धर्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशप्रमाण, अधर्मद्रव्य असंख्यात प्रदेशप्रमाण, आकाशद्रव्य अनंत प्रदेशप्रमाण होवाथी ते पण अस्तिकाय छे. एम पांच अस्तिकाय छे. जे पांच अस्तिकायना एकमेकात्मकपणाथी आ लोकनी उत्पत्ति छे, अर्थात् लोक ए पांच अस्तिकायमय छे.

प्रत्येके प्रत्येक जीव असंख्यातप्रदेशप्रमाण छे. ते जीवो अनंत छे.

एक परमाणु एवां अनंत परमाणुओ छे. बे परमाणुओ एकत्र मळेला एवा द्विअणुक स्कंध अनंता छे. एम त्रण परमाणुओ एकत्र मळेला एवा त्रिअणुक स्कंध अनंता छे. चार परमाणुओ एकत्र मळेला एवा चतुःअणुक स्कंध अनंता छे. पांच परमाणुओ एकत्र मळेला एवा पंचाणुक स्कंध अनंता छे. एम छ परमाणु, सात परमाणु, आठ परमाणु, नव परमाणु, दश परमाणु एकत्र मळेला एवा अनंता स्कंध छे. तेम ज अगियार परमाणु, यावत् सो परमाणु, संख्यात परमाणु, असंख्यात परमाणु तथा अनंत परमाणु मळेला एवा अनंता स्कंध छे.

धर्मद्रव्य एक छे. ते असंख्यातप्रदेशप्रमाण लोकव्यापक छे.

अधर्मद्रव्य एक छे. ते पण असंख्यातप्रदेशप्रमाण लोकव्यापक छे.

आकाशद्रव्य एक छे. ते अनंतप्रदेशप्रमाण छे, लोकालोकव्यापक छे. लोकप्रमाण आकाश असंख्यातप्रदेशात्मक छे.

काळद्रव्य ए पांच अस्तिकायनो वर्त्तमान पर्याय छे, एटले उपचारिक द्रव्य छे; वस्तुताए तो पर्याय ज छे. अने पळ, विपळथी मांडी वर्षादिपर्यंत जे काळ सूर्यनी गतिपरथी समजाय छे, ते व्यवहारिक काळ छे, एम श्वेतांबराचार्यो कहे छे. दिगंबराचार्यो पण एम कहे छे, पण विशेषमां

एटलुं कहे छे, के लोकाकाशना एकेक प्रदेशे एकेक कालाणु रहेलो छे, जे अवर्ण, अगंध, अरस, अस्पर्श छे, अगुरु लघु स्वभाववान छे. ते कालाणुओ वर्त्तना पर्याय अने व्यवहारिक काळने निमित्तोपकारी छे. ते कालाणुओ द्रव्य कहेवायोग्य छे, पण अस्तिकाय कहेवायोग्य नथी; केमके एक बीजा ते अणुओ मळीने क्रियानी प्रवृत्ति करता नथी; जेथी बहुप्रदेशात्मक नहीं होवाथी काळद्रव्य अस्तिकाय कहेवायोग्य नथी; अने विवेचनमां पण पंचास्तिकायमां तेनुं गौण स्वरूप कहीये छीए.

आकाश अनंतप्रदेशप्रमाण छे. तेमां असंख्यात प्रदेशप्रमाणमां धर्म, अधर्म द्रव्य व्यापक छे. धर्म, अधर्म द्रव्यनो एवो स्वभाव छे, के जीव अने पुद्गल तेनी सहायतानां निमित्तथी गति अने स्थिति करी शके छे; जेथी धर्म अधर्म द्रव्यना व्यापकपणापर्यंत ज जीव अने पुद्गलनी गति, स्थिति छे; अने तेथी लोकमर्यादा उत्पन्न थाय छे.

जीव, पुद्गल, अने धर्म, अधर्म द्रव्यप्रमाण आकाश ए पांच ज्यां व्यापक छे ते **लोक** कहेवाय छे.

६२९. मुंबई. श्रा. १९५२.

(१) दुर्लभ एवो मनुष्यदेह पण पूर्वे अनंतवार प्राप्त थया छतां कंई पण सफळपणुं थयुं नहीं पण आ मनुष्यदेहने कृतार्थता छे के जे मनुष्यदेहे आ जीवे ज्ञानीपुरुषने ओळख्या, तथा ते महाभाग्यनो आश्रय कर्यो. जे पुरुषना आश्रये अनेक प्रकारना मिथ्या आग्रहादिनी मंदता थई, ते पुरुषने आश्रये आ देह छूटे ए ज सार्थक छे. जन्म जरा मरणादिने नाश करवावाळुं आत्मज्ञान जेमने विषे वर्त्ते छे, ते पुरुषनो आश्रय ज जीवने जन्म जरा मरणादिनो नाश करी शके, केमके ते यथासंभव उपाय छे. संयोगसंबंधे आ देहप्रत्ये आ जीवने जे प्रारब्ध हशे ते व्यतीत थये ते देहनो प्रसंग निवृत्त थशे. तेनो गमे त्यारे वियोग निश्चये छे, पण **आश्रयपूर्वक देह छूटे ए ज जन्म सार्थक छे**, के जे आश्रयने पामीने जीव ते भवे अथवा भावि एवा थोडा काळे पण स्वस्वरूपमां स्थिति करे.

(२) तमे तथा श्री मुनि प्रसंगोपात······प्रत्ये जवानुं राखशो. ब्रह्मचर्य, अपरिगृहादि यथाशक्ति धारवानी तेमने संभावना देखाय तो मुनिए तेम करवामां प्रतिबंध नथी.

***(३) श्री सद्गुरुए कह्यो छे एवा निर्ग्रंथ मार्गनो सदाय आश्रय रहो. हुं देहादि स्वरूप नथी, अने देह, स्त्री, पुत्रादि कोई पण मारां नथी, शुद्ध चैतन्यस्वरूप अविनाशी एवो हुं आत्मा छउं. एम आत्मभावना करतां रागद्वेषनो क्षय थाय.**

६३०. काविठा. श्रा. वद. १९५२.

शरीर कोनुं छे? मोहनुं छे. माटे असंग भावना राखवी योग्य छे.

* आत्मभावनारूप आराधना मंत्र.

६३१. राळज. श्रावण वद १३ शनि. १९५२.

ॐ

१. प्र०—अमुक पदार्थना जवा आववादिना प्रसंगमां धर्मास्तिकायादिना अमुक प्रदेशे क्रिया थाय छे. अने जो ए प्रमाणे थाय तो विभागपणुं थाय, जेथी ते पण काळना समयनी पेठे अस्तिकाय न कही शकाय. ए प्रश्ननुं समाधानः—

उ०—जेम धर्मास्तिकायादिना सर्व प्रदेश एक समये वर्त्तमान छे, अर्थात् विद्यमान छे, तेम काळना सर्व समय कंई एक समये विद्यमान होता नथी, अने वळी द्रव्यना वर्त्तनापर्याय शिवाय काळनुं कंई जूदुं द्रव्यत्व नथी, के तेना अस्तिकायत्वनो संभव थाय. अमुक प्रदेशे धर्मास्ति-कायादिने विषे क्रिया थाय, अने अमुक प्रदेशे न थाय तेथी कंई तेना अस्तिकायपणांनो भंग थतो नथी, मात्र एक प्रदेशात्मक ते द्रव्य होय अने समूहात्मक थवानी तेमां योग्यता न होय तो तेना अस्तिकायपणांनो भंग थाय, एटले के तो ते अस्तिकाय कहेवाय नहीं. परमाणु एक प्रदेशात्मक छे, तोपण तेवां बीजां परमाणुओ मळी ते समूहात्मकपणुं पामे छे, माटे ते अस्तिकाय (पुद्गलास्तिकाय) कहेवाय छे. वळी एक परमाणुमां पण अनंत पर्यायात्मकपणुं छे, अने काळना एक समयमां कंई अनंत पर्यायात्मकपणुं नथी, केमके ते पोते ज वर्त्तमान एक पर्यायरूप छे. एक पर्यायरूप होवाथी ते द्रव्यरूप ठरतुं नथी, तो पछी अस्तिकायरूप गणवानो विकल्प पण संभवतो नथी.

२. मूळ आप्कायिक जीवोनुं स्वरूप घणुं सूक्ष्म होवाथी विशेषपणे सामान्य ज्ञाने तेनो बोध थवो कठण छे, तोपण 'षट्दर्शनसमुच्चय' ग्रंथ हाल प्रसिद्ध थयो छे, तेमां १४१ थी १४३ सुधीनां पृष्ठमां तेनुं स्वरूप कंईक समजाव्युं छे. ते विचारवानुं बने तो विचारशो.

३. अग्नि अथवा बीजा बळवान शस्त्रथी आप्कायिक मूळ जीव नाश पामे, एम समजाय छे. अत्रेथी वराळादिरूपे थई जे उंचे आकाशमां वादळांरूपे बंधाय छे, ते वराळादिरूपे थवाथी अचित थवायोग्य लागे छे, पण वादळांरूपे थवाथी फरी सचितपणुं पामवा योग्य छे. ते वर्षादि-रूपे जमीनपर पड्ये पण सचित होय छे. माटी आदिनी साथे मळवाथी पण ते सचित रही शकवायोग्य छे. सामान्यपणे अग्नि जेवुं माटी बळवान शस्त्र नथी, एटले तेवुं होय त्यारे पण सचितपणुं संभवे छे.

४. बीज ज्यांसुधी वाववाथी उगवानी योग्यतावाळुं छे त्यांसुधी निर्जीव होय नहीं; सजीव ज कही शकाय. अमुक अवधि पछी एटले सामान्यपणे बीज (अन्नादिनां) त्रण वर्षसुधी सजीव रही शके छे; तेथी वच्चे तेमांथी जीव चवी जाय खरो, पण ते अवधि वीत्या पछी ते निर्जीव एटले निर्बीज थवायोग्य कह्युं छे. कदापि बीज जेवो आकार तेनो होय पण ते वाववाथी उगवानी योग्यतारहित थाय. सर्वे बीजनी अवधि त्रण वर्षनी संभवती नथी; केटलांक बीजनी संभवे छे.

५. फ्रेंच विद्वाने शोधेला यंत्रनी विगतनुं वर्त्तमान वीथ्युं ते वांच्युं छे. तेमां आत्मा जोवानुं यंत्र तेनुं नाम आप्युं छे, ते यथार्थ नथी. एवा कोई पण प्रकारना दर्शननी व्याख्यामां आत्मानो समावेश थवायोग्य नथी; तमे पण तेने आत्मा जोवानुं यंत्र समज्या नथी, एम जाणीए छैये; तथापि कार्मण के तैजस शरीर देखावायोग्य छे के कंई बीजो भास थवायोग्य छे, ते जाणवानी जिज्ञासा जणाय छे. कार्मण के तैजस शरीर पण ते रीते देखावायोग्य नथी. पण चक्षु, प्रकाश, ते यंत्र, मरनारनो देह, अने तेनी छाया के कोई आभासविशेषथी तेवो देखाव थवो संभवे छे. ते यंत्र विषे वधारे व्याख्या प्रसिद्धिमां आव्ये पूर्वापर आ वात जाणवामां घणुंकरीने आवशे.

हवाना परमाणुओ देखावाविषेमां पण कंईक तेओना लखवानी व्याख्या के जोयेला स्वरूपनी व्याख्या करवामां पर्यायांतर लागे छे. हवाथी गति पामेला कोई परमाणुस्कंध (व्यवहारिक परमाणु, कंईक विशेष प्रयोगे दृष्टिगोचर थई शकवायोग्य होय ते) दृष्टिगोचर थवा संभवे छे; हजु तेनी वधारे कृति प्रसिद्ध थये समाधान विशेषपणे करवुं योग्य लागे छे.

६३२. राळज. श्रावण वद १४ रवि. १९५२.

विचारवान पुरुषो तो कैवल्यदशा थतांसुधी मृत्युने नित्य समीप ज समजीने प्रवर्चे छे. घणुंकरीने उत्पन्न करेलां एवां कर्मनी रहस्यभूत मति मृत्यु वखते वर्ते छे. क्वचित् मांड परिचय थये एवो परमार्थ ते एक भाव अने नित्य परिचित निजकल्पनादि भावे रूढीधर्मनुं ग्रहण एवो भाव, एम भाव बे प्रकारना थई शके, सद्विचारे यथार्थ आत्मदृष्टि के वास्तव्य उदासीनता तो सर्व जीवसमूह जोतां कोईक विरल जीवने क्वचित् क्वचित् होय छे; अने बीजो भाव अनादि परिचित छे, ते ज प्राये सर्व जीवमां जोवामां आवे छे, अने देहांतप्रसंगे पण तेनुं प्राबल्य जोवामां आवे छे, एम जाणी मृत्यु समीप आव्ये तथारूप परिणति करवानो विचार विचारवान पुरुष छोडी दई प्रथमथी ज ते प्रकारे वर्त्ते छे. तमे पोते बाह्यक्रियानो विधिनिषेधाग्रह विसर्जनवत् करी दई, अथवा तेमां अंतरपरिणामे उदासीन थई, देह अने तेनासंबंधी संबंधनो वारंवारनो विक्षेप छोडी दई यथार्थ आत्मभावनो विचार करवानुं लक्षगत करो तो ते ज सार्थक छे. छेल्ले अवसरे अनशनादि के संस्तारादिक के संलेखनादिक क्रिया क्वचित् बनो के न बनो तोपण जे जीवने उपर कह्यो ते भाव लक्षगत छे, तेनो जन्म सफळ छे. अने क्रमे करी ते निःश्रेयने प्राप्त थाय छे.

तमने बाह्यक्रियादिनो केटलांक कारणथी विशेष विधिनिषेध लक्ष जोईने अमने खेद थतो के आमां काळ व्यतीत थतां आत्मावस्था केटली स्वस्थता भजे छे अने शुं यथार्थ स्वरूपनो विचार करी शके छे के तमने तेनो आटलो बधो परिचय खेदनो हेतु लागतो नथी? सहजमात्र जेमां उपयोग दीधो होय तो चाले तेवुं छे, तेमां लगभग जाग्रतिकाळनो घणो भाग व्यतीत थवा जेवुं थाय छे ते केने अर्थे? अने तेनुं शुं परिणाम?–ते शा माटे तमने ध्यानमां आवतुं नथी? ते विषे क्वचित् कंई प्रेरवानी इच्छा थयेली संभवे छे, पण तमारी तथारूप रुची अने स्थिति न

देखवाथी प्रेरणा करतां करतां वृत्ति संक्षेपी लीधेली. हजी पण तमारा चित्तमां आ वातनो अवकाश आपवायोग्य अवसर छे. लोको मात्र विचारवान के सम्यग्दृष्टि समजे तेथी कल्याण नथी, अथवा बाह्यव्यवहारना घणा विधिनिषेधनां कर्त्तृत्वना महात्म्यमां कंई कल्याण नथी, एम अमने तो लागे छे. आ कंई एकांतिक दृष्टिए लख्युं छे अथवा अन्य कंई हेतु छे, एम विचारवुं छोडी दई जे कंई ते वचनोथी अंतर्मुखवृत्ति थवानी प्रेरणा थाय ते करवानो विचार राखवो ए ज सुविचारदृष्टि छे.

लोकसमुदाय कोई भलो थवानो नथी, अथवा स्तुति निंदाना प्रयत्नार्थे आ देहनी प्रवृत्ति ते विचारवानने कर्त्तव्य नथी. बाह्यक्रियाना अंतर्मुखवृत्ति वगरना विधिनिषेधमां कंई पण वास्तव्य कल्याण रह्युं नथी. गच्छादि भेदने निर्वाहवामां, नानाप्रकारना विकल्पो सिद्ध करवामां आत्माने आवरण करवा बराबर छे. **अनेकांतिक मार्ग पण सम्यक् एकांत एवा निजपदनी प्राप्ति करावना शिवाय बीजा अन्य हेतुए उपकारी नथी,** एम जाणी, लख्युं छे. ते मात्र अनुकंपा-बुद्धिए, निराग्रहथी, निष्कपटताथी, निर्दंभताथी, अने हितार्थे लख्युं छे, एम जो तमे यथार्थ विचारशो तो दृष्टिगोचर थशे, अने वचननुं ग्रहण के प्रेरणा थवानो हेतु थशे.

६३३. राळज, भादरवा शुद ८. १९५२.

१. प्र०—घणुंकरीने बधा मार्गोमां मनुष्यपणाने मोक्षनुं एक साधन जाणी बहु वखाण्युं छे, अने जीवने जेम ते प्राप्त थाय एटले तेनी वृद्धि थाय तेम केटलाक मार्गोमां उपदेश कर्यो देखाय छे. जिनोक्त मार्गने विषे तेवो उपदेश कर्यो देखातो नथी. वेदोक्त मार्गमां अपुत्रने गति नथी, ए आदि कारणथी तथा चार आश्रमने क्रमादिथी करीने विचारतां मनुष्यनी वृद्धि थाय तेवो उपदेश कर्यो दृष्टिगोचर थाय छे. जिनोक्त मार्गमां तेथी उलटुं जोवामां आवे छे, अर्थात् तेम नहीं करतां गमे त्यारे जीव वैराग्य पामे तो संसार त्याग करी देवो एवो उपदेश जोवामां आवे छे, तेथी घणा गृहस्थाश्रमने पाम्याविना त्यागी थाय, अने मनुष्यनी वृद्धि अटके, केमके तेमना अत्यागथी जे कंई तेमने संतानोत्पत्तिनो संभव रहेत ते न थाय अने तेथी वंशनो नाश थवा जेवुं थाय. जेथी दुर्लभ एवुं मनुष्यपणुं जे मोक्षसाधनरूप गण्युं छे, तेनी वृद्धि अटके छे, माटे तेवो अभिप्राय जिननो केम होय? ते जाणवा आदि विचारनुं प्रश्न लख्युं छे, तेनुं समाधान विचारवा अर्थे अत्रे लख्युं छे.

उ०—लौकिक दृष्टि अने अलौकिक (लोकोत्तर) दृष्टिमां मोटो भेद छे, अथवा एक बीजी दृष्टि परस्पर विरुद्ध स्वभाववाळी छे. लौकिक दृष्टिमां व्यवहार (संसारिक कारणो)नुं मुख्यपणुं छे, अने अलौकिक दृष्टिमां परमार्थनुं मुख्यपणुं छे. माटे अलौकिक दृष्टिने लौकिक दृष्टिना फळनी साथे प्राये (घणुंकरीने) मेळववी योग्य नहीं.

जैन अने बीजा बधा मार्गमां घणुंकरीने मनुष्यदेहनुं विशेष महात्म्य एटले मोक्ष साधनना कारणरूप होवाथी तेने चिंतामणि जेवो कह्यो छे, ते सत्य छे. पण जो तेथी मोक्षसाधन कर्युं तो ज तेनुं ए महात्म्य छे, नहींतो पशुना देह जेटलीए वास्तविक दृष्टिथी तेनी किम्मत देखाती नथी.

मनुष्यादि वंशनी वृद्धि करवी ए विचार मुख्यपणे लौकिक दृष्टिनो छे, पण ते देह पामीने अवश्य मोक्ष साधन करवुं, अथवा ते साधननो निश्चय करवो, ए विचार मुख्यपणे अलौकिक दृष्टिनो छे. अलौकिक दृष्टिमां मनुष्यादि वंशनी वृद्धि करवी एम कह्युं नथी, तेथी मनुष्यादिनो नाश करवो एँम तेमां आशय रहे छे एम समजवुं न जोईए. लौकिक दृष्टिमां तो युद्धादि घणा प्रसंगमां हजारो मनुष्यो नाश पामवानो वखत आवे छे, अने तेमां घणा वंशरहित थाय छे, पण परमार्थ एटले अलौकिक दृष्टिनां तेवां कार्य नथी, के जेथी तेम थवानो घणुंकरीने वखत आवे, अर्थात् ए स्थळे अलौकिक दृष्टिथी निर्वैरता, अविरोध, मनुष्यादि प्राणीनी रक्षा अने तेमना वंशनुं रहेवुं ए सहेज बने छे; अने मनुष्यादि वंशनी वृद्धि करवानो जेनो हेतु छे, एवी लौकिक दृष्टि उलटी ते स्थळे वैर, विरोध, मनुष्यादि प्राणीनो नाश अने वंशरहितपणुं करनारी थाय छे.

अलौकिक दृष्टि पामीने अथवा अलौकिक दृष्टिनी असरथी कोई पण मनुष्य नानी वयमां त्यागी थाय तो तेथी जे गृहस्थाश्रमपणुं पाम्या न होय तेना वंशनो अथवा गृहस्थाश्रमपणुं पाम्या होय अने पुत्रोत्पत्ति न थई होय तेना वंशनो नाश थवानो वखत आवे, अने तेटलां मनुष्यो ओछां जन्मवानुं थाय, जेथी मोक्षसाधनना हेतुभूत एवा मनुष्यदेहनी प्राप्ति अटकाववा जेवुं बने एम लौकिक दृष्टिथी योग्य लागे, पण परमार्थदृष्टिथी ते घणुंकरीने कल्पना मात्र लागे छे.

कोई पण पूर्वे परमार्थमार्गने आराधीने अत्रे मनुष्यपणुं पाम्या होय, तेने नानी वयथी ज त्याग वैराग्य तीव्रपणे उदयमां आवे छे, तेवा मनुष्यने संताननी उत्पत्ति थया पछी त्याग करवानो उपदेश करवो, अथवा आश्रमना अनुक्रममां मूकवा ते यथार्थ देखातुं नथी, केमके **मनुष्यदेह तो बाह्यदृष्टिथी अथवा अपेक्षापणे मोक्षसाधनरूप छे,** अने **यथार्थ त्याग वैराग्य तो मूळपणे मोक्षसाधनरूप छे,** अने तेवां कारणो प्राप्त करवाथी मनुष्यदेहनुं मोक्षसाधनपणुं ठरतुं हतुं, ते कारणो प्राप्त थये ते देहथी भोगादिमां पडवानुं कहेवुं, ए मनुष्यदेहने मोक्ष साधनरूप करवा बराबर कहेवाय के संसारसाधनरूप करवा बराबर कहेवाय, ते विचारवायोग्य छे.

वेदोक्त मार्गमां चार आश्रम बांध्या छे ते एकांते नथी. वामदेव, शुकदेव, जडभरतजी ए आदि आश्रमना क्रमवगर त्यागपणे विचर्या छे. जेओथी तेम थवुं अशक्य होय, तेओ **परिणामे यथार्थ त्याग करवानो लक्ष राखी** आश्रमपूर्वक प्रवर्त्ते तो ते सामान्य रीते ठीक छे एम कही शकाय. आयुष्यनुं एवुं क्षणभंगुरपणुं छे के तेवो क्रम पण वीरलाने ज प्राप्त थवानो वखत आवे. कदापि तेवुं आयुष्य प्राप्त थयुं होय तोपण तेवी वृत्तिए एटले परिणामे यथार्थ त्याग थाय एवा लक्ष राखीने प्रवर्त्तवानुं तो कोईकथी ज बने तेवुं छे.

जिनोक्त मार्गनो पण एवो एकांत सिद्धांत नथी के गमे ते वयमां गमे तेवे माणसे त्याग करवो. तथारूप सत्संग, सद्गुरुनां योग थये, ते आश्रये कोई पूर्वना संस्कारवाळो एटले विशेष वैराग्यवान पुरुष गृहस्थाश्रम पाम्या पहेलां त्याग करे तो तेणे योग्य कर्युं छे, एम जिनसिद्धांत प्राये कहे छे. केमके **अपूर्व एवां साधनो प्राप्त थये भोगादि भोगववाना विचारमां पडवुं, अने तेनी प्राप्ति अर्थे प्रयत्न करी पोतानुं प्राप्त आत्मसाधन गुमाववा जेवुं करवुं अने पोताथी संतति थशे ते मनुष्यदेह पामशे ते मोक्ष साधनरूप थशे, एवी मनोर्थमात्र-कल्पनामां पडवुं ते मनुष्यपणानुं उत्तमपणुं टाळीने पशुवत् करवा जेवुं थाय.**

इंद्रियादि शांत थयां नथी, ज्ञानीपुरुषनी दृष्टिमां हजी जे त्याग करवाने योग्य नथी एवा कोई मंद के मोहवैराग्यवान जीवने त्याग लेवो प्रशस्त ज छे, एम कंई जिनसिद्धांत एकांते नथी. प्रथमथी ज जेने उत्तम संस्कारवाळो वैराग्य न होय ते पुरुष कदापि त्यागनो परिणामे लक्ष राखी आश्रमपूर्वक प्रवर्ते तो तेणे एकांते भूल ज करी छे. अने त्याग ज कर्यो होत तो उत्तम हतुं, एम पण जिनसिद्धांत नथी. मात्र **मोक्षसाधननो प्रसंग प्राप्त थये ते प्रसंग जतो करवो न जोइए, एम जिननो उपदेश छे.**

उत्तम संस्कारवाळा पुरुषो गृहस्थाश्रम कर्या शिवाय त्याग करे तेथी मनुष्यनी वृद्धि अटके, तेथी मोक्षसाधननां कारण अटके ए विचारवुं अल्पदृष्टियी योग्य देखाय, पण तथारूप त्याग-वैराग्यनो योग प्राप्त थये मनुष्यदेहनुं सफळपणुं थवा अर्थे ते योगनो अप्रमत्तपणे, विलंबवगर लाभ प्राप्त करवो ते विचार तो पूर्वापर अविरुद्ध अने परमार्थदृष्टि सिद्ध कहेवाय. आयुष्य संपूर्ण छे तथा आपणे संतति थाय तो तेओ मोक्षसाधन करशे एवो निश्चय करी, संतति थशे ज एवुं मान्य राखी, पाछो आवोने आवो त्याग प्रकाशित थशे, एवुं भविष्य कल्पीने आश्रमपूर्वक प्रवर्त्तवानुं कियो विचारवान एकांते योग्य गणे? **पोताना वैराग्यमां मंदपणुं न होय अने ज्ञानीपुरुष जेने त्याग करवा योग्य गणता होय तेणे बीजां मनोर्थ मात्र कारणोनो अथवा अनिश्चित कारणोनो विचार छोडी दई निश्चित अने प्राप्त उत्तम कारणनो आश्रय करवो ए ज उत्तम छे, अने ए ज मनुष्यपणानुं सार्थक छे;** बाकी वृद्धि आदिनी तो कल्पना छे; खरेखरो मोक्षमार्ग नाश करी मात्र मनुष्यनी वृद्धि करवानी कल्पना कर्या जेवुं करीए तो बने.

वळी जेम हाल पुत्रोत्पत्तिमाटे आ पुरुषने अटकवुं पड्युं हतुं तेम तेने (थनार पुत्रने) पण अटकवुं थाय, तेथी तो कोईने उत्कृष्ट त्यागरूप मोक्षसाधन प्राप्त थवानो जोग न आववा-देवा जेवुं थाय.

वळी कोई कोई उत्तम संस्कारवान पुरुषोना गृहाश्रम पहेलांना त्यागथी वंशवृद्धि अटकवानो विचार लईए, तो तेवा उत्तम पुरुषना उपदेशथी अनेक जीवो जे मनुष्यादि प्राणीनो नाश करतां डरता नथी तेओ उपदेश पामी वर्त्तमानमां तेवी रीते मनुष्यादिनो नाश करतां केम न अटके तथा शुभवृत्ति पामवाथी फरी मनुष्यपणुं केम न पामे? अने ए रीते मनुष्यनुं रक्षण तथा वृद्धि संभवे.

अलौकिक दृष्टिमां तो मनुष्यनी हानि वृद्धि आदिनो मुख्य विचार नथी, कल्याण अकल्याणनो मुख्य विचार छे. एक राजा जो अलौकिक दृष्टि पामे तो पोताने मोहे हजारो प्राणीओनो युद्धमां नाश थवानो हेतु देखी घणीवार वगरकारणे तेवां युद्धो उत्पन्न न करे, तेथी घणां माणसोनो बचाव थाय अने तेथी वंशवृद्धि थई घणां माणसो वधे एम पण विचार केम न लई शकाय?

ए आदि अनेक प्रकारे विचार करवाथी लौकिक दृष्टि टळी अलौकिक दृष्टिए विचार जागृति थशे.

*(ए आदि घणां कारणोथी परमार्थदृष्टियी जे बोध्युं छे ते ज योग्य जोवामां आवे छे. उपयोग आवां प्रश्नोत्तरमां विशेष करी प्रेरवो कठण पडे छे, तोपण संक्षेपमां ते कंई लखवानुं बन्युं ते उदीरणावत् करीने लख्युं छे.)

ज्यांसुधी बने त्यांसुधी ज्ञानीपुरुषनां वचनने लौकिक आशयमां न उतारवां. अथवा अलौकिक दृष्टिए विचारवां योग्य छे; अने ज्यांसुधी बने त्यांसुधी लौकिक प्रश्नोत्तरमां पण विशेष उपकारविना पडवुं न घटे; तेवा प्रसंगोथी केटलीकवार परमार्थदृष्टि क्षोभ पमाडवा जेवुं परिणाम आवे छे.

२. वडना टेटा के पीपरना पीपांनुं रक्षण पण कंई तेना वंशवृद्धिने अर्थे करवाना हेतुथी अभक्ष कह्यां छे एम समजवुं योग्य नथी. तेमां कोमळपणुं होय छे त्यारे अनंतकायनो संभव छे, तथा तेने बदले बीजी घणी चीजोथी निष्पापपणे रही शकाय छे, छतां ते ज अंगीकार करवानी इच्छा राखवी ते वृत्तिनुं घणुं तुच्छपणुं थाय छे, तेथी अभक्ष कह्यां छे; ते यथार्थ लागवायोग्य छे.

३. पाणीनां टीपामां असंख्यात जीव छे ए वात खरी छे, पण उपर दर्शाव्यां जे वडना टेटां वगेरेनां कारणो तेवां कारणो तेमां रह्यां नथी, तेथी ते अभक्ष कह्युं नथी, जो के तेवुं पाणी वापरवानी पण आज्ञा छे एम कह्युं नथी, अने तेथी पण अमुक पाप थाय एवो उपदेश छे.

४. आगळना* कागळमां बीजना सचित अचित संबंधी समाधान लख्युं छे ते कोई एक विशेष हेतुथी संक्षेप्युं छे. परंपरा रुढी प्रमाणे लख्युं छे, तथापि तेमां कंईक विशेष भेद समजाय छे, ते लख्यो नथी. लखवा योग्य नहीं लागवाथी लख्यो नथी. केमके ते भेद विचारमात्र छे. अने तेमां कांई तेवो उपकार समायो देखातो नथी.

५. नानाप्रकारना प्रश्नोत्तरनो लक्ष एक मात्र आत्मार्थप्रत्ये थाय तो आत्माने घणो उपकार थवानो संभव रहे.

६३४. स्थंभतीर्थसमीप वडवा. भादरवा सुद ११ गुरु. १९५२.

सहजात्मस्वरूपे यथायोग्य प्राप्त थाय.

त्रण पत्रो प्राप्त थयां छे. कंई पण वृत्ति रोकतां ते करतां विशेष अभिमान वर्ते छे. तेम ज तृष्णाना प्रवाहमां चालतां तणाई जवाय छे, अने तेनी गति रोकवानुं सामर्थ्य रहेतुं नथी इत्यादि

* आंक ६३१ पारा ४. म. कि.

विगत तथा क्षमापना अने कर्कटी राक्षसीना योगवासिष्ठसंबंधी प्रसंगनी जगत्भ्रम टळवा माटेमां विशेषता लखी ते विगत वांची छे. हाल लखवामां उपयोग विशेष रही शकतो नथी जेथी पत्रनी पहोंच पण लखतां रही जाय छे. संक्षेपमां ते पत्रोना उत्तर नीचे लख्यापरथी विचारवा योग्य छे.

१. वृत्तिआदि संक्षेप अभिमानपूर्वक थतो होय तोपण करवो घटे. विशेषता एटली के ते अभिमानपर निरंतर खेद राखवो. बने, तो क्रमे करीने वृत्तिआदिनो संक्षेप थाय, अने ते संबंधी अभिमान पण संक्षेप थाय.

२. घणे स्थळे विचारवान पुरुषोए एम कह्युं छे के ज्ञान थये काम, क्रोध तृष्णादि भाव निर्मूळ थाय. ते सत्य छे तथापि ते वचनोनो एवो परमार्थ नथी के ज्ञान थया प्रथम ते मोळां न पडे के ओछां न थाय. मूळसहित छेद तो ज्ञाने करीने थाय, पण **कषायादिनुं मोळापणुं के ओछापणुं न थाय त्यांसुधी ज्ञान घणुंकरीने उत्पन्न ज न थाय.** ज्ञान प्राप्त थवामां विचार मुख्य साधन छे. अने ते विचारने वैराग्य (भोगप्रत्ये अनासक्ति) तथा उपशम (कषायादिनुं घणुं ज मंदपणुं, तेप्रत्ये विशेष खेद) बे मुख्य आधार छे. एम जाणी तेनो निरंतर लक्ष राखी तेवी परिणति करवी घटे.

सत्पुरुषना वचनना यथार्थ ग्रहणविना विचार घणुंकरीने उद्भव थतो नथी. अने सत्पुरुषना वचननुं यथार्थ ग्रहण सत्पुरुषनी प्रतीतिए कल्याण थवामां सर्वोत्कृष्ट निमित्त होवाथी तेमनी अनन्य आश्रयभक्ति परिणाम पाम्येथी थाय छे. घणुंकरी एक बीजा कारणोने अन्योन्याश्रय जेवुं छे. क्यांक कोईनुं मुख्यपणुं छे, क्यांक कोईनुं मुख्यपणुं छे, तथापि एम तो अनुभवमां आवे छे के **खरेखरो मुमुक्षु होय तेने सत्पुरुषनी आश्रयभक्ति अहंभावादि छेदवाने माटे अने अल्पकाळमां विचारदशा परिणाम पामवाने माटे उत्कृष्ट कारणरूप थाय छे.**

भोगमां अनासक्ति थाय, तथा लौकिक विशेषता देखाडवानी बुद्धि ओछी करवामां आवे तो तृष्णा निर्बळ थती जाय छे. लौकिक मान आदिनुं तुच्छपणुं समजवामां आवे तो तेनी विशेषता न लागे. अने तेथी तेनी इच्छा सहेजे मोळी पडी जाय एम यथार्थ भासे छे. **मांड मांड आजीविका चालती होय तोपण मुमुक्षुने ते घणुं छे.** केमके विशेषनो कंई अवश्य उपयोग (कारण) नथी, एम ज्यांसुधी निश्चयमां न आणवामां आवे त्यांसुधी तृष्णा नानाप्रकारे आवरण कर्या करे. लौकिक विशेषतामां कंई सारभूतता नथी, एम निश्चय करवामां आवे तो मांड आजीविका जेटलुं मळतुं होय तोपण तृप्ति रहे. **मांड आजीविका जेटलुं मळतुं न होय तोपण मुमुक्षु जीव आर्त्तध्यान घणुंकरीने थवा न दे,** अथवा थये ते पर विशेष खेद करे, अने आजीवकामां त्रुटतुं यथाधर्म उपार्जन करवानी मंद कल्पना करे ए आदि प्रकारे वर्त्ततां तृष्णानो पराभव क्षीण थवायोग्य देखाय छे.

३. आध्यात्मिक शास्त्र पण आत्मज्ञाननो हेतु घणुंकरीने सत्पुरुषने वचने थाय छे, केमके **परमार्थ-आत्मा शास्त्रमां वर्त्ततो नथी, सत्पुरुषमां वर्त्ते छे.** मुमुक्षुए जो कोई सत्पुरुषनो आश्रय प्राप्त थयो होय तो प्राये ज्ञाननी याचना करवी न घटे, मात्र तथारूप वैराग्य उपशमादि प्राप्त करवाना उपाय

करवा घटे. ते योग्य प्रकारे सिद्ध थये ज्ञानीनां उपदेश सुलभ परिणमे छे, अने यथार्थ विचार तथा ज्ञाननो हेतु थाय छे.

४. ज्यांसुधी ओछी उपाधिवाळां क्षेत्रे आजीविका चालती होय त्यांसुधी विशेष मेळववानी कल्पनाए मुमुक्षुए कोई एक विशेष अलौकिक हेतुविना वधारे उपाधिवाळां क्षेत्रे जवुं न घटे केमके तेथी घणी सद्वृत्तिओ मोळी पडी जाय छे, अथवा वर्द्धमान थती नथी.

५. योगवासिष्ठना प्रथमनां बे प्रकरण अने तेवा ग्रंथोनो मुमुक्षुए विशेष करी लक्ष करवायोग्य छे.

६३५.

ब्रह्मरंध्रादिने विषे थता भास विषे प्रथम मुंबई कागळ मळ्यो हतो. हाल बीजो ते विषेनी विगतनो अत्रे कागळ मळ्यो छे. ते ते भास थवा संभवे छे एम जणाववामां कंईक समजण भेदथी व्याख्या भेद थाय. श्री ···नो तमने समागम छे तो तेओ द्वारा ते मार्गनो यथाशक्ति विशेष पुरुषार्थ थतो होय तो करवो योग्य छे. वर्त्तमानमां ते मार्ग प्रत्ये अमारो विशेष उपयोग वर्त्ततो नथी. तेम पत्रद्वारा ते मार्गनो घणुंकरीने विशेष लक्ष करावी शकातो नथी.

आत्माना कंईक उज्वळपणाने अर्थे, तेनुं अस्तित्व तथा महात्म्यादि प्रतीतिमां आववाने अर्थे तथा आत्मज्ञानना अधिकारीपणाने अर्थे ते साधन उपकारी छे. ए शिवाय बीजी रीते घणुं करीने उपकारी नथी; एटलो लक्ष अवश्य राखवो योग्य छे.

६३६. राळज. भादरवा. १९५२.

जैन दर्शननी रीतिए जोतां सम्यग्दर्शन अने वेदांतनी रीतिए जोतां केवळज्ञान अमने संभवे छे. जैनमां केवळज्ञाननुं स्वरूप लख्युं छे, ते ज मात्र समजावुं मुश्केल थई पडे छे. वळी वर्त्तमानमां ते ज्ञाननो तेणे ज निषेध कर्यो छे, जेथी तत्संबंधी प्रयत्न करवुं पण सफळ न देखाय. जैन प्रसंगमां अमारो वधारे निवास थयो छे तो कोई पण प्रकारे ते मार्गनो उद्धार अम जेवाने द्वारे विशेष करीने थई शके, केमके तेनुं स्वरूप विशेष करीने समजायुं होय ए आदि. वर्त्तमानमां जैनदर्शन एटलुं बधुं अव्यवस्थित अथवा विपरीत स्थितिमां जोवामां आवे छे के तेमांथी जाणे जिननो * × × × गयो छे, अने लोको मार्ग प्ररूपे छे. बाह्य कुटारो बहु वधारी दीधो छे, अने † अंतर्मार्गनुं घणुंकरी ज्ञान विच्छेद जेवुं थयुं छे. वेदोक्त मार्गमां बसें चारसें वर्षे कोई कोई मोटा आचार्य थया देखाय छे के जेथी लाखो माणसने वेदोक्त रीति सचेत थई प्राप्त थई होय. वळी साधारण रीते कोई कोई आचार्य अथवा ते मार्गना जाण सारा पुरुषो एमनेएम थया करे छे, अने जैनमार्गमां घणां वर्ष थयां तेवुं बन्युं देखातुं नथी. जैनमार्गमां प्रजा पण घणी थोडी रही छे, अने तेमां सेंकडो भेद वर्त्ते छे, एटलुं ज नहीं पण † मूळमार्गनी सन्मुखनी

* अक्षर त्रुटी गया छे. † मूळमार्ग. अं. ६४५. म. कि.

वात पण तेमने काने नथी पडती, अने उपदेशकना लक्षमां नथी, एवी स्थिति वर्त्ते छे. तेथी चित्तमां एम आव्यां करे छे के जो ते मार्ग वधारे प्रचार पामे तो तेम करवुं, नहीं तो तेमां वर्त्तती प्रजाने मूळलक्षपणे दोरवी. आ काम घणुं विकट छे. वळी जैनमार्ग पोते ज समजावो तथा समजवो कठण छे. समजावतां आडां कारणो आवीने, घणां उभां रहे, तेवी स्थिति छे. एटले तेवी प्रवृत्ति करतां डर लागे छे. **तेनी साथे एम पण रहे छे के जो आ कार्य आ काळमां अमाराथी कंई पण बने तो बनी शके, नहीं तो हाल तो मूळमार्ग सन्मुख थवा माटे बीजानुं प्रयत्न काम आवे तेवुं देखातुं नथी.** घणुंकरीने **मूळमार्ग** बीजाना लक्षमां नथी, तेम ते हेतु दृष्टांते उपदेशवामां परमश्रुत आदि गुणो जोईए छे, तेम ज अंतरंग केटलाक गुणो जोईए छे, ते अत्र छे एवुं दृढ भासे छे.

ए रीते जो **मूळमार्ग** प्रगटतामां आणवो होय तो प्रगट करनारे सर्वसंगपरित्याग करवो योग्य, केमके तेथी खरेखरो समर्थ उपकार थवानो वखत आवे. वर्तमान दशा जोतां, सत्ताना कर्मोपर दृष्टि देतां केटलाक वखत पछी ते उदयमां आववो संभवे छे. अमने सहजस्वरूप ज्ञान छे, जेथी योगसाधननी एटली अपेक्षा नहीं होवाथी तेमां प्रवृत्ति करी नथी, तेम ते सर्वसंगपरित्यागमां अथवा विशुद्धदेशपरित्यागमां साधवा योग्य छे. एथी लोकोने घणो उपकार थाय छे, जो के **वास्तविक उपकारनुं कारण तो आत्मज्ञानविना बीजुं कोई नथी.** हाल बे वर्ष सुधीतो ते योगसाधन विशेष करी उदयमां आवे तेम देखातुं नथी. तेथी त्यार पछीनी कल्पना कराय छे, अने ३ थी ४ वर्ष ते मार्गमां गाळवामां आव्यां होय तो ३६ मे वर्ष सर्वसंगपरित्यागी उपदेशकनो वखत आवे, अने लोकोनुं श्रेय थवुं होय तो थाय.

नानी वये मार्गनो उद्धार करवा संबंधी जिज्ञासा वर्त्तती हती, त्यार पछी ज्ञानदशा आव्ये क्रमे करीने ते उपशम जेवी थई; पण कोई कोई लोको परिचयमां आवेला, तेमने केटलीक विशेषता भासवाथी कंईक *मूळमार्गपर लक्ष आवेलो, अने आ बाजु तो सेंकडो अने हजारो माणसो प्रसंगमां आवेला जेमांथी कंईक समजणवाळा तथा उपदेशक प्रत्ये आस्थावाळा एवा सो एक माणस नीकळे. ए उपरथी एम जोवामां आव्युं के लोको तरवाना कामी विशेष छे, पण तेमने तेवो योग बाझतो नथी. जो खरेखर उपदेशक पुरुषनो योग बने तो घणा जीव मूळमार्ग पामे तेवुं छे, अने दया आदिनो विशेष उद्योत थाय एवुं छे. एम देखावाथी कंईक चित्तमां आवे छे के आ कार्य कोई करे तो सारूं. पण दृष्टि करतां तेवो पुरुष ध्यानमां आवतो नथी, एटले कंईक लखनार प्रत्ये ज दृष्टि आवे छे, पण लखनारनो जन्मथी लक्ष एवो छे के ए जेवुं एके जोखमवाळुं पद नथी अने पोतानी ते कार्यनी यथायोग्यता ज्यांसुधी न वर्त्ते त्यांसुधी तेनी इच्छा मात्र पण न करवी, अने घणुंकरीने हजु सुधी तेम वर्त्तवामां आव्युं छे. मार्गनुं कंई पण स्वरूप कंईकने समजाव्युं छे, तथापि कोईने एक व्रत-पच्चखाण आप्युं नथी, अथवा तमे मारा शिष्य छो, अने अमे गुरु छीए

* आंक ६४५. म. कि.

एवो घणुंकरीने प्रकार दर्शित थयो नथी. कहेवानो हेतु एवो छे के सर्वसंगपरित्याग थये ते कार्यनी प्रवृत्ति सहजस्वभावे उदयमां आवे तो करवी एवी मात्र कल्पना छे.

(२) तेनो खरेखरो आग्रह नथी, मात्र अनुकंपादि तथा ज्ञानप्रभाव वर्त्ते छे तेथी क्यारेक ते वृत्ति उठे छे, अथवा अल्पांशे अंगमां ते वृत्ति छे, तथापि ते स्ववश छे. अमे धारीए छीए तेम सर्वसंगपरित्यागादि थाय तो हजारो माणस मूळमार्गने पामे, अने हजारो माणस ते सन्मार्गने आराधी सद्गतिने पामे एम अमाराथी थवुं संभवे छे. अमारा संगमां त्याग करवाने घणा जीवने वृत्ति थाय एवो अंगमां त्याग छे.

धर्म स्थापवानुं मान मोटुं छे; तेनी स्पृहाथी पण वर्त्तते आवी वृत्ति रहे, पण आत्माने घणीवार तावी जोतां ते संभव हवेनी दशामां ओछो ज देखाय छे. अने कंईक सत्तागत रह्यो हशे तो ते क्षीण थशे एम अवश्य भासे छे, केमके यथायोग्यताविना, देह छूटी जाय तेवी दृढ कल्पना होय तोपण, मार्ग उपदेशवो नहीं, एम आत्मनिश्चय नित्य वर्त्ते छे. एक ए बळवान कारणथी परिग्रहादि त्याग करवानो विचार रह्या करे छे. **मारा मनमां एम रहे छे के वेदोक्त धर्म प्रकाशवो अथवा स्थापवो होय तो मारी दशा यथायोग्य छे, पण जिनोक्तधर्म स्थापवो होय तो हजु तेटली योग्यता नथी, तोपण विशेष योग्यता छे, एम लागे छे.**

६३७.

(१)

हे नाथ! कां धर्मोन्नति करवारूप इच्छा सहजपणे समावेश पामे तेम थाओ; कां तो ते इच्छा अवश्य कार्यरूप थाओ.

अवश्य कार्यरूप थवी बहु दुष्कर देखाय छे. केमके अल्प अल्प वातमां मतभेद बहु छे, अने तेनां मूळ घणां उंडां छे. **मूळमार्गथी** लोको लाखो गाऊ दूर छे एटलुं ज नहीं पण **मूळमार्गनी** जिज्ञासा तेमने उत्पन्न कराववी होय, तोपण घणा काळनो परिचय थये पण थवी कठण पडे एवी तेमनी दुराग्रहादिथी जडप्रधान दशा वर्त्ते छे.

(२)

उन्नतिनां साधनोनी स्मृति करूं छुं:—

बोधबीजनुं स्वरूप निरूपण **मूळमार्ग**प्रमाणे ठाम ठाम थाय.

ठाम ठाम मतभेदथी कंई ज कल्याण नथी ए वात फेलाय.

प्रत्यक्ष सद्गुरुनी आज्ञाए धर्म छे एम वात लक्षमां आवे.

द्रव्यानुयोग,—आत्मविद्याप्रकाश थाय.

त्याग वैराग्यनां विशेषपणाथी साधुओ विचरे.

नवतत्त्वप्रकाश.
साधुधर्मप्रकाश.
श्रावकधर्मप्रकाश.
विचार.
घणा जीवोने प्राप्ति.

६३८. वडवा. भाद्र. सुद १५ सोम. १९५२.

ॐ

(ज्ञानापेक्षाए)सर्वव्यापक, सच्चिदानंद एवो हुं आत्मा एक छुं. एम विचारवुं, ध्यावबुं.
निर्मळ, अत्यंत निर्मळ, परमशुद्ध, चैतन्यघन, प्रगट आत्मस्वरूप छे.
सर्वने बाद करतां करतां जे अबाध्य अनुभव रहे छे ते आत्मा छे.
जे सर्वने जाणे छे ते आत्मा छे.
जे सर्व भावने प्रकाशे छे ते आत्मा छे.
उपयोगमय आत्मा छे.
अव्याबाध समाधिस्वरूप आत्मा छे.
आत्मा छे. आत्मा अत्यंत प्रगट छे, केमके स्वसंवेदन प्रगट अनुभवमां छे.
अनुत्पन्न अने अमिलनस्वरूप होवाथी **आत्मा नित्य छे.**
भ्रांतिपणे परभावनो **कर्त्ता छे.**
तेनां फळनो **भोक्ता** छे; भान थये **स्वभाव परिणामी छे.**
सर्वथा स्वभावपरिणाम ते **मोक्ष छे.**
सद्गुरु, सत्संग, सत्शास्त्र, सद्विचार अने संयमादि **तेनां साधन छे.**
आत्मानां अस्तित्वथी मांडी निर्वाणसुधीनां पद साचां छे, अत्यंत साचां छे. केमके प्रगट अनुभवमां आवे छे.

भ्रांतिपणे आत्मा परभावनो कर्त्ता होवाथी शुभाशुभ कर्मनी उत्पत्ति थाय छे. कर्म सफळ होवाथी ते शुभाशुभकर्म आत्मा भोगवे छे; माटे उत्कृष्ट शुभथी उत्कृष्ट अशुभ सुधीनां न्यूनाधिक पर्याय भोगववां रूप क्षेत्र अवश्य छे.

निज स्वभावज्ञानमां केवळ उपयोगे, तन्मयाकार, सहजस्वभावे, निर्विकल्पपणे आत्मा परिणमे ते **केवळज्ञान** छे.

तथारूप प्रतीतिपणे परिणमे ते **सम्यक्त्व छे.**

निरंतर ते प्रतीति वर्त्या करे ते **क्षायकसम्यक्त्व** कहिये छिये.

क्वचित् मंद, क्वचित् तीव्र, क्वचित् विसर्जन, क्वचित् स्मरणरूप एम प्रतीति रहे तेने **क्षयोपशम सम्यक्त्व** कहिये छिये.

ते प्रतीतिने सत्तागत आवरण उदय आव्यां नथी, त्यांसुधी उपशम सम्यक्त्व कहिये छिये.

आत्माने आवरण उदय आवे त्यारे ते प्रतीतिथी पडी जाय छे, तेने सास्वादन सम्यक्त्व कहिये छिये.

अत्यंत प्रतीति थवाना योगमां सत्तागत अल्प पुद्गलनुं वेदवुं ज्यां रह्युं छे, तेने वेदक सम्यक्त्व कहिये छिये.

तथारूप प्रतीति थये अन्यभावसंबंधी अहंममत्वादि, हर्ष, शोक क्रमेकरी क्षय थाय. मनरूप योगमां तारतम्यसहित जे कोई चारित्र आराधे ते सिद्धि पामे छे; अने जे स्वरूपस्थिरता भजे ते स्वभावस्थिति पामे छे.

निरंतर स्वरूपलाभ, स्वरूपाकार उपयोगनुं परिणमन ए आदि स्वभाव अंतरायकर्मना क्षये प्रगटे छे.

केवळ स्वभाव परिणामी ज्ञान ते केवळज्ञान छे. ॐ सच्चिदानंदाय नमः.

६३९. आणंद. भा. वद १२ रवि. १९५२.

कागळ मळ्यो छे. * "मनुष्यादि प्राणीनी वृद्धि" संबंधे तमे जे प्रश्न लखेल ते प्रश्न जे कारणथी लखायुं हतुं, तेवुं कारण ते प्रश्न मळेल तेवामां सांभळ्युं हतुं. एवां प्रश्नथी विशेष आत्मार्थ सिद्ध थतो नथी, अथवा वृथा काळक्षेप जेवुं थाय छे. तेथी आत्मार्थ प्रत्ये लक्ष थवा तमने, तेवां प्रश्न प्रत्ये के तेवा प्रसंगो प्रत्ये तमारे उदासीन रहेवुं योग्य छे, एम जणाव्युं हतुं; तेम तेवां प्रश्नना उत्तर लखवा जेवी अत्रे वर्त्तमान दशा घणुंकरी वर्त्तती नथी एम जणाव्युं हतुं

अनियमित अने अल्प आयुष्वाळा आ देहे आत्मार्थनो लक्ष सौथी प्रथम कर्त्तव्य छे.

६४०. राळज. भाद्रपद. १९५२.

बौद्ध, नैयायिक, सांख्य, जैन अने मीमांसा ए पांच आस्तिक दर्शनो एटले बंधमोक्षादि भावने स्वीकारनारां दर्शनो छे. नैयायिकना अभिप्राय जेवो ज वैशेषिकनो अभिप्राय छे, सांख्य जेवो ज योगनो अभिप्राय छे, सहज भेद छे तेथी ते दर्शन जूदां गवेष्यां नथी. पूर्व अने उत्तर एम मीमांसा दर्शनना बे भेद छे; पूर्वमीमांसा अने उत्तरमीमांसामां विचारनो भेद विशेष छे; तथापि मीमांसा शब्दथी बेयनुं ओळखाण थाय छे; तेथी अत्रे ते शब्दथी बेय समजवां. पूर्व मीमांसानुं जैमिनी अने उत्तरमीमांसानुं 'वेदांत' एम नाम पण प्रसिद्ध छे.

बौद्ध अने जैन शिवायनां बाकीनां दर्शनो वेदने मुख्य राखी प्रवर्त्ते छे; माटे वेदाश्रित दर्शन छे; अने वेदार्थ प्रकाशी पोतानुं दर्शन स्थापवानो प्रयत्न करे छे. बौद्ध अने जैन वेदाश्रित नथी, स्वतंत्र दर्शन छे.

* जुओ पत्र अं. ६३१. प्र. कि.

आत्मादि पदार्थने नहीं स्वीकारतुं एवुं चार्वाक नामे छट्ठुं दर्शन छे. बौद्ध दर्शनना मुख्य चार भेद छे :—

१. सौतांत्रिक, २. माध्यमिक, ३. शून्यवादी अने ४. विज्ञानवादी. ते जूदे जूदे प्रकारे भावोनी व्यवस्था माने छे,

जैनदर्शनना सहज प्रकारांतरथी बे भेद छे; दिगंबर अने श्वेतांबर.

पांच आस्तिकदर्शनने जगत् अनादि अभिमत छे.

बौद्ध, सांख्य, जैन अने पूर्वमीमांसाने अभिप्राये सृष्टिकर्त्ता एवो कोई ईश्वर नथी.

नैयायिकने अभिप्राये तटस्थपणे ईश्वर कर्त्ता छे.

वेदांतने अभिप्राये आत्माने विषे जगत् विवर्त्तरूप एटले कल्पितपणे भासे छे अने ते रीते ईश्वर कल्पितपणे कर्त्ता स्वीकार्यो छे.

योगने अभिप्राये नियंतापणे ईश्वर पुरुषविशेष छे.

बौद्धने अभिप्राये त्रिकाळ अने वस्तुस्वरूप आत्मा नथी, क्षणिक छे. शून्यवादी बौद्धने अभिप्राये विज्ञानमात्र छे; अने विज्ञानवादी बौद्धने अभिप्राये दुःखादि तत्त्व छे. तेमां विज्ञानस्कंध क्षणिकपणे आत्मा छे.

नैयायिकने अभिप्राये सर्वव्यापक एवा असंख्य जीव छे. ईश्वर पण सर्वव्यापक छे. आत्मादि ने मनना सान्निध्यथी ज्ञान उपजे छे.

सांख्यने अभिप्राये सर्वव्यापक एवा असंख्य आत्मा छे. ते नित्य, अपरिणामी अने चिन्मात्रस्वरूप छे.

जैनने अभिप्राये अनंत द्रव्य आत्मा छे. प्रत्येके जूदा छे. ज्ञानदर्शनादि चेतनास्वरूप. नित्य, अने परिणामी प्रत्येक आत्मा असंख्यातप्रदेशी स्वशरीरावगाहवर्त्ती मान्यो छे.

पूर्वमीमांसाने अभिप्राये जीव असंख्य छे, चेतन छे.

उत्तरमीमांसाने अभिप्राये एक ज आत्मा सर्वव्यापक सच्चिदानंदमय त्रिकालाबाध्य छे.

६४१. आणंद. आश्विन. १९५२.

ॐ

आस्तिक एवां मूळ पांच दर्शन आत्मानुं निरूपण करे छे, तेमां भेद जोवामां आवे छे, तेनुं समाधान?

दिन प्रतिदिन जैनदर्शन क्षीण थतुं जोवामां आवे छे, अने वर्धमानस्वामी थया पछी थोडांएक वर्षमां तेमां नाना प्रकारना भेद थया देखाय छे ते आदिनां शां कारणो?

हरिभद्रादि आचार्योए नवीन योजनानी पेठे श्रुतज्ञाननी उन्नति करी देखाय छे, पण लोकसमुदायमां जैनमार्ग वधारे प्रचार पाम्यो देखातो नथी, अथवा तथारूप अतिशयसंपन्न धर्मप्रवर्त्तक पुरुषनुं ते मार्गमां उत्पन्न थवुं ओछुं देखाय छे, तेनां शां कारणो?

हवे, वर्त्तमानमां ते मार्गनी उन्नति थवी संभवे छे के केम? अने थाय तो शी शी रीते थवी संभवित देखाय छे, अर्थात् ते वात क्यांथी जन्म पामी केवी रीते केवा द्वारे केवी स्थितिमां प्रचार पामवी संभवित देखाय छे? फरी जाणे वर्धमानस्वामीना वखत जेवो वर्त्तमानकाळना योगादि अनुसार ते धर्म उदय पामे एवुं दीर्घदृष्टिथी संभवे छे? अने संभवतुं होय तो ते शा शा कारणथी?

जैनसूत्र हाल वर्त्तमानमां छे, तेमां ते दर्शननुं स्वरूप घणुं अधुरूं रहेलुं जोवामां आवे छे, ते विरोध शाथी टळे?

* ते दर्शननी परंपरामां एम कह्युं छे के वर्त्तमानकाळमां केवळज्ञान न होय, अने केवळज्ञाननो विषय लोकालोकने द्रव्यगुणपर्यायसहित सर्व काळपरत्वे जाणवानो मान्यो छे ते यथार्थ देखाय छे? अथवा ते माटे विचारतां कंई निर्णय आवी शके छे के केम? तेनी व्याख्या कंई फेर देखाय छे के केम? अने मूळ व्याख्याप्रमाणे कंई बीजो अर्थ थतो होय तो ते अर्थानुसार वर्त्तमानमां केवळज्ञान उपजे के केम? अने ते उपदेशी शकाय के केम? तेम ज बीजां ज्ञानोनी व्याख्या कही छे ते पण कंई फेरवाळी लागे छे के केम? अने ते शा कारणोथी?

द्रव्य धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय; आत्मा मध्यम अवगाही, संकोच विकाशनुं भाजन; महाविदेहादि क्षेत्रनी व्याख्या; ते कंई अपूर्व रीते के कहेली रीते घणा ज बळवान प्रमाणसहित सिद्ध थवायोग्य देखाय छे के केम?

गच्छना मतमतांतर घणी ज नजीवी नजीवी बाबतमां बळवान आग्रही थई जूदी जूदी रीते दर्शनमोहनीयना हेतु थई पड्या छे, ते समाधान करवुं बहु विकट छे. केमके ते लोकोनी मति विशेष आवरणने पाम्याविना एटला अल्प कारणमां बळवान आग्रह न होय.

अविरति, देशविरति, सर्वविरति एमांना कया आश्रमवाळा पुरुषथी विशेष उन्नति थई शकवाने संभव रहे छे?

सर्वविरति केटलांक कारणोमां प्रतिबंधने लीधे प्रवर्त्ति शके नहीं. देशविरति अने अविरतिनी तथारूप प्रतीति थवी मुश्केल अने वळी जैनमार्गमां पण ते रीतनो समावेश ओछो छे.

आ विकल्प अमने शा माटे उठे छे? अने ते शमावी देवानुं चित्त छे ते शमावी दईए.

६४२.

ॐ जिनाय नमः

(१) भगवान् जिने कहेला लोकसंस्थानादि भाव आध्यात्मिक दृष्टिथी सिद्ध थवायोग्य छे.

चक्रवर्त्यादिनुं स्वरूप पण आध्यात्मिक दृष्टिथी समजाय एवुं छे.

मनुष्य ऊंचत्व प्रमाणादिमां पण तेवो संभव छे.

काळप्रमाणादि पण ते ज रीते घटमान छे.

निगोदादि पण ते ज रीते घटमान थवायोग्य छे.

सिद्धस्वरूप पण ए ज भावथी निदिध्यासन थवायोग्य छे, संप्राप्त थवायोग्य जणाय छे.

लोक शब्दनो अर्थ }
एनेकांत शब्दनो अर्थ } आध्यात्मिक छे. सर्वज्ञ शब्द समजावो बहु गूढ छे. धर्मकथारूप चरित्रो आध्यात्मिक परिभाषाथी अलंकृत लागे छे. जंबुद्वीपादिनुं वर्णन पण अध्यात्मपरिभाषाथी निरूपित कर्युं लागे छे.

(२) अतींद्रिय ज्ञानना भगवान् जिने बे भेद पाड्या छे, (१) देशप्रत्यक्ष ते बे भेदः—

(१) अवधि. (२) मनःपर्यव. इच्छितपणे अवलोकन करतो आत्मा इंद्रियना अवलंबनवगर अमुक मर्यादा जाणे ते अवधि. अनिच्छित छतां मानसिक विशुद्धिना बळवडे जाणे ते मनःपर्यव. (२) सर्व—प्रत्यक्ष ते सामान्यविशेष चैतन्यात्मदृष्टिमां परिनिष्ठित शुद्ध केवलज्ञान.

(३) श्री जिने कहेला भावो अध्यात्मपरिभाषामय होवाथी समजावा कठण छे. परमपुरुषनो योग संप्राप्त थवो जोईए. जिन परिभाषाविचार यथावकाशानुसार विशेष निदिध्यास करवायोग्य छे.

६४३. काविठा. श्रावण वद २. १९५२.

उपदेशछाया.*

(१)

स्त्री, पुत्र, परिग्रहादि भावो प्रत्ये मूळ ज्ञान थया पछी जो एवी भावना रहे के ज्यारे इच्छीश त्यारे आ स्त्रियादि प्रसंग त्यागी शकीश तो ते मूळ ज्ञानथी वमावी देवानी वात समजवी; अर्थात् मूळ ज्ञानमां जो के भेद पडे नहीं, पण आवरणरूप थाय. वळी शिष्यादि अथवा भक्तिना करनाराओ मार्गथी पडशे अथवा अटकी जशे एवी भावनाथी ज्ञानीपुरुष पण वर्ते तो ज्ञानीपुरुषने पण निरावणज्ञान ते आवरणरूप थाय; अने तेथी ज वर्धमानादि ज्ञानीपुरुषो अनिद्रापणे साडाबारवर्षसुधी रह्या; सर्वथा असंगपणुं ज श्रेयस्कर दीठुं; एक शब्दनो उच्चार करवानुं पण यथार्थ दीठुं नहीं; साव निरावरण, विजोगी, विभोगी अने निर्भयी ज्ञान थया पछी उपदेशकार्य कर्युं. माटे आने आम कहीशुं तो ठीक, अथवा आने आम नहीं कहेवाय तो खोटुं ए वगेरे विकल्पो साधुमुनिओए न करवा.

हालना वखतमां मनुष्योनुं केटलुंक आयुष् स्त्रीपासे जाय, केटलुंक निद्रामां जाय, केटलुंक धंधामां जाय, अने सहेज रहे ते कुगुरु लूंटी ले. एटले मनुष्यभव निरर्थक चाल्यो जाय.

---

* सं० १९५२ ना श्रावण—भाद्रपदमां श्रीमद्नुं श्रीकाविठा, राळज, वडवाआदि निवृत्तिक्षेत्रे रहेवुं थयेल, ते वखते तेओश्रीए करेल उपदेश, छायां मात्र झीली लई स्व० श्री० अंबालाल लालचंदे झीली लीधेल.

(२) श्रावण. वद ३.

प्र०:–केवलज्ञानीए सिद्धांतो प्ररूप्यां ते 'परउपयोग' के 'स्वउपयोग'? शास्त्रमां कह्युं छे के केवलज्ञानी स्वउपयोगमां ज वर्त्ते.

उ०:–तीर्थंकर कोईने उपदेश दे तेथी करी कांई 'परउपयोग' कहेवाय नहीं. 'परउपयोग' तेने कहेवाय के जे उपदेश देतां रति, अरति, हर्ष, अहंकार थतां होय. ज्ञानीपुरुषने तो तादात्म्य-संबंध होतो नथी जेथी उपदेश देतां रति, अरति न थाय. रति, अरति थाय ते 'परउपयोग' कहेवाय. पण तेम नथी, कारण तेने विषे रतिपणुं, अरतिपणुं नथी.

सिद्धांतना बांधाविषे एम समजवुं के आपणी बुद्धि न पहोंचे तेथी ते वचनो असत् छे एम न कहेवुं; कारण के जेने तमे असत् कहो छो, ते शास्त्रथी ज प्रथम तो तमे जीव, अजीव एवुं कहेतां शीख्या छो, अर्थात् ते ज शास्त्रोने आधारे ज तमे जे कांई जाणो छो ते जाण्युं छे; तो पछी तेने असत् कहेवां ते उपकारने बदले दोष करवा बराबर गणाय. वळी शास्त्रना लखनाराओ पण विचारवान हता. तेथी ते सिद्धांत विषे जाणता हता. महावीरस्वामी पछी घणे वर्षे लखाणां छे माटे असत् कहेवां ते दोष गणाय.

ज्ञानीनी आज्ञाए वर्त्तता एवा भद्रिक मुमुक्षु जीवने "ब्रह्मचर्य पाळवुं एटले स्त्रियादिकना प्रसंगमां न जवुं" एवी आज्ञा गुरुए करी होय तो ते वचनपर दृढ विश्वास करी ते ते स्थानके न जाय; त्यारे जेने मात्र आध्यात्मिक शास्त्रादिक वांची मुमुक्षुता थई होय, तेने एम अहंकार रह्या करे के, "एमां ते शुं जीतवुं छे?" आवी घेरुछाना कारणथी ते तेवा स्त्रियादिकना प्रसंगमां जाय. कदाच् ते प्रसंगथी एकवार बेवार बचे, पण पछी ते पदार्थप्रत्ये दृष्टि देतां 'आ ठीक छे' एम करतां करतां तेने तेमां आनंद थाय, अने तेथी स्त्रियो सेवे.

ज्ञानीनी आज्ञा प्रमाणे वाळो भोळो जीव तो वर्त्ते; एटले ते बीजा विकल्पो नहीं करतां तेवा प्रसंगमां न ज जाय. आ प्रकारे, जे जीवने "आ स्थानके जवुं योग्य नथी" एवां जे ज्ञानीनां वचनो तेनो दृढ विश्वास छे ते ब्रह्मचर्यव्रतमां रही शके छे. अर्थात् ते आ अकार्यमां प्रवृत्त न थाय. त्यारे ज्ञानीना आज्ञांकित नथी एवा मात्र आध्यात्मिक शास्त्रो वांची थयेला मुमुक्षुओ अहंकारमां फर्या करे, अने मान्या करे के एमां ते शुं जीतवुं छे' आवी मान्यताने लईने आ जीव पडी जाय छे, अने आगळ वधी शके नहीं. आ क्षेत्र छे ते निवृत्तिवाळुं छे, पण जेने निवृत्ति थई होय तेने तेम छे. तेम खरा ज्ञानी छे ते शिवायने तो अब्रह्मचर्यवश न थवाय एम कहेवामात्र छे. जेम जेने निवृत्ति थई नथी तेने प्रथम तो एम थाय छे के "आ क्षेत्र सारूं छे, अहीं रहेवा जेवुं छे," पण पछी एम एम करतां विशेष प्रेरणा थवाथी क्षेत्राकारवृत्ति थई जाय. ज्ञानीनी वृत्ति क्षेत्राकार न थाय; कारण के क्षेत्र निवृत्तिवाळुं छे, अने पोते पण निवृत्तिभाव पामेला छे एटले बन्ने योग अनुकूळ छे. शुष्कज्ञानीओने प्रथम तो एम अभिमान रह्या करे के, एमां शुं जीतवुं छे? पण पछी धीमे धीमे स्त्रियादि पदार्थोमां सपडाई जाय छे; ज्यारे खरा ज्ञानीने तेम थतुं नथी.

हाल सिद्धांतोनो जे बांधो जोवामां आवे छे ते ज अक्षरोमां अनुक्रमे तीर्थंकरे कह्युं होय एम कांई नथी. पण जेम कोई वखते कोईए वाचना, प्रच्छणा, परावर्त्तना, अनुपेक्षा अने धर्मकथा संबंधी पुछयुं तो ते वखते ते संबंधी वात कही. वळी कोईए पूछयुं के धर्मकथा केटला प्रकारे तो कह्युं के चार प्रकारेः–अक्षेपणी, विक्षेपणी, निर्वेदणी, संवेगणी. आवा आवा प्रकारनी वात थती होय ते तेमनी पासे जे गणधरो होय ते ध्यानमां राखी ले, अने अनुक्रमे तेनो बांधो बांधे. जेम अहीं कोई वात करवाथी कोई ध्यानमां राखी अनुक्रमे तेनो बांधो बांधे तेम. बाकी तीर्थंकर जेटलुं कहे तेटलुं कांई तेओना ध्यानमां न रहे, अभिप्राय ध्यानमां रहे. वळी गणधरो पण बुद्धिवान हता एटले ते तीर्थंकरे कहेलां वाक्यो कांई तेमां आव्यां नथी एम पण नथी.

सिद्धांतोनो बांधो एटलो बधो सखत छे छतां यतिलोकोने तेथी विरुद्ध आचरण करता देखीए छीए. दाखला तरीके, कह्युं छे के साधुओए धुपेल नांखवुं नहीं, छतां ते लोको नांखे छे. आथी कांई **ज्ञानीनी वाणीनो दोष नथी; पण जीवनी समजणशक्तिनो दोष छे.** जीवमां सद्बुद्धि न होय तो प्रत्यक्षयोगे पण तेने अवळुं ज परिणमे छे, अने जीवमां सद्बुद्धि होय तो सवळुं भासे छे.

प्राप्त=ज्ञान पामेलो पुरुष.

आप्त=विश्वास करवायोग्य पुरुष.

मुमुक्षु मात्र सम्यग्दृष्टि जीव समजवा नहीं. जीवने भूलवणीनां स्थानक घणां छे. माटे विशेष विशेष जाग्रति राखवी; मुंझावुं नहीं; मंदता न करवी. पुरुषार्थधर्म वर्द्धमान करवो.

जीवने सत्पुरुषनो योग मळवो दुर्लभ छे. अपारमार्थिक गुरुने जो पोतानो शिष्य बीजा धर्ममां जाय तो ताव चढे छे. पारमार्थिक गुरुने "आ मारो शिष्य छे" एवो भाव होतो नथी. कोई कुगुरुआश्रित जीव बोधश्रवणअर्थे सद्गुरुपासे एक वखत गयो होय, अने पछी ते तेना ते कुगुरुपासे जाय, तो ते कुगुरु ते जीवने अनेक विचित्र विकल्पो बेसाडी दे छे, के जेथी ते जीव फरी सद्गुरुपासे जाय नहीं. ते जीवने बिचाराने तो सत्, असत् वाणीनी परीक्षा नथी एटले भोळवाई जाय छे, अने साचा मार्गेथी पडी जाय छे.

(३) राळज. श्रा. वद ६ शनि.

भक्ति ए सर्वोत्कृष्ट मार्ग छे. भक्तिथी अहंकार मटे, स्वछंद टळे, अने सीधा मार्गे चाल्युं जवाय; अन्य विकल्पो मटे. आवो ए भक्तिमार्ग श्रेष्ठ छे.

प्र०:–आत्मा कोणे अनुभव्यो कहेवाय?:–

उ०:–तरवार म्यानमांथी काढवाथी जेम जूदी मालम पडे छे, तेम देहथी आत्मा स्पष्ट जूदो बतावे छे तेणे आत्मा अनुभव्यो कहेवाय.

दूधने पाणी मेळां छे तेवी रीते आत्मा अने देह रहेला छे. दूध अने पाणी क्रिया करवाथी

जूदां पडे त्यारे जूदां कहेवाय. तेवी रीते आत्मा अने देह क्रियाथी जूदा पडे त्यारे जूदा कहेवाय. दूध दूधना अने पाणी पाणीना परिणाम पामे त्यांसुधी क्रिया कहेवी. आत्मा जाण्यो होय तो पछी एक पर्यायथी मांडी आखा स्वरूपसुधीनी भ्रांति थाय नहीं. पोताना दोष घटे, आवरण टळे तो ज जाणवुं के ज्ञानीनां वचनो साचां छे. आपणे भव्य अभव्यनी चिंता न राखतां, हाल तो उपकार थाय तेवो लाभनो धर्मव्यापार करवो.

ज्ञान तेनुं नाम के जे हर्ष शोक वखते हाजर थाय; अर्थात् हर्ष, शोक थाय नहीं. सम्यग्दृष्टि हर्ष शोकादि प्रसंगमां एकाकार थाय नहीं. तेमनां निर्ध्वंस परिणाम थाय नहीं; अज्ञान उभुं थाय के जाणवामां आव्ये तरत ज दाबी दे; बहु ज जागृति होय. भय अज्ञाननो छे. जेम सिंहणने सिंह चाल्यो आवतो होय अने भय लागतो नथी; पण जाणे ते कूतरो चाल्यो आवतो होय तेम सिंहणने लागे छे; तेवी रीते ज्ञानी पौद्गलिक संयोग समजे छे. राज मळ्ये आनंद थाय तो ते अज्ञान.

ज्ञानीनी दशा बहु ज अद्भुत छे. यथातथ्य कल्याण समजायुं नथी तेनुं कारण वचनने आवरण करनार दुराग्रहभाव, कषाय रह्या छे. दुराग्रहभावने लीधे मिथ्यात्व शु छे ते समजाय नहीं; दुराग्रहने मूके तो मिथ्यात्व दूर खसवा माडे. कल्याणने अकल्याण अने अकल्याणने कल्याण समजे ते मिथ्यात्व. दुराग्रहादि भावने लीधे जीवने कल्याणनुं स्वरूप बताव्या छतां समजाय नहीं. कषाय दुराग्रहादि मूकाय नही तो पछी ते विशेष प्रकारे पीडे छे. कषाय सत्तापणे छे, निमित्त आवे त्यारे उभा थाय छे, त्यांसुधी उभा थाय नहीं.

प्र०:—शुं विचार कर्ये समभाव आवे?

उ०:—विचारवानने पुद्गलमां तन्मयपणुं, तादात्म्यपणुं थतुं नथी. अज्ञानी पौद्गलिक संयोगना हर्षनो पत्र वांचे तो तेनुं मोढुं खुशीमां देखाय, अने भयनो कागळ आवे तो उदास थई जाय.

सर्प देखी आत्मवृत्तिमां भयनो हेतु थाय त्यारे तादात्म्यपणुं कहेवाय. तन्मयपणुं थाय तेने ज हर्ष, शोक थाय छे. निमित्त छे ते तेनुं कार्य कर्यावगर रहे नहीं.

मिथ्यादृष्टिने वचमां साक्षी (ज्ञानरूपी) नथी.

देहने आत्मा बन्ने जूदा छे एवो ज्ञानीने भेद पड्यो छे. ज्ञानीने वचमां साक्षी छे. ज्ञान, जागृति होय तो ज्ञानना वेगे करी, जे जे निमित्त मळे तेने पाछुं वाळी शके.

जीव विभाव परिणाममां वर्त्ते ते वखते कर्म बांधे; अने स्वभाव परिणाममां वर्त्ते ते वखते कर्म बांधे नहीं.

स्वछंद टळे तो ज मोक्ष थाय. सद्गुरुनी आज्ञाविना आत्मार्थी जीवनां श्वासोच्छ्वास शिवाय बीजुं न चाले एवी जिननी आज्ञा छे.

प्र०:—पांच इंद्रियो शी रीते वश थाय?

उ०:–वस्तुओ उपर तुच्छभाव लाववाथी. फूल सुकावाथी तेनी सुगंधी थोडीवार रही नाश पामे छे, ने फूल करमाई जाय छे, अने तेथी कांई संतोष थतो नथी तेनी पेठे तुच्छ भाव आववाथी इंद्रियोना विषयोमां लुब्धता थती नथी.

पांच इंद्रियोमां जीह्वाइंद्रिय वश करवाथी बाकीनी चार इंद्रियो सहेजे वश थाय छे.

प्र०:–ज्ञानीपुरुषने शिष्ये प्रश्न पूछ्युं, "बार उपांग तो बहु गहन छे; अने तेथी माराथी समजी शकाय तेम नथी; माटे बार अंगनो सार ज बतावो के जे प्रमाणे वर्त्तुं तो मारूं कल्याण थाय."

उ०:–सद्गुरुए उत्तर आप्यो. "बार उपांगनो सार तमने कहीए छीए के, **वृत्तिओने क्षय करवी.**"

आ वृत्तिओ बे प्रकारनी कहीः एक बाह्य अने बीजी आंतर्. बाह्यवृत्ति एटले आत्माथी बहार वर्त्तवुं ते. आत्मानी अंदर परिणमवुं, तेमां शमावुं ते अतरवृत्ति. पदार्थनुं तुच्छपणु भास्यमान थयुं होय तो अंतर्वृत्ति रहे. जेम अल्प किमतनो गयो जे माटीनो घडो ते फुटी गयो अने पछी तेनो त्याग करतां आत्मानी वृत्ति क्षोभ पामती नथी. कारण के तेमां तुच्छपणुं समजायुं छे. आवी रीते ज्ञानीने जगत्ना सर्व पदार्थ तुच्छ भास्यमान छे. ज्ञानीने एक रूपियाथी मांडी सुवर्ण इत्यादिक पदार्थमां साव माटीपणुं ज भासे छे.

स्त्री ए हाडमांसनुं पूतळुं छे एम स्पष्ट जाण्युं छे तेथी विचारवाननी वृत्ति त्यां क्षोभ पामती नथी; तोपण साधुने एवी आज्ञा करी छे के हजारो देवांगनाथी न चळी शके तेवा मुनिए पण नाक कान छेदेली एवी जे सो वरसनी वृद्ध स्त्री तेनी समीप पण रहेवु नहीं; कारण के ते वृत्तिने क्षोभ पमाडे ज एवुं ज्ञानीए जाण्युं छे. साधुने तेटलुं ज्ञान नथी के तेनाथी न ज चळी शके. एम धारी तेनी समीप रहेवानी आज्ञा करी नथी. ए वचन उपर ज्ञानीए पोते विशेष भार मूक्यो छे; एटला माटे जो वृत्तिओ पदार्थोमां क्षोभ पामे तो तरत खेची लई तेवी बाह्यवृत्तिओ क्षय करवी.

चौद गुणस्थानक छे ते आत्माना अंशे अंशे गुण बताव्या छे, अने छेवटे ते केवा छे ते जणाव्युं छे. जेम एक हीरो छे तेने एक एक करतां चौद पेहेल पाडो तो अनुक्रमे विशेष विशेष कान्ति प्रगटे. अने चौदे पेहेल पाडतां छेवटे हीरानी संपूर्ण स्पष्ट कान्ति प्रगटे. आ ज रीते संपूर्ण गुण प्रगटवाथी आत्मा संपूर्णपणे प्रगटे.

चौदपूर्वधारी त्यांथी (अग्यारमेथी) पाछो पडे छे तेनुं कारण प्रमाद छे. प्रमादना कारणथी ते एम जाणे के "हवे मने गुण प्रगट्यो." आवा अभिमानथी पहेले गुणस्थानके जई पडे छे; अने अनंतकाळनुं भ्रमण करवुं पडे छे. माटे जीवे अवश्य जाग्रत रहेवुं; कारण के वृत्तिओनुं प्राबल्य एवुं छे के ते हरेक प्रकारे छेतरे छे.

अगीआरमा गुणस्थानकेथी जीव पडे छे तेनुं कारण ए के वृत्तिओ प्रथम जाणे छे के "हमणा

आ शूरातनमां छे एटले आपणुं बळ चालवानुं नथी;" अने तेथी चुप थई बधी दबाई रहे छे. "क्रोधथी छेतराशे नहीं, मानथी पण छेतराशे नहीं; तेम मायानुं बळ चाले तेवुं नथी" एम वृत्तिए जाण्युं के तरत त्यां लोभ उदयमान थाय छे. "मारामां केवां रिद्धि, सिद्धि, अने ऐश्वर्य प्रगट थयां" एवी वृत्ति त्यां आगळ थतां तेनो लोभ थवाथी त्यांथी जीव पडे छे, अने पहेले गुणस्थानके आवे छे.

आ कारणथी वृत्तिओने उपशम करवा करतां क्षय करवी; एटले फरीथी उद्भवे नहीं. ज्यारे ज्ञानीपुरुष त्याग कराववाने माटे कहे के आ पदार्थ त्यागी दे त्यारे वृत्ति भूलवे छे के ठीक छे, हुं बे दिवस पछी त्यागीश. आवा भूलावामां पडे छे के वृत्ति जाणे छे के ठीक थयुं, अणीनो चूक्यो सो वर्ष जीवे. एटलामां शिथिलपणानां कारणो मळे के "आ त्यागवाथी रोगनां कारणो थशे; माटे हमणा नहीं पण आगळ त्यागीश." आ रीते वृत्तिओ छेतरे छे.

आ प्रकारे अनादिकाळथी जीव छेतराय छे. कोईनो विश वर्षनो पुत्र मरी गयो होय, ते वखते ते जीवने एवी कडवाश लागे के आ संसार खोटो छे. पण बीजे ज दिवसे ए विचार बाह्यवृत्ति विस्मरण करावे छे के "एनो छोकरो कालसवारे मोटो थई रहेशे; एम थतुं ज आवे छे; शुं करीए?" आम थाय छे; पण एम नथी थतु के ते पुत्र जेम मरी गयो, तेम हुं पण मरी जईश, माटे समजीने वैराग्य पामी चाल्यो जाउ तो सारूं. आम वृत्ति थती नथी. त्यां वृत्ति छेतरे छे.

जीव एम मानी बेसे छे के "हुं पंडित छुं, शास्त्रवेत्ता छुं, डाह्यो छुं, गुणवान छुं, लोक मने गुणवान कहे छे," पण तेने ज्यारे तुच्छ पदार्थनो संयोग थाय छे त्यारे तरत ज तेनी वृत्ति खेंचाय छे. आवा जीवने ज्ञानी कहे छे के तुं विचार तो खरो के ते तुच्छ पदार्थनी किंमत करतां तारी किंमत तुच्छ छे! जेम एक पाइनी चार बीडी मळे छे; अर्थात् पा पाइनी एक बीडी छे. तेवी बीडीनुं जो तने व्यसन होय तो तुं अपूर्व ज्ञानीनां वचनो सांभळतो होय तोपण जो त्यां क्यायथी बीडीनो धूमाडो आव्यो तो तारा आत्मामांथी धूमाडो नीकळे छे अने ज्ञानीनां वचनो उपरथी प्रेम जतो रहे छे. बीडी जेवा पदार्थमां, तेनी क्रियामां वृत्ति खेंचावाथी वृत्तिक्षोभ निवृत्त थतो नथी! पा पाइनी बीडीथी जो एम थई जाय छे तो व्यसनीनी किंमत तेथी पण तुच्छ थई; एक पाइना चार आत्मा थया, माटे दरेक पदार्थमां तुच्छपणुं विचारी वृत्ति बहार जती अटकाववी; अने क्षय करवी.

अनाथदासजीए कह्युं छे के, "एक अज्ञानीना कोटि अभिप्रायो छे, अने कोटि ज्ञानीनो एक अभिप्राय छे."

उत्तम जाति, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुळ, अने सत्संग ए आदि प्रकारथी आत्मगुण प्रगट थाय छे. तमे मान्यो छे तेवो आत्मानो मूळ स्वभाव नथी; तेम आत्माने कर्मे कांई साव आवरी नांख्यो नथी. आत्माना पुरुषार्थधर्मनो मार्ग साव खुल्लो छे.

बाजरा अथवा घउंनो एक दाणो लाख वर्ष सुधी राखी मूक्यो होय (सडी जाय ते वात अमारा ध्यानमां छे) पण जो तेने पाणी, माटी आदिनो संयोग न मळे तो उगवानो संभव नथी, तेम सत्संग अने विचारनो योग न मळे तो आत्मगुण प्रगट थतो नथी.

श्रेणिकराजा नरकमां छे, पण समभावे छे. समकिति छे, माटे तेने दुःख नथी.

चार कठियाराना दृष्टांते चार प्रकारना जीवो छेः--

चार कठियारा जंगलमां गया. प्रथम सर्वेए काष्ठ लीधां. त्यांथी आगळ चाल्या के सुखड आवी. त्यां त्रणे सुखड लीधी. एक कहे "ए जातनां लाकडां खपे के नहीं, माटे मारे तो लेवां नथी, आपणे रोज लइए छीए ते ज मारे तो सारां." आगळ चालतां सोनुं रूपुं आव्युं. त्रणमांथी बेए सुखड नांखी दई, सोनुं रूपुं लीधुं, एके न लीधुं. त्यांथी आगळ चाल्या के रत्नचिंतामणि आव्यो. बेमांथी एके सोनुं नांखी दई रत्नचिंतामणि लीधो; एके सोनुं रहेवा दीधुं.

१. आ जगोए एम दृष्टांत घटाववुं के जेणे लाकडां ज लीधां अने बीजुं न लीधुं ते प्रकारना एक जीव छे; के जेणे लौकिक कर्मो करतां ज्ञानीपुरुषने ओळख्या नहीं; दर्शन पण कर्यां नहीं; एथी तेनां जन्म जरा मरण पण टळ्यां नहीं; गति पण सुधरी नहीं.

२. सुखड लीधी अने काष्ठ मूकी दीधां त्यां दृष्टांत एम घटाववुं के जेणे सहेजे ज्ञानीने ओळख्या, दर्शन कर्यां तेथी तेनी गति सारी थई.

३. सोनुं आदि लीधुं ते दृष्टांत एम घटाववुं के जेणे ज्ञानीने ते प्रकारे ओळख्या माटे तेने देवगति प्राप्त थई.

४. रत्नचिंतामणि जेणे लीधो ते दृष्टांत एम घटाववुं के जे जीवने ज्ञानीनी यथार्थ ओळखाण थई ते जीव भवमुक्त थयो.

एक वन छे. तेमां महात्म्यवाळा पदार्थो छे. तेनुं जे प्रकारे ओळखाण थाय तेटलुं महात्म्य लागे, अने ते प्रमाणमां ते ग्रहे. आ रीते ज्ञानीपुरुषरूपी वन छे. ते ज्ञानीपुरुषनुं अगम्य, अगोचर महात्म्य छे. तेनुं जेटलुं ओळखाण थाय तेटलुं महात्म्य लागे; अने ते ते प्रमाणमां तेनुं कल्याण थाय.

सांसारिक खेदनां कारणो जोई, जीवने कडवाश लागतां छतां ते वैराग्य उपर पग दई चाल्यो जाय छे, पण वैराग्यमां प्रवृत्ति करतो नथी.

लोको ज्ञानीने लोकदृष्टिए देखे तो ओळखे नहीं.

आहारादि वगेरेमां पण ज्ञानीपुरुषनी प्रवृत्ति बाह्य वर्त्ते छे. केवी रीते जे, घडो उपर (आकाशमां) छे, अने पाणीमां उभा रहीने, पाणीमां दृष्टि राखी, बाण साधी ते (उंचेनो घडो) वींधवो छे; लोक जाणे छे के वींधनारनी दृष्टि पाणीमां छे; पण वास्तविक रीते घडो वींधवानो

छे; तेनो लक्ष करवा माटे वींधनारनी दृष्टि आकाशमां छे. आ रीते ज्ञानीनी ओळखाण कोई विचारवानने होय छे.

दृढ निश्चय करवो के वृत्तिओ बहार जती क्षय करवी; अवश्य ए ज ज्ञानीनी आज्ञा छे.

स्पष्ट प्रीतिथी संसार करवानी इच्छा थती होय तो समजवुं के ज्ञानीपुरुषने जोया नथी. जे प्रकारे प्रथम संसारमां रससहित वर्त्ततो होय ते प्रकारे, ज्ञानीनो योग थया पछी वर्त्ते नहीं ए ज ज्ञानीनुं स्वरूप.

*ज्ञानीने ज्ञानदृष्टिथी. अंतर्दृष्टिथी जोया पछी स्त्री जोईने राग उत्पन्न थाय नहीं; कारण के ज्ञानीनुं स्वरूप विषयसुखकल्पनाथी जूदुं छे. अनंत सुख जाण्युं होय तेने राग थाय नहीं; अने जेने राग थाय नहीं तेणे ज ज्ञानीने जोया; अने तेने ज ज्ञानीपुरुषनां दर्शन कर्या पछी स्त्रीनुं सजीवन शरीर अजीवनपणे भास्याविना रहे नहीं; कारण के ज्ञानीना वचनो यथार्थ रीते साचां जाण्यां छे. ज्ञानीनी समीप देह अने आत्मा जूदो पृथक् पृथक् जाण्यो छे तेने देह बाद करी आत्मा भिन्न भिन्न भासे; अने तेथी स्त्रीनां शरीर अने आत्मा जूदां भासे छे. तेणे स्त्रीनुं शरीर मांस, माटी, हाडका आदिनुं पुतळुं जाण्युं छे एटले त्यां राग उत्पन्न थतो नथी.

आखा शरीरनुं बळ, उपर नीचेनुं बन्ने कमर उपर छे. जेनी कमर भांगी गई छे तेनुं बधुं बळ गयुं. विषयादि जीवनी तृष्णा छे. संसाररूपी शरीरनुं बळ आ विषयादिरूप केड कमर उपर छे. ज्ञानीपुरुषनो बोध लागवाथी विषयादिरूप केडनो भंग थाय छे. अर्थात् विषयादिनुं तुच्छपणुं लागे छे; अने ते प्रकारे संसारनुं बळ घटे छे; अर्थात् ज्ञानीपुरुषना बोधमां आवुं सामर्थ्य छे.

महावीरस्वामीने संगम नामे देवताए बहु ज, प्राणत्याग थतां वार न लागे तेवा परिषह दीधा, त्यां केवी अद्भुत समता! त्यां तेओए विचार्युं के जेनां दर्शन करवाथी कल्याण थाय, नाम स्मरवाथी कल्याण थाय तेना संगमां आवीने अनंत संसार वधवानुं आ जीवने कारण थाय छे! आवी अनुकंपा आववाथी आंखमां आंसु आवी गयां. केवी अद्भुत समता! पारकी दया केवी रीते उगी नीकळी हती! ते वखते मोहराजाए जो जरा धक्को मार्यो होत तो तो तरत ज तीर्थंकरपणुं संभवत नहीं; पण जो के देवता तो भागी जात. मोहनीयना मळने मूळथी नाश कर्यो छे अर्थात् मोहने जीत्यो छे ते मोह केम करे?

श्री महावीरस्वामी समीपे गोशालाए आवी बे साधुने बाळी नांख्या त्यारे जो जरा ऐश्वर्यपणु करीने साधुनी रक्षा करी होत तो तीर्थंकरपणु फरी करवुं पडत; पण जेने "हुं गुरु छुं, मारा शिष्य छे" एवी भावना नथी तेने तेवो कोई प्रकार करवो पडतो नथी. "शरीररक्षणनो दातार नथी, फक्त भावउपदेशनो दातार छुं; जो हुं रक्षा करूं तो मारे गोशालानी रक्षा करवी जोईए, अथवा आखा जगत्नी रक्षा करवी घटे" एम विचार्युं. अर्थात् तीर्थंकर एम मारापणुं करे ज नहीं.

वेदांतविषे आ काळमां चरमशरीरि कह्या छे. जिनना अभिप्रायप्रमाणे पण आ काळमां एकावतारी जीव थाय छे. आ कांई थोडी वात नथी; केमके आ पछी कांई मोक्ष थवाने वधारे वार नथी.

सहेज कांई बाकी रह्युं होय, रह्युं छे ते पछी सहेजमां चाल्युं जाय छे. आवा पुरुषनी दशा वृत्तिओ केवी होय? अनादिनी घणी ज वृत्तिओ शमाई गई होय छे; अने एटली बधी शान्ति थई गई होय छे के राग द्वेष बधा नाश पामवायोग्य थया छे, उपशांत थया छे.

सद्वृत्तिओ थवा माटे जे जे कारणो, साधनो बतावेलां होय छे ते नहीं करवानुं ज्ञानी कहेता ज नथी; जेम रात्रे खावाथी हिंसानुं कारण देखाय छे, एटले ज्ञानी आज्ञा करे ज नहीं के तुं रात्रे खा. पण जे जे अहंभावे आचरण कर्युं होय, अने रात्रिभोजनथी ज अथवा "आ फलाणाथी ज मोक्ष थाय, अथवा आमां ज मोक्ष छे," एम दुराग्रहथी मान्युं होय तो तेवो दुराग्रह मूकाववाने माटे ज्ञानीपुरुषो कहे "मूकी दे; ज्ञानीपुरुषोनी आज्ञाए तेम (रात्रिभोजनत्यागादि) कर" अने तेम करे तो कल्याण थाय. अनादिकाळथी दिवसे तेम ज रात्रे खाधुं छे, पण जीवनो मोक्ष थयो नथी!

आ काळमां आराधकपणानां कारणो घटतां जाय छे, अने विराधकपणानां लक्षणो वर्द्धमानता पामतां जाय छे.

केशीस्वामी मोटा हता, अने पार्श्वनाथस्वामीना शिष्य हता, तो पण पांच महाव्रत अंगीकार कर्यां हतां.

केशीस्वामी अने गौतमस्वामी महा विचारवान हता, पण केशीस्वामीए एम न कह्युं "हु दिक्षाए मोटो छुं माटे तमे मारी पासे चारित्र ल्यो." विचारवान अने सरळ जीव जेने तरत कल्याणयुक्त थई जवुं छे तेने आवी वातनो आग्रह होय नहीं.

कोई साधु जेणे प्रथम आचार्यपणे अज्ञानअवस्थाए उपदेश कर्यो होय, अने पछी तेने ज्ञानी-पुरुषनो समागम थतां ते ज्ञानीपुरुष जो आज्ञा करे के जे स्थळे आचार्यपणे उपदेश कर्यो होय त्यां जई एक खुणे छेवाडे बेसी बधा लोकोने एम कहे के मे अज्ञानपणे उपदेश आप्यो छे, माटे तमे भूल खाशो नहीं; तो ते प्रमाणे साधुने कर्याविना छूटको नहीं. जो ते साधु एम कहे "माराथी एम थाय नहीं; एने बदले आप कहो तो पहाड उपरथी पडतुं मूकुं, अथवा बीजुं गमे ते कहो ते करूं; पण त्यां तो माराथी नहीं जवाय." ज्ञानी कहे छे "कदापि तुं लाख वार पर्वतथी पडे तोपण कामनुं नथी. अहीं तो तेम करशे तो ज मोक्ष मळशे. तेम कर्याविना मोक्ष नथी; माटे जईने क्षमापना मागे तो ज कल्याण थाय."

गौतमस्वामी चार ज्ञानना धर्त्ता हता अने आनंदश्रावक पासे गया हता. आनंदश्रावके कह्युं "मने ज्ञान उपज्युं छे." त्यारे गौतमस्वामीए कह्युं "ना, ना एटलुं बधुं होय नहीं, माटे आप क्षमापना ल्यो." त्यारे आनंदश्रावके विचार्युं के मारा गुरु छे, कदाच् आ वखते भूल खाय छे, तोपण भूल खाओ छो एम कहेवुं योग्य नथी; गुरु छे माटे शान्तिथी कहेवुं योग्य छे एम धारी आनंदश्रावके कह्युं के महाराज! सद्भूत वचननो "मिच्छामि दुक्कडं" के असद्भूत वचननो "मिच्छामि दुक्कडं!" त्यारे गौतमस्वामीए कह्युं के, असद्भूत वचननो "मिच्छामि दुक्कडं." त्यारे

आनंदश्रावके कह्युं "महाराज! हुं 'मिच्छामि दुक्कडं' लेवाने योग्य नथी." एटले गौतमस्वामी चाल्या गया, अने जईने महावीरस्वामीने पूछ्युं. (गौतमस्वामी तेनुं समाधान करे तेवा हता, पण छते गुरुए तेम करे नहीं जेथी महावीरस्वामी पासे जई हकीकत कही). महावीरस्वामीए कह्युं "हे गौतम! हा, आनंद देखे छे एम ज छे, अने तमारी भूल छे, माटे तमे आनंद पासे जई क्षमापना ल्यो." 'तहत्' कही गौतमस्वामी क्षमाववा गया. जो गौतमस्वामीमां मोह नामनो महा सुभट पराभव पाम्यो न होत तो त्यां जात नहीं, अने कदापि गौतमस्वामी एम कहेत के महाराज! आपना आटला बधा शिष्य छे तेमनी हुं चाकरी करूं, पण त्यां तो नहीं जाऊं; तो ते वात कबूल थात नहीं. गौतमस्वामी पोते त्यां जई क्षमावी आव्या!

'सास्वादानसमकित' एटले वमी गयेलुं समकित, अर्थात् जे परीक्षा थयेली तेने आवरण आवी जाय तोपण मिथ्यात्व अने समकितनी किंमत तेने जूदीने जूदी लागे. जेम, छाशमांथी माखण वलोवी लीधुं, ने पछी पाछुं छाशमां नांख्युं. माखणने छाश प्रथम जेवां एकमेक हतां तेवां एकमेक पछी थाय नहीं, तेम मिथ्यात्वनी साथे एकमेक थाय नहीं. हीरामणिनी किंमत थई छे, पण काचनी मणि आवे त्यारे हीरामणि साक्षात् अनुभवमां आवे ते दृष्टांत पण अत्रे घटे छे.

सद्गुरु, सत्देव, केवळीनो प्ररूपेलो धर्म तेने सम्यक्त्व कह्युं, पण सत्देव अने केवळी ए बे सद्गुरूमां शमाई गया.

निर्ग्रंथगुरु एटले पैसारहित गुरु नहीं, पण जेनी ग्रंथि छेदाई छे एवा गुरु. सद्गुरुनी ओळखाण थाय त्यारे व्यवहारथी ग्रंथि छेदवानो उपाय छे. जेम, एक माणसे काचनी मणि लई धार्युं के, "मारी पासे साची मणि छे, आवी क्यांई प्राप्त थती नथी." पछी तेणे एक विचारवान पासे जईने कह्युं "मारी मणि साची छे." पछी ते विचारवाने तेथी सारी, तेथी सारी, एम वधती वधती किंमतनी मणि बतावीने कह्युं के जो फेर लागे छे? बराबर जोजे, त्यारे तेणे कह्युं "हा फेर लागे छे." पछी ते विचारवाने झुमर बतावी कह्युं; जो तारा जेवी तो हजारो मळे छे. आखुं झुमर बताव्या पछी साची मणि बतावी त्यारे ते तेनी बरोबर किंमत थई; पछी जूठीने जूठी जाणी मूकी दीधी. पछी कोईक संग मळवाथी तेणे कह्युं के तें आ मणि जे साची जाणी छे एवी तो घणी मळे छे. आवा आवरणथी व्हेम आवी जवाथी भूली जाय; पण पछी जूठी देखे. जे प्रकारे साचानी किंमत थई होय ते प्रकारे, ते तरत जागृतिमां आवे के साची झाझी होय नहीं, अर्थात् आवरण होय, पण प्रथमनी ओळखाण भूलाय नहीं. आ प्रकारे विचारवान सद्गुरुनो योग मळतां तत्त्वप्रतीति थाय, पण पछी मिथ्यात्वीना संगथी आवरण आवतां शंका थई जाय; जो के तत्त्वप्रतीति जाय नहीं पण तेने आवरण आवी जाय. आनुं नाम 'सास्वादानसम्यक्त्व'.

सद्गुरु अने असद्गुरुमां रातदिवस जेटलो अंतर छे.

एक झवेरी हतो. वेपार करतां घणी खोट जवाथी तेनी पासे कांई पण द्रव्य रह्युं नहीं. मरण वखत आवी पहोंच्यो एटले बैरां छोकरांनो विचार करे छे के मारीपासे कांई द्रव्य नथी,

पण जो हाल कहीश तो छोकरो नानी उमरनो छे तेथी देह छूटी जशे. स्त्रीए सामुं जोयुं त्यारे कह्युं के कांई कहो छो? पुरुषे कह्युं "शुं कहुं?" स्त्रीए कह्युं के मारुं अने छोकरानुं उदरपोषण थाय तेवुं बतावो ने कंई कहो, त्यारे पेलाए विचार करीने कह्युं के घरमां झवेरातनी पेटीमां किंमती नंगनी दाबडी छे ते ज्यारे तारे अवश्यनी जरूर पडे त्यारे काढीने मारा भाईबंध-पासे जईने वेचावजे, त्यां तने घणुं द्रव्य आवशे. आटलुं कहीने पेलो पुरुष काळधर्म पाम्यो. केटलाक दिवसे नाणाविना उदरपोषण माटे पीडातां जाणी, पेलो छोकरो तेना बापे प्रथम कहेल झवेरातनां नंग लई, तेना काका (पितानो भाईबंध झवेरी) पासे गयो ने कह्युं के मारे आ नंग वेचवां छे, तेनुं द्रव्य जे आवे ते मने आपो. त्यारे पेला झवेरीभाईए पूछ्युं: "आ नंग वेचीने शुं करवुं छे?" "उदर भरवा पैसा जोईए छीए," एम पेला छोकराए कह्युं त्यारे ते झवेरीए कह्युं: "सो पचास रुपिया जोइए तो लई जा, ने रोज मारी दुकाने आवतो रहेजे, अने खर्चे लई जजे. आ नंग हाल रहेवा दे." पेला छोकराए पेला भाईनी वात स्वीकारी; अने पेलुं झवेरात पाछुं लई गयो. पछी रोज झवेरीनी दुकाने जतां झवेरीना समागमे ते छोकरो हीरा, पाना, माणेक, लीलम बधांने ओळखतां शीख्यो ने तेनी तेने किंमत थई. पछी पेला झवेरीए कह्युं. "तुं तारुं जे झवेरात प्रथम वेचवा लाव्यो हतो ते लाव, हवे वेचीए." पछी घेरथी छोकराए पोताना झवेरातनी दाबडी लावीने जोयुं तो नंग खोटां लाग्यां, एटले तरत फेंकी दीधां. त्यारे तेने पेला झवेरीए पूछ्युं के ते नाखी केम दीधां? त्यारे तेणे कह्युं के साव खोटां छे माटे नांखी दीधां छे. जो पेला भाईए प्रथमथी ज खोटां कह्यां होत तो ते मानत नहीं, पण ज्यारे पोताने वस्तुनी किंमत आवी ने खोटांने खोटारूपे जाण्यां त्यारे झवेरीने कहेवुं पड्युं नहीं के खोटां छे. आ ज रीते पोताने सद्गुरुनी परीक्षा थतां असद्गुरुने असत् जाण्या तो पछी ते तरत ज असद्गुरु वर्जिने सद्गुरुना चरणमां पडे; **अर्थात् पोतामां किंमत करवानी शक्ति आववी जोईए.**

गुरु पासे रोज जई एकेंद्रियादिक जीवोना संबंधमां अनेक प्रकारनी शंकाओ अने कल्पनाओ करी पूछ्या करे. पण कोई दिवस एम पूछतो नथी के **एकेंद्रियथी मांडी पंचेंद्रियने जाणवानो परमार्थ शो?** एकेंद्रियादि जीवो संबंधी कल्पनाओथी कांई मिथ्यात्वग्रंथी छेदाय नहीं. एकेंद्रियादि जीवोनुं स्वरूप जाणवानुं कारण तो दया पाळवानुं छे. मात्र प्रश्न करवानी खातर तेवा प्रकारनी वातो करवानुं कंई फळ नथी; वास्तविक रीते तो समकित प्राप्त करवानुं छे, माटे गुरुपासे जई नकामां प्रश्नो करवा करतां गुरुने कहेवुं के एकेंद्रियादिकनी वात आजे जाणी, हवे ते वात काल करशो नहीं; पण समकितनी गोठवण करजो. आवुं कहे तो कोई दहाडो एनो नीवेडो आवे. पण रोज एकेंद्रियादिनी कडाकूटो करे तो एनुं कल्याण क्यारे थाय?

समुद्र छे ते खारो छे. एकदम तो तेनी खाराश नीकळे नहीं. तेने माटे आ प्रकारे उपाय छे के ते समुद्रमांथी एकेक वहेळा लेवा, अने ते वहेळामां जेथी ते पाणीनी खाराश मटे, अने मीठाश थाय एवो खार नाखवो; पण ते पाणी शोषवाना बे प्रकार छे: एक तो सूर्यनो ताप,

अने बीजी जमीन; माटे प्रथम जमीन तैयार करवी अने पछी नीकोद्वाराए पाणी लई जवुं; अने पछी खार नांखवो के तेथी खाराश मटी जशे. आ ज रीते मिथ्यात्वरूपी समुद्र छे, तेमां कदाग्रहादिरूप खाराश छे; माटे कुळधर्मरूपी वहेळाने योग्यतारूप जमीनमां लई सद्‌बोधरूपी खार नांखवो एटले सत्पुरुषरूपी तापथी खाराश मटी जशे.

दुर्बळ देह ने मासउपवासी, जो छे मायारंग रे,
तोपण गर्भ अनंता लेशे, बोले बीजुं अंग रे.

जेटली भ्रान्ति वधारे तेटलुं वधारे. सौथी मोटो रोग मिथ्यात्व.

जे जे वखते तपश्चर्या करवी ते ते वखते स्वच्छंदथी न करवी; अहंकारथी न करवी; लोकोने लीधे न करवी; जीवे जे कांई करवुं ते स्वच्छंदे न करवुं. "हुं डाह्यो छुं" एवुं मान राखवुं ते क्या भवने माटे? "हुं डाह्यो नथी" एवुं समज्या ते मोक्षे गया छे. मुख्यमां मुख्य विघ्न स्वच्छंद छे. जेनो दुराग्रह छेदायो ते लोकोने पण प्रिय थाय छे; कदाग्रह मूक्यो होय तो बीजाने पण प्रिय थाय छे; माटे कदाग्रह मूकायाथी बधां फळ थवा संभवे छे.

गौतमस्वामीए महावीरस्वामीने वेदनां प्रश्नो पूछ्यां तेनुं **सर्व दोषनो क्षय कर्यो छे एवा ते महावीरस्वामीए** वेदना दाखला दई समाधान (सिद्धता) करी आप्युं.

बीजाने उंचा गुणे चढाववा, पण कोईनी निंदा करवी नहीं. कोईने स्वच्छंदे कांई कहेवुं नहीं. कहेवायोग्य होय तो अहंकाररहितपणे कहेवुं. परमार्थदृष्टिए रागद्वेष घट्यो होय तो फलीभूत थाय, व्यवहारथी तो भोळा जीवोने पण रागद्वेष घट्या होय; पण परमार्थथी रागद्वेष मॉळा पडे तो कल्याणनो हेतु छे.

मोटा पुरुषोनी दृष्टिए जोतां सघळां दर्शन सरखां छे. जैनमां विशलाख जीवो मतमतांतरमां पड्यां छे! ज्ञानीनी दृष्टिए भेदाभेद होय नहीं.

जे जीवने अनंतानुबंधीनो उदय छे तेने साचा पुरुषनी वात पण गमे नहीं, अथवा साचा पुरुषनी वात सांभळवी गमे नहीं.

मिथ्यात्वनी ग्रंथि छे तेनी सात प्रकृति छे. मान आवे एटले साते आवे, तेमां अनंतानुबंधीनी चार प्रकृति चक्रवर्त्ति समान छे. ते कोई रीते ग्रंथीमांथी नीकळवा दे नहीं. मिथ्यात्व रखवाळ (रक्षपाळ) छे. आखुं जगत् तेनी सेवा चाकरी करे छे.

प्र० :—उदयकर्म कोने कहीए?

उ० :—ऐश्वर्यपद प्राप्त थतां तेने धक्को मारीने पाछुं काढे के "आ मारे जोईतुं नथी; मारे आने शुं करवुं छे!" कोई राजा प्रधानपणुं आपे तोपण पोते लेवा इच्छे नहीं. "मारे एने शुं करवुं छे! घरसंबंधीनी आटली उपाधि थाय तो घणी छे." आवी रीते ना पाडे; ऐश्वर्यपदनी निरिच्छा छतां राजा फरि फरी आपवा इच्छे तेने लीधे आवी पडे, तो तेने विचार थाय के "ओ

तारे प्रधानपणुं हशे तो घणा जीवोनी दया पळाशे, हिंसा ओछी थशे, पुस्तक शाळाओ थशे, पुस्तको छपावाशे." एवा धर्मना केटलाक हेतु जाणीने **वैराग्यभावनाए वेदे तेने उदय कहेवाय. इच्छासहित भोगवे, अने उदय कहे ते तो शिथिलताना अने संसार रखडवाना हेतु थाय.**

केटलांक जीवो मोहगर्भित वैराग्यथी अने केटलांक दुःखगर्भित वैराग्यथी दिक्षा ले छे. "दिक्षा लेवाथी सारां सारां नगरे, गामे फरवानुं थशे. दिक्षा लीधा पछी मारा सारा पदार्थो खावाने मळशे, उघाडा पगे तडके चालवुं पडशे तेटली मुश्केली छे, पण तेम तो साधारण खेडुतो के पाटीदारो पण तडकामां के उघाडे पगे चाले छे, तो तेनी पेरे सहज थई रहेशे; पण बीजी रीते दुःख नथी अने कल्याण थशे." आवी भावनाथी दिक्षा लेवानो जे वैराग्य थाय ते **"मोहगर्भित वैराग्य."** पूनेमने दहाडे घणा लोको डाकोर जाय छे, पण कोई एम विचारतुं नथी के आथी आपणुं कल्याण शुं थाय छे? पूनेमने दहाडे रणछोडजीनां दर्शन करवा बापदादा जता ते जोई छोकरां जाय छे, पण तेनो हेतु विचारतां नथी. आ प्रकार पण मोहगर्भित वैराग्यनो छे.

जे सांसारिक दुःखथी संसारत्याग करे छे ते **दुःखगर्भित वैराग्य** समजवो.

ज्यां जाओ त्यां कल्याणनी वृद्धि थाय तेवी दृढ मति करवी, कुळगच्छनो आग्रह मूकाववो ए ज सत्संगनु महात्म्य सांभळ्यानुं प्रमाण छे. मतमतांतरादि धर्मना मोटा मोटा अनंतानुबंधी पर्वतनी फाटनी माफक मळे ज नहीं. कदाग्रह करवो नहीं, ने कदाग्रह करता होय तेने धीरजथी समजावीने मूकाववा त्यारे समज्यानुं फळ छे. अनंतानुबंधी मान कल्याण थवामां आडा थंभरूप कहेल छे. ज्यां ज्यां गुणी मनुष्य होय त्यां त्यां तेनो संग करवानुं विचारवान जीव कहे. अज्ञानीनां लक्षणो लौकिक भावनां छे. ज्यां ज्यां दुराग्रह होय त्यां त्यांथी छूटवुं; "एने मारे जोईतां नथी" ए ज समजवानुं छे.

(४) राळज. भादरवा सुद ६ शनि. १९५२.

प्रमादथी योग उत्पन्न थाय छे. अज्ञानीने प्रमाद छे. योगथी अज्ञान उत्पन्न थतुं होय, तो ज्ञानीने विषे पण संभवे माटे ज्ञानीने योग होय, पण प्रमाद होय नहीं.

"स्वभावमां रहेवुं, विभावथी मूकावुं" ए ज मुख्य तो समजवानुं छे. बाळजीवोने समजवा सारू सिद्धांतोना मोटा भागनुं वर्णन ज्ञानीपुरुषोए कर्युं छे.

कोई उपर रोष करवो नहीं, तेम कोई उपर राजी थवुं नहीं. आम करवाथी एक शिष्यने बे घडीमां केवळज्ञान प्रगट थयुं एम शास्त्रमां वर्णन छे.

जेटलो रोग होय तेटली दवा करवी पडे छे. जीवने समजवुं होय तो सहज विचार प्रगटे; पण मिथ्यात्वरूपी मोटो रोग छे तेथी समजवा माटे घणो काळ जवो जोईए. शास्त्रमां जे सोळे रोग कह्या छे ते सघळा आ जीवने छे एम समजवुं.

जे साधन बताव्यां छे ते साव सुलभ छे. स्वच्छंदथी, अहंकारथी, लोकलाजथी, कुळधर्मना रक्षण अर्थे तपश्चर्या करवी नहीं, आत्मार्थे करवी. तपश्चर्या बार प्रकारे कही छे. आहार नहीं लेवो ए वगेरे बार प्रकार छे. सत् साधन करवा माटे जे कांई बताव्युं होय ते साचा पुरुषना आश्रये करवुं. पोतापणे वर्त्तवुं ते ज स्वच्छंद छे एम कह्युं छे. सद्गुरुनी आज्ञाविना श्वासोच्छ्वास क्रिया शिवाय बीजुं कंई करवुं नहीं.

साधुए लघुशंका पण गुरूने कहीने करवी एवी ज्ञानीपुरुषोनी आज्ञा छे.

स्वच्छंदाचारे शिष्य करवो होय तो आज्ञा मागे नहीं; अथवा कल्पना करे. परोपकार करवामां माठी संकल्पना वर्त्तती होय, अने तेवा ज घणा विकल्पो करी स्वछंद मूके नहीं ते अज्ञानी, आत्माने विघ्न करे. तेम ज आवा बधा प्रकार सेवे, अने परमार्थनो रस्तो बाद करीने वाणी करे. आ ज पोतानुं डहापण, अने तेने ज स्वच्छंद कहेल छे.

बाह्यव्रत वधारे लेवाथी मिथ्यात्व गाळीशुं एम जीव धारे पण तेम बने नहीं, केमके जेम एक पाडो जे हजारो कडबना पूळा खाई गयो छे ते एक तणखलाथी बीए नहीं, तेम मिथ्यात्व-रूपी पाडो जे पूळारूपी अनंतानुबंधी कषाये अनंता चारित्र खाई गयो ते तणखलारूपी बाह्यव्रतथी केम डरे? पण जेम पाडाने एक बंधनथी बांधीए त्यारे आधीन थई जाय, तेम मिथ्यात्वरूपी पाडाने आत्माना बळरूपी बंधनथी बांधीए त्यारे आधीन थाय; अर्थात् आत्मानुं बळ वधे त्यारे मिथ्यात्व घटे.

अनादिकाळना अज्ञानने लीधे जेटलो काळ गयो तेटलो काळ मोक्ष थवा माटे जोईए नहीं, कारण के **पुरुषार्थनुं बळ कर्मो करतां वधु छे.** केटलाक जीवो बे घडीमां कल्याण करी गया छे! सम्यग्दृष्टि जीव गमे त्यांथी आत्माने उंचो लावे, अर्थात् सम्यक्त्व आव्ये जीवनी दृष्टि फरी जाय.

मिथ्यादृष्टि समकितिप्रमाणे जपतपादि करे छे, एम छतां मिथ्यादृष्टिनां जपतपादि मोक्षना हेतुभूत थतां नथी, संसारना हेतुभूत थाय छे. समकितिनां जपतपादि मोक्षना हेतुभूत थाय छे. समकिति दंभरहित करे छे, आत्माने ज निंदे छे, कर्मो करवानां कारणोथी पाछो हठे छे. आम करवाथी तेना अहंकारादि सहेजे घटे छे. अज्ञानिनां बधां जपतपादि अहंकार वधारे छे अने संसारना हेतु थाय छे.

जैनशास्त्रोमां कह्युं छे के लब्धिओ उपजे छे. जैनने वेद जन्मथी ज लडतां आवे छे पण आ वात तो बन्ने जणा कबूल करे छे; माटे संभवित छे. **आत्मा साक्षी पूरे छे, त्यारे आत्मामां उल्लासपरिणाम आवे छे.**

होमहवनादि लौकिक रीवाज घणो चालतो जोई तीर्थंकर भगवाने पोताना काळमां दयानुं वर्णन घणुं ज सूक्ष्म रीते कर्युं छे. जैनना जेवा दयासंबंधीना विचारो कोई दर्शन के संप्रदायवाळाओ करी शक्या नथी; केमके जैन पंचेंद्रियनो घात तो न करे, पण तेओए एकेंद्रियादिमां जीव होवानुं विशेष विशेष दृढ करी दयानो मार्ग वर्णव्यो छे.

आ कारणे चार वेद, अढार पुराण आदिनां जेणे वर्णन कर्यां छे तेणे अज्ञानथी, स्वच्छंदथी, मिथ्यात्वथी, संशयथी कर्यां छे एम कह्युं छे. आ वचनो बहु ज भारे नांख्यां छे, त्यां आगळ घणो ज विचार करी पाछुं वर्णन कर्युं छे के अन्य दर्शनो-वेदादि-ना ग्रंथो छे ते जो सम्यग्दृष्टि जीव वांचे तो सम्यक् रीते परिणमे; अने जिनना अथवा गमे तेवा ग्रंथो मिथ्यादृष्टि वांचे तो मिथ्यात्वरूपे परिणमे.

जीवने ज्ञानीपुरुष समीपे तेमना अपूर्व वचनो सांभळवाथी अपूर्व उल्लासपरिणाम आवे छे, पण पछी प्रमादी थतां अपूर्व उल्लास आवतो नथी. जेम अग्निनी सगडी पासे बेठा होईए त्यारे टाढ वाय नहीं, अने सगडीथी वेगळा गया एटले पाछी टाढ वाय; तेम ज्ञानीपुरुष समीप तेमनां अपूर्व वचनो सांभळ्यां त्यारे प्रमादादि जाय, अने उल्लासपरिणाम आवे, पण पछी प्रमादादि उत्पन्न थाय. जो पूर्वना संस्कारथी ते वचनो अंतर्परिणाम पामे तो दिनदिनप्रति उल्लासपरिणाम वधतां जाय; अने यथार्थ रीते भान थाय. अज्ञान मठ्ये बधी मूल मटे, स्वरूप जागृतमान् थाय. बहारथी वचन सांभळीने अंतर्परिणाम थाय नहीं, तो जेम सगडीथी वेगळा गया एटले टाढ वाय तेनी पेठे दोष घटे नहीं.

केशीस्वामीए परदेशी राजाने बोध देती वखते 'जड जेवो,' 'मूढ जेवो,' कह्यो हतो तेनुं कारण परदेशीराजाने विषे पुरुषार्थ जगाडवा माटेनुं हतुं. जडपणुं, मूढपणुं मटाडवाने माटे उपदेश दीधो छे. **ज्ञानीनां वचनो अपूर्व परमार्थ शिवाय बीजा हेतुए होय नहीं.** बालजीवो एम वातो करे छे के छद्मस्थपणाथी केशीस्वामी परदेशीराजाप्रत्ये तेम बोल्या हता; पण एम नथी. तेमनी परमार्थ अर्थे ज वाणी नीकळी हती.

जडपदार्थने लेवा मूकवामां उन्मादथी वर्त्ते तो तेने असंयम कह्यो; तेनुं कारण ए छे के उतावळथी लेवा मूकवामां आत्मानो उपयोग चूकी जई तादात्म्यपणुं थाय. आ हेतुथी **उपयोग चूकी जवो तेने असंयम कह्यो.**

अहंकारे आचार्यपणुं धारी दंभ राखे अने उपदेश दे तो पाप लागे. आत्मवृत्ति राखवा माटे उपयोग राखवो.

श्री आचारांगसूत्रमध्ये कह्युं छे के 'आस्रवा ते परिस्रवा,' ने जे 'परिस्रवा ते आस्रवा.' आस्रव छे ते ज्ञानीने मोक्षना हेतु थाय छे, अने जे संवर छे, छतां ते अज्ञानीने बंधना हेतु थाय छे एम प्रगट कह्युं छे. तेनुं कारण ज्ञानीने विषे उपयोगनी जागृति छे, अने अज्ञानीने विषे नथी. उपयोग बे प्रकारे कह्या :—

१. द्रव्यउपयोग. २. भावउपयोग.

जेवुं सिद्धनुं सामर्थ्य छे तेवुं सर्व जीवनुं थई शके छे. मात्र अज्ञानवडे करी ध्यानमां आवतुं नथी. विचारवान जीव होय तेणे तो ते संबंधी नित्य विचार करवो.

जीव एम समजे छे के हुं जे क्रिया करूं छुं एथी मोक्ष छे. क्रिया करवी ए सारी वात छे, पण लोकसंज्ञाए करे तो तेने तेनुं फळ होय नहीं.

एक माणसना हाथमां चिंतामणि आव्यो होय, पण जो तेनी तेने खबर न पडे तो निष्फळ छे. जो खबर पडे तो सफळ छे. तेम जीवने खरेखरा ज्ञानीनी ओळख पडे तो सफळ छे.

जीवनी अनादिकाळथी भूल चाली आवे छे. ते समजवाने अर्थे जीवने जे भूल मिथ्यात्व छे तेने मूळथी छेदवी जोईए. जो मूळथी छेदवामां आवे तो ते पाछी उगे नहीं. नहीं तो ते पाछी उंगी नीकळे छे; जेम पृथ्वीमां मूळ रह्युं होय तो झाड उगी नीकळे छे तेम. माटे जीवनी मूळ भूल शुं छे ते विचारी विचारी तेथी छूटुं थवुं जोईए. **"मने शाथी बंधन थाय छे?" "ते केम टळे?" ए विचार प्रथम कर्त्तव्य छे.**

रात्रिभोजन करवाथी आळस, प्रमाद थाय; जागृति थाय नहीं; विचार आवे नहीं ए आदि दोषना घणा प्रकार रात्रिभोजनथी थाय छे, मैथुन उपरांत पण बीजा घणा दोष थाय छे.

कोई लीलोतरी मॉळतुं होय तो अमाराथी तो जोई शकाय नहीं. तेम आत्मा उज्ज्वळता पामे तो घणी ज अनुकंपाबुद्धि वर्त्ते छे.

ज्ञानमां सवळुं भासे; अवळुं न भासे. ज्ञानी मोहने पेसवा देता नथी. तेओनो जागृत उपयोग होय छे. ज्ञानीनां जेवां परिणाम वर्त्ते तेवुं कार्य ज्ञानीने थाय. अज्ञानीने वर्त्ते तेवुं अज्ञानीने थाय. ज्ञानीनुं चालवुं सवळुं, बोलवुं सवळुं, अने बधुं ज सवळुं ज होय छे. अज्ञानीनुं बधु अवळुं ज होय छे; वर्त्तनना विकल्प होय छे.

मोक्षनो उपाय छे. ओघभावे खबर हशे, विचारभावे प्रतीति आवशे.

अज्ञानी पोते दरिद्रि छे. ज्ञानीनी आज्ञाथी कामक्रोधादि घटे छे. ज्ञानी तेना वैद्य छे. **ज्ञानीना हाथे चारित्र आवे तो मोक्ष थाय.** ज्ञानी जे जे व्रत आपे ते ते ठेठ लई जई पार **उतारनार छे.** समकित आव्या पछी आत्मा समाधि पामशे, केमके साचो थयो छे.

(५) भादरवा. सुद. ९. १९५२.

प्रश्न:—ज्ञानथी कर्म निर्जरे खरां?

उत्तर०:—सार जाणवो ते ज्ञान. सार न जाणवो ते अज्ञान. कंई पण पापथी आपणे निवर्त्तिए, अथवा कल्याणमां प्रवर्त्तिए ते ज्ञान. परमार्थ समजीने करवो. अहंकाररहित, लोकसंज्ञारहित, आत्मामां प्रवर्त्तवुं ते 'निर्जरा.'

आ जीवनी साथे रागद्वेष वळगेला छे; जीव अनंतज्ञानदर्शनसहित छे, पण रागद्वेषवडे ते विनानो छे ते जीवने ध्यानमां आवतुं नथी.

सिद्धने रागद्वेष नथी. जेवुं सिद्धनुं स्वरूप छे तेवुं ज सर्व जीवनुं स्वरूप छे. मात्र जीवने अज्ञाने करी ध्यानमां आवतुं नथी; तेटलामाटे विचारवाने सिद्धना स्वरूपनो विचार करवो, एटले पोतानुं स्वरूप समजाय.

एक माणसना हाथमां चिंतामणि आव्यो होय, ने तेनी तेने खबर (ओळखाण) छे तो तेना प्रत्ये तेने घणो ज प्रेम आवे छे, पण जेने खबर नथी तेने कंई पण प्रेम आवतो नथी.

आ जीवनी अनादिकाळनी जे भूल छे ते भांगवी छे. भांगवासारू जीवनी मोटामां मोटी भूल शुं छे तेनो विचार करवो, ने तेनुं मूळ छेदवा भणी लक्ष राखवो. ज्यांसुधी मूळ रहे त्यांसुधी वधे.

"मने शाथी बंधन थाय छे?" अने "ते शाथी टळे?" ए जाणवासारू शास्त्रो करेलां छे, लोकोमां पूजावासारू शास्त्रो करेलां नथी.

आ जीवनुं स्वरूप शुं छे?

जीवनुं स्वरूप ज्यांसुधी जाणवामां न आवे, त्यांसुधी अनंता जन्म मरण करवां पडे. जीवनी शुं भूल छे ते हजुसुधी ध्यानमां आवतुं नथी.

जीवनो क्लेश भांगशे तो भूल मटशे. जे दिवसे भूल भांगशे ते ज दिवसथी साधुपणुं कहेवाशे. तेम ज श्रावकपणा माटे समजवुं.

कर्मनी वर्गणा जीवने दूध अने पाणीना संयोगनी पेठे छे. अग्निना प्रयोगथी पाणी चाल्युं जई दूध बाकी रहे छे ते रीते ज्ञानरूपी अग्निथी कर्मवर्गणा चाली जाय छे.

देहने विषे हुंपणुं मनाएलुं छे तेथी जीवनी भूल भांगती नथी. जीव देहनी साथे भळी जवाथी एम माने छे के 'हुं वाणीओ छुं,' 'ब्राह्मण छुं,' पण शुद्ध विचारे तो तेने 'शुद्ध स्वरूपमय छुं' एम अनुभव थाय. आत्मानुं नाम ठाम के कांई नथी एम धारे तो कोई गाळो वगेरे दे तो तेथी तेने कंई पण लागतुं नथी.

ज्यां ज्यां जीव मारापणुं करे छे त्यां त्यां तेनी भूल छे. ते टाळवासारू शास्त्रो कह्यां छे.

गमे ते कोई मरी गयुं होय तेनो जो विचार करे तो ते वैराग्य छे. ज्यां ज्यां 'आ मारा भाई भांडुं' वगेरे भावना छे त्यां त्यां कर्मबंधनो हेतु छे. आ ज रीते साधु पण चेला प्रत्ये राखे, तो आचार्यपणुं नाश पामे. निर्दंभपणुं, निरहंकारपणुं करे तो आत्मानुं कल्याण ज थाय.

पांच इंद्रियो शी रीते वश थाय? वस्तुओ उपर तुच्छभाव लाववाथी. फूलना दृष्टांतेः—फूलमां सुगंध होय छे तेथी मन संतुष्ट थाय छे; पण सुगंध थोडीवार रही नाश पामी जाय छे, अने फूल करमाई जाय छे, पछी कांई मनने संतोष थतो नथी; तेम सर्व पदार्थने विषे तुच्छभाव लाववाथी इंद्रियोने प्रियता थती नथी, अने तेथी क्रमे इंद्रियो वश थाय छे. वळी पांच इंद्रियोमां पण जिव्हाइंद्रिय वश करवाथी बाकीनी चार इंद्रियो सेहेजे वश थाय छे. तुच्छ आहार करवो, कोई रसवाळा पदार्थमां दोरावुं नहीं, बलिष्ठ आहार न करवो.

एक भाजनमां लोही, मांस, हाडकां, चामडुं, वीर्य, मळ, मूत्र ए सात धातु पडी होय; अने तेना प्रत्ये कोई जोवानुं कहे तो तेना उपर अरुचि थाय, ने थुंकवा पण जाय नहीं. तेवी ज रीते स्त्रीपुरुषनां शरीरनी रचना छे, पण उपरनी रमणीयता जोई जीव मोह पामे छे. अने तेमां तृष्णापूर्वक

दोराय छे. अज्ञानथी जीव भूले छे एम विचारी, तुच्छ जाणीने पदार्थ उपर अरुचि भाव लाववो. आ रीते दरेक वस्तुनुं तुच्छपणुं जाणवुं. आ रीते जाणीने मननो निरोध करवो.

तीर्थंकरे उपवास करवानी आज्ञा करी छे ते मात्र इंद्रियोने वश करवा माटे एकला उपवास करवाथी इंद्रियो वश थती नथी; पण उपयोग होय तो, विचारसहित थाय तो वश थाय छे. जेम लक्षवगरनुं बाण नकामुं जाय छे, तेम **उपयोगविनानो उपवास आत्मार्थे थतो नथी.**

आपणे विषे कोई गुण प्रगट्यो होय, अने ते माटे जो कोई माणस आपणी स्तुति करे, अने जो तेथी आपणो आत्मा अहंकार लावे तो ते पाछो हठे. पोताना आत्माने निंदे नहीं, अभ्यंतर-दोष विचारे नहीं, तो जीव लौकिक भावमां चाल्यो जाय; पण जो पोताना दोष जुए, पोताना आत्माने निंदे, अहंभावरहितपणुं विचारे, तो सत्पुरुषना आश्रयथी आत्मलक्ष थाय.

मार्ग पामवामां अनंत अंतरायो छे. तेमां वळी "में आ कर्युं," "में आ केवुं सरस कर्युं" एवा प्रकारनुं अभिमान छे. "में कांई कर्युं ज नथी" एवी दृष्टि मूकवाथी ते अभिनान दूर थाय.

लौकिक अने अलौकिक एवा बे भाव छे. लौकिकथी संसार, अने अलौकिकथी मोक्ष.

बाह्यइंद्रियो वश करी होय, तो सत्पुरुषना आश्रयथी अंतर्लक्ष थई शके. आ कारणथी बाह्यइंद्रियो वश करवी ते श्रेष्ठ छे. **बाह्यइंद्रियो वश होय, अने सत्पुरुषनो आश्रय न होय, तो लौकिकभावमां जवानो संभव रहे.**

उपाय कर्याविना कांई दरद मटतुं नथी. तेम लोभरूपी जीवने दरद छे तेनो उपाय कर्याविना ते न जाय. आवा दोष टाळवा माटे जीव लगार मात्र उपाय करतो नथी. जो उपाय करे तो ते दोष हाल भागी जाय. कारण उभुं करो तो कार्य थाय. कारण विना कार्य न थाय.

साचा उपाय जीव शोधतो नथी. ज्ञानीपुरुषनां वचनो सांभळे तो साटे प्रतीति नथी. "मारे लोभ मूकवो छे" एवी बीजभूत लागणी थाय तो दोष टळी जई अनुक्रमे 'बीजज्ञान' प्रगटे.

प्र०:–आत्मा एक छे के अनेक छे?

उ०:–जो आत्मा एक ज होय तो पूर्वे रामचंद्रजी मुक्त थया छे, अने तेथी सर्वेनी मुक्ति थवी जोईए; अर्थात् एकनी मुक्ति थई होय तो सर्वेनी मुक्ति थाय; अने तो पछी बीजाने सत्शास्त्र, सद्गुरु आदि साधनोनी जरूर नथी.

प्र०:–मुक्ति थया पछी एकाकार थई जाय छे?

उ०:–जो मुक्त थया पछी एकाकार थई जतुं होय, तो स्वानुभव आनंद अनुभवे नहीं. एक पुरुष अहीं आवी बेठो; अने ते विदेहमुक्त थयो. त्यार पछी बीजो अहीं आवी बेठो. ते पण मुक्त थयो. आथी करी कांई त्रीजो मुक्त थयो नहीं. **एक आत्मा छे तेनो आशय एवो छे के सर्व आत्मा वस्तुपणे सरखा छे; पण स्वतंत्र छे. स्वानुभव करे छे. आ कारणथी आत्मा प्रत्येक छे.** "आत्मा एक छे, माटे तारे बीजी कांई भ्रांति राखवानी जरूर नथी. जगत् कांई छे ज नहीं एवा भ्रान्तिरहितपणासहित वर्तवाथी मुक्ति छे" एम जे कहे छे तेणे विचारवुं जोईए

के तो एकनी मुक्तिए सर्वेनी मुक्ति थवी ज जोईए. पण एम नथी थतुं माटे आत्मा प्रत्येक छे. जगत्नी भ्रान्ति टळी गई एटले एम समजवानुं नथी के चंद्र सूर्यादि उंचेथी पडी जाय छे, आत्माने विषेथी भ्रान्ति टळी गई एम आशय समजवानो छे. रूढीए कांई कल्याण नथी. आत्मा शुद्ध विचारने पाम्याविना कल्याण थाय नहीं.

माया कपटथी जूठुं बोलवुं तेमां घणुं पाप छे. ते पापना बे प्रकार छे. मान अने धन मेळववा माटे जूठुं बोले तो तेमां घणुं पाप छे. आजीविका अर्थे जूठुं बोलवुं पड्युं होय, अने पश्चात्ताप करे, तो प्रथमवाळा करतां कांईक ओछुं पाप लागे.

बाप पोते पचाश वर्षनो होय, अने तेनो छोकरो विश वर्षनो मरी जाय तो ते बाप तेनी पासेना जे दागीना होय ते काढी ले छे! पुत्रना देहांतक्षणे जे वैराग्य हतो ते स्मशान वैराग्य हतो.

कंई पण पदार्थ बीजाने आपवानी मुनिने भगवाने आज्ञा आपी नथी. देहने धर्मसाधन गणी तेने निभाववाने माटे जे कांई आज्ञा आपी छे ते आपी छे; बाकी बीजाने कांई पण आपवानी भगवाने आज्ञा आपी नथी. आज्ञा आपी होत तो परिग्रह वधत, अने तेथी करी अनुक्रमे अन्न, पाणी वगेरे लावीने कुटुंबनुं अथवा बीजानुं पोषण करीने दानेश्वरी थात. माटे **मुनिए विचारवुं के तीर्थंकरे जे कांई राखवानी आज्ञा आपी छे ते मात्र तारा पोताने माटे, अने ते पण लौकिक दृष्टि मूकावी संयममां जोडवाने आपी छे.**

मुनि गृहस्थने त्यांथी एक सोय लाव्यो होय, अने ते खोवाई जवाना कारणथी पण पाछी न आपे तो तेणे त्रण उपवास करवा एवी ज्ञानीपुरुषोए आज्ञा करी छे; तेनुं कारण ए छे के ते उपयोगशून्य रह्यो. जो आटलो बधो बोजो न मूक्यो होत, तो बीजी वस्तुओ लाववानुं मन थात; अने काळे करी परिग्रह वधारी, मुनिपणुं खोई बेसत. ज्ञानीए आवो आकरो मार्ग प्ररूप्यो छे तेनुं कारण ए छे के ते जाणे छे के आ जीव विश्वास करवायोग्य नथी; कारण के ते भ्रान्तिवाळो छे. जो छूट आपी हशे तो काळे करी तेवा तेवा प्रकारमां विशेष प्रवर्त्तशे एवुं जाणी ज्ञानीए सोयजेवी निर्जीव वस्तुना संबंधमां आ प्रमाणे वर्त्तवानी आज्ञा करी छे. लोकनी दृष्टिमां आ वात साधारण छे, पण ज्ञानीनी दृष्टिमां तेटली छूट पण मूळथी पाडी दे तेवी मोटी लागे छे.

ऋषभदेवजीनी पासे अट्ठाणुं पुत्रो "अमने राज आपो" एम कहेवाना अभिप्रायथी आव्या हता; त्यां तो ऋषभदेवे उपदेश दई अट्ठाणुंयने मूंडी दीधा! जुओ मोटा पुरुषनी करुणा!

केशीस्वामी अने गौतमस्वामी केवा सरळ हता! बन्नेनो एक मार्ग जाणवाथी पांच महाव्रत ग्रहण कर्यां. आजना काळमां बे पक्षने मेगुं थवुं होय तो ते बने नहीं. तेमां केटलोक काळ जाय. तेमां कांई छे नहीं, पण असरलताने लीधे बने ज नहीं.

सत्पुरुषो कांई सद् अनुष्ठाननो त्याग करावता नथी; पण जो तेनो आग्रह थयो होय छे तो आग्रह दूर कराववा तेनो एकवार त्याग करावे छे; आग्रह मट्या पछी पाछुं तेने ते ग्रहण करवानुं कहे छे.

चक्रवर्त्ति राजाओ जेवा पण नग्न थई चाल्या गया छे! चक्रवर्त्ति राजा होय, तेणे राज्यनो त्याग करी दिक्षा लीधी होय, अने तेनी कांई भूल होय, अने ते चक्रवर्त्तिराज्यपणाना वखतना समयनी दासीनो छोकरो ते भूल भांगी शके तेम होय तो तेनी पासे जई तेनुं कहेवुं ग्रहण करवानी आज्ञा करी छे. जो तेने दासीना छोकरा पासे जतां एम रहे के, "माराथी दासीना छोकरा पासे केम जवाय" तो तेने रखडी मरवानुं छे. आवा कारणमां लोकलाज छोडवानुं कह्युं छे, अर्थात् **आत्माने उंचो लाववानुं कारण होय त्यां लोकलाज गणी नथी.** पण कोई मुनि विषयइच्छाथी वेश्याशाळामां गयो; त्यां जईने तेने एम थयुं के "मने लोक देखशे तो मारी निंदा थशे. माटे अहींथी पाछुं वळवुं." तो त्यां लोकलाज राखवी एम कह्युं छे, केमके आ स्थळे लोकलाजनो डर खावाथी ब्रह्मचर्य रहे छे; जे उपकारक छे.

हितकारी शुं छे ते समजवुं जोईए. आठमनी तकरार तिथिअर्थे करवी नहीं; पण लीलोतरीना रक्षणअर्थे तिथि पाळवी. लीलोतरीना रक्षणअर्थे आठमादि तिथि कही छे. कांई तिथिने अर्थे आठमादि कही नथी. माटे आठमादि तिथिनो कदाग्रह मटाडवो. जे कांई कह्युं छे ते कदाग्रह करवाने कह्युं नथी. आत्मानी शुद्धिथी जेटलुं करशो तेटलुं हितकारी छे. अशुद्धिथी करशो तेटलुं अहितकारी छे; माटे शुद्धतापूर्वक सद्व्रत सेववां.

अमने तो ब्राह्मण, वैश्नव गमे ते समान छे. जैन कहेवाता होय, अने मतवाळा होय तो ते अहितकारी छे; मतरहित हितकारी छे.

सामायिकशास्त्रकारे विचार कर्यो के कायाने स्थिर राखवानी हशे, तो पछी विचार करशे; बंध नहीं बांध्यो होय तो बीजां कामे वळगशे एम जाणी तेवा प्रकारनो बंध बांध्यो. जेवां मन परिणाम रहे तेवुं सामायिक थाय. मनना घोडा दोडता होय तो कर्मबंध थाय. मनना घोडा दोडता होय, अने सामायिक कर्युं होय तो तेनुं फळ ते केवुं थाय?

कर्मबंध थोडे थोडे छोडवा इच्छे तो छूटे. जेम कोठी भरी होय, पण काणुं करी काढे तो छेवटे खाली थाय. पण दृढ इच्छाथी कर्म छोडवां ए ज सार्थक छे.

आवश्यकना छ प्रकारः—सामायिक, चोवीसथ्थो, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान. सामायिक एटले सावद्य योगनी निवृत्ति.

वाचना (वांचवुं); पृच्छणा (पूछवुं); परिवर्त्तना (फरि फरी विचारवुं.) धर्मकथा (धर्मविषयनी कथा करवी) ए चार द्रव्य छे; अने अनुप्रेक्षा ए भाव छे. प्रथम चार जो अनुप्रेक्षा न आवे तो द्रव्य छे.

'अज्ञानीओ आज केवलज्ञान नथी;' 'मोक्ष नथी' एवी हीनपुरुषार्थनी वातो करे छे. ज्ञानीनुं वचन पुरुषार्थ प्रेरे तेवुं होय. अज्ञानी शिथिल छे तेथी एवा हीनपुरुषार्थनां वचनो कहे छे. पंचम काळनी, भवस्थितिनी, के आयुष्यनी वात मनमां लाववी नहीं; अने एवी वाणी पण सांभळवी नहीं.

कोई हीनपुरुषार्थी वातो करे के उपादानकारणनुं शुं काम छे? पूर्वे अशोच्याकेवली थया छे.

तो तेवी वातोथी पुरुषार्थहीन न थवुं. सत्संग ने सत्यसाधनविना कोई काळे पण कल्याण थाय नहीं. जो पोतानी मेळे कल्याण थतुं होय तो माटीमांथी घडो थवो संभवे. लाख वर्ष थाय तोपण घडो थाय नहीं. तेम उपादानकारणविना कल्याण थाय नहीं. तीर्थंकरनो योग थयो हशे एम शास्त्रवचन छे छतां कल्याण थयुं नथी तेनुं कारण पुरुषार्थरहितपणानुं छे. पूर्वे तेमने ज्ञानी मळ्या हता छतां पुरुषार्थविना जेम ते योग निष्फळ गया, तेम ज्ञानीयोग मळ्यो छे ने पुरुषार्थ नहीं करो तो आ योग पण निष्फळ जशे. माटे पुरुषार्थ करवो;—अने तो ज कल्याण थशे. उपादान-कारण श्रेष्ठ छे.

एम निश्चय करवो के सत्पुरुषना कारण—निमित्त—थी अनंत जीव तरी गया छे. कारणविना कोई जीव तरे नहीं. अशोच्याकेवलीने पण आगळ पाछळ तेवो योग प्राप्त थयो हशे. सत्संगविना आखुं जगत् डूबी गयुं छे!

मिरांबाई महाभक्तिवान हतां.

सुंदर रीतभातवाळा सुंदर समागमथी समता आवे. समतानी विचारणाअर्थे बे घडिनुं सामायिक करवुं कह्युं छे. सामायिकमां मनना मनोरथ अवळा सवळा चिंतवे तो कांई पण फळ थाय नहीं. सामायिक मनना घोडा दोडता अटकाववासारू प्ररूपेल छे. संवत्सरिना दिवससंबंधी एक पक्ष चोथनी तिथिनो आग्रह करे छे, अने बीजो पक्ष पांचमनी तिथिनो आग्रह करे छे. आग्रह करनार बन्ने मिथ्यात्वी छे. **ज्ञानीपुरुषोए तिथिओनी मर्यादा आत्मार्थे करी छे.** जो चोकस दिवस निश्चित न कर्यो होत, तो आवश्यक विधिओनो नियम रहेत नहीं. आत्मार्थे तिथिनी मर्यादानो लाभ लेवो. बाकी तिथिविथिनो भेद मूकी देवो, एवी कल्पना करवी नहीं, एवी भंगजाळमां पडवुं नहीं.

आनंदघनजीए कह्युं छे के,

> "फळ अनेकांत लोचन न देखे,
>
> फळ अनेकांत किरिया करी बापडा, रडवडे चार गतिमांही लेखे."

एटले जे क्रिया करवाथी अनेक फळ थाय ते क्रिया मोक्षार्थे नहीं. अनेक क्रियानुं फळ एक मोक्ष थवो ते होवुं जोईए. आत्माना अंशो प्रगट थवा माटे क्रियाओ वर्णवी छे. जो क्रियाओनुं ते फळ न थयुं तो ते सर्व क्रिया संसारना हेतुओ छे.

"निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि" एम जे कह्युं छे तेनो हेतु कषायने वोसराववानो छे, पण लोको तो बिचारां सचोडो आत्मा वोसरावी दीए छे!

जीवे देवगतिनी, मोक्षना सुखनी, अथवा बीजी तेवी कामनानी इच्छा न राखवी.

पंचमकाळना गुरुओ केवा छे ते प्रत्ये एक संन्यासीनुं दृष्टांत. एक संन्यासी हशे ते पोताना शिष्यने त्यां गयो. टाढ घणी हती. जमवा बेसवा वखते शिष्ये नहावानुं कह्युं त्यारे गुरुए मनमां विचार कर्यो के "टाढ घणी छे, अने नहावुं पडशे." आम विचार करी संन्यासीए कह्युं

के "मैं तो ज्ञानगंगाजळमां स्नान कर्युं छे." शिष्य विचक्षण होवाथी समजी गयो, अने तेने शिखामण मळे तेम रस्तो लीधो. शिष्ये "जमवा पधारो" एवा मानसहित बोलावी जमाड्या. प्रसाद पछी गुरुमहाराज एक ओरडामां सूई रह्या. गुरुने तृषा लागी एटले शिष्यपासे जळ मांग्युं; एटले तरत शिष्ये कह्युंः "महाराज, जळ ज्ञानगंगामांथी ल्यो." ज्यारे शिष्ये आवो सख्त रस्तो लीधो त्यारे गुरुए कबुल कर्युं के "मारीपासे ज्ञान नथी. देहनी शाताने अर्थे टाढमां में स्नान नहीं करवानुं कह्युं हतुं!"

मिथ्यादृष्टिनां पूर्वनां जप तप हजीसुधी एक आत्महितार्थे थयां नथी!

आत्मा मुख्यपणे आत्मस्वभावे वर्ते ते "अध्यात्मज्ञान." मुख्यपणे जेमां आत्मा वर्णव्यो होय ते 'अध्यात्मशास्त्र.' **अक्षर (शब्द) अध्यात्मीनो मोक्ष नथी थतो.** जे गुणो अक्षरोमां कह्या छे ते गुणो जो आत्मामां प्रवर्ते तो मोक्ष थाय. सत्पुरुषमां भावअध्यात्म प्रगट छे. मात्र वाणी सांभळवानी खातर वचनो सांभळे ते शब्दअध्यात्मी कहेवा. शब्दअध्यात्मीओ अध्यात्मनी वातो करे, अने महा अनर्थकारक प्रवर्त्तन करे; आ कारणथी तेवाओने ज्ञानदग्ध कहेवा. आवा अध्यात्मीओ शुष्क अने अज्ञानी समजवा.

ज्ञानीपुरुषरूपी सूर्य प्रगट थया पछी खरा अध्यात्मीओ शुष्क रीते प्रवर्ते नहीं, भावअध्यात्ममां प्रगटपणे वर्त्ते. आत्मामां खरेखरा गुणो उत्पन्न थया पछी मोक्ष थाय. आ काळमां द्रव्यअध्यात्मीओ, ज्ञानदग्धो घणा छे. द्रव्यअध्यात्मी देवळना इंडानी पेठे.

मोहादि विकार एवा छे के सम्यग्दृष्टिने पण डोलायमान करी नांखे छे; माटे तमारे तो समजवुं के मोक्षमार्ग पामवामां तेवां विघ्नो घणां छे. आयुष् थोडुं छे, अने कार्य महाभारत करवानुं छे. जेम होडी नानी होय अने मोटो महासागर तरवानो होय तेम आयुष् थोडुं छे, अने संसाररूपी महासागर तरवो छे. जे पुरुषो प्रभुना नामथी तर्या छे ते पुरुषोने धन्य छे. अज्ञानी जीवने खबर नथी के फलाणी जग्या पडवानी छे पण ज्ञानीओए ते जोएलुं छे. अज्ञानीओ, द्रव्य अध्यात्मीओ कहे छे के मारामां कषाय नथी. सम्यग्दृष्टि चैतन्यसंयोगे छे.

एक मुनि गुफामां ध्यान करवा जता हता. त्यां सिंह मळ्यो. तेमना हाथमां लाकडी हती. सिंह सामी लाकडी उगामी होय तो सिंह चाल्यो जाय एम मनमां थतां मुनिने विचार आव्यो के "हुं आत्मा अजर, अमर छुं, देह प्रेम राखवायोग्य नथी; माटे हे जीव! अहीं ज उभो रहे. सिंहनो भय छे ते ज अज्ञान छे. **देहमां मूर्छाने लईने भय छे.**" आवी भावना भावतां बे घडीसुधी उभा रह्या तो केवलज्ञान प्रगट थयुं. माटे विचारदशा विचारदशा वच्चे घणो ज फेर छे.

उपयोग जीववगर होय नहीं. जड अने चैतन्य ए बन्नेमां परिणाम होय छे. देहधारी जीवमां अध्यवसाय वर्त्ताय, संकल्प विकल्प उभा थाय, पण ज्ञानथी निर्विकल्पपणुं थाय. अध्यवसायनो क्षय ज्ञानथी थाय छे. ध्याननो हेतु ए ज छे. उपयोग वर्त्ततो होवो जोईए.

धर्मध्यान, शुक्लध्यान उत्तम कहेवाय. आर्त्त, रौद्र, ए ध्यान माठां कहेवाय. बहार उपाधि ए ज अध्यवसाय. उत्तम लेश्या होय तो ध्यान कहेवाय; अने आत्मा सम्यक् परिणाम पामे.

माणेकदासजी एक वेदांती हता. तेओए एक ग्रंथमां मोक्ष करतां सत्संग वधारे यथार्थ गण्यो छे. कह्युं छे के,

निजछंदनसे ना मिले, हीरो वैकुंठ धाम,
संतकृपासें पाईए, सो हरि सबसें ठाम.

कुगुरु अने अज्ञानी पाखंडीओनो आ काळमां पार नथी.

मोटा वरघोडा चढावे, ने नाणां खर्चे; एम जाणीने के मारूं कल्याण थशे. आम समजी हजारो रुपिया खर्ची नांखे. एक पैसो खोटुं बोली भेगो करे छे, ने सामटा हजारो रुपिया खर्ची नांखे छे! जुओ जीवनुं केटलुं बधुं अज्ञान! कंई विचार ज न आवे!

आत्मानुं जेवुं छे तेवुं ज स्वरूप ते ज "यथाख्यातचारित्र" कह्युं छे. **भय अज्ञानथी छे.** सिंहनो भय सिंहणने थतो नथी. नागणीने नागनो भय थतो नथी. आनुं कारण ए प्रकारनुं तेने अज्ञान दूर थयुं छे.

सम्यक्त्व न प्रगटे त्यांसुधी मिथ्यात्व; अने मिश्रगुणस्थानकनो नाश थाय त्यारे सम्यक्त्व कहेवाय. अज्ञानीओ बधा पहेला गुणस्थानके छे.

सत्शास्त्र सद्गुरुआश्रये जे संयम तेने "सरागसंयम" कहेवाय. निवृत्ति, अनिवृत्तिस्थानक फेर पडे त्यारे सरागसंयममांथी "वीतरागसंयम" थाय. तेने निवृत्ति अनिवृत्ति बराबर छे. स्वछंदे कल्पना ते भ्रांति छे. "आ तो आम नहीं; आम हशे" एवो जे भाव ते "शंका." समजवा माटे विचार करी पूछवुं ते "आशंका" कहेवाय.

पोताथी न समजाय ते "आशंकामोहनीय." साचुं जाण्युं होय छतां खरेखरो भाव आवे नहीं ते पण आशंकामोहनीय. पोताथी न समजाय ते पूछवुं. मूळ जाण्या पछी उत्तर विषय माटे आनुं केम हशे एवुं जाणवा आकांक्षा थाय तेनुं सम्यक्त्व जाय नहीं. अर्थात् ते पतित होय नहीं. खोटी भ्रान्ति थाय ते शंका. खोटी प्रतीति ते अनंतानुबंधीमां शमाय. अणसमजणे दोष जुए तो मिथ्यात्व. क्षयोपशम एटले नाश अने शमाई जवुं.

(६) राळजनीभागोळे. वडनिचे. बपोरे बे वाग्ये.

ज्ञानमार्ग आराधे तो अने रस्ते चाले तो ज्ञान थाय. समजाय तो आत्मा सहजमां प्रगटे; नहीं तो जींदगी जाय तोय प्रगटे नहीं. महात्म्य समजावुं जोईए. निष्कामबुद्धि अने भक्ति जोईए. अंतःकरणनी शुद्धि थाय तो ज्ञान एनी मेळे थाय. ज्ञानीने ओळखाय तो ज्ञानप्राप्ति थाय. कोई जीव योग्य देखे तो ज्ञानी तेने कहे के बधी कल्पना मूकवा जेवी छे. ज्ञान ले. ज्ञानीने ओघसंघाए ओळखे तो यथार्थ ज्ञान थतुं नथी.

ज्यारे ज्ञानीनो त्याग, दृढत्याग आवे अर्थात् जेवो जोईए तेवो यथार्थ त्याग करवानुं ज्ञानी

कहे त्यारे माया भूलवी दे छे; माटे बराबर जागृत रहेवुं; अने मायाने दूर करतां रहेवुं. ज्ञानीना त्याग, ज्ञानीए बतावेल त्याग माटे मेठ बांधी तैयार रहेवुं.

सत्संग थाय त्यारे माया वेगळी रहे छे; अने सत्संगनो योग मळ्यो के पाछी तैयार ने तैयार उभी छे. माटे बाह्यउपाधि ओछी करवी. तेथी सत्संग विशेष थाय छे. आ कारणथी बाह्य-त्याग श्रेष्ठ छे.

ज्ञानीने दुःख नथी. अज्ञानीने दुःख छे. समाधि करवासारू सदाचरण सेववानां छे. खोटा रंग ते खोटा रंग छे. साचो रंग सदा रहे छे. ज्ञानीने मळ्या पछी देह छूटी गया, देह धारण करवानुं न रहे एम समजवुं. ज्ञानीनां वचनो प्रथम कडवां लागे छे, पण पछी जणाय छे के ज्ञानीपुरुष संसारनां अनंत दुःखो मटाडे छे. जेम ओसड कडवुं छे, पण घणा वखतनो रोग मटाडे छे तेम.

त्याग उपर हमेशां लक्ष राखवो. त्याग मोळो राखवो नहीं. श्रावके त्रण मनोरथ चिंतववा. सत्यमार्गने आराधन करवा माटे मायाथी दूर रहेवुं. त्याग कर्या ज करवो. माया केवी रीते भूलवे छे ते प्रत्ये दृष्टांतः

कोई एक संन्यासी हशे ते एम कह्या करे के "हुं मायाने गरवा दउं ज नहीं. नग्न थईने विचरीश." त्यारे मायाए कह्युं के "हुं तारी आगळने आगळ चालीश". "जंगलमां एकलो विचरीश" एम संन्यासीए कह्युं त्यारे माया कहे के, "हुं सामी थईश." संन्यासी पछी जंगलमां रहेता. अने कांकरा के रेती बेउ सरखां छे एम कही रेतीपर सूता. पछी मायाने कह्युं के "तुं क्यां छे?" मायाए जाण्युं के आने गर्व बहु चढ्यो छे एटले कह्युं के "मारे आववानुं शुं काम छे? मारो मोटो पुत्र अहंकार तारी हजुरमां मूकेलो हतो."

माया आ रीते छेतरे छे. माटे ज्ञानी कहे छे के, "**हुं बधाथी न्यारो छुं; सर्वथा त्यागी थयो छुं; अवधूत छुं, नग्न छुं; तपश्चर्या करूं छुं. मारी वात अगम्य छे. मारी दशा बहु ज सारी छे. माया मने नडशे नहीं" एवी मात्र कल्पनाए मायाथी छेतरावुं नहीं.**

स्वच्छंदमां अहंकार छे. राग द्वेष जता नथी त्यांसुधी तपश्चर्या करी तेनुं फळ शुं? "जनक-विदेहीमां विदेहीपणुं होय नहीं, कल्पना छे, संसारमां विदेहीपणुं रहे नहीं" एम चिंतववुं नहीं. पोतापणुं मटे तेनाथी रहेवाय. जनकविदेहीनी दशा बरोबर छे. वसिष्ठजीए रामने उपदेश दीधो त्यारे रामे गुरुने राज अर्पण करवा मांड्युं; पण गुरुए राज लीधुं ज नहीं. शिष्य अने गुरु आवा जोईए.

अज्ञान टाळवानुं छे. उपदेशथी पोतापणुं मटाडवुं छे. **अज्ञान गयुं तेनुं दुःख गयुं.**

ज्ञानी गृहस्थावासमां बाह्य उपदेश, व्रत दे नहीं. गृहस्थावासमां होय एवा परमज्ञानी मार्ग चलावे नहीं; मार्ग चलाववानी रीते मार्ग चलावे नहीं; पोते अविरत रही व्रत अदरावे नहीं; केमके तेम करवाथी घणां कारणोमां विरोध आवे.

सकाम भक्तिथी ज्ञान थाय नहीं. निष्काम भक्तिथी ज्ञान थाय. ज्ञानीना उपदेशने विषे अद्भुतपणुं छे. तेओ निरिच्छापणे उपदेश दे छे. स्पृहारहित होय छे. उपदेश ए ज्ञाननुं महात्म्य छे. महात्म्यने लईने घणा जीवो बुझे छे.

अज्ञानीनो सकाम उपदेश होय छे; जे संसारफळनुं कारण छे. जगत्मां अज्ञानीनो मार्ग वधारे छे. ज्ञानीने मिथ्याभावनो क्षय थयो छे; अहंभाव मटी गयो छे; माटे अमूल्य वचनो नीकळे. बालजीवोने ज्ञानी अज्ञानीनुं ओळखाण होय नहीं.

आचार्यजीए जीवोनो स्वभाव प्रमादी जाणी, बबे त्रण त्रण दिवसने आंतरे नियम पाळवानी आज्ञा करी छे. तिथिओने माटे खोटा कदाग्रह न राखतां मूकवा. कदाग्रह मूकाववा अर्थे तिथिओ करी छे तेने बदले ते ज दिवसे कदाग्रह वधारे छे. हालमां घणां वर्षो थयां पर्युषणमां तिथिओनी भ्रान्ति चाले छे. तिथिओनो वांधो काढी तकरार करे छे ते मोक्षे जवानो रस्तो नथी. कचित् पांचमनो दिवस न पळायो, अने छठ पाळे अने आत्मामां कोमळता होय तो ते फळवान् थाय. जेथी खरेखरूं पाप लागे छे ते रोकवानुं पोताना हाथमां छे, पोताथी बने तेवुं छे ते रोकतो नथी; ने बीजी तिथि आदिनी भळती फीकर कर्ये जाय छे. अनादिथी शब्द, रूप, रस, गंध ने स्पर्शनो मोह रह्यो छे. ते मोह अटकाववानो छे. **मोटुं पाप अज्ञाननुं छे.**

अविरतिना पापनी चिंता थती होय तेनाथी जग्यामां रहेवाय केम?

पोते त्याग करी शके नहीं, अने ब्हानां काढे के मारे अंतरायो घणा छे. धर्मनो प्रसंग आवे त्यारे "उदय" छे एम कहे. "उदय उदय" कह्या करे, पण कांई कुवामां पडतो नथी. गाडामां बेठो होय, अने घांच आवे तो साचवी संभाळीने चाले. ते वखते उदय भूली जाय. अर्थात् पोतानी शिथिलता होय तेने बदले उदयनो दोष काढे छे.

लौकिक अने लोकोत्तर खुलासो जूदो होय छे. उदयनो दोष काढवो ए लौकिक खुलासो छे. अनादिकाळनां कर्मो बे घडीमां नाश पामे छे; माटे कर्मनो दोष काढवो नहीं. आत्माने निंदवो. धर्म करवानी वात आवे त्यारे पूर्वकर्मना दोषनी वात आगळ करे छे. पुरुषार्थ करवो श्रेष्ठ छे. पुरुषार्थ पहेलो करवो. मिथ्यात्व, प्रमाद, अशुभयोग मूकवा.

कर्म टाळ्यावगर टळवानां नथी. तेटला माटे ज ज्ञानीओए शास्त्रो वर्णव्यां छे. शिथिल थवाने साधनो बताव्यां नथी. परिणाम उंचां आववां जोईए. कर्म उदय आवशे एवुं मनमां रहे तो कर्म उदयमां आवे! बाकी पुरुषार्थ करे, तो तो कर्म टळी जाय. उपकार थाय ते ज लक्ष राखवो.

(७) वडवा. भाद्रपद सुद १० गुरु. १९५२. सवारे ११ वाग्ये.

कर्म गणी गणीने नाश करातां नथी. ज्ञानीपुरुष तो सामटो गोटो वाळी नाश करे छे.

विचारवाने बीजां आलंबनो मूकी दई, आत्माना पुरुषार्थनो जय थाय तेवुं आलंबन लेवुं. कर्मबंधननुं आलंबन लेवुं नहीं. **आत्मामां परिणाम पामे ते अनुप्रेक्षा.**

माटीमां घडो थवानी सत्ता छे; पण दंड चक्र कुंभारादि मळे तो थाय; तेम आत्मा माटीरूप छे

तेने सद्गुरु आदि साधन मळे तो आत्मज्ञान थाय. **जे ज्ञान थयुं होय ते पूर्वे थई गएला ज्ञानीओए संपादन करेलुं छे तेने पूर्वापर मळतुं आववुं जोईए; अने वर्त्तमानमां पण जे ज्ञानीपुरुषोए ज्ञान संपादन करेलुं छे तेनां वचनोने मळतुं आववुं जोईए; नहीं तो अज्ञानने ज्ञान मान्युं छे एम कहेवाय.**

ज्ञान बे प्रकारनां छेः—एक बीजभूत ज्ञान; अने बीजुं वृक्षभूत ज्ञान. प्रतीतिए बन्ने सरखां छे. तेमां भेद नथी. वृक्षभूत, केवळ निरावरण थाय त्यारे ते ज भवे मोक्ष थाय; अने बीजभूत ज्ञान थाय त्यारे छेवटे पंदर भवे मोक्ष थाय.

आत्मा अरूपी छे; एटले वर्णगंधरसस्पर्शरहित वस्तु छे; अवस्तु नथी.

षड्दर्शन जेणे बांध्यां छे तेणे बहु ज डहापण वापर्युं छे.

बंध घणी अपेक्षाए थाय छे; पण मूळ प्रकृति आठ छे, ते कर्मनी आंटी उकेलवा माटे आठ प्रकारे कही छे.

आयुष्कर्म एक ज भवनुं बंधाय. विशेष भवनुं आयुष् बंधाय नहीं. जो बंधातुं होय तो कोईने केवलज्ञान उपजे नहीं.

ज्ञानीपुरुष समताथी कल्याणनुं जे स्वरूप बतावे छे ते उपकारने अर्थे बतावे छे. ज्ञानीपुरुषो मार्गमां भूला पडेला जीवने सीधो रस्तो बतावे छे. ज्ञानीने मार्गे चाले तेनुं कल्याण थाय. ज्ञानीना विरह पछी घणो काळ जाय एटले अंधकार थई जवाथी अज्ञाननी प्रवृत्ति थाय; अने ज्ञानी-पुरुषोनां वचनो न समजाय; तेथी लोकोने अवळुं भासे. न समजाय तेथी लोको गच्छना भेद पाडे छे. गच्छना भेद ज्ञानीओए पाड्या नथी. अज्ञानी मार्गनो लोप करे छे. ज्ञानी थाय त्यारे मार्गनो उद्योत करे छे. अज्ञानीओ ज्ञानीनी सामा थाय छे. मार्गसन्मुख थवुं जोईए.

बाल अने अज्ञानी जीवो नानी नानी बाबतोमां भेद पाडे छे. चांडला अने मुखपट्टी वगेरेना आग्रहमां कल्याण नथी. अज्ञानीने मतभेद करतां वार लागती नथी. ज्ञानीपुरुषो रूढीमार्गने बदले शुद्ध मार्ग प्ररूपता होय तोय जीवने जूदुं भासे, अने जाणे के आपणो धर्म नहीं. जे जीव कदाग्रहरहित होय ते शुद्ध मार्ग आदरे. विचारवानोनो तो कल्याणनो मार्ग एक ज होय. अज्ञान-मार्गना अनंत प्रकार छे.

जेम पोतानुं छोकरूं कुबडुं होय अने बीजानुं छोकरूं घणुं रूपाळुं होय, पण राग पोताना छोकरापर आवे, ने ते सारूं लागे; तेवी ज रीते जे कुळधर्म पोते मान्या छे ते गमे तेवा दूषणवाळा होय तोपण साचा लागे छे. वैष्णव, बौद्ध, स्वेतांबर दिगंबर जैनादि गमे ते होय पण जे कदाग्रहरहितपणे शुद्ध समताथी पोतानां आवरणो घटाडशे तेनुं ज कल्याण थशे.

(कायानी) सामायिक कायानो योग रोके; आत्माने निर्मळ करवा माटे कायानो योग रोकवो. रोकवाथी परिणामे कल्याण थाय. कायानी सामायिक करवा करतां आत्मानी सामायिक एकवार

करो. ज्ञानीपुरुषनां वचनो सांभळी सांमळीने गांठे बांधो तो आत्मानी सामायिक थशे. मोक्षनो उपाय अनुभवगोचर छे. जेम अभ्यासे अभ्यासे करी आगळ जवाय छे तेम मोक्षने माटे पण छे.

ज्यारे आत्मा कंई पण क्रिया करे नहीं त्यारे अबंध कहेवाय.

पुरुषार्थ करे तो कर्मथी मुक्त थाय. अनंतकाळनां कर्मो होय, अने जो यथार्थ पुरुषार्थ करे तो कर्म एम न कहे के हुं नहीं जाऊं. बे घडीमां अनंतां कर्मो नाश पामे छे. आत्मानी ओळखाण थाय तो कर्म नाश पामे.

प्र०–सम्यक्त्व शाथी प्रगटे?

उ०–आत्मानो यथार्थ लक्ष थाय तेथी. सम्यक्त्वना बे प्रकार छेः–

१. व्यवहार अने २. परमार्थ. सद्गुरुनां वचनोनुं सांभळवुं, ते वचनोनो विचार करवो; तेनी प्रतीति करवी; ते "व्यवहारसम्यक्त्व." आत्मानी ओळखाण थाय ते "परमार्थसम्यक्त्व."

अंतःकरणनी शुद्धिविना बोध असर पामतो नथी; माटे प्रथम अंतःकरणमां कोमळता लाववी. व्यवहार अने निश्चय ए आदिनी मिथ्याचर्चामां निराग्रह रहेवुं; मध्यस्थभावे रहेवुं; **आत्माना स्वभावने जे आवरण तेने ज्ञानीओ 'कर्म' कहे छे.**

सात प्रकृति क्षय थाय त्यारे सम्यक्त्व प्रगटे. अनंतानुबंधी चार कषाय; मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, समकितमोहनीय ए सात क्षय थाय त्यारे सम्यक्त्व प्रकटे.

प्र०–कषाय ते शुं?

उ०–सत्पुरुषो मळ्ये जीवने ते बतावे के तुं जे विचार कर्याविना कर्ये जाय छे तेमां कल्याण नथी, छतां ते करवा माटे दुराग्रह राखे ते.

उन्मार्गने मोक्षमार्ग माने; अने मोक्षमार्गने उन्मार्ग माने ते 'मिथ्यात्वमोहनीय.' उन्मार्गथी मोक्ष थाय नहीं, माटे मार्ग बीजो होवो जोइए एवो जे भाव ते 'मिश्रमोहनीय.' 'आत्मा आ हशे?' तेवुं ज्ञान थाय ते 'सम्यक्त्वमोहनीय.' 'आत्मा छे' एवो निश्चयभाव ते 'सम्यक्त्व.'

नियमथी जीव कोमळ थाय छे. दया आवे छे. मननां परिणामो उपयोगसहित जो होय तो कर्म ओछां लागे. उपयोगरहित होय तो कर्म वधारे लागे. अंतःकरण कोमळ करवा, शुद्ध करवा व्रतादि करवानुं कह्युं छे. स्वादबुद्धि ओछी करवा नियम करवा. कुळधर्म ज्यां ज्यां जोइए छीए त्यां त्यां आडो आवे छे.

(८) वडवा. भाद्रपद सुद १३ शनि. १९५२.

लौकिक दृष्टिमां वैराग्य भक्ति नथी; पुरुषार्थ करवानुं, अने सत्य रीते वर्तवानुं ध्यानमां ज आवतुं नथी. ते तो लोको भूली ज गयां छे.

माणसो वरसाद आवे त्यारे पाणी टांकामां भरी राखे छे, तेम मुमुक्षु जीवो आटलो आटलो उपदेश सांभळीने जराय ग्रहण करतां नथी; ते एक आश्चर्य छे. तेने उपकार केवी रीते थाय?

ज्ञानीओ दोष घटाडवा माटे अनुभवनां वचनो कहे छे; माटे तेवां वचनोनुं स्मरण करी

जो ते समजवामां आवे, श्रवण मनन थाय, तो सहजे आत्मा उज्वल थाय. तेम करवामां कांइ बहु मेहेनत नथी. तेवां वचनोनो विचार न करे, तो कोई दिवस पण दोष घटे नहीं.

सदाचार सेववा जोईए. ज्ञानीपुरुषोए दया, सत्य, अदत्तादान, ब्रह्मचर्य, परिग्रहप्रमाण वगेरे सदाचार कहेला छे. ज्ञानीओए जे सदाचारो सेववा कहेल छे ते यथार्थ छे; सेववायोग्य छे. वगर साक्षीए जीवे व्रत नियम करवां नहीं.

विषयकषायादि दोष गयाविना सामान्य आशयवाळा दया वगेरे आवे नहीं; तो पछी ऊंडा आशयवाळा दया वगेरे क्यांथी आवे? विषयकषायसहित मोक्षे जवाय नहीं. अंतःकरणनी शुद्धिविना आत्मज्ञान थाय नहीं. भक्ति ए सर्व दोषने क्षय करवावाळी छे; माटे ते सर्वोत्कृष्ट छे.

जीवे विकल्पना व्यापार करवा नहीं. विचारवान अविचारणा अने अकार्य करतां क्षोभ पामे. अकार्य करतां जे क्षोभ न पामे ते अविचारवान.

अकार्य करतां प्रथम जेटलो त्रास रहे छे तेटलो बीजी फेरे करतां रहेतो नथी. माटे प्रथमथी ज अकार्य करतां अटकवुं, दृढ निश्चय करी अकार्य करवुं नहीं.

सत्पुरुषो उपकारअर्थे जे उपदेश करे छे ते श्रवण करे, ने विचारे तो जीवना दोषो अवश्य घटे. पारसमणिनो संग थयो, ने लोढानुं सुवर्ण न थयुं तो कांतो पारसमणि नहीं. अने कांतो खरूं लोढुं नहीं. तेवी ज रीते जेना उपदेशथी सुवर्णमय आत्मा न थाय तो कांतो ते उपदेष्टा सत्पुरुष नहीं, अने कांतो सामो माणस योग्य जीव नहीं. **योग्य जीव अने खरा सत्पुरुष होय तो गुणो प्रगट्याविना रहे नहीं.**

लौकिक आलंबन न ज करवां. जीव पोते जागे तो बधां विपरीत कारणो मटी जाय. जेम कोई पुरुष घरमां निद्रावश थवाथी तेना घरमां कूतरां, बिलाडां वगेरे पेसी जवाथी नुकसान करे, अने पछी ते पुरुष जाग्या पछी नुकसान करनारां एवां जे कूतरां आदि प्राणीओ तेनो दोष काढे; पण पोतानो दोष काढतो नथी के हुं उंघी गयो तो आम थयुं; तेम जीव पोताना दोषो जोतो नथी. पोते जागृत रहेतो होय, तो बधां विपरीत कारणो मटी जाय; माटे पोते जागृत रहेवुं.

जीव एम कहे छे के मारा तृष्णा, अहंकार, लोभ आदि दोषो जता नथी. अर्थात् जीव पोतानो दोष काढतो नथी; अने दोषोनो वांक काढे छे. जेम सूर्यनो ताप बहु पडे छे, अने तेथी बहार नीकळातुं नथी; माटे सूर्यनो दोष काढे छे; पण छत्रि अने पगरखां सूर्यना तापथी रक्षणअर्थे बताव्यां छे तेनो उपयोग करतो नथी तेम. ज्ञानीपुरुषोए लौकिक भाव मूकी दई जे विचारथी पोताना दोषो घटाडेला, नाश करेला ते विचारो, अने ते उपायो ज्ञानीओ उपकारअर्थे कहे छे. ते श्रवण करी आत्मामां परिणाम पामे तेम करवुं.

कया प्रकारे दोष घटे? जीव लौकिक भाव कर्या करे छे, ने दोषो केम घटता नथी एम कह्या करे छे!

मुमुक्षुओए जागृत जागृत थई वैराग्य वधारवो जोईए. सत्पुरुषनुं एक वचन सांभळी पोताने विषे दोषो होवा माटे बहु ज खेद राखशे, अने दोष घटाडशे त्यारे ज गुण प्रगटशे. सत्संग-समागमनी जरूर छे. बाकी सत्पुरुष तो, जेम एक वटेमार्गु बीजा वटेमार्गुने रस्तो बतावी चाल्यो जाय छे तेम, बतावी चाल्या जाय छे. शिष्यो करवा माटे सत्पुरुषनी इच्छा नथी. दुराग्रह मट्यो तेने आत्मानुं भान थाय छे. भ्रान्ति जाय तो तरत सम्यक्त्व थाय.

बाहुबलिजीने जेम केवलज्ञान पासे, अंतरमां हतुं, कांई बहार नहोतुं; तेम सम्यक्त्व पोतानी-पासे ज छे.

जीव अहंकार राखे छे, असत् वचनो बोले छे, भ्रान्ति राखे छे, तेनुं तेने लगारे भान नथी. ए भान थयाविना निवेडो आववानो नथी.

शूरवीर वचनोने बीजां एके वचनो पहोंचे नहीं. जीवने सत्पुरुषनो एक शब्द पण समजायो नथी. मोटाई नडती होय तो मूकी देवी. कदाग्रहमां कंई ज हित नथी. शूरातन करीने आग्रह, कदाग्रहथी दूर रहेवुं; पण विरोध करवो नहीं.

ज्यारे ज्ञानीपुरुषो थाय छे त्यारे मतभेद, कदाग्रह घटाडी दे छे. ज्ञानी अनुकंपाअर्थे मार्ग बोधे छे. अज्ञानी कुगुरुओ मतभेद ठाम ठाम वधारी कदाग्रह चोकस करे छे.

साचा पुरुष मळे, ने तेओ जे कल्याणनो मार्ग बतावे ते ज प्रमाणे जीव वर्त्ते तो अवश्य कल्याण थाय. मार्ग विचारवानने पूछवो. सत्पुरुषना आश्रये सारां आचरणो करवां, खोटी बुद्धि सहुने हेरानकर्त्ता छे; पापनी कर्त्ता छे. ममत्व होय त्यां ज मिथ्यात्व. श्रावक सर्वे दयाळु होय. कल्याणनो मार्ग एक ज होय; सो बसो न होय. अंदरना दोषो नाश थशे, अने समपरिणाम आवशे तो ज कल्याण थशे.

मतभेदने छेदे ते ज साचा पुरुष. समपरिणामने रस्ते चढावे ते साचो संग. विचारवानने मार्गनो भेद नथी.

हिंदु अने मुसलमान सरखां नथी. हिंदुओना धर्मगुरुओ जे धर्मबोध कही गया हता ते बहु उपकार अर्थे कही गया हता. तेवो बोध पीराणा मुसलमानना शास्त्रोमां नथी. आत्मापेक्षाए कणबी, वाणीओ, मुसलमान नथी. तेनो जेने भेद मटी गयो ते ज शुद्ध; भेद भासे ते ज अनादिनी भूल छे. कुळाचार प्रमाणे जे साचुं मान्युं ते ज कषाय छे.

प्र०:–मोक्ष एटले शुं?

उ०:–आत्मानुं अत्यंत शुद्धपणुं ते, अज्ञानथी छूटी जवुं ते, सर्व कर्मथी मुक्त थवुं ते "मोक्ष." यथातथ्य ज्ञान प्रगट्ये मोक्ष. भ्रान्ति रहे त्यांसुधी आत्मा जगत्मां छे. अनादिकाळनुं एवुं जे चेतन तेनो स्वभाव जाणपणुं, ज्ञान छे, छतां भूली जाय छे ते शुं? जाणपणामां न्यूनता छे. यथातथ्य जाणपणुं नथी. ते न्यूनता केम मटे? ते जाणपणारूपी स्वभावने भूली न जाय; तेने वारंवार दृढ करे तो न्यूनता मटे.

ज्ञानीपुरुषनां वचनोनुं अवलंबन लेवाथी जाणपणुं थाय. साधन छे ते उपकारना हेतुओ छे. अधिकारिपणुं सत्पुरुषना आश्रये ले तो साधनो उपकारना हेतुओ छे. सत्पुरुषनी दृष्टिए चालवाथी ज्ञान थाय छे. सत्पुरुषोनां वचनो आत्मामां परिणाम पाम्ये मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, अशुभयोग वगेरे बधा दोषो अनुक्रमे मोळा पडे. आत्मज्ञान विचारवाथी दोषो नाश थाय छे. सत्पुरुषो पोकारी पोकारीने कही गया छे, पण जीवने लोकमार्गमां पडी रहेवुं छे; अने लोकोत्तर कहेवरावबुं छे; ने दोष केम जता नथी एम मात्र कह्या करवुं छे. लोकनो भय मूकी सत्पुरुषोनां वचनो आत्मामां परिणमावे तो सर्व दोष जाय. जीवे मारापणुं लाववुं नहीं. मोटाई, ने महत्ता मूक्या वगर सम्यक्त्वनो मार्ग आत्मामां परिणाम पामवो कठण छे.

वेदांतशास्त्रो वर्त्तमानमां स्वछंदथी वांचवामां आवे छे; ने तेथी शुष्कपणाजेवुं थई जाय छे. षड्दर्शनमां झगडो नथी; पण आत्माने केवल मुक्तदृष्टिए जोतां तीर्थंकरे लांबो विचार कर्यो छे. मूळ लक्षगत थवाथी जे जे वक्ता(सत्पुरुषो)ए कह्युं ते यथार्थ छे एम जणाशे.

आत्माने क्यारेय पण विकार न उपजे, तथा रागद्वेषपरिणाम न थाय त्यारे ज केवलज्ञान कहेवाय. षड्दर्शनवाळाए जे विचार कर्या छे तेथी आत्मानुं तेमने भान थाय छे, तारतम्यपणामां फेर पडे. षड्दर्शन पोतानी समजणे बेसाडे तो कोईवार बेसे नहीं. ते बेसवुं सत्पुरुषना आश्रये थाय. जेणे आत्मा असंग, अक्रिय विचार्यो होय तेने भ्रान्ति होय नहीं, संशय होय नहीं, आत्माना होवापणा संबंधमां प्रश्न रहे नहीं.

प्र०:—सम्यक्त्व केम जणाय?

उ०:—मांहीथी दशा फरे त्यारे सम्यक्त्वनी खबर एनी मेळे पडे. सत्देव एटले रागद्वेष ने अज्ञान जेनां क्षय थयां छे ते. सद्गुरु कोण कहेवाय? मिथ्यात्वग्रंथि जेनी छेदाणी छे ते. सद्गुरु एटले निर्ग्रंथ. सत्धर्म ज्ञानीपुरुषोए बोधेलो जे धर्म. आ त्रणे तत्त्व यथार्थ रीते जाणे त्यारे सम्यक्त्व थयुं गणाय.

अज्ञान टाळवा माटे कारणो (साधनो) बताव्यां छे. ज्ञाननुं स्वरूप ज्यारे जाणे त्यारे मोक्ष थाय.

परमवैदरूपी सद्गुरु मळे अने उपदेशरूपी दवा आत्मामां परिणाम पामे त्यारे रोग जाय; पण ते दवा अंतरमां न उतारे, तो तेनो कोई काळे रोग जाय नहीं. जीव खरेखरूं साधन करतो नथी. जेम आखा कुटुंबने ओळखवुं होय तो पहेलां एक जणने ओळखे तो बधानी ओळखाण थाय, तेम पहेलां सम्यक्त्वनुं ओळखाण थाय त्यारे बधा आत्माना गुणोरूपी कुटुंबनुं ओळखाण थाय. सम्यक्त्व सर्वोत्कृष्ट साधन कह्युं छे. बहारनी वृत्तिओ घटाडी अंतर् परिणाम करे, तो सम्यक्त्वनो मार्ग आवे. चालतां चालतां गाम आवे, पण वगर चाल्ये गाम न आवे. जीवने यथार्थ सत्पुरुषोनी प्रतीति थई नथी.

बहिरात्मामांथी अंतरात्मा थया पछी परमात्मपणुं प्राप्त थवुं जोईए. दूध ने पाणी जूदां छे

तेम सत्पुरुषना आश्रये, प्रतीतिए देह अने आत्मा जूदा छे एम भान थाय, अंतर्मां पोताना आत्मानुभवरूपे, जेम दूध ने पाणी जूदां थाय तेम देह अने आत्मा जूदा लागे त्यारे परमात्मपणुं प्राप्त थाय. जेने आत्माना विचाररूपी ध्यान छे, सतत निरंतर ध्यान छे, आत्मा जेने स्वप्नमां पण जूदो ज भासे, कोई वखत जेने आत्मानी भ्रान्ति थाय ज नहीं तेने ज परमात्मपणुं थाय.

अंतरात्मा निरंतर कषायादि निवारवा पुरुषार्थ करे छे. चौदमा गुणस्थानक सुधी ए विचार-रूपी क्रिया छे. जेने वैराग्य उपशम वर्त्ततो होय तेने ज विचारवान कहीए. आत्माओ मुक्त थया पछी संसारमां आवता नथी. आत्मा स्वानुभव छे, ते चक्षुथी देखातो नथी, इंद्रियथी रहित एवुं जे ज्ञान ते जाणे छे. आत्मानो उपयोग मनन करे ते मन छे. वळगणा छे तेथी मन जूदुं कहेवाय. संकल्प विकल्प मूकी देवो ते 'उपयोग.' ज्ञानने आवरण करनारूं निकाचितकर्म न बांध्युं होय तेने सत्पुरुषोनो बोध लागे. आयुष्नो बंध होय ते रोकाय नहीं.

जीवे अज्ञान ग्रह्युं छे तेथी उपदेश परिणमे नहीं. कारण, आवरणने लीधे परिणमवानो रस्तो नथी. ज्यांसुधी लोकना अभिनिवेशनी कल्पना कर्या करो त्यांसुधी आत्मा उंचो आवे नहीं; अने त्यांसुधी कल्याण पण थाय नहीं. घणा जीवो सत्पुरुषनो बोध सांभळे छे, पण तेने विचारवानो योग बनतो नथी.

इंद्रियोना निग्रहनुं न होवापणुं, कुळधर्मनो आग्रह, मान श्लाघानी कामना, अमध्यस्थपणुं ए कदाग्रह छे. ते कदाग्रह ज्यांसुधी जीव न मूके त्यांसुधी कल्याण थाय नहीं. नव पूर्व भण्यो तोय रखड्यो! चौद राजलोक जाण्यो पण देहमां रहेलो आत्मा न ओळख्यो; माटे रखड्यो ! ज्ञानीपुरुष बधी शंकाओ टाळी शके छे; पण तरवानुं कारण सत्पुरुषनी दृष्टिए चालवुं ते छे; अने तो ज दुःख मटे. आज पण पुरुषार्थ करे तो आत्मज्ञान थाय. जेने आत्मज्ञान नथी तेनाथी कल्याण थाय नहीं.

व्यवहार जेनो परमार्थ छे तेवा आत्मज्ञानीनी आज्ञाए वर्त्ते आत्मा लक्षगत थाय; कल्याण थाय.

आत्मज्ञान सहज नथी. 'पंचीकरण,' 'विचारसागर' वांचीने कथनमात्र मान्याथी ज्ञान थाय नहीं. जेने अनुभव थयो छे एवा अनुभविना आश्रये ते समजी तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्ते तो ज्ञान थाय. समज्याविना रस्तो भारे विकट छे. हीरो काढवा माटे खाण खोदवी ते मेहेनत छे, पण हीरो लेवो तेमां मेहेनत नथी. ते ज प्रमाणे आत्मासंबंधी समजण आववी दुर्लभ छे; नहीं तो आत्मा कंई दूर नथी. भान नथी तेथी दूर लागे छे. जीवने कल्याण करवुं, न करवुं तेनुं भान नथी; अने पोतापणुं राखवुं छे.

चोथे गुणस्थानके ग्रंथिभेद थाय. अगीआरमेथी पडे छे तेने 'उपशमसम्यक्त्व' कहेवाय. लोभ चारित्रने पाडनारो छे. चोथे गुणस्थानके उपशम अने क्षायिक बन्ने होय. उपशम एटले सत्तामां आवरणनुं रहेवुं. कल्याणनां खरेखरां कारणो जीवने धार्यामां नथी. जे शास्त्रो वृत्तिने संक्षेपे नहीं, वृत्तिने संकोचे नहीं परंतु वधारे तेवां शास्त्रोमां न्याय क्यांथी होय?

व्रत आपनारे अने व्रत लेनारे बन्नेए विचार तथा उपयोग राखवा. उपयोग राखे नहीं, ने भार राखे तो निकाचितकर्म बंधाय. 'ओछुं करवुं', परिग्रहमर्यादा करवी एम जेना मनमां होय ते शिथिल कर्म बांधे. पाप कर्ये कांई मुक्ति होय नहीं. एक व्रत मात्र लई अज्ञानने काढवा इच्छे छे तेवाने अज्ञान कहे छे के तारां कैक चारित्र हुं खाई गयो छुं; तेमां ते शुं मोटी वात छे?

जे साधनो बतावे ते तरवानां साधनो होय तो ज खरां साधन. बाकी निष्फळ साधन छे. व्यवहारमां अनंता भांगा उठे छे, तो केम पार आवे? कोई माणस उतावळो बोले तेने कषायी कहेवाय, कोई धीरजथी बोले तेने शान्ति देखाय, पण अंतर्परिणाम होय तो शांति कहेवाय.

जेने सुवानी एक पथारी जोईए ते दश घर मोकळां राखे तो तेवानी वृत्ति क्यारे संकोचाय? वृत्ति रोके तेने पाप नहीं. केटलाक जीवो एवा छे के वृत्ति न रोकाय एवां कारणो भेगां करे, आथी पाप रोकाय नहीं.

(९) भाद्रपद सुद १५. १९५२.

चौद राजलोकनी कामना छे ते पाप छे. माटे परिणाम जोवां. चौद राजलोकनी खबर नथी एम कदात् कहो, तोपण जेटलुं धार्युं तेटलुं तो नक्की पाप थयुं. मुनिने तणखलुं पण ग्रहवानी छूट नथी. गृहस्थ एटलुं ग्रहे तो तेटलुं तेने पाप छे.

जड ने आत्मा तन्मयपणे थाय नहीं. सुतरनी आंटी सुतरथी कांई जूदी नथी; पण आंटी काढवी तेमां विकटता छे; जो के सुतर घटे नही ने वधे नहीं. तेवी ज रीते आत्मामां आंटी पडी गई छे.

सत्पुरुष अने सत्शास्त्र ए व्यवहार कांई कल्पित नथी. सद्गुरु सत्शास्त्ररूपी व्यवहारथी स्वरूप शुद्ध थाय त्यारे केवल वर्त्ते. पोतानुं स्वरूप जाणवुं ते समकित. सत्पुरुषनुं वचन सांभळवुं दुर्लभ छे, श्रद्धवुं दुर्लभ छे, विचारवुं दुर्लभ छे तो अनुभववुं दुर्लभ होय तेमां शी नवाई?

उपदेशज्ञान अनादिनुं चाल्युं आवे छे. एकलां पुस्तकथी ज्ञान थाय नहीं. पुस्तकथी ज्ञान थतुं होय तो पुस्तकनो मोक्ष थाय! सद्गुरुनी आज्ञा प्रमाणे चालवुं एमां भूली जवाय तो पुस्तक अवलंबनभूत छे. चैतन्यपणुं गोखे तो चैतन्यपणुं प्राप्त थाय; चैतन्यपणुं अनुभवगोचर थाय ते. सद्गुरुनुं वचन श्रवण करे, मनन करे, ने आत्मामां परिणमावे तो कल्याण थाय.

ज्ञान अने अनुभव होय तो मोक्ष थाय. व्यवहारने निषेधवो नही. एकला व्यवहारने वळगी रहेवुं नहीं.

आत्मज्ञाननी वात सामान्य थई जाय एवी रीते करवी घटे नहीं. आत्मज्ञाननी वात एकांते कहेवी. आत्मानुं होवापणुं विचारवामां आवे तो अनुभववामां आवे; नहीं तो तेमां शंका थाय छे. जेम एक माणसने वधारे पडळथी देखातुं नथी तेम आवरणनी वळगणाने लीधे आत्माने थाय छे. उंघमां पण आत्माने सामान्यपणे जागृति छे. आत्मा केवळ उंघे नहीं; तेने आवरण आवे; आत्मा होय तो ज्ञान थाय. जड होय तो ज्ञान कोने थाय?

पोताने पोतानुं भान थवुं, पोते पोतानुं ज्ञान पामवुं ते जीवन्मुक्त थवुं.

चैतन्य एक होय तो भ्रान्ति कोने थई? मोक्ष कोनो थयो? बधा चैतन्यनी जाति एक; पण प्रत्येक चैतन्यनुं स्वतंत्रपणुं जूदुं चैतन्य छे. चैतन्यनो स्वभाव एक छे. मोक्ष स्वानुभवगोचर छे. निरावरणमां भेद नथी. परमाणु भेळां थाय नहीं एटले के आत्माने परमाणुनो संबंध नहीं त्यारे मुक्ति, पररूपमां नहीं मळवुं ते मुक्ति.

कल्याण करवुं, न करवुं तेनुं भान नथी; पण जीवने पोतापणुं राखवुं छे. बंध क्यांसुधी थाय? जीव चैतन्य न थाय त्यांसुधी. एकेंद्रियादिक योनि होय तोपण जीवनो ज्ञानस्वभाव केवळ लोपाई जाय नहीं, अंशे खुल्लो रहे छे. अनादि काळथी जीव बंधायो छे. निरावरण थया पछी बंधातो नथी. "हुं जाणुं छुं" एवुं अभिमान ते चैतन्यनुं अशुद्धपणुं. आ जगत्मां बंध ने मोक्ष न होत तो श्रुतिनो उपदेश कोने अर्थे? आत्मा स्वभावे केवळ अक्रिय छे; प्रयोगे क्रिय छे. ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे ज अक्रियपणुं कह्युं छे. निर्विवादपणे वेदांत विचारवामां अडचण नथी. आत्मा अर्हतपद विचारे तो अर्हत थाय. सिद्धपद विचारे तो सिद्ध थाय. आचार्य-पद विचारे तो आचार्य थाय. उपाध्यायनो विचार करे तो उपाध्याय थाय. स्त्रीरूप विचारे तो आत्मा स्त्री, अर्थात् जे स्वरूपने विचारे ते रूप भावात्मा थाय. आत्मा एक छे, के अनेक छे तेनी चिंता करवी नहीं. आपणे तो ए विचारवानी जरूर छे के "हुं एक छुं." जगत्ने भेळववानी शी जरूर छे? एक, अनेकनो विचार घणी आघी दशाए पहोंच्या पछी विचारवानो छे. जगत् ने आत्मा स्वप्ने पण एक जाणशो नहीं. आत्मा अचळ छे; निरावरण छे. वेदांत सांभळीने पण आत्माने ओळखवो. आत्मा सर्वव्यापक छे, के आत्मा देहने विषे छे ते अनुभव प्रत्यक्ष अनुभवगम्य छे.

बधा धर्मनुं तात्पर्य ए छे के आत्माने ओळखवो. बीजां बधां साधन छे ते जे ठेकाणे जोईए (घटे) ते ज्ञानीनी आज्ञाए वापरतां अधिकारी जीवने फळ थाय. दया वगेरे आत्माने निर्मल थवानां साधनो छे.

मिथ्यात्व, प्रमाद, अव्रत, अशुभयोग, ए अनुक्रमे जाय तो सत्पुरुषनुं वचन आत्मामां परिणाम पामे. तेथी बधा दोषो अनुक्रमे नाश पामे. आत्मज्ञान विचारथी थाय छे. सत्पुरुष तो पोकारी पोकारीने कही गया छे, पण जीव लोकमार्गे पड्यो छे? ने तेने लोकोत्तरमार्ग माने छे. आथी करी केमेय दोष जता नथी. लोकनो भय मूकी सत्पुरुषोनां वचनो आत्मामां परिणाम पामे तो सर्व दोष जाय. जीवे मारापणुं लाववुं नहीं; मोटाई अने महत्ता मूक्या वगर सम्यक्मार्ग आत्मामां परिणाम पामे नहीं.

ब्रह्मचर्यविषेः—परमार्थहेतुमाटे नदी उतरवाने टाढा पाणीनी मुनिने आज्ञा आपी, पण अब्रह्म-चर्यनी आज्ञा आपी नथी; ने तेने माटे कह्युं छे के अल्प आहार करजे, उपवास करजे, एकांतर करजे, छेवटे झेर खाईने मरजे, पण ब्रह्मचर्य भांगीश नहीं.

देहनी मूर्छा होय तेने कल्याण केम भासे? सर्प करडे ने भय न थाय त्यारे समजवुं के, आत्मज्ञान प्रगट्युं छे. आत्मा अजर अमर छे. "हुं" मरवानो नथी; तो मरणनो भय शो? जेने देहनी मूर्छा गई तेने आत्मज्ञान थयुं कहेवाय.

प्रश्नः—जीवे केम वर्त्तवुं?

समाधानः—सत्संगने योगे आत्मानुं शुद्धपणुं प्राप्त थाय तेम. पण सत्संगनो सदा योग नथी मळतो. जीवे योग्य थवा माटे हिंसा करवी नहीं; सत्य बोलवुं; अदत्त लेवुं नहीं; ब्रह्मचर्य पाळवुं; परिग्रहनी मर्यादा करवी; रात्रिभोजन करवुं नहीं ए आदि सदाचरण शुद्ध अंतःकरणे करवानुं ज्ञानीओए कह्युं छे; ते पण जो आत्माने अर्थे लक्ष राखी करवामां आवतां होय तो उपकारी छे; नहींतो पुण्ययोग प्राप्त थाय. तेथी मनुष्यपणुं मळे, देवतापणुं मळे, राज मळे, एक भवनुं सुख मळे, ने पाछुं चार गतिमां रझळवुं थाय; माटे ज्ञानीओए तप आदि जे क्रिया आत्माने उपकार अर्थे अहंकाररहितपणे करवा कही छे, ते परमज्ञानी पोते पण जगत्‌ना उपकारने अर्थे निश्चय करी सेवे छे.

महावीरस्वामीए केवलज्ञान उपज्या पछी उपवास कर्या नथी. तेम कोई कोई ज्ञानीए कर्या नथी, तथापि लोकोनां मनमां एम न आवे के ज्ञान थया पछी खावुं, पीवु सरखुं छे; तेटला माटे छेल्ली वखते तपनी आवश्यकता बताववा उपवास कर्यो. दानने सिद्ध करवा माटे दिक्षा लीधां पहेलां पोते वर्षी दान दीधुं. आथी जगत्‌ने दान सिद्ध करी आप्युं. मातापितानी सेवा सिद्ध करी आपी. दिक्षा नानी वयमां न लीधी ते उपकार अर्थे. नहींतो पोताने करवा, न करवानुं कांई नथी. जे साधन कह्यां छे ते आत्मलक्ष करवाने माटे छे. परना उपकारने अर्थे ज्ञानी सदाचरण सेवे छे.

हाल जैनमां घणो वखत थयां अवावरू कुवानी माफक आवरण आवी गयुं छे; कोई ज्ञानीपुरुष छे नहीं. केटलोक वखत थयां ज्ञानी थया नथी; केमके, नहींतो तेमां आटला बधा कदाग्रह थई जात नहीं. आ पंचमकाळमां सत्पुरुषनो जोग मळवो दुर्लभ छे; तेमां हालमां तो विशेष दुर्लभ जोवामां आवे छे; घणुंकरी पूर्वना संस्कारी जीव जोवामां आवता नथी. घणा जीवोमां कोईक खरो मुमुक्षु, जिज्ञासु जोवामां आवे छे. बाकी तो त्रण प्रकारना जीवो जोवामां आवे छे; जे बाह्यदृष्टिवाळा छेः—

१. "क्रिया करवी नहीं, क्रियाथी देवगति प्राप्त थाय; बीजुं कांई प्राप्त थतुं नथी. जेथी चार गति रझळवानुं मटे ते खरूं." एम कही सदाचरण, पुण्यना हेतु जाणी, करता नथी; अने पापनां कारणो सेवतां अटकता नथी. आ प्रकारना जीवोए कांई करवुं ज नहीं; अने मोटी मोटी वातो करवी एटलुं ज छे. आ जीवोने "अज्ञानवादी" तरीके मूकी शकाय.

२. "एकांतक्रिया करवी; तेथी ज कल्याण थशे." एवुं माननाराओ साव व्यवहारमां कल्याण

मानी कदाग्रह मूकता नथी. आवा जीवोने "क्रियावादी" अथवा "क्रियाजड" गणवा. क्रियाजडने आत्मानो लक्ष होय नहीं.

३. "अमने 'आत्मज्ञान' छे. आत्माने भ्रान्ति होय ज नहीं; आत्मा कर्त्ताय नथी; ने भोक्ताय नथी; माटे कांई नथी." आवुं बोलनाराओ "शुष्क अध्यात्मी," पोला ज्ञानी थई बेसी अनाचार सेवतां अटके नहीं.

आवा त्रण प्रकारना जीवो हालमां जोवामां आवे छे. जीवे जे कांई करवानुं छे ते आत्माना उपकार अर्थे करवानुं छे ते वात तेओ भूली गया छे. हालमां जैनमां चोरासीथी सो गच्छ थई गया छे. ते बधामां कदाग्रहो थई गया छे; छतां तेओ बधा कहे छे के "जैनधर्म अमारो छे."

'पडिक्कमामि, निंदामि' आदि पाठनो लौकिकमां हाल एवो अर्थ थई गयो जणाय छे के "आत्माने वोसरावुं छुं." एटले जेनो अर्थ, उपकार करवानो छे तेने ज, आत्माने ज भूली गया छे. जेम जान जोडी होय, अने विध विध वैभव वगेरे होय, पण जो एक वर न होय तो न शोभे; अने वर होय तो शोभे; तेवी रीते क्रिया वैराग्यादि जो आत्मानुं ज्ञान होय तो शोभे; नहीं तो न शोभे. जैनमां हालमां आत्मानो भूलावो थई गयो छे.

सूत्रो, चौदपूर्वनुं ज्ञान, मुनिपणुं, श्रावकपणुं, हजारो जातनां सदाचरण, तपश्चर्या आदि जे जे साधनो जे जे मेहेनतो जे जे पुरुषार्थ कह्यां छे ते एक आत्माने ओळखवा माटे. ते प्रयत्न जो आत्माने ओळखवा माटे, शोधी काढवा माटे–आत्माने अर्थे थाय तो सफळ छे; नहींतो निष्फळ छे; जो के तेथी बाह्य फळ थाय; पण चार गतिनो छेद थाय नहीं. जीवने सत्पुरुषनो जोग थाय, अने लक्ष थाय, तो ते सहेजे योग्य जीव थाय; अने पछी सद्गुरुनी आस्था होय, तो सम्यक्त्व थाय.

शम=क्रोधादि पातळां पाडवां ते.
संवेग=मोक्षमार्ग शिवाय बीजी कोई इच्छा नहीं ते.
निर्वेद=संसारथी थाकी जवुं ते, संसारथी अटकी जवुं ते.
आस्था=साचा गुरुनी, सद्गुरुनी आस्था थवी ते.
अनुकंपा=सर्व प्राणीपर समभाव राखवो ते, निर्वैरबुद्धि राखवी ते.

आ गुणो समकिती जीवमां सहेजे होय. प्रथम साचा पुरुषनुं ओळखाण थाय, तो पछी आ चार गुणो आवे. वेदांतमां विचार अर्थे षड्र संपत्ति बतावी छे. विवेक वैराग्यादि सद्गुण प्राप्त थया पछी जीव योग्य, मुमुक्षु कहेवाय.

समकित छे ते देशचारित्र छे; देशे केवलज्ञान छे. शास्त्रमां आ काळमां मोक्षनो साव निषेध नथी. जेम आगगाडीनो रस्तो छे तेनी मारफते वहेलां जवाय, ने पगरस्ते मोडा जवाय तेम आ काळमां मोक्षनो रस्तो पगरस्ता जेवो होय तो तेथी न पहोंचाय एम कांई नथी; वहेला चाले तो वहेला जवाय; कांई रस्तो बंध नथी. आ रीते मोक्षमार्ग छे; तेनो नाश नथी.

अज्ञानी अकल्याणना मार्गमां कल्याण मानी, स्वछंदे कल्पना करी, जीवोने तरवानुं बंध करावी दे छे. अज्ञानीना रागी बाळाभोळा जीवो अज्ञानीना कह्याप्रमाणे चाले छे; अने तेवां कर्मनां बांधेलां बन्ने माठी गतिने प्राप्त थाय छे. आवो कुटारो जैनमां विशेष थयो छे.

नय आत्माने समजवा अर्थे कह्या छे; पण जीवो तो नयवादमां गुंचवाई जाय छे. आत्मा समजाववा जतां नयमां गुंचवाई जवाथी ते प्रयोग अवळो पड्यो. समकितदृष्टि जीवने 'केवल ज्ञान' कहेवाय. वर्त्तमानमां भान थयुं छे माटे 'देशकेवल ज्ञान' थयुं कहेवाय; बाकी तो आत्मानुं भान थयुं एटले केवलज्ञान. ते आ रीते कहेवायः—समकितदृष्टिने आत्मानुं भान थाय त्यारे तेने केवलज्ञाननुं भान प्रगट्युं; अने भान प्रगट्युं एटले केवलज्ञान अवश्य थवानुं; माटे आ अपेक्षाए समकितदृष्टिने केवलज्ञान कह्युं छे. सम्यक्त्व थयुं एटले जमीन खेडी झाड वाव्युं, झाड थयुं, फळ थयां, फळ थोडां खाधां, खातां खातां आयुष् पुरुं थयुं; तो पछी बीजे भव फळ खवाय. माटे 'केवलज्ञान' आ काळमां नथी नथी एवुं अवळुं मानी लेवुं नही; अने कहेवुं नहीं. सम्यक्त्व प्राप्त थतां अनंता भव मटी एक भव आडो रह्यो. माटे सम्यक्त्व उत्कृष्ट छे. आत्मामां केवलज्ञान छे. पण आवरण टळ्ये केवलज्ञान होय. आ काळमां संपूर्ण आवरण टळे नहीं, एक भव बाकी रहे; एटले जेटलुं केवलज्ञानावरणीय जाय तेटलुं केवलज्ञान थाय छे. समकित आव्ये मांही, अंतर्मां दशा फरे; केवलज्ञाननुं बीज प्रगट थयुं. सद्गुरुविना मार्ग नथी, एम मोटा पुरुषोए कह्युं छे. आ उपदेश वगर कारणे कर्यो नथी.

समकिती एटले मिथ्यात्वमुक्त; केवलज्ञानी एटले चारित्रावरणथी संपूर्णपणे मुक्त; अने सिद्ध एटले देहादिथी संपूर्णपणे मुक्त.

प्रश्नः—कर्म ओछां केम थाय?

उत्तरः—क्रोध न करे, मान न करे, माया न करे, लोभ न करे. तेथी कर्म ओछां थाय.

बाह्यक्रिया करीश त्यारे मनुष्यपणुं मळशे; अने कोई दिवस साचा पुरुषनो जोग मळशे.

प्रश्नः—व्रतनियम करवां के नहीं?

उत्तरः—व्रत नियम करवानां छे. तेनी साथे कजीआ, कंकास, छोकरां छैयां अने घरमां मारापणुं करवुं नहीं. उंची दशाए जवा माटे व्रतनियम करवां.

साचा खोटानी परीक्षा करवी ते उपर एक साचा भक्तनुं दृष्टांतः—एक राजा बहु भक्तिवाळो हतो; अने तेथी भक्तोनी सेवा बहु करतो; घणा भक्तोनुं अन्न वस्त्रादिथी पोषण करतां घणा भक्तो भेगा थया. प्रधाने जाण्युं के राजा भोळो छे; भक्तो ठगी खानारा छे; माटे तेनी राजाने परीक्षा कराववी, पण हाल राजाने प्रेम बहु छे तेथी मानशे नहीं; माटे कोई अवसरे वात; एम विचारी केटलोक वखत खमी जतां कोई अवसर मळवाथी तेणे राजाने कह्युं "आप घणो वखत थया बधा भक्तोनी सरखी सेवा चाकरी करो छो; पण तेमां कोई मोटा हशे, कोई नाना हशे. माटे बधाने ओळखीने भक्ति करो." त्यारे राजाए हा कही कह्युं; "त्यारे केम करवुं?"

राजानी रजा लई प्रधाने बे हजार भक्तो हता ते बधाने भेगा करी कहेवराव्युं के तमे दरवाजा बहार आवजो, केमके राजाने जरूर होवाथी आजे भक्ततेल काढवुं छे. तमे बधा घणा दिवस थयां राजानो मालमसालो खाओ छो; तो आजे राजानुं आटलुं काम तमारे करवुं ज जोईए. घाणीमां घाली तेल काढवानुं सांभळ्युं के बधा भक्तोए तो भागवा मांड्युं; अने नासी गया. एक साचो भक्त हतो तेणे विचार कर्यो के राजानुं निमक, लुण खाधुं छे तो तेना प्रत्ये निमकहराम केम थवाय? राजाए परमार्थ जाणी अन्न दीधुं छे; माटे राजा गमे तेम करे तेम करवा देवुं. आम विचारी घाणी पासे जई कह्युं के "तमारे 'भक्ततेल' काढवुं होय तो काढो." पछी प्रधाने राजाने कह्युं: "जुओ, तमे बधा भक्तोनी सेवा करता हता; पण साचा खोटानी परीक्षा न होती." जुओ, आ रीते, साचा जीवो तो विरला ज होय; अने तेवा **विरल साचा सद्गुरुनी भक्ति श्रेयकर छे. साचा सद्गुरुनी भक्ति मन, वचन अने कायाए करवी.**

एक वात समजाय नहीं त्यांसुधी बीजी वात सांभळवी शुं कामनी? सांभळेलुं भूलवुं नहीं. एकवार जम्या ते पच्यावगर बीजुं खावुं नहीं तेनी पेठे. तप वगेरे करवां ते कांई महाभारत वात नथी; माटे तप करनारे अहंकार करवो नहीं. तप ए नानामां नानो भाग छे. भूखे मरवुं ने उपवास करवा तेनुं नाम तप नथी. मांहीथी शुद्ध अंतःकरण थाय त्यारे तप कहेवाय; अने तो मोक्षगति थाय. बाह्य तप शरीरथी थाय. तप छ प्रकारे:—१. अंतर्वृत्ति थाय ते. २. एक आसने कायाने बेसाडवी ते. ३. ओछो आहार करवो ते. ४. नीरस आहार करवो अने वृत्तिओ ओछी करवी ते. ५. संलीनता. ६. आहारनो त्याग ते.

तिथिने अर्थे उपवास करवाना नथी; पण आत्माने अर्थे उपवास करवाना छे. बार प्रकारे तप कह्या छे. तेमां आहार न करवो ते तप जिव्हाइंद्रिय वश करवानो उपाय जाणीने कह्यो छे. जिव्हाइंद्रिय वश करी, तो बधी इंद्रियो वश थवानुं निमित्त छे. उपवास करो तेनी वात बहार न करो; बीजानी निंदा न करो; क्रोध न करो; जो आवा दोषो घटे तो मोटो लाभ थाय. **तपादि आत्माने अर्थे करवानां छे; लोकने देखाडवा अर्थे करवानां नथी. कषाय घटे तेने 'तप' कह्यो छे.** लौकिक दृष्टि भूली जवी.

सहु सामायिक करे छे, ने कहे छे के ज्ञानी स्वीकारे ते खरूं. समकित हशे के नहीं ते पण ज्ञानी स्वीकारे ते खरूं. पण ज्ञानी स्वीकारे शुं? अज्ञानी स्वीकारे तेवुं तमारूं सामायिक व्रत अने समकित छे! अर्थात् वास्तविक सामायिक व्रत अने समकित तमारां नथी. मन, वचन अने काया व्यवहारसमतामां स्थिर रहे ते समकित नहीं. जेम उंघमां स्थिर योग मालुम पडे छे छतां ते वस्तुतः स्थिर नथी; अने तेटला माटे ते समता पण नथी. मन, वचन, काया चौदमा गुणस्थानक सुधी होय; मन तो कार्य कर्यावगर बेसतुं ज नथी. केवलीना मनयोग चपळ होय, पण आत्मा चपळ होय नहीं. आत्मा चोथे गुणस्थानके चपळ होय, पण सर्वथा नहीं. 'ज्ञान' एटले आत्माने यथातथ्य जाणवो ते. 'दर्शन' एटले आत्मानी यथातथ्य प्रतीति ते. 'चारित्र'

एटले आत्मा स्थिर थाय ते. आत्मा ने सद्गुरु एक ज समजवा. आ वात विचारथी ग्रहण थाय छे. ते विचार ए के देह नहीं अथवा देहने लगता बीजा भाव नहीं, पण सद्गुरुनो आत्मा ए सद्गुरु छे. जेणे आत्मस्वरूप लक्षणथी, गुणथी अने वेदनथी प्रगट अनुभव्युं छे अने ते ज परिणाम जेना आत्मानुं थयुं छे ते आत्मा अने सद्गुरु एक ज एम समजवानुं छे. पूर्वे जे अज्ञान भेळुं कर्युं छे ते खसे तो ज्ञानीनी अपूर्व वाणी समजाय.

खोटी वासना=धर्मना खोटा स्वरूपने खरूं जाणवुं ते.

तप आदिक पण ज्ञानीनी कसोटी छे. शाताशीलयुं वर्त्तन राख्युं होय, अने अशाता आवे, तो ज्ञान मंद थाय छे.

विचारवगर इंद्रियो वश थवानी नथी. अविचारथी इंद्रियो दोडे छे. निवृत्ति माटे उपवास बताव्या छे. हालमां केटलाक अज्ञानी जीवो उपवास कर्यो होय त्यारे दुकाने बेसे छे, अने तेने पोषध ठरावे छे. आवा कल्पित पोषध जीवे अनादि काळथी कर्या छे. ते बधा ज्ञानीओए निष्फळ ठराव्या छे. **स्त्री, घर, छोकरां छैयां भूली जवाय त्यारे सामायिक कर्युं कहेवाय.** व्यवहारसामायिक बहु निषेधवा जेवुं नथी; जो के साव जड व्यवहाररूप सामायिक करी नांखेल छे. ते करनारा जीवोने खबर पण नथी होती के आथी कल्याण शुं थशे? सम्यक्त्व पहेलुं जोईए. जे वचन सांभळवाथी आत्मा स्थिर थाय ते सत्पुरुषनां वचन श्रवण थाय तो पछी सम्यक्त्व थाय. सामान्य विचारने लईने, इंद्रियो वश करवा छ कायनो आरंभ कायाथी न करतां वृत्ति निर्मळ थाय त्यारे सामायिक थई शके.

भवस्थिति, पंचमकाळमां मोक्षनो अभाव आदि शंकाओथी जीवे बाह्य वृत्ति करी नांखी छे. पण जो आवा जीवो पुरुषार्थ करे, ने पंचमकाळ मोक्ष थतां हाथ झालवा आवे त्यारे तेनो उपाय अमे लईशुं. ते उपाय कांई हाथी नथी, जळहळतो अग्नि नथी. मफतनो जीवने भडकावी दीधो छे. जीवने पुरुषार्थ करवो नथी; अने तेने लईने बहानां काढवां छे. आ पोतानो वांक समजवो. समतानी, वैराग्यनी वातो सांभळवी, विचारवी. बाह्य वातो जेम बने तेम मूकी देवी. **जीव तरवानो कामी होय, ने सद्गुरुनी आज्ञाए वर्त्ते, तो बधी वासनाओ जती रहे.**

सद्गुरुनी आज्ञामां बधां साधनो शमाई गया. जे जीवो तरवाना कामी होय छे तेमां बधी वासनानो नाश थाय छे. जेम कोई सो पचास गाऊ वेगळो होय, तो बे चार दिवसे पण घर भेगो थाय, पण लाखो गाऊ वेगळो होय ते एकदम घर भेगो क्यांथी थाय? तेम आ जीव कल्याणमार्गथी थोडो वेगळो होय, तो तो कोईक दिवस कल्याण पामे, पण ज्यां साव ऊंधे रस्ते होय त्यां क्यांथी पार पामे?

देहादिनो अभाव थवो, मूर्छानो नाश थवो ते ज मुक्ति. एक भव जेने बाकी रह्यो होय तेने देहनी एटली बधी चिंता न जोईए. अज्ञान गया पछी एक भव कांई विशातमां नथी. लाखो भव गया त्यारे एक भव तो शुं हिसाबमां?

होय मिथ्यात्व, ने माने छट्ठुं के सातमुं गुणस्थानक, तेनुं शुं करवुं? चोथा गुणस्थानकनी स्थिति केवी होय? गणधर जेवी मोक्षमार्गनी परम प्रतीति आवे (एवी).

तरवानो कामी होय ते माथुं कापीने आपतां पाछो हठे नहीं. शिथिल होय ते सहेज कुलक्षण होय ते पण मूकी शके नहीं. **वीतराग जे वचन कहेतां डर्या छे ते अज्ञानी स्वछंदे करी कहे छे; तो ते केम छूटशे?**

महावीरस्वामिना दिक्षाना वरघोडानी वातनुं स्वरूप जो विचारे तो वैराग्य थाय. ए वात अद्भुत छे. ते भगवान् अप्रमादी हता. तेओने चारित्र वर्त्तुं हतुं, पण ज्यारे बाह्यचारित्र लीधुं त्यारे मोक्षे गया.

अविरति शिष्य होय तो तेनी सरभरा केम कराय? रागद्वेष मारवा माटे नीकळ्यो, अने तेने तो काममां आण्या त्यारे रागद्वेष क्यांथी जाय? जिननां आगमनो जे समागम थयो होय, ते तो पोताना क्षयोपशम प्रमाणे थयो होय, पण सद्गुरुना जोग प्रमाणे न थयो होय. सद्गुरुनो जोग मळ्ये तेनी आज्ञा प्रमाणे चाल्यो तेनो खरेखरो रागद्वेष गयो.

गंभीर रोग मटाडवा माटे खरी दवा तरत फळ आपे छे. ताव तो एक बे दिवसे पण मटे.

मार्ग अने उन्मार्गनुं ओळखाण थवुं जोईए. तरवानो कामी ए शब्द वापरो त्यां अभव्यनुं प्रश्न थतुं नथी. कामीमां पण भेद छे.

प्रश्नः—सत्पुरुष केम ओळखाय?

उत्तरः—सत्पुरुषो तेमनां लक्षणोथी ओळखाय. सत्पुरुषोनां लक्षणोः—तेओनी वाणीमां पूर्वापर अविरोध होय, तेओ क्रोधनो जे उपाय कहे तेथी क्रोध जाय, माननो जे उपाय कहे तेथी मान जाय. ज्ञानीनी वाणी परमार्थरूप ज होय छे. ते अपूर्व छे. ज्ञानीनी वाणी बीजा अज्ञानीनी वाणीनी उपर ने उपर ज होय. ज्यांसुधी ज्ञानीनी वाणी सांभळी नथी, त्यांसुधी सूत्रो पण छाशबाकळां जेवां लागे. सद्गुरु अने असद्गुरुनुं ओळखाण, सोनानी अने पीतळनी कंठीना ओळखाणनी पेठे थवुं जोईए. तरवाना कामी होय, अने सद्गुरु मळे, तो कर्म टळे. सद्गुरु कर्म टाळवानुं कारण छे. कर्मो बांधवानां कारणो मळे तो कर्म बंधाय, अने कर्म टाळवानां कारणो मळे तो कर्म टळे. तरवाना कामी होय ते भवस्थिति आदिनां आलंबन खोटां कहे छे. तरवाना कामी कोने कहेवाय? जे पदार्थने ज्ञानी झेर कहे तेने झेर जाणी मूके, अने ज्ञानीनी आज्ञा आराधे तेने तरवाना कामी कहेवाय.

उपदेश सांभळवानी खातर सांभळवाना कामीए कर्मरूप गोदडुं ओढ्युं छे तेथी उपदेशरूप लाकडी लागती नथी. तरवाना कामी होय तेणे धोतीआरूप कर्म ओढ्यां छे तेथी उपदेशरूप लाकडी पहेली लागे. शास्त्रमां अभव्यना तार्या तरे एम कह्युं नथी. चोभंगीमां* एम अर्थ नथी. ढुंढियाना धरमशी नामना मुनिए एनी टीका करी छे. पोते तर्या नथी, ने बीजाने तारे छे एनो अर्थ आंधळो मार्ग बतावे तेवो छे. असद्गुरुओ आवां खोटां आलंबन दे छे.†

* जुओ अं. ४५१. † आ पछीना त्रण पारा अ. ६३८ मां आवी गया छे. म. कि.

'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति' नामना जैनसूत्रमां एम कह्युं छे के आ काळमां मोक्ष नथी. आ उपरथी एम न समजवुं के मिथ्यात्वनुं टळवुं, अने ते मिथ्यात्व टळवारूप मोक्ष नथी. मिथ्यात्व टळवारूप मोक्ष छे; पण सर्वथा एटले आत्यंतिक देहरहित मोक्ष नथी. आ उपरथी एम कही शकाय के सर्व प्रकारनुं केवलज्ञान होय नहीं, बाकी सम्यक्त्व होय नहीं एम होय नहीं. आ काळमां मोक्षना नहीं होवापणानी आवी वातो कोई कहे ते सांभळवी नहीं. सत्पुरुषनी वात पुरुषार्थने मंद करवानी होय नहीं, पुरुषार्थने उत्तेजन आपवानी होय.

झेर ने अमृत सरखां छे एम ज्ञानीओए कह्युं होय तो ते अपेक्षित छे. झेर अने अमृत सरखां कहेवाथी झेर ग्रहण करवानुं कह्युं छे एम नथी. आज रीते शुभ अशुभ बन्ने क्रियाना संबंधमां समजवुं. क्रिया, शुभ अने अशुभ नो निषेध कह्यो होय तो मोक्षनी अपेक्षाए छे. तेथी करी शुभ अने अशुभ क्रिया सरखी छे एम गणी लई शुभ क्रिया करवी नहीं, एवुं ज्ञानीपुरुषनुं कथन होय ज नहीं. सत्पुरुषनुं वचन अधर्ममां धर्मनुं स्थापन करवानुं होय ज नहीं.

जे क्रिया करवी ते निर्दंभपणे, निरहंकारपणे करवी; क्रियाना फळनी आकांक्षा राखवी नहीं. शुभ क्रियानो कांई निषेध छे ज नहीं, पण ज्यां ज्यां मात्र बाह्य क्रियाथी ज मोक्ष मान्यो छे त्यां त्यां निषेध छे.

शरीर ठीक रहे ते पण एक जातनी समाधि. मन ठीक रहे ते पण एक जातनी समाधि. सहजसमाधि एटले बाह्यकारणो वगरनी समाधि. तेनाथी प्रमादादि नाश थाय. जेने आ समाधि वर्त्ते छे तेने कोई लाख रुपीआ आपे तो आनंद थाय नहीं; के कोई पडावी ले तो खेद थाय नहीं. जेने शाता अशाता बन्ने समान छे तेने सहजसमाधि कही. समकितदृष्टिने अल्प हर्ष, अल्प शोक कचित् थई आवे पण पाछो समावेश पामी जाय, अंगनो हर्ष न रहे, खेद थाय तेवो खेंची ले. ते "आम थवुं न घटे" एम विचारे छे, अने आत्माने निंदे छे. हर्ष शोक थाय तोपण तेनुं (समकितनुं) मूळ जाय नहीं. समकितदृष्टिने अंशे सहज प्रतीति प्रमाणे सदाय समाधि छे. कनकवानी दोरी जेम हाथमां छे तेम समकितदृष्टिना हाथमां तेनी वृत्तिरूपी दोरी छे.

समकितदृष्टि जीवने सहजसमाधि छे. सत्तामां कर्म रह्यां होय, पण पोताने सहजसमाधि छे. बहारनां कारणोथी तेने समाधि नथी, आत्मामांथी मोह गयो ते ज समाधि छे. पोताना हाथमां दोरी नथी तेथी मिथ्यादृष्टि बहारनां कारणोमां तदाकार थई जई ते रूप थई जाय छे.

समकितदृष्टिने बहारनां दुःख आव्ये खेद होय नहीं; जो के रोग आवे एवुं इच्छे नहीं, पण रोग आव्ये रागद्वेषपरिणाम थाय नहीं.

शरीरनो धर्म, रोगादि जे होय ते केवलीने पण थाय; केमके वेदनीयकर्म छे ते तो सर्वेए भोगववुं ज जोईए. समकित आव्यावगर कोईने सहजसमाधि थाय नहीं. समकित थवाथी सहेजे समाधि थाय. समकित थवाथी सहेजे आसक्तभाव मटी जाय. बाकी आसक्तभावने अमस्थी ना कहेवाथी बंध रहे नहीं. सत्पुरुषना वचनप्रमाणे, तेनी आज्ञाप्रमाणे वर्त्ते तेने समकित अंशे थयुं.

बीजी बधा प्रकारनी कल्पनाओ मूकी, प्रत्यक्ष सत्पुरुषनी आज्ञाए वचन सांभळवां; तेनी साची श्रद्धा करवी, ते आत्मामां परिणमाववां तो समकित थाय. शास्त्रमां कहेल महावीरस्वामीनी आज्ञाथी दरेक जीव वर्त्ते तेवा प्रकारना जीवो हालमां नथी; माटे प्रत्यक्षज्ञानी जोईए. काळ विकराळ छे. कुगुरुओए लोकने अवळो मार्ग बतावी भूलाव्या छे; मनुष्यपणुं लूंटी लीधुं छे; एटले जीव मार्गमां केम आवे? जो के कुगुरुओए लूंटी लीधा छे, पण तेमां ते बिचाराओनो वांक नथी, केमके ते मार्गनी खबर नथी. मिथ्यात्वरूपी बरोळनी गांठ मोटी छे, माटे बधो रोग क्यांथी मटे? जेनी ग्रंथि छेदाई तेने सहजसमाधि थाय, केमके जेनुं मिथ्यात्व छेदायुं तेनी मूळ गांठ छेदाई; अने तेथी बीजा गुणो प्रगटे ज.

साचा पुरुषनो बोध प्राप्त थवो ते अमृत प्राप्त थवा बरोबर छे. अज्ञानी गुरुओए बिचारा मनुष्योने लूंटी लीधा छे. कोई जीवने गच्छनो आग्रह करावी, कोईने मतनो आग्रह करावी, न तराय एवां आलंबनो दईने साव लूंटी लई मूंझवी नांख्या छे;—मनुष्यपणुं लूंटी लीधुं छे.

समोवसरणथी भगवाननी ओळखाण थाय ए बधी कडाकूट मूकी देवी. लाख समोवसरण होय, पण ज्ञान न होय तो कल्याण थाय नहीं. ज्ञान होय तो कल्याण थाय. भगवान् माणस जेवा माणस हता. तेओ खाता, पीता, बेसता, उठता. एवो फेर नथी. फेर बीजो ज छे. समोवसरणादिना प्रसंगो लौकिक भावना छे. भगवाननुं स्वरूप एवुं नथी. भगवाननुं स्वरूप साव निर्मळ आत्मा संपूर्ण ज्ञान प्रगट्ये छे तेवुं छे. संपूर्ण ज्ञान प्रगटे ते ज भगवाननुं स्वरूप. वर्त्तमानमां भगवान् होत तो तमे मानत नहीं. भगवाननुं महात्म्य ज्ञान छे. **भगवानना स्वरूपनुं चिंतवन करवाथी आत्मा भानमां आवे; पण भगवानना देहथी भान प्रगटे नहीं.** जेने संपूर्ण ऐश्वर्य प्रगटे तेने भगवान् कहेवाय. जेम भगवान् वर्त्तमान होत, अने तमने बतावत नो मानत नहीं, तेम वर्त्तमानमां ज्ञानी होय तो मनाय नहीं. स्वधाम पहोंच्या पछी कहे के एवा ज्ञानी थवा नथी. पछवाडेथी जीवो तेनी प्रतिमाने पूजे, पण वर्त्तमानमां प्रतीत न करे. जीवने ज्ञानीनुं ओळखाण वर्त्तमानमां थतुं नथी.

समकितने खरेखरूं विचारे तो नवमे समये केवलज्ञान थाय; नहींतो एक भवमां केवलज्ञान थाय; छेवटे पंदरमे भवे केवलज्ञान थाय ज. माटे समकित सर्वोत्कृष्ट छे. जूदा जूदा विचारभेदो आत्मामां लाभ थवा अर्थे कह्या छे; पण भेदमां ज आत्माने घूमाववा कह्या नथी. दरेकमां परमार्थ होवो जोईए.

समकितीने केवलज्ञाननी इच्छा नथी!

अज्ञानी गुरुओए लोकोने अवळे मार्गे चढावी दीधा छे. अवळुं झलावी दीधुं छे, एटले लोको गच्छ, कुळ आदि लौकिक भावमां तदाकार थई गया छे. अज्ञानीओए लोकने साव अवळो ज मार्ग समजावी दीधो छे. तेओना संगथी आ काळमां अंधकार थई गयो छे. अमारी कहेली दरेके दरेक वात संभारी संभारी पुरुषार्थ विशेषपणे करवो. गच्छादिना कदाग्रहो मूकी

देवा जोईए. जीव अनादि काळथी रखड्यो छे. समकित थाय तो सहेजे समाधि थाय; अने परिणामे कल्याण थाय. जीव सत्पुरुषना आश्रये जो आज्ञादि खरेखर आराधे, तेना उपर प्रतीत आणे, तो उपकार थाय ज.

एक तरफथी चौद राजलोकनुं सुख होय, अने बीजी तरफ सिद्धना एक प्रदेशनुं सुख होय तोपण सिद्धना एक प्रदेशनुं सुख अनंतुं थई जाय.

वृत्तिने गमे तेम रोकवी; ज्ञानविचारथी रोकवी; लोकलाजथी रोकवी; उपयोगथी रोकवी; गमे तेम करीने पण वृत्तिने रोकवी. **मुमुक्षुओए कोई पदार्थविना चाले नहीं एवुं राखवुं नहीं.**

जीव मारापणुं माने छे ते ज दुःख छे, केमके मारापणुं मान्युं के चिंता थई के केम थशे? केम करीए? चितामां जे स्वरूप थई जाय छे ते ज अज्ञान छे. विचारथी करी, ज्ञाने करी जोईए, तो कोई मारूं नथी एम जणाय. जो एकनी चिंता करो, तो आखा जगत्नी चिंता करवी जोईए. माटे दरेक प्रसंगे मारापणुं थतुं अटकाववुं; तो चिंता, कल्पना पातळी पडशे. तृष्णा जेम बने तेम पातळी पाडवी. विचार करी करीने तृष्णा ओछी करवी. आ देहने पचास रूपीआनो खर्च जोईए तेने बदले हजारो लाखोनी चिंता करी ते अग्निए आखो दिवस बळ्या करे छे. बाह्य उपयोग तृष्णानी वृद्धि थवानुं निमित्त छे. जीव मोटाईने लीधे तृष्णा वधारे छे. ते मोटाई राखीने मुक्तपणुं थतुं नथी. जेम बने तेम मोटाई, तृष्णा पातळां पाडवां. निर्धन कोण? धन मागे, इच्छे ते निर्धन; जे न मागे ते धनवान छे. जेने विशेष लक्ष्मीनी तृष्णा तेनी दुःखधा, बळत्रा छे; तेने जरा पण सुख नथी. लोक जाणे छे के श्रीमंत सुखी छे, पण वस्तुतः तेने रोमे रोमे बळत्रा छे. माटे तृष्णा घटाडवी.

आहारनी वात एटले खावाना पदार्थोनी वात तुच्छ छे. ते करवी नहीं. विहारनी एटले क्रीडानी वात घणी तुच्छ छे. निहारनी वात ते पण घणी तुच्छ छे. शरीरनुं शातापणुं के दीनपणुं ए बधी तुच्छपणानी वात करवी नहीं. आहार विष्ठा छे. विचारो के खाधा पछी विष्ठा थाय छे. विष्ठा गाय खाय तो दूध थाय छे; ने वळी खेतरमां खातर नांखतां अनाज थाय छे. आवी रीते उत्पन्न थयेल अनाजनो जे आहार तेने विष्ठातुल्य जाणी, तेनी चर्चा न करवी. ते तुच्छ वात छे.

सामान्य जीवोथी साव मौनपणे रहेवाय नहीं; ने रहे तो अंतरनी कल्पना मटे नहीं; अने ज्यांसुधी कल्पना होय त्यांसुधी तेने माटे रस्तो काढवो ज जोईए. एटले पछी लखीने कल्पना बहार काढे. परमार्थकाममां बोलवुं. व्यवहारकाममां प्रयोजन वगर लवारी करवी नहीं. ज्यां कडाकूट थती होय त्यांथी दूर रहेवुं; वृत्ति ओछी करवी.

क्रोध, मान, माया, लोभ मारे पातळा पाडवा छे एवो ज्यारे लक्ष थशे, ज्यारे तेनो थोडो थोडो पण लक्ष वर्त्तशे त्यारे पछी सहजे थशे. आत्माने आवरण करनार दरेक दुषण जाणवामां आवे त्यारे तेने खसेडवानो अभ्यास करवो. क्रोधादि थोडे थोडे पातळा पाड्या पछी

सहजरूपे थशे. पछी नियममां लेवा माटे जेम बने तेम अभ्यास राखवो; अने विचारमां वखत गाळवो. कोईना प्रसंगथी क्रोधादि उपजवानुं निमित्त थाय तो तेने गणकारवुं नहीं; केमके पोते क्रोध करीए तो थाय. ज्यारे पोताना प्रत्ये कोई क्रोध करे, त्यारे विचार करवो के ते बिचाराने हाल ते प्रकृतिनो उदय छे; एनी मेळे घडीए बे घडीए शांत थशे. माटे जेम बने तेम अंतर् विचार करी पोते स्थिर रहेवुं. क्रोधादि कषायने हमेशां विचारी विचारी पातळा पाडवा. तृष्णा ओछी करवी, कारणके ते एकांत दुःखदायी छे. जेम उदय हशे तेम बनशे; माटे तृष्णा अवश्य ओछी करवी. बाह्य प्रसंगो जेम बने तेम ओछा करवा.

चेलातीपुत्र कोईनुं माथुं कापी लाव्यो हतो. त्यार बाद ज्ञानीने मळ्यो; अने कह्युं के मोक्ष आप; नहीं तो माथुं कापी नांखीश. पछी ज्ञानीए कह्युं के "बराबर नक्की कहे छे? विवेक (साचाने साचुं समजवुं), शम (बधा उपर समभाव राखवो), अने उपशम (वृत्तिओने बहार जवा देवी नहीं अने अंतर्वृत्ति राखवी) विशेष विशेष आत्मामां परिणमाववाथी आत्मानो मोक्ष थाय छे."

कोई एक संप्रदायवाळा एम कहे छे के वेदांतवाळानी मुक्ति करतां, ए भ्रमदशा करतां चार गति सारी; सुखदुःखनो पोताने अनुभव तो रहे.

सिद्धमां सम्वर कहेवाय नहीं, केमके त्यां कर्म आवतुं नथी एटले पछी रोकवानुं पण होय नहीं. मुक्तने विषे स्वभाव संभवे, एक गुणथी–अंशथी ते संपूर्ण सुधी. सिद्धदशामां स्वभावसुख प्रगट्युं. कर्मनां आवरणो मट्यां; एटले सम्वर, निर्जरा हवे कोने रहे? त्रण योग पण होय नहीं. मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, योग बधाथी मूकाणा तेने कर्म आवतां नथी; एटले तेने कर्म रोकवानां होय नहीं. एक हजारनी रकम होय; अने पछी थोडे थोडे पूरी करी दीधी एटले खातुं बंध थयुं, तेनी पेठे. पांच कारणो कर्मनां हतां ते सम्वर, निर्जराथी पूर्ण कर्यां एटले पांच कारणोरूपी खातुं बंध थयुं; एटले पछी फरी कोई रीते प्राप्त थाय ज नहीं.

धर्मसंन्यास=क्रोध, मान, माया, लोभ आदि दोषो छेद्या ते.

जीव तो सदाय जीवतो ज छे. ते कोई वखत उंघतो नथी के मरतो नथी; मरवो संभवतो नथी. स्वभावे सर्व जीव जीवता ज छे. जेम श्वासोच्छ्वास विना कोई जीव जोवामां आवतो नथी, तेम ज्ञानस्वरूप चैतन्यविना कोई जीव नथी.

आत्माने निंदवो; अने एवो खेद करवो के जेथी वैराग्य आवे; संसार खाटो लागे. गमे ते मरण पामे, पण जेनी आंखमांथी आंसु आवे, संसार असार जाणी जन्म, जरा, मरण महा-भयंकर जाणी वैराग्य पामी आंसु आवे ते उत्तम छे. पोतानो छोकरो मरण पामे; ने रूवे तेमां कांई विशेष नथी, ते तो मोहनुं कारण छे.

आत्मा पुरुषार्थ करे तो शुं न थाय? मोटा मोटा पर्वतोना पर्वतो छेदी नांख्या छे; अने केवा केवा विचार करी तेने रेल्वेना काममां लीधां छे! आ तो बहारनां काम छे छतां जय कर्यो छे. आत्माने विचारवो ए कांई बहारनी वात नथी. अज्ञान छे ते मटे तो ज्ञान थाय.

अनुभवी वैद्य तो दवा आपे, पण दरदी जो गळे उतारे तो रोग मटे; तेम सद्गुरु अनुभव करीने ज्ञानरूप दवा आपे, पण मुमुक्षु ग्रहण करवारूप गळे उतारे त्यारे मिथ्यात्वरूप रोग टळे.

बे घडी पुरुषार्थ करे, तो केवलज्ञान थाय एम कह्युं छे. रेल्वे आदि गमे तेवो पुरुषार्थ करे, तोपण बे घडीमां तैयार थाय नहीं; तो पछी केवलज्ञान केटलुं सुलभ छे ते विचारो.

जे वातो जीवने मंद करी नांखे, प्रमादी करी नांखे तेवी वातो सांभळवी नहीं. एथी ज जीव अनादिथी रखड्यो छे. भवस्थिति, काळ आदिना आलंबन लेवां नहीं. ए बधां बहानां छे.

जीवने संसारी आलंबनो, विटंबनाओ मूकवां नथी; ने खोटां आलंबन लईने कहे छे के कर्मनां दळीआं छे एटले माराथी कांई बनी शकतुं नथी. आवा आलंबनो लई पुरुषार्थ करतो नथी. जो पुरुषार्थ करे, ने भवस्थिति के काळ नडे त्यारे तेनो उपाय करीशुं; पण प्रथम पुरुषार्थ करवो.

साचा पुरुषनी आज्ञा आराधे ते पण परमार्थरूप ज छे. तेमां लाभ ज थाय. ए वेपार लाभनो ज छे.

जे माणसे लाखो रुपीआ सामुं पाछुं वाळीने जोयुं नथी, ते हवे हजारना वेपारमां बहानां काढे छे; तेनुं कारण अंतरथी आत्मार्थनी इच्छा नथी. जे आत्मार्थी थया ते पाछुं वाळीने सामुं जोता नथी. पुरुषार्थ करी सामा आवी जाय छे. शास्त्रमां कह्युं छे के आवरण, स्वभाव, भवस्थिति पाके क्यारे? तो कहे के पुरुषार्थ करे त्यारे.

पांच कारणो मळे त्यारे मुक्त थाय. ते पांचे कारणो पुरुषार्थमां रह्यां छे. अनंता चोथा आरा मळे, पण पोते जो पुरुषार्थ करे तो ज मुक्ति प्राप्त थाय. जीवे अनंता काळथी पुरुषार्थ कर्यो नथी. बधां खोटां आलंबनो लई मार्ग आडा विघ्नो नांख्यां छे. कल्याणवृत्ति उगे त्यारे भवस्थिति पाकी जाणवी. शूरातन होय तो वर्षनुं काम बे घडीमां करी शकाय.

प्रश्नः—व्यवहारमां चोथा गुणस्थानके कया कया व्यवहार लागु पडे? शुद्ध व्यवहार के बीजा खरा?

उत्तरः—बीजा बधाय लागु पडे. उदयथी शुभाशुभ व्यवहार छे; अने परिणतिए शुद्ध व्यवहार छे.

परमार्थथी शुद्ध कर्ता कहेवाय. प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी खपाव्या छे माटे शुद्ध व्यवहारना कर्ता छे. समकितीने अशुद्ध व्यवहार टाळवानो छे. समकिती परमार्थथी शुद्ध कर्ता छे. नयना प्रकार घणा छे; पण जे प्रकारवडे आत्मा उंचो आवे, पुरुषार्थ वर्द्धमान थाय ते ज प्रकार विचारवो. प्रत्येक कार्य करतां पोतानी भूल उपर लक्ष्य राखवो. एक सम्यक् उपयोग थाय, तो पोताने अनुभव थाय के केवी अनुभवदशा प्रगटे छे!

सत्संग होय तो बधा गुणो सहेजे थाय. दया, सत्य, अदत्त, ब्रह्मचर्य, परिग्रहमर्यादा आदि अहंकाररहित करवां. लोकोने बतावबा अर्थे कांई पण करवुं नहीं. मनुष्यअवतार मळ्यो छे, ने सदाचार नहीं सेवे, तो पस्तावानुं थशे. मनुष्यअवतारमां सत्पुरुषनुं वचन सांभळवानो, विचारवानो योग मळ्यो छे.

सत्य बोलवुं ए कांई मूश्केल नथी, साव सहज छे. जे वेपारादि सत्यवडे थाय ते ज करवां. जो छ महिना सुधी एम वर्त्ताय तो पछी सत्य बोलवुं सहज थई जाय छे. सत्य बोलतां कदाच् थोडो वखत प्रथम थोडुं नुकशान; पण पछी अनंत गुणनो धणी जे आत्मा ते आखो लूंटाई जाय छे ते लूंटातो बंध पडे. सत्य बोलतां धीमे धीमे सहज थई जाय छे; अने थया पछी व्रत लेवुं. अभ्यास राखवो; केमके उत्कृष्ट परिणामवाळा आत्मा विरला छे.

जीव जो लौकिक भयथी भय पाम्यो तो तेनाथी कांई पण थाय नहीं. **लोक गमे तेम बोले तेनी दरकार न करतां आत्महित जेनाथी थाय तेवां सदाचरण सेववां.**

ज्ञान जे काम करे छे ते अद्भुत छे. सत्पुरुषनां वचनवगर विचार आवतो नथी; विचारविना वैराग्य आवे नहीं; वैराग्यवगर ज्ञान आवे नहीं. आ कारणथी सत्पुरुषनां वचनो वारंवार विचारवां.

खरेखरी आशंका टळे तो घणी निर्जरा थाय छे. जीव जो सत्पुरुषनो मार्ग जाणतो होय, तेनो तेने वारंवार बोध थतो होय तो घणुं फळ थाय.

सात नय अथवा अनंत नय छे, ते बधा एक आत्मार्थे ज छे, अने आत्मार्थ ते ज एक खरो नय. नयनो परमार्थ जीवथी नीकळे तो फळ थाय; छेवटे उपशमभाव आवे, तो फळ थाय; नहींतो जीवने नयनुं ज्ञान जाळरूप थई पडे; अने ते वळी अहंकार वधवानुं टेकाणुं छे. सत्पुरुषना आश्रये जाळ टळे.

व्याख्यानमां भंगजाळ राग(स्वर)काढी संभळावे छे. पण तेमां आत्मार्थ नथी. जो सत्पुरुषना आश्रये कषायादि मोळा पाडो, ने सदाचार सेवी अहंकाररहित थाओ, तो तमारूं अने बीजानुं हित थाय. दंभरहित, आत्मार्थे सदाचार सेववा; जेथी उपकार थाय.

खारी जमीन होय, ने तेमां वरसाद पडे तो शुं काम आवे? तेम ज्यांसुधी आत्मामां उपदेश परिणमे नहीं तेवी स्थिति होय त्यांसुधी ते शुं कामनो? ज्यांसुधी उपदेशवात आत्मानां परिणमे नहीं त्यांसुधी फरि फरी सांभळवी; विचारवी; तेनो केडो मूकवो नहीं; कायर थवुं नहीं; कायर थाय तो आत्मा उंचो आवे नहीं. ज्ञाननो अभ्यास जेम बने तेम वधारवो; अभ्यास राखवो तेमां कूटिलता के अहंकार राखवां नहीं.

आत्मा अनंत ज्ञानमय छे. जेटलो अभ्यास वधे तेटलो ओछो छे. 'सुंदरविलास' वगेरे वांचवानो अभ्यास राखवो. गच्छनां के मतमतांतरनां पुस्तको हाथमां लेवां नहीं. परंपराए पण कदाग्रह आव्यो, तो जीव पाछो मार्यो जाय; माटे मतोना कदाग्रहनी वातोमां पडवुं नहीं. मतोथी छेटे

रहेवुं; दूर रहेवुं. जे पुस्तकथी वैराग्य—उपशम थाय ते समकितदृष्टिनां पुस्तको छे. वैराग्यवाळां पुस्तको वांचवां.

दया, सत्य, आदि जे साधनो छे ते विभावने त्यागवानां साधनो छे. अंतर् स्पर्शे तो विचारने मोटो टेको मळे छे. अत्यारसुधीनां साधनो विभावना टेका हता; तेने साचां साधनोथी ज्ञानीपुरुषो हलावे छे. कल्याण करवानुं होय तेने सत्य साधन अवश्य करवानां छे.

सत्समागममां जीव आव्यो, ने इंद्रियोनुं लुब्धपणुं न जाय तो सत्समागममां आव्यो नथी एम समजवुं. सत्य बोले नहीं त्यांसुधी गुण प्रगटे नहीं. सत्पुरुष हाथे झालीने व्रत आपे त्यारे ल्यो. ज्ञानीपुरुष परमार्थनो ज उपदेश आपे छे. मुमुक्षुओए साचां साधनो सेववां योग्य छे.

समकितनां मूळ बार व्रतः—स्थूलप्राणातिपात; स्थूल मृषावाद; स्थूळ कहीवानो हेतु. ज्ञानीए आत्मानो ओर ज मार्ग समजाव्यो छे. व्रत बे प्रकारनां छे:—१. समकितवगर बाह्यव्रत छे. २. समकितसहित. अंतर्व्रत छे. समकितसहित बार व्रतनो परमार्थ समजाय तो फळ थाय.

बाह्यव्रत अंतर्व्रतने अर्थे छे; जेवी रीते एकडो शीखवा माटे लीटोडा छे तेम. प्रथम तो लीटोडा करता एकडो वांको चूंको थाय; अने एम करतां करता पछी एकडो बराबर थाय.

जीवे जे जे सांभळ्युं छे ते ते अवळुं ज ग्रहण कर्युं छे. ज्ञानी बिचारा शुं करे? केटलुंक समजावे? समजाववानी रीते समजावे. मारीकूटीने समजाव्ये आत्मज्ञान थाय नहीं. आगळ जे जे व्रतादि कर्यां ते ते अफळ गयां, माटे हवे सत्पुरुषनी दृष्टिए परमार्थ समजीने करो. एक ने एक व्रत होय पण मिथ्यादृष्टिनी अपेक्षाए बंध छे; अने सम्यक्दृष्टिनी अपेक्षाए निर्जरा छे. पूर्वे जे व्रतादि निष्फळ गयां छे ते हवे सफळ थवायोग्य सत्पुरुषनो जोग थयो छे; माटे पुरुषार्थ करवो; सदाचरण टेकसहित सेववां, मरण आव्ये पण पाछा हठवुं नहीं. ज्ञानीनां वचनो श्रवण थतां नथी; मनन थतां नथी; नहींतो दशा बदल्याविना केम रहे?

आरंभपरिग्रहनुं संक्षेपपणुं करवुं. वांचवामां चित्त चोंटे नहीं तेनुं कारण नीरसपणुं लागे छे. जेवी रीते माणस नीरस आहार करी बेसे तो पछी भावे नहीं तेवी रीते.

ज्ञानीओए कह्युं छे तेथी जीव अवळो चाले छे; एटले सत्पुरुषनी वाणी क्यांथी परिणाम पामे? लोकलाज आदि शल्य छे. ए शल्यने लईने जीवनुं पाणी भभकतुं नथी. ते शल्यने सत्पुरुषनां वचनरूपी टांकणे करी तड पडे तो पाणी भभकी उठे. जीवना शल्य हजारो दिवसना जातियोगने लईने न टळे, पण सत्संगनो योग एक महिना सुधी थाय, तो टळे; ने रस्ते जीव चाल्यो जाय.

केटलाक हळुकर्मी संसारी जीवोने छोकरा उपर मोह करतां जेटलो अरेराट आवे छे तेटलो पण हालना केटलाक साधुओने शिष्यो उपर मोह करतां आवतो नथी!

तृष्णावाळो जीव नित्य भीखारी; संतोषवाळो जीव सदा सुखी.

साचा देवनुं, साचा गुरुनुं, साचा धर्मनुं ओळखाण थवुं बहु मूश्केल छे. साचा गुरुनुं ओळखाण थाय, तेनो उपदेश होय तो देव, सिद्ध, धर्म ए बधानुं ओळखाण थाय. बधानुं स्वरूप सद्गुरुमां शमाय.

साचा देव अर्हंत्, साचा गुरु निर्ग्रंथ, साचा हरि रागद्वेष जेना गया छे ते. ग्रंथिरहित एटले गांठरहित. मिथ्यात्व ते अंतर्ग्रंथि छे. परिग्रह ते बाह्यग्रंथि छे. मूळमां अभ्यंतरग्रंथि न छेदाय त्यांसुधी धर्मनुं स्वरूप समजाय नहीं. जेनी ग्रंथि गई छे तेवा पुरुष मळे तो खरेखरूं काम थाय; तेमां वळी सत्समागम रहे, तो विशेष कल्याण थाय. जे मूळ गांठ छेदवा शास्त्रमां कह्युं छे ते सहु भूली गया छे; ने बहारथी तपश्चर्या करे छे. दुःख सहन करतां छतां मुक्ति थती नथी तो दुःख वेदवानुं कारण जे वैराग्य ते भूली गया. दुःख अज्ञाननुं छे.

अंदरथी छूटे त्यारे बहारथी छूटे; अंदरथी छूट्यावगर बहारथी छूटे नहीं. एकलुं बहारथी छोडे तेमां काम थाय नहीं. आत्मसाधनवगर कल्याण थतुं नथी.

बाह्य अने अंतर् बन्ने साधन जेने छे ते उत्कृष्ट पुरुष छे; अने माटे ते श्रेष्ठ छे. जे साधुना संगथी अंतर्गुण प्रगटे तेनो संग करवो. कलईनो अने चांदीनो रूपीओ सरखो कहेवाय नहीं. कलई उपर सीको पाडो; पण तेनी रूपीआनी कींमत थाय नहीं. ज्यारे चांदी छे तेना उपर सीको न पाडो तोपण तेनी कींमत जाय नहीं. तेवी ज रीते गृहस्थपणामां समकित होय तो तेनी कींमत जाय नहीं. सहु कहे छे के अमारा धर्मथी मोक्ष छे. आत्मामां राग द्वेष गये ज्ञान प्रगटे. गमे त्यां बेठा, ने गमे ते स्थितिमां मोक्ष थाय; पण रागद्वेष जाय तो. मिथ्यात्व, ने अहंकार गयावगर राजपाट छोडे, झाडनी माफक सूकाई जाय; पण मोक्ष थाय नहीं. मिथ्यात्व गया पछी सहु साधन सफळ थाय. आटला माटे सम्यक्‌दर्शन श्रेष्ठ छे.

संसारमां मोह छे; स्त्रीपुत्रमां मारापणुं थई गयुं छे; ने कषायनो भरेलो छे ते रात्रिभोजन न करे तोपण शुं थयुं? ज्यारे मिथ्यात्व जाय त्यारे तेनुं खरूं फळ थाय.

हालमां जैनना जेटला साधु फरे छे तेटला बधाय समकिती समजवा नहीं; तेने दान देवामां हानि नथी; पण तेओ आपणुं कल्याण करी शके नहीं. वेश कल्याण करतो नथी. जे साधु एकली बाह्यक्रियाओ कर्या करे छे तेमां ज्ञान नथी.

ज्ञान तो ते के जेनाथी बाह्यवृत्तिओ रोकाय छे, संसारपरथी खरेखरी प्रीति घटे छे, साचाने साचुं जाणे छे. जेनाथी आत्मामां गुण प्रगटे ते ज्ञान.

मनुष्यअवतार पामीने रळवामां अने स्त्रीपुत्रमां तदाकार थई आत्मविचार कर्यो नहीं; पोताना दोष जोया नहीं; आत्माने निंद्यो नहीं; तो ते मनुष्यअवतार, रत्नचिंतामणिरूप देह वृथा जाय छे.

जीव खोटा संगथी, अने असद्गुरुथी अनादिकाळथी रखड्यो छे; माटे साचा पुरुषने

ओळखवा. साचा पुरुष केवा छे? साचा पुरुष तो ते के जेनो देहपरथी ममत्व गयो छे; ज्ञान प्राप्त थयुं छे. आवा ज्ञानीपुरुषनी आज्ञाए वर्ते तो पोताना दोष घटे; अने कषायादि मॉळा पडे; परिणामे सम्यक्त्व थाय.

क्रोध, मान, माया, लोभ ए खरेखरां पाप छे. तेनाथी बहु कर्म ऊपार्जन थाय. हजार वर्ष तप कर्युं होय; पण एक बे घडी क्रोध करे, तो बधुं तप निष्फळ जाय.

"छ खंडना भोक्ता राज मूकी चाली गया, अने हुं आवा अल्प व्यवहारमां मोटाई अने अहंकार करी बेठो छुं" एम केम विचारतो नथी?

आयुष्नां आटलां वर्षो गयां तोपण लोभ कांई घट्यो नहीं; ने कांई ज्ञान प्राप्त थयुं नहीं. गमे तेटली तृष्णा होय पण आयुष् पूर्ण थाय त्यारे जरा पण काम आवे नहीं; ने तृष्णा करी होय तेथी कर्म बंधाय. अमुक परिग्रहमर्यादा करी होय, जेम के दश हजार रुपीआनी; तो समता आवे. आटलुं मळ्या पछी धर्मध्यान करीशुं एवो विचार पण राखे तो नियममां अवाय.

कोई उपर क्रोध करवो नहीं. जेम रात्रिभोजन त्याग कर्युं छे तेम क्रोध, मान, माया, लोभ, असत्य आदि छोडवाने प्रयत्न करी मॉळा पाडवा. ते मॉळा पाडवाथी परिणामे सम्यक्त्व प्राप्त थाय. विचार करे तो अनंतां कर्मो मॉळां पडे; अने विचार न करे, तो अनंतां कर्मो उपार्जन थाय.

रोग उत्पन्न थाय छे त्यारे स्त्री, छोकरां छैयां, भाई के कोई पण रोग लई शकतां नथी!

संतोष करी धर्म ध्यान करवुं; छोकरां छैयां वगेरे अन्यनी न जोईती चिंता करवी नहीं. एक स्थानके बेसी, विचारी, सत्पुरुषना संगे, ज्ञानीनां वचन सांभळी विचारीने धन आदिनी मर्यादा करवी.

ब्रह्मचर्य यथातथ्य रीते तो कोई विरला जीव पाळी शके छे; तोपण लोकलाजथी ब्रह्मचर्य पळाय तो ते उत्तम छे.

मिथ्यात्व गयुं होय तो चार गति टळे. समकित न आव्युं होय अने ब्रह्मचर्य पाळे तो देवलोक मळे.

वाणीओ, ब्राह्मण, पशु, पुरुष, स्त्रीआदि कल्पनाए करी "हुं वाणीओ, ब्राह्मण, पुरुष, स्त्री, पशु छुं" एम मान्युं छे; पण विचार करे तो पोते तेमांनो कोई नथी, "मारूं" स्वरूप तेथी जूदुं ज छे.

सूर्यना उद्योतनी पेठे दिवस चाल्यो जाय; तेम अंजळिजळनी माफक आयुष् चाल्युं जाय.

लाकडुं करवतथी व्हेंराय तेम आयुष् चाल्युं जाय छे; तॉय मूर्ख परमार्थ साधतो नथी; ने मोहना जथ्था भेळा करे छे.

"बधा करतां हुं जगत्मां मोटो थाउं" एवी मोटाई मेळववानी तृष्णामां, पांच इंद्रियोने विषे

लयलीन, मद्य पीधो होय तेनी पेठे, झांझवाना पाणीनी माफक संसारमां जीव भमे छे; अने कुळ, गाम, गतिओने विषे मोहना नचाववाथी नाच्या करे छे!

आंधळो वणे ने वाछडो चावे तेनी पेठे अज्ञानीनी क्रिया निष्फळ जाय छे.

'हुं कर्ता' 'हुं करूं छुं' 'हुं केवुं करूं छुं?' आदि जे विभाव छे ते ज मिथ्यात्व. अहंकारथी करी संसारमां अनंत दुःख प्राप्त थाय; चारे गतिमां रझळे.

कोईनुं दीधुं देवातुं नथी; कोईनुं लीधुं लेवातुं नथी, जीव फोकट कल्पना करी रझळे छे. जे प्रमाणे कर्म उपार्जन करेलां होय ते प्रमाणे लाभ, अलाभ, आयुष्, शाता, अशाता मळे छे. पोताथी कांई अपातुं लेवातुं नथी. अहंकारे करी 'में आने सुख आप्युं'; 'में दुःख आप्युं'; 'में अन्न आप्युं' एवी मिथ्या भावना करे छे, ने तेने लईने कर्म उपार्जन करे छे. मिथ्यात्वे करी खोटो धर्म उपार्जन करे छे.

जगत्मां आनो आ पिता, आनो आ पुत्र एम कहेवाय छे; पण कोई कोईनुं नथी. पूर्वना कर्मना उदये सघळुं बन्युं छे.

अहंकारे करी जे आवी मिथ्याबुद्धि करे छे ते भूल्या छे. चार गतिमां रझळे छे; अने दुःख भोगवे छे.

अधमाधम पुरुषनां लक्षणोः—साचा पुरुषने देखी तेने रोष उत्पन्न थाय; तेनां साचां वचन सांभळी निंदा करे छे; खोटी बुद्धिवाळा साची बुद्धिवाळाने देखी रोष करे; सरळने मूर्ख कहे, विनय करे तेने धनना खुशामतीआ कहे; पांच इंद्रियो वश करी होय तेने भाग्यहीन कहे. साचा गुणवाळाने देखी रोष करे. स्त्री पुरुषनां सुखमां लयलीन. आवा जीवो माठी गतिने प्राप्त थाय. जीव कर्मने लईने, पोताना स्वरूपज्ञानथी अंध छे; तेने ज्ञाननी खबर नथी.

एक नाकने माटे, मारूं नाक रहेतो सारूं एवी कल्पनाने लीधे पोतानुं शूरवीरपणुं देखाडवा लडाईमां उतरे छे; नाकनी तों राख थवानी छे!

देह केवो छे? रेतीना घर जेवो. मसाणनी मढी जेवो. पर्वतनी गुफानी माफक देहमां अंधारूं छे. चामडीने लीधे देह उपरथी रूपाळो लागे छे. देह अवगुणनी ओरडी, माया अने मेलने रहेवानुं ठेकाणुं छे. देहमां प्रेम राखवाथी जीव रखड्यो छे. ते देह अनित्य छे. बदफेलनी खाण छे. तेमां मोह राखवाथी जीव चारे गतिमां रझळे छे. केवा रझळे छे? घाणीना बळदनी माफक. आंखे पाटो बांधे छे; तेने चालवाना मार्गमां संकडाई रहेवुं पडे छे; छूटवानुं मन थाय पण छूटी शकाय नहीं. भूख्या तरस्यानुं कहेवाय नहीं. श्वासोच्छ्वास निरांते लेवाय नहीं. तेनी पेठे जीव पराधीन छे. जे संसारमां प्रीति करे छे ते आवा प्रकारनुं दुःख सहन करे छे.

धुमाडा जेवां लगडां पेहेरी तेओ आडंबर करे छे, पण ते धुमाडानी माफक नाश पामवा-योग्य छे. आत्मानुं ज्ञान मायाने लईने दबाई रहे छे.

जे जीव आत्मेच्छा राखे छे ते नाणाने नाकना मेलनी पेठे त्यागे छे. माखी गळपणमां वळगी छे तेनी पेठे आ अभागीओ जीव कुटुंबना सुखमां वळग्यो छे.

वृद्ध, जुवान, बाळ ए सर्व संसारमां बूड्यां छे, काळना मुखमां छे एम भय राखवो. ते भय राखीने संसारमां उदासीनपणे रहेवुं.

सो उपवास करे, पण ज्यांसुधी मांहीथी खरेखरा दोष जाय नहीं त्यांसुधी फळ थाय नहीं.

श्रावक कोने कहेवा? जेने संतोष आव्यो होय; कषाय पातळा पड्या होय; मांहीथी गुण आव्या होय; साचो संग मळ्यो होय तेने श्रावक कहेवा. आवा जीवने बोध लागे, तो बधुं वलण फरी जाय, दशा फरी जाय. साचो संग मळवो ते पुण्यनो जोग छे.

जीवो अविचारथी भूल्या छे; जरा कोई कहे के तरत खोटुं लागे, पण विचारे नहीं के मारे शुं? ते कहेशे तो तेने कर्म बंधाशे.

सामायिक समताने कहेवाय. जीव अहंकार करी बाह्यक्रिया करे छे; अहंकारथी माया खर्चे छे; ते माठी गतिनां कारणो छे. साचा संग वगर आ दोष घटे नहीं.

जीवने पोताने डाह्या कहेवरावबुं बहु गमे छे. वगर बोलाव्ये डहापण करी मोटाई ले छे. जे जीवने विचार नहीं तेनो छूटवानो आरो नहीं. जो विचार करे, अने साचा मार्गे चाले तो छूटवानो आरो आवे.

अहंकारथी, मानथी कैवल्य प्रगट थतुं नथी. ते मोटा दोष छे. अज्ञानमां मोटा नानानी कल्पना छे. बाहुबलिजीए विचार्युं के हुं अंकुश वगरनो छुं माटे.

*(११) आणंद. भा. वद १४ सोम.

पंदर भेदे सिद्ध कह्या तेनुं कारण राग, द्वेष अने अज्ञान जेना गया तेनुं गमे ते वेषे, गमे ते जगोए, गमे ते लिंगे कल्याण थाय ते छे.

साचो मार्ग एक ज छे; माटे आग्रह राखवो नहीं. फलाणो ढुंढियो छे, फलाणो तप्पो छे एवी कल्पना राखवी नहीं. दया, सत्य आदि सदाचरण मुक्तिना रस्ता छे; माटे सदाचरण सेववां.

लोच करवो शा माटे कह्यो छे? शरीरनी ममतानी ते परीक्षा छे माटे. (माथे वाळ) ते मोह वधवानुं कारण छे. नहावानुं मन थाय; आरीसो लेवानुं; तेमां मोढुं जोवानुं मन थाय; अने ए उपरांत तेनां साधनो माटे उपाधि करवी पडे. आ कारणथी ज्ञानीओए लोच करवानुं कह्युं छे.

जात्राए जवानो हेतु एक तो ए छे के गृहवासनी उपाधिथी निवृत्ति लेवाय; सो बसो रुपीआ उपरथी मूर्च्छा ओछी कराय; परदेशमां देशाटन करतां, कोई सत्पुरुष शोधतां जडे तो कल्याण थाय. आ कारणथी जात्रा करवानुं बताव्युं छे.

* पृ० ५३५ थी अहीं सुधी भा. वद १ थी वद १३ सुधीमां आणंदमां थयेल अ. (१०) मां नो बोध छे. म. कि.

जे सत्पुरुषो बीजा जीवोने उपदेश दई कल्याण बतावे छे ते सत्पुरुषोने तो अनंतो लाभ प्राप्त थयो छे. सत्पुरुषो परजीवनी निष्काम करुणाना सागर छे. वाणीना उदय प्रमाणे, तेमनी वाणी नीकळे छे. तेओ कोई जीवने दीक्षा ले तेवुं कहे नहीं. तीर्थंकरे पूर्वे कर्म बांध्युं छे ते वेदवा माटे बीजा जीवनुं कल्याण करे छे; बाकी तो उदयप्रमाणे दया वर्त्ते छे. ते दया निष्कारण छे, तेम तेओने पारकी निर्जराए करी पोतानुं कल्याण करवानुं नथी. तेमनुं कल्याण तो थयेलुं ज छे. ते त्रण लोकना नाथ तो तरीने ज बेठा छे. सत्पुरुष के समकितीने पण एवी (सकाम) उपदेश देवानी इच्छा होय नहीं. ते पण निष्कारण दयानी खातर उपदेश दे छे. महावीरस्वामी गृहवासमां रहेता छतां पण त्यागी जेवा हता.

हजारो वर्षना संयमी पण जेवो वैराग्य राखी शके नहीं तेवो वैराग्य भगवाननो हतो. ज्यां ज्यां भगवान् वर्त्ते छे, त्यां त्यां बधा प्रकारना अर्थ पण वर्त्ते छे. तेओनी वाणी उदयप्रमाणे शांतिपूर्वक परमार्थहेतुथी नीकळे छे, अर्थात् तेमनी वाणी कल्याण अर्थे ज छे. तेओने जन्मथी मति, श्रुत, अवधि ए त्रण ज्ञान हतां. ते पुरुषना गुणग्राम करतां अनंति निर्जरा छे. ज्ञानीनी वात अगम्य छे. तेओनो अभिप्राय जणाय नहीं. ज्ञानीपुरुषनी खरी खुबी ए छे के तेमणे अनादिथी नहीं टळेलां एवां राग द्वेष ने अज्ञान तेने छेदी भेदी नांख्यां छे. ए भगवाननी अनंत कृपा छे. तेने पचीसो वर्ष थयां; छतां तेमनां दया आदि हाल वर्त्ते छे. ए तेमनो अनंतो उपकार छे. ज्ञानी आडंबर देखाडवा अर्थे व्यवहार करता नथी. तेओ सहज स्वभावे उदासीन-पणे वर्त्ते छे.

ज्ञानी दोष पासे जई दोष छेदी नांखे छे; ज्यारे अज्ञानी जीव दोष छोडी शकता नथी. ज्ञानीनी वात अद्भुत छे.

वाडामां कल्याण नथी; अज्ञानीना वाडा होय. जेम लोढुं पोते तरे नहीं, अने बीजाने तारे नही तेम. वीतरागनो मार्ग अनादिनो छे. जेना राग, द्वेष अने अज्ञान गयां तेनुं कल्याण; बाकी अज्ञानी कहे के मारा धर्मथी कल्याण छे तो ते मानवुं नहीं. एम कल्याण होय नहीं. ढुंढिया-पणुं के तप्पापणुं मान्युं तो कषाय चढे. तप्पो ढुंढिया साथे बेठो होय तो कषाय चढे; अने ढुंढियो तप्पा साथे बेठां कषाय चढे; आ अज्ञानी समजवा. बन्ने समज्या वगर वाडा बांधी कर्म उपार्जन करी रखडे छे. वहोराना नाडानी माफक मताग्रह पकडी बेठा छे. मुमति आदिनो आग्रह मूकी देवो.

जैन मार्ग शुं? राग द्वेष अने अज्ञाननुं जवुं ते. अज्ञानी साधुओए भोळा जीवोने समजावी तेने मारी नांख्या जेवुं कर्युं छे. पोते जो प्रथम विचार करे के मारा दोष शुं घट्या छे? तो तो जणाय के जैनधर्म तो माराथी वेगळो रह्यो छे. जीव अवळी समजण करी पोतानुं कल्याण भूली जई, बीजानुं अकल्याण करे छे. तप्पा ढुंढियाना साधुने, अने ढुंढिया तप्पाना साधुने अन्न पाणी

न आपवा माटे पोताना शिष्योने उपदेश आपे छे. कुगुरुओ एक बीजाने मळवा देता नथी; एक बीजाने मळवा दे तो तो कषाय ओछा थाय, निंदा घटे.

जीव निर्पक्षी रहेता नथी. अनादिथी पक्षमां पड्या छे, अने तेमां रहीने कल्याण भूली जाय छे.

बार कुळनी गौचरी कही छे तेवी केटलाक मुनिओ करता नथी. तेमने लुगडांआदि परिग्रहनो मोह मटयो नथी. एकवार आहार लेवानुं कह्युं छतां बे वार ले छे. जे ज्ञानीपुरुषना वचनथी आत्मा उंचो आवे ते साचो मार्ग. ते पोतानो मार्ग. साचो धर्म पुस्तकमां छे, पण आत्मामां गुण प्रगटे नहीं त्यांसुधी कंई फळ आपे नहीं. "आपणो धर्म" एवी कल्पना छे. आपणो धर्म शुं? महासागर कोईनो नथी; तेम धर्म कोईना बापनो नथी. जेमां दया, सत्य आदि होय ते पाळो. ते कोईना बापनां नथी. अनादि काळनां छे; शाश्वत छे. जीवे गांठ पकडी छे के आपणो धर्म छे, पण शाश्वत मार्ग शुं? शाश्वत मार्गथी सहु मोक्षे गया छे. रजोहरणो, दोरो के मुमति, कपडां कोई आत्मा नथी. वहोराना नाडानी माफक जीव पक्षनो आग्रह पकडी बेठो छे एवी जीवनी मूढता छे. "आपणा जैनधर्मना शास्त्रमां बधुं छे. शास्त्रो आपणी पासे छे." एवुं मिथ्या-भिमान जीव करी बेटो छे. क्रोध, मान, माया, लोभरूपी चोर रातदिवस माल चोरी ले छे तेनुं भान नथी.

तीर्थंकरनो मार्ग साचो छे. द्रव्यमां बदाम सरखी पण राखवानी आज्ञा नथी. वैष्णवना कुळ-धर्मना कुगुरुओ आरंभ परिग्रह मूक्या वगर लोकोपासेथी लक्ष्मी ग्रहण करे छे; अने ते रूपी वेपार थई पड्यो छे. ते पोते अग्निमां बळे छे; तो तेनाथी बीजानी अग्नि शी रीते शांत थाय? जैनमार्गनो परमार्थ साचा गुरुथी समजवानो छे. जे गुरुने स्वार्थ होय ते पोतानुं अकल्याण करे; ने शिष्योनुं पण अकल्याण थाय.

जैनलिंगधारीपणुं धरी जीव अनंति वार रखड्यो छे.–बाह्यवर्ति लिंग धारी लौकिक व्यवहारमां अनंति वार रखड्यो छे. आ ठेकाणे जैनमार्गने निषेधता नथी; जेटला अंतरंगे साचो मार्ग बतावे ते "जैन." बाकीतो अनादि काळथी जीवे खोटाने साचुं मान्युं छे; अने ते ज अज्ञान छे. मनुष्यदेहनुं सार्थक खोटा आग्रह, दुराग्रह मूकी कल्याण थाय तो छे. ज्ञानी सवळुं ज बतावे. **आत्मज्ञान प्रगटे त्यारे ज आत्मज्ञानीपणुं मानवुं, गुण प्रगट्या वगर मानवुं ए भूल छे.** झवेरातनी कींमत जाणवानी शक्तिवगर झवेरीपणुं मानवुं नहीं. अज्ञानी खोटाने साचुं नाम आपी वाडा बंधावे छे. सत्नुं ओळखाण होय तो कोई वखत पण साचुं ग्रहण थशे.

(१२) आणंद. भा. ,, मंगळ.

जे जीव पोताने मुमुक्षु मानतो होय, तरवानो कामी मानतो होय तेणे देहने विषे रोग थती वखत आकुळव्याकुळपणुं थतुं होय तो ते वखत विचारवुं के तारुं मुमुक्षुपणुं, डहापण क्यां गयां? जो तरवानो कामी होय तो तो देहने असार जाणे छे, देहने आत्माथी जूदो जाणे छे, तेने आकुळता आववी जोईए नहीं. देह साचव्यो सचवातो नथी; केमके ते क्षणमां भांगी जाय छे,–क्षणमां रोग,

क्षणमां वेदना थाय. देहना संगे देह दुःख आपे छे माटे आकुळव्याकुळपणुं थाय छे ते ज अज्ञान छे. शास्त्र श्रवण करी रोज सांभळ्युं छे के देह आत्माथी जूदो छे, क्षणभंगुर छे; पण देहने वेदना आव्ये तो रागद्वेषपरिणाम करी बूम पाडे छे. देह क्षणभंगुर छे एवुं तमे शास्त्रमां सांभळवा शुं करवा जाओ छो? देह तो तमारी पासे छे तो अनुभव करो. देह प्रगट माटी जेवो छे; राख्यो रखाय नहीं. वेदना वेदतां उपाय चाले नहीं. त्यारे शुं साचवे? कंई पण बनीशकतुं नथी. आवो देहनो प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे, तो तेनी ममता करी करवुं शुं? देहनो प्रगट अनुभव करी शास्त्रमां कह्युं के ते अनित्य छे; देहमां मूर्च्छा कर्या जेवुं नथी.

ज्यांसुधी देहात्मबुद्धि टळे नहीं त्यांसुधी सम्यक्त्व थाय नहीं. जीवने साच क्यारेय आव्युं ज नथी; आव्युं होत तो मोक्ष थात. भले साधुपणुं, श्रावकपणुं अथवा तो गमे ते ल्यो, पण साचवगर साधन ते वृथा छे. जे देहात्मबुद्धि मटाडवा माटे साधनो बताव्यां छे ते देहात्मबुद्धि मटे त्यारे साच आव्युं समजाय. देहात्मबुद्धि थई छे ते मटाडवा, मारापणुं मूकाववा साधनो करवानां छे. ते न मटे तो साधुपणुं, श्रावकपणुं, शास्त्रश्रवण के उपदेश ते वगडामां पोक मूक्या जेवुं छे. जेने ए भ्रम भांगी गयो छे, ते ज साधु, ते ज आचार्य, ते ज ज्ञानी. जेम अमृतभोजन जमे ते कांई छानुं रहे नहीं, तेम भ्रांति मटे ते कांई छानुं रहे नहीं.

लोक कहे छे के समकित छे के नहीं ते केवळज्ञानी जाणे; पण पोते आत्मा छे ते केम न जाणे? कांई आत्मा गाम गयो नथी; अर्थात् समकित थयुं छे ते आत्मा पोते जाणे. जेम कांई पदार्थ खावामां आव्ये तेनुं फळ आपे छे तेम ज समकित आव्ये, भ्रांति मट्ये तेनुं फळ पोते जाणे. ज्ञाननुं फळ ज्ञान आपे ज. पदार्थनुं फळ पदार्थ, लक्षण प्रमाणे आपे ज. आत्मामांथी, मांहीथी कर्म जउं जउं थयां होय तेनी पोताने खबर केम न पडे? अर्थात् खबर पडे ज. समकितीनी दशा छानी रहे नहीं. कल्पित समकित माने ते पीतळनी हीराकंठीने सोनानी हीराकंठी माने तेनी पेठे.

समकित थयुं होय तो देहात्मबुद्धि मटे; जो के अल्प बोध, मध्यम बोध, विशेष बोध जेवो होय ते प्रमाणे पछी देहात्मबुद्धि मटे. देहने विषे रोग आव्ये जेनामां आकुळव्याकुळता मालुम पडे ते मिथ्यादृष्टि जाणवा.

जे ज्ञानीने आकुळता व्याकुळता मटी गई छे तेने अंतरंग पच्चखाण ज छे. तेने बधा पच्चखाण आवी जाय छे. जेने रागद्वेष मटी गया छे तेने विश वर्षनो छोकरो मरी जाय, तोपण खेद थाय नहीं. शरीरने व्याधि थवाथी जेने व्याकुळपणुं थाय छे, अने जेनुं कल्पना मात्र ज्ञान छे ते पोलुं अध्यात्मज्ञान मानवुं. आवा कल्पित ज्ञानी ते पोला ज्ञानने अध्यात्म ज्ञान मानी अनाचार सेवी बहु ज रखडे छे. जो शास्त्रनुं फळ!

आत्माने पुत्र पण न होय अने पिता पण न होय. जे आवी कल्पनाने साचुं मानी बेठा छे ते मिथ्यात्वी छे. खोटा संगथी समजातुं नथी; माटे समकित आवतुं नथी. सत्पुरुषना संगथी जोग्य जीव होय तो सम्यक्त्व थाय.

समकित ने मिथ्यात्वनी तरत खबर पडे तेवुं छे. समकितीनी अने मिथ्यात्वीनी वाणी घडीएघडीए जूदी पडे छे. ज्ञानीनी वाणी एक ज धारी, पूर्वापर मळती आवे. अंतरंग गांठ मटे त्यारे ज सम्यक्त्व थाय. रोग जाणे, रोगनी दवा जाणे, पथ्य जाणे अने ते प्रमाणे उपाय करे तो रोग मटे. रोग जाण्या वगर अज्ञानी जे उपाय करे तेथी रोग वधे. पथ्य पाळे ने दवा करे नहीं, तो रोग केम मटे? न मटे. तो आ तो रोगे कांई, ने दवाय कांई! शास्त्र तो ज्ञान कहेवाय नहीं. ज्ञान तो मांहीथी गांठ मटे त्यारे ज कहेवाय. तप संयमादि माटे सत्पुरुषनां वचन सां-भळवानुं बताव्युं छे.

ज्ञानी भगवाने कह्युं छे के साधुओए अचेत आहार लेवो. आ कहेवुं तो केटलाक साधुओ भूली गया छे. दूध आदि सचेत भारे भारे पदार्थो लई ज्ञानीनी आज्ञापर पग दई चाले ते कल्याणनो रस्तो नहीं. लोक कहे छे के साधु छे; पण **आत्मदशा साधे ते साधु.**

नरसिंहमेहतो कहे छे के अनादि काळथी आमने आम चालतां काळ गयो, पण नीवेडो आव्यो नहीं. आ मार्ग नहीं; केमके अनादि काळथी चालतां चालतां पण मार्ग हाथ आव्यो नहीं. जो मार्गज होय तो हजीसुधी कांईए हाथमां आव्युं नहीं एम बने नहीं. माटे मार्ग जूदो ज होवो जोईए.

तृष्णा केम घटे? लौकिक भावमां मोटाई मूकी दे तो. "घरकुटुंब आदिने मारे शुं करवुं छे? लौकिकमां गमे तेम होय, पण मारे तो मोटाई मूकी गमे ते प्रकारे तृष्णा घटे तेम करवुं छे," एम विचारे तो तृष्णा घटे, मॉळी पडे.

तपनुं अभिमान केम घटे? त्याग करवो तेनो उपयोग राखवाथी. 'मने आ अभिमान केम थाय छे?' एम रोज विचारतां अभिमान मॉळुं पडशे.

ज्ञानी कहे छे ते कुंचीरूपी ज्ञान विचारे, तो अज्ञानरूपी ताळुं उघडी जाय; केटलांय ताळां उघडी जाय, कुंची होय तो ताळुं उघडे; बाकी प्हाणा मार्ये तो ताळुं भांगी जाय.

'कल्याण शुं हशे?' एवो जीवने भामो छे. ते कांई हाथी घोडो नथी. जीवने आवी भ्रान्तिने लीधे कल्याणनी कुंचीओ समजाती नथी. समजाय तो तो सुगम छे. जीवनी भ्रांतिओ दूर करवा माटे जगत्नुं वर्णन बताव्युं छे. जो जीव हमेशना अंध मार्गथी थाके तो मार्गमां आवे.

ज्ञानी परमार्थ,—सम्यक्त्व होय ते ज कहे. "कषाय घटे ते कल्याण"—'जीवनां राग द्वेष अज्ञान जाय तेने कल्याण कहेवाय' एवुं लोक कहे छे के अमारा गुरुओय कहे छे; त्यारे सत्पुरुषो जूदुं शुं बतावो छो?" आवी आडी कल्पनाओ करी जीवने पोताना दोष मटाडवा नथी.

आत्मा अज्ञानरूपी पथ्थरेकरी दबाई गयो छे. ज्ञानी ज आत्माने उंचो लावशे. आत्मा दबाई गयो छे एटले कल्याण सूजतुं नथी. ज्ञानी सद्विचारोरूपी सहेली कुंचीओ बतावे ते कुंचिओ हजारो ताळांने लागे छे.

जीवने मांहीथी अजीर्ण मटे त्यारे अमृत भावे, ते ज रीते भ्रांतिरूपी अजीर्ण मटये कल्याण थाय; पण जीवने अज्ञानी गुरुए भडकावी मार्या छे एटले भ्रांतिरूप अजीर्ण केम मटे? अज्ञानी गुरुओ ज्ञानने बदले तप बतावे; तपमां ज्ञान बतावे; आवी रीते अवळुं अवळुं बतावे तेथी जीवने तरवुं बहु मुसीबतवाळुं छे. अहंकारादिरहितपणे तपादि करवां.

कदाग्रह मूकीने जीव विचारे, तो मार्ग जूदो छे. समकित सुलभ छे, प्रत्यक्ष छे, सहेलुं छे. जीव गाम मूकी आघो गयो छे ते पाछो फरे त्यारे काम आवे. सत्पुरुषनां वचनोनुं आस्थासहित श्रवण मनन करे तो सम्यक्त्व आवे. ते आव्या पछी व्रत पच्चखाण आवे, त्यार पछी पांचमुं गुणस्थानक प्राप्त थाय.

साचुं समजाई तेनी आस्था थई ते ज सम्यक्त्व छे. जेने खरा खोटानी कींमत थई छे, ते भेद जेने मळ्यो छे तेने सम्यक्त्व प्राप्त थाय.

असद्गुरुथी सत् समजाय नहीं. दया, सत्य, अदत्त न लेवुं ए आदि सदाचार ए सत्पुरुषनी समीप आववानां सत् साधन छे. सत्पुरुषो जे कहे छे ते सूत्रना सिद्धांतना परमार्थ छे. अनुभवथी कहीए छीए, अनुभवथी शंका मटाडवानुं कही शकीए छीए. अनुभव प्रगट दीवो छे; ने सूत्र कागळमां लखेल दीवो छे.

ढुंढियापणुं के तप्पापणुं कर्या करो तेथी समकित थवानुं नथी; खरेखरुं साचुं स्वरूप समजाय, मांहिथी दशा फरे तो समकित थाय. परमार्थमां प्रमाद एटले आत्मामांथी बहार वृत्ति ते. घातिकर्म घात करे तेने कहेवाय. परमाणु आत्माथी निरपेक्ष छे, परमाणुने पक्षपात नथी, जे रूपे परिणमवावे ते रूपे परिणमे.

निकाचित कर्ममां स्थितिबंध होय तो बरोबर बंध थाय छे. स्थितिकाळ न होय अने विचारे. पश्चात्तापे ज्ञान विचारे तो नाश थाय. स्थितिकाळ होय तो भोगव्ये छूटको.

क्रोधादिक करी जे कर्मो उपार्जन कर्यां होय ते भोगव्ये छूटको. उदय आव्ये भोगववुं ज जोईए, समता राखे तेने समतानुं फळ. सहु सहुना परिणाम प्रमाणे कर्म भोगववां पडे छे.

ज्ञान स्त्रीपणामां, पुरुषपणामां सरखुं ज छे. ज्ञान आत्मानुं छे. ॐ

६४४.

मनःपर्यवज्ञान केवी रीते प्रगटे?

साधारणपणे दरेक जीवने मतिज्ञान होय छे. तेने आश्रये रहेला श्रुतज्ञानमां वधारो थवाथी ते मतिज्ञाननुं बळ वधारे छे; एम अनुक्रमे मतिज्ञान निर्मळ थवाथी आत्मानुं असंयमपणुं टळी संयमपणुं थाय छे, ने तेथी मनःपर्यवज्ञान प्रगटे छे. तेने योगे आत्मा बीजानो अभिप्राय जाणी शके छे.

लिंग देखाव उपरथी बीजाना क्रोध हर्षादि भाव जाणी शकाय छे, ते मतिज्ञाननो विषय छे. तेवा देखावना अभावे जे भाव जाणी शकाय ते मनःपर्यव ज्ञाननो विषय छे.

६४५.　　　　आनंद. आशो शुद १. १९५२.

मूळमार्गरहस्य.

ॐ

श्रीसद्गुरुचरणाय नमः

मूळ मारग सांभळो जिननो रे, करी वृत्ति अखंड सन्मुख,　　　मूळ०
१. नो'य पूजादिनी जो कामना रे, नो'य व्हालुं अंतर् भवदुःख.　　　मूळ०
करी जो जो वचननी तुलना रे, जो जो शोधिने जिनसिद्धांत,　　　मूळ०
२. मात्र कहेवुं परमारथहेतुथी रे, कोई पामे मुमुक्षु वात.　　　मूळ०
ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी शुद्धता रे, एकपणे अने अविरुद्ध,　　　मूळ०
३. जिनमारग ते परमार्थथी रे, एम कह्युं सिद्धांते बुध.　　　मूळ०
लिंग अने भेदो जे वृत्तना रे, द्रव्य देश काळादि भेद,　　　मूळ०
४. पण ज्ञानादिनी जे शुद्धता रे, ते तो त्रणे काळे अभेद.　　　मूळ०
हवे ज्ञान दर्शनादि शब्दनो रे, संक्षेपे सुणो परमार्थ,　　　मूळ०
५. तेने जोतां विचारि विशेषथी रे, समजाशे उत्तम आत्मार्थ.　　　मूळ०
छे देहादिथी भिन्न आत्मा रे, उपयोगी सदा अविनाश,　　　मूळ०
६. एम जाणे सद्गुरुउपदेशथी रे, कह्युं ज्ञान तेनुं नाम खास.　　　मूळ०
जे ज्ञाने करीने जाणियुं रे, तेनी वर्त्ते छे शुद्ध प्रतीत,　　　मूळ०
७. कह्युं भगवंते दर्शन तेहने रे, जेनुं बीजुं नाम समकीत.　　　मूळ०
जेम आवी प्रतीति जीवनी रे, जाण्यो सर्वेथी भिन्न असंग,　　　मूळ०
८. तेवो स्थिर स्वभाव ते उपजे रे, नाम चारित्र ते अणलिंग.　　　मूळ०
ते त्रणे अभेद परिणामथी रे, ज्यारे वर्त्ते ते आत्मारूप,　　　मूळ०
९. तेह मारग जिननो पामियो रे, किंवा पाम्यो ते निजस्वरूप.　　　मूळ०
एवां मूळ ज्ञानादि पामवां रे, अने जवा अनादि बंध,　　　मूळ०
१०. उपदेश सद्गुरुनो पामवा रे, टाळी स्वछंद ने प्रतिबंध.　　　मूळ०
एम देव जिनंदे भाखियुं रे, मोक्षमारगनुं शुद्ध स्वरूप,　　　मूळ०
११. भव्य जनोना हितने कारणे रे, संक्षेपे कह्युं स्वरूप.　　　मूळ०

६४६.　　　　श्री आनंद. आशो शुद २ गुरु. १९५२.

ॐ सद्गुरुप्रसाद.

श्री रामदासस्वामिनुं योजेलुं "दासबोध" नामनुं पुस्तक मराठी भाषामां छे. तेनुं गुजराती भाषांतर छपाई प्रगट थयुं छे; जे पुस्तक वांचवा तथा विचारवा अर्थे मोकल्युं छे.

प्रथम गणपति आदिनी स्तुति करी छे, तेथी तेम ज, पाछळ जगत्ना पदार्थोने आत्मारूप वर्णवीने उपदेश कर्यो छे, तेथी तेम ज, तेमां वेदांतनुं मुख्यपणु वर्णव्युं छे ते वगेरेथी कंइ पण भय न पामतां, अथवा विकल्प नहीं पामतां, आत्मार्थविषेना ग्रंथकर्त्ताना विचारोनुं अवगाहन करवायोग्य छे.

आत्मार्थ विचारवामां तेथी क्रमे करीने सुलभता थाय छे.

श्री······ने व्याख्यान करवानुं रहे छे, तेथी अहंभावादिनो भय रहे छे, ते संभवित छे.

जेणे जेणे सद्गुरुनेविषे तथा तेमनी दशानेविषे विशेषपणुं दीठुं छे, तेने तेने घणुंकरीने अहंभाव तथारूप प्रसंग जेवा प्रसंगोमां उदय थतो नथी; अथवा तरत शमाय छे. ते अहंभावने जो आगळथी झेर जेवो प्रतीत कर्यो होय, तो पूर्वापर तेनो संभव ओछो थाय. कंइक अंतरमां चातुर्यादि भावे मीठाश सूक्ष्मपरिणतिए पण राखी होय, तो ते पूर्वापर विशेषता पामे छे. पण झेर ज छे, निश्चय झेर ज छे, प्रगट 'काळकूट' झेर छे, एमां कोई रीते संशय नथी, अने संशय थाय तो ते संशय मानवो नथी, ते संशयने अज्ञान ज जाणवुं छे, एवी तीव्र खाराश करी मूकी होय तो ते अहंभाव घणुंकरी बळ करी शकतो नथी.

वखते ते अहंभावने रोकवाथी निरहंभावता थई तेनो पाछो अहंभाव थई आववानुं बने छे; ते पण आगळ झेर, झेर अने झेर मानी राखी वर्त्तायुं होय तो आत्मार्थने बाध न थाय.

६४७. श्री आनंद. आसो सुद ३ शुक्र. १९५२.

आत्मार्थी भाई श्रीमोहनलाल प्रत्ये, डरबन.

तमारो लखेलो कागळ मळ्यो हतो. आ कागळथी तेनो टुंकामां उत्तर लख्यो छे.

नातालमां स्थिति करवाथी तमारी केटलीक सद्वृत्तिओ विशेषता पामी छे, एम प्रतीति थाय छे; पण तमारी तेम वर्त्तवानी उत्कृष्ट इच्छा तेमां हेतुभूत छे. राजकोट करतां नाताल केटलीक रीते तमारी वृत्तिने उपकार करी शके एवुं क्षेत्र खरूं एम मानवामां हानि नथी, केमके तमारी सरळता साचववामां अंगत विघ्ननो भय रही शके एवा प्रपंचमां अनुसरवानुं दबाण नातालमां घणुंकरीने नहीं; पण जेनी सद्वृत्तिओ विशेष बळवान न होय अथवा निर्बळ होय, अने तेने इंग्लंडादि देशमां स्वतंत्रपणे रहेवानुं होय, तो अभक्षादिविषेमां ते दोषित थाय एम लागे छे. जेम तमने नाताल क्षेत्रमां प्रपंचनो विशेष योग नहीं होवाथी तमारी सद्वृत्तिओ विशेषता पामी, तेम राजकोट जेवामां कठण पडे ए यथार्थ लागे छे; **पण कोई सारां आर्यक्षेत्रमां सत्संगादि योगमां तमारी वृत्तिओ नाताल करतां पण विशेषता पामत एम संभवे छे.** तमारी वृत्तिओ जोतां तमने नाताल अनार्य क्षेत्ररूपे असर करे एवुं मारी मान्यतामां घणुंकरीने नथी; पण सत्संगादि योगनी घणुंकरीने प्राप्ति न थाय तेथी केटलुंक आत्मनिराकरण न थाय तेरूप हानि मानवी कंईक विशेष योग्य लागे छे.

अत्रेथी **'आर्य आचारविचार'** साचववासंबंधी लख्युं हतुं ते आवा भावार्थमां लख्युं हतुः **आर्य आचार** एटले मुख्य करीने दया, सत्य, क्षमादि गुणोनुं आचरवुं ते; अने **आर्य विचार** एटले, मुख्य करीने आत्मानुं अस्तित्व, नित्यत्व, वर्त्तमानकाळसुधीमां ते स्वरूपनुं अज्ञान, तथा ते अज्ञान अने अभाननां कारणो, ते कारणोनी निवृत्ति अने तेम थई अव्याबाध आनंदस्वरूप अभान एवा निजपदनेविषे स्वाभाविक स्थिति थवी ते. एम संक्षेप मुख्य अर्थथी ते शब्दो लख्या छे.

वर्णाश्रमादि, वर्णाश्रमादिपूर्वक आचार ते सदाचारना अंगभूतजेवा छे. वर्णाश्रमादिपूर्वक विशेष पारमार्थिक हेतुविना तो वर्त्तवुं योग्य छे, एम विचारसिद्ध छे; जो के वर्णाश्रमधर्म वर्त्तमानमां बहु निर्बळ स्थितिने पाम्यो छे, तोपण आपणे तो ज्यांसुधी उत्कृष्ट त्यागदशा न पामीए, अने ज्यांसुधी गृहाश्रममां वास होय त्यांसुधी, तो वाणीआरूप वर्णधर्मने अनुसरवो ते योग्य छे, केमके अभक्षादि ग्रहणनो तेनो व्यवहार नथी. त्यारे एम आशंका थवायोग्य छे के "लुहाणा पण ते रीते वर्त्ते छे, तो तेनां अन्नाहारादि ग्रहण करतां शुं हानि?" तो तेना उत्तरमां एटलुं जणाववुं योग्य थई शके के वगर कारणे तेवी रीति पण बदलाववी घटती नथी, केमके तेथी पछी बीजा समागमवासी के प्रसंगादि आपणी रीति जोनार गमे ते वर्णनुं खातां बाध नथी एवा उपदेशना निमित्तने पामे. लुहाणाने त्यां अन्नाहार लेवाथी वर्णधर्म हानि पामतो नथी; **पण मुसलमानने त्यां अन्नाहार लेतां तो वर्णधर्मनी हानिनो विशेष संभव छे, अने वर्णधर्म लोपवारूप दोष करवा जेवुं थाय छे.** आपणे कंई लोकना उपकारादि हेतुथी तेम वर्त्तवुं थतुं होय, अने रसलुब्धताबुद्धिथी तेम वर्त्तवुं न थतुं होय, तोपण बीजा तेनुं अनुकरण ते हेतुने समज्याविना घणुंकरीने करे, अने अंते अभक्षादि ग्रहण करवामां प्रवृत्ति करे एवां निमित्तनो हेतु आपणुं ते आचरण छे, माटे तेम नहीं वर्त्तवुं ते, एटले मुसलमानादिना अन्नाहारादिनुं ग्रहण नहीं करवुं ते, उत्तम छे. तमारी वृत्तिनी केटलीक प्रतीति आवे छे, पण तेथी उतरती वृत्ति होय तो ते ज पोते अभक्षादि आहारना योगने घणुंकरीने ते रस्ते पामे. माटे ए प्रसंगथी दूर रहेवाय तेम विचारवुं कर्त्तव्य छे.

दयानी लागणी विशेष रहेवा देवी होय तो ज्यां हिंसानां स्थानको छे, तथा तेवा पदार्थो लेवाय देवाय छे, त्यां रहेवानो अथवा जवा आववानो प्रसंग न थवा देवो जोईए, नहींतो जेवी जोईए तेवी घणुंकरीने दयानी लागणी न रहे; तेम ज अभक्षपर वृत्ति न जवा देवा अर्थे, अने ते मार्गनी उन्नतिनां नहीं अनुमोदनने अर्थे अभक्षादि ग्रहण करनारनो आहारादि अर्थे परिचय न राखवो जोईए.

ज्ञानदृष्टिए जोतां ज्ञात्यादि भेदनुं विशेषादिपणुं जणातुं नथी, पण भक्षाभक्षभेदनो तो त्यां पण विचार कर्त्तव्य छे, अने ते अर्थे मुख्यकरीने आ वृत्ति राखवी उत्तम छे. **केटलांक कार्यो एवां होय छे के तेमां प्रत्यक्ष दोष होतो नथी, अथवा तेथी दोष थतो होतो नथी, पण तेने अंगे बीजा दोषोनो आश्रय होय छे, तेपण विचारवानने लक्ष राखवो उचित छे.** नाताळना लोकोना उपकार अर्थे कदापि तमारूं एम प्रवर्त्तवुं थाय छे एम पण निश्चय न गणाय; जो बीजे

कोई पण स्थळे तेवुं वर्त्तन करतां बाध भासे, अने वर्त्तवानुं न बने तो मात्र ते हेतु गणाय. वळी ते लोकोना उपकार अर्थे वर्त्तवुं जोईए एम विचारवामां पण कंईक तमारा समजवाफेर थतुं हशे एम लाग्या करेछे. तमारी सद्वृत्तिनी कंईक प्रतीति छे एटले आ विषे वधारे लखवुं योग्य देखातुं नथी. **जेम सदाचार अने सद्विचारनुं आराधन थाय तेम प्रवर्त्तवुं योग्य छे.**

बीजी उतरती ज्ञातिओ अथवा मुसलमानादिनां कोई तेवां निमंत्रणोमां अन्नाहारादिने बदले नहीं रांधेलो एवो फळाहार आदि लेतां ते लोकोनो उपकार साचववानो संभव रहेतो होय, तो तेम अनुसरो तो सारुं छे.

६४८.

जीवनुं व्यापकपणुं, परिणामीपणुं, कर्मसंबंध, मोक्षक्षेत्र शा शा प्रकारे घटवायोग्य छे? ते विचार्याविना तथाप्रकारे समाधि न थाय.

गुण अने गुणीनो भेद समजवा योग्य प्रकारे छे?

जीवनुं व्यापकपणुं, सामान्य विशेषात्मकता, परिणामीपणुं, लोकालोक ज्ञायकपणुं, कर्मसंबंधता, मोक्षक्षेत्र ए पूर्वापर अविरोधथी शी रीते सिद्ध छे?

एक ज जीव नामनो पदार्थ जूदां जूदां दर्शनो, संप्रदायो अने मतो जूदे जूदे स्वरूपे कहे छे; तेनो कर्मसंबंध अने मोक्ष पण जूदे जूदे स्वरूपे कहे छे, एथी निर्णय करवो दुर्घट केम नथी?

६४९.

आत्म साधन.

द्रव्य—हुं एक छुं, असंग छुं, सर्व परभावथी मुक्त छुं.

क्षेत्र—असंख्यात निजअवगाहना प्रमाण छुं.

काळ—अजर, अमर, शाश्वत छुं, स्वपर्याय परिणामी समयात्मक छुं.

भाव—शुद्ध चैतन्यमात्र निर्विकल्प द्रष्टा छुं.

६५०.

वचन संयम–	वचन संयम–	वचन संयम.
मनो संयम–	मनो संयम–	मनो संयम.
काय संयम–	काय संयम–	काय संयम.

काय संयम.

इंद्रिय संक्षेपता,	आसन स्थिरता.
इंद्रिय स्थिरता,	सउपयोग यथासूत्र प्रवृत्ति.

वचन संयम.

मौनता,	सउपयोग यथासूत्र प्रवृत्ति.
वचनसंक्षेप.	वचनगुणातिशयता.

मनो संयम.

मनो संक्षेपता.		मनःस्थिरता.

आत्मचिंतनता.

द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव.

संयम कारण निमित्तरूप द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव.

द्रव्य–संयमित देह.

क्षेत्र–निवृत्तिवाळां क्षेत्रे स्थिति–विहार.

काळ–यथासूत्र काळ.

भाव–यथासूत्र निवृत्तिसाधनविचार.

६५१.

अनुभव.

६५२.

ध्यान.

ध्यान–ध्यान.

ध्यान–ध्यान–ध्यान.

ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान.

ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान.

ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान.

ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान–ध्यान.

६५३.

चिद् धातुमय, परमशांत, अडग, एकाग्र, एक स्वभावमय असंख्यात प्रदेशात्मक पुरुषाकार चिदानंदघन तेनुं ध्यान करो.
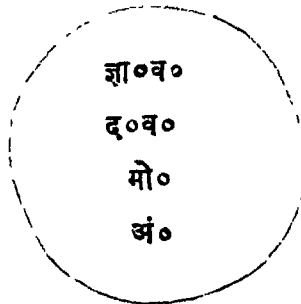
नो आत्यंतिक अभाव. प्रदेशसंबंध पामेलां पूर्व निष्पन्न,–सत्ताप्राप्त, उदयप्राप्त, उदीरणा प्राप्त चार एवां ना० गो० आ० वेदनीय वेदवाथी अभाव जेने छे एवुं शुद्ध स्वरूप जिन चिद्–मूर्त्ति,–सर्वलोकालोक भासक, चमत्कारनुं धाम.

ज्ञा० व०=ज्ञानावरणीय; द० व०=दर्शनावरणीय; मो०=मोहनीय; अं०=अंतराय.
ना०=नाम; गो०=गोत्र; आ०=आयु

६५४.

सोहं (आश्चर्यकारक) महापुरुषोए गवेषणा करी छे.

कल्पित परिणतिथी जीवने विरमवुं आटलुं बधुं कठण थई पड्युं छे. तेनो हेतु शो होवो जोईए?

आत्माना ध्याननो मुख्य प्रकार कयो कही शकाय?

ते ध्याननुं स्वरूप शा प्रकारे?

केवळ ज्ञान जिनागममां प्ररुप्युं छे ते यथायोग्य छे, के वेदांते प्ररुप्युं छे ते यथायोग्य छे?

६५५.

प्रेरणापूर्वक स्पष्ट गमनागमन क्रिया आत्माना असंख्यात प्रदेशप्रमाणपणा माटे विशेष विचारवा योग्य छे.

प्र०—परमाणु एक प्रदेशात्मक, आकाश अनंत प्रदेशात्मक मानवामां जे हेतु छे, ते हेतु आत्माना असंख्यात प्रदेशपणामाटे यथातथ्य सिद्ध थतो नथी. मध्यम परिणामी वस्तु अनुत्पन्न जोवामां आवती नथी माटे.

उ०—

६५६.

अमूर्त्तपणानी व्याख्या शुं?

अनंतपणानी व्याख्या शुं?

आकाशनुं अवगाहकधर्मपणुं शा प्रकारे?

मूर्त्तामूर्त्तनो बंध आज थतो नथी तो अनादिथी केम थई शके? वस्तुस्वभाव एम अन्यथा केम मानी शकाय?

क्रोधादिभाव जीवमां परिणामीपणे छे, निवृत्तपणे छे?

परिणामीपणे जो कहीए तो स्वाभाविक धर्म थाय, स्वाभाविक धर्मनुं टळवापणुं क्यांय अनुभूत थतुं नथी.

निवृत्तपणे जो गणीए तो साक्षात् बंध जे प्रकारे जिन कहे छे, ते प्रमाणे मानतां विरोध आववो संभवे छे.

६५७.

(१)

जिनने अभिमत केवळदर्शन अने वेदांतने अभिमत ब्रह्म एमां भेद शो छे?

(२)

जिनने अभिमते.

आत्मा—असंख्यात प्रदेशी, (०) संकोच विकाशनुं भाजन, अरूपी, लोकप्रमाण प्रदेशात्मक.

६५८.

जिन.

मध्यम परिमाणनुं नित्यपणुं, क्रोधादिनुं पारिणामिकपणुं (?) आत्मामां केम घटे?

कर्म बंधनो हेतु आत्मा के पुद्गळ के उभय के कंई एथी पण अन्य प्रकार?

मुक्तिमां आत्मघन?

*द्रव्यनुं गुणथी अतिरिक्तपणुं?

बधा गुण मळी एक द्रव्य के ते विना बीजुं द्रव्यनुं कंई विशेष स्वरूप छे?

सर्व द्रव्यनुं वस्तुत्व गुण बाद करी विचारीए तो एक छे के केम?

आत्मा गुणी, ज्ञान गुण एम कहेवाथी कथंचित् आत्मानुं ज्ञानराहित्यपणुं खरूं के नहीं?

जो ज्ञानराहित्य आत्मपणुं स्वीकारीए तो जड बने?

चारित्रवीर्यादि गुण कहीए तो ज्ञानथी तेनुं जूदापणुं होवाथी ते जड ठरे तेनुं समाधान शा प्रकारे घटे छे?

अभव्यत्व पारिणामिक भावे शा माटे घटे?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश अने जीव द्रव्य दृष्टिए जोईए तो एक वस्तु खरी के नहीं?

द्रव्यपणुं शुं?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशनुं स्वरूप विशेष शी रीते प्रतिपादन थई शके छे?

लोक असंख्य प्रदेशी अने द्वीप समुद्र असंख्याता ते आदि विरोधनुं समाधान शा प्रकारे छे?

आत्मामां पारिणामिकता?

मुक्तिमां पण सर्व पदार्थनुं प्रतिभासवुं?

अनादि अनंतनुं ज्ञान क्या प्रकारे थवा योग्य छे?

६५९.

वेदांत.

आत्मा एक, अनादि माया, बंधमोक्षनुं प्रतिपादन ए तमे कहो छो एम घटी शकतां नथी.

आनंद अने चैतन्यमां श्री कपिलदेवजीए विरोध कह्यो छे तेनुं शुं समाधान छे?

यथायोग्य समाधान वेदांतमां जोवामां आवतुं नथी.

आत्मा नानाविना बंध, मोक्ष होवायोग्य ज नथी. ते तो छे, एम छतां कल्पित कहेवाथी पण उपदेशादि कार्य करवां योग्य ठरतां नथी.

६६०. श्रीनडियाद. आसो वद १ गुरु. १९५२.

श्रीआत्मसिद्धिशास्त्र.

ॐ

श्रीसद्गुरुचरणाय नमः

१. जे स्वरूप समज्याविना, पाम्यो दुःख अनंत;
समजाव्युं ते पद नमुं श्रीसद्गुरु भगवंत. १.

जे आत्मस्वरूप समज्याविना भूतकाळे हुं अनंत दुःख पाम्यो, ते पद जेणे समजाव्युं एटले भविष्यकाळे उत्पन्न थवायोग्य एवां अनंत दुःख पामत ते मूळ जेणे छेद्युं एवा श्रीसद्गुरु भगवान्ने नमस्कार करूं छुं. १.

२. वर्त्तमान आ काळमां, मोक्षमार्ग बहु लोप;
विचारवा आत्मार्थिने भाख्यो अत्र अगोप्य. २.

आ वर्त्तमान काळमां मोक्षमार्ग घणो लोप थई गयो छे; जे मोक्षमार्ग आत्मार्थिने विचारवा माटे (गुरुशिष्यना संवादरूपे) अत्रे प्रगट कहीए छीए. २.

३. कोई क्रियाजड थई रह्यां, शुष्क ज्ञानमां कोई;
माने मारग मोक्षनो, करुणा उपजे जोइ. ३.

कोइ क्रियाने ज वळगी रह्यां छे; अने कोई शुष्कज्ञानने ज वळगी रह्यां छे; एम मोक्षमार्ग माने छे; जे जोईने दया आवे छे. ३.*

४. बाह्यक्रियामां राचतां, अंतर्भेद न कांई;
ज्ञानमार्ग निषेधतां, तेह क्रियाजड आंहि. ४.

बाह्यक्रियामां ज मात्र राची रह्यां छे, अंतर् कंई भेदायुं नथी, अने ज्ञानमार्गने निषेध्या करे छे, ते अहीं क्रियाजड कह्यां छे. ४.

५. बंध मोक्ष छे कल्पना, भाखे वाणीमांहि;
वर्त्ते मोहावेशमां, शुष्कज्ञानी ते आंहि. ५.

बंध, मोक्ष मात्र कल्पना छे, एवां निश्चयवाक्य मात्र वाणीमां बोले छे, अने तथारूप दशा थई नथी, मोहना प्रभावमां वर्त्ते छे, ए अहीं शुष्कज्ञानी कह्यां छे. ५.

६. वैराग्यादि सफळ तो, जो सह आतमज्ञान;
तेम ज आतमज्ञाननी, प्राप्तितणां निदान. ६.

वैराग्यत्यागादि जो साथे आत्मज्ञान होय तो सफळ छे, अर्थात् मोक्षनी प्राप्तिना हेतु छे, अने ज्यां आत्मज्ञान न होय त्यां पण जो ते आत्मज्ञानने अर्थे करवामां आवतां होय, तो ते आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु छे.

---

* जुओ आंक ३४८. म कि.

वैराग्य, त्याग, दयादि **अंतरंगवाळी क्रिया** छे ते जो साथे आत्मज्ञान होय तो सफळ छे अर्थात् भवनुं मूळ छेदे छे. अथवा वैराग्य, त्याग, दयादि आत्मज्ञाननी प्राप्तिनां कारणो छे. एटले जीवमां प्रथम ए गुणो आव्येथी सद्गुरुनो उपदेश तेमां परिणाम पामे छे. **उज्ज्वळ अंतःकरण विना सद्गुरुनो उपदेश परिणमतो नथी,** तेथी वैराग्यादि आत्मज्ञाननी प्राप्तिनां साधनो छे एम कह्युं.

अत्रे जे जीवो क्रियाजड छे तेने एवो उपदेश कर्यो के काया ज मात्र रोकवी ते कांई आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु नथी, वैराग्यादि गुणो आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु छे, माटे तमे ते क्रियाने अवगाहो, अने ते क्रियामां पण अटकीने रहेवुं घटतुं नथी; केमके आत्मज्ञान विना ते पण भवनुं मूळ छेदी शकतां नथी. माटे आत्मज्ञाननी प्राप्तिने अर्थे ते वैराग्यादि गुणोमां वर्तो; अने कायक्लेशरूप पण कषायादिनुं जेमां तथारूप कंई क्षीणपणुं नथी तेमां तमे मोक्षमार्गनो दुराग्रह राखो नहीं, एम क्रियाजडने कह्युं.

अने जे शुष्कज्ञानीओ त्यागवैराग्यादि रहित छे, मात्र वाचा ज्ञानी छे तेने एम कह्युं के वैराग्यादि साधन छे ते आत्मज्ञाननी प्राप्तिनां कारणो छे, कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी, तमे वैराग्यादि पण पाम्या नथी, तो आत्मज्ञान क्यांथी पाम्या हो ते कंईक आत्मामां विचारो. संसार प्रत्ये बहु उदासीनता, देहनी मूर्च्छानुं अल्पत्व, भोगमां अनासक्ति, तथा मानादिनुं पातळापणुं ए आदि गुणो विना तो आत्मज्ञान परिणाम पामतुं नथी अने आत्मज्ञान पाम्ये तो ते गुणो अत्यंत दृढ थाय छे, केमके आत्मज्ञानरूप मूळ तेने प्राप्त थयुं. तेने बदले तमे आत्मज्ञान अमने छे एम मानो छो अने आत्मामां तो भोगादि कामनानी अग्नि बळ्यां करे छे, पूजा सत्कारादिनी कामना वारंवार स्फुरायमान थाय छे, सहज अशाताए बहु आकुळ-व्याकुळता थई जाय छे, ते केम लक्षमां आवतां नथी के आ आत्मज्ञाननां लक्षणो नहीं? 'मात्र मानादि कामनाए आत्मज्ञानी कहेवरावुं छउं,' एम जे समजवामां आवतुं नथी ते समजो; अने वैराग्यादि साधनो प्रथमतो आत्मामां उत्पन्न करो के जेथी आत्मज्ञाननी सन्मुखता थाय. ६.

७. त्याग विराग न चित्तमां, थाय न तेने ज्ञान;
अटके त्याग विरागमां, तो भूले निजभान. ७.

जेना चित्तमां त्याग अने वैराग्यादि साधनो उत्पन्न थयां न होय तेने ज्ञान न थाय; अने जे त्याग विरागमां ज अटकी रही, आत्मज्ञाननी आकांक्षा न राखे, ते पोतानुं भान भूले; अर्थात् अज्ञानपूर्वक त्यागवैराग्यादि होवाथी ते पूजासत्कारादिथी पराभव पामे, अने आत्मार्थ चूकी जाय.

जेना अंतःकरणमां त्याग वैराग्यादि गुणो उत्पन्न थया नथी एवा जीवने आत्मज्ञान न थाय. केमके मलिन अंतःकरणरूप दर्पणमां आत्मोपदेशनुं प्रतिबिंब पडवुं घटतुं नथी. तेम ज मात्र त्यागविरागमां राचीने कृतार्थता माने ते पण पोताना आत्मानुं भान भूले. अर्थात् आत्मज्ञान नहीं होवाथी अज्ञाननुं सहचारीपणुं छे, जेथी ते त्याग वैराग्यादिनुं मान उत्पन्न करवा अर्थे अने

मानार्थे सर्व संयमादि प्रवृत्ति थई जाय; जेथी संसारनो उच्छेद न थाय, मात्र त्यां ज अटकवुं थाय. अर्थात् ते आत्मज्ञानने पामे नहीं.

एम क्रिया जडने साधन—क्रिया अने ते साधननुं जेथी सफळपणुं थाय एवा आत्मज्ञाननो उपदेश कर्यो अने शुष्कज्ञानीने त्याग विरागादि साधननो उपदेश करी वाचा ज्ञानमां कल्याण नथी एम प्रेर्युं. ७.

८. ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह;
त्यां त्यां ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह. ८.

ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, त्यां त्यां ते ते समजे, अने त्यां त्यां ते ते आचरे ए आत्मार्थी पुरुषनां लक्षणो छे.

जे जे ठेकाणे जे जे योग्य छे एटले ज्यां त्याग वैराग्यादि योग्य होय त्यां त्यागवैराग्यादि समजे, आत्मज्ञान योग्य होय त्यां आत्मज्ञान समजे, एम जे ज्यां जोईए ते त्यां समजवुं अने त्यां त्यां ते प्रमाणे प्रवर्त्तवुं, ए आत्मार्थी जीवनुं लक्षण छे. अर्थात् मतार्थी होय के मानार्थी होय ते योग्य मार्गने ग्रहण न करे. अथवा क्रियामां ज जेने दुराग्रहथयो छे, अथवा शुष्कज्ञानना ज अभिमानमां जेणे ज्ञानीपणुं मानी लीधुं छे, ते त्यागवैराग्यादि साधनने अथवा आत्मज्ञानने ग्रहण न करी शके.

जे आत्मार्थी होय ते ज्यां ज्यां जे जे करवुं घटे छे ते ते करे अने ज्यां ज्यां जे जे समजवुं घटे छे ते ते समजे. अथवा ज्यां ज्यां जे जे समजवुं घटे छे ते ते समजे अने ज्यां जे जे आचरवुं घटे छे ते ते आचरे, ते आत्मार्थी कहेवाय.

अत्रे 'समजवुं' अने 'आचरवुं' ए बे सामान्य पदे छे. पण विभागपदे कहेवानो आशय एवो पण छे के जे जे ज्यां समजवुं घटे ते ते त्यां समजवानी कामना जेने छे अने जे जे ज्यां आचरवुं घटे ते ते त्यां आचरवानी जेने कामना छे ते पण आत्मार्थी कहेवाय. ८.

९. सेवे सद्गुरु चरणने, त्यागी दइ निजपक्ष;
पामे ते परमार्थने, निजपदनो ले लक्ष. ९.

पोताना पक्षने छोडी दइ, जे सद्गुरुना चरणने सेवे ते परमार्थने पामे, अने आत्मस्वरूपनो लक्ष तेने थाय.

आशंका—घणाने क्रियाजडत्व वर्त्ते छे, अने घणाने शुष्कज्ञानीपणुं वर्त्ते छे तेनुं शुं कारण होवुं जोईए? एवी आशंका करी तेनुं

समाधानः—सद्गुरुना चरणने जे पोतानो पक्ष एटले मत छोडी दई सेवे ते पदार्थने पामे, अने निजपदनो एटले आत्मस्वभावनो लक्ष ले. अर्थात् घणाने क्रियाजडत्व वर्त्ते छे तेनो हेतु ए छे के असद्गुरु के जे आत्मज्ञान अने आत्मज्ञानना साधनने जाणता नथी तेनो तेणे आश्रय

कर्यो छे; जेथी तेनो मात्र क्रियाजडत्वनो एटले कायक्लेशनो मार्ग जाणे छे, तेमां वळगाडे छे, अने कुळधर्म दृढ करावे छे; जेथी तेने सद्गुरुनो योग मेळववानी आकांक्षा थती नथी, अथवा तेवा योग मळ्ये पण पक्षनी दृढ वासना तेने सदुपदेशसन्मुख थवा देती नथी, एटले क्रिया-जडत्वपणुं टळतुं नथी; अने परमार्थनी प्राप्ति थती नथी.

अने जे शुष्कज्ञानी छे तेणे पण सद्गुरुना चरण सेव्या नथी, मात्र पोतानी मति-कल्पनाथी स्वच्छंदपणे अध्यात्म ग्रंथो वांच्या छे, अथवा शुष्कज्ञानी समीपथी तेवा ग्रंथो के वचनो सांभळी लईने पोताने विषे ज्ञानीपणुं मान्युं छे, अने ज्ञानी गणावाना पदनुं एक प्रकारनुं मान छे तेमां तेने मीठाश रही छे, अने ए तेनो पक्ष थयो छे. अथवा कोई एक कारणविशेषथी शास्त्रोमां दया, दान, अने हिंसा, पूजानुं समानपणुं कह्युं छे तेवां वचनोने तेनो परमार्थ समज्याविना हाथमां लईने मात्र पोताने ज्ञानी मनावा अर्थे, अने पामर जीवना तिरस्कारना अर्थे ते वचनोनो उपयोग करे छे, पण तेवां वचनो कये लक्षे समजवाथी परमार्थ थाय छे ते जाणतो नथी. वळी जेम दया दानादिकनुं शास्त्रोमां निष्फळपणुं कह्युं छे तेम, नवपूर्वसुधी भण्या छतां ते पण अफळ गयुं एम ज्ञाननुं पण निष्फळपणुं कह्युं छे, तो ते शुष्कज्ञाननो ज निषेध छे. एम छतां तेनो लक्ष तेने थतो नथी, केमके ज्ञानी बनवाना माने तेनो आत्मा मूढताने पाम्यो छे, तेथी तेने विचारनो अवकाश रह्यो नथी. एम क्रियाजड अथवा शुष्कज्ञानी ते बन्ने भूल्या छे, अने ते परमार्थ पामवानी वांछा राखे छे, अथवा परमार्थ पाम्या छीए एम कहे छे, ते मात्र तेमनो दुराग्रह ते प्रत्यक्ष देखाय छे.

जो सद्गुरुनां चरण सेव्यां होत, तो एवा दुराग्रहमां पडी जवानो वखत न आवत, अने आत्मसाधनमां जीव दोरात, अने तथारूप साधनथी परमार्थने पामत, अने निजपदनो लक्ष लेत; अर्थात् तेनी वृत्ति आत्म सन्मुख थात.

वळी ठाम ठाम एकाकीपणे विचरवानो निषेध कर्यो छे, अने सद्गुरुनी सेवामां विचरवानो ज उपदेश कर्यो छे; तेथी पण एम समजाय छे के जीवने हितकारी अने मुख्य मार्ग ते ज छे, अने असद्गुरुथी पण कल्याण थाय एम कहेवुं ते तो तीर्थंकरादिनी ज्ञानीनी आसातना करवासमान छे. केमके तेमां अने असद्गुरुमां कंई भेद न पड्यो; जन्मांध, अने अत्यंत शुद्ध निर्मळ चक्षुवाळानुं कंई न्यूनाधिकपणु ठर्युं ज नहीं. वळी कोई 'श्री ठाणांगसूत्र'नी चोभंगी* ग्रहण करीने एम कहे के 'अभव्यना तार्या पण तरे,' तो ते वचन पण वदतोव्याघात जेवुं छे; एक तो मूळमां 'ठाणांग'मां ते प्रमाणे पाठ ज नथी; जे पाठ छे तेमां कोई स्थळे अभव्यना तार्या तरे एवुं कह्युं नथी; अने कोई एक टबामां कोईए एवुं वचन लख्युं छे ते तेनी समजनुं अयथार्थपणुं समजाय छे.

कदापि एम कोई कहे के अभव्य कहे छे ते यथार्थ नथी, एम भासवाथी यथार्थ शुं छे, तेनो लक्ष थवाथी स्वविचारने पामीने तर्या एम अर्थ करीए तो ते एक प्रकारे संभवित थाय छे, पण तेथी अभव्यना तार्या तर्या एम कही शकातुं नथी. एम विचारी जे मार्गेथी अनंत जीव

* जुओ आंक ४६१. म. कि.

तर्या छे, अने तरशे ते मार्गने अवगाहवो अने स्वकल्पित अर्थनो मानादिनी जाळवणी छोडी दई त्याग करवो ए ज श्रेय छे. जो अभव्यथी तराय छे एम तमे कहो, तो तो अवश्य निश्चय थाय छे के असद्गुरुथी तराशे एमां कशो संदेह नथी.

अने अशोच्या केवळी जेमणे पूर्वे कोई पासेथी धर्म सांभळ्यो नथी तेने कोई तथारूप आवरणना क्षयथी ज्ञान उपज्युं छे एम शास्त्रमां निरूपण कर्युं छे, ते आत्मानुं महात्म्य दर्शाववा, अने जेने सद्गुरुयोग न होय तेने जाग्रत करवा, ते ते अनेकांतमार्गे निरूपण करवा, दर्शाव्युं छे; पण सद्गुरुआज्ञाए प्रवर्त्तवानो मार्ग उपेक्षित करवा दर्शाव्युं नथी. वळी ए स्थळे तो उलटुं ते मार्ग उपर दृष्टि आववा वधारे सबळ कर्युं छे, अने अशोच्या केवळीनो आ प्रसंग सांभळीने कोईए जे शाश्वतमार्ग चाल्यो आवे छे, तेना निषेधप्रत्ये जवुं एवो आशय नथी, एम निवेदन कर्युं छे.

कोई तीव्र आत्मार्थीने एवो कदापि सद्गुरुनो योग न मळ्यो होय, अने तेनी तीव्र कामनामांनेकामनामां ज निजविचारमां पडवाथी, अथवा तीव्र आत्मार्थने लीधे निजविचारमां पडवाथी आत्मज्ञान थयुं होय तो ते सद्गुरुमार्गनो उपेक्षित नहीं एवो, अने सद्गुरुथी पोताने ज्ञान मळ्युं नथी माटे मोटो छुं एवो नहीं होय तेने थयुं होय; एम विचारी विचारवान जीवे शाश्वत मोक्षमार्गनो लोप न थाय तेवुं वचन प्रकाशवुं जोईए.

एक गामथी बीजे गाम जवुं होय अने तेनो मार्ग दीठो न होय एवो पोते पचाश वर्षनो पुरुष होय, अने लाखो गाम जोई आव्यो होय तेने पण ते मार्गनी खबर पडती नथी, अने कोईने पूछे त्यारे जणाय छे, नहीं तो भूल खाय छे; अने ते मार्गने जाणनार एवुं दश वर्षनुं बाळक पण तेने ते मार्ग देखाडे छे तेथी ते पहोंची शके छे; एम लौकिकमां अथवा व्यवहारमां पण प्रत्यक्ष छे. माटे जे आत्मार्थी होय, अथवा जेने आत्मार्थनी इच्छा होय तेणे सद्गुरुना योगे तरवाना कामी जीवनुं कल्याण थाय ए मार्ग लोपवो घटे नहीं, केमके तेथी सर्व ज्ञानीपुरुषनी आज्ञा लोपवा बराबर थाय छे.

आशंकाः–पूर्वे सद्गुरुनो योग तो घणी वखत थयो छे, छतां जीवनुं कल्याण थयुं नहीं, जेथी सद्गुरुना उपदेशनुं एवुं कंई विशेषपणुं देखातुं नथी, एम आशंका थाय तो तेनो उत्तर बीजा पदमां ज कह्यो छे के,

उत्तरः–जे **पोताना पक्षने त्यागी दई सद्गुरुना चरणने सेवे, ते परमार्थने पामे.** अर्थात् पूर्वे सद्गुरुनो योग थवानी वात सत्य छे, परंतु त्यां जीवे तेने सद्गुरु जाण्या नथी, अथवा ओळख्या नथी, प्रतीत्या नथी, अने तेनी पासे पोतानां मान अने मत मूक्यां नथी; अने तेथी सद्गुरुनो उपदेश परिणाम पाम्यो नहीं, अने परमार्थनी प्राप्ति थई नहीं एम जो पोतानो मत एटले स्वच्छंद अने कुळधर्मनो आग्रह दूर करीने सदुपदेश ग्रहण करवानो कामी थयो होत तो अवश्य परमार्थ पामत.

आशंकाः–अत्रे असद्गुरुए दृढ करावेला दुर्बोधथी अथवा मानादिकना तीव्र कामीपणाथी एम पण आशंका थवी संभवे छे के कैक जीवोनां पूर्वे कल्याण थयां छे; अने तेमने सद्गुरुनां चरण

सेव्याविना कल्याणनी प्राप्ति थई छे, अथवा असद्गुरुथी पण कल्याणनी प्राप्ति थाय; असद्गुरुने पोताने भले मार्गनी प्रतीति नथी, पण बीजाने ते पमाडी शके; एटले बीजो ते मार्गनी प्रतीति, तेनो उपदेश सांभळीने करे तो ते परमार्थने पामे; माटे सद्गुरुचरणने सेव्याविना पण परमार्थनी प्राप्ति थाय, एवी आशंकानुं समाधान करे छेः

उत्तरः—यद्यपि कोई जीवो पोते विचार करतां बुझ्या छे, एवो शास्त्रमां प्रसंग छे; पण कोई स्थळे एवो प्रसंग रह्यो नथी के असद्गुरुथी अमुक बुझ्या. हवे कोई पोते विचार करतां बुझ्या छे एम कह्युं छे तेमां शास्त्रोनो कहेवानो हेतु एवो नथी के सद्गुरुनी आज्ञाए वर्त्तवाथी जीवनुं कल्याण थाय छे एम अमे कह्युं छे पण ते वात यथार्थ नथी अथवा सद्गुरुनी आज्ञानुं जीवने कंई कारण नथी एम कहेवाने माटे. तेम जे जीवो पोताना विचारथी स्वयं बोध पाम्या छे एम कह्युं छे ते पण वर्त्तमान देहे पोताना विचारथी अथवा बोधथी बुझ्या कह्या छे, पण पूर्वे ते विचार अथवा बोध तेणे सन्मुख कर्यो छे तेथी वर्त्तमानमां ते स्फुरायमान थवानो संभव छे. तीर्थंकरादि स्वयंबुध कह्या छे ते पण पूर्वे त्रीजे भवे सद्गुरुथी निश्चय समकित पाम्या छे एम कह्युं छे. एटले ते स्वयंबुधपणुं कह्युं छे ते वर्त्तमान देहनी अपेक्षाए कह्युं छे, अने ते सद्गुरुपदना निषेधने अर्थे कह्युं नथी.

अने जो सद्गुरुपदनो निषेध करे तो ते "सद्देव, सद्गुरु अने सद्धर्मनी प्रतीति विना समकित कह्युं नथी," ते कहेवामात्र ज थयुं.

अथवा जे शास्त्रनुं तमे प्रमाण ल्यो छो ते शास्त्र सद्गुरु एवा जिनमां करेलां छे तेथी प्रमाणिक मानवां योग्य छे के कोई असद्गुरुनां कहेलां छे, तेथी प्रमाणिक मानवां योग्य छे? जो असद्गुरुनां शास्त्रो पण प्रमाणिक मानवामां बाध न होय, तो तो अज्ञान अने राग द्वेष आराधवाथी पण मोक्ष थाय एम कहेवामां बाध नथी, ते विचारवा योग्य छे.

'आचारांग सूत्र'मां (प्रथम श्रुतकंध, प्रथमाध्ययनना प्रथम उद्देशो, प्रथम वाक्य) कह्युं छे केः—आ जीव पूर्वथी आव्यो छे? पश्चिमथी आव्यो छे? उत्तरथी आव्यो छे? दक्षिणथी आव्यो छे? अथवा उंचेथी? नीचेथी? के कोई अनेरी दिशाथी आव्यो छे? एम जे जाणतो नथी ते मिथ्यादृष्टि छे, जे जाणे ते सम्यग्दृष्टि छे. ते जाणवानां त्रण कारणो आ प्रमाणेः—

(१) तीर्थंकरना उपदेशथी,
(२) सद्गुरुना उपदेशथी, अने
(३) जातिस्मृति ज्ञानथी.

अत्रे जातिस्मृति ज्ञान कह्युं ते पण पूर्वना उपदेशनी संधि छे, एटले पूर्वे तेने बोध थवामां सद्गुरुनो असंभव धारवो घटतो नथी. वळी ठाम ठाम जिनागममां एम कह्युं छे के,

"गुरुणो छंदाणुं वत्त"—गुरुनी आज्ञाए प्रवर्त्तवुं.

गुरुनी आज्ञाए चालतां अनंता जीवो सिझ्या, सिझे छे अने सिझशे. तेम कोई जीव पोताना विचारथी बोध पाम्या, तेमां प्राये पूर्वे सद्गुरुउपदेशनुं कारण होय छे. पण कदापि ज्यां तेम न

होय त्यां पण ते सद्गुरुनो नित्यकामी रह्यो थको सद्विचारमां प्रेरातो प्रेरातो स्वविचारथी आत्मज्ञान पाम्यो एम कहेवायोग्य छे. अथवा तेने कंई सद्गुरुनी उपेक्षा नथी; अने ज्यां सद्गुरुनी उपेक्षा वर्त्ते त्यां माननो संभव थाय छे; अने ज्यां सद्गुरुप्रत्ये मान होय त्यां कल्याण थवुं कह्युं, के तेने सद्विचार प्रेरवानो आत्मगुण कह्यो.

तथारूप मान आत्मगुणनुं अवश्य घातक छे. बाहुबळजीमां अनेक गुणसमूह विद्यमान छतां नाना अट्ठाणुं भाईने वंदन करवामां पोतानुं लघुपणुं थशे, माटे अत्रे ज ध्यानमां रोकावुं योग्य छे एम राखी एक वर्षसुधी निराहारपणे अनेक गुणसमुदाये आत्मध्यानमां रह्या, तोपण आत्मज्ञान थयुं नहीं. बाकी बीजी बधी रीतनी योग्यता छतां एक ए मानना गुणथी ते ज्ञान अटक्युं हतुं. ज्यारे श्री ऋषभदेवे प्रेरेली एवी ब्राह्मी अने सुंदरी सतीए तेने ते दोष निवेदन कर्यो अने ते दोषनुं भान तेने थयुं तथा ते दोषनी उपेक्षा करी असारत्व जाण्युं त्यारे केवळज्ञान थयुं. ते मान ज अत्रे चार घनघाती कर्मनुं मूळ थई वर्त्युं हतुं. **वळी बार बार महिनासुधी निराहारपणे, एक लक्षे, एक आसने, आत्मविचारमां रहेनार एवा पुरुषने एटला माने तेवी बारे महिनानी दशा सफळ थवा न दीधी अर्थात् ते दशाथी मान न समजायुं अने ज्यारे सद्गुरु एवा श्री ऋषभदेवे ते मान छे एम प्रेर्युं त्यारे मुहूर्तमां ते मान व्यतीत थयुं; ए पण सद्गुरुनुं ज महात्म्य दर्शाव्युं छे.**

वळी आखो मार्ग ज्ञानीनी आज्ञामां * शमाय छे एम वारंवार कह्युं छे. 'आचारांगसूत्रमां कह्युं छे केः—(सुधर्मास्वामी जंबुस्वामीने उपदेशे छे, के जगत् आखानुं जेणे दर्शन कर्युं छे एवा महावीर भगवान्, तेणे अमने आम कह्युं छे.) गुरुने आधीन थई वर्त्तता एवा अनंता पुरुषो मार्ग पामीने मोक्ष प्राप्त थया.

'उत्तराध्ययन,' 'सूयगडांगादिमां 'मां ठाम ठाम ए ज कह्युं छे. ९.

१०. आत्मज्ञान समदर्शीता, विचरे उदयप्रयोग;
अपूर्ववाणी परम श्रुत, सद्गुरु लक्षण योग्य. १०.

आत्मज्ञानने विषे जेमनी स्थिति छे, एटले परभावनी इच्छाथी जे रहित थया छे, तथा शत्रु, मित्र, हर्ष, शोक, नमस्कार, तिरस्कारादि भावप्रत्ये जेने समता वर्त्ते छे; मात्र पूर्वे उत्पन्न थयेलां एवां कर्मोना उदयने लीधे जेमनी विचरवाआदि क्रिया छे; अज्ञानी करतां जेनी वाणी प्रत्यक्ष जूदी पडे छे, अने षट्दर्शनना तात्पर्यने जाणे छे, ते सद्गुरुनां उत्तम लक्षणो छे.

स्वरूपस्थित इच्छारहित, विचरे पूर्वप्रयोग;
अपूर्व वाणी, परमश्रुत, सद्गुरुलक्षण योग्य.

आत्मस्वरूपने विषे जेनी स्थिति छे, विषय अने मान पूजादि इच्छाथी रहित छे, अने मात्र पूर्वे उत्पन्न थयेलां एवा कर्मना प्रयोगथी जे विचरे छे; जेमनी वाणी अपूर्व छे, अर्थात् निज-

* जुओ आंक १६७, १७३ (१), ८२२ (२), ४२८ वगेरे. म. कि.

अनुभवसहित जेनो उपदेश होवाथी अज्ञानीनी वाणी करतां प्रत्यक्ष जूदी पडे छे, अने परमश्रुत एटले षट्दर्शनना यथास्थित जाण होय, ए सद्गुरुनां योग्य लक्षणो छे.

अत्रे **स्वरूपस्थित** एवुं प्रथमपद कह्युं तेथी ज्ञानदशा कही. **इच्छारहितपणुं** कह्युं तेथी चारित्रदशा कही. इच्छारहित होय ते विचरी केम शके? एवी आशंका, '**पूर्वप्रयोग** एटले पूर्वनां बंधायेलां प्रारब्धथी विचरे छे; विचरवा आदिनी बाकी जेने कामना नथी,' एम कही निवृत्त करी. **अपूर्व वाणी** एम कहेवाथी वचनातिशयता कही, केमके ते विना मुमुक्षुने उपकार न थाय. **परमश्रुत** कहेवाथी षट्दर्शन अविरुद्ध दशाए जाणनार कह्या, एटले श्रुतज्ञाननुं विशेषपणु दर्शाव्युं.

आशंका:—वर्त्तमानकाळमां स्वरूपस्थित पुरुष होय नहीं, एटले जे स्वरूपस्थित विशेषणवाळा सद्गुरु कह्या छे, ते आजे होवायोग्य नथी.

समाधान:—वर्त्तमानकाळमां कदापि एम कहेलुं होय तो कहेवाय के 'केवलभूमिका'ने विषे एवी स्थिति असंभवित छे, पण आत्मज्ञान ज न थाय एम कहेवाय नहीं; अने आत्मज्ञान छे ते स्वरूपस्थिति छे.

आशंका:—आत्मज्ञान थाय तो वर्त्तमान काळमां मुक्ति थवी जोईए अने जिनागममां ना कही छे.

समाधान:—ए वचन कदापि एकांते एम ज एम गणीए, तोपण तेथी एकावतारीपणानो निषेध थतो नथी, अने एकावतारीपणुं आत्मज्ञानविना प्राप्त थाय नहीं.

आशंका:—त्याग वैराग्यादिना उत्कृष्टपणाथी तेने एकावतारीपणुं कह्युं हशे.

समाधान:—**परमार्थथी उत्कृष्ट त्याग वैराग्यविना एकावतारीपणुं थाय ज नहीं,** एवो सिद्धांत छे; अने वर्त्तमानमां पण चोथा, पांचमा अने छठ्ठा गुणस्थानकनो कशो निषेध छे नहीं अने चोथे गुणस्थानकेथी ज आत्मज्ञाननो संभव थाय छे; पांचमे विशेष स्वरूपस्थिति थाय छे; छठ्ठे घणा अंशे स्वरूपस्थिति थाय छे, पूर्वप्रेरित प्रमादना उदयथी मात्र कंईक प्रमाददशा आवी जाय छे, पण ते आत्मज्ञानने रोधक नथी, चारित्रने रोधक छे.

आशंका:—अत्रे तो स्वरूपस्थित एवुं पद वापर्युं छे, अने स्वरूपस्थितपद तो तेरमे गुणस्थानके ज संभवे छे.

समाधान:—स्वरूपस्थितिनी पराकाष्ठा तो चौदमा गुणस्थानकने छेडे थाय छे, केमके नाम गोत्रादि चार कर्मनो नाश त्यां थाय छे; ते पहेलां केवळीने चार कर्मनो संग छे, तेथी संपूर्ण स्वरूपस्थिति तो तेरमे गुणस्थानके पण कहेवाय.

आशंका:—त्यां नामादि कर्मथी करीने अव्याबाध स्वरूपस्थितिनी ना कहे तो ते ठीक छे; पण केवळज्ञानरूप स्वरूपस्थिति छे, तेथी स्वरूपस्थिति कहेवामां दोष नथी, अने अत्रे तो तेम नथी, माटे स्वरूपस्थितपणुं केम कहेवाय?

समाधान:—केवळज्ञानने विषे स्वरूपस्थितिनुं तारतम्य विशेष छे; अने चोथे, पांचमे, छठ्ठे, गुणस्थानके तेथी अल्प छे, एम कहेवाय; पण स्वरूपस्थिति नथी एम न कही शकाय. चोथे

गुणस्थानके मिथ्यात्वमुक्तदशा थवाथी आत्मस्वभावआविर्भावपणुं छे, अने स्वरूपस्थिति छे; पांचमे गुणस्थानके देशे करीने चारित्रघातक कषायो रोकावाथी आत्मस्वभावनुं चोथा करतां विशेष आविर्भावपणुं छे, अने छठ्ठामां कषायो विशेष रोकावाथी सर्व चारित्रनुं उदयपणुं छे, तेथी आत्मस्वभावनुं विशेष आविर्भावपणुं छे. मात्र छठ्ठे गुणस्थानके पूर्वनिबंधित कर्मना उदयथी प्रमत्तदशा कचित् वर्ते छे तेने लीधे 'प्रमत्त' सर्व चारित्र कहेवाय, पण तेथी स्वरूपस्थितिमां विरोध नहीं, केमके आत्मस्वभावनुं बाहुल्यताथी आविर्भावपणुं छे. वळी आगम पण एम कहेछे के, चोथे गुणस्थानकेथी तेरमा गुणस्थानकसुधी आत्मप्रतीति समान छे; ज्ञाननो तारतम्यभेद छे.

जो चोथे गुणस्थानके स्वरूपस्थिति अंशे पण न होय, तो मिथ्यात्व जवानुं फळ शुं थयुं? कंई ज थयुं नहीं. **जे मिथ्यात्व गयुं ते ज आत्मस्वभावनुं आविर्भावपणुं छे, अने ते ज स्वरूपस्थिति छे.** जो सम्यक्त्वथी तथारूप स्वरूपस्थिति न होत, तो श्रेणिकादिने एकावतारीपणुं केम प्राप्त थाय? एक पण त्यां व्रत, पच्चखाण नथी अने मात्र एक ज भव ज बाकी रह्यो एवुं अल्पसंसारीपणुं थयुं ते ज स्वरूपस्थितिरूप समकितनुं बळ छे. पांचमे अने छठ्ठे गुणस्थानके चारित्रनुं बळ विशेष छे, अने मुख्यपणे उपदेशक गुणस्थानक तो छठ्ठुं अने तेरमुं छे. बाकीनां गुणस्थानको उपदेशकनी प्रवृत्ति करी शकवायोग्य नथी; एटले तेरमे अने छठ्ठे गुणस्थानके ते पद प्रवर्त्ते छे. १०.

११. प्रत्यक्षसद्गुरु सम नहीं, परोक्षजिन उपकार;
एवो लक्ष थयाविना, उगे न आत्मविचार. ११.

ज्यांसुधी जीवने पूर्वकाळे थई गयेला एवा जिननी वातपर ज लक्ष रह्या करे, अने तेनो उपकार कह्या करे, अने जेथी प्रत्यक्ष आत्मभ्रांतिनुं समाधान थाय एवा सद्गुरुनो समागम प्राप्त थयो होय तेमां परोक्षजिनोनां वचन करतां मोटो उपकार शमायो छे, तेम जे न जाणे तेने आत्मविचार उत्पन्न न थाय. ११.

१२. सद्गुरुना उपदेश वण, समजाय न जिनरूप;
समज्यावण उपकार शो? समज्ये जिनस्वरूप. १२.

सद्गुरुना उपदेशविना जिननुं स्वरूप समजाय नहीं, अने स्वरूप समजायाविना उपकार शो थाय? जो सद्गुरुउपदेशे जिननुं स्वरूप समजे तो समजनारनो आत्मा परिणामे जिननी दशाने पामे.

सद्गुरुना उपदेशथी, समजे जिननुं रूप;
तो ते पामे निजदशा, जिन छे आत्मस्वरूप.
पाम्या शुद्ध स्वभावने, छे जिन तेथी पूज्य;
समजो जिनस्वभाव तो, आत्मभाननो गुज्य.

सद्गुरुना उपदेशथी जे जिननुं स्वरूप समजे, ते पोताना स्वरूपनी दशा पामे, केमके शुद्ध आत्मापणुं ए ज जिननुं स्वरूप छे; अथवा राग, द्वेष अने अज्ञान जिनने विषे नथी ते ज शुद्ध आत्मपद छे, अने ते पद तो सत्ताए सर्व जीवनुं छे. ते सद्गुरु—जिनने अवलंबीने अने जिनना स्वरूपने कहेवेकरी मुमुक्षुजीवने समजाय छे. १२.

१३. आत्मादि अस्तित्वनां, जेह निरूपक शास्त्र;
प्रत्यक्षसद्गुरु योग नहीं, त्यां आधार सुपात्र. १३.

जे जिनागमादि आत्मानां होवापणानां तथा परलोकादिनां होवापणानो उपदेश करवावाळां शास्त्रो छे ते पण ज्यां प्रत्यक्ष सद्गुरुनो जोग न होय त्यां सुपात्र जीवने आधाररूप छे; पण सद्गुरु-समान ते भ्रांतिनां छेदक कही न शकाय. १३.

१४. अथवा सद्गुरुए कह्यां, जे अवगाहन काज;
ते ते नित्य विचारवां, करी मतांतर त्याज. १४.

*अथवा जो सद्गुरुए ते शास्त्रो विचारवानी आज्ञा दीधी होय, तो ते शास्त्रो मतांतर एटले कुळधर्मने सार्थक करवानो हेतु आदि भ्रांति छोडीने मात्र आत्मार्थे नित्य विचारवां. १४.

१५. रोके जीव स्वछंद तो, पामे अवश्य मोक्ष;
पाम्या एम अनंत छे, भाख्युं जिन निर्दोष. १५.

जीव अनादि काळथी पोताना डहापणे अने पोतानी इच्छाए चाल्यो छे, एनुं नाम 'स्वछंद' छे. जो ते स्वछंदने रोके तो जरूर ते मोक्षने पामे; अने ए रीते भूतकाळे अनंत जीव मोक्ष पाम्या छे एम राग, द्वेष अने अज्ञान एमांनो एके दोष जेने विषे नथी एवा दोषरहित वीत-रागे कह्युं छे. १५.

१६. प्रत्यक्षसद्गुरु योगथी, स्वछंद ते रोकाय;
अन्य उपाय कर्या थकी, प्राये बमणो थाय. १६.

प्रत्यक्षसद्गुरुना योगथी ते स्वछंद रोकाय छे, बाकी पोतानी इच्छाए बीजा घणा उपाय कर्या छतां घणुंकरीने ते बमणो थाय छे. १६.

१७. स्वछंद मतआग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष;
समकित तेने भाखियुं, कारण गणी प्रत्यक्ष. १७.

स्वछंदने तथा पोताना मतना आग्रहने तजीने जे सद्गुरुना लक्षे चाले तेने प्रत्यक्ष कारण गणीने वीतरागे 'समकित' कह्युं छे. १७.

१८. मानादिक शत्रु महा, निजछंदे न मराय;
जातां सद्गुरुशरणमां, अल्प प्रयासे जाय. १८.

मान अने पूजासत्कारादिनो लोभ ए आदि महाशत्रु छे, ते पोताना डहापणे चालतां नाश पामे नहीं, अने सद्गुरुना शरणमां जतां सहज प्रयत्नमां जाय. १८.

१९. जे सद्गुरुउपदेशथी, पाम्यो केवळज्ञान;
गुरु रह्या छद्मस्थ पण, विनय करे भगवान. १९.

जे सद्गुरुना उपदेशथी कोई केवळज्ञानने पाम्या, ते सद्गुरु हजु छद्मस्थ रह्या होय, तोपण जे केवळज्ञानने पाम्या छे एवा ते केवळीभगवान छद्मस्थ एवा पोताना सद्गुरुनी वैयावच्च करे. १९.

२०. एवो मार्ग विनय तणो, भाख्यो श्री वीतराग;
मूळ हेतु ए मार्गनो, समजे कोई सुभाग्य. २०.

एवो विनयनो मार्ग श्री जिने उपदेश्यो छे. ए मार्गनो मूळहेतु एटले तेथी आत्माने शो उपकार थाय छे ते कोईक सुभाग्य एटले सुलभबोधी अथवा आराधक जीव होय ते समजे. २०.

२१. असद्गुरु ए विनयनो, लाभ लहे जो कांई;
महामोहिनीय कर्मथी, बूडे भवजळ मांहि. २१.

आ विनयमार्ग कह्यो तेनो लाभ एटले ते शिष्यादिनी पासे कराववानी इच्छा करीने जो कोई पण असद्गुरु पोताने विषे सद्गुरुपणुं स्थापे तो ते महामोहिनीय कर्म उपार्जन करीने भवसमुद्रमां बूडे. २१.

२२. होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार;
होय मतार्थी जीव ते, अवळो ले निर्धार. २२.

जे मोक्षार्थी जीव होय ते आ विनयमार्गादिनो विचार समजे, अने जे मतार्थी होय ते तेनो अवळो निर्धार ले, एटले कां पोते तेवो विनय शिष्यादि पासे करावे, अथवा असद्गुरुने विषे पोते सद्गुरुनी भ्रांति राखी आ विनयमार्गनो उपयोग करे. २२.

२३. होय मतार्थी तेहने, थाय न आतमलक्ष;
तेह मतार्थिलक्षणो, अहीं कह्यां निर्पक्ष. २३.

जे मतार्थी जीव होय तेने आत्मज्ञाननो लक्ष थाय नहीं; एवां मतार्थी जीवनां अहीं निष्पक्षपाते लक्षणो कह्यां छेः २३.

मतार्थीलक्षण.

१. बाह्यत्याग पण ज्ञान नहीँ, ते माने गुरु सत्य;
अथवा निजकुळधर्मना, ते गुरुमां ज ममत्व. २४.

जेने मात्र बाह्यथी त्याग देखाय छे पण आत्मज्ञान नथी, अने उपलक्षणथी अंतरंग त्याग नथी, तेवा गुरुने साचा गुरु माने, अथवा तो पोताना कुळधर्मना गमे तेवा गुरु होय तोपण तेमां ज ममत्व राखे. २४.

२. जे जिनदेहप्रमाण ने समवसरणादि सिद्धि;
वर्णन समजे जिननुं, रोकी रहे निजबुद्धि. २५.

जे जिनना देहादिनुं वर्णन छे तेने जिननुं वर्णन समजे छे अने मात्र पोताना कुळधर्मना देव छे माटे मारापणाना कल्पित रागे समवसरणादि महात्म्य कह्यां करे छे, अने तेमां पोतानी बुद्धिने रोकी रहे छे; एटले परमार्थहेतुस्वरूप एवुं जिननुं जे अंतरंगस्वरूप जाणवायोग्य छे ते जाणतां नथी तथा ते जाणवानुं प्रयत्न करतां नथी अने मात्र समवसरणादिमां ज जिननुं स्वरूप कहीने मतार्थमां रहे छे. २५.

३. प्रत्यक्षसद्गुरु योगमां, वर्त्ते दृष्टि विमुख;
असद्गुरुने दृढ करे, निजमानार्थे मुख्य. २६.

प्रत्यक्षसद्गुरुनो क्यारेक योग मळे तो दुराग्रहादिछेदक तेनी वाणी सांभळीने तेनाथी अवळी रीते चाले, अर्थात् ते हितकारी वाणीने ग्रहण करे नहीं, अने पोते खरेखरो दृढ मुमुक्षु छे एवुं मान मुख्यपणे मेळववाने अर्थे असद्गुरुसमीपे जईने पोते तेनाप्रत्ये पोतानुं विशेष दृढपणुं जणावे.२६.

४. देवादि गति भंगमां, जे समजे श्रुतज्ञान;
माने निज मतवेषनो आग्रह मुक्तिनिदान. २७.

देव नारकादि गतिना 'भांगा' आदिनां स्वरूप कोईक विशेष परमार्थहेतुथी कह्यां छे, ते हेतुने जाण्यो नथी, अने ते भंगजाळने श्रुतज्ञान जे समजे छे तथा पोताना मतनो, वेषनो आग्रह राखवामां ज मुक्तिनो हेतु माने छे. २७.

५. लह्युं स्वरूप न वृत्तिनुं, ग्रह्युं व्रत अभिमान;
ग्रहे नहीं परमार्थने, लेवा लौकिक मान. २८.

वृत्तिनुं स्वरूप शुं? ते पण जे जाणतो नथी, अने 'हुं व्रतधारी छुं' एवुं अभिमान धारण कर्युं छे. क्वचित् परमार्थना उपदेशनो योग बने तोपण लोकोमां पोतानुं मान अने पूजासत्कारादि जतां रहेशे, अथवा ते मानादि पछी प्राप्त नहीं थाय एम जाणीने ते परमार्थने ग्रहण करे नहीं.२८.

६. अथवा निश्चयनय ग्रहे, मात्र शब्दनी मांय;
लोपे सद्व्यवहारने, साधनरहित थाय. २९.

अथवा 'समयसार' के 'योगवासिष्ठ' जेवा ग्रंथो वांची ते मात्र निश्चय नयने ग्रहण करे. केवी रीते ग्रहण करे? मात्र कहेवारूपे; अंतरंगमां तथारूप गुणनी कशी स्पर्शना नहीं, अने सद्गुरु, सत्शास्त्र तथा वैराग्य, विवेकादि साचा व्यवहारने लोपे, तेम ज पोताने ज्ञानी मानी लईने साधनरहित वर्त्ते. २९.

७. ज्ञानदशा पाम्यो नहीं, साधन दशा न कांई;
पामे तेनो संग जे, ते बुडे भव मांहि. ३०.

ते ज्ञानदशा पामे नहीं, तेम वैराग्यादि साधनदशा पण तेने नथी, जेथी तेवा जीवनो संग बीजा जे जीवने थाय ते पण भवसागरमां डुबे. ३०.

८. ए पण जीव मतार्थमां, निजमानादि काज;
पामे नहीँ परमार्थने, अन्‌अधिकारीमां ज. ३१.

ए जीव पण मतार्थमां ज वर्त्ते छे, केमके उपर कह्या जीव तेने जेम कुळधर्मादिथी मतार्थता छे, तेम आने ज्ञानी गणाववाना माननी इच्छाथी पोताना शुष्कमतनो आग्रह छे, माटे ते पण परमार्थने पामे नहीं, अने अन्‌अधिकारी एटले जेने विषे ज्ञान परिणाम पामवा योग्य नहीं एवा जीवोमां ते पण गणाय. ३१.

९. नहीँ कषायउपशांतता, नहीँ अंतर् वैराग्य;
सरळपणुं न मध्यस्थता, ए मतार्थी दुर्भाग्य. ३२.

जेने क्रोध मान माया लोभरूप कषाय पातळा पड्या नथी, तेम जेने अंतर्वैराग्य उत्पन्न थयो नथी, आत्मामां गुण ग्रहणकरवारूप सरळपणुं जेने रह्युं नथी, तेम सत्यासत्यतुलना करवाने जेने अपक्षपातदृष्टि नथी, ते मतार्थी जीव दुर्भाग्य; एटले जन्म, जरा, मरणने छेदवावाळा मोक्षमार्गने पामवा योग्य एवुं तेनुं माग्य न समजवुं. ३२.

> १०. लक्षण कह्यां मतार्थीनां, मतार्थ जावा काज;
> हवे कहुं आत्मार्थीनां, आत्म-अर्थ सुखसाज. ३३.

एम मतार्थी जीवनां लक्षण कह्यां. ते कहेवानो हेतु ए छे के कोई पण जीवनो ते जाणीने मतार्थ जाय. हवे आत्मार्थी जीवनां लक्षण कहीए छीए:—ते लक्षण केवां छे? तो के आत्माने अव्याबाध सुखनी सामग्रिना हेतु छे. ३३.

आत्मार्थीलक्षण.

> १. आत्मज्ञान त्यां मुनिपणुं, ते साचा गुरु होय;
> बाकी कुळगुरुकल्पना, आत्मार्थी नहीं जोय. ३४.

ज्यां आत्मज्ञान होय त्यां मुनिपणुं होय, अर्थात् आत्मज्ञान न होय त्यां मुनिपणुं न ज संभवे. "जं समंति पासह तं मोणंति पासह"—ज्यां समकित एटले आत्मज्ञान छे त्यां मुनिपणुं जाणो एम आचारांगसूत्रमां कह्युं छे, एटले जेमां आत्मज्ञान होय ते साचा गुरु छे एम जाणे छे, अने आत्मज्ञानरहित होय तोपण पोताना कुळना गुरुने सद्गुरु मानवा ए मात्र कल्पना छे; तेथी कंई भवच्छेद न थाय एम आत्मार्थी जुए छे. ३४.

> २. प्रत्यक्षसद्गुरुप्राप्तिनो, गणे परम उपकार;
> त्रणे योग एकत्वथी, वर्त्ते आज्ञाधार. ३५.

प्रत्यक्षसद्गुरुनी प्राप्तिनो मोटो उपकार जाणे, अर्थात् शास्त्रादिथी जे समाधान थई शकवायोग्य नथी, अने जे दोषो सद्गुरुनी आज्ञा धारण कर्याविना जता नथी ते सद्गुरुयोगथी समाधान थाय, अने ते दोषो टळे, माटे प्रत्यक्षसद्गुरुनो मोटो उपकार जाणे, अने ते सद्गुरुप्रत्ये मन वचन कायानी एकताथी आज्ञांकितपणे वर्त्ते. ३५.

> ३. एक होय त्रण काळमां, परमारथनो पंथ;
> प्रेरे ते परमार्थने, ते व्यवहार समंत. ३६.

त्रणे काळने विषे परमार्थनो पंथ एटले मोक्षनो मार्ग एक होवो जोईए, अने जेथी ते परमार्थ सिद्ध थाय ते व्यवहार जीवे मान्य राखवो जोईए; बीजो नहीं. ३६.

> ४. एम विचारी अंतरे, शोधे सद्गुरुयोग;
> काम एक आत्मार्थनुं, बीजो नहीँ मनरोग. ३७.

एम अंतर्मां विचारीने जे सद्गुरुना योगनो शोध करे, मात्र एक आत्मार्थनी इच्छा राखे पण मानपूजादिक सिद्धिरिद्धिनी कशी इच्छा राखे नहीं;—ए रोग जेना मनमां नथी. ३७.

५. कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्षअभिलाष;
भवे खेद, प्राणीदया, त्यां आत्मार्थ निवास. ३८.

ज्यां कषाय पातळा पड्या छे, मात्र एक मोक्षपद शिवाय बीजा कोई पदनी अभिलाषा नथी, संसारपर जेने वैराग्य वर्ते छे, अने प्राणीमात्रापर जेने दया छे, एवा जीवने विषे आत्मार्थनो निवास थाय. ३८.

६. दशा न एवी ज्यांसुधी, जीव लहे नहीं जोग्य;
मोक्षमार्ग पामे नहीं, मटे न अंतर्रोग. ३९.

ज्यांसुधी एवी जोगदशा जीव पामे नहीं, त्यांसुधी तेने मोक्षमार्गनी प्राप्ति न थाय, अने आत्मभ्रांतिरूप अनंत दुःखनो हेतु एवो अंतर्रोग न मटे. ३९.

७. आवे ज्यां एवी दशा, सद्गुरुबोध सुहाय;
ते बोधे सुविचारणा, त्यां प्रगटे सुखदाय. ४०.

एवी दशा ज्यां आवे त्यां सद्गुरुनो बोध शोभे अर्थात् परिणाम पामे, अने ते बोधना परिणामथी सुखदायक एवी सुविचारदशा प्रगटे. ४०.

८. ज्यां प्रगटे सुविचारणा, त्यां प्रगटे निजज्ञान;
जे ज्ञाने क्षय मोह थई, पामे पद निर्वाण. ४१.

ज्यां सुविचारदशा प्रगटे त्यां आत्मज्ञान उत्पन्न थाय, अने ते ज्ञानथी मोहनो क्षय करी निर्वाणपदने पामे. ४१.

९. उपजे ते सुविचारणा, मोक्षमार्ग समजाय;
गुरुशिष्यसंवादथी, भाखुं षट्पद आंहि. ४२.

जेथी ते सुविचारदशा उत्पन्न थाय, अने मोक्षमार्ग समजवामां आवे ते छ पदरूपे गुरुशिष्यना संवादथी करीने अहीं कहुं छुं. ४२.

षट्पदनामकथन.

१. 'आत्मा छे,' 'ते नित्य छे,' 'छे कर्ता निजकर्म;'
'छे भोक्ता,' वळी 'मोक्ष छे,' 'मोक्षउपाय सुधर्म.' ४३.

'आत्मा छे,' 'ते आत्मा नित्य छे,' 'ते आत्मा पोताना कर्मनो कर्ता छे,' 'ते कर्मनो भोक्ता छे,' 'तेथी मोक्ष थाय छे,' अने ते मोक्षनो उपाय एवो सत्धर्म छे.' ४३. *

२. षट्स्थानक संक्षेपमां, षट्दर्शन पण तेह;
समजावा परमार्थने, कह्यां ज्ञानीए एह. ४४.

ए छ स्थानक अथवा छ पद अहीं संक्षेपमां कह्यां छे, अने विचार करवाथी षट्दर्शन पण ते ज छे. परमार्थ समजवाने माटे ज्ञानीपुरुषे ए छ पदो कह्यां छे. ४४.

* जुओ आंक ११७, १३६ (२), ३५८ (२) (३), ४०६, ४४७ (प्र० १), ४८२, ६३८ वगेरे. म. कि.

१. शंका.—शिष्य उवाच.

(आत्माना होवापणारूप प्रथम स्थानकनी शिष्य शंका कहे छेः—)

१. नथी दृष्टीमां आवतो, नथी जणातुं रूप;
बीजो पण अनुभव नहीं, तेथी न जीवस्वरूप. ४५.

दृष्टिमां आवतो नथी, तेम जेनुं कंई रूप जणातुं नथी. तेम स्पर्शादि बीजा अनुभवथी पण जणावापणुं नथी, माटे जीवनुं स्वरूप नथी; अर्थात् जीव नथी. ४५.

२. अथवा देह ज आतमा, अथवा इंद्रिय, प्राण;
मिथ्या जूदो मानवो, नहीँ जूदुं एंधाण. ४६.

अथवा देह ज छे ते आत्मा छे, अथवा इंद्रियो छे ते आत्मा छे, अथवा श्वासोच्छ्वास छे ते आत्मा छे, अर्थात् ए सौ एकना एक देहरूपे छे, माटे आत्माने जूदो मानवो ते मिथ्या छे, केमके तेनुं कशुं जूदुं एंधाण एटले चिन्ह नथी. ४६.

३. वळी जो आतमा होय तो, जणाय ते नही केमँ?
जणाय जो ते होय तो, घट पट आदि जेम. ४७.

अने जो आत्मा होय तो ते जणाय शा माटे नहीं? जो घट, पट आदि पदार्थो छे तो जेम जणाय छे, तेम आत्मा होय तो शा माटे न जणाय? ४७.

४. माटे छे नहीँ आतमा, मिथ्या मोक्षउपाय;
ए अंतर् शंकातणो, समजावो सदुपाय. ४८.

माटे आत्मा छे नहीं, अने आत्मा नथी एटले तेना मोक्षना अर्थे उपाय करवा ते फोकट छे, ए मारा अंतर्नी शंकानो कंई पण सदुपाय समजावो एटले समाधान होय तो कहो. ४८.

१. समाधान.—सद्गुरु उवाच.

('आत्मा छे, एम सद्गुरु समाधान करे छेः—)

१. भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देहसमान;
पण ते बन्ने भिन्न छे, प्रगटलक्षणे भान. ४९.

देहाध्यासथी एटले अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहनो परिचय छे, तेथी आत्मा देह जेवो अर्थात् तने देह भास्यो छे; पण आत्मा अने देह बन्ने जूदां छे, केमके बेय जूदां जूदां लक्षणथी प्रगट भानमां आवे छे. ४९.

२. भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देहसमान;
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान. ५०.

अनादिकाळना अज्ञानने लीधे देहना परिचयथी देह ज आत्मा भास्यो छे, अथवा देह जेवो आत्मा भास्यो छे; पण जेम तरवारने म्यान म्यानरूप लागतां छतां बन्ने जूदां जूदां छे, तेम आत्मा अने देह बन्ने जूदां जूदां छे. ५०.

३. जे द्रष्टा छे दृष्टिनो, जे जाणे छे रूप;
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूप. ५१.

ते आत्मा दृष्टि एटले आंखथी क्यांथी देखाय? केमके उलटो तेनो ते जोनार छे. स्थूळ-सूक्ष्मादि रूपने जे जाणे छे, अने सर्वने बाध करतां करतां कोई पण प्रकारे जेनो बाध करी शकातो नथी एवो बाकी जे अनुभव रहे छे ते जीवनुं स्वरूप छे. ५१.

४. छे इंद्रिय प्रत्येकने, निज निज विषयनुं ज्ञान;
पांच इंद्रिना विषयनुं, पण आत्माने भान. ५२.

कर्णेंद्रियथी सांभळ्युं ते ते कर्णेंद्रिय जाणे छे, पण चक्षु-इंद्रिय तेने जाणती नथी, अने चक्षु-इंद्रिये दीठेलुं ते कर्णेंद्रिय जाणती नथी. अर्थात् सौ सौ इंद्रियने पोतपोताना विषयनुं ज्ञान छे, पण बीजी इंद्रियोना विषयनुं ज्ञान नथी. अने आत्माने तो पांचे इंद्रियना विषयनुं ज्ञान छे. अर्थात् जे ते पांचे इंद्रियोना ग्रहण करेला विषयने जाणे छे ते 'आत्मा' छे, अने आत्मविना एकेक इंद्रिय एकेक विषयने ग्रहण करे एम कह्युं तेपण उपचारथी कह्युं छे. ५२.

५. देह न जाणे तेहने, जाणे न इंद्रिय प्राण;
आत्मानी सत्तावडे, तेह प्रवर्त्ते जाण. ५३.

देह तेने जाणतो नथी. इंद्रियो तेने जाणती नथी अने श्वासोच्छ्वासरूप प्राण पण तेने जाणतो नथी; ते सौ एक आत्मानी सत्ता पामीने प्रवर्ते छे, नहींतो जडपणे पड्यां रहे छे, एम जाण.५३.

६. सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय;
प्रगटरूप चैतन्यमय, ए एंधाणे सदाय. ५४.

जाग्रत, स्वप्न अने निद्रा ए अवस्थामां वर्त्ततो छतां ते ते अवस्थाओथी जूदो जे रह्या करे छे, अने ते ते अवस्था व्यतीत थये पण जेनुं होवापणुं छे, अने ते ते अवस्थाने जे जाणे छे, एवो प्रगटस्वरूप चैतन्यमय छे, अर्थात् जाण्या ज करे छे एवो जेनो स्वभाव प्रगट छे, अने ए तेनी निशानी सदाय वर्त्ते छे; कोई दिवस ते निशानीनो भंग थतो नथी. ५४.

७. घट पट आदि जाण तुं, तेथी तेने मान;
जाणनार ते मान नहीं, कहिये केवुं ज्ञान? ५५.

घट पट आदिने तुं पोते जाणे छे, 'ते छे' एम तुं माने छे, अने जे ते घट, पट आदिनो जाणनार छे तेने मानतो नथी; ए ज्ञान ते केवुं कहेवुं? ५५.

८. परम बुद्धि कृष देहमां, स्थूळ देह मति अल्प;
देह होय जो आतमा, घटे न आम विकल्प. ५६.

दुर्बळ देहने विषे परम बुद्धि जोवामां आवे छे, अने स्थूळ देहने विषे थोडी बुद्धि पण जोवामां आवे छे; जो देह ज आत्मा होय तो एवो विकल्प एटले विरोध थवानो वखत न आवे.५६.

९. जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव;
एकपणुं पामे नहीं, त्रणे काळ द्वय भाव. ५७. *

कोई काळे जेमां जाणवानो स्वभाव नथी ते जड, अने सदाय जे जाणवाना स्वभाववान छे, ते चेतन, एवो बेयनो केवळ जूदो स्वभाव छे, अने ते कोई पण प्रकारे एकपणुं पामवायोग्य नथी. त्रणे काळ जड जड भावे, अने चेतन चेतन भावे रहे एवो बेयनो जूदो जूदो द्वैतभाव प्रसिद्ध ज अनुभवाय छे. ५७.

१०. आत्मानी शंका करे, आत्मा पोते आप;
शंकानो करनार ते, अचरज एह अमाप. ५८.

आत्मानी शंका आत्मा आपे पोते करे छे. जे शंकानो करनार छे, ते ज आत्मा छे. ते जाणतो नथी, ए माप न थई शके एवुं आश्चर्य छे. ५८.

२. शंका.—शिष्य उवाच.

(आत्मा नित्य नथी एम शिष्य कहे छेः—)

१. आत्माना अस्तित्वना आपे कह्या प्रकार;
संभव तेनो थाय छे, अंतर् कर्ये विचार. ५९.

आत्माना होवापणा विषे आपे जे जे प्रकार कह्या तेनो अंतर्मां विचार करवाथी संभव थाय छे. ५९.

२. बीजी शंका थाय त्यां, आत्मा नहीं अविनाश;
देहयोगथी उपजे, देहवियोगे नाश. ६०.

पण बीजी एम शंका थाय छे, के आत्मा छे तोपण ते अविनाश एटले नित्य नथी; त्रणे काळ होय एवो पदार्थ नथी, मात्र देहना संयोगथी उत्पन्न थाय, अने वियोगे नाश पामे. ६०.

३. अथवा वस्तु क्षणिक छे, क्षणे क्षणे पलटाय;
ए अनुभवथी पण नहीं, आत्मा नित्य जणाय. ६१.

अथवा वस्तु क्षणे क्षणे बदलाती जोवामां आवे छे, तेथी सर्व वस्तु क्षणिक छे, अने अनुभवथी जोतां पण आत्मा नित्य जणातो नथी. ६१.

२. समाधान.—सद्गुरु उवाच.

('आत्मा नित्य छे,' एम सद्गुरु समाधान करे छेः—)

देह मात्र संयोग छे, वळी जड, रूपी, दृश्य;
चेतननां उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य? ६२.

देहमात्र परमाणुनो संयोग छे, अथवा संयोगे करी आत्माना संबंधमां छे. वळी ते देह जड छे, रूपी छे. अने दृश्य एटले बीजा कोई द्रष्टानो ते जाणवानो विषय छे; एटले ते पोते पोताने जाणतो नथी, तो चेतननां उत्पत्ति अने नाश ते क्यांथी जाणे? ते देहना परमाणुए परमाणुनो

* जुओ आंक २२६, ८३६ (१) (२). म. कि.

विचार करतां पण ते जड ज छे, एम समजाय छे. तेथी तेमांथी चेतनउत्पत्ति थवायोग्य नथी, अने उत्पत्ति थवायोग्य नथी तेथी चेतन तेमां नाश पण पामवायोग्य नथी. वळी ते देह रूपी एटले स्थूलादि परिणामवाळो छे; अने चेतन द्रष्टा छे, त्यारे तेना संयोगथी चेतननी उत्पत्ति शी रीते थाय? अने तेमां लय पण केम थाय? देहमांथी चेतन उत्पन्न थाय छे, अने तेमां ज नाश पामे छे, ए वात कोना अनुभवने वश रही? अर्थात् एम केणे जाण्युं? केमके जाणनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहथी प्रथम छे नहीं, अने नाश तो तेथी पहेलां छे, त्यारे ए अनुभव थयो कोने?

* **आशंकाः**—जीवनुं स्वरूप अविनाशी एटले नित्य, त्रिकाळ रहेवावाळुं संभवतुं नथी; देहना योगथी एटले देहना जन्म साथे ते जन्मे छे अने देहना वियोगे एटले देहना नाशथी ते नाश पामे छे ए आशंकानुं

समाधानः—देह छे ते जीवने मात्र संयोग संबंधे छे, पण जीवनुं मूळ स्वरूप उत्पन्न थवानुं कंई ते कारण नथी. अथवा देह छे ते मात्र संयोगथी उत्पन्न थयेलो एवो पदार्थ छे. वळी ते जड छे एटले कोईने जाणतो नथी; पोताने ते जाणतो नथी तो बीजांने शुं जाणे? वळी देह रूपी छे, स्थूळादि स्वभाववाळो छे अने चक्षुनो विषय छे. ए प्रकारे देहनुं स्वरूप छे, तो ते चेतननां उत्पत्ति अने लयने शी रीते जाणे? अर्थात् पोताने ते जाणतो नथी तो 'माराथी आ चेतन उत्पन्न थयुं छे, एम शी रीते जाणे? अने 'मारा छूटी जवा पछी आ चेतन छूटी जशे अर्थात् नाश पामशे' एम जड एवो देह शी रीते जाणे? केमके जाणनारो पदार्थ तो जाणनार ज रहे छे; देह जाणनार थई शकतो नथी, तो पछी चेतननां उत्पत्ति लयनो अनुभव केने वश्य कहेवो?

देहेने वश तो कहेवाय एवुं छे ज नहीं, केमके ते प्रत्यक्ष जड छे, अने तेनुं जडपणुं जाणनारो एवो तेथी भिन्न बीजो पदार्थ पण समजाय छे.

जो कदी एम कहीए, के चेतननां उत्पत्तिलय चेतन जाणे छे तो ते वात तो बोलतां ज विघ्न पामे छे. केमके, चेतननां उत्पत्ति लय जाणनार तरिके चेतननो ज अंगीकार करवो पड्यो, एटले ए वचन तो मात्र अपसिद्धांतरूप अने कहेवा मात्र थयुं. जेम 'मारा मोठामां जीभ नथी' एवुं वचन कोई कहे तेम चेतननां उत्पत्ति लय चेतन जाणे छे माटे चेतन नित्य नथी, एम कहीए ते तेवुं प्रमाण थयुं.

ते प्रमाणनुं केवुं यथार्थपणुं छे ते तमेज विचारी जुओ. ६२.

२. जेना अनुभव वश्य ए, उत्पन्न लयनुं ज्ञान;
ते तेथी जुदा विना, थाय न केमें भान. ६३.

जेना अनुभवमां ए उत्पत्ति अने नाशनुं ज्ञान वर्ते ते भान तेथी जूदा विना कोई प्रकारे पण संभवतुं नथी, अर्थात् चेतननां उत्पत्ति लय थाय छे, एवो कोईने पण अनुभव थवायोग्य छे नहीं.

देहनी उत्पत्ति अने देहना लयनुं ज्ञान जेनां अनुभवमां वर्ते छे, ते ते देहथी जूदो न होय तो कोई पण प्रकारे देहनी उत्पत्ति अने लयनुं ज्ञान थाय नहीं. अथवा जेनी उत्पत्ति अने लय जे जाणे छे ते तेथी जूदो ज होय, केमके ते उत्पत्तिलयरूप न ठर्यो, पण तेनो जाणनार ठर्यो. माटे ते बेनी एकता केम थाय? ६३.

३. जे संयोगो देखिये, ते ते अनुभव दृश्य;
उपजे नहीं संयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष. ६४.

जे जे संयोगो देखीए छीए ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य एटले तेने आत्मा जाणे छे, अने ते संयोगनुं स्वरूप विचारतां एवो कोई पण संयोग समजातो नथी के जेथी आत्मा उत्पन्न थाय छे, माटे आत्मा संयोगथी नहीं उत्पन्न थयेलो एवो छे; अर्थात् असंयोगी छे, स्वाभाविक पदार्थ छे, माटे ते प्रत्यक्ष 'नित्य' समजाय छे.

जे जे देहादि संयोगो देखाय छे ते ते अनुभव स्वरूप एवा आत्मानां दृश्य छे, अर्थात् आत्मा तेने जुए छे अने जाणे छे, एवा पदार्थ छे. ते बधा संयोगोनो विचार करी जुओ तो कोई पण संयोगोथी अनुभवस्वरूप एवो आत्मा उत्पन्न थई शकवा योग्य तमने जणाशे नहीं.

कोई पण संयोगो तमने जाणता नथी अने तमे ते सर्वसंयोगोने जाणो छो एज तमारूं तेथी जूदापणुं अने संयोगीपणुं एटले ते संयोगोथी उत्पन्न नहींथवापणुं सहजे सिद्ध थाय छे, अने अनुभवमां आवे छे. तेथी एटले कोई पण संयोगोथी जेनी उत्पत्ति थई शकती नथी, कोई पण संयोगो जेनी उत्पत्ति माटे अनुभवमां आवी शकता नथी, जे संयोगो कल्पिए तेथी ते अनुभव न्यारो ने न्यारो ज मात्र तेने जाणनार रूपे ज रहे छे, ते अनुभव स्वरूप आत्माने तमे नित्य अने अस्पर्श्य एटले ते संयोगोना भावरूप स्पर्शने पाम्यो नथी, एम जाणो. ६४.

४. जडथी चेतन उपजे, चेतनथी जड थाय;
एवो अनुभव कोईने, क्यारे कदी न थाय. ६५.

जडथी चेतन उपजे, अने चेतनथी जड उत्पन्न थाय एवो कोईने क्यारे कदीपण अनुभव थाय नहीं. ६५.

५. कोई संयोगोथी नहीं, जेनी उत्पत्ति थाय;
नाश न तेनो कोईमां तेथी नित्य सदाय. ६६.

जेनी उत्पत्ति कोई पण संयोगोथी थाय नहीं, तेनो नाश पण कोईने विषे थाय नहीं, माटे आत्मा त्रिकाळ 'नित्य' छे.*

कोई पण संयोगोथी जे उत्पन्न न थयुं होय अर्थात् पोताना स्वभावथी करीने जे पदार्थ सिद्ध होय तेनो लय बीजा कोई पण पदार्थमां थाय नहीं; अने जो बीजा पदार्थमां तेनो लय

* जुओ आंक ६०३. म. कि.

थतो होय तो तेमांथी तेनी प्रथम उत्पत्ति थवी जोईती हती, नहीं तो तेमां तेनी लयरूप ऐक्यता थाय नहीं, माटे आत्मा अनुत्पन्न अने अविनाशी जाणीने नित्य छे एवी प्रतीति करवी योग्य लागशे. ६६.

६. क्रोधादि तरतम्यता, सर्पादिकनी मांय;
पूर्वजन्मसंस्कार ते, जीवनित्यता त्यांय. ६७.

क्रोधादि प्रकृतिओनुं विशेषपणुं सर्प वगेरे प्राणीमां जन्मथी ज जोवामां आवे छे, वर्त्तमानदेहे तो ते अभ्यास कर्यो नथी; जन्मनी साथे ज ते छे. एटले ए पूर्वजन्मनो ज संस्कार छे. जे पूर्वजन्म जीवनी नित्यता सिद्ध करे छे.

सर्पमां जन्मथी क्रोधनुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे, पारेवाने विषे जन्मथी ज निर्हिंसकपणुं जोवामां आवे छे, मांकड आदि जंतुओने पकडतां तेने पकडवाथी दुःख थाय छे एवी भय संज्ञा प्रथमथी तेना अनुभवमां रही छे, तेथी ते नाशी जवानुं प्रयत्न करे छे; कैक प्राणीमां जन्मथी प्रीतिनुं, कैकमां समतानुं, कैकमां विशेष निर्भयतानुं, कैकमां गंभीरतानुं, कैकमां विशेष भयसंज्ञानुं, कैकमां कामादि प्रत्ये असंगतानुं, अने कैकने आहारादि विषे अधिक अधिक लुब्धपणानुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे; ए आदि भेद एटले क्रोधादि संज्ञाना न्यूनाधिकपणा आदिथी तेम ज ते ते प्रकृतिओ जन्मथी सहचारीपणे रही जोवामां आवे छे तेथी तेनुं कारण पूर्वना संस्कारो ज संभवे छे.

कदापि एम कहीए के गर्भमां वीर्य रेतना गुणना योगथी ते ते प्रकारना गुणो उत्पन्न थाय छे, पण तेमां पूर्वजन्म कंई कारणभूत नथी; ए कहेवुं पण यथार्थ नथी. जे माबापो कामने विषे विशेष प्रीतिवाळां जोवामां आवे छे, तेना पुत्रो परम वीतराग जेवा बाळपणाथी ज जोवामां आवे छे; वळी जे माबापोमां क्रोधनुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे, तेनी संततिमां समतानुं विशेषपणुं दृष्टिगोचर थाय छे, ते शी रीते थाय? वळी ते वीर्य रेतना तेवा गुणो संभवता नथी, केमके ते **वीर्य रेत पोते चेतन नथी, तेमां चेतन संचरे छे, एटले देह धारण करे छे; एथी करीने वीर्य रेतने आश्रये क्रोधादि भाव गणी शकाय नहीं, चेतनविना कोई पण स्थळे तेवा भावो अनुभवमां आवता नथी.** मात्र ते चेतनाश्रित छे, एटले वीर्य रेतना गुणो नथी; जेथी तेनां न्यूनाधिके करी क्रोधादिनुं न्यूनाधिकपणुं मुख्यपणे थई शकवायोग्य नथी चेतनना ओछा अधिका प्रयोगथी क्रोधादिनुं न्यूनाधिकपणुं थाय छे, जेथी गर्भना वीर्य रेतनो गुण नहीं, पण चेतननो ते गुणने आश्रय छे; अने ते न्यूनाधिकपणुं ते चेतनना पूर्वना अभ्यासथी ज संभवे छे, केमके कारणविना कार्यनी उत्पत्ति न थाय. चेतननो पूर्वप्रयोग तथा-प्रकारे होय, तो ते संस्कार वर्ते; जेथी आ देहादि प्रथमना संस्कारोनो अनुभव थाय छे, अने ते संस्कारो पूर्वजन्म सिद्ध करे छे, अने पूर्वजन्मनी सिद्धिथी आत्मानी नित्यता सहजे सिद्ध थाय छे. ६७.*

* जुओ आंक ४०, ६५६ वगेरे. म. कि.

७. आत्मा द्रव्ये नित्य छे, पर्याये पलटाय;
बाळादि वय त्रण्यनुं, ज्ञान एकने थाय. ६८.

आत्मा वस्तुपणे नित्य छे. समये समये ज्ञानादि परिणामना पलटवाथी तेना पर्यायनुं पलटवापणुं छे. (कंई समुद्र पलटातो नथी, मात्र मोजां पलटाय छे, तेनी पेठे.) जेम बाळ, युवान अने वृद्ध ए त्रण अवस्था छे, ते आत्माने विभावथी पर्याय छे अने बाळ अवस्था वर्त्ततां आत्मा बाळक जणातो, ते बाळ अवस्था छोडी ज्यारे युवावस्था ग्रहण करी त्यारे युवान जणायो, अने युवावस्था तजी वृद्धावस्था ग्रहण करी त्यारे वृद्ध जणायो. ए त्रणे अवस्थानो भेद थयो ते पर्यायभेद छे, पण ते त्रणे अवस्थामां आत्मद्रव्यनो भेद थयो नहीं, अर्थात् अवस्थाओ बदलाई पण आत्मा बदलायो नथी. आत्मा ए त्रणे अवस्थाने जाणे छे, अने ते त्रणे अवस्थानी तेने ज स्मृति छे. त्रणे अवस्थामां आत्मा एक होय तो एम बने, पण जो आत्मा क्षणे क्षणे बदलातो होय तो तेवो अनुभव बने ज नहीं. ६८.

८. अथवा ज्ञान क्षणिकनुं, जे जाणी वदनार;
वदनारो ते क्षणिक नहीं, कर अनुभव निर्धार. ६९.

वळी अमुक पदार्थ क्षणिक छे एम जे जाणे छे, अने क्षणिकपणुं कहे छे ते कहेनार अर्थात् जाणनार क्षणिक होय नहीं, केमके प्रथम क्षणे अनुभव थयो तेने बीजे क्षणे ते अनुभव कही शकाय, ते बीजे क्षणे पोते न होय तो क्यांथी कहे? माटे ए अनुभवथी पण आत्माना अक्षणिकपणानो निश्चय कर. ६९.

९. क्यारे कोई वस्तुनो, केवळ होय न नाश;
चेतन पामे नाश तो केमां भळे? तपास. ७०.

वळी कोई पण वस्तुनो कोई पण काळे केवळ तो नाश थाय ज नहीं; मात्र अवस्थांतर थाय, माटे चेतननो पण केवळ नाश थाय नहीं. अने अवस्थांतररूप नाश थतो होय तो ते केमां भळे, अथवा केवा प्रकारनुं अवस्थांतर पामे ते तपास. अर्थात् घटादि पदार्थ फुटी जाय छे, एटले लोको एम कहेछे के घडो नाश पाम्यो छे, कंई माटीपणुं नाश पाम्युं नथी. ते छिन्नभिन्न थई जई सूक्ष्ममां सूक्ष्म भूको थाय, तोपण परमाणुसमूहरूपे रहे, पण केवळ नाश न थाय; अने तेमानुं एक परमाणु पण घटे नहीं, केमके अनुभवथी जोतां अवस्थांतर थई शके, पण पदार्थनो समूळगो नाश थाय एम भासी ज शकवा योग्य नथी, एटले जो तुं चेतननो नाश कहे, तोपण केवळ नाश तो कही ज शकाय नहीं; अवस्थांतररूप नाश कहेवाय. जेम घट फुटी जई क्रमे करी परमाणुसमूहरूपे स्थितिमां रहे, तेम चेतननो अवस्थांतररूप नाश तारे कहेवो होय तो ते :शी स्थितिमां रहे, अथवा घटना परमाणुओ जेम परमाणुसमूहमां भळ्या तेम चेतन कई वस्तुमां भळवायोग्य छे ते तपास; अर्थात् ए प्रकारे तुं अनुभव करी जोईश तो कोईमां नहीं भळी शकवायोग्य, अथवा पररूपे अवस्थांतर नहीं पामवायोग्य एवुं चेतन एटले आत्मा तने भासमान थशे. ७०.

३. शंका.—शिष्य उवाच.

(आत्मा कर्मनो कर्त्ता नथी, एम शिष्य कहे छे :—)

१. कर्त्ता जीव न कर्मनो, कर्म ज कर्त्ता कर्म;
अथवा सहज स्वभाव कां कर्म जीवनो धर्म. ७१.

जीव कर्मनो कर्त्ता नथी, कर्मना कर्त्ता कर्म छे. अथवा अनायासे ते थयां करे छे. एम नहीं, ने जीव ज तेनो कर्त्ता छे एम कहो तो पछी ते जीवनो धर्म ज छे, अर्थात् धर्म होवाथी क्यारे निवृत्त न थाय. ७१.

२. आत्मा सदा असंग ने, करे प्रकृति बंध;
अथवा ईश्वर प्रेरणा, तेथी जीव अबंध. ७२.

अथवा एम नहीं, तो आत्मा सदा असंग छे, अने सत्त्वादि गुणवाळी प्रकृति कर्मनो बंध करे छे; तेम नहीं, तो जीवने कर्म करवानी प्रेरणा ईश्वर करे छे, तेथी ईश्वरेच्छारूप होवाथी जीव ते कर्मथी 'अबंध' छे. ७२.

३. माटे मोक्ष उपायनो, कोई न हेतु जणाय;
कर्मतणुं कर्त्तापणुं कां नहीँ, कां नहीँ जाय. ७३.

माटे जीव कोई रीते कर्मनो कर्त्ता थई शकतो नथी, अने मोक्षनो उपाय करवानो कोई हेतु जणातो नथी; कां जीवने कर्मनुं कर्त्तापणुं नथी अने जो कर्त्तापणुं होय तो कोई रीते ते तेनो स्वभाव मटवायोग्य नथी. ७३.

३. समाधान.—सद्गुरु उवाच.

(कर्मनुं कर्त्तापणुं आत्माने जे प्रकारे छे ते प्रकारे सद्गुरु समाधान करे छे :–)

१. होय न चेतन प्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म?
जडस्वभाव नहीँ प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म. ७४.

चेतन एटले आत्मानी प्रेरणारूप प्रवृत्ति न होय, तो कर्मने कोण ग्रहण करे? जडनो स्वभाव प्रेरणा नथी. जड अने चेतन बेयना धर्म विचारी जुओ.

जो चेतननी प्रेरणा न होय, तो कर्म कोण ग्रहण करे? प्रेरणापणे ग्रहण कराववारूप स्वभाव जडनो छे ज नहीं; अने एम होय तो घट, पटादि पण क्रोधादि भावमां परिणमवा जोईए, अने कर्मना ग्रहणकर्त्ता होवा जोईए, पण तेवो अनुभव तो कोईने क्यारे पण थतो नथी; जेथी चेतन एटले जीव कर्म ग्रहण करे छे, एम सिद्ध थाय छे; अने ते माटे कर्मनो कर्त्ता कहीए छीए. अर्थात् एम जीव कर्मनो कर्त्ता छे.

"कर्मना कर्त्ता कर्म कहेवाय के केम?" तेनुं पण समाधान आथी थशे के जड कर्ममां प्रेरणारूप धर्म नहीं होवाथी ते ते रीते ग्रहण करवाने असमर्थ छे; अने कर्मनुं करवापणुं जीवने छे, केमके तेने विषे प्रेरणा शक्ति छे. ७४.

२. जो चेतन करतुं नथी, थतां नथी तो कर्म;
तेथी सहज स्वभाव नहीँ, तेम ज नहीँ जीवधर्म. ७५.

आत्मा जो कर्म करतो नथी, तो ते थतां नथी; तेथी सहज स्वभावे एटले अनायासे ते थाय एम कहेवुं घटतुं नथी; तेम ज ते जीवनो धर्म पण नहीं, केमके स्वभावनो नाश थाय नहीं, अने आत्मा न करे तो कर्म थाय नहीं, एटले ए भाव टळी शके छे, माटे ते आत्मानो स्वाभाविक धर्म नहीं. ७५.

३. केवळ होत असंग जो, भासत तने न केम?
असंग छे परमार्थथी, पण निजभाने तेम. ७६.

केवळ जो असंग होत, अर्थात् क्यारे पण तेने कर्मनुं करवापणुं न होत, तो तने पोताने ते आत्मा प्रथमथी केम न भासत? परमार्थथी ते आत्मा असंग छे, पण ते तो ज्यारे स्वरूपनुं भान थाय त्यारे थाय. ७६.

४. कर्त्ता ईश्वर को नहीं, ईश्वर शुद्ध स्वभाव;
अथवा प्रेरक ते गण्ये, ईश्वर दोष प्रभाव. ७७.*

जगत्‌नो अथवा जीवोनां कर्मनो ईश्वर कर्त्ता कोई छे नहीं; शुद्ध आत्मस्वभाव जेनो थयो छे ते ईश्वर छे, अने तेने जो प्रेरक एटले कर्मकर्त्ता गणीए तो तेने दोषनो प्रभाव थयो गणावो जोईए; माटे ईश्वरनी प्रेरणा जीवना कर्म करवामां पण कहेवाय नहीं.

हवे अनायासथी ते कर्मो थतां होय? एम कह्युं ते विचारीए.

अनायास एटले शुं?

(१) आत्माए नहीं चिंतवेलुं?

(२) अथवा आत्मानुं कंई पण कर्त्तृत्व छतां प्रवर्त्तेलुं नहीं?

(३) अथवा ईश्वरादि कोई कर्म वळगाडी दे तेथी थयेलुं?

(४) अथवा प्रकृति पराणे वळगे तेथी थयेलुं? एवा मुख्य चार विकल्पथी अनायासकर्त्तापणुं विचारवायोग्य छे.

प्रथम विकल्प आत्माए नहीं चिंतवेलुं एवो छे. जो तेम थतुं होय तो तो कर्मनुं ग्रहवापणुं रहेतुं ज नथी, अने ज्यां ग्रहवापणुं रहे नहीं त्यां कर्मनुं होवापणुं संभवतुं नथी, अने जीव तो प्रत्यक्ष चिंतवन करे छे, अने ग्रहणाग्रहण करे छे एम अनुभव थाय छे. जेमां ते कोई पण रीते प्रवर्त्ततो ज नथी, तेवा क्रोधादि भाव तेने संप्राप्त थता ज नथी; तेथी एम जणाय छे के नहीं चिंतवेलां अथवा आत्माथी नहीं प्रवर्त्तेलां एमां कर्मोनुं ग्रहण तेने थवायोग्य नथी, एटले ए बन्ने प्रकारे अनायास कर्मनुं ग्रहण सिद्ध थतुं नथी.

त्रीजो प्रकार ईश्वरादि कोई कर्म वळगाडी दे तेथी अनायास कर्मनुं ग्रहण थाय छे एम कहीए तो ते घटतुं नथी. प्रथम तो ईश्वरनुं स्वरूप निर्धारवुं घटे छे; अने ए प्रसंग पण

* जुओ आंक ४४७ (प्र० १.). म. कि.

विशेष समजवायोग्य छे तथापि अत्रे ईश्वर के विष्णुआदि कर्त्तानो कोई रीते स्वीकार करी लईए छीए, अने ते पर विचार करीए छीएः—

जो ईश्वरादि कर्मना वळगाडनार होय तो तो जीव नामनो वच्चे कोई पण पदार्थ रह्यो नहीं, केमके प्रेरणादि धर्मे करीने तेवुं अस्तित्व समजातुं हतुं, ते प्रेरणादि तो ईश्वरकृत ठर्यां, अथवा ईश्वरना गुण ठर्या; तो पछी बाकी जीवनुं स्वरूप शुं रह्युं के तेने जीव एटले आत्मा कहीए? एटले कर्म ईश्वरप्रेरित नहीं पण आत्मानां पोतानां ज करेलां होवांयोग्य छे.

तेम चोथो विकल्प प्रकृत्यादि पराणे वळगवाथी कर्म थतां होय? ते विकल्प पण यथार्थ नथी. केमके प्रकृत्यादि जड छे, तेने आत्मा ग्रहण न करे तो ते शी रीते वळगवायोग्य थाय? अथवा द्रव्यकर्मनुं बीजुं नाम प्रकृति छे; एटले कर्मनुं कर्त्तापणुं कर्मने ज कहेवा बराबर थयुं. ते तो पूर्वे निषेधी देखाड्युं छे. प्रकृति नहीं, तो अंतःकरणादि कर्म ग्रहण करे, तेथी आत्मामां कर्त्तापणुं वळगे छे, एम कहीए तो ते पण एकांते सिद्ध नथी. अंतःकरणादि पण चेतननी प्रेरणाविना अंतःकरणादिरूपे प्रथम ठरे ज क्यांथी? चेतन जे कर्मवळगणानुं मनन करवा अवलंबन ले छे, ते अंतःकरण छे. जो चेतन मनन करे नहीं, तो कंई ते वळगणामां मनन करवानो धर्म नथी; ते तो मात्र जड छे. चेतननी प्रेरणाथी चेतन तेने अवलंबीने कंई ग्रहण करे छे तेथी तेना विषे कर्त्तापणुं आरोपाय छे, पण मुख्यपणे ते चेतन कर्मनो कर्त्ता छे.

(आ स्थळे वेदांतादि दृष्टिए विचारशो तो अमारां आ वाक्यो भ्रांतिगत पुरुषनां कहेलां लागशे. पण हवे जे प्रकार कह्यो छे ते समजवाथी तमने ते वाक्यनी यथातथ्यता लागशे, अने भ्रांतिगतपणुं भास्यमान नहीं थाय.)

जो कोई पण प्रकारे आत्मानुं कर्मनुं कर्तृत्वपणुं न होय, तो कोई पण प्रकारे तेनुं भोक्तृत्वपणुं पण न ठरे, अने ज्यारे एम ज होय तो पछी तेना कोई पण प्रकारनां दुःखोनो संभव पण न ज थाय. **ज्यारे कोई पण प्रकारनां दुःखोनो संभव आत्माने न ज थतो होय तो पछी वेदांतादि शास्त्रो सर्वदुःखथी क्षय थवानो जे मार्ग उपदेशे छे ते शा माटे उपदेशे छे?** 'ज्यांसुधी आत्मज्ञान थाय नहीं त्यांसुधी दुःखनी आत्यंतिक निवृत्ति थाय नहीं,' एम वेदांतादि कहे छे. ते जो दुःख न ज होय, तो तेनी निवृत्तिनो उपाय शा माटे कहेवो जोईए? अने कर्तृत्वपणुं न होय, तो दुःखनुं भोक्तृत्वपणुं क्यांथी होय? एम विचार करवाथी कर्मनुं कर्तृत्व ठरे छे.

प्रश्नः—हवे अत्रे एक प्रश्न थवायोग्य छे अने तमे पण ते प्रश्न कर्युं छे के "जो कर्मनुं कर्त्तापणुं आत्माने मानीए, तो तो आत्मानो ते धर्म ठरे, अने जे जेनो धर्म होय ते क्यारे पण उच्छेद थवायोग्य नथी; अर्थात् तेनाथी केवळ भिन्न पडी शकवायोग्य नथी, जेम अग्निनी उष्णता अथवा प्रकाश तेम." एम ज जो कर्मनुं कर्त्तापणुं आत्मानो धर्म ठरे, तो ते नाश पामे नहीं.

उत्तरः—सर्व प्रमाणांशना स्वीकार्याविना एम ठरे; पण विचारवान होय ते कोई एक प्रमाणांश स्वीकारीने बीजा प्रमाणांशनो नाश न करे. 'ते जीवने कर्मनुं कर्त्तापणुं न होय,' अथवा 'होय तो ते प्रतीत थवा योग्य नथी,' ए आदि प्रश्न कर्याना उत्तरमां जीवनुं कर्मनुं कर्तृत्व जणाव्युं छे. कर्मनुं कर्तृत्व होय तो ते टळे ज नहीं, एम कांई सिद्धांत समजवो योग्य नथी, केमके जे जे कोई पण वस्तु ग्रहण करी होय ते छोडी शकाय एटले त्यागी शकाय; केमके ग्रहण करेली वस्तुथी ग्रहण करनारी वस्तुनुं केवळ एकत्व केम थाय? तेथी जीवे ग्रहण करेलां एवां जे द्रव्य-कर्म तेनो जीव त्याग करे तो थई शकवायोग्य छे, केमके ते तेने सहकारी स्वभावे छे, सहज स्वभावे नथी. अने ते कर्मने में तमने अनादि भ्रम कह्यो छे, अर्थात् ते कर्मनुं कर्त्तापणुं अज्ञानथी प्रतिपादन कर्युं छे, तेथी पण ते निवृत्त थवायोग्य छे, एम साथे समजवुं घटे छे. **जे जे भ्रम होय छे, ते ते वस्तुनी उलटी स्थितिनी मान्यतारूप होय छे, अने तेथी ते टळवा-योग्य छे.** जेम मृगजळमांथी जळबुद्धि.

कहेवानो हेतु ए छे के, अज्ञाने करीने पण जो आत्माने कर्त्तापणुं न होय, तो तो कशुं उपदेशादि श्रवण, विचार, ज्ञान आदि समजवानो हेतु रहेतो नथी. ७७.

हवे अहीं आगळ जीवनुं परमार्थे जे कर्त्तापणुं छे ते कहीए छीए:

५. चेतन जो निजभानमां, कर्त्ता आपस्वभाव;
वर्त्ते नहीँ निजभानमां, कर्त्ता कर्म प्रभाव. ७८.

आत्मा जो पोताना शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमां वर्त्ते तो ते पोताना ते ज स्वभावनो कर्त्ता छे, अर्थात् ते ज स्वरूपमां परिणमित छे, अने ते शुद्ध चैतन्यादि स्वभावना भानमां वर्त्ततो न होय त्यारे कर्मभावनो कर्त्ता छे.

पोताना स्वरूपना भानमां आत्मा पोताना स्वभावनो एटले चैतन्यादि स्वभावनो ज कर्त्ता छे, अन्य कोई पण कर्मादिनो कर्त्ता नथी; अने आत्मा ज्यारे पोताना स्वरूपना भानमां वर्त्ते नहीं त्यारे कर्मना प्रभावनो कर्त्ता कह्यो छे.

परमार्थे तो जीव अक्रिय छे, एम वेदांतादिनुं निरूपण छे; अने जिनप्रवचनमां पण सिद्ध एटले शुद्धात्मानुं अक्रियपणुं छे एम निरूपण कर्युं छे; छतां अमे आत्माने शुद्धावस्थामां कर्त्ता होवाथी सक्रिय कह्यो एवो संदेह अत्रे थवायोग्य छे. ते संदेह आ प्रकारे शमाववा योग्य छे:— **शुद्धात्मा परयोगनो, परभावनो अने विभावनो त्यां कर्त्ता नथी, माटे अक्रिय कहेवायोग्य छे; पण चैतन्यादि स्वभावनो पण आत्मा कर्त्ता नथी एम जो कहीए तो तो पछी तेनुं कंई पण स्वरूप न रहे. शुद्धात्माने योगक्रिया नहीं होवाथी ते अक्रिय छे, पण स्वाभाविक चैतन्यादि स्वभावरूप क्रिया होवाथी ते सक्रिय छे.** चैतन्यात्मपणुं आत्माने स्वाभाविक होवाथी तेमां आत्मानुं परिणमवुं ते एकात्मपणे ज छे, अने तेथी परमार्थनयथी सक्रिय एवुं विशेषण त्यां पण आत्माने आपी शकाय नहीं. निजस्वभावमां परिणमवारूप सक्रियताथी निज

स्वभावनुं कर्त्तापणुं शुद्धात्माने छे, तेथी केवळ शुद्ध स्वधर्म होवाथी एकात्मपणे परिणमे छे तेथी सक्रिय कहेतां पण दोष नथी.

जे विचारे सक्रियता, अक्रियता निरूपण करी छे, ते विचारना परमार्थने ग्रहीने सक्रियता, अक्रियता कहेतां कशो दोष नथी. ७८.

४. शंका.—शिष्य उवाच.

(ते कर्मनुं भोक्तापणुं जीवने नहीं होय? एम शिष्य कहे छे:–)

१. जीव कर्मकर्त्ता कहो, पणा भोक्ता नहीं सोय;
शुं समजे जड कर्म के फळपरिणामी होय.? ७९.

जीवने कर्मनो कर्त्ता कहीए तोपण ते कर्मनो भोक्ता जीव नहीं ठरे, केमके जड एवां कर्म शुं समजे के ते फळ देवामां परिणामी थाय? अर्थात् फळदाता थाय? ७९.

२. फळदाता ईश्वर गण्ये, भोक्तापणुं सधाय;
एम कहे ईश्वरतणुं, ईश्वरपणुं ज जाय. ८०.

फळदाता ईश्वर गणीए तो भोक्तापणुं साधी शकीए, अर्थात् जीवने ईश्वर कर्म भोगवावे तेथी जीव कर्मनो भोक्ता सिद्ध थाय, पण परने फळदेवा आदि प्रवृत्तिवाळो ईश्वर गणीए तो तेनुं ईश्वरपणुं ज रहेतुं नथी, एम पण पाछो विरोध आवे छे.

"ईश्वर सिद्ध थया विना एटले कर्मफळदातृत्वादि कोई पण ईश्वर ठर्या विना जगत्‌नी व्यवस्था रहेवी संभवती नथी," एवा अभिप्राय परत्वे नीचे प्रमाणे विचारवा योग्य छे:—

जो कर्मनां फळने ईश्वर आपे छे एम गणीए तो त्यां ईश्वरनुं ईश्वरपणुं ज रहेतुं नथी, केमके परने फळ देवा आदि प्रपंचमां प्रवर्त्ततां ईश्वरने देहादि अनेक प्रकारनो संग थवो संभवे छे, अने तेथी यथार्थ शुद्धतानो भंग थाय छे. मुक्तजीव जेम निष्क्रिय छे अर्थात् परभावादिनो कर्त्ता नथी, जो परभावादिनो कर्त्ता थाय तो तो संसारनी प्राप्ति थाय छे, तेम ज ईश्वर पण परने फळदेवा आदिरूप क्रियामां प्रवर्ते तो तेने पण परभावादिना कर्त्तापणानो प्रसंग आवे छे. अने मुक्तजीव करतां तेनुं न्यूनत्व ठरे छे; तेथी तो तेनुं ईश्वरपणुं ज उच्छेदवा जेवी स्थिति थाय छे.

वळी जीव अने ईश्वरनो स्वभावभेद मानतां पण अनेक दोष संभवे छे. बन्नेने जो चैतन्यस्वभाव मानीए, तो बन्ने समान धर्मना कर्त्ता थया; तेमां ईश्वर जगतादि रचे अथवा कर्मनुं फळ आपवारूप कार्य करे अने मुक्त गणाय; अने जीव एक मात्र देहादि सृष्टि रचे, अने पोतानां कर्मोनुं फळ पामवा माटे ईश्वराश्रय ग्रहण करे, तेम ज बंधमां गणाय ए यथार्थ वात देखाती नथी. एवी विषमता केम संभवित थाय?

वळी जीव करतां ईश्वरनुं सामर्थ्य विशेष मानिए तोपण विरोध आवे छे. ईश्वर शुद्ध चैतन्यस्वरूप गणीए तो शुद्ध चैतन्य एवा मुक्तजीवमां अने तेमां भेद पडवो न जोईए,

अने ईश्वरथी कर्मनां फळ आपवादि कार्य न थवां जोईए; अथवा मुक्तजीवथी पण ते कार्य थवुं जोईए. अने ईश्वरने जो अशुद्ध चैतन्यस्वरूप गणीए तो तो संसारी जीवो जेवी तेनी स्थिति ठरे, त्यां पछी सर्वज्ञादि गुणनो संभव क्यांथी थाय? अथवा देहधारी सर्वज्ञनी पेठे तेने 'देहधारी सर्वज्ञ ईश्वर' मानीए तोपण सर्व कर्मफळदातृत्वरूप 'विशेष स्वभाव' ईश्वरमां किया गुणने लीधे मानवायोग्य थाय? अने देह तो नाश पामवायोग्य छे, तेथी ईश्वरनो पण देह नाश पामे, अने ते मुक्त थये कर्मफळदातृत्व न रहे, ए आदि अनेक प्रकारथी ईश्वरने कर्मफळदातृत्व कहेतां दोष आवे छे, अने ईश्वरने तेवे स्वरूपे मानतां तेनुं ईश्वरपणुं उत्थापवासमान थाय छे. ८०.

३. ईश्वर सिद्ध थया विना, जगत्-नियम नहीं होय;
पछी शुभाशुभ कर्मनां, भोग्यस्थान नहीं कोय. ८१.

तेवो फळदाता ईश्वर सिद्ध थतो नथी एटले जगत्‌नो नियम पण कोई रहे नहीं, अने शुभाशुभ कर्म भोगववानां कोई स्थानक पण ठरे नहीं, एटले जीवने कर्मनुं भोक्तृत्व क्यां रह्युं? ८१.

४. समाधान.—सद्गुरु उवाच.

(जीवने पोताना करेलां कर्मनुं भोक्तापणुं छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे:—)

१. भावकर्म निजकल्पना, माटे चेतनरूप;
जीववीर्यनी स्फुरणा, ग्रहण करे जडधूप. ८२.

भावकर्म जीवने पोताथी भ्रांति छे, माटे ते चेतनरूप छे, अने ते भ्रांतिने अनुयायी थई जीववीर्य स्फुरायमान थाय छे, तेथी जड एवां द्रव्यकर्मनी वर्गणा ते ग्रहण करे छे.

आशंका:—कर्म जड छे तो ते शुं समजे के आ जीवने आ रीते मारे फळ आपवुं, अथवा ते स्वरूपे परिणमवुं? माटे जीव कर्मनो भोक्ता थवो संभवतो नथी, ए आशंकानुं

समाधान:—जीव पोताना स्वरूपना अज्ञानथी कर्मनो कर्ता छे. ते अज्ञान ते चेतनरूप छे, अर्थात् जीवनी पोतानी कल्पना छे, अने ते कल्पनाने अनुसरीने तेना वीर्यस्वभावनी स्फुर्ति थाय छे, अथवा तेनुं सामर्थ्य तदनुयायीपणे परिणमे छे, अने तेथी जडनी धूप एटले द्रव्यकर्मरूप पुद्गलनी वर्गणाने ते ग्रहण करे छे. ८२.

२. झेर सुधा समजे नहीं, जीव खाय फळ थाय;
एम शुभाशुभ कर्मनुं, भोक्तापणुं जणाय. ८३.

झेर अने अमृत पोते जाणतां नथी के अमारे आ जीवने फळ आपवुं छे, तोपण जे जीव खाय छे, तेने ते फळ थाय छे; एम शुभाशुभ कर्म आ जीवने आ फळ आपवुं छे एम जाणतां नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव, झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे.

झेर अने अमृत पोते एम समजतां नथी के अमने खानारने मृत्यु, दीर्घायुषता थाय छे, पण स्वभावे तेने ग्रहण करनारप्रत्ये जेम तेनुं परिणमवुं थाय छे, तेम जीवमां शुभाशुभ कर्म पण परिणमे छे, अने फळ सन्मुख थाय छे; एम जीवने कर्मनुं भोक्तापणुं समजाय छे. ८३.

३. एक रांक ने एक नृप, ए आदि जे भेद;
कारणविना न कार्य ते, ए ज शुभाशुभ वेद्य. ८४.

एक रांक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणुं, ऊंचपणुं, कुरुपपणुं, सुरुपपणुं एम घणुं विचित्रपणुं छे; अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्वने समानता नथी ते ज शुभाशुभ कर्मनुं भोक्तापणुं छे एम सिद्ध करे छे, केमके कारणविना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी.

ते शुभाशुभ कर्मनुं फळ न थतुं होय, तो एक रांक अने एक राजा ए आदि जे भेद छे, ते न थवा जोईए, केमके जीवपणुं समान छे, तथा मनुष्यपणुं समान छे, तो सर्वने सुख अथवा दुःख पण समान जोईए; जेने बदले आवुं विचित्रपणुं जणाय छे, ते ज शुभाशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेलो भेद छे, केमके कारणविना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. एम शुभ अने अशुभ कर्म भोगवाय छे. ८४.

४. फळदाता ईश्वरतणी, एमां नथी जरूर;
कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर. ८५.

फळदाता ईश्वरनी एमां कंई जरूर नथी. झेर अने अमृतनी रीते शुभाशुभ कर्म स्वभावे परिणमे छे; अने निःसत्व थयेथी झेर अने अमृत फळ देतां जेम निवृत्त थाय छे, तेम शुभाशुभ कर्मने भोगववाथी ते निःसत्व थये निवृत्त थाय छे.

झेर झेरपणे परिणमे छे, अने अमृत अमृतपणे परिणमे छे, तेम अशुभ कर्म अशुभपणे परिणमे अने शुभ कर्म शुभपणे परिणमे छे, माटे जीव जेवा जेवा अध्यवसायथी कर्मने ग्रहण करे छे, तेवा तेवा विपाक रूपे कर्म परिणमे छे. अने जेम झेर अने अमृत परिणमी रह्ये निःसत्त्व थाय छे, तेम भोगथी ते कर्म दूर थाय छे. ८५.

५. ते ते भोग्य विशेषनां, स्थानक द्रव्य स्वभाव;
गहन वात छे शिष्य आ, कही संक्षेपे साव. ८६.

उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट शुभगति छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट अशुभगति छे, शुभाशुभ अध्यवसाय मिश्रगति छे, अने ते जीवपरिणाम ते ज मुख्यपणे तो गति छे; तथापि उत्कृष्ट शुभ द्रव्यनुं ऊर्ध्वगमन, उत्कृष्ट अशुभ द्रव्यनुं अधोगमन, शुभाशुभनी मध्यस्थिति, एम द्रव्यनो विशेष स्वभाव छे. अने ते आदि हेतुथी ते ते भोग्यस्थानक होवांयोग्य छे. हे शिष्य! जड चेतनना स्वभाव संयोगादि सूक्ष्मस्वरूपनो अत्रे घणो विचार शमाय छे, माटे आ वात गहन छे, तोपण तेने साव संक्षेपमां कही छे.

आशंकाः—ईश्वर जो कर्मफळ दाता न होय अथवा जगत्कर्त्ता न गणीए तो कर्म भोगववानां

विशेष स्थानको एटले नरकादि गति आदि स्थान क्यांथी होय, केमके तेमां तो ईश्वरनां कर्तृत्वनी जरूर छे, एवी आशंका पण करवा योग्य नथी, केमके

समाधानः—मुख्यपणे तो उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट देवलोक छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट नरक छे, शुभाशुभ अध्यवसाय ते मनुष्य तिर्यंचादि छे, अने स्थान विशेष एटले ऊर्ध्वलोके देवगति, ए आदि भेद छे. जीव समूहनां कर्मद्रव्यनां पण ते परिणाम विशेष छे एटले ते ते गतिओ जीवना कर्म विशेष परिणामादि संभवे छे.

आ वात घणी गहन छे. केमके अचिंत्य एवुं जीव वीर्य, अचिंत्य एवुं पुद्गळसामर्थ्य एना संयोग विशेषथी लोक परिणमे छे. तेनो विचार करवा माटे घणो विस्तार कहेवो जोईए. पण अत्र तो मुख्यकरीने आत्मा कर्मनो भोक्ता छे एटलो लक्ष करावचानो होवाथी साव संक्षेपे आ प्रसंग कह्यो छे. ८६.

५. शंका.—शिष्य उवाच.

(जीवनो ते कर्मथी मोक्ष नथी, एम शिष्य कहे छे:—)

१. कर्त्ता भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहीं मोक्ष;
वीत्यो काळ अनंत पण, वर्त्तमान छे दोष. ८७.

कर्त्ता भोक्ता जीव हो, पण तेथी तेनो मोक्ष थवायोग्य नथी, केमके अनंतकाळ थयो तोपण कर्म करवारूपी दोष हजु तेने विषे वर्त्तमान ज छे. ८७.

२. शुभ करे फळ भोगवे, देवादि गति मांय;
अशुभ करे नरकादि फळ, कर्मरहित न क्यांय. ८८.

शुभ कर्म करे तो तेथी देवादि गतिमां तेनुं शुभ फळ भोगवे, अने अशुभ कर्म करे तो नरकादि गतिने विषे तेनुं अशुभ फळ भोगवे; पण जीव कर्मरहित कोई स्थळे होय नहीं. ८८.

५. समाधान.—सद्गुरु उवाच.

(ते कर्मथी जीवनो मोक्ष थई शके छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे:—)

१. जेम शुभाशुभ कर्मपद, जाण्यां सफळ प्रमाण;
तेम निवृत्ति सफळता, माटे मोक्ष सुजाण. ८९.

जेम शुभाशुभ कर्मपद ते जीवना करवाथी तें थतां जाण्यां, अने तेथी तेनुं भोक्तापणुं जाण्युं, तेम नहीं करवाथी अथवा ते कर्मनिवृत्ति करवाथी ते निवृत्ति पण थवायोग्य छे; माटे ते निवृत्तिनुं पण सफळपणुं छे; अर्थात् जेम ते शुभाशुभ कर्म अफळ जतां नथी, तेम तेनी निवृत्ति पण अफळ जवायोग्य नथी; माटे ते निवृत्तिरूप मोक्ष छे एम हे विचक्षण! तुं विचार. ८९.

२. वीत्यो काळ अनंत ते, कर्म शुभाशुभ भाव;
तेह शुभाशुभ छेदतां, उपजे मोक्षस्वभाव. ९०.

कर्मसहित अनंतकाळ वीत्यो ते ते शुभाशुभ कर्मप्रत्येनी जीवनी आसक्तिने लीधे वीत्यो, पण तेना पर उदासीन थवाथी ते कर्मफळ छेदाय, अने तेथी मोक्षस्वभाव प्रगट थाय. ९०.

३. देहादि संयोगनो, आत्यंतिक वियोग;
सिद्ध मोक्ष शाश्वतपदे, निज अनंत सुखभोग. ९१.

देहादि संयोगनो अनुक्रमे वियोग तो थया करे छे, पण ते पाछो ग्रहण न थाय ते रीते वियोग करवामां आवे तो सिद्धस्वरूप मोक्षस्वभाव प्रगटे, अने शाश्वतपदे अनंत आत्मानंद भोगवाय. ९१.

६. शंका.—शिष्य उवाच.

*(मोक्षनो उपाय नथी, एम शिष्य कहे छे:—)

१. होय कदापि मोक्षपद, नहीं अविरोध उपाय;
कर्मो काळ अनंतनां शाथी छेद्यां जाय? ९२.

मोक्षपद कदापि होय तोपण ते प्राप्त थवानो कोई अविरोध एटले यथातथ्य प्रतीत थाय एवो उपाय जणातो नथी, केमके अनंत काळनां कर्मो छे, ते आवा अल्पायुष्यवाळा मनुष्य-देहथी केम छेद्यां जाय? ९२.

२. अथवा मत दर्शन घणां, कहे उपाय अनेक;
तेमां मत साचो कियो? बने न एह विवेक. ९३.

अथवा कदापि मनुष्यदेहना अल्पायुष्य वगेरेनी शंका छोडी दईए, तोपण मत अने दर्शन घणां छे, अने ते मोक्षना अनेक उपायो कहे छे, अर्थात् कोई कंई कहे छे अने कोई कंई कहे छे, तेमां कियो मत साचो ए विवेक बनी शके एवो नथी. ९३.

३. कयी जातिमां मोक्ष छे? किया वेषमां मोक्ष?
एनो निश्चय ना बने, घणा भेद ए दोष. ९४.

ब्राह्मणादि कई जातिमां मोक्ष छे, अथवा क्या वेषमां मोक्ष छे, एनो निश्चय पण न बनी शके एवो छे, केमके तेवा घणा भेदो छे, अने ए दोषे पण मोक्षनो उपाय प्राप्त थवायोग्य देखातो नथी. ९४.

४. तेथी एम जणाय छे, मळे न मोक्ष-उपाय;
जीवादि जाण्यातणो, शो उपकार ज थाय? ९५.

तेथी एम जणाय छे के मोक्षनो उपाय प्राप्त थई शके एवुं नथी, माटे जीवादिनुं स्वरूप जाणवाथी पण शुं उपकार थाय? अर्थात् जे पदने अर्थे जाणवां जोईए ते पदनो उपाय प्राप्त थवो अशक्य देखाय छे. ९५.

५. पांचे उत्तरथी थयुं, समाधान सर्वांग;
समजुं मोक्ष-उपाय तो, उदय उदय सद्भाग(ग्य). ९६.

आपे पांचे उत्तर कह्या तेथी सर्वांग एटले बधी रीते मारी शंकानुं समाधान थयुं छे; पण जो मोक्षनो उपाय समजुं तो सद्भाग्यनो उदय उदय थाय.

(अत्र 'उदय' 'उदय' बे वार शब्द छे, ते पांच उत्तरना समाधानथी थयेली मोक्षपदनी जिज्ञासानुं तीव्रपणुं दर्शावे छे.) ९६.

६. समाधान—सद्गुरु उवाच.

(मोक्षनो उपाय छे एम सद्गुरु समाधान करे छेः—)

१. पांचे उत्तरनी थई, आत्मा विषे प्रतीत;
थाशे मोक्षोपायनी, सहज प्रतीत ए रीत. ९७.

पांचे उत्तरनी तारा आत्माने विषे प्रतीति थई छे, तो मोक्षना उपायनी पण ए ज रीते तने सहजमां प्रतीति थशे.

अत्रे 'थशे' अने 'सहज' ए बे शब्द सद्गुरुए कह्या छे ते जेने पांच पदनी शंका निवृत्त थई छे तेने मोक्षोपाय समजावो कंई कठण ज नथी एम दर्शाववा, तथा शिष्यनुं विशेष जिज्ञासुपणुं जाणी अवश्य तेने मोक्षोपाय परिणमशे एम भासवाथी (ते वचन) कह्यां छे; एम सद्गुरुनां वचननो आशय छे. ९७.

२. कर्मभाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास;
अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश. ९८.

कर्मभाव छे ते जीवनुं अज्ञान छे अने मोक्षभाव छे ते जीवना पोताना स्वरूपने विषे स्थिति थवी ते छे. अज्ञाननो स्वभाव अंधकार जेवो छे. तेथी जेम प्रकाश थतां घणा काळनो अंधकार छतां नाश पामे छे, तेम ज्ञानप्रकाश थतां अज्ञान पण नाश पामे छे. ९८.

३. जे जे कारण बंधनां, तेह बंधनो पंथ;
ते कारण छेदक दशा, मोक्षपंथ भवअंत. ९९.

जे जे कारणो कर्मबंधनां छे, ते ते कर्मबंधनो मार्ग छे; अने ते ते कारणोने छेदे एवी जे दशा छे ते मोक्षनो मार्ग छे, भवनो अंत छे. ९९.

४. राग द्वेष अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रंथ;
थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ. १००.

राग, द्वेष अने अज्ञान एनुं एकत्व ए कर्मनी मुख्य गांठ छे; अर्थात् ए विना कर्मनो बंध न थाय; तेनी जेथी निवृत्ति थाय ते ज मोक्षनो मार्ग छे. १००.

५. आत्मा सत् चैतन्यमय, सर्वाभासरहित;
जेथी केवळ पामिये, मोक्षपंथ ते रीत. १०१.

'सत्' एटले 'अविनाशी', अने 'चैतन्यमय' एटले 'सर्वभावने प्रकाशवारूप स्वभावमय' 'अन्य सर्व विभाव अने देहादि संयोगना आभासथी रहित एवो', 'केवळ' एटले 'शुद्ध आत्मा' पामिये, तेम प्रवर्त्ताय ते मोक्षमार्ग छे. १०१.

६. कर्म अनंत प्रकारनां, तेमां मुख्ये आठ;
तेमां मुख्ये मोहिनीय, हणाय ते कहुं पाठ. १०२.

कर्म अनंत प्रकारनां छे, पण तेना मुख्य ज्ञानावरणादि आठ प्रकार थाय छे. तेमां पण मुख्य मोहनीयकर्म छे. ते मोहनीयकर्म हणाय तेनो पाठ कहुं छुं. १०२.

७. कर्म मोहिनीय भेद बे, दर्शन चारित्र नाम;
हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय आम. १०३.

ते मोहनीय कर्म बे भेदे छे;–एक 'दर्शनमोहनीय' एटले 'परमार्थने विषे अपरमार्थबुद्धि अने अपरमार्थने विषे परमार्थबुद्धिरूप;' बीजी 'चारित्रमोहनीय.' 'तथारूप परमार्थने परमार्थ जाणीने आत्मस्वभावमां जे स्थिरता थाय, ते स्थिरताने रोधक एवा पूर्वसंस्काररूप कषाय अने नोकषाय' ते चारित्रमोहनीय.

दर्शनमोहनीयने आत्मबोध, अने चारित्रमोहनीयने वीतरागपणुं नाश करे छे. आम तेना अचूक उपाय छे, केमके मिथ्याबोध ते दर्शनमोहनीय छे; तेनो प्रतिपक्ष सत्यात्मबोध छे. अने चारित्रमोहनीय रागादिक परिणामरूप छे, तेनो प्रतिपक्ष वीतरागभाव छे. एटले अंधकार जेम प्रकाश थवाथी नाश पामे छे,–ते तेनो अचूक उपाय छे, तेम बोध अने वीतरागता अनुक्रमे दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीयरूप अंधकार टाळवामां प्रकाशस्वरूप छे; माटे ते तेनो अचूक उपाय छे. १०३.

८. कर्मबंध क्रोधादिथी, हणे क्षमादिक तेह;
प्रत्यक्ष अनुभव सर्वने, एमां शो संदेह? १०४.

क्रोधादि भावथी कर्मबंध थाय छे, अने क्षमादिक भावथी ते हणाय छे; अर्थात् क्षमा राखवाथी क्रोध रोकी शकाय छे, सरळताथी माया रोकी शकाय छे, संतोषथी लोभ रोकी शकाय छे; एम रति अरति आदिना प्रतिपक्षथी ते ते दोषो रोकी शकाय छे, ते ज कर्मबंधनो निरोध छे; अने ते ज तेनी निवृत्ति छे. वळी सर्वने आ वातनो प्रत्यक्ष अनुभव छे, अथवा सर्वने प्रत्यक्ष अनुभव थई शके एवुं छे. क्रोधादि रोक्यां रोकाय छे, अने जे कर्मबंधने रोके छे, ते अकर्मदशानो मार्ग छे. ए मार्ग परलोके नहीं, पण अत्रे अनुभवमां आवे छे, तो एमां संदेह शो करवो? १०४.

९. छोडी मत दर्शन तणो, आग्रह तेम विकल्प;
कह्यो मार्ग आ साधशे, जन्म तेहना अल्प. १०५.

आ मारो मत छे, माटे मारे वळगी ज रहेवुं, अथवा आ मारूं दर्शन छे, माटे गमे तेम मारे ते सिद्ध करवुं एवो आग्रह अथवा एवा विकल्पने छोडीने आ जे मार्ग कह्यो छे, ते साधशे, तेना अल्प जन्म जाणवा.

अहीं 'जन्म' शब्द बहुवचनमां वापर्यो छे, ते एटलुं ज दर्शाववाने के क्वचित् ते साधन अधूरां रह्यां तेथी, अथवा जघन्य के मध्यम परिणामनी धाराथी आराधन थयां होय, तेथी सर्व कर्म क्षय थई न शकवाथी बीजो जन्म थवानो संभव छे; पण ते बहु नहीं; बहु ज अल्प. "समकित आव्या पछी जो वमे नहीं, तो घणामां घणा पंदर भव थाय, एम जिने कह्युं छे," अने "जे उत्कृष्टपणे आराधे तेनो ते भवे पण मोक्ष थाय;" अत्रे ते वातनो विरोध नथी. १०५.

१०. षट्पदनां षट्प्रश्न तें पूछ्यां करी विचार;
ते पदनी सर्वांगता, मोक्षमार्ग निरधार १०६.

हे शिष्य! तें छ पदनां छ प्रश्नो विचार करीने पूछ्यां छे, अने ते पदनी सर्वांगतामां मोक्षमार्ग छे, एम निश्चय कर. अर्थात् एमानुं कोई पण पद एकांते के अविचारथी उत्थापतां मोक्षमार्ग सिद्ध थतो नथी. १०६.

११. जाति वेषनो भेद नहीं, कह्यो मार्ग जो होय;
साधे ते मुक्ति लहे, एमां भेद न कोय. १०७.

जे मोक्षनो मार्ग कह्यो ते होय तो गमे ते जाति के वेषथी मोक्ष थाय, एमां कंई भेद नथी. जे साधे ते मुक्तिपद पामे; अने ते मोक्षमां पण बीजा कशा प्रकारनो ऊंचनीचत्वादि भेद नथी. अथवा आ वचन कह्यां तेमां बीजो कंई भेद एटले फेर नथी. १०७.

१२. कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्षअभिलाष;
भवे खेद अंतर् दया, ते कहिये जिज्ञास. १०८.

क्रोधादि कषाय जेना पातळा पड्या छे, मात्र आत्माने विषे मोक्ष थवा शिवाय बीजी कोई इच्छा नथी, अने संसारना भोगप्रत्ये उदासीनता वर्त्ते छे; तेम ज प्राणीपर अंतर्थी दया वर्त्ते छे, ते जीवने मोक्षमार्गनो जिज्ञासु कहीए, अर्थात् ते मार्ग पामवायोग्य कहीए. १०८.

१३. ते जिज्ञासु जीवने, थाय सद्गुरुबोध;
तो पामे समकीतने, वर्त्ते अंतरशोध. १०९.

ते जिज्ञासु जीवने जो सद्गुरुनो उपदेश प्राप्त थाय तो ते समकितने पामे. अने अंतर्नी शोधमां वर्त्ते. १०९.

१४. मत दर्शन आग्रह तजी, वर्त्ते सद्गुरुलक्ष;
लहे शुद्ध समकित ते, जेमां भेद न पक्ष. ११०.

मत अने दर्शननो आग्रह छोडी दई जे सद्गुरुने लक्षे वर्त्ते, ते शुद्ध समकितने पामे के जेमां भेद तथा पक्ष नथी. ११०.

१५. वर्त्ते निजस्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत;
वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थे समकीत. १११.

आत्मस्वभावनो ज्यां अनुभव, लक्ष, अने प्रतीत वर्त्ते छे, तथा वृत्ति आत्माना स्वभावमां वहे छे, त्यां परमार्थे समकित छे. १११.

१६. वर्धमान समकित थई, टाळे मिथ्याभास;
उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास. ११२.

ते समकित वधती जती धाराथी हास्य शोकादि जे कंई आत्माने विषे मिथ्याभास भास्या छे तेने टाळे, अने स्वभाव समाधिरूप चारित्रनो उदय थाय, जेथी सर्व रागद्वेषना क्षयरूप वीतरागपदमां स्थिति थाय. ११२.

१७. केवळ निजस्वभावनुं, अखंड वर्ते ज्ञान;
कहिये केवळज्ञान ते, देह छतां निर्वाण. ११३.

सर्व आभासरहित आत्मस्वभावनुं ज्यां अखंड एटले क्यारे पण खंडित न थाय, मंद न थाय, नाश न पामे एवुं ज्ञान वर्त्ते तेने केवळज्ञान कहीए छीए. जे केवळज्ञान पाम्याथी उत्कृष्ट जीवन्मुक्तदशारूप निर्वाण, देह छतां ज अत्रे अनुभवाय छे. ११३.

१८. कोटि वर्षनुं स्वप्न पण, जाग्रत थतां शमाय;
तेव विभाव अनादिनो, ज्ञान थतां दूर थाय. ११४.

करोडो वर्षनुं स्वप्न होय तोपण जाग्रत थतां तरत ते शमाय छे, तेम अनादिनो विभाव छे ते आत्मज्ञान थतां दूर थाय छे. ११४.

१९. छूटे देहाध्यास तो, नहीं कर्त्ता तुं कर्म;
नहीं भोक्ता तुं तेहनो, ए ज धर्मनो मर्म. ११५.

हे शिष्य! देहमां जे आत्मता मनाई छे, अने तेने लीधे स्त्री पुत्रादि सर्वमां अहंममत्वपणुं वर्त्ते छे, ते आत्मता जो आत्मामां ज मनाय, अने ते देहाध्यास एटले देहमां आत्मबुद्धि तथा आत्मामां देहबुद्धि छे ते छूटे, तो तुं कर्मनो कर्त्ता पण नथी, अने भोक्ता पण नथी, अने ए ज धर्मनो मर्म छे. ११५.

२०. ए ज धर्मथी मोक्ष छे, तुं छो मोक्षस्वरूप;
अनंत दर्शन ज्ञान तुं, अव्याबाध स्वरूप. ११६.

ए ज धर्मथी मोक्ष छे, अने तुं ज मोक्षस्वरूप छो; अर्थात् शुद्ध आत्मपद ए ज मोक्ष छे. तुं अनंत ज्ञान दर्शन तथा अव्याबाध सुखस्वरूप छो. ११६.

२१. शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयंज्योति सुखधाम;
बीजुं कहियें केटलुं? कर विचार तो पाम. ११७.

तुं देहादिक सर्व पदार्थथी जूदो छे, कोईमां आत्मद्रव्य भळतुं नथी, कोई तेमां भळतुं नथी, द्रव्ये द्रव्य परमार्थथी सदाय भिन्न छे,* माटे तुं शुद्ध छो, बोधस्वरूप छो, चैतन्यप्रदेशात्मक छो; स्वयंज्योति छो एटले कोई पण तने प्रकाशतुं नथी, स्वभावे ज तुं प्रकाशस्वरूप छो; अने अव्याबाध सुखनुं धाम छो. बीजुं केटलुं कहीए? अथवा घणु शुं कहेवुं? टूंकामां एटलुं ज कहीए छीए, जो विचार कर तो ते पदने पामीश. ११७.

२२. निश्चय सर्वे ज्ञानीनो, आवी अत्र शमाय;
धरी मौनता एम कही, सहजसमाधि मांय. ११८.

सर्वे ज्ञानीओनो निश्चय अत्रे आवीने शमाय छे; एम कहीने सद्गुरु मौनता धरीने सहज समाधिमां स्थित थया, अर्थात् वाणी योगनी अप्रवृत्ति करी. ११८.

* जुओ आंक. ३८६. म. कि.

शिष्यबोधबीजप्राप्तिकथन.

१. सद्गुरुना उपदेशथी, आव्युं अपूर्व भान;
निजपद निज मांही लह्युं, दूर थयुं अज्ञान. ११९.

शिष्यने सद्गुरुना उपदेशथी अपूर्व एटले पूर्वे कोई दिवस नहीं आवेलुं एवुं भान आव्युं, अने तेने पोतानुं स्वरूप पोताने विषे यथातथ्य भास्युं, अने देहात्मबुद्धिरूप अज्ञान दूर थयुं. ११९.

२. भास्युं निजस्वरूप ते, शुद्ध चेतनारूप;
अजर, अमर, अविनाशी ने, देहातीत स्वरूप. १२०.

पोतानुं स्वरूप शुद्ध चैतन्यस्वरूप, अजर, अमर, अविनाशी अने देहथी स्पष्ट जूदुं भास्युं. १२०.

३. कर्त्ता भोक्ता कर्मनो, विभाव वर्त्ते ज्यांय;
वृत्ति वही निजभावमां, थयो अकर्त्ता त्यांय. १२१.

ज्यां विभाव एटले मिथ्यात्व वर्त्ते छे, त्यां मुख्य नयथी कर्मनुं कर्त्तापणुं अने भोक्तापणुं छे; आत्मस्वभावमां वृत्ति वही तेथी अकर्त्ता थयो. १२१.

४. अथवा निजपरिणाम जे, शुद्धचेतनारूप;
कर्त्ता भोक्ता तेहनो, निर्विकल्पस्वरूप. १२२.

अथवा आत्मपरिणाम जे शुद्ध चैतन्यस्वरूप छे, तेनो निर्विकल्पस्वरूपे कर्त्ता भोक्ता थयो. १२२.

५. मोक्ष कह्यो निजशुद्धता, ते पामे ते पंथ;
समजाव्यो संक्षेपमां, सकळ मार्ग निर्ग्रंथ. १२३.

आत्मानुं शुद्धपद छे ते मोक्ष छे अने जेथी ते पमाय ते तेनो मार्ग छे; श्री सद्गुरुए कृपा करीने निर्ग्रंथनो सर्व मार्ग समजाव्यो. १२३.

६. अहो! अहो! श्री सद्गुरु, करुणासिंधु अपार;
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो! अहो! उपकार. १२४.

अहो! अहो! करुणाना अपार समुद्रस्वरूप आत्मलक्ष्मीए युक्त सद्गुरु, आप प्रभुए आ पामर जीव पर आश्चर्यकारक एवो उपकार कर्यो. १२४.

७. शुं प्रभुचरण कने धरूं? आत्माथी सौ हीन;
ते तो प्रभुए आपीयो, वर्त्तुं चरणाधीन. १२५.

हुं प्रभुना चरण आगळ शुं धरूं? (सद्गुरु तो परम निष्काम छे; एक निष्काम करुणाथी मात्र उपदेशना दाता छे, पण शिष्यधर्मे शिष्ये आ वचन कह्युं छे.) जे जे जगत्मां पदार्थ छे, ते सौ आत्मानी अपेक्षाए निर्मूल्य जेवा छे, ते आत्मा तो जेणे आप्यो तेना चरणसमीपे हुं बीजुं शुं धरूं? एक प्रभुना चरणने आधीन वर्त्तुं, एटलुं मात्र उपचारथी करवाने हुं समर्थ छुं. १२५.

८. आ देहादि आजथी, वर्त्तो प्रभुआधीन;
दास दास हुं दास छुं, तेह प्रभुनो दीन. १२६.

आ देह आदि, शब्दथी जे कंई मारूं गणाय छे, ते आजथी करीने सद्गुरु प्रभुने आधीन वर्त्तो, हुं तेह प्रभुनो दास छुं, दास छुं, दीन दास छुं, १२६.

९. षट् स्थानक समजावीने, भिन्न बताव्यो आप;
म्यानथकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप. १२७.

छए स्थानक समजावीने हे सद्गुरु देव! आपे देहादिथी आत्माने, जेम म्यानथी तरवार जूदी काढीने बतावीए तेम स्पष्ट जूदो बताव्यो; आपे मपाई शके नहीं एवो उपकार कर्यो. १२७.

उपसंहार.

१. दर्शन षटे शमाय छे, आ षट् स्थानक मांहि;
विचारतां विस्तारथी, संशय रहे न कांइ. १२८.

*छए दर्शन आ छ स्थानकमां शमाय छे. विशेषकरीने विचारवाथी कोई पण प्रकारनो संशय रहे नही. १२८.

२. आत्मभ्रांतिसम रोग नहीँ, सद्गुरु वैद्य सुज्जाण;
गुरुआज्ञासम पथ्य नहीं, औषध विचार ध्यान. १२९.

आत्माने पोताना स्वरूपनुं भान नहीं एवो बीजो कोई रोग नथी, सद्गुरु जेवा तेना कोई साचा अथवा निपुण वैद्य नथी, सद्गुरुआज्ञाए चालवा समान बीजुं कोई पथ्य नथी, अने विचार तथा निदिध्यासन जेवुं कोई तेनुं औषध नथी. १२९.

३. जो इच्छो परमार्थ तो, करो सत्य पुरुषार्थ;
भवस्थिति आदि नाम लइ, छेदो नहीं आत्मार्थ. १३०.

जो परमार्थने इच्छता हो, तो साचो पुरुषार्थ करो, अने भवस्थिति आदिनुं नाम लइने आत्मार्थने छेदो नहीं. १३०.*

४. निश्चयवाणी सांभळी, साधन तजवां नोय,
निश्चय राखी लक्षमां, साधन करवां सोय. १३१.

आत्मा अबंध छे, असंग छे, सिद्ध छे एवी निश्चयमुख्य वाणी सांभळीने साधन तजवां योग्य नथी. पण तथारूप निश्चय लक्षमां राखी साधन करीने ते निश्चयस्वरूप प्राप्त करवुं. १३१.*

५. नय निश्चय एकांतथी, आमां नथी कहेल;
एकांते व्यवहार नहीँ, बन्ने साथ रहेल. १३२.

अत्रे एकांते निश्चयनय कह्यो नथी, अथवा एकांते व्यवहारनय कह्यो नथी; बेय ज्यां ज्यां जेम घटे तेम साथे रह्यां छे. १३२.*

६. गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहीँ सद्व्यवहार;
भान नहीं निजरूपनुं, ते निश्चय नहीं सार. १३३.

गच्छ मतनी कल्पना छे ते सद्व्यवहार नथी, पण आत्मार्थीना लक्षणमां† कही ते दशा अने मोक्षोपायमां जिज्ञासुनां लक्षण† आदि कह्यां ते सद्व्यवहार छे; जे अत्रे तो संक्षेपमां कहेल छे. पोताना स्वरूपनुं भान नथी, अर्थात् जेम देह अनुभवमां आवे छे, तेवो आत्मानो अनुभव थयो

* जुओ आंक ३४८. म. कि. † आ. सि. पद ३८, १०८. म. कि.

नथी, देहाध्यास वर्ते छे, अने जे वैराग्यादि साधन पाम्याविना निश्चय पोकार्या करे छे, ते निश्चय सारभूत नथी. १३३.*

७. आगळ ज्ञानी थइ गया, वर्त्तमानमां होय;
थाशे काळ भविष्यमां, मार्गभेद नहीं कोय. १३४.

भूतकाळमां जे ज्ञानीपुरुषो थइ गया छे, वर्त्तमानकाळमां जे छे, अने भविष्यकाळमां थशे, तेने कोईने मार्गनो भेद नथी, अर्थात् परमार्थे ते सौनो एक मार्ग छे; अने तेने प्राप्त करवा-योग्य व्यवहार पण ते ज परमार्थसाधकरूपे देश काळादिने लीधे भेद कह्यो होय छतां एक फळ उत्पन्न करनार होवाथी तेमां पण परमार्थे भेद नथी. १३४.†

८. सर्व जीव छे सिद्धसम, जे समजे ते थाय;
सद्गुरुआज्ञा जिनदशा, निमित्त कारण मांय. १३५.

सर्व जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण ते तो जे समजे तेने प्रगट थाय. ते प्रगट थवामां सद्गुरुनी आज्ञाथी प्रवर्त्तवुं, तथा सद्गुरुए उपदेशेली एवी जिनदशानो विचार करवो, ते बेय निमित्त कारण छे. १३५.

९. उपादाननुं नाम लई, ए जे तजे निमित्त;
पामे नहीं सिद्धत्वने, रहे भ्रांतिमां स्थित. १३६.

सद्गुरुआज्ञा आदि ते आत्मसाधननां निमित्त कारण छे, अने आत्मानां ज्ञान दर्शनादि उपादान कारण छे; एम शास्त्रमां कह्युं छे; तेथी उपादाननुं नाम लई जे कोई ते निमित्तने तजशे ते सिद्ध-पणाने नहीं पामे, अने भ्रांतिमां वर्त्या करशे, केमके साचा निमित्तना निषेधार्थे ते उपादाननी व्याख्या शास्त्रमां कही नथी, पण उपादान अजाग्रत राखवाथी तारूं साचा निमित्त मळ्या छतां काम नहीं थाय, माटे साचा निमित्त मळ्ये ते निमित्तने अवलंबीने उपादान सन्मुख करवुं, अने पुरुषार्थरहित न थवुं; एवो शास्त्रकारे कहेली ते व्याख्यानो परमार्थ छे. १३६.

१०. मुखथी ज्ञान कथे अने, अंतर् छूट्यो न मोह;
ते पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानीनो द्रोह. १३७.

मुखथी निश्चयमुख्य वचनो कहे छे, पण अंतर्थी पोताने ज मोह छूट्यो नथी, एवा पामर प्राणी मात्र ज्ञानी कहेवराववानी कामनाए साचा ज्ञानीपुरुषनो द्रोह करे छे. १३७.

११. दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य;
होय मुमुक्षुघट विषे, एह सदाय सुजाग्य. १३८.

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमां सदाय सुजाग्य एटले जाग्रत होय; अर्थात् ए गुणोविना तो मुमुक्षुपणुं पण न होय. १३८.

१२. मोहभाव क्षय होय ज्यां, अथवा होय प्रशांत;
ते कहिये ज्ञानीदशा, बाकी कहिये भ्रांत. १३९.

* जुओ आंक ३४८. म. कि. † जुओ आंक ३२,५२. म. कि.

मोहभावनो ज्यां क्षय थयो होय, अथवा ज्यां मोहदशा बहु क्षीण थई होय, त्यां ज्ञानीनी दशा कहीए, अने बाकी तो जेणे पोतामां ज्ञान मानी लीधुं छे, तेने भ्रांति कहीए. १३९.

१३. सकळ जगत् ते एठवत्, अथवा स्वप्नसमान;
ते कहिये ज्ञानीदशा, बाकी वाचाज्ञान. १४०.

समस्त जगत् जेणे एठजेवुं जाण्युं छे, अथवा स्वप्नजेवुं जगत् जेने ज्ञानमां वर्त्ते छे ते ज्ञानीनी दशा छे, बाकी मात्र वाचाज्ञान एटले कहेवामात्र ज्ञान छे. १४०.

१४. स्थानक पांच विचारीने, छठ्ठे वर्त्ते जेह;
पामे स्थानक पांचमुं, एमां नहीं संदेह. १४१.

पांचे स्थानकने विचारीने जे छठ्ठे स्थानके वर्त्ते, एटले ते मोक्षना जे उपाय कह्या छे तेमां प्रवर्त्ते ते पांचमुं स्थानक एटले मोक्षपद तेने पामे. १४१.

१५. देह छतां जेनी दशा, वर्त्ते देहातीत;
ते ज्ञानीना चरणमां, हो वंदन अगणित! १४२.

पूर्वप्रारब्धयोगथी जेने देह वर्त्ते छे, पण ते देहथी अतीत एटले देहादिनी कल्पनारहित, आत्मामय जेनी दशा वर्त्ते छे, ते ज्ञानीपुरुषना चरणकमळमां अगणित वार वंदन हो! १४२.

श्रीसद्गुरुचरणार्पणमस्तु.

*
* *

६६१.

जीवने बंधनना मुख्य हेतु बे छे:-राग अने द्वेष.

रागने अभावे द्वेषनो अभाव थाय.

रागनुं मुख्यपणुं छे.

रागने लीधे ज संयोगमां आत्मा तन्मय वृत्तिमान् छे.

ते ज कर्म मुख्यपणे छे.

जेम जेम राग द्वेष मंद तेम तेम कर्मबंध मंद; अने जेम जेम राग द्वेष तीव्र तेम तेम कर्मबंध तीव्र. राग द्वेषनो अभाव त्यां कर्मबंधनो सांपरायिक अभाव.

रागद्वेष थवानुं मुख्य कारण मिथ्यात्व एटले असम्यक्‌दर्शन छे.

सम्यक्‌ज्ञानथी सम्यक्‌दर्शन थाय छे, तेथी असम्यक्‌दर्शन निवृत्ति पामे छे. ते जीवने सम्यक्‌चारित्र प्रगटे छे. ते वीतरागदशा छे.

संपूर्ण वीतरागदशा जेने वर्त्ते छे ते चरम शरीरि जाणीए छैये.

६६२.

बंधविहाण विमुक्कं, वंदिअ सिरि वद्धमाण जिणचंदं.*

सिरि वीर जिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासओ वुच्छं,
कीरई जिएण हेऊहिं, जेणं तो भण्णए कम्मं.।

कम्म दव्वेहिं समं, संजोगो जो होई जीवस्स,
सो बंधो नायव्वो, तस्स वियोगो भवे मोक्खो.

६६३. नडियाद. आसो वदी १० शनि. १९५२.

(१)

१. श्री सद्गुरुदेवना अनुग्रहथी अत्र समाधि छे.

२. एकांतमां अवगाहवाने अर्थे **आत्मसिद्धिशास्त्र** आ जोडे मोकल्युं छे. ते हाल श्री ००० ए अवगाहवा योग्य छे.

३. जिनागम विचारवानी श्री ००० अथवा श्री ०००००० नी इच्छा होय तो आचारांग, सूयगडांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन अने प्रश्नव्याकरण विचारवा योग्य छे.

४. **आत्मसिद्धिशास्त्र** श्री ०००००० ए आगळपर अवगाहवुं वधारे हितकारी जाणी हाल श्री ००० ने मात्र अवगाहवानुं लख्युं छे; तोपण जो श्री०००००० नी विशेष आकांक्षा हाल रहे तो प्रत्यक्ष सत्पुरुष जेवो मारा प्रत्ये कोईए परमोपकार कर्यो नथी एवो अखंड निश्चय आत्मामां लावी अने आ देहनां भविष्य जीवनमां पण ते अखंड निश्चय छोडुं तो में आत्मार्थ त्याग्यो अने खरा उपकारीना उपकारने ओळववानो दोष कर्यो एम ज जाणीश अने आत्माने सत्पुरुषनो नित्य आज्ञांकित रहेवामां ज कल्याण छे एवो, भिन्नभावरहित, लोकसंबंधी बीजा प्रकारनी सर्व कल्पना छोडीने, निश्चय वर्त्तावीने, श्री ००० मुनिना सहचारीपणामां ए ग्रंथ अवगाहवामां हाल पण अडचण नथी. घणी शंकाओनुं समाधान थवा योग्य छे.

(२)

सत्पुरुषनी आज्ञामां वर्त्तवानो जेनो दृढ निश्चय वर्त्ते छे अने जे ते निश्चयने आराधे छे, तेने ज ज्ञान सम्यक्‌परिणामी थाय छे, ए वात आत्मार्थी जीवे अवश्य लक्षमां राखवायोग्य छे. अमे जे आ वचन लख्यां छे, तेना सर्व ज्ञानीपुरुषो साक्षी छे.

बीजा मुनियोने पण जे जे प्रकारे वैराग्य, उपशम, अने विवेकनी वृद्धि थाय ते ते प्रकारे श्री ००० तथा श्री ०००००० ए यथाशक्ति संभळाववुं तथा प्रवर्त्तावबुं घटे छे; तेम ज अन्य जीवो पण आत्मार्थ सन्मुख थाय, अने ज्ञानीपुरुषनी आज्ञाना निश्चयने पामे तथा विरक्त परिणामने पामे, रसादिनी लुब्धता मोळी पाडे ए आदिप्रकारे एक आत्मार्थे उपदेश कर्त्तव्य छे.

* कर्म ग्रंथ ३ जो. गाथा १ ली । कर्म ग्रंथ १ लो. गाथा १ ली. म. कि.

(३)

अनंतवार देहने अर्थे आत्मा गाळ्यो छे. जे देह आत्माने अर्थे गळाशे ते देहे आत्मविचार पामवायोग्य जाणी सर्व देहार्थनी कल्पना छोडी दई एक मात्र आत्मार्थमां ज तेनो उपयोग करवो एवो मुमुक्षुजीवने अवश्य निश्चय जोईए. श्री सहजात्मस्वरूप.

६६४. **नडियाद. आसो वद १२ सोम. १९५२.**

. शिरछत्र पिताश्रीजी.

मुंबईथी आ बाजु आववामां फक्त निवृत्तिनो हेतु छे; शरीरनी अडचणथी आ तरफ आववुं थयेलुं तेम नथी. आपनी कृपाथी शरीर सारूं छे. मुंबईमां रोगना उपद्रवने लीधे आपनी तथा रेवाशंकरभाईनी आज्ञा थवाथी आ तरफ विशेष स्थिरता करी; अने ते स्थिरतामां आत्माने निवृत्ति विशेष करी रही छे.

हाल मुंबईमां रोगनी शांति घणी थई गई छे, संपूर्ण शांति थये ते तरफ जवानो विचार राख्यो छे अने त्यां गया पछी घणुंकरीने भाई मनसुखने आपना तरफ थोडा वखत माटे मोकलवानुं चित्त छे; जेथी मारी मातुश्रीनां मनने पण गोठशे.

आपने प्रतापे नाणुं मेळववानो घणुंकरीने लोभ नथी, पण आत्मानुं परम कल्याण करवानी इच्छा छे. मारी मातुश्रीने पायलागणुं प्राप्त थाय. छोरू रायचंदना दंडवत् प्राप्त थाय.

६६५. **नडियाद. आशो वद. ,, १९५२.**

जे ज्ञान महा निर्जरानो हेतु थाय छे, ते ज्ञान अनधिकारी जीवना हाथमां जवाथी तेने अहितकारी थई घणुं करी परिणमे छे.

६६६. **ववाणीआ. का. शु. १० शनि. १९५३.**

मातुश्रीने शरीरे ताव आववाथी तथा केटलोक वखत थयां अत्रे आववाविषे तेमनी विशेष आकांक्षा होवाथी गया सोमवारे अत्रेथी आज्ञा थवाथी नडियादथी भोमवारे रवाने थवानुं थयुं हतुं. बुधवारे बपोरे अत्रे आववुं थयुं छे.

शरीरने विषे वेदनीयनुं असातापणे परिणमवुं थयुं होय ते वखते शरीरनो विपरिणाम स्वभाव विचारी ते शरीर अने शरीरने संबंधे प्राप्त थयेलां स्त्रीपुत्रादि प्रत्येनो मोह विचारवान पुरुषो छोडी दे छे; अथवा मोहने मंद करवामां प्रवर्त्ते छे.

आत्मसिद्धिशास्त्र विशेष विचारवायोग्य छे.

६६७. **ववा. का. सुद ११ रवि. १९५३.**

लोकनी दृष्टिने ज्यांसुधी जीव वमे नहीं तथा तेमांथी अंतर्वृत्ति छूटी न जाय त्यांसुधी ज्ञानीनी दृष्टिनुं वास्तविक महात्म्य लक्षगत न थई शके एमां संशय नथी.

६६८. ववा० कार्तिक. १९५१.

ॐ

परमपद पंथ अथवा वीतरागदर्शन.

गीति.

पंथ परमपद बोध्यो, जेह प्रमाणे परम वीतरागे,
ते अनुसरि कहीशुं, प्रणमीने ते प्रभु भक्ति रागे. १.
मूळ परमपद कारण, सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण पूर्ण,
प्रणमे एक स्वभावे, शुद्ध समाधि त्यां परिपूर्ण. २.
जे चेतन जड भावो, अवलोक्या छे मुनींद्र सर्वज्ञे,
तेवी अंतर् आस्था, प्रगव्ये दर्शन कह्युं छे तत्त्वज्ञे. ३.
सम्यक् प्रमाण पूर्वक, ते ते भावो ज्ञान विषे भासे,
सम्यग् ज्ञान कह्युं ते, संशय, विभ्रम, मोह त्यां नाश्ये. ४.
विषयारंभ निवृत्ति, राग द्वेषनो अभाव ज्यां थाय,
सहित सम्यग्दर्शन, शुद्धाचरण त्यां समाधि सदुपाय. ५.
त्रणे अभिन्न स्वभावे, परिणमी आत्मस्वरूप ज्यां थाय,
पूर्ण परमपदप्राप्ति, निश्चयथी त्यां अनन्य सुखदाय. ६.
जीव, अजीव पदार्थो, पुण्य, पाप, आस्रव तथा बंध,
संवर, निर्जरा, मोक्ष, तत्त्व कह्यां नव पदार्थ संबंध. ७.
जीव, अजीव विषे ते, नवे तत्त्वनो समावेश थाय,
वस्तु विचार विशेषे, भिन्न प्रबोध्या महान् मुनिराय. ८.

६६९. ववा० का० वद २ रवि. १९५१.

ज्ञानीओए मनुष्यपणुं चिंतामणिरत्नतुल्य कह्युं छे, ते विचारो तो प्रत्यक्ष जणाय तेवुं छे. विशेष विचारतां तो ते मनुष्यपणानो एक समय पण चिंतामणिरत्नथी परम महात्म्यवान अने मूल्यवान देखाय छे.

अने जो देहार्थमां ज ते मनुष्यपणुं व्यतीत थयुं तो तो एक फूटी बदामनी कींमतनुं नथी एम निःसंदेह देखाय छे

६७०. ववा० का० वद ,, शुक्र. १९५१.

ॐ सर्वज्ञाय नमः

देहनुं अने प्रारब्धोदय ज्यांसुधी बळवान होय त्यांसुधी देहसंबंधी कुटुंब, के जेनुं भरण-पोषण करवानो संबंध छूटे तेवो न होय अर्थात् आगारवासपर्यंत जेनुं भरणपोषण करवुं घटतुं होय तेनुं भरणपोषण मात्र मळतुं होय तो तेमां संतोष पामीने मुमुक्षु जीव आत्महितनो ज विचार

करे तथा पुरुषार्थ करे. देह अने देहसंबंधी कुटुंबना महात्म्यादि अर्थे परिग्रहादिनी परिणाम-पूर्वक स्मृति पण न थवा दे; केमके ते परिग्रहादिनी प्राप्ति आदि कार्य एवां छे, के आत्म-हितनो अवसर ज घणुंकरीने प्राप्त थवा न दे.

६७१. ववा० मार्ग० सुद १ शनि. १९५३.

ॐ सर्वज्ञाय नमः

आयुष्य अल्प अने अनियत प्रवृत्ति, असीम बळवान असत्संग, पूर्वनुं घणुंकरीने अनाराधकपणुं, बळवीर्यनी हीनता,-एवां कारणोथी रहित कोईक ज जीव हशे, एवा आ काळने विषे पूर्वे क्यारे पण नहीं जाणेलो, नहीं प्रतीत करेलो, नहीं आराधेलो तथा नहीं स्वभावसिद्ध थयेलो एवो मार्ग प्राप्त करवो दुष्कर होय एमां आश्चर्य नथी; तथापि जेणे ते प्राप्त करवा शिवाय बीजो कोई लक्ष राख्यो ज नथी ते आ काळने विषे पण अवश्य ते मार्गने पामे छे.

लौकीक कारणोमां अधिक हर्ष विषाद मुमुक्षु जीव करे नहीं.

६७२. ववाणीआ. मागशर सुद ६. गुरु. १९५३.

श्री माणेकचंदनो देह छूटवा संबंधी खबर जाण्या.

सर्व देहधारी जीवो मरण पासे शरणरहित छे. मात्र ते देहनुं यथार्थ स्वरूप प्रथमथी जाणी तेनुं ममत्व छेदीने निजस्थिरताने अथवा ज्ञानीना मार्गनी यथार्थ प्रतीतिने पाम्या छे ते ज जीव ते मरणकाळे शरणसहित छतां घणुंकरीने फरी देह धारण करता नथी, अथवा मरणकाळे देहना ममत्वभावनुं अल्पत्व होवाथी पण निर्भय वर्त्ते छे. देह छूटवानो काळ अनियत होवाथी विचारवान पुरुषो अप्रमादपणे प्रथमथी ज तेनुं ममत्व निवृत्त करवानो अविरुद्ध उपाय साधे छे; अने ए ज तमारे अमारे सौए लक्ष राखवायोग्य छे. प्रीतिबंधनथी खेद थवायोग्य छे, तथापि एमां बीजो कोई उपाय नहीं होवाथी ते खेदने वैराग्यस्वरूपमां परिणमन करवो ए ज विचार-वानने कर्त्तव्य छे.

६७३. ववाणीआ. मार्ग० सुद १० सोम. १९५३.

सर्वज्ञाय नमः.

योगवासिष्ठना प्रथमनां बे प्रकरण, पंचीकरण, दासबोध तथा विचारसागर ए ग्रंथो तमारे विचारवा योग्य छे. एमांनो कोई ग्रंथ तमे पूर्वे वांच्यो होय तोपण फरी वांचवो योग्य छे, तेम ज विचारवो योग्य छे. जैनपद्धतिना ए ग्रंथो नथी एम जाणीने ते ग्रंथो विचारतां क्षोभ पामवो योग्य नथी.

लोकदृष्टिमां जे जे वातो के वस्तुओ मोटाईवाळी मनाय छे, ते ते वातो अने वस्तुओ, शोभायमान गृहादि आरंभ, अलंकारादि परिग्रह, लोकदृष्टिनुं विचक्षणपणुं, लोकमान्यधर्म श्रद्धावान-पणुं प्रत्यक्ष झेरनुं ग्रहण छे एम यथार्थ जणायाविना धारो छो ते वृत्तिनो लक्ष न थाय. प्रथम ते वातो अने वस्तुओ प्रत्ये झेरदृष्टि आववी कठण देखी कायर न थतां पुरुषार्थ करवो योग्य छे.

६७४. ववाणीआ. मार्ग० सुद १२. १९५३.

सर्वज्ञाय नमः

१. **आत्मसिद्धिनी** टीकानां पानां मळ्यां छे.

२. जो सफळतानो मार्ग समजाय तो आ मनुष्यदेहनो एक समय पण सर्वोत्कृष्ट चिंतामणि छे, एमां संशय नथी.

६७५.

वृत्तिनो लक्ष तथारूप सर्वसंगपरित्यागप्रत्ये वर्त्ततो छतां जे मुमुक्षुने प्रारब्धविशेषथी ते योगनो अनुदय रह्या करे अने कुटुंबादिनो प्रसंग तथा आजीविकादि कारणे प्रवृत्ति रहे, जे यथान्यायथी करवी पडे, पण ते त्यागना उदयने प्रतिबंधक जाणी सखेदपणे करे. पूर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्मानुसार आजीविकादि प्राप्त थशे एम विचारी मात्र निमित्तरूप प्रयत्न करवुं घटे, पण भयाकुळ थई चिंता के न्यायत्याग करवां न घटे, केमके ते तो मात्र व्यामोह छे.

प्राप्ति शुभाशुभ प्रारब्धानुसार छे. प्रयत्न व्यवहारिक निमित्त छे, एटले करवुं घटे, पण चिंता तो मात्र आत्मगुणरोधक छे, ए शमाववा योग्य छे.

६७६. ववाणीआ. मार्ग. वदी ११ बुध. १९५३.

आरंभ तथा परिग्रहनी प्रवृत्ति आत्महितने घणा प्रकारे रोधक छे, अथवा सत्समागमना योगमां एक विशेष अंतरायनुं कारण जाणीने तेना त्यागरूपे बाह्यसंयम ज्ञानीपुरुषोए उपदेश्यो छे, जे प्राये तमने प्राप्त छे. वळी यथार्थ भावसंयमनी जिज्ञासाथी प्रवर्त्तो छो, माटे अमूल्य अवसर प्राप्त थयो जाणी सच्छास्त्र, अप्रतिबंधता, चित्तनी एकाग्रता, सत्पुरुषोनां वचनोनी अनुप्रेक्षाद्वारा ते सफळ करवी योग्य छे.

६७७.

वैराग्य अने उपशमना विशेषार्थे भावनाबोध, योगवासिष्ठनां प्रथमनां बे प्रकरणो, पंचीकरण ए आदि ग्रंथो विचारवा योग्य छे.

जीवमां प्रमाद विशेष छे, माटे आत्मार्थनां कार्यमां जीवे नियमित थईने पण ते प्रमाद टाळवो जोईए, अवश्य टाळवो जोईए.

६७८. ववाणीआ. पोष. सुद १० सोम. १९५३.

विषम भावनां निमित्तो बळवानपणे प्राप्त थयां छतां जे ज्ञानीपुरुष अविषम उपयोगे वर्त्या छे, वर्त्ते छे, अने भविष्यकाळे वर्त्ते ते सर्वने वारंवार नमस्कार.

उत्कृष्टमां उत्कृष्ट व्रत, उत्कृष्टमां उत्कृष्ट तप, उत्कृष्टमां उत्कृष्ट नियम, उत्कृष्टमां उत्कृष्ट लब्धि, उत्कृष्टमां उत्कृष्ट ऐश्वर्य, ए जेमां सहेजे शमाय छे एवा निरपेक्ष अविषम उपयोगने नमस्कार. ए ज ध्यान.

६७९ ववाणीआ. पोष सुद ११ बुध. १९५३.

राग, द्वेषनां प्रत्यक्ष बळवान निमित्तो प्राप्त थये पण जेनो आत्मभाव किंचित् मात्र पण क्षोभ पामतो नथी, ते ज्ञानीना ज्ञाननो विचार करतां पण महा निर्जरा थाय एमां संशय नथी.

६८०. ववाणीआ. पोष वदी ४ शुक्र. १९५३.

आरंभ अने परिग्रहनो इच्छापूर्वक प्रसंग होय तो आत्मलाभने विशेष घातक छे, अने वारंवार अस्थिर, अप्रशस्त परिणामनो हेतु छे, एमां तो संशय नथी. पण ज्यां अनिच्छाथी उदयना कोई एक योगथी प्रसंग वर्त्ततो होय त्यांपण आत्मभावना उत्कृष्टपणाने बाध करनार तथा आत्मस्थिरताने अंतराय करनार, ते आरंभ परिग्रहनो प्रसंग प्राये थाय छे, माटे परम कृपालु ज्ञानीपुरुषोए त्यागमार्ग उपदेश्यो छे ते मुमुक्षु जीवे देशे अने सर्वथा अनुसरवायोग्य छे.

६८१. मोरबी. महाशुद ९ बुध. १९५३.

द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी एम चारे प्रकारे अप्रतिबंधपणुं, आत्मताए वर्त्तता निर्ग्रंथने कह्युं छे, ते विशेष अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे.

६८२.

(१) कोई पुरुष पोते विशेष सदाचारमां तथा संयममां प्रवर्त्ते छे, तेना समागममां आववा इच्छता जीवोने ते पद्धतिना अवलोकनथी जेवो सदाचार तथा संयमनो लाभ थाय छे, तेवो विस्तारवाळा उपदेशथी पण लाभ घणुंकरीने थतो नथी, ते लक्ष राखवायोग्य छे.

(२) आत्मसिद्धि विचारतां आत्मासंबंधी कंई पण अनुप्रेक्षा वर्त्ते छे के केम?

(३) परमार्थदृष्टिपुरुषने अवश्य करवायोग्य एवा समागमना लाभमां विकल्परूप अंतराय कर्त्तव्य नथी. सर्वज्ञाय नमः.

६८३. मोरबी. महा वद ४ रवि. १९५३.

(१) संस्कृतनो परिचय न होय तो करशो.

(२) जे प्रकारे बीजा मुमुक्षु जीवोनां चित्तमां तथा अंगमां निर्मळता भावनी वृद्धि थाय, ते ते प्रकारे प्रवर्त्तवुं कर्त्तव्य छे. नियमित श्रवण करावाय तथा आरंभ परिग्रहनां स्वरूप सम्यक्-प्रकारे जोतां निवृत्तिने अने निर्मळताने केटला प्रतिबंधक छे ते वात चित्तमां दृढ थाय तेम अरस्परस ज्ञानकथा थाय तेम कर्त्तव्य छे.

६८४.

(१) सकळ संसारी इंद्रियरामी, मुनि गुण आतमरामी रे,
मुख्यपणे जे आतमरामी, ते कहिये निष्कामी रे.

(२) श्री ००० तथा श्री ०००००० आत्मसिद्धि शास्त्रने विशेष करी मनन करशो. बीजा मुनियोने पण प्रश्नव्याकरणादिसूत्र सत्पुरुषना लक्षे संभळावाय तो संभळावशो.

६८५. ववाणीआ. महा वदी १२. १९५३.

(१) ते माटे उभा कर जोडी, जिनवर आगळ कहिये रे;
समय चरण सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहिये रे.

(२) "कर्मग्रंथ" नामे शास्त्र छे, ते हाल अथ इति सुधी वांचवानो, श्रवण करवानो तथा अनुप्रेक्षा करवानो परिचय राखी शको तो राखशो. बेथी चार घडी नित्यप्रत्ये हाल ते वांचवामां, श्रवण करवामां नियमपूर्वक व्यतीत करवी योग्य छे.

६८६. ववाणीआ. फा. शु. २. १९५३.

(१) एकांत निश्चयनयथी मति आदि चार ज्ञान संपूर्ण शुद्धज्ञाननी अपेक्षाए विकल्पज्ञान कही शकाय, पण संपूर्ण शुद्धज्ञान एटले संपूर्ण निर्विकल्पज्ञान उत्पन्न थवानां ए ज्ञान साधन छे, तेमां पण श्रुतज्ञान मुख्यपणे छे, केवळज्ञान उत्पन्न थवामां छेवटसुधी ते ज्ञाननुं अवलंबन छे. प्रथमथी कोई जीव एनो त्याग करे तो केवळज्ञान पामे नहीं.

केवळ ज्ञान सुधी दशा पामवानो हेतु श्रुतज्ञानथी थाय छे.

(२) कर्मबंधनुं विचित्रपणुं, एटले सर्वने सम्यक् (सारूं) समजाय एम न बने.

६८७.

त्याग वैराग्य न चित्तमां, थाय न तेने ज्ञान;
अटके त्याग वैराग्यमां, तो भूले निज भान.
जहां कल्पना जल्पना, तहां मानुं दुःख छांई;
मिटे कल्पना जल्पना, तो वस्तु तिन पाई.
पढे पार कहां पामवो, मिटे न मनकी आश;
ज्यौं कोलुकों बेलकुं, घरहि कोश हजार.

'मोहिनीय' नुं स्वरूप आ जीवे वारंवार अत्यंत विचारवा जेवुं छे. जे मोहिनीए महा मुनीश्वरोने पण पळमां तेना पाशमां फसावी अत्यंत रिद्धि–सिद्धिथी विमुक्त करी दीधा छे! शाश्वत सुख छीनवी क्षणभंगुरतामां ललचावी रखडाव्या छे! निर्विकल्प स्थिति लाववी, आत्मस्वभावमां रमणता करवी, मात्र दृष्टाभावे रहेवुं एवो ज्ञानिनो ठाम ठाम बोध छे; ते बोध यथार्थ प्राप्त थये आ जीवनुं कल्याण थाय. जिज्ञासामां रहो. योग्य छे.

कर्म मोहिनी भेद बे, दर्शन[१] चारित्र[२] नाम;
हणे बोध[१] वीतरागता[२], अचूक उपाय आम. ॐ शांतिः.

६८८. ववाणीआ फा. व. ११. १९५३.

(१) 'कर्म ग्रंथ' विचारतां कषायादिनुं स्वरूप, केटलुंक यथार्थ समजातुं नथी, ते विशेष अनुप्रेक्षाथी, त्याग वृत्तिनां बळे, समागमे समजावायोग्य छे.

(२) **ज्ञाननुं फळ विरति छे.** वीतरागनुं आ वचन सर्व मुमुक्षुओने नित्य स्मरणमां राखवा योग्य छे. जे वांचवाथी, समजवाथी तथा विचारवाथी आत्मा विभावथी, विभावनां कार्योथी अने विभावनां परिणामथी उदास न थयो, विभावनो त्यागी न थयो, विभावनां कार्योनो अने विभावनां फळनो त्यागी न थयो ते वांचवुं, ते विचारवुं अने ते समजवुं अज्ञान छे. **विचारवृत्ति साथे त्यागवृत्ति उत्पन्न करवी ते ज विचार सफळ छे,** एम कहेवानो ज्ञानीनो परमार्थ छे.

(३) वखतनो अवकाश मेळवीने नियमितरीते बेथी चार घडी सुधी मुनियोए हाल सूयगडांग विचारवुं घटे छे, शांत अने विरक्त चित्तथी.

६८९.

ॐ नमः सर्वज्ञाय.

आत्मसिद्धिमां कहेला समकितना प्रकारनो विशेषार्थ जाणवानी जिज्ञासानो कागळ मळ्यो छे.

१. आत्मसिद्धिमां त्रण प्रकारनां समकित उपदेश्यां छे:—

(१) आप्त पुरुषनां वचननी प्रतीतिरूप, आज्ञानी अपूर्व रुचीरूप, स्वछंदनिरोधपणे आप्त पुरुषनी भक्तिरूप ए प्रथम समकित कह्युं छे.

(२) परमार्थनी स्पष्ट अनुभवांशे प्रतीति ते समकितनो बीजो प्रकार कह्यो छे.

(३) निर्विकल्प परमार्थअनुभव ते समकितनो त्रीजो प्रकार कह्यो छे.

पहेलुं समकित बीजा समकितनुं कारण छे. बीजुं समकित त्रीजा समकितनुं कारण छे. त्रणे समकित वीतराग पुरुषे मान्य कर्यां छे. त्रणे समकित उपासवायोग्य छे, सत्कार करवा योग्य छे, भक्ति करवायोग्य छे.

२. केवळज्ञान उपजवाना छेल्ला समयसुधी सत्पुरुषनां वचननुं अवलंबन वीतरागे कह्युं छे. अर्थात् बारमा क्षीणमोह गुणस्थानकपर्यंत श्रुत ज्ञानथी आत्माना अनुभवने निर्मळ करतां करतां ते निर्मळता संपूर्णता पाम्ये केवळज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थवाना प्रथम समयसुधी सत्पुरुषे उपदेशेलो मार्ग आधारभूत छे, एम कह्युं छे ते निःसंदेह सत्य छे.

६९०.

(१)

लेश्याः—जीवना कृष्णादि द्रव्यनी पेठे भासमान परिणाम.

अध्यवसायः—लेश्या परिणामनी कंईक स्पष्टपणे प्रवृत्ति.

संकल्पः—कंईपण प्रवृत्ति करवानो निर्धारित अध्यवसाय.

विकल्प.—कंईपण प्रवृत्ति करवानो अपूर्ण, अनिर्धारित, संदेहात्मक अध्यवसाय.

संज्ञाः—कंईपण आगळ पाछळनी चिंतवनशक्तिविशेष अथवा स्मृति.

परिणामः—जळना द्रवणस्वभावनी पेठे द्रव्यनी कथंचित् अवस्थांतर पामवानी शक्ति छे ते अवस्थांतरनी विशेष धारा, ते परिणति.

अज्ञानः—मिथ्यात्वसहित मतिज्ञान तथा श्रुत ज्ञान होय तो ते अज्ञान.

विभंगज्ञानः—मिथ्यात्व सहित अतींद्रिय ज्ञान होय ते विभंग ज्ञान.

विज्ञानः—कंईपण विशेषपणे जाणवुं ते विज्ञान.

(२)

शुद्ध चैतन्य.

शुद्ध चैतन्य. शुद्ध चैतन्य.

सद्भावनी प्रतीति–सम्यग्दर्शन.

शुद्धात्मपद.

ज्ञाननी सीमा कई?

निरावरण ज्ञाननी स्थिति शुं?

अद्वैत एकांते घटे छे?

ध्यान अने अध्ययन.

उ० अप०

(३)

जैनमार्ग.

१. लोक संस्थान.
२. धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य.
३. अरुपीपणुं.
४. सुषम दुषमादिकाळ.
५. ते ते काळे भारतादिनी स्थिति, मनुष्य ऊंचत्वादिप्रमाण.
६. निगोद सूक्ष्म.
७. भव्य अभव्य नामे बे प्रकारे जीव.
८. विभाव दशा पारिणामिक भावे.
९. प्रदेश अने समय तेनुं व्यावहारिक पारमार्थिक कंई स्वरूप.
१०. गुण समुदायथी जूदुं कंई द्रव्यत्व.
११. प्रदेश समुदायनुं वस्तुत्व.
१२. रूप, रस, गंध स्पर्शथी जूदुं एवुं कंई पण परमाणुपणुं.
१३. प्रदेशनुं संकोचावुं, विकाशावुं.
१४. तेथी घनपणु के पातळापणुं.
१५. अस्पर्शगति.
१६. एक समय अत्र अने सिद्धक्षेत्रे होवापणुं.—अथवा ते ज समये लोकांतगमन.
१७. सिद्धसंबंधी अवगाह.
१८. अवधि, मनःपर्यव अने केवळनी व्यावहारिक पारमार्थिक कंई व्याख्या;—जीवनी अपेक्षा तथा दृश्य पदार्थनी अपेक्षाए.
"मतिश्रुतनी व्याख्या—ते प्रकारे."
१९. केवळज्ञाननी बीजी कंई व्याख्या.
२०. क्षेत्रप्रमाणनी बीजी कंई व्याख्या.
२१. समस्त विश्वनो एक अद्वैत तत्त्वपर विचार.
२२. केवळज्ञानविना जीवस्वरूपनुं बीजा कोई ज्ञाने ग्रहण प्रत्यक्षपणे.
२३. विभावनुं उपादान कारण.
२४. तेम तथाप्रकारनो समाधानयोग्य कोई प्रकार.
२५. आ काळने विषे दश बोलनुं व्यवच्छेदपणुं, तेनो अन्य कंई परमार्थ.

२६. बीजभूत अने संपूर्ण एम केवळ ज्ञान बे प्रकारे.

२७. वीर्यादि आत्मगुण गण्या छे तेमां चेतनपणुं.

२८. ज्ञानथी जूदुं एवुं आत्मत्व.

२९. जीवनो स्पष्ट अनुभव थवाना ध्यानना मुख्यप्रकार, वर्त्तमानकाळने विषे.

३०. तेमां पण सर्वोत्कृष्ट मुख्य प्रकार.

३१. अतिशयनुं स्वरूप.

३२. लब्धि (केटलीक) अद्वैततत्त्व मानतां सिद्ध थाय एवी मान्य छे.

३३. लोकदर्शननो सुगम मार्ग, वर्त्तमानकाळे; कंई पण.

३४. देहांतदर्शननो सुगम मार्ग, वर्त्तमान काळे.

३५. सिद्धत्वपर्याय सादि अनंत, अने मोक्ष अनादि अनंत०

३६. परिणामी पदार्थ निरंतर स्वाकार परिणामी होय तो पण अव्यवस्थित परिणामीपणुं. अनादिथी होय ते केवळज्ञानने विषे भास्यमान. पदार्थने विषे शी रीते घटमान.

(४)

१. कर्मव्यवस्था.

२. सर्वज्ञता.

३. पारिणामिकता.

४. नाना प्रकारना विचार अने समाधान.

५. अन्यथी न्यून पराभवता.

६. ज्यां ज्यां अन्य विकळ छे त्यां त्यां अविकळ आ अविकळ देखाय त्यां अन्यनुं कचित् अविकळपणुं, नहीं तो नहीं.

६९१.* मुंबई. श्रावण. १९५०.

(१)

१. प्रत्यक्ष आश्रय नुं स्वरूप लख्युं ते पत्र अत्रे प्राप्त थयुं छे. मुमुक्षु जीवे परम भक्ति सहित ते स्वरूप उपासवायोग्य छे.

२. योगबळ सहित, एटले जेमनो उपदेश घणा जीवोने थोडा प्रयासे मोक्षसाधन रूप थई शके एवा अतिशय सहित जे सत्पुरुष होय ते ज्यारे यथाप्रारब्ध उपदेशव्यवहारनो उदय प्राप्त थाय त्यारे मुख्यपणे घणुंकरिने ते भक्तिरूप प्रत्यक्ष आश्रयमार्ग प्रकाशे छे. पण तेवा उदययोग विना घणुंकरी प्रकाशता नथी.

३. बीजा व्यवहारना योगमां मुख्यपणे ते मार्ग घणुंकरिने सत्पुरुषो प्रकाशता नथी † ते तेमनुं करुणा स्वभावपणुं छे.- जगत्‌ना जीवोनो उपकार पूर्वापर विरोध न पामे अथवा घणा जीवोने उपकार थाय ए आदि घणां कारणो देखिने अन्य व्यवहारमां वर्त्ततां

* सं. १९५०, वर्ष २७ मानो आ पत्र आटलुं छपाया पछी मळतां अत्रे दाखल करेल छे. ता. १३. ६. २५. म. कि.

† जुओ पृ. ४९१ ला. १२-१३ तथा पृ. ५१९ ला. छेल्ली त्रण. म. कि.

तेवो प्रत्यक्ष आश्रयरूप मार्ग सत्पुरुषो प्रकाशता नथी. घणुंकरीने तो अन्य व्यवहारना उदयमां अप्रसिद्ध रहे छे. अथवा कांई प्रारब्धविशेषथी सत्पुरुषपणे कोईना जाणवामां आव्या, तोपण पूर्वापर तेना श्रेयनो विचार करी ज्यां सुधी बने त्यां सुधी विशेष प्रसंगमां आवता नथी. अथवा घणुंकरी अन्य व्यवहारना उदयमां सामान्य मनुष्यनी पेठे विचरे छे.

४. अने तेम वर्त्ताय तेवुं प्रारब्ध न होय तो ज्यां कोई तेवो उपदेश अवसर प्राप्त थाय छे त्यां पण प्रत्यक्ष आश्रय मार्गनो घणुंकरिने उपदेश करता नथी, क्वचित् 'प्रत्यक्ष' आश्रय मार्गना ठेकाणे 'आश्रय मार्ग' एवा सामान्य शब्दथी, घणा उपकारनो हेतु देखी, कंई कहे छे. अर्थात् उपदेश व्यवहार प्रवर्त्तावावा उपदेश करता नथी.

(२)

घणुंकरिने जे कोई मुमुक्षुओने समागम थयो छे तेमने दशा विषे थोडेघणे अंशे प्रतीति छे. तथापि जो कोईने पण समागम न थयो हत तो वधारे योग्य हतुं.

अत्रे जे कांई व्यवहार उदयमां वर्त्ते छे ते व्यवहारादि आगळ उपर उदयमां आववायोग्य छे एम जाणी तथा उपदेश व्यवहारनो उदय प्राप्त न थयो होय त्यां सुधी अमारी दशा विषे तम वगेरेने जे कंई समजायुं होय ते प्रकाश न करवा माटे जणाववामां मुख्य कारण ए हतुं अने छे.

६९२.* श्री ववाणीआ. मोरबी. का. थी फा. १९५३.

श्री आनंदघनजी चोविशी विवेचन. †

(१)

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे,
ओर न चाहुं रे कंत;
रिझयो साहिब संग न परिहरे रे,
भांगे सादिअनंत. ऋषभ० १.

नाभिराजाना पुत्र श्री ऋषभदेवजी तीर्थंकर ते मारा परम वहाला छे. जेथी हुं बीजा स्वामीने चाहुं नहीं. ए स्वामी एवा छे के प्रसन्न थया पछी कोई दिवस संग छोडे नहीं. ज्यारथी संग थयो त्यारथी आदि छे, पण ते संग अटळ होवाथी अनंत छे. १.

विशेषार्थः-जे स्वरूपजिज्ञासु पुरुषो छे, ते पूर्ण शुद्ध स्वरूपने पाम्या छे एवा भगवानना स्वरूपमां पोतानी वृत्ति तन्मय करे छे; जेथी पोतानी स्वरूपदशा जाग्रत थती जाय छे अने सर्वोत्कृष्ट यथाख्यातचारित्रने प्राप्त थाय छे. जेवुं भगवाननुं स्वरूप छे, तेवुं ज शुद्धनयनी दृष्टिथी आत्मानुं स्वरूप छे. आ आत्मा अने सिद्धभगवानना स्वरूपमां औपाधिक भेद छे. स्वाभाविक

* वि. सं. १९५३ ना कार्तिक थी फागण सुधीमां अवार नवार श्रीमोरबी अने ववाणीआमां 'श्रीमद्'नी लांबो वखत स्थिति हती, ते वेळाए ६९२ थी ७०० सुधीना आंक लखायेल छे. ६९४ थी ७०० सुधीना अंक द्रव्यानुयोग संबंधी सिद्धांत विचारणा अने शास्त्र योजनाना छे, अपूर्ण मळेल छतां संगत छे. म. कि

† श्री आनंदघनजीए रचेल चोविश तीर्थंकरनां स्तवनो पर विवेचन "श्रीमदे" शरू करेल, पण ते पूर्ण प्राप्त थयुं नथी. बीजा स्तवननां बे पद सुधीनुं मळेल छे. पहेला स्तवननो प्रस्ताव पण अपूर्ण मळ्यो छे. म. कि.

स्वरूपथी जोईए तो आत्मा सिद्धभगवानना तुल्य ज छे. सिद्धभगवाननुं स्वरूप निरावरण छे; अने वर्त्तमानमां आ आत्मानुं स्वरूप आवरणसहित छे, अने ए ज भेद छे; वस्तुताए भेद नथी. ते आवरण क्षीण थवाथी आत्मानुं स्वाभाविक सिद्धस्वरूप प्रगटे छे.

अने ज्यांसुधी तेवुं स्वाभाविक सिद्धस्वरूप प्रगट्युं नथी, त्यांसुधी स्वाभाविक शुद्धस्वरूपने पाम्या छे एवा सिद्धभगवाननी उपासना कर्त्तव्य छे; तेम ज अर्हत्भगवाननी उपासना पण कर्त्तव्य छे, केमके ते भगवान् सयोगीसिद्ध छे. सयोगरूप प्रारब्धने लईने तेओ देहधारी छे; पण ते भगवान् स्वरूपसमवस्थित छे. सिद्धभगवान् अने तेमना ज्ञानमां, दर्शनमां, चारित्रमां के वीर्यमां कंई पण भेद नथी; एटले अर्हत्भगवाननी उपासनाथी पण आ आत्मा स्वरूपलक्ष्यने पामी शके छे. पूर्वे महात्माओए कह्युं छे के :—

जे जाणई अरिहंते, दव्व गुण पज्जवेहिं य;
सो जाणई निय आप्पा, मोहो खलु जाईय तस्स लयं.

जे भगवान अर्हत्नुं स्वरूप द्रव्य, गुण अने पर्यायथी जाणे, ते पोताना आत्मानुं स्वरूप जाणे अने तेनो निश्चयकरीने मोह नाश पामे.

ते भगवाननी उपासना केवा अनुक्रमथी जीवोने कर्त्तव्य छे, ते नवमा स्तवनमां श्री आनंदघनजी कहेवाना छे.

भगवान सिद्धने नाम, गोत्र, वेदनीय अने आयुष्य ए कर्मोनो पण अभाव छे; ते भगवान् केवळ कर्मरहित छे. भगवान अर्हत्ने आत्मस्वरूपने आवरणीय कर्मोनो क्षय छे, पण उपर जणावेलां चार कर्मनो पूर्वबंध, वेदीने क्षीण करतांसुधी, तेमने वर्त्ते छे. जेथी ते परमात्मा साकारभगवान् कहेवायोग्य छे.

ते अर्हत्भगवानमां जेओए 'तीर्थंकरनामकर्म'नो शुभयोग पूर्वे उत्पन्न कर्यो होय छे, ते 'तीर्थंकरभगवान्' कहेवाय छे; जेमनो प्रताप, उपदेशबळ, आदि महत्पुण्ययोगना उदयथी आश्चर्यकारी शोभे छे.

भरतक्षेत्रमां वर्त्तमान अवसर्पिणीकाळमां तेवा चोवीश तीर्थंकर थया; श्री ऋषभदेवथी श्री वर्द्धमान.

वर्त्तमानमां ते भगवान् सिद्धालयमां स्वरूपस्थितपणे विराजमान छे. पण 'भूतप्रज्ञापनीय नय'थी तेमने विषे 'तीर्थंकरपद'नो उपचार कराय छे. ते औपचारिक नयदृष्टिथी ते चोवीश भगवाननी स्तवनारूपे आ चोवीश स्तवनोनी रचना करी छे.

सिद्धभगवान् केवळ अमूर्तपदे स्थित होवाथी तेमनुं स्वरूप सामान्यताथी चिंतववुं दुर्गम्य छे. अर्हत्भगवाननुं स्वरूप मूळ दृष्टिथी चिंतववुं तो तेवुं ज दुर्गम्य छे, पण सयोगीपदना अवलंबनपूर्वक चिंतवता सामान्य जीवोने पण वृत्ति स्थिर थवाने कंईक सुगम उपाय छे, जेथी अर्हत्भगवाननी स्तवनाथी सिद्धपदनी स्तवना थया छतां, आटलो विशेष उपकार जाणी श्री आनंदघनजीए आ चोवीशी चोवीश तीर्थंकरनी स्तवना रूपे रची छे. नमस्कारमंत्रमां पण अर्हत्पद प्रथम मुकवानो हेतु एटलो ज छे के तेमनुं विशेष उपकारीपणुं छे.

भगवानना स्वरूपनुं चिंतन करवुं ते परमार्थदृष्टिवान पुरुषोने गौणताथी स्वरूपनुं ज चिंतवन छे. सिद्धप्राभृत'मां कह्युं छे के:—

जारिस सिद्ध सहावो, तारिस सहावो सव्व जीवाणं;
तह्मा सिद्धंतरुई, कायव्वा भव्व जीवेहिं.

जेवुं सिद्धभगवाननुं आत्मस्वरूप छे, तेवुं सर्व जीवोनुं आत्मस्वरूप छे; ते माटे भव्य जीवोए सिद्धत्वने विषे रुची करवी.

तेम ज श्री देवचंद्रस्वामीए श्री वासुपूज्यना स्तवनमां कह्युं छे के जिनपूजा रे ते निजपूजना. जो यथार्थ मूळ दृष्टिथी जोईए तो जिननी पूजा ते आत्मस्वरूपनुं ज पूजन छे.

स्वरूपआकांक्षी महात्माओए एम जिनभगवाननी तथा सिद्धभगवाननी उपासना स्वरूपप्राप्तिनो हेतु जाण्यो छे. क्षीणमोह गुणस्थानकपर्यंत ते स्वरूप चिंतवना जीवने प्रबळ अवलंबन छे. वळी मात्र एकलुं अध्यात्मस्वरूप चिंतवन जीवने व्यामोह उपजावे छे; घणा जीवोने शुष्कता प्राप्त करावे छे, अथवा स्वेच्छाचारिपणुं उत्पन्न करे छे; अथवा उन्मत्तप्रलापदशा उत्पन्न करे छे. भगवानना स्वरूपना ध्यानावलंबनथी भक्तिप्रधान दृष्टि थाय छे, अने अध्यात्मदृष्टि गौण थाय छे. जेथी शुष्कता, स्वेच्छाचारिपणुं अने उन्मत्तप्रलापता थतां नथी. आत्मदशाबळ थवाथी स्वाभाविक अध्यात्मप्रधानता थाय छे. आत्मा स्वाभाविक उच्च गुणोने भजे छे, एटले शुष्कतादि दोषो उत्पन्न थता नथी; अने भक्तिमार्गप्रत्ये पण जुगुप्सित थता नथी. स्वाभाविक आत्मदशा स्वरूपलीनता पामती जाय छे. ज्यां अर्हंतादिना स्वरूपध्यानावलंबन वगर वृत्ति आत्माकारता भजे छे, त्यां [चोविशीनी आ प्रस्तावना अपूर्ण प्राप्त.]

(२)

*वीतरागोने विषे ईश्वर एवा ऋषभदेव भगवान् मारा स्वामी छे. तेथी हवे हुं बीजा कंथनी इच्छा करती नथी, केमके ते प्रभु रिझ्या पछी छोडता नथी. ते प्रभुनो योग प्राप्त थवो तेनी आदि छे; पण ते योग कोईवार पण निवृत्ति पामतो नथी, माटे अनंत छे.

---

* श्री ऋषभजिनस्तवन.

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहुं रे कंत,
रिझ्यो साहेब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत. ऋषभ० (१)
कोई कंत कारण काष्ठभक्षण करे रे, मिलशुं कंतने धाय;
ए मेळो नव कहियें संभवे रे, मेळो ठाम न ठाय. ऋषभ० (३)
कोई पतिरंजन अतिघणुं तप करे रे, पतिरंजन तन ताप;
ए पतिरंजन में नव चित्त धर्युं रे, रंजन धातुमेळाप. ऋषभ० (४)
कोई कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आश;
दोषरहितने लीला नव घटे रे, लीला दोष विलास. ऋषभ० (५)
चित्तप्रसन्ने रे पूजन फळ कह्युं रे, पूजा अखंडित एह;
कपटरहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पदरेह. ऋषभ० (६)

जगत्‌ना भावोमांथी उदासीन थई चैतन्यवृत्ति शुद्धचैतन्यस्वभावसमवस्थित भगवानमां प्रीतिमान थई तेनो हर्ष आनंदघनजी दर्शावे छे.

पोतानी श्रद्धा नामनी सखीने आनंदघनजीनी चैतन्यवृत्ति कहे छे, के हे सखी! में ऋषभदेव भगवानथी लग्न कर्युं छे अने ते भगवान् मने सर्वथी वाहालो छे. ए भगवान् मारा पति थवाथी हवे हुं बीजा कोई पण पतिनी इच्छा करूं ज नहीं. केमके बीजा बधा जन्म, जरा, मरणादि दुःखे करीने आकुळ व्याकुळ छे; क्षणवार पण सुखी नथी; तेवा जीवने पति करवाथी मने सुख क्यांथी थाय? भगवान् ऋषभदेव तो अनंत अव्याबाध सुखसमाधिने प्राप्त थया छे, माटे तेनो आश्रय करूं तो मने ते ज वस्तुनी प्राप्ति थाय. ते योग वर्त्तमानमां प्राप्त थवाथी हे सखी! मने परम शीतलता थई. बीजा पतिनो तो कोई काळे वियोग पण थाय, पण आ मारा स्वामीनो तो कोई पण काळे वियोग थाय ज नहीं. ज्यारथी ते स्वामी प्रसन्न थया त्यारथी कोई पण दिवस संग छोडता नथी. ए स्वामीना योगनो स्वभाव सिद्धांतमां 'सादिअनंत' एटले ते योग थवानी आदि छे, पण कोई दिवस तेनो वियोग थवानो नथी, माटे अनंत छे एम कह्यो छे; तेथी हवे मारे कोई पण दिवस ते पतिनो वियोग थशे ज नहीं. १.

हे सखी! आ जगत्‌नेविषे पतिनो वियोग न थाय ते अर्थे जे स्त्रियो नाना प्रकारना उपाय करे छे ते उपाय साचा नथी; अने एम मारा पतिनी प्राप्ति थती नथी. ते उपायनुं मिथ्यापणुं जणाववा तेमांना थोडाएक तने कहुं छुंः

कोईएक तो पतिनी साथे काष्ठमां बळवा इच्छे छे, के जेथी ते पतिनी साथे मेळाप ज रहे. पण ते मेळापनो कंई संभव नथी, केमके ते पति तो पोताना कर्मानुसार जे स्थळने प्राप्त थवानो हतो त्यां थयो, अने सती थईने मळवा इच्छे छे एवी ते स्त्री पण मेळापने अर्थे एक चितामां बळी मरवा इच्छे छे, तोपण ते पोताना कर्मानुसार देहने प्राप्त थवानी छे; बन्ने एक ज स्थळे देह धारण करे, अने पतिपत्नीरूपे योग पामीने निरंतर सुख भोगवे एवो कंई नियम नथी. एटले ते पतिनो वियोग थयो, वळी तेना योगनो पण असंभव रह्यो, एवो पतिनो मेळाप ते में खोटो गण्यो छे, केमके तेनुं ठाम ठेकाणुं कंई नथी.

(अथवा प्रथम पदनो अर्थ एवो पण थाय छे के) परमेश्वररूप पतिनी प्राप्तिने अर्थे कोई काष्ठ भक्षण करे छे, एटले पंचाग्निनी धुणियो सळगावी तेमां काष्ठ होमी ते अग्निनो परिषह सहन करे छे अने तेथी एम समजे छे के परमेश्वररूप पतिने पामीशुं, पण ते समजवुं खोटुं छे; केमके पंचाग्नि तापवामां तेनी प्रवृत्ति छे. ते पतिनुं स्वरूप जाणी, ते पतिने प्रसन्न थवानां कारणो जाणी, ते कारणोनी उपासना ते करता नथी माटे ते परमेश्वररूप पतिने क्यांथी पामशे? तेनी मति जेवा स्वभावमां परिणमी छे, तेवा ज प्रकारनी गतिने ते पामशे, जेथी ते मेळापनुं कंई ठाम ठेकाणुं नथी. २.

हे सखी! कोई पतिने रिझववा माटे घणा प्रकारनां तप करे छे, पण ते मात्र शरीरने ताप छे; ए पतिने राजी करवानो मार्ग में गण्यों नथी; पतिने रंजन करवाने तो बन्नेनी धातुनो मेलाप थवो ते छे.

कोई स्त्री गमे तेटलां कष्टथी तपश्चर्या करी पोताना पतिने रिझववा इच्छे तोपण ज्यांसुधी ते स्त्री पोतानी प्रकृति पतिनी प्रकृतिना स्वभावानुसार करी न शके त्यांसुधी प्रकृतिना प्रतिकूलपणाने लीधे ते पति प्रसन्न न ज थाय अने ते स्त्रीने मात्र शरीरे क्षुधादि तापनी प्राप्ति थाय.

तेम कोई मुमुक्षुनी वृत्ति भगवानने पतिपणे प्राप्त करवानी होय तो ते भगवानना स्वरूपानुसार वृत्ति न करे अने **अन्य स्वरूपमां रुचिमान छतां अनेक प्रकारनो तप तपीने कष्ट सेवे, तोपण ते भगवानने पामे नहीं.** केमके जेम पति पत्नीनो खरो मेलाप, अने खरी प्रसन्नता धातुना एकत्वमां छे, तेम हे सखी! भगवानमां आ वृत्तिने पतिपणुं स्थापन करी ते अचळ राखवुं होय तो ते भगवाननी साथे धातुमेलाप करवो ज योग्य छे; अर्थात् ते भगवान् जे शुद्धचैतन्यधातुपणे परिणम्या छे तेवी शुद्धचैतन्य वृत्ति करवाथी ज ते धातुमांथी प्रतिकूल स्वभाव निवृत्तवाथी ऐक्य थवानो संभव छे; अने ते ज धातुमेलापथी ते भगवानरूप पतिनी प्राप्तिनो कोई पण काळे वियोग थवानो नथी. ४.

हे सखी! कोई वळी एम कहे छे के आ जगत्, जेनुं स्वरूप ओळखवानो लक्ष न थई शके तेवा, भगवाननी लीला छे; अने ते अलक्ष भगवान् सौनी इच्छा पूर्ण करे छे; तेथी ते एम समजीने आ जगत्, भगवाननी लीला मानी, ते भगवाननो ते स्वरूपे महिमा गावामां ज पोतानी इच्छा पूर्ण थशे, एटले भगवान् प्रसन्न थईने तेने विषे लयता करशे एम माने छे. पण ते खोटुं छे, केमके ते भगवानना स्वरूपना अज्ञानथी एम कहे छे.

जे भगवान् अनंत ज्ञानदर्शनमय सर्वोत्कृष्ट सुखसमाधिमय छे, ते भगवानने आ जगत्नुं कर्त्तापणु केम होय? अने लीलाने अर्थे प्रवृत्ति केम होय? लीलानी प्रवृत्ति तो सदोषमां ज संभवे छे. जे पूर्ण होय ते कंई इच्छे ज नहीं. भगवान् तो अनंत अव्याबाधसुखे करीने पूर्ण छे; तेने विषे बीजी कल्पना क्यांथी अवकाश पामे? लीलानी उत्पत्ति कुतुहलवृत्तिथी थाय. तेवी कुतूहलवृत्ति तो ज्ञानसुखना अपरिपूर्णपणाथी ज थाय. भगवानमां तो ते बन्ने (ज्ञान, सुख) परिपूर्ण छे, माटे तेनी प्रवृत्ति जगत् रचवारूप लीलाप्रत्ये न ज थाय. ए लीला तो दोषनो विलास छे; सरागीने ज तेनो संभव छे. जे सरागी होय तेने सद्वेषता होय, अने जेने ए बन्ने होय तेने क्रोध, मान, माया, लोभ आदि सर्व दोषनुं पण संभवितपणुं छे. जेथी यथार्थ रीते जोतां तो लीला दोषनो ज विलास छे; अने एवो दोषविलास तो अज्ञानी ज इच्छे. विचारवान मुमुक्षुओ पण तेवो दोषविलास इच्छता नथी, तो अनंत ज्ञानमय भगवान् ते केम इच्छे? जेथी ते भगवाननुं स्वरूप लीलाना कर्तृत्वपणाथी भावे जे समजे छे ते भ्रांति छे; अने ते भ्रांतिने अनुसरीने भगवानने प्रसन्न करवानो ते जे मार्ग ले छे ते पण भ्रांतिमय ज छे; जेथी ते भगवानरूप पतिनी तेने प्राप्ति थती नथी. ५.

हे सखी! पतिने प्रसन्न करवाना तो घणा प्रकार छे. अनेक प्रकारना शब्द स्पर्शादि भोगथी पतिनी सेवा करवामां आवे छे एवा घणा प्रकार छे, पण ते सौमां चित्तप्रसन्नता ए ज सौथी उत्तम सेवा छे, अने क्यारे पण खंडित न थाय एवी सेवा छे. कपटरहित थईने आत्मा अर्पण करीने पतिनी सेवा करवाथी घणा आनंदना समूहनी प्राप्तिनो भाग्योदय थाय.

भगवानरूप पतिनी सेवाना प्रकार घणा छे. द्रव्यपूजा, भावपूजा, आज्ञापूजा. द्रव्यपूजाना पण घणा भेद छे. पण तेमां सर्वोत्कृष्ट पूजा तो चित्तप्रसन्नता एटले ते भगवानमां चैतन्यवृत्ति परमहर्षथी एकत्वने प्राप्त करवी ते ज छे; तेमां ज सर्व साधन शमाय छे. ते ज अखंडित पूजा छे, केमके जो चित्त भगवानमां लीन होय तो बीजा योग पण चित्ताधीन होवाथी भगवानने आधीन ज छे, अने चित्तनी लीनता भगवानमांथी न खसे तो ज जगत्ना भावोमांथी उदासीनता वर्त्ते, अने तेमां ग्रहण त्यागरूप विकल्प प्रवर्त्ते नहीं; जेथी ते सेवा अखंड ज रहे.

ज्यांसुधी चित्तमां बीजो भाव होय त्यांसुधी तमारा शिवाय बीजामां मारे कंई पण भाव नथी एम देखाडीए तो ते वृथा ज छे अने कपट छे; अने ज्यांसुधी कपट छे त्यांसुधी भगवानना चरणमां आत्मानुं अर्पण क्यांथी थाय? जेथी सर्व जगत्ना भावप्रत्ये विराम पमाडी, वृत्तिने शुद्धचैतन्य भाववाळी करवाथी ज ते वृत्तिमां अन्यभाव रह्यो न होवाथी शुद्ध कहेवाय अने ते निष्कपट कहेवाय. एवी चैतन्यवृत्ति भगवानमां लीन करवामां आवे ते ज आत्मअर्पणता कहेवाय.

धन धान्यादिक सर्व भगवानने अर्पण कर्यां होय, पण जो आत्मा अर्पण न कर्यो होय एटले ते आत्मानी वृत्ति भगवानमां लीन करी न होय तो ते धन धान्यादिकनुं अर्पण करवुं सकपट ज छे; केमके अर्पण करनार आत्मा अथवा तेनी वृत्ति तो बीजे स्थळे लीन छे. **जे पोते बीजे स्थळे लीन छे, तेना अर्पण थयेला बीजा जडपदार्थ भगवानमां अर्पण क्यांथी थई शके? माटे भगवानमां चित्तवृत्तिनी लीनता ए ज आत्मअर्पणता छे.** अने ए ज आनंदघनपदनी रेखा एटले परमअव्याबाध सुखमय मोक्षपदनी निशानी छे. अर्थात् जेने एवी दशानी प्राप्ति थाय ते परम आनंदघनस्वरूप मोक्षने प्राप्त थशे, एवां लक्षण ते लक्षण छे. ६. इति श्री ऋषभजिन स्तवन.

(२)*

प्रथम स्तवनमां भगवानमां वृत्ति लीन थवारूप हर्ष बताव्यो, पण ते वृत्ति अखंड अने पूर्णपणे लीन थाय तो ज आनंदघनपदनी प्राप्ति थाय, जेथी ते वृत्तिना पूर्णपणानी इच्छा करता छतां आनंदघन बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथनी स्तवना करे छे. जे पूर्णपणानी इच्छा छे, ते प्राप्त थवामां जे जे विघ्न दीठां ते संक्षेपे भगवानने आनंदघनजी आ बीजां स्तवनमां निवेदन करे छे;

---

* बीजुं श्री अजित जिन स्तवन.

पंथडो निहाळुं रे बीजाजिन तणो रे, **अजित** अजित गुण धाम;
जे तें जित्या रे, तेणे हुं जितेयो रे, पुरुष किश्युं मुज नाम? पंथडो० (१)
चरम नयण करि मारग जोवतां रे, भूल्यो सयल संसार;
जिण नयणे करि मारग जोविये रे, नयण ते दिव्य विचार. पंथडो० (२)

अने पोतानुं पुरुषत्व मंद देखी खेदखिन्न थाय छे एम जणावी पुरुषत्व जाग्रत रहे एवी भावना चिंतवे छे.

हे सखी! बीजा तीर्थंकर एवा अजितनाथ भगवाने पूर्ण लीनतानो मार्ग दर्शाव्यो छे ते अर्थात् जे सम्यक् चरणरूप मार्ग प्रकाश्यो छे ते जोऊं छऊं तो अजित एटले मारा जेवा निर्बळ वृत्तिना मुमुक्षुथी जीती न शकाय एवो छे. भगवाननुं अजित एवुं नाम छे ते तो सत्य छे केमके मोटा मोटा पराक्रमी पुरुषो कहेवाय छे तेनाथी पण जे गुणना धामरूप पंथनो जय थयो नथी, ते भगवाने जय कर्यो होवाथी भगवाननुं तो अजित नाम सार्थक ज छे, अने अनंत गुणना धामरूप ते मार्गने जीतवाथी भगवाननुं गुणधामपणुं सिद्ध छे. हे सखी, पण मारूं नाम पुरुष कहेवाय छे, ते सत्य नथी. भगवाननुं नाम अजित छे. जेम ते तद्रूप गुणने लीधे छे, तेम मारूं नाम पुरुष तद्रूप गुणने लीधे नथी. केमके **पुरुष तो तेनुं नाम कहेवाय के जे पुरुषार्थ सहित होय, स्वपराक्रम सहित होय**; पण हुं तो तेम नथी. माटे भगवानने कहुं छुं के हे भगवान, तमारूं नाम अजित ते साचुं छे; पण मारूं नाम पुरुष ते तो खोटुं छे. केमके राग, द्वेष, अज्ञान, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि दोषनो तमे जय कर्यो तेथी तमे अजित कहेवावा योग्य छो, पण ते ज दोषोए मने जीती लीधो छे, माटे मारूं नाम पुरुष शेनुं कहेवाय? १.

हे सखी! ते मार्ग पामवाने माटे दिव्य नेत्र जोईए. चर्म नेत्रे करीने जोतो छतो तो समस्त संसार भूल्यो छे. ते परम तत्त्वनो विचार थवाने माटे जे दिव्य नेत्र जोईए ते दिव्य नेत्रनो निश्चय करीने वर्त्तमानकाळमां वियोग थई पड्यो छे.

हे सखी! ते अजित भगवानने अजित थवाने अर्थे लीधेलो मार्ग कंई आ चर्मचक्षुथी देखाय नहीं. केमके ते मार्ग दिव्य छे, अने अंतरात्मदृष्टिथी ज अवलोकन करी शकाय एवो छे. जेम एक गामथी बीजे गाम जवाने पृथ्वीतळपर सडक वगेरे मार्ग होय छे, तेम आ मार्ग कंई एक गामथी बीजे गाम जवाना मार्गनी पेठे बाह्य मार्ग नथी, अथवा चर्मचक्षुए जोतां ते जणाय एवो नथी, चर्मचक्षुथी कंई ते अतींद्रिय मार्ग न देखाय. २. [अपूर्ण प्राप्त.]

६९३.

हे ज्ञातपुत्र भगवन्! काळनी बलिहारी छे. आ भारतना हीनपुण्यी मनुष्योने तारूं सत्य, अखंड अने पूर्वापर अविरोध शासन क्यांथी प्राप्त थाय? थवामां आवां विघ्नो उत्पन्न थयां: तारां बोधेलां शास्त्रो कल्पित अर्थथी विराध्यां, केटलांक समूळगां खंड्यां. **ध्यानतुं कार्य, स्वरूपनुं कारण ए जे तारी प्रतिमा** तेथी कटाक्षदृष्टिए लाखोगमे लोको वळ्यां; तारा पछी परंपराए जे आचार्य पुरुषो थया तेनां वचनमां अने तारां वचनमां पण शंका नांखी दीधी. एकांत दइकूटी तारूं शासन निंदाव्युं.

शासन देवि! एवी सहायता कंई आप के जे वडे कल्याणनो मार्ग हुं बीजाने बोधी शकुं, दर्शावी शकुं, खरा पुरुषो दर्शावी शके. सर्वोत्तम निर्ग्रंथप्रवचनना बोध भणी वाळी आ आत्मविराधक पंथोथी पाछां खेंचवामां सहायता आप!! तारो धर्म छे के समाधि अने बोधिमां सहायता आपवी.

६९४.

(१)

ॐ नमः

शारीरिक, मानसिक अनंत प्रकारनां दुःखोए आकुल व्याकुल जीवोने ते दुःखोथी छूटवानी बहु बहु प्रकारे इच्छा छतां तेमांथी ते मुक्त थई शकता नथी तेनुं शुं कारण? एवुं प्रश्न अनेक जीवोने उत्पन्न थया करे; पण तेनुं यथार्थ समाधान कोई विरल जीवने ज प्राप्त थाय छे. ज्यां सुधी दुःखनुं मूळ कारण यथार्थपणे जाणवामां न आव्युं होय, त्यां सुधी ते टाळवाने माटे गमे तेवुं प्रयत्न करवामां आवे तोपण दुःखनो क्षय थई शके नहीं, अने गमे तेटली अरुचि, अप्रियता अने अभाव ते दुःख प्रत्ये होय छतां तेने अनुभव्या ज करवुं पडे.

अवास्तविक उपायथी ते दुःख मटाडवानुं प्रयत्न करवामां आवे, अने ते प्रयत्न न सहन थई शके एटला परिश्रमपूर्वक कर्युं होय छतां ते दुःख न मटवाथी दुःख मटाडवा इच्छता मुमुक्षुने अत्यंत व्यामोह थई आवे छे, अथवा थया करे छे के आनुं शुं कारण? आ दुःख टळतुं केम नथी? कोई पण प्रकारे मारे ते दुःखनी प्राप्ति इच्छित नहीं छतां, स्वप्नेय पण तेना प्रत्ये कंई पण वृत्ति नहीं छतां तेनी प्राप्ति थया करे छे, अने हुं जे जे प्रयत्नो करूं छुं ते ते बधां निष्फळ जई दुःख अनुभव्या ज करूं छुं एनुं शुं कारण?

शुं ए दुःख कोईने मटतुं ज नहीं होय? दुःखी थवुं ए ज जीवनो स्वभाव हशे? शुं कोईक जगत्कर्ता ईश्वर हशे तेणे आम ज करवुं योग्य गण्युं हशे? शुं भवितव्यताने आधीन ए वात हशे? अथवा कोईक मारा करेला आगला अपराधोनुं फळ हशे? ए वगेरे अनेक प्रकारना विकल्पो जे जीवो मनसहित देहधारी छे ते कर्या करे छे. अने जे जीवो मनरहित छे ते अव्यक्तपणे दुःखनो अनुभव करे छे, अने अव्यक्तपणे ते दुःख मटे एवी इच्छा राख्या करे छे.

आ जगत्‌ने विषे प्राणी मात्रनी व्यक्त अथवा अव्यक्त इच्छा पण एज छे के कोईपण प्रकारे मने दुःख न हो, अने सर्वथा सुख हो. प्रयत्न पण एज अर्थे छे छतां ते दुःख शा माटे मटतुं नथी? एवो प्रश्न घणा घणा विचारवानोने पण भूतकाळे उत्पन्न थयो हतो, वर्त्तमानकाळे पण थाय छे अने भविष्यकाळे पण थशे. ते अनंत अनंत विचारवानोमांथी अनंत विचारवानो तेना यथार्थ समाधानने पाम्या अने दुःखथी मुक्त थया. वर्त्तमानकाळे पण जे जे विचारवानो यथार्थ समाधान पामे छे ते पण तथारूप फळने पामे छे, अने भविष्यकाळे पण जे जे विचारवानो यथार्थ समाधान पामशे ते ते तथारूप फळने पामशे एमां संशय नथी.

शरीरनुं दुःख मात्र औषध करवाथी मटी जतुं होत, मननुं दुःख धनादि मळवाथी जतुं होत, अने बाह्य संसर्ग संबंधनुं दुःख मनने कंई असर उपजावी शकतुं न होत, तो दुःख मटवा माटे जे जे प्रयत्न करवामां आवे छे ते ते सर्वजीवोनुं सफळ थात; पण ज्यारे तेम बनतुं जोवामां न आव्युं त्यारे ज विचारवानोने प्रश्न उत्पन्न थयुं के दुःख मटवा माटे

बीजो ज उपाय होवो जोईए, आ जे करवामां आवे छे ते उपाय अयथार्थ छे, अने बधो श्रम वृथा छे, माटे ते दुःखनुं मूळकारण जो यथार्थ जाणवामां आवे अने ते ज प्रमाणे उपाय करवामां आवे तो दुःख मटे; नहीं तो नहीं ज मटे.

जे विचारवानो दुःखनु यथार्थ मूळ कारण विचारवा उठ्या, तेमां पण कोईक ज तेनुं यथार्थ समाधान पाम्या अने घणा यथार्थ समाधान नहीं पामतां छतां मतिव्यामोहादि कारणथी यथार्थ समाधान पाम्या छैये एम मानवा लाग्या अने ते प्रमाणे उपदेश करवा लाग्या, अने घणा लोको तेने अनुसरवा पण लाग्या. जगत्‌मां जूदा जूदा धर्ममत जोवामां आवे छे तेनी उत्पत्तिनुं मुख्य कारण ए ज छे.

"धर्मथी दुःख मटे" एम घणाखरा विचारवानोनी मान्यता थई. पण धर्मनुं खरूप समजवामां एक बीजामां घणो तफावत पड्यो. घणा तो पोतानो मूळ विषय चूकी गया; अने घणा तो ते विषयमां मति थाकवाथी अनेक प्रकारे नास्तिकादि परिणामोने पाम्या.

दुःखनां मूळ कारण अने तेनी शी रीते प्रवृत्ति थई तेना संबंधमां थोडाक मुख्य अभिप्रायो अत्रे संक्षेपमां जणाववामां आवे छे.

(२)

दुःख शुं छे? तेनां मूळ कारणो शुं छे? अने ते शाथी मटी शके? ते संबंधी जिनो एटले वीतरागोए पोतानो जे मत दर्शाव्यो छे? ते अहीं संक्षेपमां कहीए छीए:

हवे, ते यथार्थ छे के केम? तेनुं अवलोकन करीए छीए:

जे उपायो दर्शाव्या ते सम्यक्‌दर्शन, सम्यक्‌ज्ञान, अने सम्यक्‌चारित्र, अथवा ते त्रणेनुं एक-नाम 'सम्यक्‌मोक्ष.'

सम्यक्‌दर्शन, सम्यक्‌ज्ञान, अने सम्यक्‌चारित्रमां सम्यक्‌दर्शननी मुख्यता घणे स्थळे ते वीतरागोए कही छे; जो के सम्यक्‌ज्ञानथी ज सम्यक्‌दर्शननुं पण ओळखाण थाय छे, तोपण सम्यक्‌दर्शननी प्राप्तिवगरनुं ज्ञान संसार एटले दुःखना हेतुरूपे होवाथी सम्यक्‌दर्शननुं मुख्यपणुं ग्रहण कर्युं छे.

जेम जेम सम्यक्‌दर्शन शुद्ध थतुं जाय छे, तेम तेम सम्यक्‌चारित्रप्रत्ये वीर्य उल्लसतुं जाय छे; अने क्रमे करीने सम्यक्‌चारित्रनी प्राप्ति थवानो वखत आवे छे, जेथी आत्मामां स्थिर स्वभाव सिद्ध थतो जाय छे, अने क्रमे करीने पूर्ण स्थिर स्वभाव प्रगटे छे; अने आत्मा निजपदमां लीन थइ सर्वकर्मकलंकथी रहित थवाथी एक शुद्धआत्मस्वभावरूप मोक्षमां परमअव्याबाध सुखना अनुभव-समुद्रमां स्थित थाय छे.

सम्यक्‌दर्शननी प्राप्तिथी जेम ज्ञान सम्यक्‌स्वभावने पामे छे (ए सम्यक्‌दर्शननो परम उपकार छे) तेम सम्यक्‌दर्शन क्रमे करी शुद्ध थतुं जई पूर्ण स्थिर स्वभाव सम्यक्‌चारित्रने प्राप्त थाय तेने अर्थे सम्यक्‌ज्ञानना बळनी तेने खरेखरी आवश्यकता छे. ते सम्यक्‌ज्ञानप्राप्तिनो उपाय वीतरागश्रुत अने ते श्रुततत्त्वोपदेष्टा महात्मा छे.

वीतरागश्रुतना परमरहस्यने प्राप्त थयेला असंग अने परमकरुणाशीळ महात्मानो योग प्राप्त थवो अतिशय कठण छे. महद्भाग्योदयना योगथी ज ते योग प्राप्त थाय छे एमां संशय नथी. कह्युं छे के,—

तहा रुवाणं समणाणं

ते श्रमणमहात्माओनां प्रवृत्तिलक्षणो परमपुरुषे आ प्रमाणे कह्यां छे:

अभ्यंतरदशानां चिन्ह ते महात्माओनां प्रवृत्तिलक्षणोथी निर्णीत करी शकाय छे. जो के प्रवृत्तिलक्षण करतां अभ्यंतरदशा विषेनो निश्चय अन्य पण नीकळे छे. कोई एक शुद्धवृत्तिमान मुमुक्षुने तेवी अभ्यंतरदशानी परीक्षा आवे छे.

एवा महात्माओना समागम अने विनयनी शी जरूर? गमे तेवो पुरुष होय पण सारी रीते शास्त्र वांची संभळावे तेवा पुरुषथी जीव कल्याणनो यथार्थ मार्ग शा माटे न पामी शके? एवी आशंकानुं समाधान करवामां आवे छे:

एवा महात्मापुरुषनो योग बहु बहु दुर्लभ छे. सारा देश काळमां पण एवा महात्मानो योग दुर्लभ छे; तो आवा दुःखमुख्य काळमां तेम होय एमां कंई कहेवुं रहेतुं नथी. कह्युं छे के,—

यद्यपि तेवा महात्मापुरुषनो क्वचित् योग बने छे, तोपण शुद्धवृत्तिमान् मुमुक्षु होय तो ते अपूर्व गुणने तेवा मुहूर्तमात्रना समागममां प्राप्तकरी शके छे. जेवा महात्मापुरुषनां वचनप्रतापथी मुहूर्त-

मात्रमां चक्रवर्तिओ पोतानुं राजपाट छोडी भयंकर वनमां तपश्चर्या करवाने चाली नीकळता हता, तेवा महात्मापुरुषना योगथी अपूर्व गुण केम प्राप्त न थाय?

सारा देश काळमां पण क्वचित् तेवा महात्मानो योग बनी आवे छे, केमके तेओ अप्रतिबद्ध विहारी होय छे. त्यारे एवा पुरुषोनो नित्य संग रही शके तेम शी रीते बनी शके के जेथी मुमुक्षु जीव सर्व दुःख क्षय करवानां अनन्य कारणोने पूर्णपणे उपासी शके? तेनो मार्ग आ प्रमाणे भगवान् जिने अवलोक्यो छे:

नित्य तेमना समागममां आज्ञाधीनपणे वर्त्तवुं जोईए, अने ते माटे बाह्याभ्यंतर परिग्रहादि त्याग ज योग्य छे.

जेओ सर्वथा तेवो त्याग करवाने समर्थ नथी तेमणे आ प्रमाणे देशत्यागपूर्वक करवुं योग्य छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे उपदेश्युं छे:

ते महात्मापुरुषना गुणातिशयपणाथी, सम्यक्आचरणथी, परमज्ञानथी, परमशांतिथी, परमनिवृत्तिथी मुमुक्षु जीवनी अशुभ वृत्तिओ परावर्त्तन थई शुभस्वभावने पामी स्वरूपप्रत्ये वळती जाय छे.

ते पुरुषनां वचनो आगमस्वरूप छे, तोपण वारंवार पोताथी वचनयोगनी प्रवृत्ति न थाय तेथी, तथा निरंतर समागमनो योग न बने तेथी, तथा ते वचननुं श्रवण तादृश्य स्मरणमां न रहे तेथी, तेम ज केटलाक भावोनुं स्वरूप जाणवामां परावर्त्तननी जरूर होय छे तेथी, अने अनुप्रेक्षानुं बळ वृद्धि पामवाने अर्थे वीतरागश्रुत–वीतराग शास्त्र–एक बळवान उपकारी साधन छे; जो के तेवा महात्मापुरुषद्वारा ज प्रथम तेनुं रहस्य जाणवुं जोईए, पछी विशुद्ध दृष्टि थये महात्माना समागमना अंतरायमां पण ते श्रुत बळवान उपकार करे छे, अथवा ज्यां केवळ तेवा

महात्माओनो योग बनी शकतो नथी, त्यां पण विशुद्ध दृष्टिवानने वीतरागश्रुत परमोपकारी छे, अने ते ज अर्थे थइने महत्पुरुषोए एक श्लोकथी मांडी द्वादशांगसुधीनी रचना करी छे.

ते द्वादशांगना मूळ उपदेष्टा सर्वज्ञ वीतराग छे; के जे स्वरूपनुं महात्मा पुरुषो निरंतर ध्यान करे छे; अने ते पदनी प्राप्तिमां ज सर्वस्व समायलुं छे एम प्रतीतिथी अनुभवे छे. सर्वज्ञवीतरागनां वचनने धारण करीने महत्आचार्योए द्वादशांगनी रचना करी हती, अने तदाश्रित आज्ञांकित महात्माओए बीजां अनेक निर्दोष शास्त्रोनी रचना करी छे. आ प्रमाणे द्वादशांगनां नामो छेः—

(१) आचारांग, (२) सूत्रकृतांग, (३) स्थानांग, (४) समवायांग, (५) भगवती, (६) ज्ञाताधर्म कथांग, (७) उपासक दशांग, (८) अंतकृत दशांग, (९) अनुत्तरौपपातिक, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाक अने (१२) दृष्टिवाद.

तेमां आ प्रमाणे निरूपण छेः—

काळदोषथी घणां स्थळो तेमांथी विसर्जन थई गयां, अने मात्र अल्प स्थळो रह्यां:

जे अल्प स्थळो रह्यां तेने एकादशांगने नामे श्वेताम्बरआचार्यो कहे छे. दिगम्बरो तेमां अनुमत नहीं थतां एम कहे छे के,—

विसंवाद के मताग्रहनी दृष्टिए तेमां बन्ने केवळ भिन्न भिन्न मार्गनी पेठे जोवामां आवे छे. दीर्घ दृष्टिए जोतां तेनां जूदां ज कारणो जोवामां आवे छे.

गमे तेम हो, पण आ प्रमाणे बन्ने बहु नजीकमां आवी जाय छे:

विवादनां घणां स्थळो तो अप्रयोजन जेवां छे; ते पण परोक्ष छे.

अपात्र श्रोताने द्रव्यानुयोगादि भाव उपदेशवाथी नास्तिकतादि भावो उत्पन्न थवानो वखत आवे छे, अथवा शुष्कज्ञानी थवानो वखत आवे छे.

सूत्र अने बीजां प्राचीन आचार्ये तदनुसार रचेलां घणां शास्त्रो विद्यमान छे. सुविहित पुरुषोए तो हितकारी मतिथी ज रच्यां छे. कोइ मतवादी, हठवादी अने शिथिलताना पोषक पुरुषोए रचेलां कोइ पुस्तको सूत्रथी अथवा जिनाचारथी मळतां न आवतां होय अने प्रयोजननी मर्यादाथी बाह्य होय, ते पुस्तकोना उदाहरणथी प्राचीन सुविहित आचार्योनां वचनोने उत्थापवानुं प्रयत्न भवभीरू महात्माओ करता नथी. पण तेथी उपकार थाय छे, एम जाणी तेनुं बहुमान करतां छतां यथायोग्य सदुपयोग करे छे.

दिगंबर अने श्वेतांबर एवा बे भेद जिनदर्शनमां मुख्य छे. मतदृष्टिथी तेमां मोटो अंतर जोवामां आवे छे. तत्त्वदृष्टिथी तेवो विशेष भेद जिनदर्शनमां मुख्यपणे परोक्ष छे; जे पत्यक्ष कार्यभूत थई शके तेवा छे तेमां तेवो भेद नथी; माटे बन्ने संप्रदायमां उत्पन्न थता गुणवान पुरुषो सम्यग्दृष्टिथी जुए छे; अने जेम तत्त्वप्रतीतिनो अंतराय ओछो थाय तेम प्रवर्त्ते छे.

जैनाभासथी प्रवर्त्तेलां मतमतांतरो बीजां घणां छे, तेनुं स्वरूप निरूपण करतां पण वृत्ति संकोचाय छे. जेमां मूळ प्रयोजननुं भान नथी, एटलुं ज नहीं पण मूळ प्रयोजनथी विरुद्ध एवी पद्धतीनुं अवलंबन वर्त्ते छे; तेने मुनिपणानुं स्वप्न पण क्यांथी? केमके मूळ प्रयोजनने विसारी क्लेशमां पड्या छे, अने जीवोने पोतानी पूज्यतादिने अर्थे परमार्थमार्गना अंतरायक छे.

ते, मुनिनुं लिंग पण धरावता नथी, केमके स्वकपोलरचनाथी तेमनी सर्व प्रवृत्ति छे. जिनागम अथवा आचार्यनी परंपरानुं नाम मात्र तेमनी पासे छे, वस्तुत्वे तो ते तेथी पराङ्मुख ज छे.

एक तुमडाजेवी, दोराजेवी अल्प वस्तुना ग्रहणत्यागना आग्रहथी जूदो मार्ग उपजावी काढी वर्त्ते छे, अने तीर्थनो भेद करे छे, एवा महामोहमूढ जीव लिंगाभासपणे पण आजे वीतरागना दर्शनने घेरी बेठा छे, एज असंयतीपूजा नामनुं आश्चर्य लागे छे.

महात्मा पुरुषोनी अल्प पण प्रवृत्ति स्व परने मोक्षमार्गसन्मुख करवानी छे. लिंगाभासी जीवो मोक्षमार्गथी पराङ्मुख करवामां पोतानुं बळ प्रवर्त्ततुं जाणी हर्षायमान थाय छे, अने ते सर्व कर्मप्रकृतिमां वधता अनुभाग अने स्थितिबंधनुं स्थानक छे एम हुं जाणुं छुं. (अपूर्ण.)

(५)

द्रव्यप्रकाश.

द्रव्य एटले वस्तु, तत्त्व, पदार्थ. आमां मुख्य त्रण अधिकार छे.

प्रथम अधिकारमां जीव अने अजीव द्रव्यना मुख्य प्रकार कह्या छे.

बीजा अधिकारमां जीव अने अजीवनो परस्परनो संबंध अने तेथी जीवने हिताहित शुं रह्युं छे ते समजावा माटे तेना विशेष पर्यायरूपे पापपुण्यादि बीजां सात तत्त्वोनुं निरूपण कर्युं छे. जे सात तत्त्वो जीव अने अजीव ए बे तत्त्वोमां शमाय छे.

त्रीजा अधिकारमां यथास्थित मोक्षमार्ग दर्शाव्यो छे, के जेने अर्थे थईने ज समस्त ज्ञानीपुरुषोनो उपदेश छे.

पदार्थनां विवेचन अने सिद्धांतपर जेनो पायो रचायो छे अने ते द्वारा जे मोक्षमार्ग प्रतिबोधे छे तेवां छ दर्शनो छेः–(१) बौद्ध, (२) न्याय, (३) सांख्य, (४) जैन, (५) मीमांसक, अने (६) वैशेषिक. वैशेषिक न्यायमां अंतर्भूत कर्युं होय तो नास्तिक विचार प्रतिपादन करतुं एवुं चार्वाक दर्शन छट्ठुं गणाय छे.

प्रश्नः–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, उत्तरमीमांसा अने पूर्वमीमांसा एम छ दर्शन वेद परिभाषामां गणवामां आव्यां छे, ते करतां उपर दर्शावेलां दर्शनो जुदी पद्धतीए गण्यां छे तेनुं शुं कारण एम प्रश्न थाय तो तेनुं समाधान ए छे के

समाधानः–वेद परिभाषामां दर्शावेलां दर्शनो वेदने मान्य राखे छे ते दृष्टिथी गण्यां छे; अने उपर जणावेल क्रमे तो विचारनी परिपाटीना भेदथी गण्यां छे, जेथी आ ज क्रम योग्य छे.

द्रव्य अने गुणनुं अनन्यत्व–अविभक्त्व एटले प्रदेशभेदरहितपणुं छे, क्षेत्रांतर नथी. द्रव्यना नाशथी गुणनो नाश अने गुणना नाशथी द्रव्यनो नाश थाय एवो ऐक्यभाव छे. द्रव्य अने गुणनो भेद कहिये छिये ते कथनीथी छे, वस्तुथी नथी. संस्थान, संख्याविशेष ज्ञान अने ज्ञानिने सर्वथा प्रकारे भेद होय तो बंने अचेतनत्व पामे एम सर्वज्ञ वीतरागनो सिद्धांत छे. ज्ञाननी साथे समवाय संबंधथी आत्मा ज्ञानी नथी. समवर्त्तित्व समवाय.

वर्ण, गंध, रस, स्पर्श परमाणु द्रव्यना विशेष छे. [अपूर्ण.]

(६)

अत्यंत सुप्रसिद्ध छे के प्राणीमात्रने दुःख प्रतिकूळ, अप्रिय अने सुख अनुकूळ तथा प्रिय छे. ते दुःखथी रहित थवा माटे अने सुखनी प्राप्ति माटे प्राणीमात्रनुं प्रयत्न छे.

प्राणीमात्रनुं एवुं प्रयत्न छतां पण तेओ दुःखनो अनुभव ज करतां दृष्टिगोचर थाय छे. क्वचित् कंइक सुखना अंश कोइक प्राणीने प्राप्त थया देखाय छे, तो पण दुःखनी बाहुल्यताथी करीने जोवामां आवे छे.

आशंकाः—प्राणिमात्रने दुःख अप्रिय होवा छतां, वळी ते मटाडवाने अर्थे तेनुं प्रयत्न छतां ते दुःख मटतुं नथी, तो पछी ते दुःख टळवानो कोई उपाय ज नहीं एम समजाय छे. केम के बधानुं प्रयत्न निष्फळ जाय ते वात निरूपाय ज होवी जोईए, एम अत्रे आशंका थाय छे. तेनुं समाधान आ प्रमाणे छे.

समाधानः—दुःखनुं स्वरूप यथार्थ न समजावाथी, ते थवानां मूळ कारणो शुं छे अने ते शाथी मटी शके ते यथार्थ न समजावाथी, दुःख मटाडवा संबंधीनुं तेमनुं प्रयत्न स्वरूपथी अयथार्थ होवाथी दुःख मटी शकतुं नथी.

दुःख अनुभववामां आवे छे, तोपण ते स्पष्ट ध्यानमां आववाने अर्थे थोडुंक तेनुं व्याख्यान करीए छैयेः—

प्राणीओ बे प्रकारना छे.

(१) एक त्रस एटले पोते भयादिनुं कारण देखी नाशीजतां, हालतां चालतां ए आदि शक्तिवाळां.

(२) बीजां स्थावर, एटले जे स्थळे देह धारण कर्यो छे, ते ज स्थळे स्थितिमान, अथवा भयादि कारण जाणी नाशी जवा वगेरेनी समजणशक्ति जेमां नथी ते.

अथवा एकेंद्रियथी मांडी पांच इंद्रिय सुधीनां प्राणीओ छे. एकेंद्रिय प्राणीओ स्थावर कहेवाय, अने बे इंद्रियवाळां प्राणीथी मांडीने पांच इंद्रियवाळां प्राणी सुधीनां त्रस कहेवाय. पांच उपरांत कोई पण प्राणीने इंद्रिय होती नथी.

एकेंद्रिय प्राणीना पांच भेद छे: पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति.

वनस्पतिनुं जीवत्व साधारण मनुष्योने पण कंईक अनुमानगोचर थाय छे.

पृथ्वी, पाणी, अग्नि अने वायुनुं जीवत्व, आगम प्रमाणथी, विशेष विचारबळथी कंईपण समजी शकाय छे, सर्वथा तो प्रकृष्टज्ञानगोचर छे.

अग्नि अने वायुना जीवो कंईक गतिमान जोवामां आवे छे. पण ते पोतानी समजणशक्ति पूर्वक होतुं नथी, जेथी तेने स्थावर कहेवामां आवे छे.

एकेंद्रिय जीवमां वनस्पतिमां जीवत्व सुप्रसिद्ध छे छतां तेनां प्रमाणो आ ग्रंथमां अनुक्रमे आवशे. पृथ्वी, पाणी, अग्नि अने वायुनुं जीवत्व आ प्रमाणे सिद्ध कर्युं छे:— [अपूर्ण.]

(७)

जीव लक्षण.

- चैतन्य जेनुं मुख्य लक्षण छे,
- देह प्रमाण छे,
- असंख्यात प्रदेश प्रमाण छे, ते असंख्यात प्रदेशता लोकपरिमित छे.
- परिणामी छे,
- अमूर्त्त छे,
- अनंत अगुरुलघु परिणतद्रव्य छे,
- स्वाभाविक द्रव्य छे,
- कर्त्ता छे,
- भोक्ता छे,
- अनादि संसारी छे,
- भव्यत्व लब्धि परिपाकादिथी मोक्षसाधनमां प्रवर्त्ते छे,
- मोक्ष थाय छे,
- मोक्षमां स्वपरिणामी छे.

संसारी जीव. संसार अवस्थामां मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय अने योग उत्तरोत्तर बंधनां स्थानक छे.

सिद्धात्मा. सिद्धावस्थामां योगनो पण अभाव छे.
मात्र चैतन्यस्वरूप आत्मद्रव्य सिद्धपद छे.

विभाव परिणाम **भावकर्म** छे.

पुद्गलसंबंध **द्रव्यकर्म** छे. [अपूर्ण.]

(८)

आस्रव.–ज्ञानावरणीयादि कर्मना पुद्गलयोगथी ग्रहण थाय छे ते **द्रव्यास्रव** जाणवो. जिनभगवाने ते अनेक भेदथी कह्यो छे.

बंध.–जीव जे परिणामथी कर्मनो बंध करे छे ते **भावबंध.**

कर्मप्रदेश, परमाणुओ अने जीवनो अन्योन्यप्रवेशरूपे संबंध थवो ते **द्रव्यबंध.**

प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश एम चार प्रकारनो बंध छे. प्रकृति अने प्रदेशबंध योगथी थाय छे. स्थिति तथा अनुभागबंध कषायथी थाय छे.

संवर.–आस्रवने रोकी शके एवो चैतन्यस्वभाव ते **भावसंवर** अने तेथी द्रव्यास्रवने रोके ते **द्रव्यसंवर** बीजो छे. व्रत, समिति, गुप्ति, धर्म, अनुप्रेक्षा अने परिषहजय एम चारित्रना घणा प्रकार ते भावसंवरना विशेष जाणवा.

निर्जरा.–तपश्चर्याए करीने जे काळे कर्मना पुद्गलोए रस भोगवी लीधो ते **भावनिर्जरा.** ते पुद्गलपरमाणुओनुं आत्मप्रदेशथी खरी पडवुं ते **द्रव्यनिर्जरा.**

मोक्ष.–सर्व कर्मनो क्षयथवारूप आत्मस्वभाव ते **भावमोक्ष.** कर्मवर्गणाथी आत्मद्रव्यनुं जूदुं थई जवुं ते **द्रव्यमोक्ष.**

पुण्य अने **पाप.**–शुभ अने अशुभ भावने लीधे पुण्य अने पाप जीवने होय छे. शाता, शुभायुष्, शुभनाम अने उच्चगोत्रनो हेतु **पुण्य** छे. **पाप**थी तेथी विपरीत थाय छे.

सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र मोक्षनां कारण छे. व्यवहार नयथी ते त्रणे छे. निश्चयथी आत्मा ए त्रणेमय छे.

आत्माने छोडीने ए त्रणे रत्न बीजां कोई पण द्रव्यमां वर्त्ततां नथी, तेटला माटे आत्मा ए त्रणेमय छे; अने तेथी मोक्षकारण पण आत्मा ज छे.

जीवादि तत्त्वोप्रत्ये आस्थारूप आत्मस्वभाव ते **सम्यक्दर्शन.**

माठा आग्रहथी रहित ते **सम्यक्ज्ञान.** संशय, विपर्यय अने भ्रांतिथी रहित आत्मस्वरूप अने परस्वरूपने यथार्थपणे ग्रहण करी शके ते **सम्यक्ज्ञान.** साकारोपयोगरूप तेना घणा भेद छे.

भावोनुं सामान्यस्वरूप जे उपयोग ग्रहण करी शके ते **दर्शन.** दर्शन शब्द श्रद्धाना अर्थमां पण वपराय छे; एम आगममां कह्युं छे.

छद्मस्थने प्रथम दर्शन अने पछी ज्ञान थाय छे. केवलीभगवान्ने बन्ने साथे थाय छे.

अशुभभावथी निवृत्ति अने शुभभावमां प्रवृत्ति ते **चारित्र.** व्यवहारनयथी ते चारित्रव्रत समिति-गुप्तिरूपे श्री वीतरागोए कह्युं छे.

संसारना मूळ हेतुओनो विशेष नाश करवाने अर्थे बाह्य अने अंतरंग क्रियानो ज्ञानीपुरुषने निरोध थाय तेनुं नाम **परम सम्यक्चारित्र** वीतरागोए कह्युं छे.

मोक्षना हेतुरूप ए बन्ने चारित्र ध्यानथी अवश्य मुनिओ पामे छे, तेटला माटे प्रयत्नवान चित्तथी ध्याननो उत्तम अभ्यास करो.

जो तमे स्थिरता इच्छता हो तो प्रिय अथवा अप्रिय वस्तुमां मोह न करो, राग न करो, द्वेष न करो. अनेक प्रकारना ध्याननी प्राप्तिने अर्थे पांत्रिश, सोल, छ, पांच, चार, बे, अने एक एम परमेष्ठिपदना वाचक छे तेनुं जपपूर्वक ध्यान करो. विशेष स्वरूप श्री गुरुना उपदेशथी जाणवुं योग्य छे. [अपूर्ण.]

(९)

ॐ नमः

सर्व दुःखनो आत्यंतिक अभाव अने परम अव्याबाध सुखनी प्राप्ति ए ज मोक्ष छे. अने ते ज परमहित छे. वीतराग सन्मार्ग तेनो सदुपाय छे.

ते सन्मार्गनो आ प्रमाणे संक्षेप छे.

सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, अने सम्यक्चारित्रनी एकत्रता ते मोक्षमार्ग छे.

सर्वज्ञना ज्ञानमां भासमान तत्त्वोनी सम्यक्प्रतीति थवी ते **सम्यक्दर्शन** छे.

ते तत्त्वनो बोध थवो ते **सम्यक्ज्ञान** छे.

उपादेय तत्त्वनो अभ्यास थवो ते **सम्यक्चारित्र** छे.

शुद्धआत्मपदस्वरूप एवां वीतरागपदमां स्थिति थवी ते ए त्रणनी एकत्रता छे.

सर्वज्ञदेव, निर्ग्रंथगुरु अने सर्वज्ञोपदिष्ट धर्मनी प्रतीतिथी तत्त्व प्रतीति प्राप्त थाय छे.

सर्व ज्ञानावरण, दर्शनावरण, सर्व मोह अने सर्व वीर्यादि अंतरायनो क्षय थवाथी आत्मानो सर्वज्ञवीतरागस्वभाव प्रकटे छे. निर्ग्रंथपदना अभ्यासनो उत्तरोत्तर क्रम तेनो मार्ग छे. तेनुं रहस्य सर्वज्ञोपदिष्ट धर्म छे.

(१०)

सर्वज्ञे कहेलुं उपदेशथी आत्मानुं स्वरूप जाणीने सुप्रतीत करीने तेनुं ध्यान करो.

जेम जेम ध्यानविशुद्धि तेम तेम ज्ञानावरणीयनो क्षय थशे.

पोतानी कल्पनाथी ते ध्यान सिद्ध थतुं नथी.

ज्ञानमय आत्मा जेमने परमोत्कृष्ट भावे प्राप्त थयो, अने जेमणे परद्रव्यमात्र त्याग कर्युं छे, ते देवने नमन हो! नमन हो!

बार प्रकारना निदानरहित तपथी कर्मनी निर्जरा वैराग्यभावनाभावित, अहंभावरहित एवा ज्ञानीने थाय छे.

ते निर्जरा पण बे प्रकारनी जाणवीः-(१) स्वकालप्राप्त, अने (२) तपथी. पहेली चारे गतिमां थाय छे, बीजी व्रतधारीने ज होय छे.

जेम जेम उपशमनी वृद्धि थाय तेम तेम तप करवाथी कर्मनी घणी निर्जरा थाय.

ते निर्जरानो क्रम कहे छे. मिथ्यादर्शनमां वर्त्ततो पण थोडा वखतमां उपशमसम्यक्‌दर्शन पामवानो छे एवा जीव करतां असंयत सम्यक्‌दृष्टिने असंख्यातगुण निर्जरा, तेथी देशविरति, तेथी सर्वविरति ज्ञानीने, तेथी [अपूर्ण.]

(११)

ॐ

हे जीव! आटलो बधो प्रमाद शो?

शुद्ध आत्मपदनी प्राप्तिने अर्थे वीतराग सन्मार्गनी उपासना कर्त्तव्य छे.

सर्वज्ञदेव.
निर्ग्रंथ गुरु. } शुद्ध आत्मदृष्टि थवानां अवलंबन छे.
दया मुख्य धर्म.

सर्वज्ञे अनुभवेलो एवो शुद्धआत्मप्राप्तिनो उपाय श्री गुरुवडे जाणीने तेनुं रहस्य ध्यानमां लईने आत्मप्राप्ति करो.

यथाजाति लिंग सर्व विरतिधर्म. द्वादशविध देशविरतिधर्म.

द्रव्यानुयोग सुसिद्ध—स्वरूपदृष्टि थतां. चरणानुयोग सुसिद्ध—पद्धतिविवाद शांत करतां.

करणानुयोग सुसिद्ध—सुप्रतीतदृष्टि थतां. धर्मकथानुयोग सुसिद्ध—बालबोधहेतु समजावतां.

(१२)

(१)	(२)	(१)	(२)
मोक्षमार्गनुं अस्तित्व.	प्रमाण.	निर्जरा.	आगम.
आप्त.	नय.	बंध.	संयम.
गुरु.	अनेकांत.	मोक्ष.	वर्त्तमानकाळ.
धर्म.	लोक.	ज्ञान.	गुणस्थानक.
धर्मनी योग्यता.	अलोक.	दर्शन.	द्रव्यानुयोग.
कर्म.	अहिंसा.	चारित्र.	करणानुयोग.
जीव.	सत्य.	तप.	चरणानुयोग.
अजीव.	असत्य.	द्रव्य.	धर्मकथानुयोग.
पुण्य.	ब्रह्मचर्य.	गुण.	मुनित्व.
पाप.	अपरिग्रह.	पर्याय.	गृहधर्म.
आश्रव.	आज्ञा.	संसार.	परिषह.
संवर.	व्यवहार.	एकेंद्रियनुं अस्तित्व.	उपसर्ग.

६९५.

ॐ नमः

मूळ द्रव्य शाश्वत.

मूळ द्रव्यः—जीव अजीव.

पर्याय अशाश्वत.

अनादि नित्य पर्यायः—मेरू आदि.

६९६.

नमो जिणाणं जीदभवाणं

जिनतत्त्वसंक्षेप.

अनंत अवकाश छे.
तेमां जड चेतनात्मक विश्व रह्युं छे.
विश्व मर्यादा बे अमूर्त द्रव्यथी छे, जेने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एवी संज्ञा छे.
जीव अने परमाणु पुद्गल ए बे द्रव्य सक्रिय छे.
सर्व द्रव्य द्रव्यत्वे शाश्वत छे.
अनंत जीव छे.
अनंत अनंत परमाणु पुद्गल छे.
धर्मास्तिकाय एक छे.
अधर्मास्तिकाय एक छे.
काळ द्रव्य छे.
विश्व प्रमाण क्षेत्रावगाह करी शके एवो एकेक जीव छे.

६९७.

(१)

ॐ नमः

सर्व जीव सुखने इच्छे छे.
दुःख सर्वने अप्रिय छे.
दुःखथी मुक्त थवां सर्व जीव इच्छे छे.
वास्तविक तेनुं स्वरूप न समजावाथी ते दुःख मटतुं नथी.
ते दुःखना आत्यंतिक अभावनुं नाम मोक्ष कहीए छीए.
अत्यंत वीतराग थयाविना आत्यंतिक मोक्ष होय नहीं.
सम्यग्ज्ञानविना वीतराग थई शकाय नहीं.
सम्यग्दर्शनविना ज्ञान असम्यक् कहेवाय छे.
वस्तुनी जे स्वभावे स्थिति छे ते स्वभावे ते वस्तुनी स्थिति समजावी तेने सम्यग्ज्ञान कहीए छीए.

सम्यग्ज्ञानदर्शनथी प्रतीत थयेला आत्मभावे वर्त्तवुं ते चारित्र छे.
ए त्रणेनी एकताथी मोक्ष थाय.
जीव स्वाभाविक छे. परमाणु स्वाभाविक छे.
जीव अनंत छे. परमाणु अनंत छे.
जीव अने पुद्गलनो संयोग अनादि छे.
ज्यांसुधी जीवने पुद्गल संबंध छे त्यां सुधी सकर्म जीव कहेवाय.
भावकर्मनो कर्त्ता जीव छे.
भावकर्मनुं बीजुं नाम विभाव कहेवाय छे.
भावकर्मना हेतुथी जीव पुद्गल ग्रहे छे.
तेथी तैजसादि शरीर अने औदारिकादि शरीरनो योग थाय छे.
भावकर्मथी विमुख थाय तो निजभाव परिणामी थाय.
सम्यग्दर्शनविना वास्तविकपणे जीव भावकर्मथी विमुख न थई शके.
सम्यग्दर्शन थवानो मुख्य हेतु जिनवचनथी तत्त्वार्थप्रतीति थई ते छे.

(२)

ॐ नमः

विश्व अनादि छे.
आकाश सर्वव्यापक छे.
तेमां लोक रह्यो छे.
जड चेतनात्मक संपूर्ण भरपूर लोक छे.
धर्म, अधर्म, आकाश, काळ अने पुद्गळ ए जड द्रव्य छे.
जीव द्रव्य चेतन छे.
धर्म, अधर्म, आकाश, काळ ए चार अमूर्त्त द्रव्य छे.
वस्तुताए काळ उपचारिक द्रव्य छे.
धर्म, अधर्म, आकाश एकेक द्रव्य छे.
काळ, पुद्गळ अने जीव अनंत द्रव्य छे.
द्रव्य गुणपर्यायात्मक छे.

६९८.

एकांत आत्मवृत्ति.
एकांत आत्मा.
केवळ एक आत्मा.
केवळ एक आत्मा ज.
केवळ मात्र आत्मा.

केवळ मात्र आत्मा ज.

आत्मा ज.

शुद्धात्मा ज.

सहजात्मा ज.

निर्विकल्प, शव्दातीत सहज स्वरूप आत्मा ज.

६९९.

हुं असंग शुद्धचेतन छुं. वचनातीत निर्विकल्प एकांत शुद्धअनुभव स्वरूप छुं.
हुं परम शुद्ध, अखंड चिद् धातुं छुं
अचिद् धातुना संयोग रसनो आ आभास तो जुओ!
आश्चर्यवत्, आश्चर्यरूप, घटना छे.
कंई पण अन्य विकल्पनो अवकाश नथी.
स्थिति पण एम ज छे.

७००.

ॐ सर्वज्ञाय नमः. नमः सद्गुरवे.

पंचास्तिकाय.

१. सो इंद्रोए वंदनिक, त्रण लोकने कल्याणकारी, मधुर अने निर्मळ जेनां वाक्य छे, अनंत जेना गुणो छे, जेमणे संसारनो पराजय कर्यो छे एवा भगवान् सर्वज्ञ वीतरागने नमस्कार.

२. सर्वज्ञ महामुनिना मुखथी उत्पन्न थयेलुं अमृत (आ शास्त्र). चार गतिथी जीवने मुक्त करी निर्वाण प्राप्त करावनार एवां आगमने नमन करीने, कहुं छुं ते श्रवण करो.

३. पांच अस्तिकायना समूहरूप अर्थसमयने सर्वज्ञ वीतरागदेवे **लोक** कह्यो छे. तेथी उपरांत मात्र आकाशरूप अनंत एवो **अलोक** छे.

४. **'जीव'**, **'पुद्गलसमूह'**, **'धर्म'**, **'अधर्म'**, तेम ज **'आकाश'**, ए पदार्थो पोताना अस्तित्वमां नियमथी रह्या छे, पोतानी सत्ताथी अभिन्न छे, अने अनेकप्रदेशात्मक छे.

५. अनेक गुण अने पर्यायसहित जेनो अस्तित्वस्वभाव छे ते **'अस्तिकाय'**, तेनाथी त्रैलोक्य उत्पन्न थाय छे.

६. ते अस्तिकाय त्रणे काळे भावपणे परिणामी छे, अने परावर्त्तन जेनुं लक्षण छे एवा काळसहित छए द्रव्य संज्ञाने पामे छे.

७. ए द्रव्यो एक बीजामां प्रवेश करे छे, एकमेकने अवकाश आपे छे, एकमेक मळी जाय छे; अने जूदां पडे छे; पण पोतपोताना स्वभावनो त्याग करतां नथी.

८. सत्तास्वरूपे सर्व पदार्थ एकत्ववाळा छे. ते सत्ता अनंत प्रकारना स्वभाववाळी छे; उत्पाद-व्ययध्रुवत्ववाळी सामान्य विशेषात्मक छे.

९. द्रव्यनुं लक्षण सत् छे, जे उत्पादव्ययध्रुवतासहित छे, गुण पर्यायना आश्रयरूप छे, एम सर्वज्ञदेव कहे छे.

१०. द्रव्यनी उत्पत्ति अने विनाश थतो नथी; तेनो 'अस्ति' स्वभाव ज छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवत्व पर्यायने लईने छे.

११. पोताना सद्भाव पर्यायने द्रवे छे, ते ते भावे परिणमे छे ते माटे द्रव्य कहीए छीए, जे पोतानी सत्ताथी अनन्य छे.

१२. पर्यायथी रहित द्रव्य न होय, द्रव्यविना पर्याय न होय, बन्ने अनन्यभावथी छे एम महामुनिओ कहेछे.

१३. द्रव्यविना गुण न होय, अने गुणविना द्रव्य न होय; बन्नेनो (द्रव्य अने गुणनो) अभिन्न भाव तेथी छे.

१४. 'स्यात् अस्ति,' 'स्यात् नास्ति,' 'स्यात् अस्ति नास्ति.' 'स्यात् अवक्तव्यं,' 'स्यात् अस्ति अवक्तव्यं,' 'स्यात् नास्ति अवक्तव्यं,' 'स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्यं,' एम विविक्षाने लईने द्रव्यना सात भंग थाय छे.

१५. भावनो नाश थतो नथी, अने अभावनी उत्पत्ति थती नथी. उत्पाद, व्यय गुण पर्यायना स्वभावथी थाय छे.

१६. जीवआदि पदार्थो छे. जीवनो गुण चैतन्य–उपयोग छे. देव, मनुष्य, नारक, तिर्यंचादि तेना अनेक पर्यायो छे.

१७. मनुष्यपर्याय नाश पामेलो एवो जीव ते देव अथवा बीजे स्थळे उत्पन्न थाय छे. बन्ने स्थळे जीवभाव ध्रुव छे. ते नाश पामीने कंई बीजो थतो नथी.

१८. जे जीव जन्म्यो हतो, ते ज जीव नाश पाम्यो. वस्तुत्वे तो ते जीव उत्पन्न थयो नथी, अने नाश पण थयो नथी. उत्पन्न अने नाश देवत्व, मनुष्यत्वनो थाय छे.

१९. एम सत्नो विनाश, अने असत् जीवनी उत्पत्ति छे. जीवने देवत्व, मनुष्यत्वादि पर्याय गतिनामकर्मथी होय छे.

२०. ज्ञानावरणीय आदि कर्मभावो जीवे सुदृढ(अवगाढ)पणे बांध्या छे; तेनो अभाव करवाथी पूर्वे नहीं थयेलो एवो ते सिद्धभगवान् थाय.

२१. एम भाव, अभाव, भावाभाव अने अभावभावथी गुणपर्यायसहित जीव संसारमां परिभ्रमण करे छे.

२२. जीव, पुद्गलसमूह, अने आकाश तेम ज बीजा अस्तिकाय कोईना करेला नथी, स्वरूपथी ज अस्तित्ववाळा छे; अने लोकना कारणभूत छे.

२३. सद्भाव स्वभाववाळां जीव अने पुद्गलना परावर्तनपणाथी ओळखातो एवो निश्चयकाळ कह्यो छे.

२४. ते काळ पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध अने आठ स्पर्शथी रहित छे, अगुरुलघु छे, अमूर्त्त छे, अने वर्त्तनालक्षणवाळो छे.

२५. समय, निमेष, काष्ठा, कला, नाली, मुहूर्त्त, दिवस, रात्रि, मास, ऋतु अने संवत्सरादि ते व्यवहारकाळ छे.

२६. काळनां कोई पण परिमाण (माप) विना बहु काळ, थोडो काळ एम कही शकाय नहीं. तेनी मर्यादा पुद्गलद्रव्यविना थती नथी, तेथी काळने पुद्गलद्रव्यथी उत्पन्न थवापणुं कहीए छीए.

२७. जीवत्ववाळो, जाणनार, उपयोगवाळो, प्रभु, कर्त्ता, भोक्ता, देहप्रमाण, वस्तुताए अमूर्त्त अने कर्मावस्थामां मूर्त्त एवो जीव छे.

२८. कर्ममलथी सर्व प्रकारे मुक्त थवाथी ऊर्ध्व लोकांतने प्राप्त थई ते सर्वज्ञ सर्वदर्शी इंद्रियथी पर एवुं अनंतसुख पामे छे.

२९. पोताना स्वाभाविक भावने लीधे आत्मा सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थाय छे, अने पोतानां कर्मथी मुक्त थवाथी अनंतसुख पामे छे.

३०. बळ, इंद्रिय, आयुष् अने उच्छ्वास ए चार प्राणवडे जे भूतकाळे जीवतो हतो, वर्त्तमानकाळे जीवे छे, अने भविष्यकाळे जीवशे ते 'जीव.'

३१. अनंत अगुरुलघु गुणथी निरंतर परिणमेला अनंत जीवो छे. असंख्यात प्रदेशप्रमाण छे. कोईक जीवो लोकप्रमाण अवगाहनाने पाम्या छे.

३२. कोईक जीवो ते अवगाहनाने पाम्या नथी. मिथ्यादर्शन, कषाय अने योगसहित अनंत एवा संसारी जीवो छे. तेथी रहित एवा अनंत सिद्ध छे.

३३. जेम पद्मराग नामनुं रत्न दूधमां नांख्युं होय तो ते दूधना परिमाणप्रमाणे प्रभासे छे, तेम देहने विषे स्थित एवो आत्मा ते मात्र देहप्रमाण प्रकाशक–व्यापक छे.

३४. एक कायामां सर्व अवस्थामां जेम तेनो ते ज जीव छे, तेम सर्वत्र संसारअवस्थामां पण तेनो ते ज जीव छे. अध्यवसायविशेषथी कर्मरूपी रजोमलथी ते जीव मलीन थाय छे.

३५. जेने प्राणधारणपणुं नथी, तेनो जेने सर्वथा अभाव थयो छे, ते देहथी भिन्न अने वचनथी अगोचर जेमनुं स्वरूप छे एवा सिद्ध छे.

३६. वस्तुदृष्टिथी जोईए तो सिद्धपद उत्पन्न थतुं नथी, केमके ते कोई बीजा पदार्थथी उत्पन्न थतुं कार्य नथी, तेम ते कोई प्रत्ये कारणरूप पण नथी, केमके अन्य संबंधे तेनी प्रवृत्ति नथी.

३७. शाश्वत, अशाश्वत, भव्य, अभव्य, शून्य, अशून्य, विज्ञान अने अविज्ञान ए भाव जो मोक्षमां जीवनुं अस्तित्व न होय तो कोने होय?

३८. कोईएक जीवो कर्मनुं फळ वेदे छे, कोईएक जीवो कर्मबंधकर्तृत्व वेदे छे; अने कोईएक जीवो मात्र शुद्ध ज्ञानस्वभाव वेदे छे; एम वेदकभावथी जीवराशिना त्रण भेद छे.

३९. स्थावरकायना जीवो पोतपोतानां करेलां कर्मोनुं फळ वेदे छे. त्रसजीवो कर्मबंधचेतना वेदे छे, अने प्राणथी रहित एवा अतींद्रिय जीवो शुद्धज्ञानचेतना वेदे छे.

४०. उपयोग ज्ञान अने दर्शन एम बे प्रकारनो छे. जीवने सर्वकाळ ते अनन्यभूतपणे जाणवो.

४१. मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव अने केवळ एम ज्ञानना पांच भेद छे. कुमति, कुश्रुत, अने विभंग एम अज्ञानना त्रण भेद छे. ए बधा ज्ञानोपयोगना भेद छे.

४२. चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन अने अविनाशी अनंत एवुं केवळदर्शन एम दर्शनोपयोगना चार भेद छे.

४३. आत्माने ज्ञानगुणनो संबंध छे, अने तेथी आत्मा ज्ञानी छे एम नथी; परमार्थथी बन्नेनुं अभिन्नपणुं ज छे.

४४. जो द्रव्य जूदुं होय अने गुण पण जूदा होय तो एक द्रव्यना अनंत द्रव्य थई जाय; अथवा द्रव्यनो अभाव थाय.

४५. द्रव्य अने गुण अनन्यपणे छे; बन्नेमां प्रदेशभेद नथी. द्रव्यना नाशथी गुणनो नाश थाय, अने गुणना नाशथी द्रव्यनो नाश थाय एवुं एकपणुं छे

४६. व्यपदेश (कथन), संस्थान, संख्या अने विषय ए चार प्रकारनी विविक्षाथी द्रव्य गुणना घणा भेद थई शके; पण परमार्थनयथी ए चारेनो अभेद छे.

४७. पुरुषनी पासे धन होय तेनुं धनवंत एवुं नाम कहेवाय; तेम आत्मानी पासे ज्ञान छे तेथी ज्ञानवंत एवुं नाम कहेवाय छे. एम भेद अभेदनुं स्वरूप छे. जे स्वरूप बन्ने प्रकारथी तत्त्वज्ञो जाणे छे.

४८. आत्मा अने ज्ञाननो सर्वथा भेद होय तो बन्ने अचेतन थाय, एम वीतराग सर्वज्ञनो सिद्धांत छे.

४९. ज्ञाननो संबंध थवाथी आत्मा ज्ञानी थाय छे एवो संबंध मानवाथी आत्मा अने अज्ञान (जडत्व) नो ऐक्यभाव थवानो प्रसंग आवे.

५०. समवर्तित्व समवाय अपृथक्भूत अने अपृथक्सिद्ध छे; माटे द्रव्य अने गुणनो संबंध वीतरागोए अपृथक्सिद्ध कह्यो छे.

५१. वर्ण, रस, गंध अने स्पर्श ए चार विशेष परमाणुद्रव्यथी अनन्यपणे छे. व्यवहारथी ते पुद्गलद्रव्यथी भेदपणे कहेवाय छे.

५२. तेम ज दर्शन अने ज्ञान पण जीवथी अनन्यभूत छे. व्यवहारथी तेनो आत्माथी भेद कहेवाय छे.

५३. आत्मा (वस्तुपणे) अनादि अनंत छे, अने संताननी अपेक्षाए सादिसांत पण छे, तेम सादिअनंत पण छे. पांच भावना प्राधान्यपणाथी ते ते भंग छे. सद्भावथी जीवद्रव्य अनंत छे.

५४. एम सत्नो विनाश अने असत् जीवनो उत्पाद, परस्पर विरुद्ध छतां जेम अविरोधपणे सिद्ध छे तेम सर्वज्ञ वीतरागदेवे कह्यो छे.

५५. नारक, तिर्यंच्, मनुष्य अने देव ए नामकर्मनी प्रकृति सत्नो नाश अने असत्भावनो उत्पाद करे छे.

५६. उदय, उपशम, क्षायक, क्षयोपशम अने पारिणामिक भावथी जीवना गुणोनुं बहु विस्तीर्णपणुं छे.

५७. द्रव्यकर्मनुं निमित्त पामीने उदयादिक भावे जीव परिणमे छे; भावकर्मनुं निमित्त पामीने द्रव्यकर्म परिणमे छे. कोई कोईना भावना कर्त्ता नथी; तेम कर्त्ताविना थयां नथी.

५८. सर्व पोतपोतानो स्वभाव करे छे; तेम आत्मा पण पोताना ज भावनो कर्त्ता छे; पुद्गल-कर्मनो आत्मा कर्त्ता नथी; ए वीतरागनां वाक्य समजवांयोग्य छे.

५९. कर्म जो कर्म करे, अने आत्मा आत्मत्व ज करे, तो पछी तेनुं फळ कोण भोगवे? अने ते फळ कर्म कोने आपे?

६०. कर्म पोताना स्वभावानुसार यथार्थ परिणमे छे. जीव पोताना स्वभावानुसार तेम भाव-कर्मने करे छे.

६१. संपूर्ण लोक पूर्णअवगाढपणे पुद्गलसमूहथी भर्यो छे. सूक्ष्म अने बादर एवा विविध-प्रकारना अनंत स्कंधोथी.

६२. आत्मा ज्यारे भावकर्मरूप पोतानो स्वभाव करे छे, त्यारे त्यां रहेलां पुद्गलपरमाणुओ पोताना स्वभावने लीधे कर्मभावने प्राप्त थाय छे; अने एक बीजां एकक्षेत्रावगाहपणे अवगाढता पामे छे.

६३. कोई कर्त्ता नहीं छतां पुद्गलद्रव्यथी जेम घणा स्कंधोनी उत्पत्ति थाय छे, तेम कर्मपणे पण स्वाभाविकपणे पुद्गलद्रव्य परिणमे छे एम जाणवुं.

६४. जीव अने पुद्गलसमूह अरस्परस मजबुत अवग्राहित छे. यथाकाळे उदय थये तेथी जीव सुखदुःखरूप फळ वेदे छे.

६५. तेथी कर्मभावनो कर्त्ता जीव छे अने भोक्ता पण जीव छे. वेदक भावने लीधे कर्मफळ ते अनुभवे छे.

६६. एम कर्त्ता अने भोक्ता आत्मा पोताना भावथी थाय छे. मोहथी सारी रीते आच्छादित एवो ते जीव संसारमां परिभ्रमण करे छे.

६७. (मिथ्यात्व) मोहनो उपशम थवाथी अथवा क्षय थवाथी वीतरागना कहेला मार्गने प्राप्त थयेलो एवो धीर , शुद्ध ज्ञानाचारवंत निर्वाणपुर प्रत्ये जाय छे.

६८. ६९. एक प्रकारथी, बे प्रकारथी, त्रण प्रकारथी, चार गतिना प्रकारथी, पांच गुणोनी मुख्यताथी, छकायना प्रकारथी, सात भंगना उपयोगपणाथी, आठ गुण अथवा आठ कर्मरूप भेदथी, नव तत्त्वथी, अने दशस्थानकथी जीवनुं निरूपण छे.

७०. प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध अने प्रदेशबंधथी सर्वथा मुक्त थवाथी जीव ऊर्ध्वगमन करे छे. संसार अथवा कर्मावस्थामां विदिशाविना बीजी दिशाओमां जीव गमन करे छे.

७१. स्कंध, स्कंधदेश, स्कंधप्रदेश अने परमाणु एम पुद्गल अस्तिकाय चार प्रकारे जाणवो.

७२. सकळ समस्त ते स्कंध, तेनुं अर्ध ते देश, तेनुं अर्ध ते प्रदेश, अने अविभागी ते परमाणुं.

७३. बादर अने सूक्ष्म परिणाम पामवायोग्य स्कंधमां पूरण (पूरावानो), गलन (गळवानो, छूटां पडी जवानो) स्वभाव जेनो छे तेथी परमाणु पुद्गलना नामथी ओळखाय छे. तेना छ भेद छे, जेनाथी त्रैलोक्य उत्पन्न थाय छे.

७४. सर्व स्कंधनुं छेलामां छेलुं कारण परमाणु छे. ते सत्, असत्, एक, अविभागी अने मूर्त्त होय छे.

७५. विविक्षाए करीने मूर्त्त, चार धातुनुं कारण जे छे ते परमाणु जाणवायोग्य छे; ते परिणामी छे, पोते अशब्द छे, पण शब्दनुं कारण छे.

७६. स्कंधथी शब्द उत्पन्न थाय छे. अनंत परमाणुओना मेलाप, (तेनो संघात) समूह तेनुं नाम स्कंध. ते स्कंधो परस्पर स्पर्शावाथी (अथडावाथी) निश्चय करीने शब्द उत्पन्न थाय छे.

७७. ते परमाणु नित्य छे, पोताना रूपादि गुणोने अवकाश (आधार) आपे छे, पोते एक प्रदेशी होवाथी एक प्रदेशथी उपरांत अवकाशने प्राप्त थतो नथी, बीजां द्रव्यने अवकाश (आकाशनी पेठे) आपतो नथी, स्कंधना भेदनुं कारण छे; स्कंधना खंडनुं कारण छे, स्कंधनो कर्त्ता छे, काळना परिमाण (माप), संख्या (गणना) नो हेतु छे.

७८. एक रस, एक वर्ण, एक गंध अने बे स्पर्श, शब्दनी उत्पत्तिनुं कारण, अने एक-प्रदेशात्मकपणे अशब्द, स्कंधपरिणमित छतां व्यतिरिक्त ते परमाणु जाणवो.

७९. इंद्रियोए करी उपभोग्य, तेम ज काया, मन अने कर्म आदि जे जे अनंत एवा मूर्त्त पदार्थो छे ते सर्व पुद्गलद्रव्य जाणवुं.

८०. धर्मास्तिकाय अरस, अवर्ण, अगंध, अशब्द अने अस्पर्श छे. सकळलोकप्रमाण छे. अखंडित, विस्तीर्ण अने असंख्यातप्रदेशात्मक द्रव्य छे.

८१. अनंत, अगुरुलघुगुणपणे ते निरंतर परिणमित छे. गतिक्रियायुक्तने कारणभूत छे; पोते अकार्य छे; अर्थात् कोईथी उत्पन्न थयेलुं ते द्रव्य नथी.

८२. जेम मत्स्यनी गतिने जळ उपकार करे छे, तेम जीव अने पुद्गल द्रव्यनी गतिने उपकार करे छे ते 'धर्मास्तिकाय' जाणवो.

८३. जेम धर्मास्तिकाय द्रव्य छे तेम अधर्मास्तिकाय पण छे एम जाणो. स्थितिक्रियायुक्त जीव, पुद्गलने ते पृथ्वीनी पेठे कारणभूत छे.

८४. धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायने लीधे लोक अलोकनो विभाग थाय छे. ए धर्म अने अधर्म द्रव्य पोत पोताना प्रदेशथी करीने जूदां जूदां छे. पोते हलन चलन क्रियाथी रहित छे; अने लोकप्रमाण छे.

८५. धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने चलावे छे एम नथी; जीव पुद्गल गति करे छे तेने सहायक छे.

८६. सर्व जीवोने तथा बाकीना पुद्गलोने संपूर्ण अवकाश आपे छे तेने 'लोकाकाश' कहीए छीए.

८७. जीव, पुद्गलसमूह, धर्म अने अधर्म ए द्रव्यो लोकथी अनन्य छे; अर्थात् लोकमां छे; लोकथी बहार नथी. आकाश लोकथी पण बहार छे, अने ते अनंत छे. जेने 'अलोक' कहीए छीए.

८८. जो गमन अने स्थितिनुं कारण आकाश होत तो धर्म अने अधर्मद्रव्यना अभावने लीधे सिद्धभगवाननुं अलोकमां पण गमन होत.

८९. जे माटे सिद्धभगवाननुं स्थान ऊर्ध्वलोकांते सर्वज्ञ वीतरागदेवे कह्युं छे; तेथी गमन अने स्थाननुं कारण आकाश नथी एम जाणो.

९०. जो गमननो हेतु आकाश होत अथवा स्थाननो हेतु आकाश होत तो अलोकनी हानि थाय अने लोकना अंतनी वृद्धि पण थाय.

९१. तेथी धर्म अने अधर्म द्रव्य गमन तथा स्थितिनां कारण छे, पण आकाश नथी. आ प्रमाणे लोकनो स्वभाव श्रोताजीवोप्रत्ये सर्वज्ञ वीतरागदेवे कह्यो छे.

९२. धर्म, अधर्म अने (लोक) आकाश अपृथक्भूत (एकक्षेत्रावगाही) अने सरखां परिमाण-वाळां छे. निश्चयथी त्रणे द्रव्यनी पृथक् उपलब्धि छे. पोतपोतानी सत्ताथी रह्या छे. एम एकता अनेकता छे.

९३. आकाश, काळ, जीव, धर्म अने अधर्म ए द्रव्यो मूर्त्ततारहित छे, अने पुद्गलद्रव्य मूर्त्त छे. तेमां जीवद्रव्य चेतन छे.

९४. जीव अने पुद्गल एक बीजाने क्रियानां सहायक छे. बीजां द्रव्यो (ते प्रकारे) सहायक नथी. जीव पुद्गलद्रव्यनां निमित्तथी क्रियावान होय छे. काळना कारणथी पुद्गल अनेक स्कंधपणे परिणमे छे.

९५. जीवने जे इंद्रियग्राह्य विषय छे ते पुद्गलद्रव्य मूर्त्त छे; बाकीनां अमूर्त्त छे. मन पोताना विचारना निश्चितपणाथी बन्नेने जाणे छे.

९६. काळ परिणामथी उत्पन्न थाय छे. परिणाम काळथी उत्पन्न थाय छे. बन्नेनो एम स्वभाव छे. निश्चयकाळथी क्षणभंगुरकाळ होय छे.

९७. काळ एवो शब्द सद्भावनो बोधक छे, तेमां एक नित्य छे, बीजो उत्पन्नव्ययवाळो छे.

९८. ए काळ, आकाश, धर्म अधर्म अने पुद्गल तथा जीव ए बधांने द्रव्य एवी संज्ञा छे. काळने अस्तिकाय एवी संज्ञा नथी.

९९. एम निर्ग्रंथनां प्रवचननुं रहस्य एवो आ पंचास्तिकायना स्वरूपविवेचननो संक्षेप ते जे यथार्थपणे जाणीने राग अने द्वेषथी मुक्त थाय ते सर्व दुःखथी परिमुक्त थाय.

१००. आ परमार्थने जाणीने जे मोहना हणनार थया छे अने जेणे राग द्वेषने शांत कर्या छे ते जीव संसारनी दीर्घ परंपरानो नाश करी शुद्धात्मपदमां लीन थाय.

इति पंचास्तिकाय प्रथम अध्याय.

ॐ जिनाय नमः । नमः श्रीसद्गुरवे.

१. मोक्षना कारण श्री भगवान् महावीरने भक्तिपूर्वक मस्तक नमावी ते भगवानना कहेलो पदार्थप्रभेदरूप मोक्षनो मार्ग कहुं छुं.

२. दर्शन अने ज्ञान तेम ज रागद्वेषथी रहित एवुं चारित्र, सम्यक् बुद्धि जेने प्राप्त थयेल छे, एवा भव्यजीवनो मोक्षमार्ग होय.

३. तत्त्वार्थनी प्रतीति ते **सम्यक्त्व,** ते भावोनुं जाणवुं ते **ज्ञान,** विषयमार्गप्रत्ये शांतभाव थावो ते **चारित्र.**

४. 'जीव,' 'अजीव,' 'पुण्य,' 'पाप,' 'आश्रव,' 'संवर, 'निर्जरा,' 'बंध' अने 'मोक्ष' ए भावो ते 'तत्त्व' छे.

५. 'संसारस्थ' अने 'संसाररहित' एम बे प्रकारना जीवो छे. बन्ने चैतन्योपयोग लक्षण छे. संसारी देहसहित अने असंसारी देहरहित जीवो छे.

६. पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति ए जीवसंश्रित छे. ते जीवोने मोहनुं प्रबळपणुं छे अने स्पर्शइंद्रियना विषयनुं तेने ज्ञान छे.

७. तेमां त्रण स्थावर छे. अल्प योगवाळा अग्नि अने वायुकाय ते त्रस छे. ते मनना परिणामथी रहित एकइंद्रिय जीवो जाणवा.

८. ए पांचे प्रकारनो जीवसमूह मनपरिणामथी रहित अने एकेंद्रिय छे एम सर्वज्ञे कह्युं छे.

९. ईंडामां जेम पक्षीनो गर्भ वधे छे, जेम मनुष्यगर्भमां मूर्छागत अवस्था छतां जीवत्व छे, तेम एकेंद्रिय जीवो पण जाणवा.

१०. शंबुक, शंख, छीप, कृमि ए आदि जे जीवो रस अने स्पर्शने जाणे छे ते बेइंद्रिय जीवो जाणवा.

११. जु, मांकड, कीडी, वींछी आदि अनेक प्रकारना बीजा पण कीडाओ रस, स्पर्श अने गंधने जाणे छे; ते त्रणइंद्रिय जीवो जाणवा.

१२. डांस, मच्छर, माखी, भमरी, भमरा, पतंग आदि रूप, रस, गंध अने स्पर्शने जाणे छे ते चारइंद्रिय जीवो जाणवा.

१३. देव, मनुष्य, नारक, तिर्यंच् (जळचर, स्थलचर अने खेचर) ते वर्ण, रस, स्पर्श, गंध अने शब्दने जाणे छे. जे बळवान पांचइंद्रियवाळा जीवो छे.

१४. देवताना चार निकाय छे. मनुष्य कर्म अने अकर्म भूमीनां एम बे प्रकारनां छे. तिर्यंच्ना घणा प्रकार छे; तथा नारकी तेनी पृथ्वीयोनि जेटली जाति छे तेटली जातिना छे.

१५. पूर्वे बांधेलुं आयुष् क्षीण थवाथी जीव गतिनामकर्मने लीधे आयुष् अने लेश्याना वशथी बीजा देहमां जाय छे.

१६. देहाश्रित जीवोना स्वरूपनो ए विचार निरूपण कर्यो; तेना 'भव्य' अने 'अभव्य' एवा बे भेद छे. देहरहित एवा 'सिद्धभगवंतो' छे.

१७. जे सर्व जाणे छे, देखे छे, दुःख भेदीने सुख इच्छे छे, शुभ अने अशुभने करे छे अने तेनुं फळ भोगवे छे ते 'जीव' छे.

१८. आकाश, काळ, पुद्गल अने धर्म अधर्म द्रव्यने विषे जीवत्वगुण नथी; तेने अचैतन्य कहीए छीए, अने जीवने सचैतन्य कहीए छीए.

१९. सुखदुःखनुं वेदन, हितमां प्रवृत्ति, अहितमां भीति ते त्रणे काळमां जेने नथी तेने सर्वज्ञ महामुनिओ 'अजीव' कहे छे.

२०. संस्थान, संघात, वर्ण, रस, स्पर्श, गंध अने शब्द एम पुद्गलद्रव्यथी उत्पन्न थता गुण पर्यायो घणा छे.

२१. अरस, अरूप, अगंध, अशब्द, अनिर्दिष्ट संस्थान, अने वचनअगोचर एवो जेनो चैतन्य गुण छे ते 'जीव' छे.

२२. जे निश्चयकरी संसारस्थित जीव छे तेना बे प्रकारनां परिणाम होय छे. परिणामथी कर्म उत्पन्न थाय छे, तेथी सारी अने माठी गति थाय छे.

२३. गतिनी प्राप्तिथी देह थाय छे, देहथी इंद्रियो अने इंद्रियोथी विषय ग्रहण थाय छे, अने तेथी राग, द्वेष उत्पन्न थाय छे.

२४. संसारचक्रवालमां ते भावे करीने परिभ्रमण करतां जीवोमां कोई जीवोनो संसार अनादिसांत छे, अने कोईनो अनादिअनंत छे एम भगवान् सर्वज्ञे कह्युं छे.

२५. अज्ञान, राग, द्वेष अने चित्तप्रसन्नता जे जे भावमां वर्ते छे, तेथी शुभ के अशुभ परिणाम थाय छे.

२६. जीवने शुभ परिणामथी पुण्य थाय छे, अने अशुभ परिणामथी पाप थाय छे. तेनाथी शुभाशुभ पुद्गलना ग्रहणरूप कर्मपणुं प्राप्त थाय छे.

२७. तृषातुरने, क्षुधातुरने, रोगीने अथवा बीजां दुःखी मनना जीवने तेनुं दुःख मटाडवाना उपायनी क्रिया करवामां आवे तेनुं नाम 'अनुकंपा.'

२८. क्रोध, मान, माया अने लोभनी मिठाश जीवने क्षोभ पमाडे छे अने पापभावनी उत्पत्ति करे छे.

२९. घणा प्रमादवाळी क्रिया, चित्तनी मलीनता, इंद्रियविषयमां लुब्धता, बीजा जीवोने दुःख देवुं, तेनो अपवाद बोलवो ए आदि वर्त्तनथी जीव 'पापआश्रव' करे छे.

३०. चार संज्ञा, कृष्णादि त्रण लेश्या, इंद्रियवशता, आर्त्त अने रौद्रध्यान, दुष्टभाववाळी धर्मक्रियामां मोह ए 'भाव पापआश्रव' छे.

३१. इंद्रियो, कषाय अने संज्ञानो जय करवावाळो कल्याणकारी मार्ग जीवने जे काळे वर्त्ते छे ते काळे जीवने पापआश्रवरूप छिद्रनो निरोध छे एम जाणवुं.

३२. जेने सर्व द्रव्य प्रत्ये राग, द्वेष तेम ज अज्ञान वर्त्ततुं नथी एवा सुखदुःखनेविषे समानदृष्टिना धणी निर्ग्रंथ महात्माने शुभाशुभ आश्रव नथी.

३३. योगनो निरोध करीने जे तपश्चर्या करे छे ते निश्चय बहु प्रकारनां कर्मोनी निर्जरा करे छे.

३४. जे संयमीने ज्यारे योगमां पुण्य पापनी प्रवृत्ति नथी त्यारे तेने शुभाशुभकर्मकर्तृत्वनो 'संवर' छे, 'निरोध' छे.

३५. जे आत्मार्थनो साधनार संवरयुक्त, आत्मस्वरूप जाणीने तद्रूप ध्यान करे छे ते महात्मा साधु कर्मरजने खंखेरी नांखे छे.

३६. जेने राग द्वेष तेम ज मोह अने योगपरिणमन वर्त्ततां नथी तेने शुभाशुभ कर्मने बाळीने भस्म करवावाळो ध्यानरूपी अग्नि प्रगटे.

३७. दर्शनज्ञानथी भरपूर, अन्य द्रव्यना संसर्गथी रहित एवुं ध्यान निर्जराहेतुथी ध्यावे छे ते महात्मा स्वभावसहित छे.

३८, जे संवरयुक्त सर्व कर्मनी निर्जरा करतो छतो वेदनीय अने आयुष्यकर्मथी रहित थाय ते महात्मा ते ज भवे 'मोक्ष' पामे.

३९. जीवनो स्वभाव अप्रतिहत ज्ञानदर्शन छे. तेनुं अनन्यमय आचरण (शुद्धनिश्चयमय एवो स्थिर स्वभाव) ते 'निर्मल चारित्र' सर्वज्ञ वीतरागदेवे कह्युं छे.

४०. वस्तुपणे आत्मानो स्वभाव निर्मल ज छे, गुण अने पर्याय परसमयपरिणामीपणे अनादिथी परिणम्या छे ते दृष्टिथी अनिर्मल छे. जो ते आत्मा स्वसमयने प्राप्त थाय तो कर्मबंधथी रहित थाय.

४१. जे परद्रव्यने विषे शुभ अथवा अशुभ राग करे छे ते जीव 'स्वचारित्र'थी भ्रष्ट छे अने 'परचारित्र' आचरे छे एम जाणवुं.

४२. जे भाववडे आत्माने पुण्य अथवा पाप आश्रवनी प्राप्ति थाय ते प्रवर्त्तमान आत्मा परचारित्रमां वर्त्ते छे एम वीतराग सर्वज्ञे कह्युं छे.

४३. जे सर्व संगमात्रथी मुक्त थई, अनन्यमयपणे आत्मस्वभावमां स्थित छे, निर्मल ज्ञाता द्रष्टा छे ते स्वचारित्र आचरनार जीव छे.

४४. परद्रव्य प्रत्येना भावथी रहित, निर्विकल्प ज्ञानदर्शनमय परिणामी आत्मा छे ते स्वचारित्राचरण छे.

४५. सम्यक्त्व, आत्मज्ञान, अने रागद्वेषथी रहित एवुं चारित्र, सम्यक्बुद्धि प्राप्त थयेल छे जेने एवा भव्य जीवनो मोक्षमार्ग छे.

४६. आ तत्त्वार्थप्रतीति ते 'सम्यक्त्व'. तत्त्वार्थनुं ज्ञान ते 'ज्ञान'. अने विषयना विमूढमार्गे प्रत्ये शांतभाव ते 'चारित्र.'

४७. धर्मास्तिकायादिना स्वरूपनी प्रतीति ते 'सम्यक्त्व', बार अंग अने पूर्वनुं जाणपणुं ते 'ज्ञान', तपश्चर्यादिमां प्रवृत्ति ते **'व्यवहार मोक्षमार्ग'** छे.

४८. ते ते समाधित आत्मा, आत्माशिवाय ज्यां अन्य किंचित् मात्र करतो नथी, मात्र अनन्य आत्मामय छे त्यां **'निश्चय मोक्षमार्ग'** सर्वज्ञ वीतरागे कह्यो छे.

४९. जे आत्मा आत्मस्वभावमय एवां ज्ञान दर्शनने अनन्यमय आचरे छे, तेने ते निश्चय ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे.

५०. जे आ सर्व जाणशे अने देखशे ते अव्याबाध सुख अनुभवशे. आ भावोनी प्रतीति भव्यने थाय छे, अभव्यने थती नथी,

५१. दर्शन, ज्ञान अने चारित्र ए 'मोक्षमार्ग' छे, तेनी सेवनाथी 'मोक्ष' प्राप्त थाय छे. अने (अमुक हेतुथी) 'बंध' थाय छे एम मुनिओए कह्युं छे.

५२. अर्हत्सिद्धचैत्यप्रवचनगुणज्ञानभक्तिसंपन्न घणुं पुण्य उत्पन्न करे छे, पण ते सर्व कर्मनो क्षय करतो नथी.

५३. जेना हृदयने विषे अणुमात्र परद्रव्य प्रत्ये राग वर्त्ते छे, ते सर्व आगमनो जाणनार होय तोपण 'स्वसमय' नथी जाणतो एम जाणवुं.

५४. ते माटे सर्व इच्छाथी निवर्त्ती निःसंग अने निर्ममत्व थईने जे सिद्धस्वरूपनी भक्ति करे ते निर्वाणने प्राप्त थाय.

५५. परमेष्ठिपदने विषे जेने तत्त्वार्थप्रतीतिपूर्वक भक्ति छे, अने निर्ग्रंथप्रवचनमां रुचिपणे जेनी बुद्धि परिणमी छे, तेमज ते संयमतपसहित वर्त्ते छे तो तेने मोक्ष कंई दूर नथी.

५६. अर्हत्नी, सिद्धनी, चैत्यनी, प्रवचननी भक्तिसहित जो तपश्चर्या करे छे तो ते नियमथी देवलोकने अंगीकार करे छे.

५७. तेथी इच्छामात्रनी निवृत्ति करो. सर्वत्र किंचित्मात्र पण राग करो मां. केमके वीतराग भवसागरने तरे छे.

५८. मार्गनो प्रभाव थवाने अर्थे, प्रवचननी भक्तिथी उत्पन्न थयेली प्रेरणाथी प्रवचनना रहस्यभूत 'पंचास्तिकाय'ना संग्रहरूप आ शास्त्र में कह्युं.

इति पंचास्तिकाय समाप्त.

७०१. ववाणीआ. फागण वद ११॥ मंगळ. १९५३.

संवत् १९५३ ना फा. वदी १२ मोमवार.

जिन	मुख्य	आचार्य.
सिद्धांत	पद्धती	धर्म.
शांत रस	अहिंसा	मुख्य.
लिंगादि	व्यवहार	जिनमुद्रा सूचक.
मतांतर	समावेश.	
शांत रस	प्रवहन.	
जिन	अन्यने	धर्म प्राप्ति.
लोकादि स्वरूप–	संशयनी	निवृत्ति. समाधान.
जिन	प्रतिमा	कारण.

कांईक गृहव्यवहार शांत करी. परी–गृहादि कार्यथी निवृत्त थवुं.

अप्रमत्त गुणस्थानकपर्यंत पहोंचवुं. केवळ भूमिकानुं सहज परिणामी ध्यान.—

७०२. ववा. फा. वद १२ सोम. १९५३.

श्रीमद् राजचंद्र स्वआत्मदशाप्रकाश.

१. धन्य रे दीवस आ अहो,
जागी जे रे शांति अपूर्व रे;
दश वर्षे रे धारा उल्लसी,
मट्यो उदय कर्मनो गर्व रे. धन्य०

२. ओगणीससें ने एकतालिसें,
आव्यो अपूर्व अनुसार रे;
ओगणीससें ने बेतालिसें,
अद्भुत वैराग्य धार रे. धन्य०

३. ओगणीससें ने सुडतालिसें,
समकित शुद्ध प्रकाश्युं रे;
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निजस्वरूप अवभास्युं रे. धन्य०

४. त्यां आव्यो रे उदय कारमो,
परीग्रह कार्य प्रपंच रे;
जेम·जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे एक* रंच रे. धन्य०

* नहीं (पाठांतर).

५. वधतुं एम ज चालियुं,
हवे दीसे क्षीण कांई रे;
क्रमे करिने रे ते जशे,
एम भासे मनमांहि रे. धन्य०

६. यथाहेतु जे चित्तनो,
सत्य धर्मनो उद्धार रे;
थशे अवश्य आ देहथी,
एम थयो निरधार रे. धन्य०

७. आवी अपूर्व वृत्ति अहो,
थशे अप्रमत्त योगरे;
केवळ लगभग भूमिका,
स्पर्शीने देह वियोग रे. धन्य०

८. अवश्य कर्मनो भोग छे,
*बाकी रह्यो अवशेष रे;
तेथी देह एक ज धारिने,
जाशुं स्वरूप स्वदेश रे. धन्य०

७०३. ववाणीआ. चैत्र सुद ३ रवि. १९५३.

रहस्यदृष्टि अथवा समिति विचार.

परमभक्तिथी स्तुतिकरनारप्रत्ये पण जेने राग नथी अने परमद्वेषथी परिषह उपसर्ग करनारप्रत्ये पण जेने द्वेष नथी, ते पुरुषरूप भगवानने वारंवार नमस्कार.

अद्वेषवृत्तिथी वर्त्तवुं योग्य छे, धीरज कर्त्तव्य छे.

(१) आशंकाः—मुनि ००० ने आचारांग वांचतां साधुनो दीर्घशंकादि कारणोमां पण घणो सांकडो मार्ग जोवामां आव्यो, ते परथी एवी आशंका थई के एटली बधी संकडाश एवी अल्प क्रियामां पण राखवानुं कारण शुं हशे? ते आशंकानुं समाधान.

समाधानः—**सतत अंतर्मुख उपयोगे स्थिति एज निर्ग्रंथनो परम धर्म छे;** एक समय पण उपयोग बहिर्मुख करवो नहीं ए निर्ग्रंथनो मुख्य मार्ग छे; पण ते संयमार्थे देहादि साधन छे तेना निर्वाहने अर्थे सहज पण प्रवृत्ति थवायोग्य छे. कंईपण तेवी प्रवृत्ति करतां उपयोग बहिर्मुख थवानुं निमित्त छे, तेथी ते प्रवृत्ति अंतर्मुख उपयोगप्रत्ये रह्या करे एवा प्रकारमां ग्रहण करावी छे, **केवळ अने सहज अंतर्मुख उपयोग तो मुख्यताए केवळ भूमिका नामे तेरमे गुणस्थानके होय छे.** अनिर्मळ विचारधाराना बळवानपणासहित अंतर्मुख उपयोग सातमे

* भोगववो (पाठांतर).

गुणस्थानके होय छे. प्रमादथी ते उपयोग स्खलित थाय छे, अने कंईक विशेष अंशमां स्खलित थाय तो विशेष बहिर्मुख उपयोग थई भावअसंयमपणे उपयोगनी प्रवृत्ति थाय छे. ते न थवा देवाने अने देहादि साधनना निर्वाहनी प्रवृत्ति पण न छोडी शकाय एवी होवाथी ते प्रवृत्ति अंतर्मुख उपयोगे थई शके एवी अद्भूत संकळनाथी उपदेशी छे, जेने पांच समिति कहेवाय छे.

जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक चालवुं पडे तो चालवुं, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक बोलवुं पडे तो बोलवुं, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक आहारादि ग्रहण करवुं, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक वस्त्रादिनुं लेवुं मूकवुं, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक दीर्घशंकादि शरीरमळनो त्याग करवायोग्य त्याग करवो, ए प्रकारे प्रवृत्तिरूप पांच समिति कही छे. जे जे संयममां प्रवर्त्तवाना बीजा प्रकारो उपदेश्या छे, ते ते सर्व आ पांच समितिमां शमाय छे, अर्थात् जे कंई निर्ग्रंथने प्रवृत्ति करवानी आज्ञा आपी छे, ते जे प्रवृत्ति त्याग करवी अशक्य छे, तेनी ज आज्ञा आपी छे; अने ते एवा प्रकारमां आपी छे के मुख्य हेतु जे अंतर्मुख उपयोग तेने जेम अस्खलितता रहे तेम आपी छे. ते ज प्रमाणे वर्त्तवामां आवे तो उपयोग सतत जाग्रत रह्या करे, अने जे जे समये जीवनी जेटली जेटली ज्ञानशक्ति तथा वीर्यशक्ति छे ते ते अप्रमत्त रह्या करे.

दीर्घशंकादि क्रियाए प्रवर्त्ततां पण अप्रमत्त संयमदृष्टि विस्मरण न थई जाय ते हेतुए तेवी तेवी संकडाशवाळी क्रिया उपदेशी छे, पण सत्पुरुषनी दृष्टि विना ते समजाती नथी. आ **रहस्यदृष्टि** संक्षेपमां लखी छे ते पर घणो घणो विचार कर्त्तव्य छे. सर्व क्रियामां प्रवर्त्ततां आ दृष्टि स्मरणमां आणवानो लक्ष राखवा योग्य छे.

ज्ञानीनी आज्ञारूप जे जे क्रिया छे ते ते क्रियामां तथारूप पणे प्रवर्त्ताय तो ते अप्रमत्त उपयोग थवानुं साधन छे. आवा भावार्थनो आ कागळ जेम जेम विशेष विचारवानुं थशे, तेम तेम अपूर्व अर्थनो उपदेश थशे.

(२) हमेश अमुक शास्त्राध्याय कर्या पछी आ कागळ विचारवाथी स्पष्ट बोध थवा योग्य छे.

(३) कर्मग्रंथनी वांचना कर्त्तव्य छे; पुरी थये फरी आवर्त्तन करी अनुप्रेक्षा कर्त्तव्य छे.

७०४. ववाणीआ. चैत्र सुद ४. १९५३.

(१)

१. एकेंद्रिय जीवने अनुकूळ स्पर्शादिनी प्रियता अव्यक्तपणे छे, ते मैथुन संज्ञा छे.

२. एकेंद्रिय जीवने देह अने देहनां निर्वाहादि साधनमां अव्यक्त मूर्छारूप परिग्रह संज्ञा छे. वनस्पतीएकेंद्रिय जीवमां आ संज्ञा कंईक विशेष व्यक्त छे.

(२)

(१) त्रणे* प्रकारनां समकितमांथी गमे ते प्रकारनुं समकित आवे तोपण वधारेमां वधारे पंदर भवे मोक्ष थाय; अने जो ते समकित आव्या पछी जीव वमे तो वधारेमां वधारे अर्धपुद्गळपरावर्त्तनकाळ सुधी संसारपरिभ्रमण थईने मोक्ष थाय.

* जुओ आं. ६८९ पा. (१) म. कि.

(२) तीर्थंकरना निर्ग्रंथ, निर्ग्रंथिनीओ, श्रावक अने श्राविकाओ सर्वने जीव अजीवनुं ज्ञान हतुं तेथी समकित कह्युं छे एम कंई नथी. तेमांना घणा जीवोने मात्र साचा अंतरंग भावथी तीर्थंकरनी अने तेमना उपदेशेला मार्गनी प्रतीतिथी पण समकित कह्युं छे. ए समकित पाम्या पछी जो वम्युं न होय तो वधारेमां वधारे पंदर भव थाय. **साचा मोक्षमार्गने पामेला एवा सत्पुरुषनी तथारूप प्रतीतिथी सिद्धांतमां घणे स्थळे समकित कह्युं छे. ए समकित आव्या विना जीवने घणुंकरीने जीव अने अजीवनुं यथार्थ ज्ञान पण थतुं नथी.** जीव अजीवनुं ज्ञान पामवानो मुख्यमार्ग ए ज छे.

(३) मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवळज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान अने विभंगज्ञान ए आठे जीवनां उपयोगस्वरूप होवाथी अरूपी कह्यां छे, ज्ञान अने अज्ञान ए बेमां मुख्य फेर आटलो छे, के जे ज्ञान समकित सहित छे तेने ज्ञान कह्युं छे, अने जे ज्ञान मिथ्यात्व सहित छे तेने अज्ञान कह्युं छे. पण वस्तुताए बन्ने ज्ञान छे.

(४) ज्ञानावरणीय कर्म अने अज्ञान एक नथी; ज्ञानावरणीयकर्म ज्ञानने आवरणस्वरूप छे, अने अज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमस्वरूप एटले आवरण टळवास्वरूप छे.

(५) अज्ञान शब्दनो साधारण भाषामां "ज्ञानरहित" अर्थ थाय छे. जेम जड ज्ञानथी रहित छे तेम; पण निर्ग्रंथ परिभाषामां तो मिथ्यात्व सहित ज्ञाननुं नाम अज्ञान छे; एटले ते दृष्टिथी अज्ञानने अरूपी कह्युं छे.

(६) एम आशंका थाय के जो अज्ञान अरूपी होय तो सिद्धमां पण होवुं जोईए; तेनुं समाधान आ प्रमाणे छे. मिथ्यात्व सहित ज्ञाननुं नाम अज्ञान कह्युं छे, तेमांथी मिथ्यात्व जतां बाकी ज्ञान रहे छे, ते ज्ञान संपूर्ण शुद्धता सहित सिद्ध भगवंतमां वर्ते छे. सिद्धनुं, केवळज्ञानीनुं अने सम्यक् दृष्टिनुं ज्ञान मिथ्यात्व रहित छे. मिथ्यात्व जीवने भ्रांतिस्वरूपे छे. ते भ्रांति यथार्थ समजाये निवृत्त थई शकवा योग्य छे. मिथ्यात्व दिशाभ्रमरूप छे.

(३)

ज्ञान जीवनुं रूप छे माटे ते अरूपी छे, ने ज्ञान विपरीतपणे जाणवानुं कार्य करे छे, त्यां सुधी तेने अज्ञान कहेवुं एवी निर्ग्रंथ परिभाषा करी छे, पण ए स्थळे ज्ञाननुं बीजुं नाम ज अज्ञान छे एम जाणवुं.

आशंका :—ज्ञाननुं बीजुं नाम अज्ञान होय तो जेम ज्ञानथी मोक्ष थाय एम कह्युं छे, तेम अज्ञानथी पण मोक्ष थवो जोईए; तेम ज मुक्त जीवमां पण ज्ञान कह्युं छे, तेम अज्ञान पण कहेवुं जोईए; एम आशंका करी छे, तेनुं आ प्रमाणे समाधान छे.

समाधान :—आंटी पडवाथी घुंचाएलुं सूत्र अने आंटी नीकळी जवाथी वगर घुंचाएलुं सूत्र ए बन्ने सूत्र ज छे; छतां आंटीनी अपेक्षाथी घुंचाएलुं सूत्र, अने वगर घुंचाएलुं सूत्र एम कहेवाय छे, तेम मिथ्यात्वज्ञान ते "अज्ञान" अने सम्यग्ज्ञान ते "ज्ञान" एम परिभाषा करी छे, पण मिथ्यात्व

ज्ञान ते जड अने सम्यग्ज्ञान ते चेतन एम नथी. जेम आंटीवाळुं सूत्र अने आंटी वगरनुं सूत्र बन्ने सूत्र ज छे, तेम मिथ्यात्व ज्ञानथी संसार परिभ्रमण थाय अने सम्यग्ज्ञानथी मोक्ष थाय. जेम अत्रेथी पूर्वदिशा तरफ दश गाउ उपर एक गाम छे त्यां जवाने अर्थे नीकळेलो माणस दिशाभ्रमथी पूर्वने बदले पश्चिम तरफ चाल्यो जाय, तो ते पूर्वदिशावाळुं गाम प्राप्त न थाय, पण तेथी तेणे चालवारूप क्रिया करी नथी एम कही न शकाय; तेम ज देह अने आत्मा जूदा छतां देह अने आत्मा एक जाण्यो छे ते जीव देहबुद्धिए करी संसार परिभ्रमण करे छे, पण तेथी तेणे जाणवारूप कार्य कर्युं नथी एम कही न शकाय. पूर्वथी पश्चिममां चाल्यो छे, ए पूर्वने पश्चिम मानवारूप जेम भ्रम छे, तेम देह अने आत्मा जूदा छतां बेयने एक मानवारूप भ्रम छे; पण पश्चिममां जतां, चालतां जेम चालवारूप स्वभाव छे, तेम देह अने आत्माने एक मानवामां पण जाणवारूप स्वभाव छे. जेम पूर्वने बदले पश्चिमने पूर्व मानेल छे, ते भ्रम तथारूप हेतुसामग्री मळ्ये समजावाथी पूर्व पूर्व ज समजाय छे, अने पश्चिम पश्चिम ज समजाय छे त्यारे ते भ्रम टळीजाय छे, अने पूर्वतरफ चालवा लागे छे, तेम देह अने आत्माने एक मानेल छे, ते सद्गुरु उपदेशादि सामग्री मळ्ये बन्ने जूदा छे, एम यथार्थ समजाय छे, त्यारे भ्रम टळीजई आत्माप्रत्ये ज्ञानोपयोग परिणमे छे. भ्रममां पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व मान्याछतां पूर्व ते पूर्व अने पश्चिम ते पश्चिम दिशा ज हती. मात्र भ्रमथी विपरीत भासतुं हतुं, तेम अज्ञानमां पण देह ते देह अने आत्मा ते आत्मा ज छतां तेम भासता नथी ए विपरीत भासवुं छे. ते यथार्थ समजाये, भ्रम निवृत्त थवाथी देह देह ज भासे छे, अने आत्मा आत्मा ज भासे छे; अने जाणवारूप स्वभाव विपरीतपणाने भजतो हतो ते सम्यक्पणाने भजे छे. दिशाभ्रम वस्तुताए कंई नथी अने चालवारूप क्रियाथी इच्छित गाम प्राप्त थतुं नथी, तेम मिथ्यात्व पण वस्तुताए कंई नथी, अने ते साथे जाणवारूप स्वभाव पण छे, पण साथे मिथ्यात्वरूप भ्रम होवाथी स्वस्वरूपतामां परमस्थिति थती नथी. दिशाभ्रम टळ्येथी इच्छित गाम तरफ वळतां पछी मिथ्यात्व पण नाश पामे छे, अने स्वस्वरूप शुद्ध ज्ञानात्म पदमां स्थिति थई शके एमां कंई संदेहनुं ठेकाणुं नथी.

७०५. ववाणीआ. चैत्र सुद ५. १९५३.

त्रणे समकितमांथी गमे ते समकित पाम्याथी जीव वधारेमां वधारे पंदर भवे मोक्ष पामे. जघन्य ते भवे पण मोक्ष थाय; अने जो ते समकित वमे, तो वधारेमां वधारे अर्धपुद्गलपरावर्त्तनकाळसुधी संसार परिभ्रमण करीने पण मोक्ष पामे. समकित पाम्या पछी वधारेमां वधारे अर्धपुद्गलपरावर्त्तनसंसार होय.

क्षयोपशम समकित अथवा उपशम समकित होय, तो ते जीव वमी शके; पण क्षायिक समकित होय तो ते वमाय नहीं; क्षायिक समकिती जीव ते ज भवे मोक्ष पामे, वधारे भव करे तो त्रण भव करे, अने कोईएक जीवनी अपेक्षाए क्वचित् चार भव थाय. युगलिआनुं

आयुष् बंधाया पछी क्षायिक समकित आव्युं होय, तो चार भव थवानो संभव छे; घणुंकरीने कोईक जीवने आम बने छे.

भगवत् तीर्थंकरना निर्ग्रंथ, निर्ग्रंथिनीओ, श्रावक तथा श्राविकाओ कंई सर्वेने जीवाजीवनुं ज्ञान हतुं तेथी तेने समकित कह्युं छे एवो सिद्धांतनो अभिप्राय नथी. तेमांथी कैक जीवोने तीर्थंकर साचा पुरुष छे, साचा मोक्षमार्गना उपदेष्टा छे, जेम ते कहे छे तेम ज मोक्षमार्ग छे एवी प्रतीतिथी, एवी रुचिथी, श्री तीर्थंकरना आश्रयथी. अने निश्चयथी, समकित कह्युं छे. एवी प्रतीति, एवी रुचि अने एवा आश्रयनो तथा आज्ञानो निश्चय छे ते पण एक प्रकारे जीवाजीवना ज्ञानस्वरूप छे. पुरुष साचा छे अने तेनी प्रतीति पण साची आवी छे के जेम आ परमकृपालु कहे छे तेम ज मोक्षमार्ग छे, तेम ज मोक्षमार्ग होय, ते पुरुषना लक्षणादि पण वीतरागपणानी सिद्धि करे छे, जे वीतराग होय ते पुरुष यथार्थवक्ता होय, अने ते ज पुरुषनी प्रतीतिए मोक्षमार्ग स्वीकारवा योग्य होय एवी सुविचारणा ते पण एक प्रकारनुं गौणताए जीवाजीवनुं ज ज्ञान छे.

ते प्रतीतिथी, ते रुचिथी अने ते आश्रयथी पछी स्पष्ट विस्तार सहित जीवाजीवनुं ज्ञान अनुक्रमे थाय छे. तथारूप पुरुषनी आज्ञा उपासवाथी राग, द्वेषनो क्षय थई वीतराग दशा थाय छे. तथारूप सत्पुरुषना प्रत्यक्ष योग विना ए समकित आववुं कठण छे. तेवा पुरुषनां वचनरूप शास्त्रोथी कोईक पूर्वे आराधक होय एवा जीवने समकित थवुं संभवे छे; अथवा कोई एक आचार्य प्रत्यक्षपणे ते वचनना हेतुथी कोईक जीवने समकित प्राप्त करावे छे.

७०६. ववाणीआ. चैत्र सुद ६ बुध. १९५३.

(१) पहेरवेश आछकडो नहीं छतां सुघड एवी सादाई सारी छे. आछकडाईथी पांचसोना पगारना कोई पांचसो एक न करे, अने योग्य सादाईथी पांचसोना चारसोनवाणुं कोई न करे.

(२) धर्ममां लौकिक मोटाई, मान महत्त्वनी इच्छा ए धर्मना द्रोह रूप छे.

धर्मना व्हाने अनार्य देशमां जवानो के सूत्रादि मोकलवानो निषेध करनार, नगारूं वगाडी निषेध करनार पोतानां मान–महत्व–मोटाईनो सवाल आवे त्या ए ज धर्मने ठोकर मारी, ए ज धर्मपर पग मूकी ए ज निषेधनो निषेध करे ए धर्मद्रोह ज छे. धर्मनुं महत्व तो व्हाना रूप, अने स्वार्थिक मानादिनो सवाल मुख्य,–ए धर्मद्रोह ज छे.

वीरचंद गांधीने विलायतादि मोकलवा आदिमां आम थयुं छे.

धर्म ज मुख्य एवो रंग त्यारे अहो भाग्य!

(३) प्रयोगना व्हाने पशुवध करनारा रोग–दुःख टाळे त्यारनी वात त्यारे, पण अत्यारे तो बिचारां निरपराधी प्राणीओने रिबावी मारी अज्ञानवशताए कर्म उपार्जे छे! पत्रकारो पण विवेक–विचार विना पुष्टि आपवा रूपे कूटी मारे छे!

७०७. ववाणीआ. चैत्र सुद १० सोम. १९५३.

१. केटलाक रोगादिपर औषधादि संप्राप्त थये असर करे छे, केमके ते रोगादिना हेतुनो कर्मबंध कंई पण तेवा प्रकारनो होय छे. औषधादि निमित्तथी ते पुद्गळ विस्तारमां प्रसरी जईने

अथवा खशी जईने वेदनीयना उदयनुं निमित्तपणुं छोडी दे छे. तेवी रीते निवृत्त थवा योग्य ते रोगादि संबंधी कर्मबंध न होय तो तेना पर औषधादिनी असर थती नथी, अथवा औषधादि प्राप्त थतां नथी, के सम्यक् औषधादि प्राप्त थतां नथी.

२. अमुक कर्मबंध केवा प्रकारना छे ते तथारूप ज्ञानदृष्टिविना जाणवुं कठण छे. एटले औषधादि व्यवहारनी प्रवृत्ति एकांते निषेधि न शकाय. पोताना देहमां, संबंधमां कोई एक **परम आत्मदृष्टिवाळा पुरुष** तेम वर्त्ते तो, एटले औषधादि ग्रहण न करे तो ते योग्य छे; पण बीजा सामान्य जीवो तेम वर्त्तवा जाय तो ते एकांतिक दृष्टिथी केटलीक हानि करे; तेमां पण पोताने आश्रित रहेला एवा जीवो प्रत्ये अथवा बीजा कोई जीव प्रत्ये रोगादि कारणोमां तेवो उपचार करवाना व्यवहारमां वर्त्ति शके तेवुं छे छतां उपचारादि करवानी उपेक्षा करे तो अनुकंपा मार्ग छोडी देवा जेवुं थाय. कोई जीव गमे तेवो पीडातो होय तोपण तेनी आशना-वाशना करवानुं तथा औषधादि व्यवहार छोडी देवामां आवे तो तेने आर्त्तध्यानना हेतु थवा जेवुं थाय. **गृहस्थव्यवहारमां एवी एकांतिक दृष्टि करतां घणां विरोध उत्पन्न थाय.**

३. त्यागव्यवहारमां पण एकांते उपचारादिनो निषेध ज्ञानीए कर्यो नथी. निर्ग्रंथने स्वपरि-ग्रहित शरीरे रोगादि थाय त्यारे औषधादि ग्रहण करवामां एवी आज्ञा छे के ज्यांसुधी आर्त्त-ध्यान न उपजवायोग्य दृष्टि रहे त्यांसुधी औषधादि ग्रहण न करवुं अने तेवुं विशेष कारण देखाय तो निरवद्य औषधादि ग्रहण करतां आज्ञानो अतिक्रम नथी, अथवा यथाशुभ औषधादि ग्रहण करतां आज्ञानो अतिक्रम नथी. अने बीजा निर्ग्रंथने शरीरे रोगादि थयुं होय त्यारे तेनी वैयावच्चादि करवानो प्रकार ज्यां दर्शाव्यो छे त्यां कंईपण विशेष अनुकंपादि दृष्टि रहे एवी रीते दर्शाव्यो छे. एटले गृहस्थ व्यवहारमां एकांते तेनो त्याग अशक्य छे एम समजाशे.

४. ते औषधादि कंईपण पापक्रियाथी थयां होय, तोपण तेथी पोताना औषधादिपणानो गुण देखाड्या विना न रहे, अने तेमां थयेली पापक्रिया पण पोतानो गुण देखाड्या विना न रहे. अर्थात् **जेम औषधादिना पुद्गलमां रोगादि पुद्गळने पराभव करवानो गुण छे, तेम ते करतां करवामां आवेली पापक्रियामां पण पापपणे परिणमवानो गुण छे,** अने तेथी कर्मबंध थई यथाअवसर ते पापक्रियानुं फळ उदयमां आवे. ते पापक्रियावाळा औषधादि करवामां, कराववामां तथा अनुमोदन करवामां ग्रहण करनार जीवनी जेवी जेवी देहादि प्रत्ये मूर्छा छे, मननुं आकुळ व्याकुळपणुं छे, आर्त्त ध्यान छे, तथा ते औषधादिनी पापक्रिया छे ते सर्व पोतपोताना स्वभावे परिणमीने यथावसरे फळ आपे छे. जेम रोगादिना कारणरूप कर्मबंध पोतानो जेवो स्वभाव छे तेवो दर्शावे छे, जेम औषधादिना पुद्गळ पोतानो स्वभाव दर्शावे छे, तेम औषधादिनी उत्पत्ति आदिमां थयेली क्रिया तेना कर्त्तानी ज्ञानादि वृत्ति तथा ते ग्रहण कर्त्तानां जेवां परिणाम छे, तेनुं जेवुं ज्ञानादि छे, वृत्ति छे, तेने पोतानो स्वभाव दर्शाववाने योग्य छे. **तथारूप शुभ शुभ स्वरूपे अने अशुभ अशुभ स्वरूपे सफळ छे.**

५. गृहस्थव्यवहारमां पण पोताना देहे रोगादि थये जेटली मुख्य आत्मदृष्टि रहे तेटली राखवी अने आर्त्त ध्याननुं यथादृष्टिए जोतां अवश्य परिणाम आववायोग्य देखाय अथवा आर्त्तध्यान उपजतुं देखाय तो औषधादि व्यवहार ग्रहण करतां निरवद्य (निष्पाप) औषधादिनी वृत्ति राखवी. क्वचित् पोताने अर्थे अथवा पोताने आश्रित एवा अथवा अनुकंपा योग्य एवा परजीवने अर्थे सावद्य औषधादिनुं ग्रहण थाय तो तेनुं सावद्यपणुं निर्ध्वंश (क्रूर) परिणामना हेतु जेवुं अथवा अधर्म मार्गने पोषे तेवुं होवुं न जोईए, ए लक्षराखवा योग्य छे.

६. सर्व जीवने हितकारी एवी ज्ञानी पुरुषनी वाणीने कंईपण एकांत दृष्टि ग्रहण करीने अहितकारी अर्थमां उतारवी नहीं ए उपयोग निरंतर स्मरणमां राखवा योग्य छे.

७०८. ववाणीआ. चैत्र सुद १५ शनि. १९५३.

१. जे वेदनीयपर औषध असर करे छे ते औषध वेदनीयनो बंध वस्तुताए निवृत्त करी शके छे एम कह्युं नथी, केमके ते औषध कर्मरूप वेदनीयनो नाश करे तो अशुभ कर्म निष्फळ थाय अथवा औषध शुभकर्मरूप कहेवाय. पण त्यां एम समजवुं योग्य छे के ते अशुभकर्म वेदनीय एवा प्रकारनी छे के तेने परिणामांतर पामवामां औषधादि निमित्त कारण-रूप थई शके. मंद के मध्यम शुभ अथवा अशुभ बंधने कोई एक स्वजातीय कर्म मळवाथी उत्कृष्ट बंध पण थई शके छे. मंद के मध्यम बांधेला केटलाएक शुभ बंधने कोई एक अशुभ कर्मविशेषना पराभवथी अशुभ परिणामीपणुं थाय छे. तेम ज तेवा अशुभ बंधने कोईएक शुभ-कर्मना योगथी शुभ परिणामीपणुं थाय छे.

२. मुख्यकरीने बंध परिणामानुसार थाय छे. कोईएक मनुष्ये कोईएक मनुष्य प्राणीनो तीव्र परिणामे नाश करवाथी तेणे निकाचित कर्म उत्पन्न कर्युं छतां केटलाक बचावना कारणथी अने साक्षी आदिना अभावथी राजनीतिना धोरणमां ते कर्म करनार मनुष्य छुटी जाय तेथी कांई तेनो बंध निकाचित नहीं होय एम समजवायोग्य नथी. तेना विपाकनो उदय थवानो वखत दूर होय तेथी पण एम बने. वळी केटलाक अपराधमां राजनीतिना धोरणे शिक्षा थाय छे ते पण कर्त्ताना परिणामवत् ज छे एम एकांते नथी अथवा ते शिक्षा कोई आगळ उत्पन्न करेला अशुभ कर्मना उदयरूप पण होय छे; अने वर्त्तमान कर्मबंध सत्तामां पड्या रहे छे, जे यथावसरे विपाक आपे छे.

३. सामान्यपणे असत्यादि करतां हिंसानुं पाप विशेष छे. पण विशेष दृष्टिए तो हिंसा करतां असत्यादिनुं पाप एकांते ओछुं छे एम न समजवुं, अथवा वधारे छे एम पण एकांते न समजवुं. हिंसाना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव अने तेना कर्त्ताना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावने अनुसरीने तेनो बंध कर्त्ताने थाय छे. तेम ज असत्यादिना संबंधमां पण समजवायोग्य छे. कोई-एक हिंसा करतां कोईएक असत्यादिनुं फळ एक गुण, बे गुण के अनंत गुण विशेष पर्यंत थाय छे. तेम ज कोईएक असत्यादि करतां कोईएक हिंसानुं फळ पण एक गुण, बे गुण, के अनंत गुण विशेष पर्यंत थाय छे.

४. त्यागनी वारंवार विशेष जिज्ञासा छतां, संसारप्रत्ये विशेष उदासीनता छतां कोईएक पूर्व कर्मना बळवानपणाथी जे जीव गृहस्थावास त्यागी शकता नथी ते पुरुष गृहस्थावासमां कुटुंबादिना निर्वाह अर्थे जे कांई प्रवृत्ति करे छे, तेमां तेनां परिणाम जेवां जेवां वर्त्ते छे ते ते प्रमाणे बंधादि थाय. **मोह छतां अनुकंपा मानवाथी के प्रमाद छतां उदय मानवाथी कंई कर्मबंध भुलथाप खातो नथी.** ते तो यथापरिणाम बंधपणुं पामे छे. कर्मना सूक्ष्म प्रकारोने मति विचारी न शके तोपण **शुभ अने अशुभ कर्म सफळ छे,** ए निश्चय जीवे विस्मरण करवो नहीं.

५. प्रत्यक्ष परम उपकारी होवाथी तथा सिद्ध पदना बतावनार पण तेओ होवाथी सिद्ध करतां अर्हत्‌ने प्रथम नमस्कार कर्यो छे.

७०९. ववाणीआ. चैत्र वद ५. १९५३.

छकायनुं स्वरूप पण सत्पुरुषनी दृष्टिये प्रतीत करतां तथा विचारतां ज्ञान ज छे. आ जीव कइ दिशाथी आव्यो छे, ए वाक्यथी शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन प्रारंभ्युं छे. सद्गुरुमुखे ते प्रारंभ-वाक्यना आशयने समजवाथी समस्त द्वादशांगीनुं रहस्य समजावायोग्य छे.

हाल तो आचारांगादि जे वांचो तेनुं वधारे अनुप्रेक्षन करशो. केटलांक उपदेशपत्रोपरथी ते सहजमां समजाई शकशे. सर्व मुमुक्षुने प्रणाम प्राप्त थाय.

७१०. सायला. वैशाख सुद १५. १९५३.

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग ए कर्मबंधनां पांच कारण छे. कोई ठेकाणे प्रमाद शिवाय चार कारण दर्शाव्यां होय छे. त्यां मिथ्यात्व, अविरति, अने कषायमां प्रमादने अंतर्भूत कर्यो होय छे.

प्रदेशबंध शब्दनो अर्थ शास्त्र परिभाषाए. परमाणु सामान्यपणे एक प्रदेशावगाही छे. तेवुं एक परमाणुनुं ग्रहण ते एक प्रदेश कहेवाय. जीव अनंत परमाणु कर्मबंधे ग्रहण करे छे. ते परमाणु जो विस्तर्यां होय तो अनंत प्रदेशी थई शके, तेथी अनंत प्रदेशनो बंध कहेवाय. तेमां मंद अनंतादिथी भेद पडे छे; अर्थात् अल्प प्रदेशबंध कह्यो होय त्यां परमाणु अनंत समजवां, पण ते अनंतनुं सघनपणुं अल्प समजवुं. तेथी विशेष विशेष लख्युं होय तो अनंतता सघन समजवी.

कंईपण नहीं मुंझातां आद्यंत कर्मग्रंथ वांचवा, विचारवायोग्य छे.

७११. ईडर. वैशाख वद १२ शुक. १९५३.

तथारूप (यथार्थ) आप्त, मोक्षमार्ग माटे जेना विश्वासे प्रवर्त्ती शकाय एवा, पुरुषनो जीवने समागम थवामां कोईएक पुण्य हेतु जोईए छैये; तेनुं ओळखाण थवामां महत् पुण्य

जोईए छैये, अने तेनी आज्ञा–भक्तिए प्रवर्त्तवामां महत् महत् पुण्य जोईए छैये; एवां ज्ञानीनां वचन छे, ते साचां छे, एम प्रत्यक्ष अनुभवाय एवुं छे.

तथारूप आप्त पुरुषना अभाव जेवो आ काळ वर्त्ते छे. तोपण आत्मार्थी जीवे तेवो समागम इच्छतां तेना अभावे पण विशुद्धिस्थानकना अभ्यासनो लक्ष अवश्य करीने कर्त्तव्य छे.

७१२.

केवळ निराशा पामवाथी जीवने सत्समागमनो प्राप्त लाभ पण शिथिल थई जाय छे. सत्समागमना अभावनो खेद राखतां छतां पण सत्समागम थयो छे ए परमपुण्य योग बन्यो छे. माटे सर्वसंगत्यागयोग बनतांसुधीमां गृहस्थवासे स्थिति होय त्यां पर्यंत ते प्रवृत्ति, नीतिसह, कंई पण जाळवी लईने परमार्थमां उत्साह सहित प्रवर्त्ति विशुद्धिस्थानक नित्य अभ्यासतां रहेवुं ए ज कर्त्तव्य छे.

७१३. मुंबई. जेठ सुद. १९५३.

(१)

स्वभाव जाग्रतदशा.

चित्र सारी न्यारी, परजंक न्यारो, सेज न्यारी,
चादर भी न्यारी, इहां जूठी मेरी थपना;
अतीत अवस्था सैन, निद्रा वही कोउ पैन,
विद्यमान पलक न, यामें अब छपना;
श्वास औ सुपन दोउ, निद्राकी अलंग बुझे,
सूझै सब अंग लखी, आतम दरपना;
त्यागी भयो चेतन, अचेतनताभाव त्यागी,
भाले दृष्टि खोलिके, संभाले रूप अपना.

(२)

अनुभव उत्साहदशा.

जैसो निरभेद रूप, निहचें अतीत हुंतो,
तैसो निरभेद अब, भेदको न गहेगो!
दीसे कर्मरहीत सहीत सुख समाधान,
पायो निज थान फिरि बाहिर न वहेगो;
कबहु कदाचि अपनो सुभाउ त्यागि करि,
राग रस राचिके न, परवस्तु गहेगो;
अमलान ज्ञान विद्यमान परगट भयो,
याहि भांति आगम अनंत काल रहेगो.

(३)

स्थिति दशा.

एक परिनाम के न, करता दरब दोय,
दोय परिनाम एक, द्रव्य न धरतु है;
एक करतूति दोऊ, द्रव्य कबहु न करे,
दोउ करतुति एक, द्रव्य न करतु है;
जीव पुद्गल एक खेत अवगाहि दोउ,
अपने अपने रूप, दोउ न टरतु है,
जड परिनामनिको, करता है पुद्गळ,
चिदानंद चेतन सुभाव आचरतु है.

(४)*

ॐ सर्वज्ञ.

सर्व अन्यभावथी आत्मा रहित छे, केवळ एम जेने अनुभव वर्त्ते छे ते मुक्त छे.

बीजां सर्व द्रव्यथी असंगपणुं, क्षेत्रथी असंगपणुं, काळथी असंगपणुं अने भावथी असंगपणुं सर्वथा जेने वर्त्ते छे ते मुक्त छे.

अटळ अनुभवस्वरूप आत्मा सर्व द्रव्यथी प्रत्यक्ष जूदो भासवो त्यांथी मुक्तदशा वर्त्ते छे. ते पुरुष मौन थाय छे, ते पुरुष अप्रतिबद्ध थाय छे, ते पुरुष असंग थाय छे, ते पुरुष निर्विकल्प थाय छे, अने ते पुरुष मुक्त थाय छे.

जेणे त्रणे काळने विषे देहादिथी पोतानो कंईपण संबंध नहोतो एवी असंगदशा उत्पन्न करी ते भगवान्‌रूप सत्पुरुषोने नमस्कार छे.

(५)

तिथि आदिनो विकल्प छोडी निज विचारमां वर्त्तवुं ए ज कर्त्तव्य छे. शुद्ध सहज आत्मस्वरूप.

७१४. मुंबई. जेठ सुदि ८ भोम. १९५३.

जेने कोई पण प्रत्ये राग, द्वेष रह्या नथी ते महात्माने वारंवार नमस्कार.

१. परमयोगी एवा श्री ऋषभदेवादि पुरुषो पण जे देहने राखी शक्या नथी, ते देहमां एक विशेषपणुं रह्युं छे ते ए के तेनो संबंध वर्त्ते त्यांसुधीमां जीवे असंगपणुं, निर्मोहपणुं करी लई अबाध्य अनुभवस्वरूप एवुं निजस्वरूप जाणी बीजा सर्व भाव प्रत्येथी व्यावृत्त (छूटा) थवुं, के जेथी फरी जन्ममरणनो फेरो न रहे.

२. ते देह छोडती वखते जेटला अंशे असंगपणुं, निर्मोहपणुं, यथार्थ समरसपणुं रहे छे तेटलुं मोक्षपद नजीक छे एम परम ज्ञानी पुरुषनो निश्चय छे.

---

* आराधना. श्री सोभागनो देह जेठ वद १० ना दिवसे पड्यो. आंक ७१३-१४-१५ एकांत आत्मार्थ लक्षना तेना पर छे. म. कि.

३. आ देहे करवा योग्य कार्य तो एक ज छे के कोई प्रत्ये राग अथवा कोई प्रत्ये किंचित् मात्र द्वेष न रहे, सर्वत्र समदशा वर्त्ते, ए ज कल्याणनो मुख्य निश्चय छे.

४. कंईपण मन, वचन, कायाना योगथी अपराध थयो होय, जाणतां अथवा अजाणतां, ते सर्व विनयपूर्वक खमावुं छउं; घणा नम्र भावथी खमावुं छउं.

७१५. मुंबई. जेठ वद ६ रवि. १९५३.

परम पुरुष दशा वर्णन.

१.

कीचसो कनक जाके, नीचसो नरेशपद,
मीचसी मित्ताई, गरवाई जाके गारसी;
जहरसी जोग जानि, कहरसी करामति,
हहरसी हौंस, पुद्गलछबी छारसी;
जालसो जगविलास, भालसो भुवनवास,
कालसो कुटुंबकाज, लोकलाज लारसी;
सीठसो सुजस जानै, बीठसो बखत मानै,
ऐसी जाकी रीति ताही, बंदत बनारसी.

जे कंचनने कादव सरखुं जाणे छे, राजगादीने नीचपद सरखी जाणे छे, कोईथी स्नेह करवो तेने मरण समान जाणे छे, मोटाईने लीपवानी गार जेवी जाणे छे, कीमिया वगेरे जोगने झेर समान जाणे छे, सिद्धि वगेरे ऐश्वर्यने अशाता समान जाणे छे, जगतमां पूज्यता थवा आदिनी हौंसने अनर्थ समान जाणे छे, पुद्गलनी छबी एवी औदारिकादि कायाने राख जेवी जाणे छे, जगत्‌ना भोग विलासने मुंझावारूप जाळ समान जाणे छे, घरवासने भाला समान जाणे छे, कुटुंबनां कार्यने काळ एटले मृत्यु समान जाणे छे, लोकमां लाज वधारवानी इच्छाने मुखनी लाळ समान जाणे छे, कीर्त्तिनी इच्छाने नाकना मेल जेवी जाणे छे, अने पुण्यना उदयने जे विष्टा समान जाणे छे, एवी जेनी रीति होय तेने बनारसीदास वंदना करे छे.

२. कोईने अर्थे विकल्प नहीं आणतां असंगपणुं ज राखशो. जेम जेम सत्पुरुषनां वचन तेमने प्रतीतिमां आवशे, जेम जेम आज्ञाथी अस्थिमिंजा रंगाशे तेम तेम ते ते जीव आत्मकल्याणने सुगमपणे पामशे, एम निःसंदेह छे.

खरा अंतःकरणे विशेष सत्समागमना आश्रयथी जीवने उत्कृष्ट दशा पण घणा थोडा वखतमां प्राप्त थाय छे.

३. व्यवहार अथवा परमार्थ संबंधी कोईपण जीवविषेनी वृत्ति होय ते उपशांत करी केवळ असंग उपयोगे अथवा परमपुरुषनी उपर कही छे ते दशाना अवलंबने आत्मस्थिति करवी एम विज्ञापना छे, केमके बीजो कोईपण विकल्प राखवा जेवुं नथी. जे कोई साचां अंतःकरणे सत्पुरुषनां वचनने ग्रहण करशे ते सत्यने पामशे एमां कंई संशय नथी, अने शरीर निर्वाहादि

व्यवहार सौ सौना प्रारब्ध प्रमाणे प्राप्त थवायोग्य छे, एटले ते विषे पण कंई विकल्प राखवायोग्य नथी. जे विकल्प तमे घणुं करीने शमाव्यो छे, तो पण निश्चयना बळवानपणाने अर्थे दर्शाव्युं छे.

४. सर्व जीवप्रत्ये, सर्व भावप्रत्ये अखंड एकरस वीतरागदशा राखवी ए ज सर्व ज्ञाननुं फळ छे.

आत्मा शुद्धचैतन्य, जन्मजरामरणरहित असंग स्वरूप छे, एमां सर्व ज्ञान शमाय छे; तेनी प्रतीतिमां सर्व सम्यक्दर्शन शमाय छे; आत्माने असंगस्वरूपे स्वभावदशा रहे ते सम्यक् चारित्र, उत्कृष्ट संयम अने वीतरागदशा छे. जेना संपूर्णपणानुं फळ सर्वदुःखनो क्षय छे, ए केवळ निःसंदेह छे; केवळ निःसंदेह छे. ए ज विनंति.

७१६. मुंबई. जेठ वदी १२ शनि. १९५३.

आर्य श्री सोभागना मरण समाचार वांची घणो खेद थयो छे. जेम जेम तेमना अद्भुत गुणो-प्रत्ये दृष्टि जाय छे, तेम तेम अधिक अधिक खेद थाय छे.

जीवने देहनो संबंध ए ज रीते छे. तेम छतां पण अनादिथी ते देहने त्यागतां जीव खेद पाम्या करे छे, अने तेमां दृढ मोहथी एकपणानी पेठे वर्ते छे; जन्ममरणादि संसारनुं मुख्य बीज ए ज छे. श्री सोभागे तेवा देहने त्यागतां मोटा मुनियोने दुर्लभ एवी निश्चल असंगताथी निज उपयोगमय दशा राखीने अपूर्व हित कर्युं छे, एमां संशय नथी.

वडिलपणाथी तथा तेमना तमाराप्रत्ये घणा उपकार होवाथी, तेम ज तेमना गुणोना अद्भुतपणाथी तेमनो वियोग तमने वधारे खेदकारक थयो छे, अने थवायोग्य छे. तेमनो तमारा प्रत्येना संसारी वडीलपणानो खेद विस्मरण करी तेमणे तमारा सर्वे प्रत्ये जे परमउपकार कर्यो होय तथा तेमना गुणोनुं जे जे अद्भुतपणुं तमने भासतुं होय तेने वारंवार संभारी, तेवा पुरुषनो वियोग थयो तेनो अंतरमां खेद राखी, तेमणे आराधवायोग्य जे जे वचनो अने गुणो कह्यां होय तेनुं स्मरण आणी तेमां आत्माने प्रेरवो एम तमो सर्वप्रत्ये विनंति छे. समागममां आवेला मुमुक्षुओने श्री सोभागनुं स्मरण सहेजे घणा वखत सुधी रहेवायोग्य छे.

मोहेकरीने जे समये खेद थाय ते समये पण तेमना गुणोनुं अद्भुतपणुं स्मरणमां आणी मोहथी थतो खेद शमावीने गुणोना अद्भुतपणानो विरह थयो ते प्रकारमां ते खेद प्रवर्त्ताववो योग्य छे.

आ क्षेत्रे आ काळमां श्री सोभाग जेवा वीरला पुरुष मळे एम अमने वारंवार भासे छे.

धीरजथी सर्वेए खेद शमाववो, अने तेमना अद्भुत गुणोनो अने उपकारी वचनोनो आश्रय करवो योग्य छे. श्री सोभाग मुमुक्षुए विस्मरण करवायोग्य नथी.

संसारनुं स्वरूप स्पष्ट जेणे जाण्युं छे तेने ते संसारना पदार्थनी प्राप्तिथी के अप्राप्तिथी हर्ष

शोक थवायोग्य नथी, तोपण एम जणाय छे के सत्पुरुषना समागमनी प्राप्तिथी कंईपण हर्ष अने तेना वियोगथी कंईपण खेद अमुक गुणस्थानकसुधी तेमने पण थवायोग्य छे.

आत्मसिद्धि ग्रंथ विचारवानी इच्छा होय तो विचारशो; पण ते पहेलां केटलांक वचनो अने सद्ग्रंथो विचारवानुं बनशे, तो आत्मसिद्धि बळवान उपकारनो हेतु थशे, एम लागे छे.

श्री सोभागनी सरळता, परमार्थसंबंधी निश्चय, मुमुक्षुप्रत्ये परम उपकारता आदि गुणो वारंवार विचारवायोग्य छे. शांतिः शांतिः शांतिः

७१७. मुंबई. अशाड सुद ४ रवि. १९५३.

श्री सोभागने नमस्कार.

१. श्री सोभागनी मुमुक्षुदशा तथा ज्ञानीना मार्गप्रत्येनो तेनो अद्भुत निश्चय वारंवार स्मृतिमां आव्या करे छे.

२. सर्व जीव सुखने इच्छे छे, पण कोई वीरला पुरुष ते सुखनुं यथार्थ स्वरूप जाणे छे.

जन्म, मरणआदि अनंत दुःखनो आत्यंतिक (सर्वथा) क्षय थवानो उपाय अनादि काळथी जीवना जाणवामां नथी. ते उपाय जाणवानी अने करवानी साची इच्छा उत्पन्न थये जीव जो सत्पुरुषना समागमनो लाभ पामे तो ते उपायने जाणी शके छे, अने ते उपायने उपासीने सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे.

तेवी साची इच्छा पण घणुंकरीने जीवने सत्पुरुषना समागमथी प्राप्त थाय छे. तेवो समागम, ते समागमनी ओळखाण, दर्शावेला मार्गनी प्रतीति अने तेम ज चालवानी प्रवृत्ति जीवने परम दुर्लभ छे.

'मनुष्यपणुं, ज्ञानीनां वचनोनुं श्रवण प्राप्त थवुं, तेनी प्रतीति थवी अने तेमणे कहेला मार्गमां प्रवृत्ति थवी परम दुर्लभ छे,' एम श्री वर्धमानस्वामीए उत्तराध्ययनना त्रीजा अध्ययनमां उपदेश्युं छे.

प्रत्यक्ष सत्पुरुषना समागम अने ते आश्रयमां विचरता मुमुक्षुओने मोक्षसंबंधी बधां साधनो अल्प प्रयासे अने अल्प काळे प्राये (घणुंकरीने) सिद्ध थाय छे; पण ते समागमनो योग पामवो बहु दुर्लभ छे. ते ज समागमना योगमां मुमुक्षु जीवनुं निरंतर चित्त वर्त्ते छे.

सत्पुरुषनो योग पामवो तो सर्वकाळमां जीवने दुर्लभ छे. तेमां पण आवा दुसम काळमां तो क्वचित् ज ते योग बने छे. वीरला ज सत्पुरुष विचरे छे. ते समागमनो लाभ अपूर्व छे एम जाणीने जीवे मोक्ष मार्गनी प्रतीति करी ते मार्गनुं निरंतर आराधन करवुं योग्य छे.

ते समागमनो योग न होय त्यारे आरंभ परिग्रह प्रत्येथी वृत्तिने ओसारवी; सत्शास्त्रनो परिचय विशेष करीने कर्त्तव्य छे. व्यवहारिक कार्योनी प्रवृत्ति करवी पडती होय तोपण तेमांथी वृत्तिने मोळी पाडवा जे जीव इच्छे छे ते जीव मोळी पाडी शके छे; अने सत्शास्त्रना परिचयने अर्थे घणो अवकाश प्राप्त करी शके छे.

आरंभ परिग्रहपरथी जेनी वृत्ति खेद पामी छे, एटले तेने असार जाणी ते प्रत्येथी जे जीवो ओसर्या छे ते जीवोने सत्पुरुषोनो समागम अने सत्शास्त्रनुं श्रवण विशेषकरीने हितकारी थाय छे. आरंभ परिग्रहपर विशेष वृत्ति वर्त्तती होय ते जीवमां सत्पुरुषनां वचननुं अथवा सत्शास्त्रनुं परिणमन थवुं कठण छे.

आरंभ परिग्रहपरथी वृत्ति मोळी पाडवानुं अने सत्शास्त्रना परिचयमां रुची करवानुं प्रथम कठण पडे छे. केमके जीवनो अनादि प्रकृतिभाव तेथी जुदो छे; तोपण जेणे तेम करवानो निश्चय कर्यो छे, ते तेम करी शक्या छे. माटे विशेष उत्साह राखी ते प्रवृत्ति कर्त्तव्य छे.

सर्व मुमुक्षुओए आ वातनो निश्चय अने नित्य नियम करवो घटे छे, प्रमाद अने अनियमित पणुं टाळवुं घटे छे.

७१८.

साचां ज्ञान विना अने साचां चारित्र विना जीवनुं कल्याण न थाय ए निःसंदेह छे. सत्पुरुषना वचननुं श्रवण, तेनी प्रतीति, अने तेनी आज्ञाए प्रवर्त्ततां जीव साचां चारित्रने पामे छे, एवो निःसंदेह अनुभव थाय छे.

अत्रेथी योगवासिष्ठनुं पुस्तक मोकल्युं छे, ते पांच दश वार फरि फरीने वांचवुं तथा वारंवार विचारवुं योग्य छे.

७१९. मुंबई. अषाड वद १ गुरु. १९५३.

(१) शुभेच्छाथी मांडीने शैलेसीकरण पर्यंतनी सर्व क्रिया जे ज्ञानीने सम्मत छे, ते ज्ञानीनां वचन त्याग वैराग्यनो निषेध करवामां प्रवर्त्ते नहीं; त्याग वैराग्यनां साधन-रूपे प्रथम त्याग वैराग्य आवे छे तेनो पण ज्ञानी निषेध करे नहीं.

(२) कोईएक जड क्रियामां प्रवृत्ति करी ज्ञानीना मार्गथी विमुख रहेता होय अथवा मतिना मुढत्वने लीधे उंची दशा पामतां अटकता होय, अथवा असत् समागमथी मति व्यामोह पामी अन्यथा त्याग वैराग्यने त्याग वैराग्यपणे मानी लीधा होय तेना निषेधने अर्थे करुणाबुद्धिथी ज्ञानी योग्यवचने तेनो निषेध क्वचित् करता होय तो व्यामोह नहीं पामतां तेनो सद्हेतु समजी यथार्थ त्याग वैराग्यनी क्रियामां अंतर् तथा बाह्यमां प्रवर्त्तवुं योग्य छे.

७२०.

(१) सकळ संसारी इंद्रियरामी, मुनि गुण आतमरामी रे,
मुख्य पणे जे आतमरामी, ते कहिये निःकामी रे.

(२) आर्य सोभागनी अंतरंगदशा अने देह मुक्त समयनी दशा हे मुनियो! तमारे वारंवार अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे.

(३) हे मुनियो! द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी असंगपणे विचरवानो सतत उपयोग सिद्ध करवो योग्य छे. जेमणे जगत्सुखस्पृहा छोडी ज्ञानीना मार्गनो आश्रय ग्रहण

कर्यो छे, ते अवश्य ते असंग उपयोगने पामे छे. जे श्रुतथी असंगता उल्लसे ते श्रुतनो परिचय कर्त्तव्य छे.

७२१. मुंबई. अषाड वद ११ रवि. १९५३.

परम संयमी पुरुषोने नमस्कार.

असारभूत व्यवहार सारभूत प्रयोजननी पेठे करवानो उदय वर्त्यो छतां जे पुरुषो ते उदयथी क्षोभ न पामतां सहजभाव स्वधर्ममां निश्चळपणे रह्या छे, ते पुरुषोनां भीष्मवृत्तनुं वारंवार स्मरण करीए छैये.

७२२. मुंबई. श्रा. शु. ३ रवि. १९५३.

(१) परम उत्कृष्ट संयम जेना लक्षमां निरंतर वर्त्यो करे छे ते सत्पुरुषोना समागमनुं ध्यान निरंतर छे.

(२) प्रतिष्ठित व्यवहारनी श्री ०००००० नी जिज्ञासाथी अनंतगुण विशिष्ट जिज्ञासा वर्त्ते छे. बळवान, अने वेद्याविना अटळ, उदय होवाथी अंतरंग खेद समता सहित वेदीए छैये. दीर्घकाळने घणा अल्पपणामां लाववानां ध्यानमां वर्त्ताय छे.

(३) यथार्थउपकारीपुरुषप्रत्यक्षमां एकत्व भावना आत्मशुद्धिनी उत्कृष्टता करे छे.

७२३. मुंबई. श्रा. शु. १५ गुरु. १९५३.

(१) दीर्घकाळनी जेनी स्थिति छे, तेने अल्पकाळनी स्थितिमां आणि जेमणे कर्मक्षय कर्यो छे, ते महात्माओने नमस्कार.

(२) सद्वर्त्तन, सद्ग्रंथ अने सत्समागममां प्रमाद कर्त्तव्य नथी.

७२४.

(१) "मोक्षमार्ग प्रकाश" नामे ग्रंथ मुमुक्षु जीवे विचारवा योग्य छे.

ते अवलोकन करतां कोई विचारमां मतांतर जेवुं लागे तो नहीं मुंझातां ते स्थळे वधारे मनन करवुं. अथवा सत्समागमने योगे ते स्थळ समजवुं योग्य छे.

(२) परमोत्कृष्ट संयममां स्थितिनी तो वात दूर रही, पण तेना स्वरूपनो विचार थवो पण विकट छे.

७२५.

सम्यग् दृष्टि अभक्ष्याहार करे ए आदि प्रश्नो लख्यां, ए प्रश्नोनो हेतु विचारवाथी जणावा योग्य छे के प्रथम प्रश्नमां कोईएक दृष्टांत ग्रहण करी जीवे शुद्ध परिणामनी हानि करवा जेवुं छे. **मतिना अस्थिरपणाथी जीव परिणामनो विचार करी नथी शकतो.**

श्रेणिकादिना सबंधमां कोईएक स्थळे एवी वात कोईएक ग्रंथमां जणावी छे; पण ते कोई ए प्रवृत्ति करवा अर्थे जणावी नथी, तेम ते वात यथार्थ तेम ज छे, तेम पण नथी.

सम्यग्दृष्टि पुरुषने अल्प मात्र व्रत नथी होतुं तो पण सम्यग्दर्शन आव्या पछी न वमे तो वधारेमां

वधारे पंदर भवे मोक्ष पामे एवुं सम्यग् दर्शननुं बळ छे, एवा हेतुए दर्शावेली वातने बीजां रूपमां लई न जवी. **सत्पुरुषनी वाणी विषय अने कषायना अनुमोदनथी अथवा राग द्वेषना पोषणथी रहित होय छे,** एवो निश्चय राखवो, अने गमे तेवे प्रसंगे ते ज दृष्टिथी अर्थ करवो योग्य छे.

७२६. मुंबई. श्रा० वद ८ शुक. १९५३.

(१) मोहमुद्गर अने मणिरत्नमाळा ए बे पुस्तको हाल वांचवानो परिचय राखशो. ए बे पुस्तकमां मोहना स्वरूपना तथा आत्मसाधनना केटलाक उत्तम प्रकारो बताव्या छे.

(२) पारमार्थिक करुणाबुद्धिथी निष्पक्षपातपणे कल्याणनां साधनना उपदेष्टा पुरुषनो समागम, उपासना अने आज्ञानुं आराधन कर्त्तव्य छे. तेवा समागमना वियोगमां सत्शास्त्रनो यथामति परिचय राखी सदाचारथी प्रवर्तवुं योग्य छे.

७२७. मुंबई. श्रावण. वद १० रवि. १९५३.

'मोक्षमार्गप्रकाश' श्रवण करवानी जे जिज्ञासुओने जिज्ञासा छे, तेमने श्रवण करावशो. वधारे स्पष्टीकरणथी अने धीरजथी श्रवण करावशो. श्रोताने कोईएक स्थानके विशेष संशय थाय तो तेनुं समाधान करवुं योग्य छे. कोईएक स्थळे समाधान अशक्य जेवुं देखाय तो कोई एक महात्माने योगे समजवानुं जणावीने श्रवण अटकाववुं नहीं; तेमज कोईएक महात्मा शिवाय अन्यस्थानके ते संशय पूछवाथी विशेष भ्रमनो हेतु थशे, अने निःसंशयपणाथी श्रवण थयेलां श्रवणनो लाभ वृथा जेवो थशे, एवी दृष्टि श्रोताने होय तो वधारे हितकारी थाय.

७२८. मुंबई. श्रा. व. १२. १९५३.

ॐ

१. उत्कृष्ट भूमिकामां स्थिति थवापर्यंत श्रुतज्ञाननुं अवलंबन लईने सत्पुरुषो पण स्वदशामां स्थिर रहित शके छे एम जिननो अभिमत छे, ते प्रत्यक्ष सत्य देखाय छे.

२. सर्वोत्कृष्ट भूमिका पर्यंतमां श्रुतज्ञान (ज्ञानी पुरुषनां वचनो) नुं अवलंबन जे जे वखते मंद पडे छे ते ते वखते कंई कंई चपळपणुं सत्पुरुषो पण पामी जाय छे, तो पछी सामान्य मुमुक्षु जीवो के जेने विपरीत समागम, विपरित श्रुतादि अवलंबन रह्यां छे तेने वारंवार विशेष विशेष चपळपणुं थवा योग्य छे. एम छे तो पण जे मुमुक्षुओ सत्समागम, सदाचार अने सत्शास्त्रविचाररूप अवलंबनमां दृढ निवास करे छे, तेने सर्वोत्कृष्ट भूमिकापर्यंत पहोंचवुं कठण नथी; कठण छतां पण कठण नथी.

७२९.

ॐ

द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी जे सत्पुरुषोने प्रतिबंध नथी ते सत्पुरुषोने नमस्कार.

सत्समागम, सत्शास्त्र अने सदाचारमां दृढ निवास ए आत्मदशा थवानां प्रबळ अवलंबन छे.

सत्समागमनो योग दुर्लभ छे, तो पण मुमुक्षुए ते योगनी तीव्र जिज्ञासा राखवी, अने प्राप्ति करवी योग्य छे. ते योगना अभावे तो अवश्य करी सत्शास्त्ररूप विचारना अवलंबने करी सदाचारनी जाग्रति जीवे राखवी घटे छे.

७३०. मुंबई. भाद्र. सुद. ६ गुरु. १९५३.

परम कृपाळु पूज्य पिताश्रीजी.

आज दिवसपर्यंत में आपनो कांईपण अविनय अभक्ति के अपराध कर्यो होय ते बे हाथ जोडी मस्तक नमावीने शुद्ध अंतःकरणथी खमावुं छउं. कृपा करीने आप क्षमा आपशो. मारी मातुश्री प्रत्ये पण ते ज रीते क्षमावुं छउं. तेम ज बीजा साथ सर्वे प्रत्ये में कोईपण प्रकारनो अपराध के अविनय जाणतां अथवा अजाणतां कर्यो होय ते शुद्ध अंतःकरणथी क्षमावुं छउं. कृपा करीने सौ क्षमा आपशोजी.

७३१. मुंबई. भाद्रपद. सुद ९ रवि. १९५३.

१. बाह्य क्रिया अने गुणस्थानकादिए वर्त्तती क्रियानुं स्वरूप चर्चवुं हाल स्वपर उपकारी घणुं करीने नहीं थाय.

२. एटलुं कर्त्तव्य छे के तुच्छ मतमतांतरपर दृष्टि न आपतां असद्वृत्तिना निरोधने अर्थे सत्शास्त्रना परिचय अने विचारमां जीवनी स्थिति करवी.

७३२. मुंबई. भाद्रपद वद ८ रवि. १९५३.

जीवने परमार्थ पामवामां अपार अंतराय छे, तेमां पण आवा काळने विषे तो ते अंतरायोनुं अवर्णनीय बळ होय छे. शुभेच्छाथी मांडी कैवल्य पर्यंतनी भूमिकाए पहोंचतां ठाम ठाम ते अंतरायो जोवामां आवे छे, अने जीवने वारंवार ते अंतरायो परमार्थ प्रत्येथी पाडे छे. जीवने महत्पुण्यना उदयथी जो सत्समागमनो अपूर्व लाभ रह्या करे तो ते निर्विघ्नपणे कैवल्य पर्यंतनी भूमिकाए पहोंची जाय छे. सत्समागमना वियोगमां जीवे आत्मबळ विशेष जाग्रत राखी सत्शास्त्र अने शुभेच्छासंपन्न पुरुषोना समागममां रहेवुं योग्य छे.

७३३. मुंबई. भाद्रवा. वदी ,, रवि. १९५३.

ॐ

१. शरीरादि बळ घटवाथी सर्व मनुष्योथी मात्र दिगम्बरवृत्तिये वर्त्तिने चारित्रनो निर्वाह न थई शके तेथी ज्ञानीए उपदेशेली मर्यादापूर्वक श्वेतांबरपणेथी वर्त्तमान काळ जेवा काळमां चारित्रनो निर्वाह करवाने अर्थे प्रवृत्ति छे, ते निषेध करवा योग्य नथी. तेम ज वस्त्रनो आग्रह करी दिगम्बरवृत्तिनो एकांत निषेध करी वस्त्र मूर्छादि कारणोथी चारित्रमां शिथिलपणुं पण कर्त्तव्य नथी.

दिगम्बर अने श्वेतांबरपणुं देश, काळ, अधिकारी योगे उपकारनो हेतु छे. एटले ज्यां ज्ञानीए जेम उपदेश्युं तेम प्रवर्त्तता आत्मार्थ ज छे.

२. 'मोक्षमार्ग प्रकाश'मां वर्त्तमान जिनागम के जे श्वेताम्बर संप्रदायने मान्य छे तेनो निषेध कर्यो छे, ते निषेध कर्त्तव्य नथी. वर्त्तमान आगममां अमुक स्थळो वधारे संदेहनां स्थान छे, पण सत्पुरुषनी दृष्टिये जोतां तेनुं निराकरण थाय छे, माटे उपशमदृष्टिये ते आगमो अवलोकन करवामां संशय कर्त्तव्य नथी.

७३४. मुंबई. आसो. शुद ८ रवि. १९५२.

ॐ

(१)

(१) सत्पुरुषोना अगाध गंभीर संयमने नमस्कार.

(२) अविषम परिणामथी जेमणे काळकूट विष पीधुं एवा श्री ऋषभादि परम पुरुषोने नमस्कार.

(३) परिणाममां तो जे अमृत ज छे, पण प्रथम दशाए काळकूट विषनी पेठे मुंझवे छे एवा श्री संयमने नमस्कार.

(४) ते ज्ञानने, ते दर्शनने अने ते चारित्रने वारंवार नमस्कार.

(२)

जेनी भक्ति निष्काम छे एवा पुरुषोनो सत्संग के दर्शन ए महत् पुण्यरूप जाणवा योग्य छे.

(३)

(१) पारमार्थिक हेतु विशेषथी पत्रादि लखवानुं बनी शकतुं नथी.

(२) जे अनित्य छे, जे असार छे अने जे अशरणरूप छे ते आ जीवने प्रीतिनुं कारण केम थाय छे ते वात रात्रिदिवस विचारवा योग्य छे.

(३) लोकदृष्टि अने ज्ञानीनी दृष्टिने पश्चिम पूर्व जेटलो तफावत छे. ज्ञानीनी दृष्टि प्रथम निरालंबन छे, रुचि उत्पन्न करती नथी, जीवनी प्रकृतिने मळती आवती नथी. तेथी जीव ते दृष्टिमां रुचिवान थतो नथी, पण जे जीवोए परीसह वेठीने थोडा काळ सुधी ते दृष्टिनुं आराधन कर्युं छे, ते सर्व दुःखना क्षयरूप निर्वाणने पाम्या छे, तेना उपायने पाम्या छे.

जीवने प्रमादमां अनादिथी रती छे, पण तेमां रती करवा योग्य कंई देखातुं नथी.

७३५.

ॐ

(१) सर्वजीव प्रत्ये अमारे तो क्षमादृष्टि छे.

(२) सत्पुरुषनो योग तथा सत्समागम मळवो बहु कठण छे, एमां संशय नथी. ग्रीष्म ऋतुना तापथी तपायमान थयेला प्राणीने शीतळ वृक्षनी छायानी पेठे मुमुक्षु जीवने सत्पुरुषनो योग तथा सत्समागम उपकारी छे. सर्व शास्त्रोमां तेवो योग मळवो दुर्लभ कह्यो छे.

(३) 'शांत सुधारस' अने 'योग दृष्टि समुच्चय' ग्रंथ हाल विचारवानुं राखशो.

७३६.

ॐ

(१) विशेष उंची भूमिकाने पामेला मुमुक्षुओने पण सत्पुरुषोनो योग अथवा सत्समागम आधारभूत छे, एमां संशय नथी. निवृत्तिमान् द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावनो योग बनवाथी जीव उत्तरोत्तर उंची भूमिकाने पामे छे.

(२) निवृत्तिमान् भाव परिणाम थवाने निवृत्तिमान् द्रव्य, क्षेत्र अने काळ जीवे प्राप्त करवा योग्य छे. शुद्धज्ञान वगरना आ जीवने कोईपण योगथी शुभेच्छा, कल्याण करवानी इच्छा प्राप्त थाय अने निस्पृह परम पुरुषनो योग बने तो ज आ जीवने भान आववुं योग्य छे. ते वियोगमां सत्शास्त्र अने सदाचारनो परिचय कर्त्तव्य छे; अवश्य कर्त्तव्य छे.

७३७. मुंबई. आशो. वद ७. १९५३.

१. उपरनी भूमिकाओमां पण अवकाश प्राप्त थये अनादि वासनानुं संक्रमण थई आवे छे, अने आत्माने वारंवार आकूळ व्याकूळ करी दे छे; वारंवार एम थया करे के हवे उपरनी भूमिकानी प्राप्ति थवी दुर्लभ ज छे, अने वर्त्तमान भूमिकामां स्थिति पण फरी थवी दुर्लभ छे. एवा असंख्य अंतरायपरिणाम उपरनी भूमिकामां पण बने छे, तो पछी शुभेच्छादि भूमिकाए तेम बने ए कंई आश्चर्यकारक नथी.

२. तेवा अंतरायथी खेद नहीं पामतां आत्मार्थी जीवे पुरुषार्थदृष्टि करवी अने शूरवीरपणुं राखवुं; हितकारी द्रव्यक्षेत्रादि योगनुं अनुसंधान करवुं; सत्शास्त्रनो विशेष परिचय राखी वारंवार **हठ करीने पण मनने सद्विचारमां प्रवेशित करवुं.** अने मननां दुरात्म्यपणाथी आकूळ व्याकूळता नहीं पामतां धैर्यथी सद्विचारपंथे जवानो उद्यम करतां जय थई उपरनी भूमिकानी प्राप्ति थाय छे, अने अविक्षेपपणुं प्राप्त थाय छे.

३. 'योगदृष्टिसमुच्चय' वारंवार अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे.

७३८. मुंबई. आसो वद १४ रवि. १९५३.

ॐ

श्रीहरिभद्राचार्ये 'योगदृष्टिसमुच्चय' ग्रंथ संस्कृतमां रच्यो छे. 'योगबिन्दु' नामे योगनो बीजो ग्रंथ पण तेमणे रच्यो छे. हेमचंद्राचार्ये 'योगशास्त्र' नामे ग्रंथ रच्यो छे. श्री हरिभद्रकृत 'योग-दृष्टिसमुच्चय'नी पद्धतिए गुर्जर भाषामां श्री यशोविजयजीए स्वाध्यायनी रचना करी छे.

शुभेच्छाथी मांडीने निर्वाणपर्यंतनी भूमिकाओमां बोधतारतम्य तथा चारित्रस्वभावनुं तारतम्य मुमुक्षुजीवने वारंवार श्रवण करवा योग्य, विचार करवा योग्य अने स्थिति करवा योग्य आशयथी ते ग्रंथमां प्रकाश्युं छे. यमथी मांडीने समाधिपर्यंत अष्टांगयोग बे प्रकारे छे; एक प्राणादि निरोधरूप, बीजो आत्मस्वभावपरिणामरूप.

योगदृष्टिसमुच्चयमां आत्मस्वभावपरिणामरूप योगनो मुख्य विषय छे . वारंवार ते विचारवा योग्य छे.

वर्ष ३१ मुं.

७३९. मुंबई. कार्तिक. १९५४.

शुद्ध चैतन्य
अनंत आत्मद्रव्य
केवळज्ञान स्वरूप
शक्तिरूपे
ते
जेने संपूर्ण व्यक्त थयुं छे, तथा व्यक्त थवानो
जे पुरुषो मार्ग पाम्या छे ते पुरुषोने
अत्यंत भक्तिथी नमस्कार.

७४०. मुंबई. कार्तिक वद १. बुध. १९५४.

जे आर्यो अन्य क्षेत्रे हवे विहार करवाना आश्रममां छे, तेमणे जे क्षेत्रमां शांतरसप्रधानवृत्ति रहे, निवृत्तिमान् द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावनो लाभ थाय तेवां क्षेत्रमां विचरवुं योग्य छे.

७४१. मुंबई. का. वद ५ रवि. १९५४.

ॐ

केवळ अंतर्मुख थवानो सत्पुरुषोनो मार्ग सर्वदुःखक्षयनो उपाय छे, पण ते कोईक जीवने समजाय छे. महत्पुण्यना योगथी, विशुद्ध मतिथी, तीव्र वैराग्यथी अने सत्पुरुषना समागमथी ते उपाय समजावा योग्य छे.

ते समजवानो अवसर एकमात्र आ मनुष्य देह छे. ते पण अनियमित काळना भयथी ग्रहित छे; त्यां प्रमाद थाय छे, ए खेद अने आश्चर्य छे.

७४२. मुंबई. कार्तिक वद १२. १९५४.

ॐ

आत्मदशाने पामी निर्द्वंद्वपणे यथाप्रारब्ध विचरे छे, एवा महात्माओनो योग जीवने दुर्लभ छे. तेवो योग बन्ये जीवने ते पुरुषनी ओळखाण पडती नथी, अने तथारूप ओळखाण पड्याविना ते महात्मा प्रत्ये दृढाश्रय थतो नथी.

ज्यांसुधी आश्रय दृढ न थाय त्यांसुधी उपदेश परिणाम पामतो नथी.

उपदेश परिणम्याविना सम्यग्दर्शननो योग बनतो नथी.

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना जन्मादि दुःखनी आत्यंतिक निवृत्ति बनवा योग्य नथी.

तेवा महात्मा पुरुषोनो योग तो दुर्लभ छे, तेमां संशय नथी. पण आत्मार्थी जीवोनो योग बनवो पण कठण छे. तोपण क्वचित् क्वचित् ते योग वर्त्तमानमां बनवा योग्य छे.

सत्समागम अने सत्शास्त्रनो परिचय कर्तव्य छे.

७४३. मुंबई. मार्गशीर्ष शुद ५ रवि. १९५४.

ॐ

१. क्षयोपशम, उपशम, क्षायक, पारिणामिक, औदयिक अने सान्निपातिक ए छ भावनो लक्षकरी आत्माने ते भावे अनुप्रेक्षी जोतां सद्विचारमां विशेष स्थिति थशे.

२. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जे आत्मभावरूप छे, ते समजावा माटे उपर कह्या ते भावो विशेष अवलंबनभूत छे.

७४४.

ॐ

खेद नहीं करतां शूरवीरपणुं ग्रहीने ज्ञानीने मार्गे चालतां मोक्ष पाळटण सुलभ ज छे.

विषयकषायादि विशेष विकार करी जाय ते वखते विचारवानने पोतानुं निर्वीर्यपणुं जोईने घणोज खेद थाय छे, अने आत्माने वारंवार निंदे छे, फरिफरीने तिरस्कारनी वृत्तिथी जोई, फरी महंत पुरुषना चरित्र अने वाक्यनुं अवलंबन ग्रहण करी, आत्माने शौर्य उपजावी, ते विषयादि सामे अति हठ करीने तेने हठावे छे, त्यांसुधी नीचे मने बेसता नथी, तेम एकलो खेद करीने अटकी रहेता नथी. ए ज वृत्तिनुं अवलंबन आत्मार्थी जीवोए लीधुं छे, अने तेथी ज अंते जय पाम्या छे.

आ वात सर्व मुमुक्षुओए मुखे करी हृदयमां स्थिर करवा योग्य छे.

७४५.

(१) क्या गुणो अंगमां आववाथी मार्गानुसारीपणुं तथारूपे कहेवाय?

(२) क्या गुणो अंगमां आववाथी सम्यग्दृष्टिपणुं तथारूपे कहेवाय?

(३) क्या गुणो अंगमां आववाथी श्रुतकेवळज्ञान थाय?

(४) अने कयी दशा थवाथी केवलज्ञान तथारूपपणे थाय, अथवा कही शकाय? सद्विचारवानने आ प्रश्न हितकारी छे.

७४६. मुंबई. पोष शुद ३ रवि. १९५४.

.... ए क्षमा इच्छी जणाव्युं छे के सहजभावथी व्यवहारिक वात लखवानुं बन्युं छे, ते विषे आप खेद निवृत्त करशो. अत्रे ते खेद नथी, पण तमारी दृष्टिमां ते वात रहेशे, एटले **व्यवहारिक वृत्ति रहेशे त्यांसुधी आत्महितने बळवान प्रतिबंध छे,** एम जाणशो. अने तमे पण ते प्रतिबंधमां न प्रवर्ताय तेनो लक्ष राखजो.

अमे आ भलामण आपी छे, ते पर तमे यथाशक्ति पूर्ण विचार करी जोजो अने ते वृत्तिनुं मूळ अंतरथी सर्वथा निवृत्त करी नाखशो. नहीं तो समागमनो लाभ प्राप्त थवो असंभवित छे. आ वात शिथिलवृत्तिथी नहीं पण उत्साहवृत्तिथी माथे चडाववा योग्य छे.

७४७. आणंद. पोष. वद १३ गुरु. १९५४.

(१) श्री सोभागना विद्यमानपणामां कंई आगळथी जणाववुं थतुं, अने हाल तेम नथी बन्युं; एवी कंई पण लोकदृष्टिमां जवुं योग्य नथी.

(२) अविषमभाव विना अमने पण अबंधपणा माटे बीजो कोई अधिकार नथी. मौनपणुंभजवायोग्य मार्ग छे.

७४८. मोरबी. महा शुद ४ बुधवार. १९५४.

ॐ

शुभेच्छाथी मांडीने क्षीणमोहपर्यंत सत्श्रुत अने सत्समागम सेववा योग्य छे. सर्वकाळमां ए साधननुं जीवने दुर्लभपणुं छे, तेमां आवा काळमां दुर्लभपणुं वर्त्ते ते यथासंभव छे.

दुसमकाळ अने हुंडावसर्पिणी नामनो आश्चर्यभाव अनुभवथी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर थाय एवुं छे; आत्मश्रेयइच्छक पुरुषे तेथी क्षोभ न पामतां वारंवार ते योगपर पग दई सत्श्रुत, सत्समागम अने सद्वृत्ति बळवान करवा योग्य छे.

७४९.

आत्मस्वभावनी निर्मळता थवाने माटे मुमुक्षुजीवे बे साधन अवश्य करीने सेववा योग्य छेः सत्श्रुत अने सत्समागम.

प्रत्यक्ष सत्पुरुषोनो समागम क्वचित् क्वचित् जीवने प्राप्त थाय छे, पण जो जीव सद्दृष्टिवान् होय तो सत्श्रुतना घणा काळना सेवनथी थतो लाभ प्रत्यक्ष सत्पुरुषना समागमथी बहु अल्पकाळमां प्राप्त करी शके छे, केमके प्रत्यक्ष गुणातिशयवान निर्मळ चेतनना प्रभाववाळां वचन अने वृत्ति क्रियाचेष्टितपणुं छे. जीवने तेवो समागमयोग प्राप्त थाय एवुं विशेष प्रयत्न कर्त्तव्य छे.

तेवा योगना अभावे सत्श्रुतनो परिचय अवश्य करीने करवा योग्य छे. **शांतरसनुं जेमां मुख्यपणुं छे, शांतरसना हेतुए जेना समस्त उपदेश छे, सर्वे रस शांतरसगर्भित जेमां वर्णव्या छे, एवां शास्त्रनो परिचय ते सत्श्रुतनो परिचय छे.**

७५०.

ॐ

(१) सत्श्रुतनो परिचय जीवे अवश्य करीने कर्त्तव्य छे.

(२) मळ, विक्षेप अने प्रमाद तेमां वारंवार अंतराय करे छे, केमके दीर्घ काळ परिचित छे; पण जो निश्चय करी तेने अपरिचित करवानी प्रवृत्ति करवामां आवे तो तेम थई शके एम छे.

(३) मुख्य अंतराय होय तो ते जीवनो अनिश्चय छे.

(२)

१. आत्मस्वरूपनो निर्णय थवामां अनादिथी जीवनी भूल थती आवी छे, जेथी हमणा थाय एमां आश्चर्य लागतुं नथी.

२. सर्व क्लेशथी अने सर्व दुःखथी मुक्त थवानो आत्मज्ञान शिवाय बीजो कोई उपाय नथी. सद्विचार विना आत्मज्ञान थाय नहीं, अने असत्संग प्रसंगथी जीवनुं विचारबळ प्रवर्त्ततुं नथी एमां किंचित् मात्र संशय नथी.

३. आत्मपरिणामनी स्वस्थताने श्री तीर्थंकर **समाधि** कहे छे, आत्मपरिणामनी अस्वस्थताने श्री तीर्थंकर **असमाधि** कहे छे.

आत्मपरिणामनी सहज स्वरूपे परिणति थवी तेने श्री तीर्थंकर **धर्म** कहे छे.

आत्मपरिणामनी कंई पण चपळ प्रवृत्ति थवी तेने श्री तीर्थंकर **कर्म** कहे छे.

४. श्री जिन तीर्थंकरे जेवो बंध अने मोक्षनो निर्णय कह्यो छे, तेवो निर्णय वेदांतादि दर्शनमां दृष्टिगोचर थतो नथी. अने जेवुं श्री जिनने विषे यथार्थवक्तापणुं जोवामां आवे छे, तेवुं यथार्थ वक्तापणुं बीजामां जोवामां आवतुं नथी.

५. आत्माना अंतर्व्यापार (शुभाशुभ परिणाम धारा) प्रमाणे बंधमोक्षनी व्यवस्था छे, शारीरिक चेष्टा प्रमाणे ते नथी. पूर्वे उत्पन्न करेलां वेदनीय कर्मना उदय प्रमाणे रोगादि उत्पन्न थाय छे, अने ते प्रमाणे निर्बळ, मंद, म्लान, उष्ण, शीत आदि शरीरचेष्टा थाय छे.

६. विशेष रोगना उदयथी अथवा शारीरिक मंदबळथी ज्ञानीनुं शरीर कंपाय, निर्बळ थाय, म्लान थाय, मंद थाय, रौद्र लागे, तेने भ्रमादिनो उदय पण वर्ते; तथापि जे प्रमाणे जीवने विषे बोध अने वैराग्यनी वासना थई छे ते प्रमाणे ते रोगने जीव ते प्रसंगमां घणुंकरी वेदे छे.

७. कोईपण जीवने अविनाशी देहनी प्राप्ति थई एम दीठुं नथी, जाण्युं नथी तथा संभवतुं नथी; अने मृत्युनुं आववुं अवश्य छे, एवो प्रत्यक्ष निःसंशय अनुभव छे, तेम छतां आ जीव ते वात फरि फरी भूली जाय छे ए आश्चर्य छे.

८. जे सर्वज्ञ वीतरागने विषे अनंत सिद्धिओ प्रगटी हती ते वीतरागे पण आ देहने अनित्य दीठो छे. तो पछी बीजा जीवो क्या प्रयोगे देहने नित्य करी शकशे?

९. श्री जिननो एवो अभिप्राय छे, के प्रत्येक द्रव्य अनंत पर्यायवाळुं छे. जीवने अनंता पर्याय छे. परमाणुने पण अनंता पर्याय छे. जीव चेतन होवाथी तेना पर्याय पण चेतन छे, अने परमाणु अचेतन होवाथी तेना पर्याय पण अचेतन छे. जीवना पर्याय अचेतन नथी अने परमाणुना पर्याय सचेतन नथी, एवो श्री जिने निश्चय कर्यो छे अने तेम ज योग्य छे, केमके प्रत्यक्ष पदार्थनुं स्वरूप पण विचारतां तेवुं भासे छे.

७५१. ववाणीआ. महा वद ४ गुरु. १९५४.

आ जीवने उत्तापना मूळ हेतु शुं छे तथा तेनी केम निवृत्ति थती नथी, अने ते केम थाय? ए प्रश्न विशेष करी विचारवा योग्य छे, अंतरमां उतरीने विचारवा योग्य छे.

ज्यांसुधी ए क्षेत्रे* स्थिति रहे त्यांसुधी चित्तने वधारे दृढ राखी वर्त्तवुं.

* मुंबई अने ते जेवां बीजां मोहमयि स्थान. म. कि.

७५२. मोरबी. माह वद. ,, १९५४.

मुमुक्षुपणुं जेम दृढ थाय तेम करो; हारवानो अथवा निराश थवानो कांई हेतु नथी. दुर्लभ योग जीवने प्राप्त थयो तो पछी थोडोक प्रमाद छोडीदेवामां जीवे मुंझावा जेवुं अथवा निराश थवा जेवुं कंईज नथी.

७५३.

व्याख्यानसार.*

१. पहेले गुणस्थानके ग्रंथि छे तेनुं भेदन कर्याविना आत्मा आगळना गुणस्थानके जई शकतो नथी. जोगानजोग मळवाथी अकामनिर्जरा करतो जीव आगळ वधे छे; ने ग्रंथिभेद करवानी नजीक आवे छे. अहीं आगळ ग्रंथिनुं एटलुं बधुं प्रबलपणुं छे के ते ग्रंथिभेद करवामां मोळो पडी जई असमर्थ थई जई पाछो वळे छे; हिम्मत करी आगळ वधवा धारे छे; पण मोहनीयना कारणथी रूपान्तर समजाई पोते ग्रंथिभेद करे छे एम समजे छे; अने उलटुं ते समजवारूप मोहना कारणथी ग्रंथिनुं निबिडपणुं करे छे. तेमांथी कोईक ज जीव जोगानजोग प्राप्त थये अकामनिर्जरा करतां अति बळवान थई ते ग्रंथिने मोळी पाडी अथवा पोची करी आगळ वधी जाय छे. जे अविरतिसम्यक्दृष्टिनामा चोथुं गुणस्थानक छे; ज्यां मोक्षमार्गनी सुप्रतीति थाय छे. आनुं बीजुं नाम 'बोधबीज' छे. अहीं आत्माना अनुभवनी शरुआत थाय छे अर्थात् मोक्ष थवानुं बीज अहीं रोपाय छे.

२. आ 'बोधबीज गुणस्थानक' (चोथा गुणस्थानक) थी तेरमा गुणस्थानक सुधी आत्मअनुभव एकसरखो छे; परंतु ज्ञानावरणीयकर्मनी निरावरणतानुसार ज्ञाननी विशुद्धता ओछी अदकी होय छे तेना प्रमाणमां अनुभवनुं प्रकाशवुं कही शके छे.

३. ज्ञानावरणनुं सर्व प्रकारे निरावरण थवुं ते 'केवलज्ञान' एटले 'मोक्ष;' जे बुद्धिबळथी कहेवामां आवे छे एम नथी; परंतु अनुभवगम्य छे.

४. बुद्धिबळथी निश्चय करेलो सिद्धांत तेथी विशेष बुद्धिबळ अथवा तर्कथी वखते फरी शके छे; परंतु जे वस्तु अनुभवगम्य (अनुभवसिद्ध) थई छे ते त्रणे काळमां फरी शकती नथी.

५. हालना समयमां जैनदर्शनने विषे अविरतिसम्यक्दृष्टिनामा चोथा गुणस्थानकथी अप्रमत्तनामा सातमा गुणस्थानकसुधी आत्मअनुभव स्पष्ट स्वीकारेल छे.

६. सातमाथी सयोगीकेवलीनामा तेरमा गुणस्थानकसुधीनो काळ अंतर्मुहूर्त्तनो छे. तेरमानो काळ वखते लांबो पण होय छे. त्यांसुधी आत्मअनुभव प्रतीतिरूप छे.

---

* वि० सं० १९५४ ना माहथी चैत्रमास सुधीमां, तेमज सं० १९५५ नी सालना ते अरसामां 'श्रीमद्' नी मोरबीमां लांबोवखत स्थिति हती. ते वेळा तेमणे करेलां व्याख्यानोनो एक श्रोता-मुमुक्षुए स्मृतिपरथी टांकेल आ सार छे. म. कि.

७. आ काळने विषे मोक्ष नथी एम मानी जीव मोक्षहेतुभूत क्रिया करी शकतो नथी अने तेवी मान्यताने लईने जीवनुं प्रवर्त्तन बीजी ज रीते थाय छे.

८. पांजरामां पुरेलो सिंह पांजराथी प्रत्यक्ष जूदो छे, तो पण बहार नीकळवाने सामर्थ्यरहित छे. तेम ज ओछा आयुष्यना कारणथी अथवा संघयणादि अन्य साधनोना अभावे आत्मारूपी सिंह कर्मरूपी पांजरामांथी बहार आवी शकतो नथी एम मानवामां आवे तो ते मानवुं सकारण छे.

९. आ असार एवा संसारने विषे मुख्य एवी चार गति छे; जे कर्मबंधथी प्राप्त थाय छे. बंध विना ते गति प्राप्त थती नथी. अबंध एवुं जे मोक्षस्थानक ते बंधथी थनारी एवी जे चार गति तेरूप संसारने विषे नथी. सम्यक्त्व अथवा चारित्रथी बंध थतो नथी ए तो चोकस छे; तो पछी गमे ते काळमां सम्यक्त्व अथवा चारित्र पामे त्यां ते समये बंध नथी; अने ज्यां बंध नथी त्यां संसार नथी.

१०. सम्यक्त्व अने चारित्रमां आत्मानी शुद्ध परिणति छे, तथापि ते साथे मन वचन शरीरना शुभजोग प्रवर्त्ते छे. ते शुभजोगथी शुभ एवो बंध थाय छे. ते बंधने लईने देवादिगति एवो जे संसार ते करवो पडे छे. परंतु तेथी विपरीत जे सम्यक्त्व अने चारित्र जेटले अंशे प्राप्त थाय छे तेटले अंशे मोक्ष प्रगट थाय छे; तेनुं फळ देवादि गति प्राप्त थई ते नथी. देवादि गति जे प्राप्त थई ते उपर बतावेला मन वचन शरीरना शुभजोगथी थई छे; अने अबंध एवुं जे सम्यक्त्व तथा चारित्र प्रगट थयुं छे ते कायम रहीने फरी मनुष्यपणुं पामी फरी ते भागने जोडाई मोक्ष थाय छे.

११. गमे ते काळमां कर्म छे; तेनो बंध छे; अने ते बंधनी निर्जरा छे; अने संपूर्ण निर्जरा तेनुं नाम 'मोक्ष' छे.

१२. निर्जराना बे भेद छेः एक सकाम, एटले सहेतु (मोक्षना हेतुभूत) निर्जरा अने बीजी अकाम एटले विपाकनिर्जरा.

१३. अकामनिर्जरा उदयिक भावे थाय छे. आ निर्जरा जीवे अनंतिवार करी छे; अने ते कर्मबंधनुं कारण छे.

१४. सकामनिर्जरा क्षायोपशमिक भावे थाय छे. जे कर्मना अबंधनुं कारण छे. जेटले अंशे सकाम निर्जरा (क्षायोपशमिक भावे) थाय तेटले अंशे आत्मा प्रगट थाय छे. जो अकाम (विपाक) निर्जरा होय तो ते उदयिक भावे होय छे; अने ते कर्मबंधनुं कारण छे. अहीं पण कर्मनुं निर्जरवुं थाय छे; परंतु आत्मा प्रगट थतो नथी.

१५. अनंतिवार चारित्र प्राप्त करवाथी जे निर्जरा थई छे ते उदयिक भावे (जे भाव अबंधक नथी) थई छे; क्षायोपशमिक भावे थई नथी. जो तेम थई होत तो आ प्रमाणे रखडवुं बनत नहीं.

१६. मार्ग बे प्रकारे छे: एक लौकिकमार्ग अने बीजो लोकोत्तरमार्ग; जे एक बीजाथी विरुद्ध छे.

१७. लौकिकमार्गथी विरुद्ध जे लोकोत्तरमार्ग ते पाळवाथी तेनुं फळ तेथी विरुद्ध एवुं जे लौकिक ते होय नहीं. **जेवुं कृत्य तेवुं फळ.**

१८. आ संसारने विषे अनंत एवा कोटि जीवोनी संख्या छे. व्यवहारादि प्रसंगे क्रोधादि वर्तणुक अनंत जीवो चलावे छे. चक्रवर्ति राजा आदि क्रोधादि भावे संग्राम चलावे छे, अने लाखो मनुष्यनो घात करे छे तोपण तेओमांनां कोई कोईनो ते ज काळमां मोक्ष थयो छे.

१९. क्रोध, मान, माया, अने लोभनी चोकडीने कषाय एवा नामथी ओळखवामां आवे छे. आ कषाय छे ते अत्यंत क्रोधादिवाळो छे. ते जो अनंत संसारनो हेतु होइने अनंतानुबंधि-कषाय थतो होय तो ते चक्रवर्त्यादिने अनंत संसारनी वृद्धि थवी जोईए, अने ते हिसाबे अनंत संसार व्यतीत थया पहेलां मोक्ष थवो शी रीते घटे? ए वात विचारवायोग्य छे.

२०. जे क्रोधादिथी अनंत संसारनी वृद्धि थाय ते अनंतानुबंधि कषाय छे, ए पण निःशंक छे. ते हिसाबे उपर बतावेला क्रोधादि अनंतानुबंधि संभवता नथी. त्यारे अनंतानुबंधिनी चोकडी बीजी रीते संभवे छे.

२१. सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रणेनी ऐक्यता ते 'मोक्ष'. ते सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र एटले वीतराग ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे. तेनाथी ज अनंत संसारथी मुक्तपणुं पमाय छे. आ वीतरागज्ञान कर्मनो अबंधहेतु छे. वीतरागना मार्गे चालवुं अथवा तेमनी आज्ञाप्रमाणे चालवुं ए पण अबंधक छे. ते प्रत्ये जे क्रोधादि कषाय होय तेथी विमुक्त थवुं ते ज अनंत संसारथी अत्यंतपणे मुक्त थवुं छे; अर्थात् मोक्ष छे. मोक्षथी विपरीत एवो जे अनंत संसार तेनी वृद्धि जेनाथी थाय छे तेने अनंतानुबंधि कहेवामां आवे छे; अने छे पण तेम ज. वीतरागना मार्गे अने तेमनी आज्ञाए चालनारानुं कल्याण थाय छे. आवो जे घणा जीवोने कल्याणकारी मार्ग तेप्रत्ये क्रोधादिभाव (जे महा विपरीतना करनारा छे) ते ज अनंतानुबंधि कषाय छे.

२२. जो के क्रोधादिभाव लौकिके पण अफळ नथी; परंतु वीतरागे प्ररुपेल वीतरागज्ञान अथवा मोक्षधर्म अथवा तो सत्धर्म तेनुं खंडन अथवा ते प्रत्ये क्रोधादिभाव तीव्र मंदादि जेवे भावे होय तेवे भावे अनंतानुबंधि कषायथी बंध थई अनंत एवा संसारनी वृद्धि थाय छे.

२३. अनुभवनो कोई पण काळमां अभाव नथी. बुद्धिबळथी मुकरर करेल वात जे अप्रत्यक्ष छे तेनो क्वचित् अभाव पण थवो घटे.

२४. "केवलज्ञान एटले जेनाथी कंई पण जाणवुं अवशेष नथी ते, के आत्मप्रदेशनो जे स्वभावभाव छे ते!":—

(अ) आत्माए उत्पन्न करेल विभावभाव अने तेथी जडपदार्थनो थयेलो संयोग ते रूपे थयेला आवरणे करी जे कंई देखवुं, जाणवुं थाय छे ते इंद्रियनी सहायताथी थई शके छे, परंतु ते संबंधी आ विवेचन नथी. आ विवेचन 'केवलज्ञान' संबंधी छे.

(आ) विभावभावथी थयेलो जे पुद्गलास्तिकायनो संबंध ते आत्माथी पर छे. तेनुं तथा जेटला पुद्गलनो संयोग थयो तेनुं यथान्यायथी ज्ञान अर्थात् अनुभव थाय ते अनुभवगम्यमां समाय छे. अने तेने लइने लोकसमस्तना जे पुद्गल तेनो पण एवो ज निर्णय थाय ते बुद्धिबळमां समाय छे. जेम, जे आकाशप्रदेशने विषे अथवा तो तेनी नजीक विभावी आत्मा स्थित छे ते आकाशप्रदेशना तेटला भागने लइने अच्छेद्य अभेद्य एवुं जे अनुभवाय छे ते अनुभवगम्यमां समाय छे; अने ते उपरांतनो बाकीनो आकाश जेने केवलज्ञानीए पोते पण अनंत (जेनो अंत नहीं एवो) कहेल छे, ते अनंत आकाशनो पण ते प्रमाणे गुण होवो जोइए एवुं बुद्धिबळे निर्णीत करेलुं होवुं जोईए.

(इ) आत्मज्ञान उत्पन्न थयुं अथवा तो आत्मज्ञान थयुं, ए वात अनुभवगम्य छे. ते आत्मज्ञान उत्पन्न थवाथी आत्मअनुभव थवा उपरांत शुं शुं थवुं जोइए एम जे कहेवामां आव्युं छे ते बुद्धिबळथी कहेलुं, एम धारी शकाय छे.

(ई) इंद्रियना संयोगथी जे कंई देखवुं जाणवुं थाय ते जो के अनुभवगम्यमां समाय छे खरूं, परंतु अहीं तो अनुभवगम्य आत्मतत्त्वने विषे कहेवानुं छे; जेमां इंद्रियोनी सहायता अथवा तो संबंधनी जरूर छे नहीं, ते शिवायनी वात छे. केवलज्ञानी सहज देखी जाणी रह्या छे; अर्थात् लोकना सर्व पदार्थने अनुभव्या छे एम जे कहेवामां आवे छे तेमां उपयोगनो संबंध रहे छे; कारण के केवलज्ञानीना १३ मा अने १४ मा गुणस्थानक एवा बे विभाग करवामां आव्या छे, तेमां १३ मा गुणस्थानकवाळा केवलज्ञानीने योग छे एम स्पष्ट छे अने ज्यां ए प्रमाणे छे त्यां उपयोगनी खास रीते जरूर छे, अने ज्यां खास रीते जरूर छे त्यां बुद्धिबळ छे एम कह्याविना चाले तेम नथी. अने ज्यां ए प्रमाणे ठरे छे त्यां अनुभव साथे बुद्धिबळ पण ठरे छे.

(उ) आ प्रमाणे उपयोग ठरवाथी आत्माने जे जडपदार्थ नजीक छे तेनो तो अनुभव थाय छे; पण जे नजीक नथी अर्थात् जेनो योग नथी तेनो अनुभव थवो एम कहेवुं ए मुश्केलीवाळुं छे; अने तेनी साथे छेटेना पदार्थनो अनुभव गम्य नथी एम कहेवाथी कहेवाता केवलज्ञानना अर्थने विरोध आवे छे, तेथी त्यां बुद्धिबळथी सर्वपदार्थनुं, सर्व प्रकारे, सर्वकाळनुं ज्ञान थाय छे एम ठरे छे.

२५. एक काळना कल्पेला समय जे अनंत छे तेने लईने अनंतकाळ कहेवाय छे. तेमांना वर्तमानकाळ पहेलाना जे समय व्यतीत थया छे ते फरीथी आववाना नथी ए वात न्यायसंपन्न छे; ते समय अनुभवगम्य शी रीते थइ शके ए विचारवानुं छे.

२६. अनुभवगम्य जे समय थया छे तेनुं जे स्वरूप छे ते तथा ते स्वरूप शिवाय तेनुं बीजुं स्वरूप थतुं नथी, अने ते ज प्रमाणे अनादि अनंत काळना बीजा जे समय तेनुं पण तेवुं ज स्वरूप छे; एम बुद्धिबळथी निर्णीत थयेलुं जणाय छे.

२७. आ काळने विषे ज्ञान क्षीण थयुं छे; अने ज्ञान क्षीण थवाथी मतभेद घणा थया छे. जेम ज्ञान ओछुं तेम मतभेद वधारे, अने ज्ञान वधु तेम मतभेद ओछा. नाणांनी पेठे. ज्यां नाणुं घट्युं त्यां कंकाश वधारे, अने ज्यां नाणुं वध्युं त्यां कंकाश ओछा होय छे.

२८. ज्ञानविना सम्यक्त्वनो विचार सूजतो नथी. मतभेद उत्पन्न नथी करवो एवुं जेना मनमां छे ते जे जे वांचे अथवा सांभळे ते ते तेने फळे छे. मतभेदादि कारणने लइने श्रुत-श्रवणादि फळतां नथी.

२९. वाटे चालतां एक फाळियुं कांटामां भरायुं अने रस्तानी मुसाफरी हजी छे, तो बनी शके तो कांटा दूर करवा, परंतु कांटा काढवावुं न बनी शके तो तेटला सारू त्यां रोकाइ रात न रहेवुं; पण फाळियुं मूकी दइ चाली नीकळवुं. तेवी ज रीते जिनमार्गनुं स्वरूप तथा तेनुं रहस्य शुं छे ते समज्याविना, अथवा तेनो विचार कर्याविना अल्प अल्प शंकाओ माटे बेसी रही आगळ न वधवुं ते उचित नथी. **जिनमार्ग खरी रीते जोतां तो जीवने कर्मक्षय करवानो उपाय छे, पण जीव पोताना मतथी गुंचाइ गयेल छे.**

३०. जीव पहेला गुणस्थानकमांथी नीकळी ग्रंथिभेदसुधी अनंतिवार आव्यो ने त्यांथी पाछो वळी गयो छे.

३१. जीवने एवो भाव रहे छे के सम्यक्त्व अनायासे आवतुं हशे; परंतु ते तो प्रयास (पुरुषार्थ) कर्याविना प्राप्त थतुं नथी.

३२. कर्मप्रकृति १५८ छे. सम्यक्त्व आव्याविना तेमांनी कोई पण प्रकृति समूळगी क्षय थाय नहीं. अनादिथी जीव निर्जरा करे छे, परंतु मूळमांथी एक पण प्रकृति क्षय थती नथी! सम्यक्त्वमां एवुं सामर्थ्य छे के ते प्रकृतिने मूळमांथी क्षय करे छे. ते आवी रीते के:—अमुक प्रकृति क्षय थया पछी ते आवे छे; अने जीव बळीओ थाय तो आस्ते आस्ते सर्व प्रकृति खपावे छे.

३३. सम्यक्त्व सर्वने न जणाय एम पण नहीं, तेम कोईने पण न जणाय एम पण नहीं. विचारवानने ते जणाय छे.

३४. **जीवने समजाय तो समजाया पछीथी बहु सुगम छे; पण समजवा सारू जीवे आजदिवस सुधी खरेखरो लक्ष आप्यो नथी.** सम्यक्त्व प्राप्त थवाना जीवने ज्यारे ज्यारे जोग बन्या छे त्यारे त्यारे बराबर ध्यान आप्युं नथी, कारण के जीवने अंतराय घणा छे. केटलाक अंतरायो तो प्रत्यक्ष छे, छतां जाणवामां आवता नथी. जो जणावनार मळे तोपण अंतरायना जोगथी ध्यानमां लेवानुं बनतुं नथी. केटलाक अंतराय तो अव्यक्त छे के जे ध्यानमां आववा ज मुश्केल छे.

३५. सम्यक्त्वनुं स्वरूप मात्र वाणीयोगथी कही शकाय; जो एकदम कहेवामां आवे तो त्यां आगळ जीवने उलटो भाव भासे; तथा सम्यक्त्व उपर उलटो अभाव थवा मांडे; परंतु ते ज स्वरूप जो अनुक्रमे जेम जेम दशा वधती जाय तेम तेम कहेवामां अथवा समजाववामां आवे तो ते समजवामां आवी शकवायोग्य छे.

३६. आ काळने विषे मोक्ष छे एम बीजा मार्गमां कहेवामां आवे छे. जैनमार्गमां आ काळने विषे अमुक क्षेत्रमां तेम थवुं जो के कहेवामां आवतुं नथी; छतां ते ज क्षेत्रमां आ काळने विषे सम्यक्त्व थइ शके छे एम कहेवामां आव्युं छे.

३७. ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रणे आ काळने विषे छे. **प्रयोजनभूत** पदार्थनुं जाणपणुं ते 'ज्ञान' तेने लइने सुप्रतीति ते 'दर्शन' अने तेथी थती क्रिया ते 'चारित्र' छे. आ चारित्र आ काळने विषे जैनमार्गमां सम्यक्त्व पछी सातमा गुणस्थानक सुधी प्राप्त करी शकवानुं स्वीकारवामां आव्युं छे.

३८. सातमासुधी पहोंचे तोपण मोटी वात छे.

३९. सातमासुधी पहोंचे तो तेमां सम्यक्त्व समाइ जाय छे. अने जो त्यांसुधी पहोंचे तो तेने खात्री थाय छे के आगली दशानुं केवी रीते छे? परंतु सातमासुधी पहोंच्याविना आगली वात ख्यालमां आवी शकती नथी.

४०. **वधती दशा थती होय तो तेने निषेधवा जरूर नथी; अने न होय तो मानवा जरूर नथी.** निषेधकर्याविना आगळ वधतां जवुं.

४१. सामायिक छ, आठ कोटीनो विवाद मूकी दीधा पछी नवविना नथी थतुं; अने छेवटे नव कोटिए वृत्ति मूक्याविना मोक्ष नथी.

४२. ११ प्रकृति खपाव्याविना सामायिक आवे नहीं. सामयिक थाय तेनी दशा तो अद्भुत थाय. त्यांथी छ, सात अने आठमा गुणस्थानके जाय; ने त्यांथी बे घडीमां मोक्ष थइ शके छे.

४३. मोक्षमार्ग करवाळनी धार जेवो छे, एटले एक धारो (एक प्रवाहरूपे) छे. त्रणे काळमां एक धाराए एटले एकसरखो प्रवर्ते ते ज मोक्षमार्ग;—वहेवामां खंडित नहीं ते ज मोक्षमार्ग.

४४. अगाउ बे वखत कहेवामां आव्युं छे छतां आ त्रीजी वखत कहेवामां आवे छे के **क्यारे य पण बादर अने बाह्यक्रियानो निषेध करवामां आव्यो नथी, कारण के अमारा आत्माने विषे तेवो भाव कोई दिवस स्वप्नेय पण उत्पन्न थाय तेम छे नहीं.**

४५. रुढीवाळी गांठ, मिथ्यात्व अथवा कषायने सूचवनारी क्रियाना संबंधमां वखते कोई प्रसंगे कांइ कहेवामां आव्युं होय, तो त्यां क्रियाना निषेधअर्थे तो नहीं ज कहेवामां आव्युं होय; **छतां कहेवाथी बीजी रीते समजवामां आव्युं होय, तो तेमां समजनारे पोतानी भूल थई छे एम समजवानुं छे.**

४६. **जेणे कषायभावनुं उच्छेदन करेलुं छे ते कषायभावनुं सेवन थाय एम कदि पण करे नहीं.**

४७. अमुक क्रिया करवी एवुं ज्यांसुधी अमारा तरफथी कहेवामां नथी आवतुं त्यांसुधी एम समजवुं के ते कारण सहित छे; ने तेथी करी क्रिया न करवी एम ठरतुं नथी.

४८. हाल अमुक क्रिया करवी एम कहेवामां जो आवे अने पाछळथी देशकाळने अनुसरी ते क्रियाने बीजा आकारमां मूकी कहेवामां आवे तो श्रोताना मनमां शंका आणवानुं कारण थाय के एक वखत आम कहेवामां आवतुं हतुं ने बीजी वखत आम कहेवामां आवे छे; एवी शंकाथी तेनुं श्रेय थवाने बदले अश्रेय थाय.

४९. बारमा गुणस्थानकना छेल्ला समयसुधी पण ज्ञानीनी आज्ञाप्रमाणे चालवानुं थाय छे. तेमां स्वछंदपणुं विलय थाय छे.

५०. स्वछंदे निवृत्ति करवाथी वृत्तिओ शांत थती नथी, पण उन्मत्त थाय छे अने तेथी पडवानो वखत आवे छे; अने जेम जेम आगळ गया पछी जो पडवानुं थाय छे, तो तेम तेम तेने पछाट वधारे लागे छे, एटले घणो ते ऊंडो जाय छे; अर्थात् पहेलामां जई खुंचे छे, एटलुं ज नहीं परंतु तेने त्यां घणा काळसुधी जोरनी पछाटथी खुंच्या रहेवुं पडे छे.

५१. हजु पण शंका करवी होय तो करवी; पण एटलुं तो **चोकसपणे श्रद्धवुं* के जीवथी मांडी मोक्षसुधी छे; अने मोक्षनो उपाय पण छे; तेमां कांइ पण असत्य नथी.** आवो निर्णय करवा पछी तेमां तो कोई दिवस शंका करवी नहीं; अने ए प्रमाणे निर्णय थया पछी घणुंकरीने शंका थती नथी. जो कदाच् शंका थाय तो ते देशशंका थाय छे ने तेनुं समाधान थई शके छे. परंतु **मूळमां* एटले जीवथी मांडी मोक्षसुधी अथवा तेना उपायमां शंका थाय तो ते देशशंका नथी पण सर्वशंका छे;** ने ते शंकाथी घणुंकरी पडवुं थाय छे; अने ते पडवुं एटला बधा जोरमां थाय छे के तेनी पछाट अत्यंत लागे छे.

५२. आ जे श्रद्धा छे ते बे प्रकारे छे: एक 'ओघे' अने बीजी 'विचारपूर्वक.'

५३. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानथी जे कंई जाणी शकाय छे तेमां अनुमान साथे रहे छे, परंतु तेथी आगळ अने अनुमानविना शुद्धपणे जाणवुं ए मनःपर्यवज्ञाननो विषय छे; एटले मूळ तो मति, श्रुत, अने मनःपर्यवज्ञान एक छे, परंतु मनःपर्यवमां अनुमानविना मतिनी निर्मलताए शुद्ध जाणी शकाय छे.

५४. मतिनी निर्मलता थवी ए संयमविना थई शके नहीं; वृत्तिने रोकवाथी संयम थाय छे, अने ते संयमथी मतिनी शुद्धता थई शुद्ध पर्यायनुं जे जाणवुं (अनुमान विना) ते मनःपर्यवज्ञान छे.

५५. मतिज्ञान ए लिंग एटले चिन्हथी जाणी शकाय छे; अने मनःपर्यवज्ञानमां लिंग अथवा चिन्हनी जरूर रहेती नथी.

* जीव छे, ते नित्य छे, ते कर्मनो कर्त्ता छे, ते कर्मनो भोक्ता छे, मोक्ष छे अने मोक्षनो उपाय पण छे. म. कि.

५६. मतिज्ञानथी जाणवामां अनुमाननी आवश्यकता रहे छे, अने ते अनुमानने लईने जाणेलुं फेरफाररूप पण थाय छे. ज्यारे मनःपर्यवने विषे तेम (फेरफाररूप) थतुं नथी, केमके तेमां अनुमानना सहायपणानी जरूर नथी. शरीरनी चेष्टाथी क्रोधादि पारखी शकाय छे, परंतु तेनुं (क्रोधादिनुं) मूळस्वरूप न देखावा सारू शरीरनी विपरित चेष्टा करवामां आवी होय तो ते उपरथी पारखी शकवुं (परीक्षा करवी) ए दुर्घट छे; तेम ज शरीरनी चेष्टा कोई पण आकारमां न करवामां आवी होय छतां, तद्दन चेष्टा जोयाविना तेनुं (क्रोधादिनुं) जाणवुं ते अति दुर्घट छे, छतां ते प्रमाणे परभारूं थई शकवुं ते मनःपर्यवज्ञान छे.

५७. लोकोमां ओघसंज्ञाए एम मानवामां आवतुं के "आपणने सम्यक्त्व छे के शी रीते ते केवली जाणे, निश्चय सम्यक्त्व छे ए वात तो केवलीगम्य छे." चालती रुढीप्रमाणे एम मानवामां आवतुं; परंतु बनारसीदास अने बीजा ते दशाना पुरुषो एम कहे छे के अमने सम्यक्त्व थयुं छे ए निश्चयथी कहीए छीए.

५८. शास्त्रमां एम कहेवामां आव्युं छे के 'निश्चय सम्यक्त्व छे के शी रीते ते केवली जाणे' ते वात अमुक नयथी सत्य छे; तेम केवलज्ञानी शिवाय पण बनारसीदास वगेरेए मोघमपणे एम कह्युं छे के "अमने सम्यक्त्व छे, अथवा प्राप्त थयुं," ते वात पण सत्य छे; कारण 'निश्चय सम्यक्त्व' छे ते दरेक रहस्यना पर्यायसहित केवली जाणी शके छे; अथवा दरेक प्रयोजनभूत पदार्थना हेतु अहेतु संपूर्णपणे जाणवा ए केवली शिवाय बीजाथी बनी शकतुं नथी; त्यां आगळ 'निश्चय सम्यक्त्व' केवलीगम्य कह्युं छे. ते प्रयोजनभूत पदार्थना सामान्यपणे अथवा स्थूळपणे हेतु अहेतु समजी शकाय ए बनवायोग्य छे, अने ते कारणने लइने बनारसीदास वगेरेए पोताने सम्यक्त्व छे एम कहेलुं छे.

५९. 'समयसार' मां बनारसीदासे करेली कवितामां 'अमारे हृदयने विषे बोधबीज थयुं छे' एम कहेलुं छे; अर्थात् पोताने विषे सम्यक्त्व छे एम कह्युं छे.

६०. सम्यक्त्व प्राप्त थया पछी वधारेमां वधारे पंदर भवनी अंदर मुक्ति छे अने जो त्यांथी ते पडे छे तो अर्धपुद्गलपरावर्त्तनकाल गणाय. अर्धपुद्गलपरावर्त्तनकाल गणाय तोपण ते **सादिसांतना** भांगामां आवी जाय छे; ए वात निःशंक छे.

६१. सम्यक्त्वनां लक्षणोः—

१. कषायनुं मंदपणुं अथवा तेना रसनुं मोळापणुं.
२. मोक्षमार्ग तरफ वलण.
३. संसार बंधनरूप लागे अथवा संसार खारो झेर लागे.
४. सर्व प्राणी उपर दयाभाव; तेमां विशेषे करी पोताना आत्मा तरफ दयाभाव.
५. सत्‌देव, सत्‌धर्म, सद्गुरु उपर आस्था.

६२. आत्मज्ञान, अथवा आत्माथी पर एवुं जे कर्मस्वरूप, अथवा पुद्गलास्तिकाय वगेरेनुं जे स्वरूप जूदा जूदा प्रकारे, जूदे जूदे प्रसंगे, अति सूक्ष्ममां सूक्ष्म अने अति विस्तारवाळुं ज्ञानीथी प्रकाशवुं थयुं छे, तेमां कंई हेतु समाय छे के शी रीते? अने समाय छे तो शुं? ते विषे विचार करवाथी सात कारणो तेमां समायेलां छे एम मालुम पडे छे: सद्भुतार्थप्रकाश, तेनो विचार, तेनी प्रतीति, जीवसंरक्षण वगेरे. ते साते हेतुनुं फळ मोक्षनी प्राप्ति थाय ते छे. तेम ज मोक्षनी प्राप्तिनो जे मार्ग ते आ हेतुथी सुप्रतीतरूप थाय छे.

६३. कर्म अनंत प्रकारनां छे. तेमां मुख्य १५८ छे. तेमां मुख्य आठ कर्मप्रकृति वर्णववामां आवी छे. आ बधां कर्ममां मुख्य एवुं मोहनीय छे; जेनुं सामर्थ्य बीजां करतां अत्यंत छे. अने तेनी स्थिति पण सर्व करतां वधारे छे.

६४. आठ कर्ममां चार घनघाति छे. ते चारमां पण मोहनीय अत्यंत प्रबलपणे घनघाति छे. मोहनीयकर्म शिवाय सात कर्म छे ते मोहनीयकर्मना प्रतापथी प्रबलपणे थाय छे. जो मोहनीय खसे तो बीजां निर्बल थई जाय छे. मोहनीय खसवाथी बीजांओनो पग टकी शकतो नथी.

६५. कर्मबंधना चार प्रकार छे. प्रकृतिबंध, प्रदेशबंध, स्थितिबंध, अने रसबंध. तेमां प्रदेश, स्थिति अने रस ए त्रण बंधना सर्वाळानुं नाम प्रकृति आपवामां आव्युं छे. प्रदेशबंध छे ते आत्माना प्रदेशनी साथे पुद्गलनो जमाव अर्थात् जोडाण छे. त्यां तेनुं प्रबलपणुं होतुं नथी; ते खेरववा चाहे तो खरी शके तेम छे. मोहने लईने स्थिति तथा रसनो बंध पडे छे, अने ते स्थिति तथा रसनो बंध छे ते जीव फेरववा धारे तो फरी ज शके एम बनवुं अशक्य छे. आवुं मोहने लईने ए स्थिति तथा रसनुं प्रबलपणुं छे.

६६. सम्यक्त्व अन्योक्तरीते पोतानुं दूषण बतावे छे:—

"मने ग्रहण करवाथी ग्रहण करनारनी इच्छा न थाय तोपण मारे तेने पराणे मोक्ष लई जवो पडे छे; माटे मने ग्रहण करवा पहेलां ए विचार करवो के मोक्षे जवानी इच्छा फेरववी हशे तोपण काम आववानी नथी; मने ग्रहण करवा पछी नवमे समये तो मारे तेने मोक्षे पहोंचाडवो जोईए. ग्रहण करनार कदाच् शिथिल थई जाय तोपण बने तो ते ज भवे, अने न बने तो वधारेमां वधारे पंदर भवे मारे तेने मोक्षे पहोंचाडवो जोईए. कदाच् मने छोडी दई माराथी विरुद्ध आचरण करे अथवा प्रबलमां प्रबल एवा मोहने धारण करे तोपण अर्धपुद्गलपरावर्त्तननी अंदर मारे तेने मोक्षे पहोंचाडवो ए मारी प्रतिज्ञा छे." !

अर्थात् अहिं सम्यक्त्वनी महत्ता बतावी छे.

६७. सम्यक्त्व केवलज्ञानने कहे छे:—

"हुं जीवने मोक्षे पहोंचाडुं एटलेसुधी कार्य करी शकुं छुं; अने तुं पण ते ज कार्य

करे छे;–तुं तेथी कांई विशेष कार्य करी शकतुं नथी; तोपछी तारा करतां मारामां न्यूनता शानी? एटलुं ज नहीं, परंतु तने पामवामां मारी जरूर रहे छे.”!

६८. ग्रंथादि वांचवानुं शरू करतां प्रथम मंगलाचरण करवुं अने ते ग्रंथ फरीथी वांचतां अथवा गमे ते भागथी ते वांचवानुं शरू करतां प्रथम मंगलाचरण करवुं एवी शास्त्रपद्धति छे. तेनुं मुख्य कारण ए छे के बाह्यवृत्तिमांथी आत्मवृत्ति करवी छे, माटे तेम करवामां प्रथम शांतपणुं करवानी जरूर छे, अने ते प्रमाणे प्रथम मंगलाचरण करवाथी शांतपणुं प्रवेश करे छे. वांचवानो अनुक्रम जे होय ते बनतांसुधी न ज तोडवो जोईए; तेमां ज्ञानीनो दाखलो लेवा जरूर नथी.

६९. आत्मअनुभवगम्य अथवा आत्मजनित सुख अने मोक्षसुख ते एक ज छे. मात्र शब्द जूदा छे.

७०. केवलज्ञानी शरीरने लईने नथी के बीजाना शरीर करतां तेमनुं शरीर तफावतवाळुं जोवामां आवे. वळी ते केवलज्ञान शरीरथी करी नीपजावेल छे एम नथी; ते तो आत्मावडे करी प्रगट करवामां आव्युं छे; तेने लीधे शरीरथी तफावत जाणवानुं कारण नथी; अने शरीर तफावतवाळुं लोकोना जोवामां नहीं आववाथी लोको तेनुं महात्म्य बहु जाणी शकता नथी.

७१. जेने मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननी अंशे पण खबर नथी ते जीव केवलज्ञाननुं स्वरूप जाणवा इच्छे ते शी रीते बनी शकवा योग्य छे? अर्थात् बनी शकवा योग्य नथी.

७२. मति स्फुरायमान थई जणायेलुं जे ज्ञान ते 'मतिज्ञान,' अने श्रवण थवाथी थयेलुं जे ज्ञान ते 'श्रुतज्ञान'; अने ते श्रुतज्ञाननुं मनन थई प्रगम्थुं त्यारे ते पाछुं मतिज्ञान थयुं, अथवा ते 'श्रुतज्ञान' प्रगम्याथी बीजाने कहेवामां आव्युं त्यारे ते ज कहेनारने विषे मतिज्ञान अने सांभळनारने माटे श्रुतज्ञान थाय छे. तेम 'श्रुतज्ञान' मतिविना थई शकतुं नथी; अने ते ज मति पूर्वे श्रुत होवुं जोईए. एम एक बीजाने कार्य कारणनो संबंध छे. तेना घणा भेद छे, ते सर्वे भेदने जेम जोईए तेम हेतुसहित जाण्या नथी (हेतुसहित जाणवा समजवा ए दुर्घट छे) अने त्यारपछी आगळ वधतां अवधिज्ञान जेना पण घणा भेद छे, ने जे सघळा रूपी पदार्थने जाणवाना विषय छे तेने, अने ते ज प्रमाणे मनःपर्यवना विषय छे ते सघळाओने कंई अंशे पण जाणवा समजवानी जेने शक्ति नथी एवां मनुष्यो पर अने अरूपी पदार्थना सघळा भावने जाणनारूं एवुं जे 'केवलज्ञान' तेना विषे जाणवा, समजवानुं प्रश्न करे तो ते शी रीते समजी शके? अर्थात् न समजी शके.

७३. ज्ञानीना मार्गने विषे चालनारने कर्मबंध नथी; तेम ज ते ज्ञानीनी आज्ञाप्रमाणे चालनारने पण कर्मबंध नथी, कारण के क्रोध, मान, माया, लोभादिनो त्यां अभाव छे; अने ते अभावना हेतुएकरी कर्मबंध न थाय. तोपण 'इरिया पंथ'ने विषे वेहेतां 'इरिया पंथ'नी क्रिया ज्ञानीने लागे छे; अने ज्ञानीनी आज्ञा प्रमाणे चालनारने पण ते क्रिया लागे छे.

७४. जे विद्याथी जीव कर्म बांधे छे, ते ज विद्याथी जीव कर्म छोडे छे.

७५. ते ज विद्या संसारी हेतुना प्रयोगे विचार करवाथी कर्मबंध करे छे, अने ते ज विद्याथी द्रव्यनुं स्वरूप समजवाना प्रयोगथी विचार करे छे त्यां कर्म छोडे छे.

७६. 'क्षेत्रसमास'मां क्षेत्रसंबंधादिनी जे जे वातो छे, ते अनुमानथी मानवानी छे. तेमां अनुभव होतो नथी; परंतु ते सघळुं कारणोने लईने वर्णववामां आवे छे. तेनी श्रद्धा विश्वासपूर्वक राखवानी छे. मूळ श्रद्धामां फेर होईने आगळ समजवामां ठेठ सुधी भूल चाली आवे छे. जेम गणितमां प्रथम भूल थई तो पछी ते भूल ठेठसुधी चाली आवे छे तेम.

७७. ज्ञान पांच प्रकारनुं छे. ते ज्ञान जो सम्यक्त्वविनानुं मिथ्यात्वसहित होय तो 'मति अज्ञान' 'श्रुत अज्ञान' अने 'अवधि अज्ञान' एम कहेवाय. ते मळी कुल आठ प्रकार छे.

७८. मति, श्रुत, अने अवधि मिथ्यात्वसहित होय, तो ते 'अज्ञान' छे, अने सम्यक्त्वसहित होय तो 'ज्ञान' छे. ते शिवाय बीजो फेर नथी.

७९. रागादि सहित जीव कंई पण प्रवृत्ति करे तो तेनुं नाम 'कर्म' छे;--शुभ अथवा अशुभ अध्यवसायवाळुं परिणमन ते 'कर्म' कहेवाय; अने शुद्ध अध्यवसायवाळुं परिणमन ते कर्म नथी पण 'निर्जरा' छे.

८०. अमुक आचार्य एम कहे छे के दिगम्बरना आचार्ये एम स्वीकार्युं छे केः–
"जीवनो मोक्ष थतो नथी, परंतु मोक्ष समजाय छे; ते एवी रीते के जीव शुद्धस्वरूपी छे; तेने बंध थयो नथी तोपछी मोक्ष थवापणुं क्यां रहे छे? परंतु तेणे मानेलुं छे के 'हुं बंधाणो छुं' ते मानवापणुं विचारवडीए करी समजाय छे के मने बंधन नथी, मात्र मान्युं हतुं; ते मानवापणुं शुद्ध स्वरूप समजायाथी रहेतुं नथी; अर्थात् मोक्ष समजाय छे".
आ वात 'शुद्धनय'नी अथवा 'निश्चयनय'नी छे. पर्यायार्थी नयवाळाओ ए नयने वगळी आचरण करे तो तेने रखडी मरवानुं छे.

८१. 'ठाणांगसूत्र'मां कहेवामां आव्युं छे के जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष ए पदार्थ सद्भाव छे; एटले तेना भाव छता छे; कल्पवामां आव्या छे एम नथी.

८२. वेदांत छे ते शुद्धनयआभासी छे. शुद्धनयआभासमतवाळा 'निश्चयनय' शिवाय बीजा नयने एटले 'व्यवहारनय'ने ग्रहण करता नथी. जिन अनेकांतिक छे, अर्थात् ते स्याद्वादी छे.

८३. कोई नव तत्त्वनी, कोई सात तत्त्वनी, कोई षट्द्रव्यनी, कोई षड्पदनी, कोई बे राशिनी वात कहे छे, परंतु ते सघळुं जीव, अजीव एवी बे राशि अथवा ए बे तत्त्व अर्थात् द्रव्यमां समाय छे.

८४. निगोदमां अनंता जीव रह्या छे ए वातमां तेम ज कंदमूलमां सोयनी अणी उपर रहे तेटला नाना भागमां अनंता जीव रह्या छे ते वातमां आशंका करवापणुं छे नहीं. ज्ञानीए जेवुं स्वरूप दीठुं छे तेवुं ज कह्युं छे. आ जीव जे स्थूळदेहप्रमाण थई रह्यो छे अने

जेने पोताना स्वरूपनुं हजु जाणपणुं नथी थयुं तेने एवी झीणी वात समजवामां न आवे ते वात खरी छे; परंतु तेने आशंका करवानुं कारण नथी. ते आ रीते:—

चोमासाना वखतमां एक गामना पादरमां तपासीए तो घणी लीलोतरी जोवामां आवे छे; अने तेवी थोडी लीलोतरीमां अनंता जीवो छे; तो एवा घणा गामनो विचार करीए, तो जीवनी संख्याना प्रमाणविषे अनुभव नथी थयो छतां बुद्धिबळथी विचार करतां अनंतपणुं संभावी शकाय छे. कंदमूल आदिमां अनंतपणुं संभवे छे. बीजी लीलोतरीमां अनंतपणुं संभवतुं नथी, परंतु कंदमूलमां अनंतपणुं घटे छे. कंदमूळनो अमुक थोडो भाग जो वाववामां आवे तो ते उगे छे ते कारणथी पण त्यां जीवनुं विशेषपणुं घटे छे; तथापि जो प्रतीति न थती होय तो आत्मानुभव करवो; आत्मानुभव थवाथी प्रतीति थाय छे. ज्यांसुधी आत्मानुभव नथी थतो, त्यांसुधी ते प्रतीति थवी मुश्केल छे, माटे जो तेनी प्रतीति करवी होय तो प्रथम आत्माना अनुभवी थवुं.

८५. ज्यांसुधी ज्ञानावरणीयनो क्षयोपशम नथी थयो, त्यांसुधी सम्यक्त्वनी प्राप्ति थवानी इच्छा राखनारे ते वातनी प्रतीति राखी आज्ञानुसार वर्तन करवुं.

८६. जीवमां संकोच विस्तारनी शक्तिरूप गुण रहे छे ते कारणथी ते नाना मोटा शरीरमां देहप्रमाण स्थिति करी रहे छे. आ ज कारणथी ज्यां थोडा अवकाशने विषे पण संकोचपणुं विशेषपणे करी शके छे त्यां जीवो तेम करी रहेला छे.

८७. जेम जेम जीव कर्मपुद्गल वधारे ग्रहण करे छे, तेम तेम ते वधारे निबिड थई नाना देहने विषे रहे छे.

८८. पदार्थने विषे अचिंत्य शक्ति छे. दरेक पदार्थ पोतपोताना धर्मने त्यागता नथी. एक जीवे परमाणुरूपे ग्रहेलां एवां जे कर्म ते अनंत छे. तेवा अनंता जीव जेनी पासे कर्मरूपी परमाणु अनंता अनंत छे ते सघळा निगोदआश्रयी थोडा अवकाशमां रहेला छे, ते वात पण शंका करवायोग्य नथी. साधारण गणत्रिप्रमाणे एक परमाणु एक आकाशप्रदेश अवगाहे छे; परंतु तेनामां अचिंत्य सामर्थ्य छे, ते सामर्थ्यधर्मे करी थोडा आकाशने विषे अनंता परमाणु रह्या छे. एक आरिसो छे ते सामे तेथी घणी मोटी वस्तु मूकवामां आवे, तो पण तेवडो आकार तेमां समाईने रहे छे. आंख एक नानी वस्तु छे छतां तेवी नानी वस्तुमां सूर्य चंद्रादि मोटा पदार्थोनुं स्वरूप जोवामां आवे छे. ते ज रीते आकाश जे घणुं विशाळ क्षेत्र छे ते पण एक आंखने विषे देखावारूपे समाय छे. मोटां मोटां एवां घणां घरो तेने नानी वस्तु एवी जे आंख ते जोई शके छे. थोडा आकाशमां जो अनंत परमाणु अचिंत्य सामर्थ्यने लीधे न समाई शकतां होय तो, आंखथी करी पोताना कद जेवडी ज वस्तु जोई शकाय, पण वधारे मोटो भाग जोई न शकाय; अथवा आरिसामां घणां घरो आदि मोटी वस्तुनुं

प्रतिबिंब पडे नहीं. आ ज कारणथी परमाणुनुं पण अचिंत्य सामर्थ्य छे, अने तेने लईने थोडा आकाशने विषे अनंता परमाणु समाई रही शके छे.

८९. आ प्रमाणे परमाणु आदि द्रव्यनुं सूक्ष्मभावथी निरूपण करवामां आव्युं छे, ते जो के परभावनुं विवेचन छे, तोपण ते कारणसर छे अने सहेतु करवामां आवेलुं छे.

९०. चित्त स्थिर करवासारू, अथवा वृत्तिने बहार न जवा देतां अंतरंगमां लई जवासारू परद्रव्यना स्वरूपनुं समजवुं कामे लागे छे.

९१. परद्रव्यनुं स्वरूप विचारवाथी वृत्ति बहार न जतां अंतरंगने विषे रहे छे; अने स्वरूप समज्या पछी तेना थयेला ज्ञानथी ते तेनो विषय थई रहेतां, अथवा अमुक अंशे समजवाथी तेटलो तेनो विषय थई रहेतां, वृत्ति पाधरी बहार नीकळी परपदार्थो विषे रमण करवा दोडे छे; त्यारे परद्रव्य के जेनुं ज्ञान थयुं छे तेने सूक्ष्मभावे फरी समजवा मांडतां वृत्तिने पाछी अंतरंगमां लाववी पडे छे; अने तेम लाव्या पछी विशेषपणे स्वरूप समजायाथी ज्ञानेकरी तेटलो तेनो विषय थई रहेतां वळी वृत्ति बहार दोडवा मांडे छे; त्यारे जाण्युं होय तेथी विशेष सूक्ष्मभावे फरी विचारवा मांडतां वळी पण वृत्ति पाछी अंतरंगने विषे प्रेराय छे. एम करतां करतां वृत्तिने वारंवार अंतरंगभावमां लावी शांत करवामां आवे छे; अने ए प्रमाणे वृत्तिने अंतरंगमां लावतां लावतां आत्मानो अनुभव वखते थई जाय छे, अने ज्यारे ए प्रमाणे थाय छे त्यारे वृत्ति बहार जती नथी, परंतु आत्माने विषे शुद्ध परिणतिरूप थई परिणमे छे; अने ते प्रमाणे परिणमवाथी बाह्यपदार्थनुं दर्शन सहज थाय छे. आ कारणोथी परद्रव्यनुं विवेचन कामनुं अथवा हेतुरूप थाय छे.

९२. जीव पोताने जे अल्पज्ञान होय छे तेना वडे मोटो एवो जे ज्ञेय पदार्थ तेनुं स्वरूप जाणवा इच्छे छे, ते क्यांथी थई शके? अर्थात् न थई शके. ज्ञेयपदार्थनुं स्वरूप जाणवानुं न थई शके त्यां आगळ पोताना अल्पज्ञपणाथी न समजायानुं कारण न मानतां तेथी मोटो ज्ञेयपदार्थ तेने विषे दोष काढे छे, परंतु सवळीए आवी पोताना अल्पज्ञपणाथी न समजायाविषेनुं कारण मानतो नथी.

९३. जीव पोतानुं स्वरूप जाणी शकतो नथी; तो पछी परनुं स्वरूप जाणवा इच्छे ते तेनाथी शी रीते जाणी (समजी) शकाय? अने ज्यांसुधी न समजवामां आवे त्यांसुधी त्यां रही गुंचाई डोळाया करे छे. श्रेयकारी एवुं जे निजस्वरूपनुं ज्ञान ते ज्यांसुधी प्रगट नथी कर्युं, त्यांसुधी परद्रव्यनुं गमे तेटलुं ज्ञान मेळवे तोपण ते कशा कामनुं नथी; माटे उत्तम रस्तो ए छे के बीजी बधी वातो मुकी दई पोताना आत्माने ओळखवा प्रयत्न करवो. जे सारभूत छे ते जोवासारू आ 'आत्मा सद्भाववाळो छे', 'ते कर्मनो कर्त्ता छे', अने तेथी (कर्मथी) तेने बंध थाय छे, 'ते बंध शी रीते थाय छे'? 'ते बंध

केवी रीते निवृत्त थाय ?' अने 'ते बंधथी निवृत्त थवुं ए मोक्ष छे' ए आदि संबंधी वारंवार, अने क्षणे क्षणे विचार करवो योग्य छे; अने ए प्रमाणे वारंवार विचार करवाथी विचार वृद्धिने पामे छे; ने तेने लीधे निजस्वरूपनो अंशे अंशे अनुभव थाय छे. जेम जेम निजस्वरूपनो अनुभव थाय छे, तेम तेम द्रव्यनुं जे अचिंत्य सामर्थ्य ते तेना अनुभवमां आवतुं जाय छे. तेने लईने उपर बतावेली एवी जे शंकाओ (जेवी के, थोडा आकाशमां अनंत जीवनुं समावुं, अथवा अनंत पुद्गल परमाणुनुं समावुं) नुं करवापणु रहेतुं नथी; अने ते यथार्थ छे एम समजाय छे. ते छतां पण जो मानवामां न आवतुं होय तो अथवा शंका करवानुं कारण रहेतुं होय तो ज्ञानी कहे छे के उपर बतावेलो पुरुषार्थ करवामां आव्येथी अनुभवसिद्ध थशे.

९४. जीव कर्मबंध जे करे छे, ते देहस्थित रहेलो जे आकाश तेने विषे रहेलां जे सूक्ष्म पुद्गल तेमांथी ग्रहीने करे छे. बहारथी लई कर्म बांधतो नथी.

९५. आकाशमां चौद राजलोकने विषे सदा पुद्गल परमाणु भरपूर छे; ते ज प्रमाणे शरीरने विषे रहेलो जे आकाश त्यां पण सूक्ष्म पुद्गल परमाणुनो समूह भरपूर छे. त्यांथी सूक्ष्म पुद्गल जीव ग्रही, कर्मबंध पाडे छे.

९६. एवी आशंका करवामां आवे के शरीरथी लांबे (दूर) एटले घणे छेटे एवा कोई कोई पदार्थप्रत्ये जीव राग, द्वेष करे तो ते त्यांना पुद्गल ग्रही बंध बांधे छे के शी रीते ? तेनुं समाधान एम थाय छे के ते रागद्वेषरूप परिणति तो आत्मानी विभावरूप परिणति छे; अने ते परिणति करनार आत्मा छे; अने ते शरीरने विषे रही करे छे; माटे त्यां आगळ एटले शरीरने विषे रहेलो एवो जे आत्मा, ते जे क्षेत्रे छे ते क्षेत्रे रहेलां एवां जे पुद्गल परमाणु तेने ग्रहीने बांधे छे. बहार ग्रहवा जतो नथी.

९७. यश अपयश कीर्ति जे नामकर्म छे ते, नामकर्मसंबंध जे शरीरने लईने छे ते शरीर रहे छे त्यांसुधी चाले छे; त्यांथी आगळ चालतां नथी. जीव सिद्धपणाने प्राप्त थाय, अथवा विरतिपणुं पामे त्यारे ते संबंध रहेतो नथी. सिद्धपणाने विषे एक आत्माशिवाय बीजुं कंई नथी, अने नामकर्म ए एक जातनुं कर्म छे, तो त्यां यश अपयश आदिनो संबंध शी रीते घटे ? अविरतिपणाथी जे कंई पापक्रिया थाय छे ते पाप चाल्युं आवे छे.

९८. 'विरति' एटले 'मुकावुं', अथवा रतिथी विरुद्ध एटले रति नहीं ते. अविरतिमां त्रण शब्दनो संबंध छे. अ+वि+रति=अ मोह=नहीं+वि=विरुद्ध+रति=प्रीति–मोह, एटले प्रीति–मोह. विरुद्ध नहीं ते 'अविरति' छे. ते अविरतिपणुं बार प्रकारनुं छे.

९९. पांच इंद्रिय, अने छठ्ठं मन तथा पांच स्थावर जीव, अने एक त्रस जीव मळी कुल ते बार प्रकारनुं छे.

१००. एवो सिद्धांत छे के कृतिविना जीवने पाप लागतुं नथी. ते कृतिनी ज्यांसुधी विरति करी नथी त्यांसुधी अविरतिपणानुं पाप लागे छे. समस्त एवा चौद राजलोकमांथी तेनी पापक्रिया चाली आवे छे.

१०१. कोई जीव कंई पदार्थ योजी मरण पामे, अने ते पदार्थनी योजना एवा प्रकारनी होय के ते योजेलो पदार्थ ज्यांसुधी रहे, त्यांसुधी तेनाथी पापक्रिया थया करे; तो त्यांसुधी ते जीवने अविरतिपणानी पापक्रिया चाली आवे छे; जो के जीवे बीजो पर्याय धारण कर्याथी अगाउना पर्याय समये जे जे पदार्थनी योजना करेली छे तेनी तेने खबर नथी, तोपण तथा हालना पर्यायने समये ते जीव ते योजेला पदार्थनी क्रिया नथी करतो तोपण ज्यांसुधी तेनो मोहभाव विरतिपणाने नथी पाम्यो त्यांसुधी अव्यक्तपणे तेनी क्रिया चाली आवे छे.

१०२. हालना पर्यायने समये तेना अजाणपणानो लाभ तेने मळी शकतो नथी. ते जीवे समजवुं जोइतुं हतुं के आ पदार्थथी थतो प्रयोग ज्यांसुधी कायम रहेशे त्यांसुधी तेनी पापक्रिया चालु रहेशे. ते योजेला पदार्थथी अव्यक्तपणे पण थती (लागती) क्रियाथी मुक्त थवुं होय तो **मोहभावने मूकवो.** मोह मूकवाथी एटले विरतिपणुं करवाथी पापक्रिया बंध थाय छे. ते विरतिपणुं ते ज पर्यायने विषे आदरवामां आवे, एटले योजेला पदार्थना ज भवने विषे आदरवामां आवे तो ते पापक्रिया ज्यारथी विरतिपणुं आदरे त्यारथी आवती बंध थाय छे. अहीं जे पापक्रिया लागे छे ते चारित्रमोहनीयना कारणथी आवे छे. ते मोहभावना क्षय थवाथी आवती बंध थाय छे.

१०३. क्रिया बे प्रकारे थाय छेः—एक व्यक्त एटले प्रगटपणे, अने बीजी अव्यक्त एटले अप्रगटपणे. अव्यक्तपणे थती क्रिया जो के तमामथी जाणी नथी शकाती, परंतु तेथी थती नथी एम नथी.

१०४. पाणीने विषे लहेर अथवा हिल्लोल ते व्यक्तपणे जणाय छे, परंतु ते पाणीमां गंधक अथवा कस्तूरी नांखी होय, अने ते पाणी शान्तपणामां होय तोपण तेने विषे गंधक अथवा कस्तूरीनी जे क्रिया छे ते जो के देखाती नथी, तथापि तेमां अव्यक्तपणे रहेली छे. आवी रीते अव्यक्तपणे थती क्रियाने न श्रद्धवामां आवे अने मात्र व्यक्तपणाने श्रद्धवामां आवे तो एक ज्ञानी जेने विषे अविरतिरूप क्रिया थती नथी ते भाव, अने बीजो उंघी गयेलो माणस जे कंई क्रिया व्यक्तपणे करतो नथी ते भाव समानपणाने पामे छे; परंतु वास्तविक रीते तेम छे नहीं. उंघी गयेला माणसने अव्यक्तपणे क्रिया लागे छे. आ ज प्रमाणे जे माणस (जे जीव) चारित्रमोहनीय नामनी निद्रामां सूतो छे तेने अव्यक्त क्रिया लागती नथी एम नथी. **जो मोहभाव क्षय थाय तो ज अविरतिरूप चारित्रमोहनीयनी क्रिया बंध पडे छे;** ते पहेलां बंध पडती नथी.

क्रियाथी थतो बंध मुख्य एवा पांच प्रकारे छे:—

१. मिथ्यात्व	२. अविरति	३. कषाय	४. प्रमाद	५. योग
५	१२	२५		१५

१०५. मिथ्यात्वनी हाजरी होय त्यांसुधी अविरतिपणुं निर्मूल थतुं नथी, एटले जतुं नथी; परंतु जो मिथ्यात्वपणुं खसे तो अविरतिपणाने जवुं ज जोईए ए निःसंदेह छे; कारण के मिथ्यात्वसहित विरतिपणुं आदरवाथी मोहभाव जतो नथी. मोहभाव कायम छे त्यांसुधी अभ्यंतर विरतिपणुं थतुं नथी, अने प्रमुखपणे रहेलो एवो जे मोहभाव ते नाश पामवाथी अभ्यंतर अविरतिपणुं रहेतुं नथी, अने बाह्य जो अविरतिपणुं आदरवामां न आव्युं होय तोपण जो अभ्यंतर छे तो सेहेजे बहार आवे छे.

१०६. अभ्यंतर विरतिपणुं प्राप्त थया पछी अने उदयआधीन बाह्यथी विरतिपणुं न आदरी शके तोपण ज्यारे उदयकाळ संपूर्ण थई रहे त्यारे सेहेजे विरतिपणुं रहे छे; कारण के अभ्यंतर विरतिपणुं पहेलेथी प्राप्त थयेलुं छे; जेथी हवे अविरतिपणुं छे नहीं के ते अविरतिपणानी क्रिया करी शके.

१०७. **मोहभाववडे करीने ज मिथ्यात्व छे.** मोहभावनो क्षय थवाथी मिथ्यात्वनो प्रतिपक्ष जे सम्यक्भाव ते प्रगटे छे, माटे त्यां आगळ मोहभाव केम होय? अर्थात् होतो नथी.

१०८. जो एवी आशंका करवामां आवे के पांच इंद्रिय अने छट्ठुं मन तथा पांच स्थावरकाय अने छट्ठी त्रसकाय एम बार प्रकारे विरति आदरवामां आवे तो लोकमां रहेला जीव अने अजीव राशि नामना बे समूह छे तेमांथी पांच स्थावरकाय अने छट्ठी त्रसकाय मळी जीवराशिनी विरति थई; परंतु लोकमां रखडावनार एटले अजीवराशि जे जीवथी पर छे तेप्रत्ये प्रीति तेनुं निवृत्तिपणुं आमां आवतुं नथी, त्यांसुधी विरति शी रीते गणी शकाय? तेनुं समाधानः—पांच इंद्रिय अने छट्ठा मनथी जे विरति करवी छे तेनुं जे विरतिपणुं छे तेमां अजीवराशिनी विरति आवी जाय छे.

१०९. पूर्वे ज्ञानीनी वाणी आ जीवे निश्चयपणे कदि सांभळी नथी अथवा ते वाणी सम्यक्प्रकारे माथे चडावी नथी एम सर्वदर्शीए कह्युं छे.

११०. सद्गुरुउपदिष्ट यथोक्त संयमने पाळतां एटले सद्गुरुनी आज्ञाए वर्त्ततां पापथकी विरमवुं थाय छे, अने अभेद्य एवा संसार समुद्रनुं तरवुं थाय छे.

१११. वस्तुस्वरूप केटलाक स्थानके आज्ञावडीए प्रतिष्ठित छे, अने केटलाक स्थानके सद्विचारपूर्वक प्रतिष्ठित छे. परंतु आ दुषम काळनुं प्रबलपणुं एटलुं बधुं छे के हवे पछीनी क्षणे पण विचारपूर्वक प्रतिष्ठितने माटे ते केम प्रवर्त्तशे ते जाणवानी आ काळने विषे शक्ति जणाती नथी, माटे त्यां आगळ आज्ञापूर्वक प्रतिष्ठित रहेवुं ए योग्य छे.

११२. ज्ञानीए कह्युं छे के "बुझो! केम बुझता नथी? फरी आवो अवसर आववो दुर्लभ छे!"

११३. लोकने विषे जे पदार्थ छे तेना धर्म देवाधिदेवे पोताना ज्ञानमां भासवाथी जेम हता

तेम वर्णव्या छे; पदार्थो ते धर्मथी बहार जई प्रवर्त्तता नथी; अर्थात् ज्ञानी महाराजे प्रकाश्युं तेथी बीजी रीते प्रवर्त्तता नथी; तेथी ते ज्ञानीनी आज्ञाप्रमाणे प्रवर्त्ते छे एम कह्युं छे, कारण के ज्ञानीए पदार्थना जेवा धर्म हता तेवा ज तेना धर्म कह्या छे.

११४. काळ मूळ द्रव्य नथी, उपचारिक द्रव्य छे; अने ते जीव तथा अजीव (अजीवमां मुख्यत्वे पुद्गलास्तिकायमां विशेषपणे समजाय छे) मांथी उत्पन्न थयेल छे; अथवा जीवाजीवनी पर्यायअवस्था ते काळ छे. दरेक द्रव्यना अनंता धर्म छे. तेमां ऊर्ध्वप्रचय, अने तिर्य्यक्प्रचय एवा बे धर्म छे; अने काळने विषे तिर्य्यक्प्रचय धर्म नथी. एक ऊर्ध्वप्रचय धर्म छे.

११५. ऊर्ध्वप्रचयथी पदार्थमां जे धर्मनुं उद्भववुं थाय छे ते धर्मनुं तिर्य्यक्प्रचयथी पाछुं तेमां समावुं थाय छे. कालना समयने तिर्य्यक्प्रचय नथी, तेथी जे समय गयो ते पाछो आवतो नथी.

११६. दिगम्बरअभिप्राय मुजब 'कालद्रव्य'ना लोकमां असंख्याता अणु छे.

११७. दरेक द्रव्यना अनंता धर्म छे. तेमां केटलाक धर्म व्यक्त छे; केटलाक अव्यक्त छे. केटलाक मुख्य छे; केटलाक सामान्य छे; केटलाक विशेष छे.

११८. असंख्याताने असंख्याता गुणा करतां पण असंख्यात थाय, अर्थात् असंख्यातना असंख्यात भेद छे.

११९. एक आंगुलना असंख्यात भाग--अंश--प्रदेश ते एक आंगुलमां असंख्यात छे. लोकना पण असंख्यात प्रदेश छे. गमे ते दिशानी समश्रेणिए असंख्यात थाय छे. ते प्रमाणे एक पछी एक बीजी त्रीजी समश्रेणिनो सर्वाळो करतां जे सर्वाळो थाय ते एक गुणुं, बे गुणुं, त्रण गुणुं, चार गुणुं थाय पण असंख्यात गुणुं न थाय; परंतु एक समश्रेणि जे असंख्यात प्रदेशवाळी छे ते समश्रेणिनी दिशावाळी सघळी समश्रेणिओ जे असंख्यात गुणी छे ते दरेक असंख्यातीए गुणतां, तेम ज बीजी दिशानी समश्रेणि छे तेनो पण गुणाकार करतां ते प्रमाणे करतां, त्रीजी दिशानी छे तेनुं पण ते प्रमाणे करतां असंख्यात थाय. ए असंख्याताना भांगाने ज्यांसुधी एक बीजानो गुणाकार करी शकाय त्यांसुधी असंख्याता थाय. अने ते गुणाकारथी कोई गुणाकार करवो बाकी न रहे त्यारे असंख्यात पुरुं थई तेमां एक उमेरतां जघन्यमां जघन्य अनंतु थाय.

१२०. नय छे ते प्रमाणनो अंश छे. जे नयथी जे धर्म कहेवामां आव्यो छे त्यां तेटलुं प्रमाण छे. ए नयथी जे धर्म कहेवामां आव्यो छे ते शिवाय वस्तुने विषे बीजा जे धर्म छे तेनो निषेध करवामां आव्यो नथी. एकी वखते वाणीद्वाराए बधा धर्म कही शकाता नथी. तेम ज जे जे प्रसंग होय ते ते प्रसंगे त्यां मुख्यपणे ते ज धर्म कहेवामां आवे छे. त्यां त्यां ते ते नयथी प्रमाण छे.

१२१. नयना स्वरूपथी आघे जई कहेवामां आवे छे ते नय नहीं, परंतु नयाभास थाय छे; अने नयाभास त्यां मिथ्यात्व ठरे छे.

१२२. नय सात मान्या छे. तेना उपनय सातसो, अने विशेष स्वरूपे अनंता छे; अर्थात् जे वाणी छे ते सघळा नय छे.

१२३. एकांतिकपणुं ग्रहवानो स्वछंद जीवने विशेषपणे होय छे, अने एकांतिकपणुं ग्रहवाथी नास्तिकपणुं थाय छे. ते न थवा माटे आ नयनुं स्वरूप कहेवामां आव्युं छे; जे समजवाथी जीव एकांतिकपणुं ग्रहतो अटकी मध्यस्थ रहे छे, अने मध्यस्थ रहेवाथी नास्तिकता अवकाश पामी शकती नथी.

१२४. नय जे कहेवामां आवे छे ते नय पोते कंई वस्तु नथी, परंतु वस्तुनुं स्वरूप समजवा तथा तेनी सुप्रतीत थवा प्रमाणनो अंश छे.

१२५. अमुक नयथी कहेवामां आव्युं त्यारे बीजा नयथी प्रतीत थता धर्मनी अस्ति नथी एम ठरतुं नथी.

१२६. केवलज्ञान एटले मात्र ज्ञान ज, ते शिवाय बीजुं कंई ज नहीं. अने ज्यारे एम छे त्यारे तेने विषे बीजुं कशुं समातुं नथी. सर्वथा सर्व प्रकारे रागद्वेषनो क्षय थाय त्यारे ज केवलज्ञान कहेवाय. जो कोई अंशे रागद्वेष होय तो ते चारित्रमोहनीयना कारणथी छे. ज्यां आगळ जेटले अंशे रागद्वेष छे त्यां आगळ तेटले अंशे अज्ञान छे, जेथी केवलज्ञानमां ते समाई शकतां नथी, एटले केवलज्ञानमां ते होतां नथी, ते एक बीजानां प्रतिपक्षी छे. ज्यां केवलज्ञान छे त्यां रागद्वेष नथी, अथवा ज्यां रागद्वेष छे त्यां केवलज्ञान नथी.

१२७. गुण अने गुणी एक ज छे, परंतु कोई कारणे ते परिछिन्न पण छे. सामान्य प्रकारे तो गुणनो समुदाय ते 'गुणी' छे; एटले गुण अने गुणी एक ज छे, जूदी जूदी वस्तु नथी. गुणीथी गुण जूदो पडी शकतो नथी. जेम साकरनो कटको छे ते 'गुणी' छे अने मिठाश छे ते गुण छे. 'गुणी' जे साकर अने गुण जे मिठाश ते बन्ने साथे ज रहेल छे; मिठाश कंई जूदी पडती नथी, तथापि 'गुण', 'गुणी' कोई अंशे भेदवाळा छे.

१२८. केवलज्ञानीनो आत्मा पण देहव्यापकक्षेत्रअवगाहित छे; छतां लोकालोकना सघळा पदार्थो जे देहथी दूर छे तेने पण एकदम जाणी शके छे.

१२९. **स्व परने जूदा पाडनार जे ज्ञान ते ज्ञान.** आ ज्ञानने प्रयोजनभूत कहेवामां आव्युं छे. आ शिवायनुं ज्ञान ते 'अज्ञान' छे. शुद्धआत्मदशारूप शांत जिन छे. तेनी प्रतीति जिनप्रतिबिंब सूचवे छे. ते शांत दशा पामवा सारू जे परिणति, अथवा अनुकरण अथवा मार्ग तेनुं नाम 'जैन';—जे मार्गे चालवाथी जैनपणुं प्राप्त थाय छे.

१३०. आ मार्ग आत्मगुणरोधक नथी, पण बोधक छे, एटले आत्मगुण प्रगट करे छे, तेमां कशो संशय नथी. आ वात परोक्ष नथी, पण प्रत्यक्ष छे. खात्री करवा इच्छनारे पुरुषार्थ करवाथी सुप्रतीत थई प्रत्यक्ष अनुभवगम्य थाय छे.

१३१. सूत्र अने सिद्धांत ए बे जूदां छे. साचववासारू सिद्धांतो सूत्ररूपी पेटीमां राखवामां आव्या छे. देश, काळने अनुसरी सूत्र रचवामां एटले गुंथवामां आवे छे; अने तेमां सिद्धांतनी गुंथणी करवामां आवे छे. ते सिद्धांतो गमे ते काळमां, गमे ते क्षेत्रमां फरता नथी; अथवा खंडितपणाने पामता नथी; अने जो तेम थाय तो ते सिद्धांत नथी.

१३२. सिद्धांत ए गणितनी माफक प्रत्यक्ष छे तेथी तेमां कोई जातनी भूल के अधुरापणुं समातुं नथी. अक्षर बोडीआ होय तो सुधारीने माणसो वांचे छे, परंतु आंकडानी भूल थाय तो ते हिसाब खोटो ठरे छे माटे आंकडा बोडीआ होता नथी. आ दृष्टांत उपदेशमार्ग अने सिद्धांतमार्गने विषे घटाववुं.

१३३. सिद्धांतो गमे ते देशमां, गमे ते भाषामां, गमे ते काळमां लखाणां होय, तोपण असिद्धांतपणाने पामता नथी. दाखला तरीके, बेने बे चार थाय. पछी गमे तो गुजराती, के संस्कृत, के प्राकृत, के चीनी, के अरबी, के पर्स्यन के इंग्लिश भाषामां लखायेल होय. ते आंकडाने गमे ते संज्ञामां ओळखवामां आवे तोपण बे ने बेनो सर्वाळो चार थाय ए वात प्रत्यक्ष छे. जेम नेवे नेवे एकाशी ते गमे ते देशमां, गमे ते भाषामां, अने धोळा दिवसे के अंधारी रात्रिए गणवामां आवे तोपण ८० अथवा ८२ थता नथी, परंतु एकाशी ज थाय छे. आ ज प्रमाणे सिद्धांतनुं पण छे.

१३४. सिद्धांत छे ए प्रत्यक्ष छे, ज्ञानीना अनुभवगम्यनी बाबत छे, तेमां अनुमानपणुं काम आवतुं नथी. अनुमान ए तर्कनो विषय छे; अने तर्क ए आगळ जतां केटलीकवार खोटो पण पडे; परंतु प्रत्यक्ष जे अनुभवगम्य छे तेमां कांई पण खोटापणुं समातुं नथी.

१३५. जेने गुणाकार अथवा सर्वाळानुं ज्ञान थयुं छे ते एम कहे के नेवे नेवे एकाशी; त्यां आगळ जेने सर्वाळा अथवा गुणाकारनुं ज्ञान थयुं नथी, अर्थात् क्षयोपशम थयो नथी ते अनुमानथी अथवा तर्क करी एम कहे के "९८ थता होय तो केम ना कही शकाय?" तो तेमां कांई आश्चर्य पामवा जेवुं छे नहीं, केमके तेने ज्ञान न होवाथी तेम कहे ए स्वाभाविक छे. परंतु जो तेने गुणाकारनी रीत छोडी (छूटी छूटी करी) एकथी नव सुधी आंकडा बतावी नववार गणाव्युं होय तो एकाशी थतां अनुभवगम्य थवाथी तेने सिद्ध थाय छे. कदापि तेना मंद क्षयोपशमथी एकाशी, गुणाकारथी अथवा सर्वाळाथी न समजाय तोपण एकाशी थाय एमां फेर नथी. ए प्रमाणे सिद्धांत, आवरणना कारणथी न समजवामां आवे तोपण ते असिद्धांतपणाने पामता नथी ए वातनी चोकस प्रतीति राखवी. छतां खात्री करवा जरूर होय तो तेमां बताव्या प्रमाणे करवाथी खात्री थतां प्रत्यक्ष अनुभवगम्य थाय छे.

१३६. ज्यांसुधी अनुभवगम्य न थाय त्यांसुधी सुप्रतीति राखवा जरूर छे, अने सुप्रतीतिथी क्रमे क्रमे करी अनुभवगम्य थाय छे.

१३७. सिद्धांतना दाखला:

(१) "रागद्वेषथी बंध थाय छे."

(२) "बंधनो क्षय थवाथी मुक्ति थाय छे."

आ सिद्धांतनी खात्री करवी होय तो रागद्वेष छोडो. रागद्वेष सर्व प्रकारे छूटे तो आत्मानो सर्व प्रकारे मोक्ष थाय छे. आत्मा बंधनना कारणथी मुक्त थई शकतो नथी. बंधन छुट्युं के मुक्त छे. बंधन थवानुं कारण रागद्वेष छे. रागद्वेष सर्वथा प्रकारे छूट्यो के बंधथी छूट्यो ज छे. तेमां कशो सवाल के शंका रहेतां नथी.

१३८. जे समये सर्वथा प्रकारे रागद्वेष क्षय थाय, तेने बीजे ज समये 'केवलज्ञान' छे.

१३९. जीव पहेला गुणस्थानकमांथी आगळ जतो नथी; आगळ जवा विचार करतो नथी. पहेलाथी आगळ शी रीते वधी शकाय, तेना शुं उपाय छे, केवी रीते पुरुषार्थ करवो, तेनो विचार पण करतो नथी, अने वातो करवा बेसे त्यारे एवी करे के तेरमुं आ क्षेत्रे अने आ काळे प्राप्त थतुं नथी. आवी आवी गहन वातो जे पोतानी शक्ति बहारनी छे ते तेनाथी शी रीते समजी शकाय? अर्थात् पोताने क्षयोपशम होय ते उपरांतनी वातो करवा बेसे ते न ज समजी शकाय.

१४०. ग्रंथि पहेले गुणस्थानके छे तेनुं भेदन करी आगळ वधी चोथा सुधी संसारी जीवो पहोंच्या नथी. कोई जीव निर्जरा करवाथी उंचा भावे आवतां, पहेलामांथी नीकळवा विचार करी, ग्रंथिभेदनी नजीक आवे छे त्यां आगळ गांठनुं एटलुं बधुं तेना उपर जोर थाय छे के ग्रंथिभेद करवामां शिथिल थई जई अटकी पडे छे; अने ए प्रमाणे मोळो थई पाछो वळे छे. आ प्रमाणे ग्रंथिभेद नजीक अनंतिवार आवी जीव पाछो फर्यो छे. कोई जीव प्रबल पुरुषार्थ करी निमित्त कारणनो जोग पामी करेडीआं करी ग्रंथिभेद करी, आगळ वधी आवे छे, अने ज्यारे ग्रंथिभेद करी आगळ वध्यो के चोथामां आवे छे, अने चोथामां आव्यो के वेहेलामोडो मोक्ष थशे, एवी ते जीवने छाप मळे छे.

१४१. आ गुणस्थानकनुं नाम 'अविरतिसम्यग्दृष्टि' छे; ज्यां विरतिपणाविना सम्यक् ज्ञानदर्शन छे.

१४२. कहेवामां एम आवे छे के तेरमुं गुणस्थानक आ काळ ने आ क्षेत्रथी न पमाय; परंतु तेम कहेनारा पहेलामांथी खसता नथी. जो तेओ पहेलामांथी खसी, चोथासुधी आवे, अने त्यां पुरुषार्थ करी सातमुं जे अप्रमात्त छे त्यांसुधी पहोंचे तोपण एक मोटामां मोटी वात छे. सातमासुधी पहोंच्याविना ते पछीनी दशानी सुप्रतीति थई शकवी मुश्केल छे.

१४३. आत्माने विषे प्रमादरहित जागृतदशा ते ज सातमुं गुणस्थानक छे. त्यांसुधी पहोंचवाथी तेमां सम्यक्त्व समाय छे. चोथा गुणस्थानके जीव आवीने त्यांथी पांचमुं 'देशविरति' छठ्ठुं 'सर्वविरति' अने सातमुं 'प्रमादरहित विरति' छे त्यां पहोंचे छे. त्यां आगळ पहों- च्येथी आगळनी दशानी अंशे अनुभव अथवा सुप्रतीति थाय छे. चोथा गुणस्थानकवाळो

जीव सातमा गुणस्थानकने पहोंचनारनी दशानो जो विचार करे तो ते कोई अंशे प्रतीत थई शके. पण तेनो पहेला गुणस्थानकवाळो जीव विचार करे तो ते शी रीते प्रतीतिमां आवी शके? कारण के तेने जाणवानुं साधन जे आवरणरहित थवुं ते पहेला गुणस्थानकवाळानी पासे होय नहीं.

१४४. सम्यक्त्व प्राप्त थयेल जीवनी दशानुं स्वरूप ज जूदुं होय छे. पहेला गुणस्थानकवाळा जीवनी दशानी जे स्थिति अथवा भाव छे तेना करतां चोथुं गुणस्थानक प्राप्त करनारनी दशानी जे स्थिति अथवा भाव ते जूदां जोवामां आवे छे, अर्थात् जूदी ज दशानुं वर्त्तन जोवामां आवे छे.

१४५. पहेलुं मोळुं करे तो चोथे आवे एम कहेवामात्र छे; चोथे आववामां जे वर्त्तन छे ते विषय विचारवाजोग छे.

१४६. आगळ ४,५,६ अने ७ मा गुणस्थानकसुधीनी जे वात कहेवामां आवी छे ते कहेवामात्र, अथवा सांभळवामात्र ज छे एम नथी, परंतु समजीने वारंवार विचारवायोग्य छे.

१४७. बनी शके तेटलो पुरुषार्थ करी आगळ वधवा जरूर छे.

१४८. न प्राप्त थई शके तेवी धीरज, संघयण, आयुष्नी पूर्णता इत्यादिना अभावथी कदाच् सातमा गुणस्थानक उपरनो विचार अनुभवमां न आवी शके, परंतु सुप्रतीत थई शकवायोग्य छे.

१४९. सिंहना दाखलानी माफकः–सिंहने लोढाना जबरजस्त पांजरामां पुरवामां आव्यो होय तो ते अंदर रह्यो पोताने सिंह समजे छे, पांजरामां पुरायलो माने छे; अने पांजरानी बहारनी भूमिका पण जुवे छे; मात्र लोढाना मजबुत सळियानी आड्यने लीधे बहार नीकळी शकतो नथी. आ ज रीते सातमा गुणस्थानक उपरनो विचार सुप्रतीत थई शके छे.

१५०. आ प्रमाणे छतां जीव मतभेदादि कारणोने लईने रोकाई जई आगळ वधी शकतो नथी.

१५१. मतभेद अथवा रुढी आदि नजीवी बाबत छे; अर्थात् तेमां मोक्ष नथी. माटे खरी रीते सत्यनी प्रतीति करवानी जरूर छे.

१५२. शुभाशुभ, अने शुद्धाशुद्ध परिणाम उपर बधो आधार छे. अल्प अल्प बाबतमां पण दोष मानवामां आवे त्यां मोक्ष थतो नथी. लोकरुढीमां अथवा लोकव्यवहारमां पडेलो जीव मोक्षतत्त्वनुं रहस्य जाणी शकतो नथी तेनुं कारण तेने विषे रुढीनुं अथवा लोकसंज्ञानुं महात्म्य छे. आथी करी बादरक्रियानो निषेध करवामां आवतो नथी. जे कांई पण न करतां तदन अनर्थ करे छे ते करतां बादरक्रिया उपयोगी छे. तोपण तेथी करी बादरक्रियाथी आगळ न वधवुं एम पण कहेवानो हेतु नथी.

१५३. जीवने पोतानां डहापण अने मरजी प्रमाणे चालवुं ए वात मनगमती छे; पण ते जीवनुं भूंडुं करनार वस्तु छे. आ दोष मटाडवासारू प्रथम तो कोईने उपदेश देवानो नथी पण प्रथम उपदेश लेवानो छे ए ज्ञानीनो उपदेश छे. जेनामां रागद्वेष न होय, तेवानो संग थयाविना सम्यक्त्व प्राप्त थई शकतुं नथी. सम्यक्त्व आववाथी (प्राप्त

भवाथी) जीव फरे छे (जीवनी दशा फरे छे); एटले प्रतिकूल होय तो अनुकूल थाय छे. जिननी प्रतिमा (शांतपणा माटे) जोवाथी सातमा गुणस्थानके वर्त्तता एवा ज्ञानीनी जे शांत दशा छे तेनी प्रतीति थाय छे.

१५४. जैनमार्गमां हालमां घणा गच्छ प्रवर्त्ते छे. जेवा के तपगच्छ, अंचलगच्छ, लुंकागच्छ, खरतरगच्छ इत्यादि. आ दरेक पोताथी अन्य पक्षवाळाने मिथ्यात्वी माने छे. तेवी रीते बीजा विभाग छ कोटि, आठ कोटि इत्यादि दरेक पोताथी अन्य कोटिवाळाने मिथ्यात्वी माने छे. व्याजबी रीते नवकोटि जोईए. तेमांथी जेटली ओछी तेटलुं ओछुं; अने ते करतां पण आगळ जवामां आवे तो समजाय के छेवटे नव कोटिए छोड्याविना रस्तो नथी.

१५५. तीर्थंकरादि मोक्ष पाम्या ते मार्ग पामर नथी. रूढीनुं थोडुं पण मुकवुं ए अत्यंत आकरूं लागे छे; तो महान् अने महाभारत एवो मोक्षमार्ग ते शी रीते आदरी शकाशे? ते विचारवायोग्य छे.

१५६. मिथ्यात्वप्रकृति खपाव्याविना सम्यक्त्व आवे नहीं. सम्यक्त्व प्राप्त थाय तेनी दशा अद्भुत वर्त्ते. त्यांथी ५,६,७ अने ८ में जई बे घडीमां मोक्ष थई शके छे. एक सम्यक्त्व पामवाथी केवुं अद्भुत कार्य बने छे! आथी सम्यक्त्वनी चमत्कृति अथवा तेनुं महात्म्य कोई अंशे समजी शकाय तेम छे.

१५७. दुःधर पुरुषार्थथी पामवायोग्य मोक्षमार्ग ते अनायासे प्राप्त थतो नथी. **आत्मज्ञान अथवा मोक्षमार्ग कोईना शापथी अप्राप्त थतो नथी के कोईना आशिर्वादथी प्राप्त थतो नथी. पुरुषार्थ प्रमाणे थाय छे माटे पुरुषार्थनी जरूर छे.**

१५८. सूत्र–सिद्धांत–शास्त्रो सत्पुरुषना उपदेशविना फळतां नथी. भेद जे छे ते व्यवहार-मार्गमां छे. मोक्षमार्ग तो अभेद छे, एक ज छे. ते प्राप्त करवामां शिथिलपणुं छे तेनो निषेध करवामां आव्यो छे. त्यां आगळ शूरवीरपणुं ग्रहण करवायोग्य छे. जीवने अमूर्छित करवो ए ज जरूरनुं छे.

१५९. विचारवान पुरुषे व्यवहारना भेदथी मुंझावुं नहीं.

१६०. उपरनी भूमिकावाळा नीचेनी भूमिकावाळानी बरोबर नथी, परंतु नीचेनी भूमिकावाळाथी ठीक छे. पोते जे व्यवहारमां होय तेथी बीजानो उंचो व्यवहार जोवामां आवे तो ते उंचा व्यवहारनो निषेध करवो नहीं, कारण के मोक्षमार्गने विषे कशो भेद छे नहीं. **त्रणे काळमां गमे ते क्षेत्रमां, एक ज सरखो जे प्रवर्त्ते ते ज मोक्षमार्ग.**

१६१. अल्पमां अल्प एवी निवृत्ति करवामां पण जीवने टाढ वछुटे छे, तो तेवी अनंत प्रवृत्तिथी करी जे मिथ्यात्व थाय छे तेथी निवर्त्तवुं ए केटलुं दुःधर थई पडवुं जोईए? मिथ्यात्वनी निवृत्ति ते ज 'सम्यक्त्व'.

१६२. जीवाजीवनी विचाररूपे प्रतीति करवामां आवी न होय, अने बोलवामात्र ज जीवाजीव छे एम कहेवुं ते सम्यक्त्व नथी. तीर्थंकरादिए पण पूर्वे आराध्युं छे तेथी प्रथमथी ज

सम्यक्त्व तेमने विषे छे, परंतु बीजाने ते कंई अमुक कुळमां, अमुक नातमां, के जातमां, के अमुक देशमां अवतार लेवाथी जन्मथी ज सम्यक्त्व होय एम नथी.

१६३. विचारविना ज्ञान नहीं. ज्ञानविना सुप्रतीति एटले सम्यक्त्व नहीं. सम्यक्त्वविना चारित्र न आवे, अने चारित्र न आवे त्यांसुधी केवलज्ञान न पामे, अने ज्यांसुधी केवलज्ञान न पामे त्यांसुधी मोक्ष नथी; एम जोवामां आवे छे.

१६४. देवनुं वर्णन. तत्त्व. जीवनुं स्वरूप.

१६५. कर्मरूपे रहेला परमाणु केवलज्ञानीने दृश्य छे ते शिवायने माटे चोकस नियम होय नहीं. परमावधिवाळाने दृश्य थवा संभवे छे; अने मनःपर्यवज्ञानीने अमुक देशे दृश्य थवा संभवे छे.

१६६. पदार्थने विषे अनंता धर्म (गुणादि) रह्या छे. तेना अनंतमा भागे वाणीथी कही शकाय छे. तेना अनंतमा भागे सूत्रमां गुंथी शकाय छे.

१६७. यथाप्रवृत्तिकरण, अनिवृत्तिकरण, अपूर्वकरण उपरांत युंजनकरण अने गुणकरण छे. युंजनकरणने गुणकरणथी क्षय करी शकाय छे.

१६८. युंजनकरण एटले प्रकृतिने योजवी ते. आत्मगुण जे ज्ञान, ने तेनाथी दर्शन, ने तेनाथी चारित्र, एवा गुणकरणथी युंजनकरणनो क्षय करी शकाय छे. अमुक अमुक प्रकृति जे आत्मगुणरोधक छे तेने गुणकरणे करी क्षयकरी शकाय छे.

१६९. कर्मप्रकृति, तेना जे सूक्ष्ममां सूक्ष्म भाव, तेनां बंध, उदय, उदीरणा, संक्रमण, सत्ता, अने क्षयभाव जे बतावvवामां आव्या छे (वर्णववामां आव्या छे) ते परम सामर्थ्यविना वर्णवी शकाय नहीं. आ वर्णवनार जीवकोटिना पुरुष नहीं, परंतु ईश्वरकोटीना पुरुष जोईए एवी सुप्रतीति थाय छे.

१७०. कई कई प्रकृतिनो केवा रसथी क्षय थयेलो होवो जोईए? कई प्रकृति सत्तामां छे? कई उदयमां छे? कई संक्रमण करी छे? आ आदिनी रचना कहेनारे, उपरमुजब प्रकृतिनुं स्वरूप मापीने कह्युं छे ते तेमना परमज्ञाननी वात बाजुए मुकीए तोपण ते कहेनार ईश्वरकोटिनो पुरुष होवो जोईए ए चोकस थाय छे.

१७१. जातिस्मरणज्ञान ए मतिज्ञानना 'धारणा' नामना भेदमां समाय छे. ते पाछला भव जाणी शके छे. ते ज्यांसुधी पाछला भवमां असंज्ञीपणुं न आव्युं होय त्यांसुधी आगळ चाली शके छे.

१७२. (१) तीर्थंकरे आज्ञा न आपी होय अने जीव पोताना शिवाय परवस्तुनुं जे कांई ग्रहण करे ते पारकुं लीधेलुं, ने ते अदत्त गणाय. ते अदत्तमांथी तीर्थंकरे परवस्तु जेटली ग्रहण करवानी छूट आपी छे, तेटलाने अदत्त गणवामां नथी आवतुं.

(२) गुरुनी आज्ञाप्रमाणे करेला वर्त्तनना संबंधे अदत्त गणवामां आवतुं नथी.

१७३. उपदेशना चार मुख्य प्रकार छे:

(१) द्रव्यानुयोग. (२) चरणानुयोग. (३) गणितानुयोग. (४) धर्मकथानुयोग.

(१) लोकने विषे रहेलां द्रव्यो, तेनां स्वरूप, तेना गुण, धर्म, हेतु, अहेतु पर्यायादि अनंत अनंत प्रकारे छे, तेनुं जेमां वर्णन छे ते 'द्रव्यानुयोग.'

(२) आ द्रव्यानुयोगनुं स्वरूप समजाया पछी केम चालवुं ते संबंधीनुं वर्णन ते 'चरणानुयोग'.

(३) द्रव्यानुयोग तथा चरणानुयोगथी तेनी गणत्रिनुं प्रमाण, तथा लोकने विषे रहेला पदार्थ, भावो, क्षेत्र, कालादिनी गणत्रिना प्रमाणनी जे वात ते 'गणितानुयोग.'

(४) सत्पुरुषोनां धर्मचरित्रनी कथाओ के जेनो धडो लई जीवने पडतां अवलंबनकारी थई परणमे ते 'धर्मकथानुयोग.'

१७४. परमाणुमां रहेला गुण स्वभावादि कायम रहे छे, अने पर्याय ते फरे छे. दृष्टांत तरीकेः– पाणीमां रहेलो शीतगुण ए फरतो नथी, पण पाणीमां जे तरंगो उठे छे ते फरे छे, अर्थात् ते एक पछी एक उठी तेमां समाई जाय छे. आ प्रमाणे पर्यायअवस्था अवस्थांतर थया करे छे तेथी करी पाणीने विषे रहेल जे शीतलता अथवा पाणीपणुं ते फरी जतां नथी पण कायम रहे छे, अने पर्यायरूप तरंग ते फर्या करे छे. तेम ज ते गुणनी हानि वृद्धिरूप फेरफार ते पण पर्याय छे. तेना विचारथी प्रतीति अने प्रतीतिथी त्याग अने त्यागथी ज्ञान थाय छे.

१७५. तेजस् अने कार्मण शरीर स्थूलदेहप्रमाण छे. तेजस् शरीर गरमी करे छे तथा आहार पचाववानुं काम करे छे. शरीरना अमुक अमुक अंग घसवाथी गरम जणाय छे ते तेजस्ना कारणथी जणाय छे. माथा उपर घृतादि मूकी ते शरीरनी परीक्षा करवानी रूढी छे. तेनो अर्थ ए के ते शरीर स्थूल शरीरमां छे के शी रीते? अर्थात् स्थूल शरीरमां जीवनी माफक ते आखा शरीरमां रहे छे.

१७६. तेम ज कार्मण शरीर पण छे;–जे तेजस् करतां सूक्ष्म छे. ते पण तेजस्नी माफक रहे छे. स्थूल शरीरनी अंदर पीडा थाय छे, अथवा क्रोधादि थाय छे ते ज कार्मण शरीर छे. कार्मणथी क्रोधादि थई तेजुलेश्यादि उत्पन्न थाय छे. वेदनानो अनुभव जीव करे छे, परंतु वेदना थवी ते कार्मणशरीरने लईने थाय छे. कार्मण शरीर ए जीवनुं अवलंबन छे.

१७७. उपर जणावेल चार अनुयोगनुं तथा तेना सूक्ष्मभावनुं जे स्वरूप ते जीवे वारंवार विचारवायोग्य छे; जाणवायोग्य छे. ते परिणामे निर्जराना हेतु थाय छे, वा निर्जरा थाय छे. चित्तनी स्थिरता करवा माटे सघळुं कहेवामां आव्युं छे; कारण के ए सूक्ष्ममां सूक्ष्म स्वरूप जीवे जो कांई जाण्युं होय तो तेने वास्ते वारंवार विचार करवानुं बने छे; अने तेवा विचारथी जीवनी बाह्यवृत्ति नहीं थतां अंदरनी अंदर विचारतांसुधी समायेली रहे छे.

१७८. अंतर्विचारनुं साधन न होय तो जीवनी बाह्यवस्तु उपर वृत्ति जई अनेक जातना घाट घडाय छे. जीवने अवलंबन जोईए छीए. तेने नवरो बेसी रहेवानुं ठीक पडतुं नथी.

एवी ज टेव पडी गई छे; तेथी जो उपला पदार्थनुं जाणपणुं थयुं होय तो तेना विचारने लीधे सद्वृत्ति बहार नीकळवाने बदले अंदर समायेली रहे छे; अने तेम थवाथी निर्जरा थाय छे.

१७९. पुद्गल परमाणु अने तेना पर्यायादिनुं सूक्ष्मपणुं छे ते जेटलुं वाणीगोचर थई शके तेटलुं कहेवामां आव्युं छे. ते एटला सारू के ए पदार्थो मूर्तिमान् छे; अमूर्त्तिमान नथी. मूर्तिमान् छतां आ प्रमाणे सूक्ष्म छे तेना वारंवार विचारथी स्वरूप समजाय छे, अने ते प्रमाणे समजायाथी तेथी सूक्ष्म अरूपी एवो जे आत्मा ते संबंधी जाणवानुं काम सहेलुं थाय छे.

१८०. **मान अने मताग्रह ए मार्ग पामवामां आडा स्थंभरूप छे.** ते मूकी शकातां नथी, अने तेथी समजातुं नथी. समजवामां विनय भक्तिनी पहेली जरूर पडे छे. ते भक्ति मान मताग्रहना कारणथी आदरी शकाती नथी.

१८१. १. वांचवुं २. पूछवुं ३. वारंवार फेरववुं ४. चित्तने निश्चयमां आणवुं ५. धर्मकथा. वेदांतमां पण श्रवण, मनन, निदिध्यासन एम भेद बताव्या छे.

१८२. उत्तराध्ययनमां धर्मनां मुख्य चार अंग कह्यां छे.

१. मनुष्यपणुं. २. सत्पुरुषना वचननुं श्रवण. ३. तेनी प्रतीति. ४. धर्मनुं प्रवर्त्तवुं. आ चार वस्तु दुर्लभ छे.

१८३. मिथ्यात्वना बे भेद छे. (१) व्यक्त. (२) अव्यक्त. तेना त्रण भेद पण कर्या छे. (१) उत्कृष्ट (२) मध्यम (३) जघन्य. उत्कृष्ट मिथ्यात्व होय त्यांसुधी पहेला गुणस्थानमांथी बहार नीकळतो नथी. उत्कृष्ट मिथ्यात्व होय त्यांसुधी ते मिथ्यात्व गुणस्थानक न गणाय. **गुणस्थानक ए जीवआश्रयी छे.**

१८४. मिथ्यात्ववडे करी मिथ्यात्व मोळुं पडे छे, अने ते कारणथी ते जरा आगळ चाल्यो के तरत ते मिथ्यात्वगुणस्थानकमां आवे छे.

१८५. गुणस्थानक ए आत्माना गुणने लईने छे.

१८६. मिथ्यात्वमांथी साव खस्यो न होय पण थोडो खस्यो होय तोपण तेथी मिथ्यात्व मोळुं पडे छे. आ मिथ्यात्व पण मिथ्यात्वे करीने मोळुं पडे छे. मिथ्यात्वगुणस्थानके पण मिथ्यात्वनो अंश कषाय होय ते अंशथी पण मिथ्यात्वमांथी मिथ्यात्वगुणस्थानक कहेवामां आवे छे.

१८७. प्रयोजनभूत ज्ञानना मूळमां—पूर्ण प्रतीतिमां तेवा ज आकारमां मळता आवता अन्य मार्गनी सरखामणीना अंशे सरखापणारूप प्रतीत थवुं ते मिश्र गुणस्थानक छे; परंतु **फलाणुं दर्शन सत्य छे, अने फलाणुं दर्शन पण सत्य छे एवी बन्ने उपर सरखी प्रतीति ते मिश्र नहीं, पण मिथ्यात्वगुणस्थानक छे.** अमुकथी अमुक दर्शन अमुक

अंशे मळतुं आवे छे एम कहेवामां सम्यक्त्वने बाध नथी; कारण के त्यां तो अमुक दर्शननी बीजा दर्शननी सरखामणीमां पहेलुं दर्शन सर्वांगे प्रतीतिरूप थाय छे.

१८८. पहेलेथी बीजे जवातुं नथी, परंतु चोथेथी पाछा वळतां पहेले आववामां रहेतो वचलो अमुक काळ ते बीजुं छे. तेने जो चोथा पछी पांचमुं गणवामां आवे तो चोथाथी पांचमुं चडी जाय अने अहीं तो सास्वादान चोथाथी पतित थयेल मानेल छे; एटले ते उतरतुं छे; तेथी पांचमातरीके न मुकी शकाय पण बीजा तरीके मुकवुं ए बराबर छे.

१८९. आवरण छे ए वात निःसंदेह छे. जे श्वेताम्बर तथा दिगम्बर बन्ने कहे छे; परंतु आवरणने साथे लई कहेवामां थोडुंएक एक बीजाथी तफावतवाळुं छे.

१९०. दिगम्बर कहे छे के केवलज्ञान सत्तारूपे नहीं, परंतु शक्तिरूपे रह्युं छे.

१९१. जो के सत्ता अने शक्तिनो सामान्य अर्थ एक छे; परंतु विशेषार्थ प्रमाणे कंईक फेर रहे छे.

१९२. दृढपणे ओघ आस्थाथी, विचारपूर्वक अभ्यासथी 'विचारसहित आस्था' थाय छे.

१९३. तीर्थंकर जेवा पण संसारपक्षे विशेष समृद्धिना धणी हता. छतां तेमने पण त्याग करवानी जरूर पडी हती; तो पछी अन्य जीवोने तेम करवाशिवाय छूटको नथी.

१९४. त्यागना बे प्रकार छेः—एक बाह्य, अने बीजो अभ्यंतर. तेमांनो बाह्यत्याग ते अभ्यंतर त्यागने सहायकारी छे. (त्याग साथे वैराग्य जोडाय छे, कारण के वैराग्य थये ज त्याग थाय छे.)

१९५. जीव एम माने छे के हुं कांईक समजुं छुं, अने ज्यारे त्याग करवा धारीश त्यारे एकदम त्याग करी शकीश, परंतु ते मानवुं भुलभरेलुं थाय छे. ज्यांसुधी एवो प्रसंग नथी आव्यो, त्यांसुधी पोतानुं जोर रहे छे. ज्यारे एवो वखत आवे छे त्यारे शिथिल-परिणामी थई मोळो पडे छे. माटे आस्ते आस्ते तपास करवो तथा परिचय करवा मांडवो के त्यागती वखत परिणाम केवां शिथिल थई जाय छे?

१९६. आंख, जीभादि इंद्रियोनी एकेक आंगळ जेटली जगो जीतवी जेने मुश्केल थई पडे छे, अथवा जीतवुं असंभवित थई पडे छे, तेने मोटुं पराक्रम करवानुं अथवा मोटुं क्षेत्र जीतवानुं काम सोंप्युं होय तो ते शी रीते बनी शके? **एकदम त्याग करवानो वखत आवे त्यारेनी वात त्यारे ए विचार तरफ लक्ष राखी हाल तो आस्ते आस्ते त्यागनी कसरत करवानी जरूर छे.** तेमां पण शरीर अने शरीर साथे संबंध राखता सगा संबंधीओना संबंधमां प्रथम अजमायश करवी; अने शरीरमां पण आंख, जीभ अने उपस्थ ए त्रण इंद्रियोना विषयना देशे देशे त्याग तरफ प्रथम जोडाण कराववानुं छे, अने तेना अभ्यासथी एकदम त्याग सुगमतावाळो थई पडे छे.

१९७. हाल तपास दाखल, अंशे अंशे जेटलो जेटलो त्याग करवो तेमां पण मोळाश न राखवी. तेम ज रूढीने अनुसरी त्याग करवो एम पण नहीं. जे कांई त्याग करवो ते

शिथिलपणारहित तथा बारीबारणांरहित करवो, अथवा बारीबारणां राखवां जरूर होय तो ते पण चोकस आकारमां खुल्ली रीते राखवां; पण एवां न राखवां के तेनो अर्थ ज्यारे जेवो करवो होय तेवो थई शके. ज्यारे जेनी जरूर पडे त्यारे तेनो इच्छानुसार अर्थ थई शके तेवी गोठवण ज त्यागने विषे राखवी नहीं. जो अचोकसपणे एटले जरूर पडे त्यारे मनगमतो अर्थ थई शके एवा आकारमां गोठवण राखवामां आवे तो शिथिलपरिणामी थई त्यागेलुं बधुं बगाडी मूके छे.

१९८.* अंशे पण त्याग करवो तेनी प्रथमथी ज चोकसपणे व्याख्या बांधी साक्षी राखी त्याग करवो, तथा त्याग करवा पछी पोताने मनगमतो अर्थ करवो नहीं.

१९९. संसारमां परिभ्रमण करावनार क्रोध, मान, माया, लोभनी चोकडीरूप कषाय छे. तेनुं स्वरूप पण समजवायोग्य छे. तेमां पण अनंतानुबंधि जे कषाय छे ते अनंत संसार रखडावनार छे. ते कषाय क्षय थवानो *क्रम सामान्य रीते क्रोध, मान, माया, लोभ ए प्रमाणे छे; अने तेनो उदय थवानो क्रम सामान्य रीते मान, लोभ, माया, क्रोध ए प्रमाणे छे.

२००. आ कषायना असंख्यात भेद छे. जेवा आकारमां कषाय तेवा आकारमां संसारपरिभ्रमणने माटे कर्मबंध जीव पाडे छे. कषायमां मोटामां मोटो बंध अनंतानुबंधि कषायनो छे. जे अंतर्मुहूर्त्तमां सीत्तेर कोडाकोडि सागरोपमनो बंध पाडे छे ते अनंतानुबंधिनुं स्वरूप पण जबरजस्त छे; ते एवी रीते के मिथ्यात्वमोहरूपी एक राजाने बराबर जाळवणथी सैन्यना मध्य भागमां राखी क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार तेनी रक्षा करे छे, अने जे वखते जेनी जरूर पडे छे ते वखते ते वगर बोलाव्या मिथ्यात्वमोहनी सेवा बजाववा मंडी पडे छे. आ उपरांतनो कषायरूप बीजो परिवार छे, ते कषायना आगळना भागमां रही मिथ्यात्वमोहनी चोकी भरे छे, परंतु ए बीजा सघळा चोकियातो नहीं जेवा कषायनुं काम करे छे. **रखडपाट करावनार कषाय छे, अने ते कषायमां पण अनंतानुबंधि कषायना चार योद्धाओ बहु मारी नांखे छे.** आ चार योद्धाओ मध्येथी क्रोधनो स्वभाव बीजा त्रण करतां कांइक भोळो मालम पडे छे; कारण के तेनुं स्वरूप सर्व करतां वहेलुं जणाई शके छे. ए प्रमाणे ज्यारे जेनुं स्वरूप वहेलुं जणाय त्यारे तेनी साथे लडाई करवामां क्रोधीनी खात्री थयेथी लडवानी हिम्मत थाय छे.

२०१. घनघाती एवां चार कर्म मोहनीय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अंतराय जे आत्माना गुणने आवरनारां छे ते एक प्रकारे क्षय करवां सहेलां पण छे. वेदनीयादि कर्म जे घनघाती नथी तोपण ते एक प्रकारे खपाववां आकरां छे. ते एवी रीते के वेदनीयकर्मनो उदय प्राप्त थाय ते खपाववा सारू भोगववां जोईए; ते न भोगववां एवी

* जुओ आंक २४७ (४) म. कि.

इच्छा थाय तोपण त्यां ते काम आवती नथी; भोगववां ज जोईए; अने ज्ञानावरणीयनो उदय होय ते यत्न करवाथी क्षय थाय छे. उदाहरण तरीके, एक श्लोक जे ज्ञानावरणीयना उदयथी याद न रहेतो होय ते बे, चार, आठ, सोळ, बत्रीश, चोसठ, सो अर्थात् वधारे-वार गोखवाथी ज्ञानावरणीयनो क्षयोपशम अथवा क्षय थई याद रहे छे; अर्थात् बळवान थवाथी ते ते ज भवमां अमुक अंशे खपावी शकाय छे. तेम ज दर्शनावरणीय कर्मना संबंधमां समजवुं. मोहनीयकर्म जे महा जोरावर तेम भोळुं पण छे, ते तरत खपावी शकाय छे. जेम तेनी आवणी (वेण) आववामां जब्बर छे, तेम ते जलदीथी खसी पण शके छे. मोहनीयकर्मनो तीव्र बंध होय छे, तोपण ते प्रदेशबंध न होवाथी तरत खपावी शकाय छे. नाम, आयुष्यादि कर्म जे प्रदेशबंध होय छे ते केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी पण छेडा सुधी भोगववां पडे छे. ज्यारे मोहनीयादि चार कर्म ते पहेलां क्षय थाय छे.

२०२. 'घेलछा' ए चारित्रमोहनीयनो विशेष पर्याय छे. कचित् हास्य, कचित् शोक, कचित् रति, कचित् अरति, कचित् भय अने कचित् जुगुप्सारूपे ते जणाय छे. कंई अंशे तेनो ज्ञानावरणीयमां पण समास थाय छे. स्वप्नमां विशेषपणे ज्ञानावरणीयपर्याय जणाय छे.

२०३. 'संज्ञा' ए ज्ञाननो भाग छे. पण 'परिग्रहसंज्ञा' 'लोभप्रकृति'मां समाय छे; 'मैथुनसंज्ञा' 'वेदप्रकृति'मां समाय छे, 'आहारसंज्ञा' 'वेदनीय'मां समाय छे; अने 'भयसंज्ञा' भय-प्रकृतिमां'मां समाय छे.

२०४. अनंत प्रकारनां कर्मो मुख्य आठ प्रकारे'प्रकृति'ना नामथी ओळखाय छे. ते एवी रीते के अमुक अमुक प्रकृति, अमुक अमुक 'गुणस्थानक' सुधी होय छे. आवुं माप तोळीने ज्ञानीदेवे बीजाओने समजाववा सारू स्थूल स्वरूपे तेनुं विवेचन कर्युं छे; तेमां बीजां केटलीएक जातनां कर्म अर्थात् 'कर्मप्रकृति' समाय छे. अर्थात् जे प्रकृतिनां नाम 'कर्मग्रंथ'मां नथी आवतां, ते ते प्रकृति उपर बतावेली प्रकृतिना विशेष पर्याय छे; अथवा ते उपर बतावेली प्रकृतिमां समाय छे.

२०५. 'विभाव' एटले 'विरुद्धभाव' नहीं, परंतु 'विशेषभाव'. आत्मा आत्मारूपे परिणमे ते 'भाव' छे, अथवा 'स्वभाव' छे. ज्यारे आत्मा तथा जडनो संयोग थवाथी आत्मा स्वभाव करतां आगळ जई 'विशेषभावे' परिणमे ते 'विभाव' छे. आ ज रीते जडने माटे पण समजवुं.

२०६. 'काळ'ना 'अणु' लोकप्रमाण असंख्यात छे. ते 'अणु'मां 'रुक्ष' अथवा 'स्निग्ध' गुण नथी; तेथी ते दरेक अणु एकबीजामां मळतां नथी. अने दरेक पृथक् पृथक् रहे छे. परमाणुपुद्गलमां ते गुण होवाथी मूळ सत्ता कायम रह्या छतां तेनो (परमाणुपुद्गलनो) 'स्कंध' थाय छे.

(२)

उत्पाद.
व्यय.
ध्रुव.
} आ भाव एक वस्तुमां एक समये छे.

जीव अने
परमाणुओनो

संयोग.

कोई एक जीव	एकेंद्रियपणे–पर्याय	वर्त्तमान भाव.
,,	बे इंद्रियपणे– ,,	
,,	त्रण इंद्रियपणे– ,,	
,,	चार इंद्रियपणे– ,,	
,,	पांच इंद्रियपणे– ,,	

संज्ञी
असंज्ञी
पर्याप्त
अपर्याप्त
} वर्त्तमान भाव.

ज्ञानी
अज्ञानी
} वर्त्तमान भाव.

मिथ्यादृष्टि
सम्यग्दृष्टि
} वर्त्तमान भाव.

एक अंश क्रोध
यावत् अनंत अंश क्रोध
} वर्त्तमान भाव.

सिद्ध भाव.

(३)

प्रश्नः— आत्मज्ञान समदर्शिता, विचरे उदयप्रयोग;
अपूर्ववाणी परमश्रुत, सद्गुरु लक्षण योग्य.

(१) सद्गुरु योग्य आ लक्षणो मुख्यपणे कियां गुणस्थानके संभवे? अने

(२) समदर्शिता एटले शुं?

उत्तरः—(१) सद्गुरु योग्य ए लक्षणो दर्शाव्यां ते मुख्यपणे विशेषपणे उपदेशक अर्थात् मार्गप्रकाशक सद्गुरुनां लक्षण कह्यां छे. उपदेशक गुणस्थानक छठ्ठुं अने तेरमुं छे;* वचलां सातमाथी बारमा सुधीनां गुणस्थान अल्पकाळवर्ति छे, एटले उपदेशक प्रवृत्ति तेमां न संभवे. मार्ग उपदेशक प्रवृत्ति छठ्ठेथी शरु थाय.

छठ्ठे गुणस्थानके संपूर्ण वीतरागदशा अने केवळज्ञान नथी. ते तो तेरमे छे अने यथावत् मार्गउपदेशकपणुं तेरमे गुणस्थाने वर्त्तता संपूर्ण वीतराग अने कैवल्यसंपन्न परमसद्गुरु श्री जिन तीर्थंकरादिने विषे घटे. तथापि छठ्ठे गुणस्थानके वर्त्तता मुनि, जे संपूर्ण वीतरागता अने कैवल्यदशाना उपासक छे, ते दशाअर्थे जेनां प्रवर्त्तन पुरुषार्थ छे, ते दशाने संपूर्णपणे जे पाम्या नथी तथापि ते संपूर्ण दशा पामवानां मार्गसाधन पोते परम सद्गुरु श्री तीर्थंकरादि आप्तपुरुषनां आश्रय वचनथी जेणे जाण्यां छे, प्रतीत्यां छे, अनुभव्यां छे अने ए मार्ग–साधननी उपासनाए जेनी ते दशा उत्तरोत्तर विशेष विशेष प्रगट थती जाय छे, तथा श्री जिन तीर्थंकरादि परम सद्गुरुनुं, तेनां स्वरूपनुं ओळखाण जेनां निमित्ते थाय छे, ते सद्गुरुने विषे पण मार्गनुं उपदेशकपणुं अविरोधरूप छे.

तेथी निचेनां पांचमा, चोथा गुणस्थानके मार्गनुं उपदेशकपणुं घणुं करी न घटे.† केमके त्यां बाह्य(गृहस्थ)व्यवहारनो प्रतिबंध छे, अने बाह्य अविरतिरूप गृहस्थव्यवहार छतां विरति रूप मार्गनुं प्रकाशवुं ए मार्गने विरोधरूप छे.

चोथाथी निचेनां गुणस्थानके तो मार्गनुं उपदेशकपणुं घटे ज नहीं, केमके त्यां मार्गनी, आत्मानी, तत्त्वनी, ज्ञानिनी ओळखाण प्रतीति नथी, तेम ज सम्यग् विरति नथी; अने ए ओळखाण–प्रतीति अने सम्यग् विरति नहिं छतां तेनी प्ररूपणा करवी, उपदेशक थवुं ए प्रगट मिथ्यात्व, कुगुरुपणुं अने मार्गनुं विरोधपणुं छे.

चोथे पांचमे गुणस्थाने ए ओळखाण–प्रतीति छे अने आत्मज्ञानादि गुणो अंशे वर्त्ते छे अने पांचमामां देशविरतिपणाने लई चोथाथी विशेषता छे, तथापि सर्वविरतिना जेटली त्यां विशुद्धि नथी.

आत्मज्ञान, समदर्शिताआदि जे लक्षणो दर्शाव्यां ते संयतिधर्मे स्थित वीतरागदशासाधक उपदेशक गुणस्थाने वर्त्तता सद्गुरुना लक्षे मुख्यताए दर्शाव्यां छे अने तेमना विषे ते गुणो घणा

* जुओ आंक ६६० श्री आत्मसिद्धि पद १० मानुं विवेचन. म. कि † जुओ आंक ६३६, पृ. ४९०–९१, तथा पृ. ५११ छेल्ली त्रण लाईन तथा आंक ६९१ इत्यादि. म. कि.

अंशे वर्त्ते छे. तथापि ते लक्षणो सर्वांशे संपूर्णपणे तो तेरमा गुणस्थानके वर्त्तता संपूर्ण वीतराग अने कैवल्यसंपन्न जिवन्मुक्त सयोगिकेवली परमसद्गुरु श्री जिन अरिहंत तीर्थंकरने विषे वर्त्ते छे. तेमना विषे **आत्मज्ञान** अर्थात् स्वरूपस्थिति संपूर्णपणे वर्त्ते छे, ते तेमनी **ज्ञानदशा** अर्थात् **ज्ञानातिशय** सूचव्यो. तेओने विषे **समदर्शिता** अर्थात् इच्छारहितपणुं संपूर्णपणे वर्त्ते छे, ते तेमनी वीतराग **चारित्रदशा** अर्थात् **अपायापगमातिशय** सूचव्यो. संपूर्णपणे इच्छारहित होवाथी विचरवा आदिनी तेओनी दैहिकादि योगक्रिया पूर्वप्रारब्धोदय वेदीलेवा पुरती ज छे, माटे "विचरे उदय प्रयोग" कह्युं. संपूर्ण निज अनुभवरूप तेमनी वाणी अज्ञानीनी वाणीथी विलक्षण अने एकांत आत्मार्थबोधक होई तेमने विषे वाणीनुं अपूर्वपणुं कह्युं ते तेमनो **वचनातिशय** सूचव्यो. वाणी धर्मे वर्त्ततुं श्रुत पण तेओने विषे कोई पण नय न दुभाय एवुं सापेक्षपणे वर्त्ते छे, ते तेमनो परम-श्रुत गुण सूचव्यो अने परमश्रुत जेने विषे वर्त्ते ते पूजवा योग्य होई तेमनो तेथी **पूजातिशय** सूचव्यो.

आ श्री जिन अरिहंत तीर्थंकर परम सद्गुरुने पण ओळखावनारा विद्यमान सर्वविरति सद्गुरु छे एटले ए सद्गुरुना लक्षे ए लक्षणो मुख्यताए दर्शाव्यां छे.

(२) **समदर्शिता** एटले पदार्थने विषे इष्टअनिष्टबुद्धिरहितपणुं, इच्छारहितपणुं, ममत्वरहित-पणुं. समदर्शिता चारित्रदशा सूचवे छे. रागद्वेषरहित थवुं ते चारित्रदशा छे. इष्टअनिष्ट बुद्धि, ममत्व, भावाभावनुं उपजवुं ए रागद्वेष छे. आ मने प्रिय छे, आ गमे छे, आ मने अप्रिय छे, गमतुं नथी एवो भाव समदर्शिने विषे न होय.

समदर्शि बाह्य पदार्थने, तेना पर्यायने ते पदार्थ तथा पर्याय जेवा भावे वर्त्ते तेवा भावे देखे, जाणे, जणावे, पण ते पदार्थ के तेना पर्यायने विषे ममत्व के इष्टअनिष्टपणुं न करे.

आत्मानो स्वाभाविक गुण देखवा–जाणवानो होवाथी ते ज्ञेय पदार्थने ज्ञेयाकारे देखे, जाणे; पण जे आत्माने समदर्शिपणुं प्रगट थयुं छे, ते आत्मा ते पदार्थने देखतां, जाणतां छतां तेमां ममत्व बुद्धि, तादात्म्यपणुं, इष्टअनिष्ट बुद्धि न करे. विषमदृष्टि आत्माने पदार्थने विषे तादात्म्य वृत्ति थाय; समदृष्टि आत्माने न थाय.

कोई पदार्थ काळो होय तो समदर्शि तेने काळो देखे, जाणे, जणावे. कोई श्वेत होय तो तेने तेवो देखे, जाणे, जणावे. कोई सुरभि (सुगंधी) होय तो तेने तेवो देखे, जाणे, जणावे. कोई दुरभि (दुर्गंधी) होय तो तेने तेवो देखे, जाणे जणावे. कोई उंचो होय, कोई निचो होय तो तेने तेने तेवो तेवो देखे, जाणे, जणावे. सर्पने सर्पनी प्रकृति रूपे देखे, जाणे, जणावे. वाघने वाघनी प्रकृति रूपे देखे, जाणे, जणावे. इत्यादि प्रकारे वस्तुमात्रने जे रूपे, जे भावे ते होय ते रूपे ते भावे समदर्शि देखे, जाणे, जणावे. हेय (छांडवा योग्य) ने हेय रूपे देखे, जाणे, जणावे. उपादेय (आदरवा योग्य) ने उपादेय रूपे देखे, जाणे, जणावे. पण समदर्शि आत्मा ते बधामां मारापणुं, इष्ट–अनिष्ट बुद्धि, रागद्वेष न करे. सुगंध देखि प्रियपणुं

न करे; दुर्गंध देखी अप्रियता–दुगंछा न आणे. (व्यवहारथी) सारूं गणातुं देखि आ मने होय तो ठिक एवी इच्छाबुद्धि (राग, रति) न करे. (व्यवहारथी) माठुं गणातुं देखि आ मने न होय तो ठिक एवी अनिच्छाबुद्धि (द्वेष, अरति) न करे. प्राप्त स्थिति–संजोगमां सारूं–माठुं, अनुकूळ–प्रतिकूळ. इष्टानिष्टपणुं, आकुळव्याकुळपणुं न करतां तेमां समवृत्तिए अर्थात् पोताना स्वभावे, रागद्वेषरहितपणे रहेवुं ए समदर्शिता.

शाता–अशाता, जीवन–मृत्यु, सुगंध–दुर्गंध, सुस्वर–दुस्वर, रूप–कुरूप, शीत–उष्ण आदिमां हर्ष–शोक, रति–अरति, इष्टअनिष्टपणुं, आर्त्तध्यान न वर्त्ते ते समदर्शिता.

हिंसा, असत्य, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रहनो परिहार समदर्शिने विषे अवश्य होय. अहिंसादि व्रत न होय तो समदर्शिपणुं न संभवे. समदर्शिता अने अहिंसादि व्रतोने कार्यकारण, अविनाभावि अने अन्योन्याश्रय संबंध छे. एक न होय तो बीजुं न होय, अने बीजुं न होय तो पहेलुं न होय.

समदर्शिता होय तो अहिंसादि व्रत होय.
समदर्शिता न होय तो अहिंसादि व्रत न होय.
अहिंसादि व्रत न होय तो समदर्शिता न होय.
अहिंसादि व्रत होय तो समदर्शिता होय.
जेटले अंशे समदर्शिता तेटले अंशे अहिंसादिव्रत अने
जेटले अंशे अहिंसादिव्रत तेटले अंशे समदर्शिता.

सद्गुरुयोग्य लक्षणरूप समदर्शिता मुख्यताए सर्वविरति गुणस्थानके होय; पछीनां गुणस्थानके ते उत्तरोत्तर वृद्धि पामतुं जाय, विशेष प्रगट थतुं जाय; क्षीणमोहस्थाने तेनी पराकाष्ठा अने पछी संपूर्ण वीतरागता.

समदर्शिपणुं एटले लौकिक भावनो समान भाव, अभेद भाव, एकसरखी बुद्धि, निर्विशेषपणुं नहीं; अर्थात् काच अने हीरो ए बे समान गणवा, अथवा सत्श्रुत अने असत्श्रुतमां समपणुं गणवुं, अथवा सद्धर्म अने असद्धर्ममां अभेद मानवो, अथवा सद्गुरु अने असद्गुरुने विषे एकसरखी बुद्धि राखवी, अथवा सद्देव अने असद्देवने विषे निर्विशेषपणुं दाखववुं अर्थात् बंनेने एक सरखा गणवा, इत्यादि समान वृत्ति ए समदर्शिता नहीं, ए तो आत्मानी मूढता, विवेकशून्यता, विवेकविकळता. समदर्शि सत्ने सत् जाणे, बोधे; असत्ने असत् जाणे, निषेधे; सत्श्रुतने सत्श्रुत जाणे, बोधे; कुश्रुतने कुश्रुत जाणे, निषेधे; सद्धर्मने सद्धर्म जाणे, बोधे; असद्धर्मने असद्धर्म जाणे, निषेधे; सद्गुरुने सद्गुरु जाणे, बोधे; असद्गुरुने असद्गुरु जाणे, निषेधे; सद्देवने सद्देव जाणे, बोधे; असद्देवने असद्देव जाणे, निषेधे; इत्यादि जे जेम होय तेने तेम देखे, जाणे, प्ररूपे, तेमां रागद्वेष, इष्टअनिष्ट बुद्धि न करे ए प्रकारे समदर्शिपणुं समजवुं. ॐ.

७५४. मोरबी. चैत्र वद १२ रवि. १९५४.

(१) कर्मग्रंथ, गोम्मट्टसारशास्त्र आदिथी अंतसुधी विचारवा योग्य छे.

(२) दुषम काळनुं प्रबळ राज्य वर्ते छे, तोपण अडग निश्चयथी, सत्पुरुषनी आज्ञामां वृत्तिनुं अनुसंधान करी जे पुरुषो अगुप्त वीर्यथी सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चारित्रने उपासवा इच्छे छे, तेने परम शांतिनो मार्ग हजीपण प्राप्त थवा योग्य छे.

७५५.

ॐ नमः.

केवळज्ञान.

एकज्ञान.

सर्व अन्य भावना संसर्गरहित एकांत शुद्धज्ञान.

सर्व द्रव्य क्षेत्र काळ भावनुं सर्व प्रकारथी एक समये ज्ञान.

ते केवळज्ञाननुं अमे ध्यान करीए छीए.

निजस्वभावरूप छे.

स्वतत्त्वभूत छे.

निरावरण छे.

अभेद छे.

निर्विकल्प छे.

सर्वभावनुं उत्कृष्ट प्रकाशक छे.

७५६.

हुं केवळज्ञान स्वरूप छुं एम सम्यक् प्रतीत थाय छे.

तेम थवाना हेतुओ सुप्रतीत छे.

सर्व इंद्रियोनो संयम करी, सर्वपरद्रव्यथी निजस्वरूप व्यावृत्त करी, योगने अचळ करी उपयोगथी उपयोगनी एकता करवाथी केवळज्ञान थाय.

७५७.

आकाशवाणी.

तप करो. तप करो. शुद्ध चैतन्यनुं ध्यान करो. शुद्ध चैतन्यनुं ध्यान करो.

७५८.

हुं एक छुं, असंग छुं, सर्व परभावथी मुक्त छुं.

असंख्यात प्रदेशात्मक निजअवगाहना प्रमाण छुं.

अजन्म, अजर, अमर, शाश्वत छुं.

स्वपर्यायपरिणामी समयात्मक छुं.

शुद्ध चैतन्यस्वरूप मात्र निर्विकल्प द्रष्टा छुं.

७५९. ववाणीआ. ज्येष्ठ. १९५४.

१. देहथी भिन्न स्वपरप्रकाशक परम ज्योतिःस्वरूप एवो आ आत्मा तेमां निमग्न थाओ.

हे आर्यजनो! अंतर्मुख थई, स्थिर थई ते आत्मामां ज रहो तो अनंत अपार आनंद अनुभवशो.

२. सर्व जगत्‌ना जीवो कंईने कंई मेळवीने सुख प्राप्त करवा इच्छे छे; मोटो चक्रवर्त्ति राजा ते पण वधता वैभव, परिग्रहना संकल्पमां प्रयत्नवान छे; अने मेळववामां सुख माने छे, पण अहो! ज्ञानीओए तो तेथी ज विपरीत ज सुखनो मार्ग निर्णीत कर्यो के **किंचित् मात्र पण ग्रहवुं एज सुखनो नाश छे.**

३. विषयथी जेनी इंद्रियो आर्त्त छे, तेने शीतळ एवुं आत्मसुख, आत्मतत्त्व क्यांथी प्रतीतिमां आवे?

४. परम धर्मरूप चंद्र प्रत्ये राहु जेवो परिग्रह तेथी हवे हुं विराम पामवाने ज इच्छुं छउं. अमारे परिग्रहने शुं करवुं छे? कशुं प्रयोजन नथी.

५. **सर्वोत्कृष्ट शुद्धि त्यां सर्वोत्कृष्ट सिद्धि.** हे आर्यजनो! आ परम वाक्यनो आत्मापणे तमे अनुभव करो.

७६०. ववाणीआ. ज्येष्ठ सुद १ शनि. १९५४.

१. सर्व द्रव्यथी, सर्व क्षेत्रथी, सर्व काळथी अने सर्व भावथी जे सर्व प्रकारे अप्रतिबंध थई निज स्वरूपमां स्थित थया ते परम पुरुषोने नमस्कार.

२. जेने कंई प्रिय नथी, जेने कंई अप्रिय नथी, जेने कोई शत्रु नथी, जेने कोई मित्र नथी, जेने मान अपमान, लाभ अलाभ, हर्ष शोक, जन्म मृत्यु आदि द्वंद्वनो अभाव थई जे शुद्ध चैतन्यस्वरूपने विषे स्थिति पाम्या छे, पामे छे अने पामशे तेमनुं अति उत्कृष्ट पराक्रम सानंदाश्चर्य उपजावे छे.

३. देह प्रत्ये जेवो वस्त्रनो संबंध छे तेवो आत्मा प्रत्ये जेणे देहनो संबंध यथातथ्य दीठो छे, म्यान प्रत्ये तरवारनो जेवो संबंध छे तेवो देह प्रत्ये जेणे आत्मानो संबंध दीठो छे, अबद्ध-स्पष्ट आत्मा जेणे अनुभव्यो छे, ते महत्पुरुषोने जीवन अने मरण बन्ने समान छे.

४. जे अचिंत्य द्रव्यनी शुद्धचितिस्वरूप कांति परम प्रगट थई अचिंत्य करे छे, ते अचिंत्य द्रव्य सहज स्वाभाविक निजस्वरूप छे एवो निश्चय जे परम कृपालु सत्पुरुषे प्रकाश्यो तेनो अपार उपकार छे.

५. चंद्र भूमिने प्रकाशे छे, तेना किरणनी कांतिना प्रभावथी समस्त भूमि श्वेत थई जाय छे, पण कंई चंद्र भूमिरूप कोई काळे तेम थतो नथी, **एम समस्त विश्वने प्रकाशक एवो आ आत्मा ते क्यारे पण विश्वरूप थतो नथी, सदासर्वदा चैतन्यस्वरूप ज रहे छे. विश्वमां जीव अभेदता माने छे एज भ्रांति छे.**

६. जेम आकाशमां विश्वनो प्रवेश नथी, सर्वभावनी वासनाथी आकाश रहित ज छे, तेम सम्यक्दृष्टि पुरुषोए प्रत्यक्ष सर्व द्रव्यथी भिन्न, सर्व अन्य पर्यायथी रहित ज आत्मा दीठो छे

७. जेनी उत्पत्ति कोईपण अन्य द्रव्यथी थती नथी तेवा आत्मानो नाश पण क्यांथी होय?

८. अज्ञानथी अने स्वस्वरूप प्रत्येना प्रमादथी आत्माने मात्र मृत्युनी भ्रांति छे. ते ज भ्रांति निवृत्त करी शुद्धचैतन्य निजअनुभवप्रमाणस्वरूपमां परम जाग्रत थई ज्ञानी सदाय निर्भय छे. एज स्वरूपना लक्षथी सर्व जीव प्रत्ये साम्यभाव उत्पन्न थाय छे, सर्व परद्रव्यथी वृत्ति व्यावृत्त करी आत्मा अक्लेश समाधिने पामे छे.

९. परमसुख स्वरूप, परमोत्कृष्ट शांत, शुद्ध चैतन्यस्वरूप समाधिने सर्वकाळने माटे पाम्या ते भगवंतने नमस्कार. ते पदमां निरंतर लक्षरूप प्रवाह छे जेनो ते सत्पुरुषोने नमस्कार.

१०. सर्वथी सर्व प्रकारे हुं भिन्न छउं, एक केवल शुद्धचैतन्यस्वरूप, परमोत्कृष्ट, अचिंत्य सुखस्वरूप मात्र एकांत शुद्ध अनुभवरूप हुं छउं. त्यां विक्षेप शो? विकल्प शो? भय शो? खेद शो? बीजी अवस्था शी? शुद्ध शुद्ध, प्रकृष्ट शुद्ध परमशांतचैतन्य हुं मात्र निर्विकल्प छउं. निज स्वरूपमय उपयोग करूं छउं. तन्मय थाउं छउं. शांतिः शांति शांतिः.

७६१. ववाणीआ. ज्येष्ठ शुद ६ गुरु. १९५४.

महत्गुणनिष्ठ स्थवीर आर्य श्री डुंगर ज्येष्ठ शुदी ३ सोमवारनी रात्रीये नव वाग्ये समाधि सहित देह मुक्त थया.

७६२. मुंबई. ज्येष्ठ वदी ४ बुध. १९५४.

ॐ नमः.

मननी वृत्ति शुद्ध अने स्थिर थाय एवो सत्समागम प्राप्त थवो बहु दुर्लभ छे. वळी तेमां आ दुसम काळ होवाथी जीवनो तेने विशेष अंतराय छे. जे जीवने प्रत्यक्ष सत्समागमनो विशेष लाभ प्राप्त थाय ते महत्पुण्यवानपणुं छे. सत्समागमना वियोगमां सत्शास्त्रनो **सदाचार पूर्वक** परिचय अवश्य करवायोग्य छे.

७६३. मुंबई. जेठ वद १४ शनि. १९५४.

नमो वीतरागाय.

मुनियोना समागममां ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण करवा संबंधमां यथासुख प्रवर्त्तशो, प्रतिबंध नथी. मुनियोने जिनस्मरण प्राप्त थाय.

७६४. मुंबई. अषाड शुद ११ गुरु. १९५४.

ॐ

अपार महा मोहजळने अनंत अंतराय छतां धीर रही जे पुरुष तर्या ते श्री पुरुष भगवानने नमस्कार.

अनंत काळथी जे ज्ञान भवहेतु थतुं हतुं ते ज्ञानने एक समयमात्रमां जात्यंतर करी जेणे भवनिवृत्तिरूप कर्युं ते कल्याणमूर्त्ति सम्यग्दर्शनने नमस्कार.

निवृत्तियोगमां सत्समागमनी वृत्ति राखवी योग्य छे.

७६५. मोहमयी क्षेत्र. श्रा. शुद १५ सोम. १९५४.

१. "मोक्षमार्ग प्रकाश" ग्रंथ विचार्या पछी "कर्मग्रंथ" विचारवाथी सानुकूळ थशे.

२. द्रव्य मन आठ पांखडीनुं दिगंबर संप्रदायमां कह्युं छे. श्वेतांबर संप्रदायमां ते वात विशेष चर्चित नथी. "योगशास्त्र"मां तेना घणा प्रसंगो छे. समागमे तेनुं स्वरूप सुगम्य थवा योग्य छे.

७६६. काविठा. श्रा. वदी १२ शनि. १९५४.

ॐ नमः.

तमारी वृत्ति हाल समागममां आववा विषे जणावी, ते विषे तमने अंतराय जेवुं थयुं. केमके आ पत्र पहोंचशे ते पहेलां पर्युषणनो प्रारंभ लोकोमां थयो गणाशे. जेथी तमे आ तरफ आववानुं करो तो गुण अवगुणनो विचार कर्या वगर मताग्रही माणसो निंदे, अने तेवुं निमित्त ग्रहण करी घणा जीवने ते निंदाद्वाराए परमार्थप्राप्ति थवानो अंतराय उत्पन्न करे, जेथी तेम न थाय ते अर्थे तमारे हाल तो पर्युषणमां बहार न नीकळवा संबंधी लोकपद्धति साचववी योग्य छे.

वैराग्यशतक, आनंदघन चोवीशी, भावनाबोध आदि पुस्तको वांचवा विचारवानुं करीने जेटलो बने तेटलो निवृत्तिनो लाभ मेळवजो. **प्रमाद अने लोक पद्धतिमां काळ सर्वथा वृथा करवो ते मुमुक्षु जीवनुं लक्षण नथी.**

(२)

(१) सत्पुरुष अन्याय करे नहीं. सत्पुरुष अन्याय करशे तो आ जगत्मां वरसाद कोना माटे वरसशे ? सूर्य कोना माटे प्रकाशशे ? वायु कोना माटे वाशे ? *

* जुओ आंक १८४ पारा २ जो. म. कि.

(२) आत्मा केवी अपूर्व वस्तु छे ? ज्यां सुधी शरीरमां होय, भलेने हजारो वरस, त्यां सुधी शरीर सडतुं नथी, पारानी जेम, आत्मा. चेतन चाल्युं जाय अने शरीर शब थई पडे अने सडवा मांडे !

(३) जीवमां जागृती अने पुरुषार्थ जोईए. कर्मबंध पड्या पछी पण तेमांथी (सत्तामांथी, उदय आव्या पहेलां) छुटवुं होय तो अबाधाकाळ पूर्ण थतां सुधीमां छुटी शकाय.

(४) पुण्य, पाप अने आयुष्य ए कोई बीजाने न आपी शके. ते दरेक पोतेज भोगवे.

(५) स्वछंदे, स्वमतिकल्पनाए, सद्गुरुनी आज्ञाविना ध्यान करवुं ए तरंगरूप छे अने उपदेश व्याख्यान करवुं ए अभिमानरूप छे.

(६) देहधारी आत्मा पंथी छे अने देह ए झाड छे. आ देहरूपी झाडमां (निचे) जीवरूपी पंथी, वटेमारगु थाक लेवा बेठो छे. ते पंथी झाडने ज पोतानुं करी माने ए केम चाले ?

(७) सुंदर विलास सुंदर--सारो ग्रंथ छे. तेमां क्यां ऊणप, भूल छे ते अमे जाणिये छिये; ते ऊणप बीजाने समजावी मुश्केल छे. उपदेश अर्थे ए ग्रंथ उपकारी छे.

(८) छ दर्शन उपर दृष्टांतः- छ जुदा जुदा वैद्योनी दुकान छे. तेमां एक वैद्य संपूर्ण साचो छे. ते तमाम रोगोने, तेनां कारणने, अने ते टळवाना उपायने जाणे छे. तेनां निदान, चिकित्सा साचां होवाथी रोगीनो रोग निर्मूळ थाय छे. वैद्य कमाय छे पण सारूं. आ जोई बीजा पांच कूट वैद्यो पण पोत पोतानी दुकान खोले छे. तेमां साचा वैद्यना घरनी दवा पोता पासे होय छे, तेटलापुरतो तो रोगीनो रोग दूर करे छे, अने बीजी पोतानी कल्पनाथी पोताना घरनी दवा आपे छे, तेथी उलटो रोग वधे छे. पण दवा सस्ती आपे छे एटले लोभना मार्या लोक लेवा बहु ललचाय छे अने उलटां नुकशान पामे छे.

आनो उपनय ए जे, साचो वैद्य ते वीतराग दर्शन छे, जे संपूर्ण सत्य स्वरूप छे. ते मोह विषयादिने, राग द्वेषने, हिंसा आदिने संपूर्ण दूर करवा कहे छे, जे विषय विवश रोगीने मोंघां पडे छे, भावतां नथी. अने बीजा पांच कूट वैद्यो छे ते कुदर्शनो छे. ते जेटलांपुरती वीतरागना घरनी वातो करे छे, तेटलांपुरती तो रोग दूर करवानी वात छे, पण साथे साथे मोहनी, संसारवृद्धिनी, मिथ्यात्वनी, हिंसा आदिनी धर्मना व्हाने वात करे छे ते पोतानी कल्पनानी छे अने ते संसाररूप रोग टळवाने बदले वृद्धिनुं कारण थाय छे. विषयमां राची रहेल पामर संसारीने मोहनी वातो तो मीठी लागे छे अर्थात् सस्ती पडे छे, एटले कूट वैद्य तरफ खेंचाय छे, पण परिणामे वधारे रोगी थाय छे.

वीतराग दर्शन त्रिवैद्य जेवुं छे, अर्थात् (१) रोगीनो रोग टाळे छे, (२) निरोगीने रोग थवा देतुं नथी अने (३) आरोग्यनी पुष्टि करे छे. अर्थात् (१) जीवनो सम्यग् दर्शन वडे मिथ्यात्व रोग टाळे छे, (२) सम्यग् ज्ञान वडे जीवने रोगनो भोग थतां बचावे छे अने (३) सम्यक् चारित्र वडे संपूर्ण शुद्ध चेतना रूप आरोग्यनी पुष्टि करे छे.

७६७. वसो (गुजरात). प्र. आशो सुद ६ बुध. १९५४.

१. श्रीमत् वीतराग भगवंतोए निश्चितार्थ करेलो एवो अचिंत्य चिंतामणि स्वरूप, परम हितकारी, परम अद्भुत, सर्व दुःखनो निःसंशय आत्यंतिक क्षय करनार, परम अमृतस्वरूप एवो सर्वोत्कृष्ट शाश्वत धर्म जयवंत वर्त्तो, त्रिकाळ जयवंत वर्त्तो.

२. ते श्रीमत् अनंत चतुष्टयस्थित भगवंतनो अने ते जयवंत धर्मनो आश्रय सदैव कर्त्तव्य छे. जेने बीजुं कंई सामर्थ्य नथी एवा अबुध अने अशक्त मनुष्यो पण ते आश्रयना बळथी परम सुखहेतु एवां अद्भुत फळने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे. माटे निश्चय अने आश्रय ज कर्त्तव्य छे, अधीरजथी खेद कर्त्तव्य नथी.

३. चित्तमां देहादि भयनो विक्षेप पण करवो योग्य नथी. **देहादि संबंधी जे पुरुषो हर्ष विषाद करता नथी ते पुरुषो पूर्ण द्वादशांगने संक्षेपमां समज्या छे, एम समजो.** एज दृष्टि कर्त्तव्य छे.

४. हुं धर्म पाम्यो नथी, हुं धर्म केम पामीश? ए आदि खेद नहीं करतां वीतराग पुरुषोनो धर्म जे देहादि संबंधीथी हर्षविषादवृत्ति दूरकरी आत्मा असंग शुद्ध चैतन्य स्वरूप छे, एवी वृत्तिनो निश्चय अने आश्रय ग्रहण करी तेज वृत्तिनुं बळ राखवुं, अने मंद वृत्ति थाय त्यां वीतराग पुरुषोनी दशानुं स्मरण करवुं, ते अद्भुत चरित्रपर दृष्टि प्रेरीने वृत्तिने अप्रमत्त करवी ए सुगम अने सर्वोत्कृष्ट उपकारकारक तथा कल्याण स्वरूप छे. **निर्विकल्प.**

७६८.* श्री वसो. आशो सुद ७.१९५४.

७—१२—५४
३१—११—२२

आम काळ व्यतीत थवा देवो योग्य नथी. समये समय आत्मोपयोगे उपकारी करीने निवृत्ति थवा देवा योग्य छे.

अहो! आ देहनी रचना! अहो! चेतन! अहो! तेनुं सामर्थ्य! अहो ज्ञानी! अहो तेनी गवेषणा! अहो तेमनुं ध्यान! अहो तेमनी समाधि! अहो तेमनो संयम! अहो, तेमनो अप्रमत्तभाव! अहो, तेमनी परम जागृति! अहो, तेमनो वीतराग स्वभाव! अहो, तेमनुं निरावरण ज्ञान! अहो, तेमना योगनी शांति! अहो तेमना वचनादि योगनो उदय!

---

* ७—१२—५४ / ३१—११—२२ उपरथी समय नीकळी शके छे. ७—१२—५४ एटले ७ मो दिवस, १२ मो मास अने ५४ नी साल अर्थात् संवत् १९५४ ना आशो शुद ७ अने ३१—११—२२ एटले ३१ मुं वर्ष ११ मो महिनो अने बावीसमो दिवस अर्थात् आ संवत् १९५४ ना आशो शुद ७ ना रोज आ लखेल छे; ते दिवसे श्रीमद्ने ३१ मुं वर्ष, अग्यारमो महिनो, अने बावीसमो दिवस चालतो हतो.

हे आत्मा! आ बधुं तने सुप्रतीत थयुं छतां प्रमत्तभाव केम? मंद प्रयत्न केम? जघन्यमंद जागृति केम? शिथिलता केम? मुंझवण केम? अंतरायनो हेतु शो?

अप्रमत्त था, अप्रमत्त था.

परम जागृत स्वभाव भज, परम जागृत स्वभाव भज.

७६९.

तीव्र वैराग्य, परम आर्जव, बाह्याभ्यंतर त्याग.

आहारनो जय.

आसननो जय.

निद्रानो जय.

योगनो जय.

आरंभपरिग्रहविरति, ब्रह्मचर्य प्रत्ये प्रतिनिवास.

एकांतवास.

अष्टांगयोग.

सर्वज्ञध्यान.

आत्म इहा.

आत्मोपयोग.

मूळ आत्मोपयोग.

अप्रमत्त उपयोग.

केवल उपयोग.

केवल आत्मा.

अचिंत्य सिद्धस्वरूप.

७७०.

जिनचैतन्यप्रतिमा.

सर्वांगसंयम.

एकांत स्थिरसंयम.

एकांत शुद्धसंयम.

केवळ बाह्यभावनिरपेक्षता.

आत्मतत्त्वविचार.
जगत्‌तत्त्वविचार.
जिनदर्शनतत्त्वविचार.
बीजदर्शनतत्त्वविचार.
} समाधान.

धर्मसुगमता. लोकानुग्रह.	}	पद्धति.
यथास्थित शुद्ध सनातन सर्वोत्कृष्ट जयवंत धर्मनो उदय	}	वृत्ति.

७७१.

स्वपर परमोपकारक परमार्थमय सत्यधर्म जयवंत वर्त्तो.

आश्चर्यकारक भेद पडी गया छे.

खंडित छे.

संपूर्ण करवानुं साधन दुर्गम्य देखाय छे.

ते प्रभावने विषे महत् अंतराय छे.

देशकाळादि घणां प्रतिकूळ छे.

वीतरागोनो मत लोकप्रतिकूळ थई पड्यो छे.

रुढीथी जे लोको तेने माने छे तेना लक्षमां पण ते प्रतीत जणातो नथी, अथवा अन्यमतने वीतरागोनो मत समजी प्रवर्त्त्ये जाय छे.

यथार्थ वीतरागोनो मत समजवानी तेमनामां योग्यतानी घणी खामी छे.

दृष्टिरागनुं प्रबळ राज्य वर्त्ते छे.

वेषादि व्यवहारमां मोटी विटंबना करी मोक्षमार्गनो अंतराय करी बेठा छे.

तुच्छ पामर पुरुषो विराधक वृत्तिना घणी अग्रभागे वर्त्ते छे.

किंचित् सत्य बहार आवतां पण तेमने प्राणघाततुल्य दुःख लागतुं होय एम देखाय छे.

७७२.

त्यारे तमे शामाटे ते धर्मनो उद्धार इच्छो छो?

परम कारुण्य स्वभावथी.

ते सद्धर्म प्रत्येनी परम भक्तिथी.

७७३.

परानुग्रह परमकारुण्यवृत्ति करतां पण प्रथम चैतन्य जिनप्रतिमा था.

चैतन्य जिनप्रतिमा था.

तेवो काळ छे?

ते विषे निर्विकल्प था.

तेवो क्षेत्र योग छे?

गवेष.

तेवुं पराक्रम छे?

अप्रमत्त शूरवीर था.

तेटलुं आयुषबळ छे?

शुं लखवुं? शुं कहेवुं?

अंतर्मुख उपयोग करीने जो.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

७७४.

हे काम! हे मान! हे संगउदय!

हे वचनवर्गणा, हे मोह, हे मोहदया!

हे शिथिलता, तमे शा माटे अंतराय करो छो?

परम अनुग्रह करीने हवे अनुकूळ थाव! अनुकूळ थाव.

७७५.

हे सर्वोत्कृष्ट सुखना हेतुभूत सम्यक्दर्शन! तने अत्यत भक्तिथी नमस्कार हो.

आ अनादि अनंत संसारमां अनंत अनंत जीवो तारा आश्रयविना अनंत अनंत दुःखने अनुभवे छे.

तारा परमानुग्रहथी स्वस्वरूपमां रुचि थई, परम वीतराग स्वभावप्रत्ये परम निश्चय आव्यो, कृतकृत्य थवानो मार्ग ग्रहण थयो.

हे जिन वीतराग! तमने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार करूं छुं. तमे आ पामरप्रत्ये अनंत अनंत उपकार कर्यो छे.

हे कुंदकुंदादि आचार्यो! तमारां वचनो पण स्वरूपानुसंधानने विषे आ पामरने परमउपकारभूत थयां छे. ते माटे हुं तमने अतिशय भक्तिथी नमस्कार करूं छुं.

हे श्री सोभाग! तारा सत्समागमना अनुग्रहथी आत्मदशानुं स्मरण थयुं ते अर्थे तने नमस्कार करूं छुं.

७७६.

जेम भगवान् जिने निरूपण कर्युं छे तेम ज सर्व पदार्थनुं स्वरूप छे. भगवान् जिने उपदेशेलो आत्मानो समाधिमार्ग श्री गुरुना अनुग्रहथी जाणी, परम प्रयत्नथी उपासना करो.

७७७. श्री वसो. आसो. १९५४.

(१)

ॐ

"ठाणांग सूत्र"मां निचे दर्शावेलुं सूत्र शुं उपकार *थवा लख्युं छे ते विचारो.

एगे समणे भगवं महावीरे इमीसेणं ऊसप्पिणीए चउवीसं तित्थयराणं चरिमे तित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे सव्वदुक्खपहीणे.

* अं. ७७८ (१)., ७७९, ७८० (२). म. कि.

(२)

कराळ काळ! आ अवसर्पिणी काळमां चोविश तीर्थंकर थया. तेमां छेल्ला तीर्थंकर श्रमण भगवान् श्री महावीर दीक्षित थया पण एकला! सिद्धि पाम्या पण एकला! प्रथम उपदेश तेमनो पण अफळ गयो!

७७८.*

१. सर्व वासनानो क्षय करे ते संन्यासी. इंद्रियोने काबुमां राखे ते गोसांई. संसारनो पार पामे ते यति (जति).

२. समकितीने आठ मदमांनो एके मद न होय.

३. (१) अविनय, (२) अहंकार, (३) अर्धदग्धपणुं, पोताने ज्ञान नहीं छतां ज्ञानी पोताने मानी बेसवापणुं, अने (४) रसलुब्धपणुं,—ए चारमांथी एक पण दोष होय तो जीवने समकित न थाय. आम श्री ठाणांग सूत्रमां कह्युं छे.

४. मुनिने व्याख्यान करवुं पडतुं होय तो पोते सज्झाय (स्वाध्याय) करे छे एवो भाव राखी व्याख्यान करवुं. मुनिने सवारे सज्झायनी आज्ञा छे, ते मनमां करवामां आवे छे, तेना बदले व्याख्यानरूप सज्झाय ऊंचा स्वरे मान, पूजा, सत्कार, आहारादिनी अपेक्षा विना केवळ निष्काम बुद्धिथी आत्मार्थे करवी.

५. क्रोधादि कषायनो उदय थाय त्यारे तेनी सामा थई तेने जणाववुं के तें अनादि काळथी मने हेरान करेल छे. हवे हुं तने एम तारूं बळ नहीं चालवा दउं, जो हुं हवे तारा सामे युद्ध करवा बेठो छुं.

६. निद्रादि प्रकृति, क्रोधादि अनादि वैरी ते प्रति क्षत्रियभावे वर्त्तवुं, तेने अपमान देवुं. ते छतां न माने तो तेने क्रूर थई उपशमाववी. ते छतां न माने तो ख्याल (उपयोग) मां राखी वखत आव्ये तेने मारी नांखवी. आम शूर क्षत्रियस्वभावे वर्त्तवुं, जेथी वैरीनो पराभव थई समाधि सुख थाय.

७. प्रभु पूजामां पुष्प चडाववामां आवे छे, तेमां जे गृहस्थने लीलोत्रीनो नियम नथी ते पोताना हेतुए तेनो वपराश कम करी फुल प्रभुने चडावे. त्यागी मुनिने तो पुष्प चडाववानो के तेना उपदेशनो सर्वथा निषेध छे. आम पूर्वाचार्योनुं प्रवचन छे.

८. कोई सामान्य मुमुक्षु भाई ब्हेन साधन माटे पुछे तो आ साधन बतावबुं:—

(१) सातव्यसननो त्याग.
(२) लीलोत्रीनो ,,
(३) कंदमूळनो ,,
(४) अभक्ष्यनो ,,
(५) रात्रि भोजननो ,,
(६) 'सर्वज्ञ देव' अने 'परम गुरु'नी पांच पांच माळानो जप.
(७) भक्ति रहस्य दुहानुं† पठन-मनन.
(८) क्षमापनानो पाठ.‡
(९) सत्समागम अने सत्शास्त्रनुं सेवन.

* उपदेश सार. † आंक २२४. ‡ आंक ४ मोक्षमाळानो ५६.

९. 'सिज्झंति', पछी 'बुज्झंति', पछी 'मुच्चंति', पछी 'परिणिव्वायंति', पछी 'सव्वदुक्खाणमंतंकरंति',–ए शब्दोना रहस्यार्थ विचारवा योग्य छे. 'सिज्झंति' अर्थात् सिद्ध थाय, ते पाछा 'बुज्झंति' बोधसहित, ज्ञानसहित होय एम सूचव्युं. सिद्ध थया पछी शून्य (ज्ञानरहित) दशा आत्मानी कोई माने छे तेनो निषेध 'बुज्झंति'थी सूचव्यो. एम सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, ते पाछा 'मुच्चंति' सर्व कर्मथी रहित थाय अने तेथी पाछा 'परिणिव्वायंति' अर्थात् निर्वाण पामे, कर्मरहित थया होवाथी फरी जन्म अवतार धारण न करे. मुक्त जीव कारणविशेषे अवतार धारण करे ते मतनो 'परिणिव्वायंति' करी निषेध सूचव्यो. भवनुं कारण कर्म तेथी सर्वथा जे मुकाणा छे ते फरी भव धारण न करे, कारण विना कार्य न निपजे. आम निर्वाण पामेला 'सव्वदुक्खाणमंतंकरंति' अर्थात् सर्व दुःखनो अंत करे, तेमने दुःखनो सर्वथा अभाव थाय, ते सहज स्वाभाविक सुख आनंद अनुभवे. आम कही मुक्त आत्माओने शून्यता छे, आनंद नथी ए मतनो निषेध सूचव्यो.

७८०.

(१)

इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं, अणुत्तरं, केवलियं, पडिपुण्णं, संसुद्धं णेयाउयं, सल्लकत्तणं, सिद्धिमग्गं, मुत्तिमग्गं, विज्जाणमग्गं, निव्वाणमग्गं, अवितहमसंदिद्धं, सव्वदुःखपहीणमग्गं। एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्वायंति, सव्वदुक्खाणमंतं करंति। तंमाणाए तहा गच्छामो, तहा चिट्ठामो, तहा णिसियामो, तहा सुयट्ठामो, तहा भुंजामो, तहा भासामो, तहा अभुट्ठामो, तहा उट्ठाए उट्ठेमोत्ति, पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं सजमेणं संजमामोत्ति। *

(२)

१. अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजनशलाकया,
नेत्रमुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः.

अज्ञानरूपी तिमिर(अंधकार) थी जे अंध तेना नेत्र जेणे ज्ञानरूपी अंजनशलाका (आंजवानी सळी) थी खोल्यां ते श्री सद्गुरुने नमस्कार.

२. मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां,
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये.

---

* श्री सूत्रकृतांग. द्वि० श्रु० स्कं० ७ अध्य० १५. [आ निर्ग्रंथप्रवचन सत्य छे. समस्त जीवने हितकारी छे, अनुत्तर छे, एनाथी चडे एवुं बीजुं कोई नथी. केवलिभाषित छे. आत्मार्थि–मोक्षार्थिने प्रतिपूर्ण छे. संशुद्ध छे. न्यायसंपन्न छे. मायादि शल्यने कापवा कातर समान छे. सिद्धिनो मार्ग छे. मुक्तिनो, निर्लोभपणानो मार्ग छे. विज्ञाननो मार्ग छे. निर्वाणनो, अर्थात् सर्व कर्मक्षय करी पाछा जन्म–अवतार न धरवा पडे एवो, मार्ग छे. अवितथ्य, सत्य छे. असंदिग्ध, स्पष्ट, संदेहरहित छे. सर्व दुःख प्रक्षीण करवानो ए मार्ग छे.

एवा आ मार्गने विषे स्थित जीवो सिझ्शे, सिद्धि पामे, बुझ्शे, अर्थात् सदा स्वपरना ज्ञाता रहे, मुकाय अर्थात् सर्व कर्मथी मुक्त थाय, निर्वाण पामे अर्थात् कर्मरहित थवाथी फरी अवतार–जन्म न धरे, सर्व दुःखनो अंत करे, अर्थात् समाधि, सहज परमानंद पामे.

एवो जे आ निर्ग्रंथ प्रवचनरूप सत्य मार्ग तेने (अमे आप वीतरागनी) आज्ञाए आदरियें. ते माटे जेम आज्ञा आपो तेम चालियें, तेम उभियें, तेम बेसियें, तेम सुईयें, तेम जमियें, तेम बोलियें, तेम सावधानपणे प्रवर्तियें, तेम उठियें. अने तेम उठतां प्राण–भूत–जीव–सत्त्वनी हिंसा न थाय एवा संयम–आचारे उपयोगपूर्वक वर्तियें.] म. कि.

मोक्षमार्गना नेता (मोक्षमार्गे लई जनार), कर्मरूप पर्वतना भेत्ता (भेदनार), समग्र तत्त्वना ज्ञाता (जाणनार),—तेने ते गुणोनी प्राप्ति अर्थे हुं वंदुं छुं.

अत्रे **मोक्षमार्गना नेता** एम कही आत्माना अस्तित्वथी मांडी तेना मोक्ष अने मोक्षना उपायसहित बधां पदो तथा मोक्षपामेलानो स्वीकार कर्यो, तेम ज जीव अजीव आदि बधां तत्त्वोनो स्वीकार कर्यो. मोक्ष बंधनी अपेक्षा राखे छे; बंध बंधनां कारणो आस्रव, पुण्य-पाप-कर्म, अने बंधानार एवा नित्य अविनाशी आत्मानी अपेक्षा राखे छे. तेम ज मोक्ष मोक्षना मार्गनी, संवरनी, निर्जरानी, बंधनां कारणो टाळवा रूप उपायनी अपेक्षा राखे छे. जेणे मार्ग जोयो, जाण्यो, अनुभव्यो होय ते नेता थई शके. एटले मोक्षमार्गना नेता एम कही तेने पामेला एवा सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतरागनो स्वीकार कर्यो. आम मोक्षमार्गना नेता ए विशेषणथी जीवअजीवादि नवे तत्त्व, छए द्रव्य, आत्माना होवापणा आदि छए पद अने मुक्त आत्मानो स्वीकार कर्यो.

मोक्षमार्ग उपदेशवानुं, ते मार्गे लई जवानुं कार्य देहधारी साकार मुक्त पुरुष करी शके, देहरहित निराकार न करी शके. आम कही आत्मा पोते परमात्मा थई शके छे, मुक्त थई शके छे, एवा देहधारी मुक्त पुरुष ज बोध करी शके छे एम सूचव्युं, देहरहित अपौरुषेय बोधनो निषेध कर्यो.

कर्मरूप पर्वतना भेदनार एम कही कर्मरूप पर्वतो तोडवाथी मोक्ष थाय एम सूचव्युं, अर्थात् कर्मरूपी पर्वतो स्ववीर्ये करी देहधारीपणे तोड्या अने तेथी जीवन्मुक्त थई मोक्ष-मार्गना नेता, मोक्षमार्गना बतावनार थया. फरिफरी देह धारण करवानुं, जन्मवा—मरवा रूप संसारनुं कारण कर्म छे, तेने समूळां छेद्याथी, नाशकर्याथी तेमने फरी देह धारण करवापणुं नथी एम सूचव्युं. मुक्त आत्मा फरी अवतार न ले एम सूचव्युं.

विश्वतत्त्वना ज्ञाता, समस्त द्रव्यपर्यायात्मक लोकालोकना, विश्वना जाणनार एम कही मुक्त आत्मानुं अखंड स्वपर ज्ञायकपणुं सूचव्युं. मुक्त आत्मा सदा ज्ञानरूप ज छे एम सूचव्युं.

आवा जे गुणवाळा तेने ते गुणनी प्राप्ति अर्थे वंदुं छुं,—एम कही परम आप्त, मोक्ष-मार्ग अर्थे विश्वास करवा योग्य, वंदन योग्य, भक्ति करवा योग्य,—जेनी आज्ञाए चालवाथी निःसंशय मोक्ष प्राप्त थाय, तेमने प्रगटेल गुणोनी प्राप्ति थाय, ते गुणो प्रगटे,—एवा कोण होय ते सूचव्युं. उपर जणावेल गुणवाळा मुक्त परम आप्त, वंदन योग्य होय, तेमणे बतावेल ते मोक्षमार्ग, अने तेमथी भक्तिथी मोक्षनी प्राप्ति होय, तेमने प्रगट थयेला गुणो तेमनी आज्ञाए चालनार भक्तिमानने प्रगटे एम सूचव्युं.

१. वीतरागना मार्गनी उपासना कर्तव्य छे.

७८१. वनक्षेत्र. उत्तरसंडा. प्र. आसो वद १ रवि. १९५४.

ॐ नमः.

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ति साहुण देसियं;
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा.

भगवान् जिने आश्चर्यकारक एवी निष्पापवृत्ति (आहारग्रहण) मुनिओने उपदेशी. (ते पण शा अर्थे ?) मात्र मोक्षसाधनने अर्थे. मुनिने देह जोईए तेना धारणार्थे. (बीजा कोई पण हेतुथी नहीं.)

अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्व जिणेहिं वण्णियं;
जाव लज्जा समावित्ति, एगभत्तं च भोयणं.

सर्व जिन भगवंतोए आश्चर्यकारक (अद्भुत उपकारभूत) एवुं तपःकर्म नित्यने अर्थे उपदेश्युं. (ते आ प्रमाणेः) संयमना रक्षणार्थे सम्यक्वृत्तिए एक वखत आहार ग्रहण. (दशवैकालिकसूत्र.)

तथारूप असंग निर्ग्रंथपदनो अभ्यास सतत वर्द्धमान करजो. 'प्रश्न व्याकरण', 'दशवैकालिक', 'आत्मानुशासन' हाल संपूर्ण लक्ष राखीने विचारशो. एक शास्त्र पुरूं वांच्यापछी बीजुं विचारशो.

७८२. वनक्षेत्र. द्वि० आ० शु० १. १९५४.

ॐ नमः.

मननो
वचननो
कायानो
इंद्रियनो } जय करीने.
आहारनो
निद्रानो

निर्विकल्पपणे अंतर्मुखवृत्ति करी आत्मध्यान करवुं.

मात्र अनाबाध अनुभव स्वरूपमां लीनता थवा देवी, बीजी चिंतवना न करवी.

जे जे तर्कादि उठे ते नहीं लंबावतां उपशमावी देवा.

७८३.

आभ्यंतर भान अवधूत.
विदेहिवत्,
जिनकल्पीवत्.

सर्व परभाव अने विभावथी व्यावृत्त.

निज स्वभावना भानसहित, अवधूतवत् विदेहिवत् जिनकल्पीवत् विचरता पुरुष भगवानना स्वरूपनुं ध्यान करिये छैये.

७८४. खेडा. द्वि. आश्विन वद. १९५४.

हे जीव, आ क्लेशरूप संसारथी निवृत्त था, निवृत्त था.

वीतराग प्रवचन.

७८५.* श्री खेडा. द्वि० आ० वद. १९५४.

प्र०—आत्मा छे?

श्री० उ०—हा, आत्मा छे

प्र०—अनुभवथी कहो छो के आत्मा छे?

उ०—हा, अनुभवथी कहिये छिये के आत्मा छे. साकरना स्वादनुं वर्णन न थई शके. ते तो अनुभवगोचर छे,—तेम ज आत्मानुं वर्णन न थई शके. ते पण अनुभवगोचर छे, पण ते छे ज.

प्र०—जीव एक छे के अनेक छे? आपना अनुभवनो उत्तर इच्छुं छुं.

उ०—जीवो अनेक छे.

प्र०—जड, कर्म ए वस्तुतः छे? के मायिक छे?

उ०—जड, कर्म ए वस्तुतः छे. मायिक नथी.

प्र०—पुनर्जन्म छे?

उ०—हा, पुनर्जन्म छे.

प्र०—वेदांतने मान्य मायिक ईश्वरनुं अस्तित्व आप मानो छो?

उ०—ना.

प्र०—दर्पणमां पडतुं प्रतिबिंब ते मात्र खाली देखाव छे के कोई तत्त्वनुं बनेल छे?

उ०—दर्पणमां पडतुं प्रतिबिंब मात्र खाली देखाव नथी, ते अमुक तत्त्वनुं बनेलुं छे.

(२)

मारूं चित्त, मारी चित्तवृत्तिओ एटली शांत थई जाओ के कोई मृग पण आ शरीरने जोई ज रहे, भय पामी नाशी न जाय!

मारी चित्तवृत्ति एटली शांत थई जाओ के कोई वृद्ध मृग जेना माथामां खुजली आवती होय ते आ शरीरने जडपदार्थ जाणी पोतानुं माथुं खुजली मटाडवा आ शरीरने घसे!

---

* श्री खेडाना एक वेदांतविद् विद्वान् वकीलनो प्रसंग. म. कि.

वर्ष ३२ मुं.

७८६. मुंबई. कार्तिक १९५५.

ॐ नमः.

(१)

संयम.

(२)

जागृत सत्ता.

ज्ञायक सत्ता.

आत्मस्वरूप.

(३)

सर्वज्ञोपदिष्ट आत्मा सद्गुरुकृपाए जाणिने निरंतर तेना ध्यानना अर्थे विचरवुं, संयम तप पूर्वकः–

(४)

अहो! सर्वोत्कृष्ट शांत रसमय सन्मार्ग.

अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शांतरसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञ देव.

अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शांतरस सुप्रतीत कराव्यो एवा परम कृपालु सद्गुरु देव.

आ विश्वमां सर्व काळ तमे जयवंत वर्त्तो, जयवंत वर्त्तो.

७८७. ईडर. मार्गशीर्ष सुदी १४ सोम. १९५५.

ॐ नमः.

जेम बने तेम वीतरागश्रुतनुं अनुप्रेक्षन (चिंतवन) विशेष कर्त्तव्य छे. प्रमाद परमरिपु छे; ए वचन जेने सम्यक् निश्चित थयुं छे ते पुरुषो कृतकृत्य थतां सुधी निर्भयपणे वर्त्तवानुं स्वप्न पण इच्छता नथी. राज्यचंद्र.

७८८. ईडर. मार्ग वद ४ शनिवार. १९५५.

ॐ नमः.

तमने जे समाधानविशेषनी जिज्ञासा छे, ते कोईएक निवृत्तियोगमां प्राप्त थवायोग्य छे.

जिज्ञासा बळ, विचार बळ, वैराग्य बळ, ध्यान बळ, अने ज्ञान बळ वर्धमान थवाने अर्थे आत्मार्थी जीवने तथारूप ज्ञानी पुरुषनो समागम विशेष करी उपासवा योग्य छे.

तेमां पण वर्त्तमान काळना जीवोने ते बळनी दृढ छाप पडी जवाने अर्थे घणा अंतरायो जोवामां आवे छे, जेथी तथारूप शुद्ध जिज्ञासुवृत्तिए दीर्घकाळपर्यंत सत्समागम उपासवानी आवश्यकता रहे छे. सत्समागमना अभावे वीतरागश्रुत, परम शांतरसप्रतिपादक वीतरागवचनोनी अनुप्रेक्षा वारंवार कर्त्तव्य छे. चित्तस्थैर्यमाटे ते परम औषध छे.

७८९. ईडर. मार्ग वद. ,, गुरुवारनी सवारे. १९५५.

ॐ नमः.

वनस्पतिसंबंधी त्यागमां अमुक दशथी पांच वनस्पतिनो हाल आगार राखी बीजी वनस्पतिथी विराम पामतां आज्ञानो अतिक्रम नथी.

सद्देवगुरुशास्त्रभक्ति अप्रमत्तपणे उपासनीय छे. श्री ॐ.

७९०.

प्रत्यक्ष निजअनुभवस्वरूप छुं एमां संशय शो?

ते अनुभवमां जे विशेष विषे न्यूनाधिकपणुं थाय छे, ते जो मटे तो केवळ अखंडाकार स्वानुभव स्थिति वर्त्ते.

अप्रमत्त उपयोगे तेम थई शके.

अप्रमत्त उपयोग थवाना हेतुओ सुप्रतीत छे. तेम वर्त्ते जवाय छे ते प्रत्यक्ष सुप्रतीत छे.

अविच्छीन्न तेवी धारा वर्त्ते तो अद्भुत अनंत ज्ञानस्वरूप अनुभव सुस्पष्ट समवस्थित वर्त्ते.

७९१. ईडर. पोष सुद. १५ गुरु. १९५५.

ॐ

(१) वसोमां ग्रहण करेला नियमानुसार लीलोत्रीमां विरतिपणे ० ० ० ए वर्त्तवुं. बे श्लोकना स्मरणनो नियम शारीरिक उपद्रवविशेष विना हमेश निर्वाहवो. घऊं अने घी शारीरिक हेतुथी ग्रहणकरतां आज्ञानो अतिक्रम नथी.

(२) किंचित् दोष संभाव्यमान थयो होय तो तेनुं प्रायश्चित्त श्री ० ० ० ० ० ० मुनि आदिनी समीपे लेवुं योग्य छे.

(३) मुमुक्षुओए नियमादिनुं ग्रहण ते मुनिओ समीपे कर्त्तव्य छे.

७९२.

प्रवृत्तिनां कार्यो प्रति विरति.

संग अने स्नेहपाशनुं त्रोडवुं (अतिशय वसमुं छतां करवुं, केमके बीजो कोई उपाय नथी.)

आशंकाः—जे स्नेह राखे छे तेना प्रत्ये आवी क्रूर दृष्टिथी वर्त्तवुं ते कृतघ्नता अथवा निर्दयता नथी?

समाधान—

७९३. मोरबी. महावद. ९ सोम. १९५५. (रात्रे.)

कर्मनी मूळ प्रकृति आठ, तेमां चार घातिनी अने चार अघातिनी कहेवाय छे.

चार घातिनीनो धर्म आत्माना गुणनी घात करवानो, अर्थात् (१) ते गुणने आवरण करवानो, अथवा (२) ते गुणनुं बळ—वीर्य रोधवानो, अथवा (३) तेने विकळ करवानो छे अने ते माटे घातिनी एवी संज्ञा ते प्रकृतिने आपी छे.

आत्माना गुण ज्ञान, दर्शन तेने आवरण करे तेने अनुक्रमे (१) ज्ञानावरणीय अने (२) दर्शनावरणीय एवुं नाम आप्युं.

अंतराय प्रकृति ए गुणने आवरती नथी, पण तेना भोग उपभोग आदिने, तेनां वीर्य-बळने रोके छे. आ ठेकाणे आत्मा भोगादिने समजे छे, जाणे देखे छे एटले आवरण नथी; पण समजतां छतां भोगादिमां विघ्न-अंतराय करे छे, माटे तेने आवरण नहिं पण अंतराय प्रकृति कही.

आम त्रण आत्मघातिनी प्रकृति थई. चोथी घातिनी प्रकृति मोहनीय छे. आ प्रकृति आवरती नथी, पण आत्माने मूर्च्छित करी, मोहित करी विकळ करे छे, ज्ञान, दर्शन छतां अंतराय नहिं छतां पण आत्माने वखते विकळ करे छे, ऊंधा पाटा बंधावे छे, मुंझवे छे माटे एने मोहिनीय कही.

आम आ चारे सर्वघातिनी प्रकृति कही.

बीजी चार प्रकृति जो के आत्माना प्रदेश साथे जोडायली छे तथा तेनुं काम कर्या करे छे अने उदय अनुसार वेदाय छे, तथापि ते आत्माना गुणनी आवरण करवा रूपे के अंतराय करवा रूपे के तेने विकळ करवा रूपे घातक नथी माटे तेने अघातिनी कही छे.

७९४. मोरबी. फाल्गुन सुद १ रवि. १९५५.

ॐ नमः.

(१) "नाकेरूप निहाळता."

ए चरणनो अर्थ वीतरागमुद्रासूचक छे. रूपावलोकन दृष्टिथी स्थिरता प्राप्त थये स्वरूपावलोकन दृष्टिमां पण सुगमता प्राप्त थाय छे. दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाथी स्वरूपावलोकन दृष्टि परिणमे छे. महत्पुरुषोनो निरंतर अथवा विशेष समागम, वीतरागश्रुत चिंतवन, अने गुणजिज्ञासा दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाना मुख्य हेतु छे. तेथी स्वरूपदृष्टि सहजमां परिणमे छे.

(२) शिथीळता घटवानो उपाय जीव जो करे तो सुगम छे. वीतरागवृत्तिनो अभ्यास राखशो.

७९५. ववाणीआ. फा. वद १० बुधवार. १९५५.

आत्मार्थीए बोध क्यारे परिणमी शके छे ए भाव स्थिरचित्ते विचारवा योग्य छे, जे मूळभूत छे.

अमुक असद्वृत्तिओनो प्रथम अवश्य करी निरोध करवो योग्य छे. जे निरोधना हेतुने दृढताथी अनुसरवुं ज जोईए, तेमां प्रमाद योग्य नथी. ॐ.

७९६. ववाणीआ. फा. वदी ,,. १९५५.

चरमावर्त्त हो चरमकरण तथा, भवपरिणति परिपाक रे,
दोष टळे ने द्रष्टि खुले भली, प्रापति प्रवचन वाक रे. १.
परिचय पातकघातक साधुशुं, अकुशल अपचय चेत रे,
ग्रंथ अध्यातम श्रवण, मनन करी, परिशीलन नय हेत रे. २.
मुगध सुगम करी सेवन लेखवे, सेवन अगम अनुप रे,
देजो कदाचित् सेवक याचना, आनंदघन रसरूप रे. ३.

(संभव जिनस्तवन-आनंदघन.)

७९७. ववाणीआ. चैत्र सुद १. १९५५.

उवसंतखीणमोहो, मग्गे जिणभासिदेन समुवगदो,
णाणाणु मग्गचारी, निव्वाणं पुर व्वज्ञ दि धीरो.

दर्शनमोह उपशांत अथवा क्षीण थयो छे जेनो एवो धीर पुरुष वीतरागोए दर्शावेला मार्गने अंगीकार करीने शुद्धचैतन्यस्वभाव परिणामी थई मोक्षपुर प्रत्ये जाय छे.

७९८. श्री ववाणीआ. चैत्र सुद ५. १९५५.

ॐ. **द्रव्यानुयोग** परम गंभीर अने सूक्ष्म छे, निर्ग्रंथ प्रवचननुं रहस्य छे, शुक्ल ध्याननुं अनन्य कारण छे. शुक्ल ध्यानथी केवळज्ञान समुत्पन्न थाय छे. महाभाग्यवडे ते द्रव्यानुयोगनी प्राप्ति थाय छे.

दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाथी अथवा नाश पामवाथी, विषयप्रत्ये उदासीनताथी अने महत्पुरुषना चरणकमळनी उपासनाना बळथी द्रव्यानुयोग परिणमे छे.

जेम जेम संयम वर्द्धमान थाय छे, तेम तेम द्रव्यानुयोग यथार्थ परिणमे छे. संयमनी वृद्धिनुं कारण सम्यक्दर्शननुं निर्मलत्व छे, तेनुं कारण पण 'द्रव्यानुयोग' थाय छे.

सामान्यपणे द्रव्यानुयोगनी योग्यता पामवी दुर्लभ छे. आत्मारामपरिणामी, परमवीतरागदृष्टिवंत, परमअसंग एवा महात्मापुरुषो तेनां मुख्य पात्र छे.

कोई महत्पुरुषना मनननें अर्थे पंचास्तिकायनुं *संक्षिप्त स्वरूप लख्युं हतुं; ते मनन अर्थे आ साथे मोकल्युं छे.

हे आर्य! द्रव्यानुयोगनुं फळ सर्व भावथी विराम पामवारूप संयम छे. ते आ पुरुषनां वचन तारा अंतःकरणमां तुं कोई दिवस शिथिल करीश नहीं. वधारे शुं? समाधिनुं रहस्य ए ज छे. सर्व दुःखथी मुक्त थवानो अनन्य उपाय ए ज छे.

७९९. ववाणीआ. चैत्र वद २ गुरु. १९५५.

हे आर्य! जेम रण उतरी पारने संप्राप्त थया, तेम भव स्वयंभूरमण तरी पारने संप्राप्त थाओ!

८००.

स्वपर उपकारनुं महत्कार्य हवे करीले! त्वराथी करी ले!

अप्रमत्त था—अप्रमत्त था.

शुं काळनो क्षणवारनो पण भरूसो आर्य पुरुषोए कर्यो छे?

हे प्रमाद!! हवे तुं जा, जा.

हे ब्रह्मचर्य! हवे तुं प्रसन्न था, प्रसन्न था.

हे व्यवहारोदय! हवे प्रबळथी उदय आवीने पण तुं शांत था, शांत.

हे दीर्घसूत्रता! सुविचारनुं, धीरजनुं, गंभीरपणानुं परिणाम तुं शा माटे थवा इच्छे छे?

हे बोधबीज! तुं अत्यंत हस्तामलकवत् वर्त, वर्त.

* आंक ७००. म. कि.

हे ज्ञान! तुं दुर्गम्यने पण हवे सुगम स्वभावमां लावी मूक.

हे चारित्र! परम अनुग्रह कर, परम अनुग्रह कर.

हे योग! तमे स्थिर थाओ, स्थिर थाओ.

हे ध्यान! तुं निज स्वभावाकार था, निज स्वभावाकार था.

हे व्यग्रता! तुं जती रहे, जती रहे.

हे अल्प के मध्य अल्प कषाय! हवे तमे उपशम थाओ. क्षीण थाओ. अमारे कांई तमारा प्रत्ये रुचि रही नथी.

हे सर्वज्ञ पद! यथार्थ सुप्रतीतपणे तुं हृदयावेश कर, हृदयावेश कर.

हे असंग निर्ग्रंथ पद! तुं स्वाभाविक व्यवहार रूप था.

हे परम करुणामय सर्व परम हितना मूळ वीतराग धर्म! प्रसन्न था, प्रसन्न.

हे आत्मा! तुं निज स्वभावाकार वृत्तिमां ज अभिमुख था, अभिमुख था. ॐ

हे वचनसमिति! हे कायअचपळता! हे एकांतवास! अने असंगता! तमे पण प्रसन्न थाओ, प्रसन्न थाओ.

खळभळी रहेली एवी जे आभ्यंतर वर्गणा ते कांतो अभ्यंतर ज वेदी लेवी. कांतो तेने स्वच्छ पुट दई उपशम करी देवी.

जेम निस्पृहता बळवान तेम ध्यान बळवान थई शके, कार्य बळवान थई शके.

८०१. मोरबी. चैत्र वद ७. १९५५.

(१) विशेष थई शके तो सारूं. ज्ञानिओने सदाचरण पण प्रिय छे. विकल्प कर्त्तव्य नथी.

(२) 'जातिस्मृति' थई शके छे. पूर्व भव जाणी शकाय छे. अवधिज्ञान छे.

(३) तिथि पाळवी.

(४) तेवुं तेवाने मळे; तेवुं तेवाने गमे.

चाहे चकोर ते चंदने,
मधुकर मालतीभोगीरे;
तेम भवि सहजगुणे होवे,
उत्तम निमित्तसंजोगीरे.

(५) चरमावर्त्त वळी हो चरमकरण तथा रे, भव परिणति परिपाक,
दोष टळे ने दृष्टि खुले अति भली रे, प्रापति प्रवचन वाक.

८०२. मोरबी. चैत्र वद ८. १९५५.

ॐ

(१) षड्दर्शनसमुच्चय अने तत्त्वार्थसूत्र अवलोकशो. योगदृष्टिसमुच्चय (सज्झाय) कंठाग्रे करी विचारवा योग्य छे. ए दृष्टिओ आत्मदशामापक(थर्मोमिटर)यंत्र छे.

(२) शास्त्रने जाळ समजनारा भूल करे छे. शास्त्र एटले शास्ता पुरुषनां वचनो. ए वचन समजावा दृष्टि सम्यक् जोईए. हुं ज्ञान छुं, हुं ब्रह्म छुं एम मानी लीधे, एम पोकार्ये ते थई जवातुं नथी. ते रूप थवा सत्शास्त्रादि सेववां जोईए.

(३) **सदुपदेष्टानी बहु जरूर छे. सदुपदेष्टानी बहु जरूर छे.**

(४) पांचसो हजार श्लोक मुखपाठे करवाथी पंडित बनी जवातुं नथी. छतां थोडुं जाणी झाझानो डोळ करनारा एवा पंडितोनो त्रोटो नथी.

(५) ऋतुने* सन्निपात थयो छे.

८०३. मोरबी. चैत्र वद ९ गुरु. १९५५.

(१)

ॐ नमः.

(१) आत्महित अति दुर्लभ छे, एम जाणी विचारवान पुरुषो अप्रमत्तपणे तेनी उपासना करे छे.

(२) आचारांग सूत्रनां एक वाक्य संबंधीनुं चर्चापत्रादि जोयुं छे. घणुं करी थोडा दिवसमां कोई सुज्ञ तरफथी तेनुं समाधान बहार पडशे. ॐ

(२)

परम सत् रिबातुं होय तो तेवा विशिष्ट प्रसंगे देवता सारसंभाळ करे; प्रगट पण आवे. पण बहु जुज प्रसंगमां.

योगी के तेवी विशिष्ट शक्तिवाळा तेवा प्रसंगे सहाय करे, पण ते ज्ञानी तो नही ज.

जीवने मतिकल्पनाथी एम भासे के मने देवताना दर्शन थाय छे, मारी पासे देवता आवे छे, मने दर्शन थाय छे. देवता एम देखाव न दे.

८०४. मोरबी. चैत्र वद १०. १९५५.

१. पारकानां मनना पर्याय जाणी शकाय छे. स्वमनना पर्याय जाणी शकाय तो परमनना पर्याय जाणवा सुलभ छे. स्वमनना पर्याय जाणवा पण मुश्केल छे. स्वमन समजाय तो ते वश थाय. समजावा सद्विचार अने सतत् एकाग्र उपयोगनी जरूर छे.

२. आसनजयथी (स्थिर आसन दृढ थवाथी) उत्थान वृत्ति उपशमे छे; उपयोग अचपळ थई शके छे; निद्रा ओछी थई शके छे.

३. तडकाना प्रकाशमां झीणुं झीणुं सूक्ष्म रज जेवुं देखाय छे, ते अणु नथी, पण अनेक परमाणुओनो बनेल स्कंध छे. परमाणु चक्षुए जोया न जाय. चक्षुइंद्रियलब्धिना प्रबळ क्षयोपशमवाळा जीव अथवा दुरंदेशीलब्धिसंपन्न योगि अथवा केवलिने ए देखी शकाय.

८०५. मोरबी. चैत्र वद ११. १९५५.

१. **मोक्षमाळा**[†] अमे सोळ वरस अने पांच मासनी उम्मरे त्रण दिवसमां रची हती. ६७ मा

* सं. १९५६ नो भयंकर दुकाळ पड्यो. † आंक ४. म. कि.

पाठ उपर शाही ढोळाई जतां ते पाठ फरी लखवो पड्यो हतो, अने ते ठेकाणे 'बहु पुण्य केरा पुंजथी'नुं अमूल्य तात्त्विक विचारनुं काव्य मुकयुं हतुं.

२. जैनमार्गने यथार्थ समजाववा तेमां प्रयास कर्यो छे. जिनोक्तमार्गथी कंईपण न्यूनाधिक तेमां कह्युं नथी. वीतरागमार्गपर आबालवृद्धनी रुचि थाय, तेनुं स्वरूप समजाय, तेनुं बीज हृदयमां रोपाय तेवा हेतुए बालावबोध रूप योजना तेनी करी छे. ते शैली तथा ते बोधने अनुसरवा पण ए नमुनो आपेल छे. एनो प्रज्ञावबोध भाग भिन्न छे ते कोई करशे.

३. ए छपातां विलंब थयेल तेथी ग्राहकोनी आकुळता टाळवा 'भावनाबोध'* त्यार पछी रची उपहार रूपे ग्राहकोने आप्यो हतो.

४. हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरूप छे मारूं खरूं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परिहरूं?

ए पर जीव विचार करे तो तेने नवे तत्त्वनो, तत्त्वज्ञाननो संपूर्ण बोध मळी जाय एम छे. एमां तत्त्वज्ञान संपूर्ण समावेश पामे छे. शांतिपूर्वक, विवेकथी विचारवुं जोईए.

५. झाझा, लांबा लेखथी कंई ज्ञाननी, विद्वत्तानी तुलना न थाय. पण सामान्यपणे जीवोने ए तुलनानी गम नथी.

६. प्रमाद मोटो शत्रु छे. बने तो जिनमंदिरे नियमित पूजा करवा जवुं. रात्रे न जमवुं, जरूर पडे तो उकाळेल दुध वापरवुं.

७. काव्य, साहित्य के संगीत आदि कळा जो आत्मार्थे न होय तो कल्पित छे. कल्पित एटले निरर्थक, सार्थक नहिं ते, जीवनी कल्पना मात्र. भक्तिप्रयोजन रूप के आत्मार्थे न होय ते बधुं कल्पित ज.

८०६. मोरबी चैत्र वद १२. १९५५.

प्र०-श्रीमद् आनंदघनजी श्री अजितनाथजीना स्तवनमां स्तवे छे:-

तरतम योगे रे तरतम वासना रे,
वासित बोध आधार.-पंथडो०.

एनो अर्थ शुं?

उ०-जेम योगनुं (मन, वचन, कायाना) तारतम्य अर्थात् अधिकपणुं तेम वासनानुं पण अधिकपणुं, एवो 'तरतम योगे रे तरतम वासना रे' नो अर्थ थाय छे, अर्थात् कोई बळवान् योगवाळो पुरुष होय तेनुं मनोबळ, वचनबळ, आदि बळवान् होय अने ते पंथ प्रवर्त्तावतो होय,-पण जेवो तेनो बळवान् मन, वचनादि योग छे, तेवी ज पाछी बळवान् वासना मनावा, पूजावा, मान सत्कार, अर्थ, वैभव आदिनी होय तो तेवी वासनावाळानो बोध वासित बोध थयो; कषाययुक्त बोध थयो; विषयादिनी लालसावाळो बोध थयो; मानार्थे थयो; आत्मार्थे

* आंक ५. म. कि.

बोध न थयो. श्री आनंदघनजी श्री अजितप्रभुने स्तवे छे के हे प्रभु, एवो वासित बोध आधाररूप छे ते मारे नथी जोईतो. मारे तो कषायरहित, आत्मार्थसंपन्न, मानादि वासना-रहित एवो बोध जोईए छे. एवा पंथनी गवेषणा हुं करी रह्यो छुं. मन वचनादि बळवान् योगवाळा जूदा जूदा पुरुषो बोध प्ररूपता आव्या छे, प्ररूपे छे; पण हे प्रभु, वासनाना कारणे ते बोध वासित छे, मारे तो निर्वासित बोध जोईए छे. ते तो, हे वासना विषय कषायादि जेणे जीत्या छे एवा जिन वीतराग अजित देव, तारो छे. ते तारा पंथने हुं खोजी-निहाळी रह्यो छुं. ते आधार मारे जोईए छे.

(२) आनंदघनजीनी चोविशी मुखपाठे करवा योग्य छे. तेना अर्थ विवेचन पूर्वक लखवा योग्य छे. तेम करशो.

८०७. मोरबी. चैत्र वद १४. १९५५.

ॐ. श्री हेमचंद्राचार्यने थयां आठसो वरस थयां. श्री आनंदघनजीने थयां बसो वरस थयां. श्री हेमचंद्राचार्ये लोकानुग्रहमां आत्मा अर्पण कर्यो. श्री आनंदघनजीए आत्महित साधन प्रवृत्तिने मुख्य करी. श्री हेमचंद्राचार्य महाप्रभावक बळवान् क्षयोपशमवाळा पुरुष हता. तेओ धारत तो जूदो पंथ प्रवर्त्तावी शके एवा सामर्थ्यवान् हता. तेमणे त्रिश हजार घरने श्रावक कर्या. त्रिश हजार घर एटले सवाथी दोढ लाख माणसनी संख्या थई. श्री सहजानंदजीना संप्रदायमां एक लाख माणस हशे. एक लाखना समूहथी सहजानंदजीए पोतानो संप्रदाय प्रवर्त्ताव्यो, तो दोढ-लाख अनुयायीओनो एक जूदो संप्रदाय श्री हेमचंद्राचार्य धारत तो प्रवर्त्तावी शकत.

पण श्री हेमचंद्राचार्यने लाग्युं हतुं के **संपूर्ण वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर ज धर्मप्रवर्त्तक होई शके.** अमे तो ते तीर्थंकरनी आज्ञाए चाली तेमना परमार्थमार्गनुं प्रकाश करवा प्रयत्न करनारा. वीतरागमार्गनो परमार्थ प्रकाशवारूप लोकानुग्रह श्री हेमचंद्राचार्ये कर्यो. तेम करवानी जरूर हती. वीतरागमार्ग प्रति विमुखता अने अन्यमार्ग तरफथी विषमता, ईर्ष्या आदि शरू थई चूक्यां हतां. आवी विषमतामां वीतरागमार्गभणी लोकोने वाळवा, लोकोपकारनी तथा ते मार्गना रक्षणनी तेमने जरूर जणाई. अमारूं गमे तेम थाओ, आ मार्गनुं रक्षण थवुं जोईए. ए प्रकारे तेमणे स्वार्पण कर्युं. पण आम तेवाज करी शके. तेवा भाग्यवान्, महात्म्यवान्, क्षयोपशमवान् ज करी शके. जूदां जूदां दर्शनोनो यथावत् तोल करी अमुक दर्शन संपूर्ण सत्यस्वरूप छे एवो निर्धार करी शके तेवा पुरुष लोकानुग्रह, परमार्थप्रकाश, आत्मार्पण करी शके.

श्री हेमचंद्राचार्ये घणुं कर्युं. श्री आनंदघनजी तेमना पछी छसो वरसे थया. ए छसो वरसना अंतराळमां बीजा तेवा हेमचंद्राचार्यनी जरूर हती. विषमता व्यापती जती हती. काळ उग्र स्वरूप लेतो जतो हतो. श्री वल्लभाचार्ये शृंगारयुक्त धर्म प्ररूप्यो. शृंगारयुक्त धर्म भणी लोको वळ्यां, आकर्षायां. वीतरागधर्मविमुखता वधती चाली. अनादिथी जीव शृंगार आदि विभावमां तो मूर्च्छा

पामी रह्यो छे, तेने वैराग्य सन्मुख थवुं मुश्केल छे. त्यां तेनी पासे शृंगार ज धर्मरूपे मुकाय तो ते वैराग्य भणी केम वळी शके? आम वीतरागमार्गविमुखता वधी.

त्यां प्रतिमाप्रतिपक्ष संप्रदाय जैनमां ज उभो थयो. ध्याननुं कार्य, स्वरूपनुं कारण एवी जिन प्रतिमाप्रति लाखो दृष्टिविमुख थया. वीतरागशास्त्र कल्पित अर्थथी विराधायां, केटलांक तो समूळगां खंडायां. आम आ छसो वरसना अंतराळमां वीतरागमार्गरक्षक बीजा हेमचंद्राचार्यनी जरूर हती. अन्य घणा आचार्यो थया, पण ते श्री हेमचंद्राचार्य जेवा प्रभावशाली नहीं, एटले विषमता सामे टकी न शकायुं. विषमता वधती चाली. त्यां श्री आनंदघनजी बसो वरस पूर्वे थया.

श्री आनंदघनजीए स्वपर हितबुद्धिथी लोकोपकार प्रवृत्ति शरू करी. आ मुख्य प्रवृत्तिमां आत्म हित गौण कर्युं, पण वीतरागधर्मविमुखता, विषमता एटली बधी व्यापी गई हती के लोको धर्मने के आनंदघनजीने पिछाणी न शक्यां, ओळखी न शक्यां. परिणामे श्री आनंदघनजीने लाग्युं के प्रबळ व्यापी गयेली विषमतायोगे लोकोपकार, परमार्थप्रकाश कारगत थतो नथी, अने आत्महित गौण थई तेमां बाधा आवे छे, माटे आत्महितने मुख्य करी तेमां प्रवर्त्तवुं योग्य छे. आवी विचारणाए परिणामे ते लोकसंग त्यजी दई वनमां चाली निकळ्या. वनमां विचरतां छतां अप्रगट-पणे रही चोविशी–पद आदिवडे लोकोपकार तो करी ज गया. निष्कारण लोकोपकार ए महा-पुरुषोनो धर्म छे.

प्रगटपणे लोको आनंदघनजीने ओळखी न शक्यां. पण आनंदघनजी अप्रगट रही तेमनुं हित करता गया.

अत्यारे तो श्रीआनंदघनजीना वखत करतां पण वधारे विषमता, वीतरागमार्गविमुखता व्यापेली छे.

(२) श्री आनंदघनजीने सिद्धांतबोध तीव्र हतो. तेओ श्वेतांबर संप्रदायमां हता. 'भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, वृत्ति, परंपर अनुभवरे' इत्यादि पंचांगीनुं नाम तेमना श्री नमिनाथजीना स्तवनमां न आव्युं हत तो खबर न पडत के तेओ श्वेतांबर संप्रदायना हता के दिगंबर संप्रदायना?

८०८. मोरबी चैत्र ,,. १९५५.

आ भारतवर्षनी अधोगति जैनधर्मथी थई एम महीपतराम रूपराम कहेता, लखता. दशेक वरसपर अमदाबादमां मेळाप थतां तेमने पुछ्युंः–

प्र०–भाई, जैनधर्म अहिंसा, सत्य, संप, न्याय, नीति, आरोग्यप्रद आहार–पान, निर्व्यसन, उद्यम आदिनो बोध करे छे?

(महीपतरामे उत्तर आप्यो.)

म० उ०–हा.

प्र०–भाई, जैन धर्म हिंसा, असत्य, चोरी, कुसंप, अन्याय, अनीति, विरुद्ध आहार विहार, विषय लालसा, आळस–प्रमाद आदिनो निषेध करे छे?

म. उ०–हा.

प्र०—देशनी अधोगति शाथी थाय? अहिंसा, सत्य, संप, न्याय, नीति, आरोग्य आपे अने रक्षे एवां शुद्ध सादां आहार–पान, निर्व्यसन, उद्यम आदिथी के तेथी विपरीत एवां हिंसा, असत्य, कुसंप, अन्याय, अनीति, आरोग्य बगाडे अने शरीर–मनने अशक्त करे एवां विरुद्ध आहार विहार, व्यसन, मोजशोख, आळसप्रमाद आदिथी?

म० उ०—बीजांथी अर्थात् विपरीत एवां हिंसा, असत्य, कुसंप, प्रमाद आदिथी?

प्र०—त्यारे देशनी उन्नति ए बीजांथी उलटां एवां अहिंसा, सत्य, संप, निर्व्यसन, उद्यम आदिथी थाय?

म० उ०—हा.

प्र०—त्यारे 'जैन' देशनी अधोगति थाय एवो बोध करे छे के उन्नति थाय एवो?

म० उ०—भाई, हुं कबुल करूं छुं के 'जैन' जेथी देशनी उन्नति थाय एवां साधनोनो बोध करे छे. आवी सूक्ष्मताथी विवेकपूर्वक में विचार कर्यो न हतो. अमने तो नानपणमां पाद्रीनी शाळामां शिखतां संस्कार थयेला, तेथी वगरविचारे अमे कही दीधुं, लखीमार्युं. महीपतरामे सरळताथी कबुल कर्युं. सत्यशोधनमां सरळतानी जरूर छे. सत्यनो मर्म लेवा विवेक पूर्वक मर्ममां उतरवुं जोईए.

८०९. मोरबी. वै. सुद २. १९५५.

१. 'ज्योतिष्' ने कल्पित गणी अमे त्यागी दीधुं. लोकोमां आत्मार्थता बहु ओछी थई गई छे; नहींवत् रही छे. स्वार्थहेतुए ए अंगे लोकोए अमने पजवी मारवा मांड्या. आत्मार्थ सरे नहीं एवा ए विषयने कल्पित (सार्थक नहीं) गणी अमे गौण करी दीधो, गोपवी दीधो.

२. लोको एक कार्यनी तथा तेना कर्त्तानी प्रशंसा करे छे ए ठिक छे. ए ए कार्यने पोषक तथा तेना कर्त्ताना उत्साहने वधारनार छे. पण साथे ए कार्यमां जे खामी होय ते पण विवेक अने निर्मानीपणे सभ्यतापूर्वक बताववी जोईए, के जेथी फरी खामीनो अवकाश न रहे अने ते कार्य खामी रहित थई पूर्ण थाय. एकली प्रशंसा–गाणाथी न सरे. एथी तो उलटुं मिथ्या-भिमान वधे. हालना मानपत्रादिमां आ प्रथा विशेष छे. विवेक जोईए.

३. परिग्रहधारी यतिओने सन्मानवाथी मिथ्यात्वने पोषण मळे छे, मार्गनो विरोध थाय छे. दाक्षिण्य–सभ्यता पण जाळववां जोईए. जीवने छोडवुं गमतुं नथी, करवुं गमतुं नथी, मिथ्या डाही डाही वातो करवी छे, मान मुकवुं नथी. तेथी आत्मार्थ न सरे.

८१०. मोरबी. वै. सुद ६. १९५५.

ॐ. ध्यान, श्रुतने उपकारक एवी योगवाईवाळा गमे ते क्षेत्रे चातुर्मासनी स्थिति थवाथी आज्ञानो अतिक्रम नथी, एम मुनि श्री····आदिने सविनय जणावशो.

जे सत्श्रुतनी जिज्ञासा छे, ते सत्श्रुत थोडा दिवसमां प्राप्त थवानो संभव छे एम मुनिश्रीने निवेदन करशो.

वीतराग सन्मार्गनी उपासनामां वीर्य उत्साहमान करशो.

८११. ववाणीआ. वैशाख शुद ७. १९५५.

ॐ. गृहवासनो जेने उदय वर्त्ते छे, ते जो कंईपण शुभ ध्याननी प्राप्ति इच्छता होय तो तेवा मूळ हेतुभूत एवां अमुक सद्वर्त्तन पूर्वक रहेवुं योग्य छे. जे अमुक नियममां न्याय संपन्न आजीविकादि व्यवहार ते पहेलो नियम साध्य करवो घटे छे. ए नियम साध्य थवाथी घणा आत्मगुणो प्राप्त करवानो अधिकार उत्पन्न थाय छे. आ प्रथम नियम उपर जो ध्यान आपवामां आवे, अने ते नियमने सिद्ध ज करवामां आवे तो कषायादि स्वभावथी मंद पडवा योग्य थाय छे, अथवा ज्ञानीनो मार्ग आत्मपरिणामी थाय छे. जे पर ध्यान आपवुं योग्य छे.

८१२. ईडर. वैशाख वद ६ मंगळवार. १९५५.

ॐ

निवृत्तिनो योग ते क्षेत्रे विशेष छे, तो 'कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा'नुं वारंवार निदिध्यासन कर्त्तव्य छे, एम मुनिश्रीने यथाविनय जणाववुं योग्य छे.

बाह्याभ्यंतर असंगपणुं पाम्या छे एवा महात्माओने संसारनो अंत समीप छे, एवो निःसंदेह ज्ञानीनो निश्चय छे.

८१३.

सर्व चारित्र वशीभूत करवाने माटे,
सर्व प्रमाद टाळवाने माटे,
आत्मामां अखंड वृत्ति रहेवाने माटे,
मोक्ष संबंधी सर्व प्रकारना साधनना जयने अर्थे

ब्रह्मचर्य

अद्भुत अनुपम सहायकारी छे, अथवा मूळभूत छे.

८१४. ईडर. वैशाख वद १० शनिवार. १९५५.

ॐ. किसनदासजी कृत क्रियाकोषनुं पुस्तक प्राप्त थयुं हशे. तेनुं आद्यंत अध्ययन कर्या पछी सुगम भाषामां एक निबंध ते विषे लखवाथी विशेष अनुप्रेक्षा थशे. अने तेवी क्रियानुं वर्त्तन पण सुगम छे एम स्पष्टता थशे, एम संभव छे.

राजनगरमां परम तत्त्वदृष्टिनो प्रसंगोपात उपदेश थयो हतो, ते अप्रमत्त चित्तथी वारंवार एकांतयोगमां स्मरण करवा योग्य छे.

८१५.

ॐ नमः.

सर्वज्ञ—वीतरागदेव.

सर्व द्रव्य क्षेत्र काळ भावनो सर्व प्रकारे जाणनार, रागद्वेषादि सर्व विभाव जेणे क्षीण कर्या छे ते **ईश्वर**.

ते पद मनुष्य देहने विषे संप्राप्त थवा योग्य छे.

संपूर्ण वीतराग थाय ते संपूर्ण सर्वज्ञ थाय.

संपूर्ण वीतराग थई शकाय एवा हेतुओ सुप्रतीत थाय छे.

८१६. नडियाद. जेठ. १९५५.

मंत्र तंत्र औषध नहीं, जेथी पाप पलाय;
वीतरागवाणी विना, अवर न कोई उपाय.

८१७. मुंबई. ज्येष्ठ. १९५५.

ॐ. अहो सत्पुरुषनां वचनामृत, मुद्रा अने सत्समागम!

सुषुप्त चेतनने जाग्रत करनार, पडती वृत्तिने स्थिर राखनार, दर्शनमात्रथी पण निर्दोष अपूर्व स्वभावने प्रेरक, स्वरूप प्रतीति, अप्रमत्त संयम अने पूर्ण वीतराग निर्विकल्प स्वभावनां कारणभूत, छेल्ले अयोगी स्वभाव प्रगट करी अनंत अव्याबाध स्वरूपमां स्थिति करावनार! त्रिकाळ जयवंत वर्त्तो! ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

८१८. मुंबई. जेठ सुद ११ भोम. १९५५.

(१) जो मुनियो अध्ययन करता होय तो 'योगप्रदीप' श्रवण करशो. 'कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा' नो योग तमने घणुंकरी प्राप्त थशे.

(२) जेनो काळ ते किंकर थई रह्यो, मृगतृष्णाजळ त्रैलोक. जीव्युं धन्य तेहनुं.
दासी आशा पिशाची थई रही, काम क्रोध ते केदी लोक. जीव्युं० ०
खातां पीतां बोलतां नित्ये, छे निरंजन निराकार. जीव्युं० ०
जाणे संत सलुणा तेहने, जेने होय छेल्लो अवतार. जीव्युं० ०
जगपावनकर ते अवतर्या, अन्य मातउदरनो भार. जीव्युं० ०
तेने चौद लोकमां विचरतां, अंतराय कोइए नव थाय. जीव्युं० ०
रिद्धि सिद्धि ते दासियो थई रही, ब्रह्मआनंद हृदे न समाय. जीव्युं० ०

८१९. मुंबई. जेठ. वद २ रवि. १९५५.

ॐ. जे विषय चर्चाय* छे ते ज्ञान छे. ते विषे यथावसरोदय.

८२०. मुंबई. ज्येष्ठ वद ७ शुक्रवार. १९५५.

व्यवहार प्रतिबंधथी विक्षेप न पामतां धैर्य राखी उत्साहमान वीर्यथी स्वरूपनिष्ठ वृत्ति करवी योग्य छे.

८२१. मोहमयि. आषाड सुद ८ रवि. १९५५.

१. क्रियाकोष एथी बीजो सरळ नथी. विशेष अवलोकन करवाथी स्पष्टार्थ थशे.

२. शुद्धात्मस्थितिनां (१) पारमार्थिक श्रुत अने (२) इंद्रियजय बे मुख्य अवलंबन छे. सुदृढपणे उपासतां ते सिद्ध थाय छे.

* श्री आचारांग सूत्रनां एक वाक्यसंबंधी जुओ आंक ८०३. (१) म. कि.

हे आर्य! **निराशा वखते महात्मा पुरुषोनुं अद्भुत चरण संभारवुं योग्य छे. उल्लासित वीर्यवान परमतत्त्व उपासवानो मुख्य अधिकारी छे.**

३. अप्रमत्त स्वभावनुं वारंवार स्मरण करीए छीए. शांतिः.

८२२. मुंबई. अषाड वदी ८ रवि. १९५५.

ॐ. मुमुक्षु तथा बीजा जीवोना उपकारने निमित्ते जे उपकारशील बाह्य प्रतापनी सूचना–विज्ञापन दर्शाव्युं, ते अथवा बीजां कोई कारणो कोई अपेक्षाए उपकारशील थाय छे.

हाल तेवा प्रवृत्ति स्वभाव प्रत्ये उपशांत वृत्ति छे. **प्रारब्धयोगथी जे बने ते पण शुद्ध स्वभावना अनुसंधान पूर्वक थवुं घटे छे.**

महात्माओए **निष्कारण करुणाथी** परमपदनो उपदेश कर्यो छे, तेथी एम जणाय छे के ते उपदेशनुं कार्य परम महत्त्व ज छे. सर्व जीव प्रत्ये बाह्य दयामां पण अप्रमत्त रहेवानो जेना योगनो स्वभाव छे, तेनो आत्मस्वभाव सर्व जीवने परमपदना उपदेशनो आकर्षक होय, तेवी निष्कारण करुणावाळो होय ते यथार्थ छे.

८२३.

ॐ नमः.

* "विना नयन पावे नहीं, विना नयनकी बात."

ए वाक्यनो हेतु मुख्य आत्मदृष्टिपरत्वे छे. स्वाभाविक उत्कर्षार्थे ए वाक्य छे. समागमना-योगे स्पष्टार्थ समजावायोग्य छे. तेमज बीजां प्रश्नोनां समाधान माटे हाल प्रवृत्ति बहु अल्प वर्ते छे. सत्समागमना योगमां सहजमां समाधान थवा योग्य छे.

"विनानयन" आदि वाक्यनो स्वकल्पनाथी कंईपण विचार न करतां, अथवा शुद्ध चैतन्य दृष्टि प्रत्येनुं वलण तेथी विक्षेप न पामे एम वर्त्तवुं योग्य छे. 'कार्तिकेयानुप्रेक्षा' अथवा बीजुं सत्शास्त्र थोडा वखतमां घणुं करीने प्राप्त थशे.

दुषम काळ छे, आयुष्य अल्प छे, सत्समागम दुर्लभ छे, महात्माओनां प्रत्यक्ष वाक्य चरण अने आज्ञानो योग कठण छे. जेथी बळवान अप्रमत्त प्रयत्न कर्त्तव्य छे. शांतिः.

८२४. मुंबई. श्रावण सुदी ३. १९५५.

ॐ. परम पुरुषनी मुख्य भक्ति, उत्तरोत्तर गुणनी वृद्धि थाय एवां, सद्वर्त्तनथी प्राप्त थाय छे. **चरणप्रतिपत्ति (शुद्ध आचरणनी उपासना) रूप सद्वर्त्तन ज्ञानीनी मुख्य आज्ञा छे,** जे आज्ञा परमपुरुषनी मुख्य भक्ति छे.

उत्तरोत्तर गुणनी वृद्धि थवामां गृहवासी जनोए सदुद्यमरूप आजीविकाव्यवहार सहित प्रवर्त्तन करवुं योग्य छे. घणां शास्त्रो अने वाक्योना अभ्यास करतां पण जो ज्ञानी पुरुषोनी एकेक आज्ञा जीव उपासे तो घणां शास्त्रथी थतुं फळ सहजमां प्राप्त थाय.

* आंक २१९ (१) म. कि.

८२५. मोहमयि क्षेत्र. श्रावण शुदी ७. १९५५.

ॐ. श्री पद्मनंदी शास्त्रनी एक प्रत कोई सारा साधयोगे वसोक्षेत्रे मुनिश्रीने संप्राप्त थाय एम करशो.

बळवान निवृत्तिवाळा द्रव्य क्षेत्रादि योगमां ते सत्शास्त्र तमे वारंवार मनन अने निदिध्यासन करशो. **प्रवृत्तिवाळां द्रव्य क्षेत्रादिमां ते शास्त्र वांचवुं योग्य नथी.**

त्रण योगनी अल्प प्रवृत्ति,–ते पण सम्यक् प्रवृत्ति,–होय त्यारे महत्पुरुषनां वचनामृतनुं मनन परम श्रेयनुं मूळ दृढीभूत करे छे; क्रमे करीने परमपद संप्राप्त करावे छे.

चित्त अविक्षेप राखी परमशांत श्रुतनुं अनुप्रेक्षन कर्त्तव्य छे.

८२६.

अगम्य छतां सरल एवा महत्पुरुषोना मार्गने नमस्कार.

१. महत्भाग्यना उदयवडे अथवा पूर्वना अभ्यस्त योगवडे जीवने साची मुमुक्षुता उत्पन्न थाय छे, जे अति दुर्लभ छे. ते साची मुमुक्षुता घणुंकरीने महत् पुरुषना चरण कमलनी उपासनाथी प्राप्त थाय छे, अथवा तेवी मुमुक्षुतावाळा आत्माने महत्पुरुषना योगथी आत्मनिष्ठपणुं प्राप्त थाय छे,–सनातन अनंत एवा ज्ञानी पुरुषोए उपासेलो एवो सन्मार्ग प्राप्त थाय छे. साची मुमुक्षुता जेने प्राप्त थई होय तेने पण **ज्ञानीनो समागम अने आज्ञा** अप्रमत्तयोग संप्राप्त करावे छे. मुख्य मोक्षमार्गनो क्रम आ प्रमाणे जणाय छे.

२. वर्त्तमान काळमां तेवा महत्पुरुषनो योग अति दुर्लभ छे, केमके उत्तम काळमां पण ते योगनुं दुर्लभपणुं होय छे; एम छतां पण साची मुमुक्षुता जेने उत्पन्न थई होय, रात्रि दिवस आत्मकल्याण थवानुं तथारूप चिंतन रह्या करतुं होय, तेवा पुरुषने तेवो योग प्राप्त थवो सुलभ छे.

३. 'आत्मानुशासन' हाल मनन करवायोग्य छे. शांतिः.

८२७. मुंबई. भाद्रपद शुद ५ रवि. १९५५.

(१)

ॐ. जे वचनोनी आकांक्षा छे ते घणुंकरीने थोडा वखतमां प्राप्त थशे.

इंद्रियनिग्रहना अभ्यासपूर्वक सत्श्रुत अने सत्समागम निरंतर उपासवायोग्य छे.

क्षीणमोहपर्यंत ज्ञानीनी आज्ञानुं अवलंबन परम हितकारी छे.

आज दिवस पर्यंत तमारा प्रत्ये तथा तमारा समीप वसतां बाईओ, भाईओ प्रत्ये योगना प्रमत्त स्वभाववडे किंचित् जे अन्यथा थयुं होय ते अर्थे नम्र भावथी क्षमानी याचना छे. शमम्.

(२)

जे वनवासी शास्त्र (**श्री पद्मनंदी पंचविंशति**) मोकल्युं छे ते प्रबळ निवृत्तिना योगमां संयत इंद्रियपणे मनन करवाथी अमृत छे.

८२८. मुंबई. आसो. १९५५.

(१)

ॐ. जे ज्ञानी पुरुषोने देहाभिमान टळ्युं छे तेने कंई करवुं रह्युं नथी एम छे, तोपण तेमने सर्वसंगपरित्यागादि सत्पुरुषार्थता परम पुरुषे उपकारभूत कही छे.

(२)

श्री ० ० ० ० ० प्रत्ये कागळ लखावतां जणावशो केः—"विहार करी अमदावाद स्थिति करवामां मनने भय, उद्वेग के क्षोभ नथी, पण हितबुद्धिथी विचारतां अमारी दृष्टिमां एम आवे छे के हाल ते क्षेत्रे स्थिति करवी यथार्थ नथी. जो आप जणावशो तो तेमां आत्महितने शुं बाध थाय छे ते विदित करशुं, अने ते अर्थे आप जणावशो ते क्षेत्रे समागममां आवशुं. अमदावादनो कागळ वांचीने आप वगेरेए कंईपण उद्वेग के क्षोभ कर्त्तव्य नथी, समभाव कर्त्तव्य छे. जणाववामां कंईपण अनम्रभाव थयो होय तो क्षमा करशो."

जो तरतमां तेमनो समागम थाय तेम होय तो एम जणावशो के "आपे विहार करवा विषे जणाव्युं ते विषे आपनो समागम थये जेम जणावशो तेम करशुं." अने समागम थये जणावशो के "आगळनां करतां संयममां मोळप करी होय एम आपने जणातुं होय तो ते जणावो, जेथी ते निवृत्त करवानुं बनी आवे; अने जो आपने तेम न जणातुं होय तो पछी कोई जीवो विषमभावने आधीन थई तेम कहे तो ते वात प्रत्ये न जतां आत्मभावपर जईने वर्त्तवुं योग्य छे. एम जाणीने हाल अमदावाद क्षेत्रे जवानी वृत्ति योग्य लागती नथी; केमके (१) राग दृष्टिवान जीवना कागळनी प्रेरणाथी, अने (२) मानना रक्षणने अर्थे ते क्षेत्रे जवा जेवुं थाय छे, जे वात आत्माने अहितनो हेतु छे. कदापि आप एम धारता हो के जे लोको असंभाव्य वात कहे छे ते लोकोना मनमां पोतानी भूल देखाशे अने धर्मनी हानि थती अटकशे, तो ते एक हेतु ठिक छे. पण तेवुं रक्षण करवा माटे उपर कह्या ते बे दोष न आवता होय तो कोई अपेक्षाए लोकोनी भूल मटवाने विहार कर्त्तव्य छे.

पण एक वार तो अविषमभावे ते वात सहन करी अनुक्रमे स्वाभाविक विहार थतां थतां तेवे क्षेत्रे जवुं थाय अने कोई लोकोने वहेम होय ते निवृत्त थाय एम कर्तव्य छे; पण राग दृष्टिवाननां वचनोनी प्रेरणाथी, तथा मानना रक्षणने अर्थे अथवा अविषमता नहीं रहेवाथी लोकनी भूल मटाडवानुं निमित्त गणवुं ते आत्महितकारी नथी, माटे हाल आ वात उपशांत करी ० ० ० ० ० आप दर्शावो के क्वचित् ० ० ० वगेरे मुनिओमाटे कोईए कांई कह्युं होय तो तेथी ते मुनिओ दोषपात्र थता नथी; तेमना समागममां आववाथी जे लोकोने तेवो संदेह हशे ते सहेजे निवृत्त थई जशे, अथवा कोई एक समजवाफेरथी संदेह थाय के बीजा कोई स्वपक्षना मानने अर्थे संदेह प्रेरे, तो ते विषम मार्ग छे, तेथी विचारवान मुनिओए त्यां समदर्शी थवुं योग्य छे, तमारे चित्तमां कंई क्षोभ नहीं पामवो योग्य छे,—एम जणावो. आप

आम करशो तो अमारा आत्मानुं, तमारा आत्मानुं अने धर्मनुं रक्षण थशे. ए प्रकारे तेमनी वृत्तिमां बेसे तेवा योगमां वातचित करी समाधान करशो, अने हाल अमदावाद क्षेत्रे स्थिति करवानुं न बने तेम करशो तो आगळ विशेष उपकारनो हेतु छे."

तेम करतां पण जो कोईपण प्रकारे ००००० न माने तो अमदावाद क्षेत्र प्रत्ये पण विहार करजो, अने **संयमना उपयोगमां सावचेत रही वर्त्तशो. तमे अविषम रहेशो.**

८२९. *मोहमयि क्षेत्र. का. सु. ५ ज्ञानपंचमी. १९५५.*

ॐ

(१) परम शांत श्रुतनुं मनन नित्य नियमपूर्वक कर्त्तव्य छे. शांतिः.

(२) परम वीतरागोए आत्मस्थ करेलुं यथाख्यातचारित्रथी प्रगटेलुं एवुं असंगपणुं निरंतर व्यक्ताव्यक्तपणे संभारूं छुं.

(३) आ दुषम काळमां सत्समागमनो योग पण अति दुर्लभ छे, त्यां परम सत्संग अने परम असंगपणानो योग क्यांथी बने?

(४) परम शांत श्रुतना विचारमां इंद्रियनिग्रहपूर्वक आत्मप्रवृत्ति राखवामां स्वरूपस्थिरता अपूर्वपणे प्रगटे छे.

(५) सत्समागमनो प्रतिबंध करवा जणावे तो ते प्रतिबंध न करवानी वृत्ति जणावी तो ते योग्य छे. ते प्रमाणे वर्त्तशो. सत्समागमनो प्रतिबंध करवो योग्य नथी, तेम सामान्यपणे तेमनी साथे समाधान रहे एम वर्त्तन थाय तेम हितकारी छे, पछी जेम विशेष ते संगमां आववानुं न थाय एवां क्षेत्रे विचरवुं योग्य छे, के जे क्षेत्रे आत्मसाधन सुलभपणे थाय. ००० आर्या आदिए यथाशक्ति उपर दर्शित कर्युं ते प्रयत्न योग्य छे. शांतिः.

८३०.

ॐ. आ प्रवृत्ति व्यवहार एवो छे के जेमां वृत्तिनुं यथाशांतपणुं राखवुं ए असंभवित जेवुं छे. कोई विरला ज्ञानी एमां शांत स्वरूपनैष्ठिक रही शकता होय एटलुं बहु दुर्घटताथी बने एवुं छे.

तेमां अल्प अथवा सामान्य मुमुक्षुवृत्तिना जीवो शांत रही शके, स्वरूपनैष्ठिक रही शके एम यथारूप नहीं पण अमुक अंशे थवाने अर्थे जे कल्याणरूप अवलंबननी आवश्यकता छे, ते समजावां, प्रतीत थवां अने अमुक स्वभावथी आत्मामां स्थित थवां कठण छे.

जो तेवो कोई योग बने तो अने जीव शुद्ध नैष्ठिक थाय तो शांतिनो मार्ग प्राप्त थाय एम निश्चय छे. प्रमत्त स्वभावनो जय करवाने अर्थे प्रयत्न करवुं योग्य छे.

आ संसाररणभूमिकामां दुषम काळरूप ग्रीष्मना उदयनो योग न वेदे एवी स्थितिनो विरल जीवो अभ्यास करे छे.

८३१.

ॐ. अविरोध अने एकता रहे तेम कर्त्तव्य छे; अने ए सर्वना उपकारनो मार्ग संभवे छे.

भिन्नता मानी लई प्रवृत्ति करवाथी जीव उलटो चाले छे. अभिन्नता छे, एकता छे एमां सहज समजवाफेरथी भिन्नता मानो छो एम ते जीवोने शीखामण प्राप्त थाय तो सन्मुखवृत्ति थवा योग्य छे.

ज्यांसुधी अन्योन्य एकता व्यवहार रहे त्यांसुधी सर्वथा कर्त्तव्य छे. ॐ.

८३२. मोहमयि क्षेत्र. का. सुद १४ गुरु. १९५५.

हाल हुं अमुक मासपर्यंत अत्रे रहेवानो विचार राखुं छुं. माराथी बनतुं ध्यान आपीश, आपैंना मनमां निश्चिंत रहेशो.

मात्र अन्नवस्त्र होय तोपण घणुं छे. पण व्यवहारप्रतिबद्ध माणसने केटलाक संयोगोने लीधे थोडुं घणुं जोईए छैए, माटे आ प्रयत्न करवुं पड्युं छे. तो धर्मकीर्त्तिपूर्वक ते संयोग ज्यांसुधी उदयमान होय त्यांसुधी बनी आवे एटले घणुं छे.

मानसिक वृत्ति करतां घणाज प्रतिकूळ मार्गमां हाल पवास करवो पडे छे. तप्तहृदयथी अने शांत आत्माथी सहन करवामां ज हर्ष मानुं छुं. ॐ शांतिः.

(२)* ईडर. पोष. १९५५.

मा मुज्झह मा रज्जह मा दूसह इट्ठनिट्ठअट्ठेसु,
थिरमिच्छहि जइ चित्तं विचित्तज्झाणप्पसिद्धीए.
पणतीससोलछप्पणचउदुगमेगं च जवह ज्झाएह,
परमेट्ठिवाचयाणं अण्णं च गुरूवएसेण.

जो तमे स्थिरता इच्छता हो तो प्रिय अथवा अप्रिय वस्तुमां मोह न करो, राग न करो, द्वेष न करो. अनेक प्रकारना ध्याननी प्राप्तिने अर्थे पांत्रिश, सोळ, छ, पांच, चार, बे अने एक एम परमेष्टिपदना वाचक छे तेनुं जपपूर्वक ध्यान करो. विशेष स्वरूप श्री गुरुना उपदेशथी जाणवुं योग्य छे.

जं किंचिवि चिंतंतो णिरीहवित्ती हवे जदा साहू,
लद्धूणय एयत्तं तदाहु तं तस्स णिच्छयं ज्झाणं.

ध्यानमां एकाग्रवृत्ति राखिने साधु निष्पृह वृत्तिवान् अर्थात् सर्व प्रकारनी इच्छाथी रहित थाय तेने परम पुरुषो निश्चय ध्यान कहे छे.

---

* आ आजे (पर्युषण-संवत्सरी सं. १९८१) मळ्यां अत्रे मुक्युं छे. म. कि. ता. २३-८-२५.

वर्ष ३३ मुं.

८३३. मुंबई. का. पुनेम १९५१.

(१)

ॐ

१. गुरु गणधर गुणधर अधिक, प्रचुर परंपर और,
व्रततपधर, तनु नगन धर, वंदौ वृष सिरमोर.

२. जगत् विषयना विक्षेपमां स्वरूपविश्रांतिवडे विश्रांति पामतुं नथी.

३. अनंत अव्याबाध सुखनो एक अनन्य उपाय स्वरूपस्थ थवुं ते ज छे. एज हितकारी उपाय ज्ञानीए दीठो छे. भगवान जिने द्वादशांगी एज अर्थे निरूपण करी छे, अने एज उत्कृष्टतायी ते शोभे छे, जयवंत छे.

४. ज्ञानीनां वाक्यना श्रवणथी उल्लासित थतो एवो जीव, चेतन जडने भिन्नस्वरूप यथार्थ पणे प्रतीत करे छे, अनुभवे छे, अनुक्रमे स्वरूपस्थ थाय छे. यथास्थित अनुभव थवाथी स्वरूपस्थ थवायोग्य छे.

५. दर्शनमोह व्यतीत थवाथी ज्ञानीना मार्गमां परम भक्ति समुत्पन्न थाय छे, तत्त्वप्रतीति सम्यक्पणे उत्पन्न थाय छे.

६. तत्त्वप्रतीतिवडे शुद्ध चैतन्यप्रत्ये वृत्तिनो प्रवाह वळे छे.

७. शुद्ध चैतन्यना अनुभवअर्थे चारित्रमोह व्यतीत करवा योग्य छे.

८. चारित्रमोह चैतन्यना-ज्ञानी पुरुषना सन्मार्गना नैष्ठिकपणाथी प्रलय थाय छे.

९. असंगताथी परमावगाढ अनुभव थवायोग्य छे.

१०. हे आर्य मुनिवरो! एज असंग शुद्ध चैतन्यार्थे असंगयोगने अहोनिश इच्छीए छैये. हे मुनिवरो! असंगनो अभ्यास करो.

११. जे महात्माओ असंग चैतन्यमां लीन थया, थाय छे अने थशे तेने नमस्कार. ॐ शांतिः.

(२)

हे मुनिओ! ज्यांसुधी केवल समवस्थानरूप सहज स्थिति स्वभाविक न थाय त्यांसुधी तमे ध्यान अने स्वाध्यायमां लीन रहो.

जीव केवल स्वभाविक स्थितिमां स्थित थाय त्यां कंई करवुं रह्युं नथी.

ज्यां जीवनां परिणाम वर्धमान, हीयमान थया करे छे त्यां ध्यान कर्त्तव्य छे. अर्थात् ध्यान लीनपणे सर्व बाह्यद्रव्यना परिचयथी विराम पामी निजस्वरूपना लक्षमां रहेवुं उचित छे.

उदयना धकाथी ते ध्यान ज्यारे ज्यारे छूटी जाय त्यारे त्यारे तेनुं अनुसंधान घणी त्वराथी करवुं.

वचेना अवकाशमां स्वाध्यायमां लीनता करवी. सर्व परद्रव्यमां एक समय पण उपयोग संग न पामे एवी दशाने जीव भजे त्यारे केवळज्ञान उत्पन्न थाय.

(३)

परम गुणमय चरित्र जोईए. बळवान् असंगादि स्वभाव.

परम निर्दोष श्रुत.

परम प्रतीति.

परम पराक्रम.

परम इंद्रियजय.

१. मूळनुं विशेषपणुं.
२. मार्गनी शरूआतथी अंतपर्यंतनी अद्भुत संकळना.
३. निर्विवाद—
४. मुनिधर्मप्रकाश.
५. गृहस्थधर्मप्रकाश.
६. निर्ग्रंथपरिभाषा निधि.
७. श्रुतसमुद्रप्रवेश मार्ग.

८३४.

(१)

वीतराग दर्शन संक्षेप.

मंगलाचरणः—शुद्धपदने नमस्कार.

भूमिकाः—मोक्ष प्रयोजन.

. . . .

ते दुःख* मटवा माटे जूदा जूदा मतो पृथक्करण करी जोतां तेमां वीतरागदर्शन पूर्ण अने अविरुद्ध छे एवुं सामान्य कथन; ते दर्शननुं स्वरूप.

तेनी जीवने अप्राप्ति, अने प्राप्तिए अनास्था थवानां कारण.

मोक्षाभिलाषी जीवे ते दर्शननी केम उपासना करवी.

आस्था—ते आस्थाना प्रकार अने हेतु.

विचार—ते विचारना प्रकार अने हेतु.

विशुद्धि—ते विशुद्धिना प्रकार अने हेतु.

मध्यस्थ रहेवानां स्थानक—तेनां कारणो.

धीरजनां स्थानक—तेनां कारणो.

* अं. ६९४ (१). (२). बि० म. कि.

शंकानां स्थानक–तेनां कारणो.
पतित थवानां स्थानक–तेनां कारणो.

उपसंहार.

आस्था.
पदार्थनुं अचिंत्यपणुं, बुद्धिमां व्यामोह, काळदोष.

(२)

स्वरूपबोध.
योगनिरोध.
सर्वधर्मस्वाधीनता.
धर्ममूर्त्तिता.
सर्व प्रदेश संपूर्ण गुणात्मकता.
सर्वांग संयम.
लोक प्रत्ये निष्कारण अनुग्रह.

८३५. मुंबई. का. वद ९. १९५६.

(१) 'अवगाहना' एटले अवगाहना. अवगाहना एटले कद, आकार एम नहीं. केटलाक तत्त्वना पारिभाषिक शब्दो एवा होय छे के जेनो अर्थ बीजा शब्दोथी व्यक्त न करी शकाय; जेने अनुरूप बीजा शब्द न मळे; जे समज्या जाय पण व्यक्त न करी शकाय.

अवगाहना एवो शब्द छे. घणा बोधे विशेष विचारे ए समजी शकाय.

अवगाहना क्षेत्र आश्रयी छे. जुदुं छतां एकमेक थई भळी जवुं, छतां जुदुं रहेवुं आम सिद्ध आत्मानुं जेटला क्षेत्रव्यापकपणुं ते तेनी अवगाहना कही छे.

(२) जे बहु भोगवाय छे ते बहु क्षीण थाय छे. समताए कर्म भोगवतां ते निर्जरे छे; क्षीण थाय छे. शारीरिक विषय भोगवतां शारीरिक शक्ति क्षीण थाय छे.

(३) ज्ञानीनो मार्ग सुलभ छतां ते पामवो विकट छे. प्रथम साचा ज्ञानी जोईए. ते ओळखावा जोईए. तेनी प्रतीति आववी जोईए. पछी तेनां वचनपर श्रद्धा राखी निःशंकपणे चालतां मार्ग सुलभ छे, पण ज्ञानी मळवा अने ओळखावा ए विकट छे, दुर्लभ छे.

८३६. मुंबई. कार्तिक वद ११ मंगळ. १९५६.

(१)

जड ने चैतन्य बंने द्रव्यनो स्वभाव भिन्न,
सुप्रतीतपणे बंने जेने समजाय छे;
स्वरूप चेतन निज, जड छे संबंधमात्र,
अथवा ते ज्ञेय पण परद्रव्यमांय छे;

एवो अनुभवनो प्रकाश उल्लासित थयो,
जडथी उदासी तेने आत्मवृत्ति थाय छे;
कायानी विसारी माया, स्वरूपे शमाया एवा,
निर्ग्रंथनो पंथ भवअंतनो उपाय छे.

(२)

देह जीव एक रूपे भासे छे अज्ञान वडे,
क्रियानी प्रवृत्ति पण तेथी तेम थाय छे;
जीवनी उत्पत्ति अने रोग, शोक, दुःख मृत्यु,
देहनो स्वभाव जीव पदमां जणाय छे;
एवो जे अनादि एकरूपनो मिथ्यात्वभाव,
ज्ञानिनां वचन वडे दूर थई जाय छे;
भासे जड चैतन्यनो प्रगट स्वभाव भिन्न,
बंने द्रव्य निज निज रूपे स्थित थाय छे.

(३)

जन्म, जरा ने मृत्यु मुख्य दुःखना हेतु,
कारण तेनां बे कह्यां, राग-द्वेष अणहेतु.

(४)

वचनामृत वीतरागनां, परम शांतरस मूळ,
औषध जे भवरोगनां, कायरने प्रतिकूळ.

(५)

प्राणीमात्रनो रक्षक, बंधव अने हितकारी एवो कोई उपाय होय तो ते वीतरागनो धर्म ज छे.

(६)

संतजनो ! जिनवरेंद्रोए लोकादि जे स्वरूप निरूपण कर्यां छे, ते अलंकारिक भाषामां योगाभ्यास अने लोकादि स्वरूपनुं निरूपण छे, जे पूर्ण योगाभ्यास विना ज्ञानगोचर थवा योग्य नथी. माटे **तमे तमारां अपूर्ण ज्ञानने आधारे वीतरागनां वाक्योनो विरोध करता नहीं; पण योगनो अभ्यास करी पूर्णताए ते स्वरूपना ज्ञाता थवानुं राखजो.**

८३७. मुंबई. का. वद १२. १९५१.

(१) '**इनॉक्युलेशन**'—मरकीनी रसी. रसीना नामे दाकतरोए जो आ धतींग उभुं कर्युं छे. बिचारां अश्व आदिने रसीना व्हाने रिबावी मारी नांखे छे, हिंसा करी पापने पोषे छे, पाप उपार्जे छे. पूर्वे पापानुबंधी पुण्य उपार्ज्युं छे, ते योगे वर्त्तमानमां ते पुण्य भोगवे छे, पण परिणामे पाप व्होरे छे ते बिचारा दाकतरोने खबर नथी. रसीथी दरद दूर थाय त्यारनी वात त्यारे; पण अत्यारे हिंसा तो प्रगट छे. रसीथी एक काढतां बीजुं दरद पण उभुं थाय.

(२) प्रारब्ध अने पुरुषार्थ ए शब्द समजवा जेवा छे. पुरुषार्थ कर्या विना प्रारब्धनी खबर न पडी शके. प्रारब्धमां हशे ते थशे एम कही बेसी रह्ये काम न आवे. निष्काम पुरुषार्थ करवो. प्रारब्धने समपरिणामे वेदवुं, भोगवी लेवुं ए मोटो पुरुषार्थ छे. सामान्य जीव समपरिणामे विकल्परहितपणे प्रारब्ध वेदी न शके, विषम परिणाम थाय ज. माटे ते न थवा देवा, ओछा थवा उद्यम सेववो. समपणुं अने विकल्परहितपणुं सत्संगथी आवे अने वधे.

८३८. मोहमयि क्षेत्र. पोष वद १२ रवि. १९५६.

महात्मा मुनिवरोना चरणनी, संगनी उपासना अने सत्शास्त्रनुं अध्ययन मुमुक्षुओने आत्मबळनी वर्धमानताना सदुपाय छे.

जेम जेम इंद्रियनिग्रह, जेम जेम निवृत्तियोग तेम तेम ते सत्समागम अने सत्शास्त्र अधिक अधिक उपकारि थाय छे. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

८३९. धर्मपुर. चैत्र वद १ रवि. १९५६.

ॐ

(१) धन्य ते मुनिवरा जे चाले समभावे रे,
ज्ञानवंत ज्ञानिशुं मळतां तनमनवचने साचा,
द्रव्यभाव सुधा जे भाखे, साची जिननी वाचा रे,
धन्य ते मुनिवरा जे चाले समभावे.

(२) बाह्य अने अंतर् समाधियोग वर्त्ते छे. परम शांतिः. (३) भावना सिद्धि.

८४०. श्रीधर्मपुर. चैत्र वद ४ बुध. १९५६.

(१)

ॐ. समस्त संसारी जीवो कर्मवशात् शाता अशातानो उदय अनुभव्या ज करे छे जेमां पण मुख्यपणे तो अशातानो ज उदय अनुभवाय छे. कचित् अथवा कोईक देहसंयोगमां शातानो उदय अधिक अनुभवातो जणाय छे, पण वस्तुताए त्यां पण अंतरदाह बळ्या ज करतो होय छे. पूर्ण ज्ञानी पण जे अशातानुं वर्णन करीशकवायोग्य वचनयोग धरावता नथी, तेवी अनंत अनंत अशाता आ जीवे भोगवी छे अने जो हजु तेनां कारणोनो नाश करवामां न आवे तो भोगववी पडे ए सुनिश्चित छे एम जाणी विचारवान उत्तम पुरुषो ते अंतरदाहरूप शाता अने बाह्याभ्यंतर संक्लेशअग्निरूपे प्रज्वलित एवी अशातानो आत्यंतिक वियोग करवानो मार्ग गवेषवा तत्पर थया अने ते सन्मार्ग गवेषी, प्रतीत करी, तेने यथायोग्यपणे आराधी, अव्याबाध सुखस्वरूप एवा आत्माना सहज शुद्ध स्वभावरूप परमपदमां लीन थया.

शाता अशातानो उदय के अनुभव प्राप्त थवानां मूळ कारणोने गवेषता एवा ते महत् पुरुषोने एवी विलक्षण सानंदाश्चर्यक वृत्ति उद्भवती के शाता करतां अशातानो उदय संप्राप्त थये

अने तेमां पण तीव्रपणे ते उदय संप्राप्त थये तेमनुं वीर्य विशेषपणे जाग्रत थतुं, उल्लास पामतुं अने ते समय कल्याणकारी अधिकपणे समजातो. केटलाक कारणविशेषने योगे व्यवहार-दृष्टिथी ग्रहणकरवायोग्य औषधादि आत्ममर्यादामां रही ग्रहण करता, परंतु मुख्यपणे ते परम उपशमने ज सर्वोत्कृष्ट औषधरूपे उपासता.

(१) उपयोग लक्षणे सनातनस्फुरित एवा आत्माने देहथी (तैजस् अने कार्मण शरीरथी) पण भिन्न अवलोकवानी दृष्टि साध्य करी,

(२) ते चैतन्यात्मकस्वभाव आत्मा निरंतर वेदक स्वभाववाळो होवाथी अबंधदशाने संप्राप्त न थाय त्यांसुधी शाता–अशातारूप अनुभव वेद्याविना रहेवानो नथी एम निश्चय करी.

(३) जे शुभाशुभ परिणामधारानी परिणतिवडे ते शाता अशातानो संबंध करे छे ते धारा प्रत्ये उदासीन थई,

(४) देहादिथी भिन्न अने स्वरूपमर्यादामां रहेला ते आत्मामां जे चल स्वभावरूप परिणामधारा छे तेनो आत्यंतिक वियोग करवानो सन्मार्ग ग्रहण करी,

(५) परम शुद्धचैतन्यस्वभावरूप प्रकाशमय ते आत्मा कर्मयोगथी सकलंक परिणाम दर्शावे छे तेथी उपशम थई,

जेम उपशमित थवाय, ते उपयोगमां अने ते स्वरूपमां स्थिर थवाय, अचल थवाय, ते ज लक्ष, ते ज भावना, ते ज चिंतवना अने ते ज सहज परिणामरूप स्वभाव करवायोग्य छे. महात्माओनी वारंवार ए ज शिक्षा छे.

ते सन्मार्गने गवेषता, प्रतीत करवा इच्छता, तेने संप्राप्त करवा इच्छता एवा आत्मार्थी जनने परमवीतरागस्वरूप देव, स्वरूपनैष्ठिक निस्पृह निर्ग्रंथरूप गुरु, परमदयामूळ धर्मव्यवहार अने परमशांतरस रहस्यवाक्यमय सत्शास्त्र, सन्मार्गनी संपूर्णता थतां सुधी, परमभक्तिवडे उपासवायोग्य छे; जे आत्माना कल्याणनां परमकारण छे.

भीसण नरय गईए, तिरिय गईए कुदेव मणुय गईए;
पत्तो सि तीव दुःखं, भावहि जिण भावणा जीव.

भयंकर नरकगतिमां, तिर्यंचगतिमां अने माठी देव तथा मनुष्यगतिमां हे जीव ! तुं तीव्र दुःखने पाम्यो, माटे हवे तो जिनभावना (जिन भगवान जे परमशांत रसे परिणमी स्वरूपस्थ थया ते परमशांतस्वरूप चिंतवना) भाव, चिंतव. (के जेथी तेवां अनंत दुःखोनो आत्यंतिक वियोग थई परम अव्याबाध सुखसंपत्ति संप्राप्त थाय.) ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

(२)

अनवृत्ति ज्यां असंकोचित भावे संभवती होय अने निवृत्तिने योग्य विशेष कारणो ज्यां होय तेवा क्षेत्रे महत् पुरुषोए विहार चातुर्मासरूप स्थिति कर्तव्य छे. शांतिः.

(२)

ॐ नमः.

१. उपशमश्रेणिमां मुख्यपणे उपशम सम्यक्त्व संभवे छे.

२. चार घनघाती कर्मनो क्षय थतां अंतराय कर्मनी प्रकृतिनो पण क्षय थाय छे. अने तेथी दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय, भोगांतराय अने उपभोगांतराय ए पांच प्रकारनो अंतराय क्षय थई अनंत दानलब्धि अनंत लाभलब्धि अनंत वीर्यलब्धि अने अनंत भोगउपभोगलब्धि संप्राप्त थाय छे. जेथी ते अंतराय कर्म क्षय थयुं छे एवा परम पुरुष अनंत दानादि आपवाने संपूर्ण समर्थ छे.

तथापि पुद्गल द्रव्यरूपे ए दानादि लब्धिनी परम पुरुष प्रवृत्ति करता नथी. मुख्य-पणे तो ते लब्धिनी संप्राप्ति पण आत्मानी स्वरूपभूत छे, केमके क्षायकभावे ते संप्राप्ति छे, उदयिकभावे नथी, तेथी आत्मस्वभाव स्वरूपभूत छे; अने जे अनंत सामर्थ्य आत्मामां अनादिथी शक्तिरूपे हतुं ते व्यक्त थई आत्मा निज स्वरूपमां ते आपी शके छे, तद्रूप शुद्ध स्वच्छ भावे एक स्वभावे परिणमावी शके छे, ते अनंत दान लब्धि कहेवा योग्य छे. तेमज अनंत आत्म सामर्थ्यनी संप्राप्तिमां किंचित् मात्र वियोगनुं कारण रह्युं नथी तेथी अनंत लाभ लब्धि कहेवा योग्य छे. वळी अनंत आत्मसामर्थ्यनी संप्राप्ति संपूर्णपणे परमानंदस्वरूपे अनुभवाय छे, तेमां पण किंचित् मात्र पण तेमां वियोगनुं कारण रह्युं नथी, तेथी अनंत भोग उपभोग लब्धि कहेवा योग्य छे. तेमज अनंत आत्म सामर्थ्यनी संप्राप्ति संपूर्ण पणे थयां छतां ते सामर्थ्यना अनुभवथी आत्मशक्ति थाके के तेनुं सामर्थ्य झीली न शके, वहन न करी शके अथवा ते सामर्थ्यने कोईपण प्रकारना देशकाळनी असर थई किंचित् मात्र पण न्यूनाधिकपणुं करावे एवुं कशुं रह्युं ज नहीं, ते स्वभावमां रहेवानुं संपूर्ण सामर्थ्य त्रिकाळ संपूर्ण बळसहित रहेवानुं छे, ते अनंत वीर्य लब्धि कहेवा योग्य छे.

क्षायकभावनी दृष्टिथी जोतां उपर कह्या प्रमाणे ते लब्धिनो परम पुरुषने उपयोग छे. वळी ए पांच लब्धि हेतुविशेषथी समजावा अर्थे जुदी पाडी छे, नहीं तो अनंतवीर्य लब्धिमां पण ते पांचेनो समावेश थई शके छे. आत्मा संपूर्ण वीर्यने संप्राप्त थवाथी ए पांचे लब्धिनो उपयोग पुद्गल द्रव्यरूपे करे तो तेवुं सामर्थ्य तेमां वर्त्ते छे, तथापि कृतकृत्य एवा परम पुरुषमां संपूर्ण वीतराग स्वभाव होवाथी ते उपयोगनो तेथी संभव नथी. अने उपदेशादिना दानरूपे जे ते कृतकृत्य परम पुरुषनी प्रवृत्ति छे ते योगाश्रित पूर्वबंधना उदयमानपणाथी छे, आत्माना स्वभावना किंचित् पण विकृतभावथी नथी.

ए प्रमाणे संक्षेपमां उत्तर जाणशो. निवृत्तिवाळो अवसर संप्राप्त करी अधिक अधिक मनन करवाथी विशेष समाधान अने निर्जरा संप्राप्त थशे. सउल्लास चित्तथी ज्ञानीनी अनुप्रेक्षा करतां अनंत कर्मनो क्षय थाय छे. ॐ शांति शांतिः शांतिः.

८४१. अमदावाद. भीमनाथ. वै. सुद ६. १९५६.

(१) आजे दशा आदि संबंधी जे जणाव्युं छे अने बीज वाव्युं छे तेने खोतरशो नहि. ते सफळ थशे.

(२) एक श्लोक वांचतां अमने हजारो शास्त्रनुं भान थई तेमां उपयोग फरी वळे छे.

(३) "चतुरंगुल है दृगसें मिल है"*–ए आगळ पर समजाशे.

८४२. मोरबी. वै. सुद. ८. १९५६.

ॐ. भगवद्गीतामां पूर्वापर विरोध छे, ते अवलोकवा ते आपेल छे. पूर्वापर शुं विरोध छे ते अवलोकनथी जणाई आवशे. पूर्वापरअविरोध एवुं दर्शन, एवां वचन ते वीतरागनां छे.

भगवद्गीता पर घणां भाष्य–टीका रचायां छे, विद्यारण्य स्वामीनी, ज्ञानेश्वरी आदि. दरेक पोतपोतानी मानीनता उपर उतारी गया छे. 'थिऑसॉफी' वाळी तमने आपेली घणे भागे स्पष्ट छे.

मणिलाल नभुभाईए (गीतापर) विवेचनरूप टीका करतां मिश्रता बहु आणी दीधी छे, सेळभेळ खीचडो कर्यो छे. विद्वता अने ज्ञान ए एक समजवानुं नथी, एक नथी; विद्वता होय छतां ज्ञान न होय. साची विद्वता ते के जे आत्मार्थे होय, जेथी आत्मार्थ सरे, आत्मतत्त्व समजाय, पमाय. आत्मार्थ होय त्यां ज्ञान होय, विद्वता होय वा न पण होय.

मणिभाई कहे छे (षड्दर्शन समुच्चयनी प्रस्तावनामां) के हरिभद्रसूरिने वेदांतनी खबर न हती, वेदांतनी खबर हत तो एवी कुशाग्र बुद्धिना हरिभद्रसूरि जैन तरफथी पोतानुं वलण फेरवी वेदांतमां भळत. गाढ मताभिनिवेशथी मणिभाईनुं आ वचन निकळ्युं छे. हरिभद्रसूरिने वेदांतनी खबर हती के नहीं ए मणीभाईये हरिभद्रसूरिनो 'धर्मसंग्रहणी' जोयो हत तो खबर पडत. हरिभद्रसूरिने वेदांतादि बधां दर्शनोनी खबर हती. ते बधां दर्शनोनी पर्यालोचनापूर्वक तेमणे जैनदर्शनने पूर्वापरअविरोध प्रतीत कर्युं हतुं. अवलोकनथी जणाशे. षड्दर्शनसमुच्चयना भाषांतरमां दोष छतां मणिभाईए भाषांतर ठिक कर्युं छे. ए सुधारी शकाशे.

८४३. श्रीमोरबी. वै. शुद ९. १९५६.

ॐ. वर्त्तमान काळमां क्षयरोग विशेष वृद्धि पाम्यो छे अने पामतो जाय छे. एनुं मुख्यनुं कारण ब्रह्मचर्यनी खामी, आळस अने विषयादिनी आसक्ति छे. क्षयरोगनो मुख्य उपाय ब्रह्मचर्य सेवन, शुद्ध सात्त्विक आहार–पान अने नियमित वर्त्तन छे.

८४४. ववा० वै० १९५६.

१. ॐ. यथार्थ ज्ञानदशा, सम्यक्त्वदशा, उपशमदशा ते तो जे यथार्थ मुमुक्षु जीव सत्पुरुषना समागममां आवे ते जाणे.

* जुओ आंक २२५. ७ मुं. पद. म. कि.

जेमना उपदेशे तेवी दशाना अंशो प्रगटे तेमनी पोतानी दशामां ते गुण केवा उत्कृष्ट रह्या होवा जोईए ते विचारवुं सुगम छे.

अने एकांत नयात्मक जेमनो उपदेश होय तेथी तेवी एक पण दशा प्राप्त थवी संभवती नथी. सत्पुरुषनी वाणी सर्व नयात्मक वर्त्ते छे.

२. बीजां प्रश्नोना उत्तरः—

(१) प्र०—जिनआज्ञाआराधक स्वाध्याय ध्यानथी मोक्ष छे के शी रीते?

उ०—तथारूप प्रत्यक्ष सद्गुरुने योगे अथवा कोई पूर्वना दृढ आराधनथी जिनाज्ञा यथार्थ समजाय, यथार्थ प्रतीत थाय अने यथार्थ आराधाय तो मोक्ष थाय एमां संदेह नथी.

(२) प्र०—ज्ञानप्रज्ञाए सर्व वस्तु जाणेली प्रत्याख्यानप्रज्ञाए पच्चखे ते पंडित कह्या छे.

उ०—ते यथार्थ छे.* जे ज्ञाने करीने परभाव प्रत्येनो मोह उपशम अथवा क्षय न थयो ते ज्ञान अज्ञान कहेवा योग्य छे, अर्थात् ज्ञाननुं लक्षण परभाव प्रत्ये उदासीन थवुं ते छे.

(३) प्र०—एकांत ज्ञान माने तेने मिथ्यात्वी कह्या छे.

उ०—ते यथार्थ छे.

(४) प्र०—एकांत क्रिया माने तेने मिथ्यात्वी कह्या छे.

उ०—ते यथार्थ छे.

(५) प्र०—चार कारण मोक्ष जवाने कह्यां छे. ते चारमांथी एके कारण तोडीने मोक्षे जाय के चार संयुक्तथी?

उ०—ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार कारण मोक्षनां कह्यां छे ते एक बीजां अविरोधपणे प्राप्त थये मोक्ष थाय.

(६) प्र०—समकित अध्यात्मनी शैली शी रीते छे?

उ०—यथार्थ समजाये परभावथी आत्यंतिक निवृत्ति करवी ते अध्यात्म मार्ग छे. जेटली जेटली निवृत्ति थाय तेटला तेटला सम्यक् अंश छे.

(७) प्र०—'पुद्गलसें रातो रहे' छे,—इत्यादि.

उ०—पुद्गलमां रक्तमानपणुं ते मिथ्यात्वभाव छे.

(८) प्र०—'अंतरात्मा परमात्माने ध्यावे'—इ०.

उ०—अंतरात्मपणे परमात्मस्वरूप ध्यावे तो परमात्मा थाय.

(९) प्र०—अने हाल ध्यान शुं वर्त्ते छे? इ०.

उ०—सद्गुरुनां वचनने वारंवार विचारी अनुप्रेक्षीने परभावथी आत्माने असंग करवो ते.

(१०) प्र०—समकित नाम धरावी विषयादिनी आकांक्षा ने पुद्गलभावने सेववामां कंई बाध नथी अने अमने बंध नथी एम कहे छे ते यथार्थ कहे छे के केम?

*जुओ आंक ६८८ पारा (२). प्र. कि.

उ०–ज्ञानिना मार्गनी दृष्टिए जोतां ते मात्र मिथ्यात्व ज कथे छे. पुद्गलभावे भोगवे अने आत्माने कर्म लागतां नथी एम कहे ते ज्ञानिनी दृष्टिनुं वचन नथी, वाचाज्ञानीनुं वचन छे.

(११) प्र०–जैन पुद्गलभाव ओछो थये आत्मध्यान परिणमशे एम कहे छे ते केम?

उ०–ते यथार्थ कहे छे.

(१२) प्र०–स्वभावदशा शो गुण आपे?

उ०–तथारूप संपूर्ण होय तो मोक्ष थाय.

(१३) प्र०–विभावदशा शुं फळ आपे?

उ०–जन्म, जरा, मरणादि संसार.

(१४) प्र०–वीतरागनी आज्ञाथी पोरसीनी स्वाध्याय करे तो शुं फळ थाय?

उ०–तथारूप होय तो यावत् मोक्ष थाय.

(१५) प्र०–वीतरागनी आज्ञाथी पोरसीनुं ध्यान करे तो शुं फळ थाय?

उ०–तथारूप होय तो यावत् मोक्ष थाय.

आ प्रमाणे तमारां प्रश्नोना संक्षेपमां उत्तर लखुं छउं.

३. लौकिकभाव छोडी दई, वाचाज्ञान तजी दई, कल्पित विधिनिषेध तजी दई जे जीव प्रत्यक्ष ज्ञानिनी आज्ञाने आराधी, तथारूप उपदेश पामी, तथारूप आत्मार्थे प्रवर्ते तेनुं अवश्य कल्याण थाय.

निजकल्पनाए ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिनुं स्वरूप गमे तेम समजी लईने अथवा निश्चयनयात्मक बोलो शिखी लईने सद्व्यवहार लोपवामां जे प्रवर्ते तेथी आत्मानुं कल्याण थवुं संभवतुं नथी. अथवा कल्पित व्यवहारना दुराग्रहमां रोकाई रहीने प्रवर्त्ततां पण जीवने कल्याण थवुं संभवतुं नथी.

ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह,
त्यां त्यां ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह.

एकांत क्रियाजडत्वमां अथवा एकांत शुष्कज्ञानथी जीवनुं कल्याण न थाय.

८४५. ववाणीआ. वैशाख वद ८ मंगळ. १९५६.

ॐ. प्रमत्त प्रमत्त एवा वर्त्तमान जीवो छे, अने परम पुरुषोए अप्रमत्तमां सहज आत्मशुद्धि कही छे, माटे ते विरोध शांत थवा परम पुरुषना समागम चरणनो योग ज परम हितकारी छे. ॐ शांतिः

८४६. ववाणीआ. वैशाख वदी ९ बुध. १९५६.

ॐ. मोक्षमाळामां शब्दांतर अथवा प्रसंगविशेषमां कोई वाक्यांतर करवानी वृत्ति थाय ते करशो. उपोद्घात आदि लखवानी वृत्ति होय ते लखशो. जीवन चरित्रनी वृत्ति उपशांत करशो.

उपोद्घातथी वाचकने, श्रोताने अल्पअल्प मतांतरनी वृत्ति विस्मरण थई ज्ञानी पुरुषोना आत्मस्वभावरूप परम धर्मनो विचार करवानी स्फुरणा थाय एवो लक्ष सामान्यपणे राखशो. सहज सूचना छे. शांतिः.

८४७. ववाणीआ. वैशाख वद १३ शनि. १९५६.

ॐ. ज्यां घणां विरोधी गृहवासी जन अथवा ज्यां आहारादिनो जनसमूहनो संकोचभाव रहेतो होय त्यां चातुर्मास योग्य नथी. बाकी सर्व क्षेत्र श्रेयकारी ज छे.

आत्मार्थीने विक्षेपनो हेतु शुं होय? तेने बधुं समान ज छे, आत्मताए विचरता एवा आर्य पुरुषोने धन्य छे. ॐ शांतिः.

८४८. ववाणीआ. वैशाख वद ,, सोम. १९५६.

(१)

ॐ. आर्य मुनिवरोने अर्थे अविक्षेपपणुं संभवित छे. विनयभक्ति ए मुमुक्षुओनो धर्म छे.

अनादिथी चपळ एवुं मन स्थिर करवुं. प्रथम अत्यंतपणे सामुं थाय एमां कांई आश्चर्य नथी. क्रमे करीने ते मनने महात्माओए स्थिर कर्युं छे, शमाव्युं-क्षय कर्युं ए खरेखर अश्चर्य कारक छे.

(२)

"क्षयोपशमिक असंख्य, क्षायक एक अनन्य" (अध्यात्मगीता.)

मनन अने निदिध्यासन करतां आ वाक्यथी जे परमार्थ अंतरात्मवृत्तिमां प्रतिभासे ते यथाशक्ति लखवो योग्य छे. शांतिः.

(३)

ॐ. यथार्थ जोईए तो शरीर वेदनानी मूर्त्ति छे. समये समये जीव ते द्वाराए वेदनाज वेदे छे. क्वचित् शाता अने प्रायः अशाताज वेदे छे. मानसिक अशातानुं मुख्यपणुं छतां ते सूक्ष्मसम्यग्दृष्टिवान्ने जणाय छे. शारीरिक अशातानुं मुख्यपणुं स्थूळ दृष्टिवान्ने पण जणाय छे. जे वेदना पूर्वे सुदृढ बंधथी जीवे बंधन करी छे ते वेदना उदय संप्राप्त थतां इंद्र, चंद्र, नागेंद्र के जिनेंद्र पण रोकवाने समर्थ नथी. तेनो उदय जीवे वेदवोज जोईए. अज्ञान दृष्टि जीवो खेदथी वेदे तोपण कंई ते वेदना घटती नथी के थती रहेती नथी. सत्यदृष्टिवान जीवो शांत भावे वेदे तो तेथी ते वेदना वधी जती नथी, पण नवीन बंधनो हेतु थती नथी, पूर्वनी बळवान निर्जरा थाय छे. आत्मार्थीने एज कर्त्तव्य छे.

हुं शरीर नथी, पण तेथी भिन्न एवो ज्ञायक आत्मा छुं, तेम नित्य शाश्वत छुं. आ वेदना मात्र पूर्व कर्म छे, पण मारूं स्वरूप नाश करवा समर्थ नथी, माटे मारे खेद कर्त्तव्य नथी एम आत्मार्थीनुं अनुप्रेक्षण होय. ॐ.

८४९. ववाणीआ. जेठ सुद ११. १९५६.

आर्य त्रिभुवने अल्पसमयमां शांतवृत्तिथी देहोत्सर्ग कर्यानां खबर श्रुत थया. सुशीळ मुमुक्षुए अन्य स्थान ग्रहण कर्युं.

जीवनां विविध प्रकारनां मुख्य स्थानक छे. देवलोकमां इंद्र तथा सामान्य त्रयस्त्रिंशदादिकनां स्थान छे. मनुष्यमां चक्रवर्त्ति, वासुदेव, बळदेव तथा मांडलिकादिकनां स्थान छे. तिर्यंचमां पण क्यांएक इष्ट भोगभूम्यादिक स्थान छे.

ते सर्व स्थानने जीव छांडशे ए निःसंदेह छे. ज्ञाति, गोत्री अने बंधु आदिक ए सर्वनो अशाश्वत अनित्य एवो आ वास छे. शांतिः.

८५०. ववाणीआ. ज्येष्ठ सुद १३ सोम. १९५६.

(१)

ॐ. चातुर्मास संबंधी मुनियोने क्यांथी विकल्प होय? निर्ग्रंथो क्षेत्रने किये छेडे बांधे? छेडानो संबंध नथी.

निर्ग्रंथ महात्माओनां दर्शन अने समागम मुक्तिनी सम्यक् प्रतीति करावे छे.

तथारूप महात्माना एक आर्य वचननुं सम्यक् प्रकारे अवधारण थवाथी यावत् मोक्ष थाय एम श्रीमान् तीर्थंकरे कह्युं छे. आ जीवमां तथारूप योग्यता जोईए. शांतिः.

(२)

ॐ. पत्र अने समयसारनी प्रत संप्राप्त थई. कुंदकुंदाआर्यकृत समयसार ग्रंथ जूदो छे, आ ग्रंथकर्त्ता जूदा छे, अने ग्रंथनो विषय पण जूदो छे. ग्रंथ उत्तम छे.

आर्य त्रिभुवने देहोत्सर्ग कर्यांना खबर तमने मळ्या, तेथी खेद थयो ते यथार्थ छे. आवा काळमां आर्य त्रिभुवन जेवा मुमुक्षुओ विरल छे. दिनप्रतिदिन शांतावस्थाए करी तेनो आत्मा स्वरूपलक्षित थतो हतो. कर्मतत्त्वने सूक्ष्मपणे विचारी, निदिध्यासन करी आत्माने तदनुयायि परिणतिनो निरोध थाय ए तेनो मुख्य लक्ष हतो. विशेष आयुष् होत तो ते मुमुक्षु चारित्र मोहने क्षीण करवा प्रत्ये अवश्य प्रवर्त्तत. शांतिः शांतिः शांतिः.

८५१. ववाणीआ. जेठ वद ९ गुरु. १९५६.

व्यसन वधार्यां वधे छे अने नियममां राख्यां नियममां रहे छे. व्यसनथी कायाने घणुं नुकसान थतुं जाय छे तथा मन परवश थतुं जाय छे. तेथी आ लोक अने परलोकनुं कल्याण चुकी जवाय छे.

दिवस प्रमाणे माणसनी प्रकृति न होय तो माणसनुं वजन पडे नहीं. अने वजन विनानो मानस्वो आ जगत्मां नकामो छे.

पोतानो मळेलो मनुष्य देह भगवाननी भक्ति अने सारांकाममां गाळवो जोईए.

८५२. ववाणीआ. ज्येष्ठ वदी १०. १९५६.

ॐ. पत्र संप्राप्त थयां. शरीर प्रकृति स्वस्थास्वस्थ वर्त्ते छे, विक्षेप कर्त्तव्य नथी.

हे आर्य! अंतर्मुख थवानो अभ्यास करो. शांतिः.

८५३. ववाणीआ. ज्येष्ठ वदी ,, बुध. १९५६.

(१)

ॐ. परम पुरुषने अभिमत एवा अभ्यंतर अने बाह्य बन्ने संयमने उल्लासित भक्तिए नमस्कार.

मोक्षमाळा विषे जेम तमने सुख थाय तेम प्रवर्त्तो.

मनुष्यपणुं, आर्यता, ज्ञानीनां वचनोनुं श्रवण, ते प्रत्ये आस्तिक्यपणुं, संयम, ते प्रत्ये वीर्य प्रवृत्ति, प्रतिकूळ योगोए पण स्थिति, अंतपर्यंत संपूर्ण मार्गरूप समुद्र तरीजवो ए उत्तरोत्तर दुर्लभ अने अत्यंत कठण छे, ए निःसंदेह छे.

शरीर प्रकृति क्वचित् ठिक जोवामां आवे छे, क्वचित् तेथी विपरीत पण जोवामां आवे छे, कांईक अशाता मुख्यपणुं हमणां जोवामां आवे छे. ॐ शांतिः.

(२)

ॐ. चक्रवर्तिनी समस्त संपत्ति करतां पण जेनो एक समयमात्र पण विशेष मूल्यवान छे एवो आ मनुष्य देह अने परमार्थने अनुकूळ एवा योग संप्राप्त छतां जो जन्ममरणथी रहित एवां परम पदनुं ध्यान रह्युं नहीं तो आ मनुष्यत्वने अधिष्ठित एवा आत्माने अनंतवार धिक्कार हो.

जेमणे प्रमादनो जय कर्यो तेमणे परम पदनो जय कर्यो. शांतिः.

(३)

शरीर प्रकृतिना अनुकूळ प्रतिकूळपणाने आधीन उपयोग अकर्त्तव्य छे. शांतिः.

८५४.

चिंतित जेनाथी प्राप्त थाय ते मणिने चिंतामणि कह्यो छे. एज आ मनुष्य देह छे के जे देहमां योगमां आत्यंतिक एवा सर्वदुःखना क्षयनी चिंतिता धारी तो पार पडे छे.

अचिंत्य जेनुं महात्म्य छे एवो सत्संगरूपी कल्पवृक्ष प्राप्त थये जीव दरिद्र रहे एम बने तो आ जगतने विषे ते अगियारमुं आश्चर्य छे.

८५५. ववाणीआ. अषाड सुद १ गुरु. १९५६.

(१)

ॐ. बे वखत उपदेश अने एक वखत आहार ग्रहण तथा निद्रासमयविना बाकीनो अवकाश मुख्यपणे आत्मविचारमां, पद्मनंदी आदि शास्त्रावलोकनमां अने आत्मध्यानमां व्यतीत करवायोग्य छे. कोई बाई भाई क्यारेक कंई प्रश्नादि करे तो तेनुं घटतुं समाधान करवुं, के जेम तेनो आत्मा शांत थाय. अशुद्धक्रियानां निषेधक वचनो उपदेशरूपे न प्रवर्त्तावतां शुद्ध क्रियामां जेम लोकोनी रुचि वधे तेम क्रिया कराव्ये जवी.

उदाहरण दाखल के जेम कोई एक मनुष्य तेनी रूढीप्रमाणे सामायिक व्रत करे छे, तो तेनो निषेध नहीं करतां, तेनो ते वखत उपदेशनां श्रवणमां के सत्शास्त्र अध्ययनमां अथवा

कायोत्सर्गमां जाय तेम तेने उपदेशवुं. किंचित्मात्र आभासे पण तेने सामायिक व्रतादिनो निषेध हृदयमां पण न आवे एवी गंभिरताथी शुद्ध क्रियानी प्रेरणा करवी.

खुल्ली प्रेरणा करवाजतां पण क्रियाथी रहित थई उन्मत्त थाय छे; अथवा तमारी आ क्रिया बराबर नथी एटलुं जणावतां पण तमारा प्रत्ये दोष दई ते क्रिया छोडी दे एवो प्रमत्त जीवोनो स्वभाव छे, अने लोकोनी दृष्टिमां एम आवे के तमेज क्रियानो निषेध कर्यो छे. माटे मतभेदथी दूर रही, मध्यस्थवत् रही स्वात्मानुं हित करतां जेम जेम पर आत्मानुं हित थाय तेम तेम प्रवर्त्तवुं, अने ज्ञानीना मार्गनुं, ज्ञान क्रियानुं समन्वितपणुं स्थापित करवुं एज निर्जरानो सुंदर मार्ग छे.

स्वात्महितमां प्रमाद न थाय अने परने अविक्षेपपणे आस्तिक्यवृत्ति बंधाय तेवुं तेनुं श्रवण थाय, क्रियानी वृद्धि थाय, छतां कल्पित भेद वधे नहीं अने स्वपर आत्माने शांति थाय एम प्रवर्त्तवामां उल्लासित वृत्ति राखजो. सत्शास्त्र प्रत्ये रुचि वधे तेम करजो. ॐ शांतिः.

(२)

१. ते माटे उभा कर जोडी, जिनवर आगळ कहियें रे,
समयचरण सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहियें रे.

२. मुमुक्षु भाईओने ते पण लोक विरुद्ध न थाय तेम तीर्थार्थे गमन करतां आज्ञानो अतिक्रम नथी. ॐ शांतिः.

८५६. मोरबी. अषाड वदी ९ शुक्र. १९५६.

(१)

१. सम्यक् प्रकारे वेदना अहियासवासरूप परमधर्म परम पुरुषोए कह्यो छे.

२. तिक्ष्ण वेदना अनुभवतां स्वरूपभ्रंशवृत्ति न थाय एज शुद्ध चारित्रनो मार्ग छे.

३. उपशम ज जे ज्ञाननुं मूळ छे ते ज्ञानमां तिक्ष्ण वेदना परम निर्जरा भासवा योग्य छे. ॐ शांतिः.

(२)

ॐ. अषाढ पूर्णिमा पर्यंतना चातुर्मास संबंधी जे किंचित् अपराध थयो होय ते नम्रताथी खमावुं छउं.

पद्मनंदि, गोमट्टसार, आत्मानुशासन, समयसारमूळ ए आदि परमशांत श्रुतनुं अध्ययन थतुं हशे.

आत्मानुं शुद्ध स्वरूप संभारीए छीए. ॐ शांतिः.

८५७. मोरबी. अषाड सुद. १९५६.

१. प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रसन्नं,
वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः;
करयुगमपि यत्ते शस्त्रसंबंधवंध्यं,
तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव.

तारां बे चक्षु प्रशमरसमां डूबेलां छे, परमशांत रसने झीली रह्यां छे. तारूं मुखकमळ प्रसन्न छे; तेमां प्रसन्नता व्यापी रही छे. तारो खोळो स्त्रीना संगथी रहित छे. तारा बे हाथ शस्त्रसंबंध विनाना छे; तारा हाथमां शस्त्र नथी. आम तुं ज वीतराग जगत्मां देव छुं.

देव कोण? वीतराग.

दर्शनयोग्य मुद्रा कई? वीतरागता सूचवे ते.

२. स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा वैराग्यनो उत्तम ग्रंथ छे. द्रव्यने, वस्तुने यथावत् लक्षमां राखी वैराग्यनुं एमां निरूपण कर्युं छे. गई साल मद्रास भणी जवुं थयुं हतुं. कार्त्तिक स्वामी ए भूमिमां बहु विचर्या छे. ए तरफना नग्न, भव्य, ऊंचा, अडोल वृत्तिथी उभेला पहाड निरखी स्वामी कार्त्तिकेयादिनी अडोल, वैराग्यमय दिगंबरवृत्ति याद आवती हती. नमस्कार ते स्वामी कार्त्तिकेयादिने.

८५८. मोरबी. श्रावण वद ४ मंगळ. १९५६.

ॐ संस्कृत अभ्यासना योग विषे लख्युं, पण **ज्यां सुधी आत्मा सुदृढ प्रतिज्ञाथी वर्त्ते नहीं, त्यां सुधी आज्ञा करवी भयंकर छे.**

जे नियमोमां अतिचारादि प्राप्त थयां होय तेनुं यथाविधि कृपालु मुनिश्रीओ प्रत्ये प्रायश्चित्त ग्रहण करी आत्मशुद्धता करवी योग्य छे, नहीं तो भयंकर तीव्र बंधनो हेतु छे. **नियमने विषे स्वेच्छाचार प्रवर्त्तन करतां मरण श्रेय छे,** एवी महत्पुरुषोनी आज्ञानो कांई विचार राख्यो नहीं? एवो प्रमाद आत्माने भयंकर केम न थाय?

८५९. मोरबी. श्रा. वद ५. बुध. १९५६.

ॐ. कदापि जो निवृत्ति मुख्य स्थळनी स्थितिना उदयनो अंतराय प्राप्त थयो तो हे आर्य, सदा सविनय एवी परम निवृत्ति, ते तमे श्रावण वद ११ थी भाद्रपद सुद पूर्णिमा पर्यंत एवी रीते सेवजो के समागमवासी मुमुक्षुओने तमे विशेष उपकारक थाओ अने ते सौ निवृत्तिभूत सद् नियमोने सेवतां सत्शास्त्र अध्ययनादिमां एकाग्र थाय, **यथाशक्ति व्रत, नियम, गुणना ग्रहण करतां थाय.**

शरीर प्रकृतिमां सबळ अशाताना उदयथी जो निवृत्तिमुख्य स्थळनो अंतराय जणाशे तो अत्रेथी **योगशास्त्रनुं** पुस्तक तमारां अध्ययन–मननादि अर्थे घणुं करी मोकलवानुं थशे, जेना चार प्रकाश बीजा मुमुक्षु भाईओने पण श्रवण करावतां परम लाभनो संभव छे.

हे आर्य, अल्पायुषिदुषमकाळमां प्रमाद कर्त्तव्य नथी; तथापि आराधक जीवोनो तद्वत् सुदृढ उपयोग वर्त्ते छे.

आत्मबलाधीनताथी पत्र लखायुं छे. ॐ शांतिः.

८६०. मोरबी. श्रा. वद ८. १९५६.

(१) षड्दर्शनसमुच्चय, योगदृष्टिसमुच्चयनां भाषांतर गुजरातीमां करवा योग्य छे, ते करशो. षड्दर्शनसमुच्चयनुं भाषांतर थयेल छे पण ते सुधारी फरी करवा योग्य छे. धीमे धीमे थशे. करशो. आनंदघनजी चोविशीना अर्थ पण विवेचन साथे लखशो.

(२) नमो दुर्वाररागादिवैरिवारनिवारिणे,
अर्हते योगिनाथाय महावीराय तायिने.

श्री हेमचंद्राचार्य 'योगशास्त्र'नी रचना करतां मंगलाचरणमां वीतराग सर्वज्ञ अरिहंत योगिनाथ महावीरने स्तुतिरूपे नमस्कार करे छे.

वार्या वारी न शकाय, वारवा बहु बहु मुस्केल एवा रागद्वेषअज्ञान रूपी शत्रुना समूहने जेणे वार्या, जीत्या, जे वीतराग सर्वज्ञ थया; वीतराग सर्वज्ञ थतां जे अर्हत् पूजवा योग्य थया; अने वीतराग अर्हत् थतां मोक्ष अर्थे प्रवर्त्तन छे जेनुं एवा जुदा जुदा योगियोना जे नाथ थया, नेता थया अने एम नाथ थतां जे जगत्ना नाथ, तात, त्राता थया, एवा जे **महावीर** तेने नमस्कार हो.

अहिं सद्‌देवना अपायअपगम अतिशय, ज्ञान अतिशय, वचन अतिशय अने पूजा अतिशय सूचव्या.

आ मंगल स्तुतिमां समग्र योगशास्त्रनो सार शमावी दीधो छे. सद्‌देवनुं निरूपण कर्युं छे. समग्र वस्तु स्वरूप, तत्त्वज्ञान शमावी दीधुं छे. उकेलनार खोजक जोईए.

(३) लौकिक मेळामां वृत्तिने चंचळ करे एवा प्रसंग विशेष होय. साचो मेळो सत्संगनो. एवा मेळामां वृत्तिनी चंचळता ओछी थाय, दूर थाय. माटे सत्संगमेळाने ज्ञानिओए वखाण्यो छे, उपदेश्यो छे.

८६१. मोरबी. श्रा. वद ९. १९५६.

ॐ जिनाय नमः.

१. (१) **परमनिवृत्ति** निरंतर सेववी ए ज ज्ञानीनी प्रधान आज्ञा छे,

(२) तथारूप योगमां असमर्थता होय तो **निवृत्ति** सदा सेववी, अथवा

(३) **स्वात्मवीर्य गोपव्या शिवाय** बने तेटलो निवृत्ति सेववा योग्य अवसर प्राप्त करी आत्माने अप्रमत्त करवो एम आज्ञा छे. अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथिए एवा आशयथी सुनियमित वर्त्तनथी वर्त्तवा आज्ञा करी छे.

२. जे स्थळे धर्मसुदृढता संप्राप्त थाय, त्यां श्रावण वद ११ थी भाद्रपद पूर्णिमा पर्यंत स्थिति करवी योग्य छे. ज्ञानीना मार्गनी प्रतीतिमां निःसंशयता प्राप्त थाय, उत्तम गुणव्रत, नियम, शिल अने देवगुरु धर्मनी भक्तिमां वीर्य परम उल्लास पामी प्रवर्त्ते एम सुदृढता करवी योग्य छे अने एज परम मंगळकारी छे.

३. ज्यां स्थिति करो त्यां समागमवासीओने ज्ञानीना मार्गनी प्रतीति सुदृढ थाय अने अप्रमत्तपणे सुशिलनी वृद्धि करे एवुं तमारूं वर्त्तन राखजो. ॐ शांतिः.

८६२. मोरबी. श्रा. वद १०. १९५६.

ॐ. आजे **योगशास्त्र** ग्रंथ टपालमां मोकलवानुं थयुं छे.

मुमुक्षुओनां अध्ययन अने श्रवण–मनन अर्थे श्रावण वद ११ थी भाद्रपद सुद पूर्णिमा पर्यंत सुव्रत, नियम अने निवृत्तिपरायणताना हेतुए ए ग्रंथनो उपयोग कर्त्तव्य छे.

प्रमत्तभावे आ जीवनुं भुंडुं करवामां कांई न्यूनता राखी नथी, तथापि आ जीवने निज हितनो उपयोग नथी ए ज खेदकारक छे.

हे आर्य, हाल ते प्रमत्तभावने उल्लासित वीर्यथी मोळो पाडी, सुशिल सहित सत्श्रुतनुं अध्ययन करी निवृत्तिए आत्मभावने पोषजो.

८६३. मोरबी. श्रा. वद १०. १९५६.

श्रीपर्युषण आराधन.

१. एकांत योग्यस्थळमां.

प्रभाते.—(१) देवगुरुनी उत्कृष्ट भक्तिवृत्तिए अंतरात्मध्यानपूर्वक बे घडीथी चार घडी सुधी उपशांत व्रत.

(२) श्रुत.—पद्मनंदी आदि अध्ययन, श्रवण.

मध्याह्ने.—(१) चार घडी उपशांत व्रत.

(२) श्रुत.—कर्मग्रंथनुं अध्ययन, श्रवण. सुदिष्टतरंगिणीआदिनुं थोडुं अध्ययन.

सायंकाले.—(१) क्षमापनानो पाठ.

(२) बे घडी उपशांत व्रत.

(३) कर्म विषयनी ज्ञानचर्चा.

२. रात्री भोजन सर्व प्रकारनानो सर्वथा त्याग.

बने तो भाद्रपद पूर्णिमा सुधी एक वखत आहारग्रहण.

पंचमीने दिवसे घी, दूध, तेल, दहिंनो पण त्याग उपशांत व्रतमां विशेष काळ-निर्गमन, बने तो उपवास ग्रहण करवो.

लीलोत्री.—सर्वथा त्याग (आठे दिवस.)

ब्रह्मचर्य.—आठे दिवस पाळवुं. बने तो भाद्रपद पुनेम सुधी. शमम्.

८६४. मोरबी. अषाड सुद ४ रवि. १९५६.

व्याख्यानसार अने प्रश्नसमाधान.*

(१)

१. ज्ञान वैराग्यसाथे, अने वैराग्य ज्ञानसाथे होय छे; एकलां न होय.

२. वैराग्य शृंगारसाथे न होय, अने शृंगारसाथे वैराग्य न होय.

३. वीतरागवचननी असरथी इंद्रियसुख नीरस न लाग्यां तो ज्ञानीनां वचनो काने पड्यां ज नथी एम समजवुं.

४. ज्ञानीनां वचनो विषयनुं विरेचन करावनारां छे.

---

* सं० १९५६ ना अषाड–श्रावणमां 'श्रीमद्'नी मोरबीमां स्थिति हती ते प्रसंगे वखतो वखत करेल व्याख्याननो सार तथा पुछायलां प्रश्नोनां समाधाननी संक्षिप्तनोंध एक श्रोता मुमुक्षुए करेल ते टांकेल छे. म. कि.

५. छद्मस्थ एटले आवरणयुक्त.

६. शैलेशिकरण, तेमां (शैल=पर्वत+ईश=मोटो)=पर्वतोमां मोटो मेरु, तेना जेवुं अचल, अडग.

७. अकंप गुणवाळा=मन वचन कायाना योगनी स्थिरतावाळा.

८. मोक्षमां आत्माना अनुभवनो जो नाश थतो होय तो ते मोक्ष शा कामनो ?

९. आत्मानो ऊर्ध्व स्वभाव छे ते प्रमाणे प्रथम ऊंचो जाय अने वखते सिद्धिशिलाए भटकाय; पण कर्मरूपी बोजो होवाथी नीचे आवे. जेम डुबेलो माणस उछाळाथी एक वखत उपर आवे छे तेम.

(२) अषाड सुद ५ सोम. १९५६.

१. जैन ए आत्मानुं स्वरूप छे. ते स्वरूप(धर्म)ने प्रवर्त्तावनार पण मनुष्य हता. जेमके, वर्त्तमान अवसर्पिणीकाळमां ऋषभादि धर्म प्रवर्त्तावनार हता. आथी करी कंई अनादि आत्मधर्मनो विचार नहोतो एम नहोतुं.

२. आशरे बे हजार वर्ष उपर जैनयति शिखरसूरि आचार्ये वैश्यने क्षत्रियसाथे मेळव्या.

३. उत्कर्ष, अपकर्ष अने संक्रमण ए सत्तामां रहेली कर्मप्रकृतिनां थई शके छे; उदयमां आवेली प्रकृतिनां थई शके नहीं.

४. आयुःकर्मनो जे प्रकारे बंध होय ते प्रकारे देहस्थिति पूर्ण थाय.

५. 'ओसवाळ' ते 'ओरपाक' जातना रजपूत छे.

६. अंधारामां न देखवुं ए एकांत दर्शनावरणीय कर्म न कहेवाय; पण मंद दर्शनावरणीय कहेवाय. तमसूनुं निमित्त अने तेजसूनो अभाव तेने लईने तेम बने छे.

७. दर्शन रोकाये ज्ञान रोकाय.

८. ज्ञेय जाणवा माटे ज्ञानने वधारवुं जोईए. वजन तेवां काटलां.

९. जेम परमाणुनी शक्ति पर्यायने पामवाथी वधती जाय छे, तेम चैतन्यद्रव्यनी शक्ति विशुद्धताने पामवाथी वधती जाय छे. काच, चसमा, दुर्बिन आदि पहेला (परमाणु)नां प्रमाण छे; अने अवधि, मनःपर्यव, केवळज्ञान, लब्धि, ऋद्धि वगेरे बीजा (चैतन्यद्रव्य)नां प्रमाण छे.

(३) अषाड सुद ६ भोम. १९५६.

१. क्षयोपशमसम्यक्त्वने वेदकसम्यकत्व पण कहेवामां आवे छे. परंतु क्षयोपशममांथी क्षायिक थवाना संधिना वखतनुं जे सम्यक्त्व ते वास्तविक रीते वेदकसम्यक्त्व छे.

२. पांच स्थावर एकेंद्रिय बादर छे, तेम ज सूक्ष्म पण छे. वनस्पति शिवाय बाकीना चारमां असंख्यात सूक्ष्म कहेवामां आवे छे. निगोद सूक्ष्म अनंत छे; अने वनस्पतिना सूक्ष्म अनंत छे; त्यां निगोदमां सूक्ष्म वनस्पति घटे छे.

३. श्री तीर्थंकर अगियारमुं गुणस्थानक स्पर्शे नहीं; तेमज १ लुं, २ जुं तथा ३ जुं पण न स्पर्शे.

४. वर्द्धमान, हीयमान, अने स्थित एवी जे त्रण परिणामनी धारा छे तेमां हीयमान परिणामनी धारा सम्यक्त्वआश्रयी (दर्शनआश्रयी) श्री तीर्थंकरदेवने न होय; अने चारित्र आश्रयी भजना.

५. क्षायिकचारित्र छे त्यां मोहनीयनो अभाव छे; अने ज्यां मोहनीयनो अभाव छे त्यां १ लुं, २ जुं, ३ त्रीजुं अने ११ मुं ए चार गुणस्थानकना स्पर्शपणानो अभाव छे.

६. उदय बे प्रकारनो छे. एक, प्रदेशोदय; अने बीजो विपाकोदय. विपाकोदय बाह्य (देखीती) रीते वेदाय छे; अने प्रदेशोदय अंदरथी वेदाय छे.

७. आयुष्यकर्मनो बंध प्रकृतिविना थतो नथी; पण वेदनीयनो थाय छे.

८. आयुष्प्रकृति एक ज भवमां वेदाय छे. बीजी प्रकृतिओ ते भवमां वेदाय, अने अन्य-भवमां पण वेदाय.

९. जीव जे भवनी आयुष्प्रकृति भोगवे छे ते आखा भवनी एक ज बंधप्रकृति छे. ते बंधप्रकृतिनो उदय आयुष्नी शरूआत थई त्यारथी गणाय. आ कारणथी ते भवनी आयुष्प्रकृति उदयमां छे तेमां संक्रमण, उत्कर्ष, अपकर्षादि थई शकतां नथी.

१०. आयुष्यकर्मनी प्रकृति बीजा भवमां भोगवाती नथी.

११. गति, जाति, स्थिति, संबंध, अवगाह (शरीरप्रमाण) अने रस अमुक जीवे अमुक प्रमाणमां भोगववां तेनो आधार आयुष्यकर्म उपर छे. जेमके, एक माणसनी सो वर्षनी आयुःकर्मप्रकृतिनो उदय वर्त्ते छे; तेमांथी ते ऐंसीमे वर्षे अधुरे आयुषे मरण पामे तो बाकीनां विश वर्ष क्यां अने शी रीते भोगवाय? बीजा भवमां गति, जाति, स्थिति, संबंधादि नवेसरथी छे; एकाशीमा वर्षथी नथी; तेथी करीने आयुष्उदयप्रकृति अधवच्चथी त्रुटी शके नहीं. जे जे प्रकारे बंध पड्यो होय, ते ते प्रकारे उदयमां आववाथी कोईनी नजरमां कदाच आयुष् त्रुटवानुं आवे; परंतु तेम बनी शकतुं नथी.

१२. संक्रमण अपकर्ष उत्कर्षादि करणनो नियम आयुःकर्मवर्गणा सत्तामां होय त्यांसुधी लागु थई शके; पण उदयनी शरूआत थया पछी लागु थई शके नहीं.

१३. आयुःकर्म पृथ्वीसमान छे; अने बीजां कर्मो झाडसमान छे. (जो पृथ्वी होय तो झाड होय.)

१४. आयुष्ना बे प्रकार छेः—(१) सोपक्रम अने (२) निरुपक्रम. आमांथी जे प्रकारनुं बांध्युं होय ते प्रकारनुं भोगवाय छे.

१५. उपशम सम्यक्त्व क्षयोपशम थई क्षायिक थाय; कारण के उपशम सत्तामां छे एटले ते उदय आवी क्षय थाय.

१६. चक्षु बे प्रकारेः—(१) ज्ञानचक्षु अने (२) चर्मचक्षु. जेम चर्मचक्षुवडे एक वस्तु

जे स्वरूपे देखाय छे ते वस्तु दुर्बिन सूक्ष्मदर्शकादि यंत्रोथी जूदा ज स्वरूपे देखाय छे; तेम चर्मचक्षुवडे जे स्वरूपे देखाय छे ते ज्ञानचक्षुवडे कोई जूदा ज स्वरूपे देखाय; ने तेम कहेवामां आवे ते आपणे पोताना डहापणे (अहंपणे) न मानवुं ते योग्य नथी.

(४) अषाड. सुद ७ बुध. १९५१.

१. श्रीमान् कुंदकुंदाचार्ये अष्टपाहुड (अष्टप्राभृत) रचेल छे. प्राभृतभेदः—दर्शनप्राभृत, ज्ञानप्राभृत, चारित्रप्राभृत, भावप्राभृत इत्यादि. दर्शनप्राभृतमां जिनभावनुं स्वरूप बताव्युं छे. शास्त्रकर्त्ता कहे छे के अन्यभावो अमे, तमे अने देवाधिदेवसुद्धांए पूर्वे भाव्या छे; अने तेथी कार्य सर्युं नथी; एटला माटे जिनभाव भाववानी जरूर छे. जे जिनभाव शांत छे, आत्मानो धर्म छे; अने ते भाव्येथी ज मुक्ति थाय छे.

२. चारित्रप्राभृत.

३. द्रव्य अने तेना पर्याय मानवामां नथी आवता त्यां विकल्प थवाथी गुंचवाई जवुं थाय छे. पर्याय नथी मानेला तेनुं कारण तेटले अंशे नहीं पहोंचवानुं छे.

४. द्रव्यना पर्याय छे एम स्वीकारवामां आवे छे त्यां द्रव्यनुं स्वरूप समजवामां विकल्प रहेतो होवाथी गुंचवाई जवुं थाय छे; अने तेथी ज रखडवुं थाय छे.

५. सिद्धपद ए द्रव्य नथी; पण आत्मानो एक शुद्ध पर्याय छे. ते पहेलां मनुष्य वा देव हतो त्यारे ते पर्याय हतो; एम द्रव्य शाश्वत रही पर्यायांतर थाय छे.

६. शान्तपणुं प्राप्त करवाथी ज्ञान वधे छे.

७. आत्मसिद्धि माटे द्वादशांगीनुं ज्ञान जाणतां घणो वखत जाय. ज्यारे एक मात्र शांतपणुं सेव्याथी तरत प्राप्त थाय छे.

८. पर्यायनुं स्वरूप समजाववा अर्थे श्रीतीर्थंकरदेवे त्रिपद(उत्पाद, व्यय, अने ध्रौव्य) समजाव्या छे.

९. द्रव्य ध्रुव (सनातन) छे.

१०. पर्याय उत्पादव्ययवंत छे.

११. छए दर्शन एक जैनदर्शनमां समाय छे. तेमां पण जैन एक दर्शन छे.
बौद्ध—क्षणिकवादी=पर्यायरूपे 'सत्' छे. वेदांत—सनातन=द्रव्यरूपे 'सत्' छे.
चार्वाक—निरीश्वरवादी ज्यांसुधी आत्मानी प्रतीति थई नथी त्यांसुधी तेने ओळखवारूपे 'सत्' छे.

१२. (आत्मा) पर्यायना बे भेद छेः—जीवपर्याय (संसारावस्थामां) अने सिद्धपर्याय. सिद्धपर्याय सो टचना सोनातुल्य छे अने जीवपर्याय कथिरसहित सोनातुल्य छे.

१३. व्यंजनपर्याय.

१४. अर्थपर्याय.

१५. विषयनो नाश (वेदनो अभाव) क्षायिकचारित्रथी थाय छे. चोथे गुणस्थानके विषयनी मंदता होय छे; ने नवमा गुणस्थानकसुधी वेदनो उदय होय छे.

१६. **जे गुण पोताने विषे नथी ते गुण पोताने विषे छे एम जे कहे अथवा मनावे ते मिथ्यादृष्टि जाणवा.**

१७. जिन अने जैन शब्दनो अर्थः

घट घट अंतर् जिन बसे, घट घट अंतर् जैन;
मत मदिराके पानसें, मतवारा समजै न. (समयसार.)

१८. आत्मानो सनातनधर्म शांत थवुं, विराम पामवुं ते छे, आखी द्वादशांगीनो सार पण ते ज छे. ते षड्दर्शनमां समाय छे, अने ते षड्दर्शन जैनमां समाय छे.

१९. वीतरागनां वचनो विषयनुं विरेचन करावनारां छे.

२०. जैनधर्मनो आशय, दिगम्बर तेम ज श्वेताम्बर आचार्योनो आशय ने द्वादशांगीनो आशय मात्र आत्मानो सनातनधर्म पमाडवानो छे,–अने ते ज साररूप छे. आ वातमां कोई प्रकारे ज्ञानीओने विकल्प नथी. ते ज त्रणेकाळमां ज्ञानीओनुं कहेवुं छे, हतुं अने थशे.

२१. बाह्य विषयोथी मुक्त थई जेम जेम तेनो विचार करवामां आवे तेम तेम आत्मा विरत थतो जाय; निर्मळ थतो जाय.

२२. भंगजाळमां पडवुं नहीं. मात्र आत्मानी शांतिनो विचार करवो घटे छे.

२३. ज्ञानीओ जो के वाणीआ जेवा हिसाबी छे [वाणीआनी पेठे रेस न खाय तेवा छे—अर्थात् सूक्ष्मपणे शोधन करी तत्त्वो स्वीकारनारा छे.] तोपण छेवटे लोक जेवा लोक (खेडुतादि, एक सारभूत वात पकडी राखनार साधारण रीते कहेवाय छे.) थाय छे. अर्थात् छेवटे गमेतेम थाय पण एक शांतपणाने मूकता नथी; अने आखी द्वादशांगीनो सार पण ते ज छे.

२४. ज्ञानी उदयने जाणे छे; पण शाता अशातामां ते परिणमता नथी.

२५. इंद्रियोना भोगसहित मुक्तपणुं नथी. इंद्रियोना भोग छे त्यां संसार छे; ने संसार छे त्यां मुक्तपणुं नथी.

२६. बारमा गुणस्थानकसुधी ज्ञानीनो आश्रय लेवानो छे;–ज्ञानीनी आज्ञाए वर्त्तवानुं छे.

२७. महान् आचार्यो अने ज्ञानीओमां दोष तथा भूल होय नहीं. आपणाथी न समजाय तेने लीधे आपणे भूल मानीए छीए. आपणाथी समजाय तेवुं आपणामां ज्ञान नथी माटे तेवुं ज्ञान प्राप्त थये जे ज्ञानीनो आशय भूलवाळो लागे छे ते समजाशे एवी भावना राखवी. एकबीजा आचार्योना विचारमां कोई जगोए कांई भेद जोवामां आवे तो तेम थवुं क्षयोपशमने लीधे संभवे छे, पण वस्तुत्वे तेमां विकल्प करवा जेवुं नथी.

२८. ज्ञानीओ घणा डाह्या हता. विषयसुख भोगवी जाणता हता. पांचे इंद्रियो पूर्ण हती; (पांचे इंद्रियो पूर्ण होय ते ज आचार्यपदविने योग्य थाय.) छतां आ संसार अने इंद्रियसुख निर्माल्य लागवाथी तथा आत्माना सनातनधर्मने विषे श्रेयपणुं लागवाथी तेओ विषयसुखथी विरमी आत्माना सनातनधर्ममां जोडाया छे.

२९. अनंतकाळथी जीव रखडे छे, छतां तेनो मोक्ष थयो नहीं. ज्यारे ज्ञानीए एक अंतर्मुहूर्त्तमां मुक्तपणुं बताव्युं छे.

३०. जीव ज्ञानीनी आज्ञाप्रमाणे शांतपणामां विचरे तो अंतर्मुहूर्त्तमां मुक्त थाय छे.

३१. अमुकवस्तुओ व्यवच्छेद गई एम कहेवामां आवे छे; पण तेनो पुरुषार्थ करवामां आवतो नथी तेथी व्यवच्छेद गई कहे छे, यद्यपि जो तेनो साचो (जेवो जोईए तेवो) पुरुषार्थ थाय तो ते गुणो प्रगटे एमां संशय नथी. अंग्रेजोए उद्यम कर्यो तो हुन्नरो तथा राज्य प्राप्त कर्या; अने हिंदुस्थानवाळाए उद्यम न कर्यो तो प्राप्त करी शक्या नहीं, तेथी विद्या (ज्ञान) व्यवच्छेद गई कहेवाय नहीं.

३२. विषयो क्षय थया नथी छतां जे जीवो पोताने विषे वर्त्तमानमां गुणो मानी बेठा छे ते जीवोना जेवी भ्रमणा न करतां ते विषयो क्षय करवा भणी लक्ष आपवुं.

(५) अशाड. सुद ८ गुरु. १९५६.

१. धर्म, अर्थ, काम ने मोक्ष ए चार पुरुषार्थमां प्रथम त्रणथी चढीआतो मोक्ष. मोक्षअर्थे बाकीना त्रणे छे.

२. सुखरूप आत्मानो धर्म छे एम प्रतीत थाय छे. ते सोनामाफक शुद्ध छे.

३. कर्मवडे सुख दुःख सहन करतां छतां परिग्रह उपार्जन करवा तथा तेनुं रक्षण करवा सौ प्रयत्न करे छे. सौ सुखने चाहे छे; पण ते परतंत्र छे. परतंत्रता प्रशंसापात्र नथी.

४. ते मार्ग (मोक्ष) रत्नत्रयनी आराधनावडे सर्व कर्मनो क्षय थवाथी प्राप्त थाय छे.

५. ज्ञानीए निरूपण करेलां तत्त्वोनो यथार्थ बोध थवो ते 'सम्यग्ज्ञान'.

६. जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष ए तत्त्वो छे. (अत्रे पुण्य, पाप आश्रवमां गणेलां छे).

७. जीवना बे भेदः सिद्ध अने संसारीः—

सिद्ध. सिद्धने अनंत ज्ञान, दर्शन, वीर्य, सुख ए स्वभाव समान छे; छतां अनंतर परंपर थवारूपे पंदर भेद आ प्रमाणे कह्या छेः–(१) तीर्थ (२) अतीर्थ (३) तीर्थंकर (४) अतीर्थंकर (५) स्वयंबुद्ध (६) प्रत्येकबुद्ध (७) बुद्धबोधित (८) स्त्रीलिंग (९) पुरुषलिंग (१०) नपुंसकलिंग. (११) अन्यलिंग (१२) जैनलिंग (१३) गृहस्थलिंग (१४) एक (१५) अनेक.

संसारी. संसारी जीवो एक प्रकारे, बे प्रकारे इत्यादि अनेक प्रकारे कह्या छे. एक

प्रकारे सामान्यपणे 'उपयोग' लक्षणे सर्व संसारी जीवो छे. बे प्रकारे त्रस, स्थावर अथवा व्यवहारराशि, अव्यवहारराशि. सूक्ष्म निगोदमांथी नीकळी एक वखत त्रसपणुं पाम्या छे ते 'व्यवहारराशि'. अनादिकाळथी सूक्ष्म निगोदमांथी निकळी कोई दिवस त्रसपणुं पाम्या नथी ते 'अव्यवहारराशि.' त्रण प्रकारे संयत, असंयत अने संयतासंयत अथवा स्त्री, पुरुष ने नपुंसक. चार प्रकारे गति अपेक्षाए. पांच प्रकारे इंद्रिय अपेक्षाए. छ प्रकारे पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति अने त्रस. सात प्रकारे कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, शुक्ल अने अलेशी. (चौदमा गुणस्थानकवाळा लेवा पण सिद्ध न लेवा, केमके संसारी जीवनी व्याख्या छे.) आठ प्रकारे अंडज, पोतज, जरायुज, स्वेदज, रसज, सन्मूर्छन, उद्भिज अने उपपाद. नव प्रकारे पांच स्थावर, त्रण विकलेन्द्रिय अने पंचेंद्रिय. दश प्रकारे पांच स्थावर, त्रण विकलेन्द्रिय, संज्ञी तथा असंज्ञी पंचेंद्रिय. अगीआर प्रकारे सूक्ष्म, बादर, त्रण विकलेन्द्रिय, अने पंचेंद्रियमां जलचर, स्थलचर, नभश्चर, मनुष्य, देवता, नारक. बार प्रकारे छकायना पर्याप्त तथा अपर्याप्त. तेर प्रकारे उपला बार भेद संव्यवहारिक तथा एक असंव्यवहारिक (सूक्ष्म निगोदनो). चौद प्रकारे गुणस्थानक आश्री, अथवा सूक्ष्म, बादर, त्रण विकलेन्द्रिय तथा संज्ञी, असंज्ञीए सातना पर्याप्त अने अपर्याप्त. एम बुद्धिमान पुरुषोए सिद्धांतने अनुसरी जीवना अनेक भेद (छता भावना भेद) कह्या छे.

(६) अषाड सुद. ९ शुक्र. १९५६.

१. 'जातिस्मरण ज्ञान' विषे जे शंका रहे छे तेनुं समाधान आ उपरथी थशे.—जेम बाल्यावस्थाने विषे जे कांई जोयुं होय अथवा अनुभव्युं होय तेनुं स्मरण वृद्धावस्थामां केटलाकने थाय ने केटलाकने न थाय, तेम पूर्वभवनुं भान केटलाकने रहे, ने केटलाकने न रहे. न रहेवानुं कारण ए छे के पूर्वदेह छोडतां बाह्य पदार्थोने विषे जीव वळगी रही मरण करे छे अने नवो देह पामी तेमां ज आसक्त रहे छे. आथी उलटी रीते प्रवर्त्तनारने (अवकाश राख्यो होय तेने) पूर्वनो भव अनुभववामां आवे छे.

२. 'जातिस्मरण ज्ञान' ए मतिज्ञाननो भेद छे. पूर्वपर्याय छोडतां वेदनाना कारणने लईने, नवो देह धारण करतां गर्भावासने लईने, बालपणामां मूढपणाने लईने, अने वर्त्तमान देहमां अति लिप्तताने लईने पूर्वपर्यायनी स्मृति करवानो अवकाश ज मळतो नथी; तथापि जेम गर्भावास तथा बालपणुं स्मृतिमां रहे नहीं तेथी करी ते नहोतां एम नथी, तेम उपरनां कारणोने लईने पूर्वपर्याय स्मृतिमां रहे नहीं तेथी करी ते नहोता एम कहेवाय नहीं. जेवी रीते आंबा आदि वृक्षोनी कलम करवामां आवे छे तेमां सानुकूळता होय तो थाय छे, तेम जो पूर्व पर्यायनी स्मृति करवाने सानुकूळता (योग्यता) होय तो 'जातिस्मरण ज्ञान' थाय. पूर्व संज्ञा कायम होवी जोईए. असंज्ञीनो भव आववाथी 'जातिस्मरण ज्ञान' न थाय.

३. आत्मा छे. आत्मा नित्य छे. प्रमाणोः—

(१) बालकने धावतां खटखटाववानुं कोई शीखवे छे? ते पूर्वाभ्यास छे.

(२) सर्प अने मोरने; हाथी अने सिंहने; उंदर अने बिलाडीने स्वाभाविक वैर छे. ते कोई शीखडावतुं नथी. पूर्वभवना वैरनी स्वाभाविक संज्ञा छे,—पूर्वज्ञान छे.

४. निःसंगपणु ए वनवासीनो विषय छे एम ज्ञानीओए कहेल छे ते सत्य छे. जेनामां बे व्यवहार (सांसारिक अने असांसारिक) होय तेनाथी निःसंगपणुं थाय नहीं.

५. संसार छोड्याविना अप्रमत्तगुणस्थानक नथी. अप्रमत्तगुणस्थानकनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी छे.

६. 'अमे समज्या छीए,' 'शान्त छीए' एम कहे छे ते तो ठगाया छे.

७. संसारमां रही सातमा गुणस्थाननी उपर वधी शकातुं नथी, आथी संसारीने निराश थवानुं नथी; पण ते ध्यानमां राखवानुं छे.

८. पूर्वे स्मृतिमां आवेली वस्तु फरी शांतपणे संभारे तो यथास्थित सांभरे.

९. ग्रंथिना बे भेद छेः—एक द्रव्य, बाह्य ग्रंथि (चतुष्पद, द्विपद, अपद इ०); बीजी भाव, अभ्यन्तर ग्रंथि (आठ कर्म इ०). सम्यक्प्रकारे बन्ने ग्रंथिथी निवर्त्ते ते 'निर्ग्रंथ'.

१०. मिथ्यात्व, अज्ञान, अविरति आदि भाव जेने छोडवा ज नथी तेने वस्त्रनो त्याग होय, तोपण ते पारलौकिक कल्याण शुं करे?

११. सक्रिय जीवने अबंधनुं अनुष्ठान होय एम बने ज नहीं. (क्रिया छतां अबंध गुणस्थानक होतुं नथी.)

१२. रागादि दोषोनो क्षय थवाथी तेनां सहायकारी कारणोनो क्षय थाय छे. ज्यां सुधी क्षय संपूर्णपणे थतो नथी, त्यांसुधी मुमुक्षु जीव संतोष मानी बेसता नथी.

१३. रागादि दोष अने तेनां सहायकारी कारणोना अभावे बंध थतो नथी. रागादिना प्रयोगे करी कर्म होय छे. तेना अभावे कर्मनो अभाव सर्व स्थळे जाणवो.

१४. आयुःकर्म.

(अ) अपवर्त्तन=विशेषकाळनुं होय ते कर्म थोडा काळमां वेदी शकाय. तेनुं कारण पूर्वनो तेवो बंध होवाथी ते प्रकारे उदयमां आवे, भोगवाय.

(आ) 'त्रुट्युं' शब्दनो अर्थ 'बे भाग थवा' एम केटलाक करे छे; पण तेम नथी. जेवी रीते 'देवुं त्रुट्युं' शब्दनो 'देवानो निकाल थयो, देवुं दई दीधुं' ना अर्थमां वपराय छे तेवी रीते 'आयुष् त्रूट्युं' शब्दोनो आशय जाणवो.

(इ) 'सोपक्रम', शिथिल=एकदम भोगवी लेवाय ते.

(ई) निरुपक्रम=निकाचित. देव, नारक, युगल, ६३ शलाका पुरुष ने चरम शरीरिने ते होय छे.

(उ) प्रदेशोदय=प्रदेशने मोढा आगळ लई वेदवुं ते 'प्रदेशोदय.' प्रदेशोदयथी ज्ञानीओ कर्मनो क्षय अंतर्मुहूर्त्तमां करे छे.

(ऊ) 'अनपवर्त्तन'; अने 'अनुदीरणा' ए बेनो अर्थ मळतो छे; तथापि तफावत ए छे के 'उदीरणा'मां आत्मानी शक्ति छे, अने 'अपवर्त्तन'मां कर्मनी शक्ति छे.

(ए) आयुष् घटे छे, एटले थोडा काळमां भोगवाय छे.

१५. अशातामा उदयमां ज्ञाननी कसोटी थाय छे.

१६. परिणामनी धारा ए 'थरमोमीटर' समान छे.

(७) अषाड सुद १० शनि. १९५६.

१. असमंजसता=अमळतापणुं (अस्पष्टता.) २. विषम=जेम तेम. ३. आर्य=उत्तम. 'आर्य' शब्द श्री जिनेश्वरने, मुमुक्षुने तथा आर्यदेशना रहेनारने माटे वपराय. ४. निक्षेप=प्रकार, भेद, विभाग.

२. भयंत्राण=भयथी तारनार; शरण आपनार.

३. हेमचंद्राचार्य ए धंधुकाना मोढ वाणीआ हता. ते महात्माए कुमारपाल राजापासे पोताना कुटुंबने माटे एक क्षेत्र पण माग्युं न होतुं, तेम पोते पण राजअन्नकोळीओ लीधो नहोतो एम श्री कुमारपाले ते महात्माना अग्निदाह वखते कह्युं हतुं. तेओना गुरु देवचन्द्रसूरि हता.

(८) अषाड सुद ११ रवि. १९५६.

१. सरस्वती=जिनवाणीनी धारा.

२. (१) बांधनार, (२) बांधवाना हेतु, (३) बंधन अने (४) बंधनना फळथी आखा संसारनो प्रपंच रह्यो छे एम श्री जिनेंद्रे कह्युं छे.

३. बनारसीदास ए श्री आग्राना दशा श्रीमाली वाणीआ हता.

(९) अषाड सुद १२ सोम. १९५६.

१. श्री यशोविजयजीए 'योगदृष्टि' ग्रंथमां—
छट्ठी 'कान्तादृष्टि'ने विषे बताव्युं छे के वीतरागस्वरूप शिवाय बीजे क्यांय स्थिरता थई शके नहीं; वीतरागसुख शिवाय बीजुं सुख निःसत्व लागे छे, आडंबररूप लागे छे.
पांचमी स्थिरादृष्टिमां बताव्युं छे के वीतरागसुख प्रियकारी लागे. आठमी 'परादृष्टिमां' बताव्युं छे के 'परमावगाढ सम्यक्त्व' संभवे, ज्यां केवळज्ञान होय.

२. पातंजलयोगना कर्त्ताने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं नहोतुं, पण हरिभद्रसूरिए तेमने मार्गानुसारी गणेल छे.

३. हरिभद्रसूरिए ते दृष्टिओ अध्यात्मपणे संस्कृतमां वर्णवी छे; अने ते उपरथी यशोविजयजी महाराजे ढाळरूपे गुजरातीमां करेल छे.

४. योगदृष्टिमां छए भाव (औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक, अने सान्निपातिक) नो समावेश थाय छे. ए छ भाव जीवना स्वतत्त्वभूत छे.

५. ज्यांसुधी यथार्थ ज्ञान थाय नहीं त्यांसुधी मौन रहेवुं ठिक छे. नहींतो अनाचारदोष लागे छे. आ विषयपरत्वे उत्तराध्ययनसूत्रमां 'अनाचार' नामे अधिकार छे.

६. ज्ञानीना सिद्धांतमां फेर होई शके नहीं.

७. सूत्रो आत्मानो स्वधर्म प्राप्त करवा माटे करवामां आव्यां छे; पण तेनुं रहस्य यथार्थ समजवामां आवतुं नथी तेथी फेर लागे छे.

८. दिगम्बरनां तीव्र वचनोने लीधे कंई रहस्य समजी शकाय छे. श्वेताम्बरनी मॉळाशने लीधे रस ठंडातो गयो.

९. 'शाल्मलि वृक्ष,' नरकने विषेनी अशाता दर्शाववा आ शब्द वपराय छे. खीजडाने मळतुं ते वृक्ष थाय छे. भावथी संसारी आत्मा ते वृक्षरूप छे. आत्मा परमार्थे (अध्य-वसाय वर्जेता) नंदनवन समान छे.

१०. जिनमुद्रा बे प्रकारे छे;-कायोत्सर्ग अने पद्मासन. प्रमाद टाळवाने बीजां घणां आसनो कर्यां छे, पण मुख्यत्वे आ बे आसनो छे.

११. *प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रसन्नं, वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः;
करयुगमपि यत्ते शस्त्रसंबंधवंध्यं, तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव.

१२. चैतन्यलक्ष करनारनी बलिहारी छे!

१३. तीर्थ=तरवानो मार्ग.

१४. अरनाथ प्रभुनी स्तुति महात्मा आनंदघनजीए करेल छे. श्री आनंदघनजीनुं बीजुं नाम 'लाभानंदजी' हतुं. तेओ तपगच्छमां थया छे.

१५. वर्त्तमानमां लोकोने ज्ञान तथा शांति साथे संबंध रह्यो नथी. मताचार्ये मारी नाख्यां छे.

१६. आशय आनंदघनतणो, अति गंभीर उदार;
बालक बांह पसारीने, कहे उदधि विस्तार.

१७. त्रण प्रकारे ईश्वरपणुं जणाय छेः-(१) जड ते जडात्मकपणे वर्त्ते छे. (२) चैतन्य-संसारी जीवो विभावात्मकपणे वर्त्ते छे. (३) सिद्ध-शुद्ध चैतन्यात्मकपणे वर्त्ते छे.

(१०) अषाड सुद १३ सोम. १९५६.

१. 'भगवती आराधना' जेवां पुस्तको मध्यमउत्कृष्टभावना महात्माओने तथा मुनिराजोने योग्य छे. एवा ग्रंथो तेथी ओछी पदवि (योग्यता) वाळा साधु, श्रावकने आपवाथी कृतघ्न थाय छे; तेओने तेथी उलटो अलाभ थाय छे. खरा मुमुक्षुओने ज ए लाभकारी छे.

२. मोक्षमार्ग ए अगम्य तेम ज सरळ छे.

अगम्यः-मात्र विभावदशाने लीधे मतभेदो पडवाथी कोई पण स्थळे मोक्षमार्ग समजाय तेवुं रह्युं नथी अने तेने लीधे वर्त्तमानमां अगम्य छे. माणस मरी गया पछी अज्ञान-वडे नाड झालीने वैदां करवानां फळनी बराबर मतमेद पडवानुं फळ थयुं छे, अने तेथी मोक्षमार्ग समजाय तेम नथी.

* जुओ आंक ८५७. म. कि.

सरळः--मतभेदनी कडाकूट जवा दई, जो आत्मा अने पुद्गलबन्ने वहेंचणी करी, शांतपणे अनुभववामां आवे तो मोक्षमार्ग सरळ छे; अने दूर नथी.

३. अनेक शास्त्रो छे. ते एकेक वांच्या पछी तेनो निर्णय करवा माटे बेसवामां आवे तो ते हिसाबे पूर्वादिकनुं ज्ञान अने केवळज्ञान केमे प्राप्त थाय नहीं अर्थात् कोई दिवस पार आवे नहीं; पण तेनी संकलना छे, ने ते श्रीगुरुदेव बतावे छे के अंत-र्मुहूर्तमां महात्माओ प्राप्त करे छे.

४. आ जीवे नवपूर्वसुधी ज्ञान मेळव्युं तोपण कांई सिद्धि थई नहीं तेनुं कारण विमुखदशाए परिणमवानुं छे. जो सन्मुखदशाए परिणम्या होय तो तत्क्षण मुक्त थाय.

५. परमशांत रसमय 'भगवती आराधना' जेवा एक ज शास्त्रनुं सारी रीते परिणमन थयुं होय तो बस छे.

६. आ आरा (काळ) मां संघयण सारां नहीं, आयुष् ओछां, दुर्भिक्ष मरकी जेवा संजोगो वारंवार बने, तेथी अयुष्नी कांई निश्चयपूर्वक स्थिति नथी, माटे जेम बने तेम आत्महितनी वात तरत ज करवी. मुल्तवी राखवाथी भूलथाप खाई बेसाय छे. आवा सांकडा समयमां तो छेक ज सांकडो मार्ग (**परम शांत थवुं ते**) ग्रहण करवो. तेथी ज उपशम, क्षयोपशम अने क्षायिकभाव थाय छे.

७. कामादि कोईक ज वार आपणाथी हारी जाय छे; नहीं तो घणीवार आपणने थाप मारी दे छे. एटला माटे बनतांसुधी जेम बने तेम त्वराथी तेने तजवाने अप्रमादी थवुं, जेम वहेलुं थवाय तेम थवुं. शूरवीरपणाथी तेम तरत थवाय छे.

८. वर्त्तमानमां दृष्टिरागानुसारी माणसो विशेषपणे छे.

९. जो खरा वैद्यनी प्राप्ति थाय तो देहनो विधर्म सहेजे औषधिवडे विधर्ममांथी नीकळी स्वधर्म पकडे छे. तेवी रीते जो खरा गुरुनी प्राप्ति थाय, तो आत्मानी शांति घणी ज सुगमताथी अने सहेजमां थाय छे.

१०. क्रिया करवामां तत्पर एटले अप्रमादी थवुं, प्रमाद करीने उलटा कायर थवुं नहीं.

११. सामायिक=संयम. प्रतिक्रमण=आत्मानी क्षमापना, आराधना. पूजा=भक्ति.

१२. जिनपूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि केवा अनुक्रमे करवां ते कहेतां एक पछी एक प्रश्न उठे; अने तेनो केमे पार आवे तेम नथी. ज्ञानीनी आज्ञाप्रमाणे ज्ञानीए बताव्या-प्रमाणे गमे ते क्रियामां वर्त्ते तोपण ते मोक्षना मार्गमां छे.

१३. अमारी आज्ञाए वर्त्ततां जो पाप लागे तो ते अमे अमारे शिर ओढी लईए छीए; कारण के जेम रस्ताउपर कांटा पड्या होय ते कोईने वागशे एम जाणी मार्गे चालतां त्यांथी उपाडी लई कोईने ज्यां न लागे तेवी बीजी एकांत जगोए कोई मूके तो कांई तेणे राज्यनो गुन्हो कर्यो कहेवाय नहीं; तेम मोक्षनो शांत मार्ग बतावता पाप केम संभवे?

१४. ज्ञानीनी आज्ञाए चालतां ज्ञानीगुरुए क्रियाआश्री योग्यतानुसार कोईने कांई बताव्युं होय अने कोईने कांई बताव्युं होय तेथी मोक्षनो मार्ग अटकतो नथी.

१५. **यथार्थ स्वरूप समज्याविना अथवा पोते जे बोले छे ते परमार्थे यथार्थ छे के केम ते जाण्याविना, समज्याविना जे वक्ता थाय छे ते अनंत संसारने वधारे छे,** माटे ज्यांसुधी आ समजवानी शक्ति थाय नहीं त्यांसुधी मौन रहेवुं सारूं छे.

१६. वक्ता थई एक पण जीवने यथार्थ मार्ग पमाडवाथी तीर्थंकरगोत्र बंधाय छे अने तेथी उलटुं करवाथी महामोहनीय कर्म बंधाय छे.

१७. जो के हमणां ज तमो सर्वने मार्गे चढावीए, पण भाजनना प्रमाणमां वस्तु मूकाय छे. नहींतो जेम हमणां वासणमां भारे वस्तु मूकवाथी वासणनो नाश थाय, तेम थाय.

१८. तमारे कोई प्रकारे डरवा जेवुं नथी; कारण के तमारे माथे अमारा जेवा छे. तो हवे तमारा पुरुषार्थने आधीन छे. जो तमे पुरुषार्थ करशो तो मोक्ष थवो दूर नथी. मोक्ष प्राप्त कर्यो ते बधा महात्मा प्रथम आपणा जेवा मनुष्य हता; अने केवळज्ञान पाम्या पछी पण (सिद्ध थया पहेलां) देह तो तेनो ते ज रहे छे; तो पछी हवे ते देहमांथी ते महात्माओए शुं काढी नाख्युं ते समजीने काढी नाखवानुं करवानुं छे. तेमां डर शानो? वादविवाद के मतभेद शानो? मात्र शांतपणे ते ज उपासवायोग्य छे.

(११) अषाड सुद १४ बुध. १९५६.

१. प्रथमथी आयुध बांधतां, ने वापरतां शीख्या होईए तो लडाई वखते ते काम आवे छे; तेम प्रथमथी वैराग्यदशा प्राप्त करी होय तो अवसर आव्ये काम आवे छे; आराधना थई शके छे.

२. यशोविजयजीए ग्रंथो रचतां एटलो उपयोग राख्यो हतो के ते प्रायः कोई ठेकाणे चूक्या न होता. दोढसो गाथाना स्तवन मध्ये अर्थकर्त्ताए 'रासभवृत्ति' एटले पशुतुल्य गणेल छे; पण तेनो अर्थ तेम नथी. 'रासभवृत्ति' एटले गधेडाने सारी केळवणी आपी होय तोपण जातिस्वभावने लीधे रस्या देखीने लोटी जवानुं तेने मन थाय छे; तेम वर्त्तमानकाळे बोलतां भविष्यकाळमां कहेवानुं बोली जवाय छे ते.

३. 'भगवती आराधना' मध्ये लेश्याना अधिकारे दरेकनी स्थिति वगेरे सारी रीते बतावेल छे.

४. परिणाम त्रण प्रकारनां छे; हीयमान, वर्द्धमान अने समवस्थित. प्रथमनां बे छद्मस्थने होय छे, अने छेल्लुं समवस्थित (अचल अकंप शैलेशीकरण) केवळज्ञानीने होय छे.

५. तेरमे गुणस्थानके लेश्या तथा योगनुं चलाचलपणुं छे, तो समवस्थित परिणाम केम संभवे तेनो आशयः—सक्रिय जीवने अबंध अनुष्ठान होतुं नथी. १३ मा गुणस्थानके केवळीने पण योगने लीधे सक्रियता छे, अने तेथी बंध छे; पण बंध अबंधबंध गणाय छे. १४ मा गुणस्थानके आत्माना प्रदेश अचल थाय छे. पांजरामांहेना सिंहना दृष्टान्तेः—जेम

पांजरामां सिंह जाळीने अडतो नथी, अने स्थिर थई बेसी रहे छे ने कांई क्रिया करतो नथी, तेम अक्रिय छे. ज्यां प्रदेशनुं अचलपणुं छे त्यां अक्रियता गणाय.

६. 'चलई सो बंधे', योगनुं चलायमान थवुं ते 'बंध'; योगनुं स्थिर थवुं ते अबंध.

७. ज्यारे अबंध थाय त्यारे मुक्त थया कहेवाय.

८. उत्सर्गमार्ग एटले यथाख्यातचारित्र, जे निरतिचारवाळुं छे.
उत्सर्गमां त्रण गुप्ति समाय छे; अपवादमां पांच समिति समाय छे. उत्सर्ग अक्रिय छे. अपवाद सक्रिय छे. उत्तम उत्सर्गमार्ग छे; ने तेथी जे उतरतो ते अपवाद छे. चौदमुं गुणस्थानक उत्सर्ग छे; तेथी नीचेनां गुणस्थानको एक बीजानी अपेक्षाए अपवाद छे.

९. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय ने योगथी एक पछी एक अनुक्रमे बंध पडे छे.

१०. मिथ्यात्व एटले यथार्थ न समजाय ते. मिथ्यात्वथी विरतिपणुं न थाय, विरतिने अभावे कषाय थाय, कषायथी योगनुं चलायमानपणुं थाय छे. योगनुं चलायमानपणुं 'आश्रव,' अने तेथी उलटुं ते 'संवर.'

११. दर्शनमां भूल थवाथी ज्ञानमां भूल थाय छे. जेवा रसथी ज्ञानमां भूल थाय तेवी रीते आत्मानुं वीर्य स्फुराय, अने ते प्रमाणे परमाणु ग्रहण करे ने तेवोज बंध पडे; अने ते प्रमाणे विपाक उदयमां आवे. बे आंगळीना आंकडीआ पाड्या ते रूप उदय, ने ते मरडवा ते रूप भूल, ते भूलथी दुःख थाय छे एटले बंध बंधाय छे. पण मरडवारूप भूल जवाथी आंकडा सेहेजे विपाक आपी निर्जरे छे अने नवो बंध थतो नथी.

१२. दर्शनमां भूल थाय तेनुं उदाहरणः—जेम दीकरो बापना ज्ञानमां तेम ज बीजाना ज्ञानमां देहअपेक्षाए एक ज छे, बीजी रीते नथी; परंतु बाप तेने पोतानो दीकरो करी माने छे, ते ज भूल छे. ते ज दर्शनमां भूल अने तेथी जो के ज्ञानमां फेर नथी तो पण भूल करे छे; ने तेथी उपर प्रमाणे बंध पडे छे.

१३. जो उदयमां आव्या पहेलां रसमां मॉळाश करी नाखवामां आवे तो आत्मप्रदेशथी कर्म खरी जई निर्जरा थाय, अथवा मंद रसे उदय आवे.

१४. ज्ञानीओ नवी भूल करता नथी, माटे ते अबंध थई शके छे.

१५. ज्ञानीओए मानेलुं छे के देह पोतानो नथी; ते रहेवानो पण नथी; ज्यारे त्यारे पण तेनो वियोग थवानो छे. ए भेदविज्ञानने लईने हमेशां नगारां वागतां होय तेवी रीते तेना काने पडे छे, अने अज्ञानीना कान बहेरा होय छे एटले ते जाणतो नथी.

१६. ज्ञानी देह जवानो छे एम समजी तेनो वियोग थाय तेमां खेद करता नथी. पण जेवी रीते कोईनी वस्तु लीधी होय ने तेने पाछी आपवी पडे तेम देहने उल्लासथी पाछो सोंपे छे; अर्थात् देहमां परिणमता नथी.

१७. देह अने आत्मानो भेद पाडवो ते 'भेदज्ञान.' ते ज्ञानीनो तेजाब छे. ते तेजाबथी देह अने आत्मा जूदा पडी शके छे. ते विज्ञान थवा माटे महात्माओए सकळ शास्त्रो रच्यां

छे. जेम तेजाबथी सोनुं तथा कथिर जूदां पडे छे, तेम ज्ञानीना भेदविज्ञानरूप तेजाबथी स्वाभाविक आत्मद्रव्य अगुरुलघु स्वभाववाळुं होईने प्रयोगी द्रव्यथी जूदुं पडी स्वधर्ममां आवे छे.

१८. बीजां उदयमां आवेलां कर्मोनुं आत्मा गमे तेम समाधान करी शके, पण वेदनीयकर्ममां तेम थई शके नहीं; ने ते आत्मप्रदेशे वेदवुं ज जोईए; ने ते वेदतां मुश्केलीनो पूर्ण अनुभव थाय छे. त्यां जो भेदज्ञान संपूर्ण प्रगट थयुं न होय तो आत्मा देहाकारे परिणमे, एटले देह पोतानो मानी लई वेदे छे, अने तेने लईने आत्मानी शांतिनो भंग थाय छे. आवा प्रसंगे जेमने भेदज्ञान संपूर्ण थयुं छे एवा ज्ञानीओने अशातावेदनी वेदतां निर्जरा थाय छे, ने त्यां ज्ञानीनी कसोटी थाय छे. एटले बीजा दर्शनोवाळा त्यां ते प्रमाणे टकी शकता नथी, ने ज्ञानी एवी रीते मानीने टकी शके छे.

१९. पुद्गलद्रव्यनी दरकार राखवामां आवे तोपण ज्यारे त्यारे चाल्युं जवानुं छे, अने जे पोतानुं नथी ते पोतानुं थवानुं नथी; माटे लाचार थई दीन बनवुं ते शा कामनुं?

२०. 'योगापयडिपयेशा,'–योगथी प्रकृति ने प्रदेश बंधाय छे.

२१. स्थिति तथा अनुभाग कषायथी बंधाय छे.

२२. आठ विध, सात विध, छ विध, ने एक विध ए प्रमाणे बंध बंधाय छे.

(१२) अषाड सुद १५ गुरु. १९५६.

१. ज्ञानदर्शननुं फळ यथाख्यातचारित्र, अने तेनुं फळ निर्वाण; अने तेनुं फळ अव्याबाध सुख.

(१३) अषाड वद १ शुक्र. १९५६.

१. देवागमस्तोत्र जे महात्मा समंतभद्राचार्ये (जेना नामनो शब्दार्थ 'कल्याण जेने मान्य छे,' एवो थाय छे) बनावेल छे; अने तेना उपर दिगम्बर तथा श्वेताम्बर आचार्योए टीका करी छे. ए महात्मा दिगम्बरआचार्य छतां तेओ कृत उपरनुं स्तोत्र श्वेताम्बर आचार्योने पण मान्य छे. ते स्तोत्रमां प्रथम नीचेनो श्लोक छेः—

* देवागमनभोयानचामरादिविभूतयः,
मायाविष्वपि दृश्यंते, नातस्त्वमसि नो महान्.

आ श्लोकनो भावार्थ एवो छे के देवागमन (देवताओनुं आववुं थतुं होय), आकाशगमन (आकाशगमन थई शकतुं होय), चामरादि विभूति (चामर वगेरे विभूति होय—समवसरण थतुं होय ए आदि) ए बधां तो मायावीओनामां पण जणाय छे, (मायाथी अर्थात् युक्तिथी पण थई शके) एटले तेटलाथी ज आप अमारा महत्तम नथी. (तेटला उपरथी कांई तीर्थंकर वा जिनेन्द्रदेवनुं अस्तित्व मानी शकाय नहीं. एवी विभूति

* जुओ आंक ८६८. म. कि.

आदिनुं कांई अमारे काम नथी. अमे तो तेनो त्याग कर्यो छे.)
आ आचार्ये केम जाणे गुफामांथी नीकळतां तीर्थंकरनुं कांडुं पकडी उपर प्रमाणे निर-पेक्षपणे वचनो कह्यां होय एवो आशय आ स्थळे बताववामां आव्यो छे.

२. आप्तनां अथवा परमेश्वरनां लक्षणो केवां होवां होवां जोईए ते संबंधी 'तत्त्वार्थ-सूत्र'नी टीकामां पहेली गाथा नीचेप्रमाणे छे:—

* मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्,
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वंदे तद्गुणलब्धये.

सारभूत अर्थ:—
'मोक्षमार्गस्य नेतारं', (मोक्षमार्गे लई जनारने) एम कहेवाथी 'मोक्ष'नुं 'अस्तित्व', मार्ग, अने लई 'जनार'ए त्रण वात स्वीकारी. जो मोक्ष छे तो तेनो मार्ग पण जोईए; अने जो मार्ग छे तो तेनो द्रष्टा पण जोईए; अने जे द्रष्टा होय ते ज मार्गे लई जई शके. मार्गे लई जवानुं कार्य निराकार न करी शके, पण साकार करी शके, अर्थात् मोक्षमार्गनो उपदेश साकार उपदेष्टा एटले देहस्थितिए जेणे मोक्ष अनुभव्यो छे एवा करी शके. 'भेत्तारं कर्मभूभृतां' (कर्मरूप पर्वतने भेदवावाळा) अर्थात् कर्मरूपी पर्वतो तोड्याथी मोक्ष होई शके; एटले जेणे देहस्थितिए कर्मरूपी पर्वतो तोड्या छे ते साकार उपदेष्टा छे; तेवा कोण? वर्त्तमानदेहे जे जीवन्मुक्त छे ते. जे कर्मरूपी पर्वतो तोडी मुक्त थया छे तेने फरी कर्मनुं होवापणुं न होय; माटे केटलाक माने छे, तेम मुक्त थया पछी देह धारण करे एवा जीवन्मुक्त न जोईए. 'ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां' (विश्व-तत्त्वना जाणनार) एम कहेवाथी एम दर्शाव्युं के आप्त केवा जोईए के जे समस्त विश्वना ज्ञायक होय. 'वंदे तद्गुणलब्धये' (तेना गुणनी प्राप्तिने अर्थे तेने वंदना करूं छु). अर्थात् आवा गुणवाळा पुरुष होय ते ज आप्त छे; अने तेज वंदन योग्य छे.

३. मोक्षपद बधा चैतन्यने सामान्य जोईए. एक जीव आश्रयी नहीं. एटले ए चैतन्यनो सामान्य धर्म छे. एक जीवने होय अने बीजा जीवने न होय एम बने नहीं.

४. 'भगवती आराधना' उपर श्वेताम्बरआचार्योए टीका करेल छे ते पण ते ज नामे कहेवाय छे.

५. करणानुयोग के द्रव्यानुयोगमां दिगम्बर अने श्वेताम्बर वच्चे तफावत नथी. मात्र बाह्य व्यवहारमां तफावत छे.

६. करणानुयोगमां गणिताकारे सिद्धान्तो मेळवेला छे. तेमां तफावत होवानो संभव नथी.

७. कर्मग्रन्थ मुख्यपणे करणानुयोगमां समाय.

८. 'परमात्मप्रकाश' दिगम्बरआचार्यनो बनावेलो छे. ते उपर टीका थई छे.

९. निराकुळता ए सुख छे. संकल्प ए दुःख छे.

* जुओ आंक ७८०. म. कि.

१०. कायक्लेश तप करतां छतां महामुनिने निराकुळता अर्थात् स्वस्थता जोवामां आवे छे. मतलब जेने तपादिकनी आवश्यकता छे अने तेथी तपादिक कायक्लेश करे छे, छतां स्वास्थ्यदशा अनुभवे छे; तो पछी कायक्लेश करवानुं रह्युं नथी एवा सिद्धभगवानने निराकुळता केम न संभवे?

११. देह करतां चैतन्य साव स्पष्ट छे. देहगुणधर्म जेम जोवामां आवे छे, तेम आत्मगुणधर्म जोवामां आवे तो देह उपरनो राग नष्ट थई जाय. आत्मवृत्ति विशुद्ध थतां बीजा द्रव्यने संयोगे आत्मा देहपणे (विभावे) परिणम्यानुं जणाई रहे.

१२. अत्यंत चैतन्यनुं स्थिर थवुं ते 'मुक्ति.'

१३. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग एना अभावे अनुक्रमे योग स्थिर थाय छे.

१४. पूर्वना अभ्यासने लीधे जे झोकुं आवी जाय छे ते 'प्रमाद.'

१५. योगने आकर्षण करनार नहीं होवाथी एनी मेळे स्थिर थाय छे.

१६. राग अने द्वेष ए आकर्षण.

१७. संक्षेपमां ज्ञानीनुं एम कहेवुं छे के पुद्गलथी चैतन्यनो वियोग कराववो छे; एटले के रागद्वेषथी आकर्षण मटाडवुं छे.

१८. अप्रमत्त थवाय त्यांसुधी जागृत ज रहेवानुं छे.

१९. जिनपूजादि अपवादमार्ग छे.

२०. मोहनीयकर्म मनथी जीताय, पण वेदनीयकर्म मनथी जीताय नहीं; तिर्थंकरआदिने पण वेदवुं पडे; ने बीजाना जेवुं वसमुं पण लागे. परंतु तेमां (आत्मधर्ममां) तेमना उपयोगनी स्थिरता होईने निर्जरा थाय छे, अने बीजाने (अज्ञानीने) बंध पडे छे. क्षुधा, तृषा ए मोहनीय नहीं पण वेदनीयकर्म छे.

२१. * जे पुमान **परधन** हरै, सो अपराधि अज्ञ;
जे **अपनो धन** विवहरै, सो धनपति धर्मज्ञ.–श्रीबनारसीदास.

२२. प्रवचनसारोद्धार ग्रन्थना त्रीजा भागमां जिनकल्पनुं वर्णन कर्युं छे. ए ग्रन्थ श्वेताम्बरी छे. तेमां कह्युं छे के ए कल्प साधनार नीचेना गुणोवाळो महात्मा होवो जोईएः—
१. संघयण. २. धीरज. ३. श्रुत. ४. वीर्य. ५. असंगता.

२३. दिगम्बरदृष्टिमां आ दशा सातमा गुणस्थानकवर्तीनी छे. दिगम्बरदृष्टि प्रमाणे स्थिविरकल्पी अने जिनकल्पी ए नग्न होय; अने श्वेताम्बर प्रमाणे पहेला एटले स्थिविर नग्न न होय. ए कल्प साधनारने श्रुतज्ञान एटलुं बधुं बळवान होवुं जोईए के वृत्ति श्रुतज्ञानाकारे होवी जोईए, विषयाकारे वृत्ति थवी न जोईए. दिगम्बर कहे छे के नागानो एटले

* परधन=जड, परसमय. अपनो धन=पोतानुं धन, चेतन, स्व समय. विवहरै=व्यवहार करे, व्हेंचण करे, विवेक करे.

नग्न स्थितिवाळानो मोक्षमार्ग छे, बाकी तो उन्मत्तमार्ग छे. 'नगाए मोक्खमग्गो, शेषाय उमग्गया सव्वे.' वळी 'नागो ए बादशाहथी आघो' एटले तेथी वधारे चढियातो ए कहेवत प्रमाणे ए स्थिति बादशाहने पूज्य छे.

२४. चेतना त्रण प्रकारनी.—१. कर्मफळचेतना—एकेन्द्रिय जीव अनुभवे छे. २. कर्मचेतना—विकलेन्द्रिय तथा पंचेंद्रिय अनुभवे छे. ३. ज्ञानचेतना—सिद्धपर्याय अनुभवे छे.

२५. मुनिओनी वृत्ति अलौकिक होवी जोईए; तेने बदले हाल लौकिक जोवामां आवे छे.

(१४) अषाड वद २ शनि. १९५६.

१. पर्यायालोचन—एक वस्तुने बीजी रीते विचारवी ते.

२. आत्मानी प्रतीति माटे संकलनाप्रत्ये दृष्टांतः—इंद्रियोमां मन अधिष्ठाता छे; अने बाकीनी पांच इंद्रियो तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तनार छे; अने तेनी संकलना करनार पण एक मन ज छे. मन जो न होत तो कोई कार्य बनत नहीं. वास्तविक रीते कोई इंद्रियनुं कांई वळतुं नथी. मननुं समाधान थाय छे; ते ए प्रमाणे के एक चीज आंखे जोई, ते लेवा पगे चालवा मांड्युं, त्यां जई हाथे लीधी, ने खाधी इत्यादि. ते सघळी क्रियानुं समाधान मने कर्युं छतां ए सघळानो आधार आत्मा उपर छे.

३. जे प्रदेशे वेदना वधारे होय ते मुख्यपणे वेदे छे; अने बाकीना गौणपणे वेदे छे.

४. जगत्मां अभव्यना जीव अनंतगुणा छे. तेथी अनंतगुणा परमाणु एक समये एक जीव ग्रहण करे छे.

५. द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावे बाह्य अने अभ्यंतर परिणमतां परमाणु जे क्षेत्रे वेदनारूपे उदयमां आवे त्यां एकठा थई त्यां ते रूपे परिणमे, अने त्यां जेवा प्रकारनो बंध होय ते उदयमां आवे. परमाणुओ माथामां एकठा थाय तो त्यां माथाना दुःखावाने आकारे परिणमे छे, आंखमां आंखनी वेदनाना आकारे परिणमे छे.

६. एनुं ए ज चैतन्य स्त्रीने स्त्रीरूपे अने पुरुषने पुरुषरूपे परिणमे छे; अने खोराक पण तथाप्रकारना ज आकारे परिणमी पुष्टि आपे छे.

७. परमाणु परमाणुने शरीरमां लडतां कोईए जोयां नथी; पण तेनुं परिणामविशेष जाणवामां आवे छे. तावनी दवा ताव अटकावे छे ए जाणी शकीए छीए, पण अंदर शुं क्रिया थई ते जाणी शकता नथी ए दृष्टान्ते कर्म बंध थतो जोवामां आवतो नथी, पण विपाक जोवामां आवे छे.

८. अनागार=जेने व्रतने विषे अपवाद नहीं ते.

९. अणगार=घरविनाना.

१०. समिति=सम्यक्प्रकारे जेनी मर्यादा रही छे ते मर्यादासहित, यथास्थितपणे प्रवर्त्तवानो ज्ञानीओए जे मार्ग कह्यो छे ते मार्ग प्रमाणे मापसहित प्रवर्त्तवुं ते.

११. सत्तागत=उपशम.

१२. श्रमण भगवान्=साधुभगवान् अथवा मुनि भगवान्.
१३. अपेक्षा=जरूरियात; इच्छा.
१४. सापेक्ष=बीजा कारण, हेतुनी जरूरियात इच्छे छे ते.
१५. सापेक्षत्व अथवा अपेक्षाए=एक बीजाने लईने.

(१५) अषाड वद ३ रवि. १९५६.

१. पार्थिवपाक=सत्ताए थयेलो.
*२. अनुपपन्न=नहीं संभवित; नहीं सिद्ध थवायोग्य.

(१६) रात्रे.

श्रावकआश्रयी, परस्त्रीत्याग तथा बीजा अणुव्रत विषे.

१. ज्यांसुधी मृषा अने परस्त्रीनो त्याग करवामां आवे नहीं त्यांसुधी सर्व क्रिया निष्फळ छे; त्यांसुधी आत्मामां छळ कपट होवाथी धर्म परिणमतो नथी.
२. धर्म पामवानी आ प्रथम भूमिका छे.
३. ज्यांसुधी मृषात्याग अने परस्त्रीत्याग ए गुणो न होय त्यांसुधी वक्ता तथा श्रोता होई शके नहीं.
४. मृषा जवाथी घणी असत्य प्रवृत्ति ओछी थई निवृत्तिनो प्रसंग आवे छे. सहज वातचित करतां पण विचार करवो पडे.
५. मृषा बोलवाथी ज लाभ थाय एवो कांई नियम नथी. जो तेम होय तो साचा बोलनारा करतां जगत्मां असत्य बोलनारा घणा होय छे तो तेओने घणो लाभ थवो जोईए; तेम कांई जोवामां आवतुं नथी; तेम असत्य बोलवाथी लाभ थतो होय तो कर्म साव रद थई जाय, अने शास्त्र पण खोटां पडे.
६. सत्यनो जय छे. प्रथम मुश्केली जणाय, पण पाछळथी सत्यनो प्रभाव थाय ने तेनी असर सामा माणस तथा संबंधमां आवनार उपर थाय.
७. सत्यथी मनुष्यनो आत्मा स्फटिक जेवो जणाय छे.

(१७) अषाड वद ४ सोम. १९५६.

१. दिगम्बरसंप्रदाय एम कहे छे के आत्मामां 'केवळज्ञान' शक्ति रूपे रह्युं छे.*
२. श्वेताम्बरसंप्रदाय केवळज्ञान सत्तारूपे रह्यानुं कहे छे.
३. 'शक्ति'शब्दनो अर्थ 'सत्ता'थी वधारे गौण थाय छे.
४. शक्तिरूपे छे एटले आवरणथी रोकायुं नथी, जेम जेम शक्ति वधती जाय एटले तेना उपर जेम जेम प्रयोग थता जाय, तेम तेम ज्ञान विशुद्ध थतुं जई केवळज्ञान प्रगट थाय.
५. सत्तामां एटले आवरणमां रह्युं छे एम कहेवाय.
६. सत्तामां कर्मप्रकृति होय ते उदयमां आवे ए शक्तिरूपे न कहेवाय.

* जुओ पृ० ६८८ कलम १९०. म. कि.

७. सत्तामां केवळज्ञान होय अने आवरणमां न होय एम न बने. भगवती आराधना जोशो.

८. कान्ति, दीप्ति, शरीरनुं बळवुं, खोराकनुं पाचन थवुं, लोहीनुं फरवुं, उपरनां प्रदेशोनुं नीचे आववुं, नीचेनानुं उपर जवुं (विशेष कारणथी समुद्घातादि), रताश, ताव आववो, ए बधी तेजस् परमाणुनी क्रियाओ छे. तेम ज सामान्य रीते आत्माना प्रदेशो उंचा नीचा थया करे एटले कंपायमान रहे ते पण तेजस् परमाणुथी.

९. कार्मणशरीर ते ज स्थळे आत्मप्रदेशोने पोताना आवरणना स्वभाव बतावे.

१०. आत्माना आठ रोचक प्रदेश पोतानुं स्थान न बदले. सामान्य रीते स्थूळ नयथी ए आठ प्रदेश नाभिना कहेवाय; सूक्ष्मपणे त्यां असंख्याता प्रदेश कहेवाय.

११. एक परमाणु एक प्रदेशी छतां छ दिशाने स्पर्शे. (चार दिशा तथा एक उर्ध्व अने बीजी अधो ए मळी छ दिशा.)

१२. नियाणुं एटले निदान.

१३. आठ कर्म बधां वेदनीय छे; कारण के बधां वेदाय छे; परंतु लोकप्रसिद्ध वेदवुं थतुं नहीं होवाथी लोकप्रसिद्ध वेदनीयकर्म जूदुं गण्युं छे.

१४. कार्मण, तैजस्, आहारक, वैक्रिय अने औदारिक ए पांच शरीरना परमाणु एकनाएक एटले सरखा छे; परंतु ते आत्माना प्रयोग प्रमाणे परिणमे छे.

१५. अमुक अमुक मगजमांनी नसो दाबवाथी क्रोध, हास्य, घेलछा उत्पन्न थाय छे. शरीरमां मुख्य मुख्य स्थळो जीभ, नाशिका, इत्यादि प्रगट जणाय छे तेथी मानीए छीए, पण आवां सूक्ष्म स्थानो प्रगट जणातां नथी एटले मानता नथी; पण ते जरूर छे.

१६. वेदनीयकर्म ए निर्जरारूपे छे, पण दवा इत्यादि तेमांथी भाग पडावी जाय.

१७. ज्ञानीए एम कह्युं छे के आहार लेतांय दुःख थतुं होय अने छोडतांय दुःख थतुं होय त्यां संलेखना करवी. तेमां पण अपवाद होय छे. ज्ञानीए कांई आत्मघात करवानी भलामण करी नथी.

१८. ज्ञानीए अनंत औषधि अनंता गुणोसंयुक्त जोई छे, परंतु **मोत मटाडी शके एवी औषधि कोई जोवामां आवी नहीं!** वैद्य अने औषधि ए निमित्तरूप छे.

१९. बुद्धदेवने रोग, दरिद्रता, वृद्धावस्था अने मोत ए चार बाबत उपरथी वैराग्य उत्पन्न थयो हतो.

(१८)　　अषाड वद ५ सोम. १९५६.

१. चक्रवर्त्तिने उपदेश करवामां आवे तो ते घडीकमां राज्यनो त्याग करे. पण भिक्षुकने अनंति तृष्णा होवाथी ते प्रकारनो उपदेश तेने असर करे नहीं.

२. जो एक वखत आत्मामां अंतर्वृत्ति स्पर्शी जाय तो अर्धपुद्गलपरावर्त्तन रहे एम तीर्थंकरादिए कह्युं छे. अंतर्वृत्ति ज्ञानथी थाय छे. अंतर्वृत्ति थवानो आभास एनी मेळे (स्वभावे ज) आत्मामां थाय छे. अने तेम थवानी खात्री पण स्वाभाविक थाय छे. अर्थात् आत्मा

'थरमोमीटर' समान छे. ताव होवानी तेम ताव उतरी जवानी खात्री 'थरमोमीटर' आपे छे. जो के 'थरमोमीटर' तावनी आकृति बतावतुं नथी, छतां तेथी प्रतीति थाय छे. तेम अंतर्वृत्ति थयानी आकृति जणाती नथी, छतां अंतर्वृत्ति थई छे एम आत्माने प्रतीति थाय छे. औषध केवी रीते ताव उतारे छे ते कांई बतावतुं नथी, छतां औषधथी ताव खसी जाय छे, एम प्रतीति थाय छे. ए ज रीते अंतर्वृत्ति थयानी एनी मेळे ज प्रतीति थाय छे. आ प्रतीति ते 'परिणामप्रतीति' छे.

* ३. वेदनीय कर्म. *

४. निर्जरानो असंख्यातगुणो उत्तरोत्तर क्रम छे, सम्यक्दर्शन पामेल नथी एवा मिथ्यादृष्टि जीव करतां सम्यक्दृष्टि अनंतगुणी निर्जरा करे छे.†

५. तीर्थंकरादिने गृहस्थाश्रममां वर्त्तता छतां 'गाढ' अथवा 'अवगाढ' सम्यक्त्व होय छे.

६. 'गाढ' अथवा 'अवगाढ' एक ज कहेवाय.

७. केवळीने 'परमावगाढ सम्यक्त्व' होय छे.

८. चोथे गुणस्थानके 'गाढ' सम्यक्त्व अथवा सम्यक्त्व होय छे.

९. क्षायिक सम्यक्त्व अथवा गाढ अवगाढ सम्यक्त्व एक सरखुं छे.

१०. देव, गुरु, तत्त्व, अथवा धर्म अथवा परमार्थने तपासवाना त्रण प्रकार छे:–(१) कस, (२) छेद, अने (३) ताप. एम त्रण प्रकारे कसोटी थाय छे. सोनानी कसोटीने दृष्टान्ते. (धर्मबिंदु ग्रन्थमां छे.) पहेला अने बीजा प्रकारे कोईमां मळतापणुं आवे, परंतु तापनी विशुद्ध कसोटीए शुद्ध जणाय तो ते देव गुरु अने धर्म खरा गणाय.

११. शिष्यनी जे खामीओ होय छे ते जे उपदेशकना ध्यानमां आवती नथी ते उपदेशकर्त्ता न समजवो. आचार्यो एवा जोईए के शिष्यनो अल्प दोष पण जाणी शके अने तेनो यथासमये बोध पण आपी शके.

१२. सम्यक्दृष्टि गृहस्थ एवा होवा जोईए के जेनी प्रतीति दुश्मनो पण करे, एम ज्ञानीओए कह्युं छे. तात्पर्य के एवा निष्कलंक धर्म पाळनारा होवा जोईए.

(१९) रात्रे.

१. अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान वच्चे तफावत. ‡

* श्रोतानी नोंधः—वेदनीय कर्मनी उदयमान प्रकृतिमां आत्मा हर्ष धरे छे, तो केवा भावमां आत्मा भावित रहेवाथी तेम थाय छे ए विषे स्वात्माश्रयी विचारवा श्रीमदे कह्युं. † एम अनंत गुणनिर्जरानो चढिआतो क्रम चौदमा गुण स्थानक सुधी श्रीमदे बताव्यो, अने स्वामिकार्तिकनी शाख आपी. ‡ अवधिज्ञान, अने मनःपर्यवज्ञान संबंधी 'नंदिसूत्र'मां जे वांचवामां आवेल तेथी जूदा थएल अभिप्राय प्रमाणे 'भगवती आराधना'मां वांचवामां आव्यानुं श्रीमदे जणाव्युं. पहेला (अवधि) ज्ञानना कटका थाय छे; हीयमान इत्यादि चोथे गुणस्थानके पण होई शके; स्थूल छे; एटले मनना स्थूल पर्याय जाणी शके; अने बीजुं (मनःपर्यव) ज्ञान स्वतंत्र, खास मनना पर्याय संबंधी शक्तिविशेषने लईने एक जूदा तालुकानी माफक छे; ते अखंड छे, अप्रमत्तने ज थई शके इत्यादि मुख्य मुख्य तफावत कही बताव्यो.

२. परमावधिज्ञान मनःपर्यवज्ञानथी पण वधी जाय छे; अने ते एक अपवादरूपे छे.

(२०) अशाड वद ७ बुध. १९५६.

१. आराधना थवा माटे सघळां श्रुतज्ञान छे अने ते आराधनानुं वर्णन करवा श्रुतकेवळी पण अशक्य छे.

२. ज्ञान, लब्धि, ध्यान अने समस्त आराधनानो प्रकार पण एवो ज छे.

३. गुणनुं अतिशयपणु ज पूज्य छे, अने तेने आधीन लब्धि, सिद्धि इत्यादि छे; अने चारित्र स्वच्छ करवुं ए तेनो विधि छे.

४. दशवैकालिकमां पहेली गाथा,

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संयमो तवो;
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो.

एमां सर्व विधि समाई जाय छे. पण अमुक विधि एम कहेवामां आवेल नथी तेथी एम समजवामां आवे छे के स्पष्टपणे विधि बताव्यो नथी.

५. (आत्माना) गुणातिशयमां ज चमत्कार छे.

६. सर्वोत्कृष्ट शान्त स्वभाव करवाथी परस्पर वैरवाळां प्राणीओ पोतानो वैरभाव छोडी दई शान्त थई बेसे छे, एवो श्री तीर्थंकरनो अतिशय छे.

७. जे कांई सिद्धि, लब्धि इत्यादि छे ते आत्माना जागृतपणामां एटले आत्माना अप्रमत्त स्वभावमां छे. ते बधी शक्तिओ आत्माने आधीन छे. आत्माविना कांई नथी. ए सर्वेनुं मूळ सम्यक् ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे.

८. अत्यंत लेश्याशुद्धि होवाने लीधे परमाणु पण शुद्ध होय छे, सात्त्विक असात्त्विक झाड नीचे बेसवाथी जणाती असरना दृष्टान्ते.

९. लब्धि सिद्धि साची छे; अने ते अपेक्षावगरना महात्माने प्राप्त थाय छे, जोगी वैरागी एवा मिथ्यात्वीने प्राप्त थती नथी. तेमां पण अनंत प्रकार होईने अपवाद छे. एवी शक्तिओवाळा महात्मा जाहेरमां आवता नथी; तेम बतावता पण नथी. जे कहे छे तेनी पासे तेवुं होतुं नथी.

१०. लब्धि क्षोभकारी अने चारित्रने शिथिल करनारी छे. लब्धि आदि, मार्गेथी पडवानां कारणो छे. तेथी करी ज्ञानीने तेनो तिरस्कार होय छे. ज्ञानीने ज्यां लब्धि, सिद्धि आदिथी पडवानो संभव उत्पन्न थाय छे त्यां ते पोताथी विशेष ज्ञानीनो आश्रय शोधे छे.

११. आत्मानी योग्यतावगर ए शक्ति आवती नथी. आत्माए पोतानो अधिकार वधारवाथी ते आवे छे.

१२. देह छूटे छे ते पर्याय छूटे छे; पण आत्मा आत्माकारे अखंड उभो रहे छे; पोतानुं कांई जतुं नथी; जे जाय छे ते पोतानुं नथी एम प्रत्यक्ष ज्ञान थाय नहीं त्यांसुधी मृत्युनो भय लागे छे.

१३. गुरु गणधर गुणधर अधिक, प्रचुर परंपर और;
व्रततप धर, तनु नगन धर, वंदौ वृष शिरमोर.–स्वामिकार्तिक.

प्रचुर=छुटक छुटक; विरला. वृष=धन. शिरमोर=माथाना मुकुट.

१४. अवगाढ=मजबूत. परमावगाढ=उत्कृष्टपणे मजबूत. अवगाह*=एक परमाणु प्रदेश रोके ते, व्यापवुं. श्रावक=ज्ञानीना वचनना श्रोता; ज्ञानीनुं वचन श्रवण करनार. दर्शन ज्ञान वगर, क्रिया करतां छतां श्रुतज्ञान वांचतां छतां श्रावक साधु होई शके नहीं. उदयिक भावे ते श्रावक साधु कहेवाय, परिणामिकभावे कहेवाय नहीं. स्थविर=स्थिर, जामेल.

१५. स्थविरकल्प=जे साधु वृद्ध थयेल छे तेओने शास्त्रमर्यादाए वर्त्तवानो, चालवानो ज्ञानीओए मुकरर करेलो, बांधेलो, नक्की करेलो मार्ग, नियम.

१६. जिनकल्प=एकाकी विचरनारा साधुओने माटे कल्पेलो अर्थात् बांधेलो, मुकरर करेलो जिनमार्ग वा नियम.

(२१) अशाड वद ८ गुरु. १९५६.

१. सर्व धर्म करतां जैनधर्म उत्कृष्ट दयाप्रणीत छे. दयानुं स्थापन जेवुं तेमां करवामां आव्युं छे, तेवुं बीजा कोईमां नथी. "मार" ए शब्द ज "मारी" नाखवानी सज्जड छाप तीर्थंकरोए आत्मामां मारी छे. ए जगोए उपदेशनां वचनो पण आत्मामां सर्वोत्कृष्ट असर करे छे. श्री जिननी छातीमां जीवहिंसाना परमाणु ज न होय एवो अहिंसाधर्म श्री जिननो छे. जेनामां दया न होय ते जिन न होय. जैनने हाथे खुन थवाना बनावो प्रमाणमां अल्प हशे. जैन होय ते असत्य बोले नहीं.

२. जैन शिवाय बीजा धर्मोने मुकाबले अहिंसामां बौद्ध पण चढी जाय छे. ब्राह्मणोनी यज्ञादि हिंसक क्रियानो नाश पण श्री जिने अने बुद्धे कर्यो छे, जे हजु सुधी कायम छे.

३. ब्राह्मणो यज्ञादि हिंसक धर्मवाळा होवाथी श्री जिने तथा श्री बुद्धे सखत शब्दो वापरी धिक्कार्या छे, ते यथार्थ छे.

४. ब्राह्मणोए स्वार्थबुद्धिथी ए हिंसक क्रिया दाखल करी छे. श्री जिने तेमज श्री बुद्धे जाते वैभवत्याग करेलो होवाथी तेओए निःस्वार्थ बुद्धिए दयाधर्मनो उपदेश करी हिंसक क्रियानो विच्छेद कर्यो. जगत्सुखमां तेओनी स्पृहा नहोती.

५. हिंदुस्थानना लोको एक वखत एक विद्यानो अभ्यास एवी रीते छोडी दे छे के फरीने ते ग्रहण करतां तेओने कंटाळो आवे छे. युरोपियन प्रजामां तेथी उलटुं छे, तेओ तद्दन छोडी देता नथी, पण चालु ज राखे छे. प्रवृत्तिना कारणने लईने वत्तोओछो अभ्यास थई शके ए वात जूदी.

(२२) रात्रे.

१. वेदनीय कर्मनी स्थिति जघन्य बार मुहूर्त्तनी छे; तेथी ओछी स्थितिनो बंध पण कषाय वगर एक समयनो पडे, बीजे समये वेदे, त्रीजे समये निर्जरे.

* जुओ अं. ८३५. म. कि.

२. इर्यापथिकी क्रिया=चालवानी क्रिया.

३. एक समये सात, अथवा आठ प्रकृतिनो बंध थाय छे, खोराक तथा विषनां दृष्टान्ते. जेम खोराक एक जगोएथी लेवामां आवे छे पण तेनो रस दरेक इन्द्रियने पहोंचे छे, ने दरेक इन्द्रियो ज पोते पोतानी शक्तिप्रमाणे ग्रही ते रूपे परिणमे छे, तेमां तफावत पडतो नथी. तेवी ज रीते विष लेवामां आवे, अथवा सर्पदंश थाय तो ते क्रिया तो एक ज ठेकाणे थाय छे, परंतु तेनी असर झेररूपे दरेक इन्द्रियने जूदे जूदे प्रकारे आखे शरीरे थाय छे. आ ज रीते कर्म बांधती वखत मुख्य उपयोग एक प्रकृतिनो होय छे, परंतु तेनी असर अर्थात् वहेंचण बीजी सर्व प्रकृतिओने अन्यो-अन्यना संबंधने लईने मळे छे. जेवो रस तेवुं ग्रहण करवुं थाय. जे भागमां सर्पदंश थाय ते भाग कापी नांखवामां आवे, तो झेर चढतुं नथी; ते ज प्रमाणे प्रकृतिनो क्षय करवामां आवे तो बंध पडतो अटके छे. अने तेने लीधे बीजी प्रकृतिओमां वहेंचण थती अटके छे. बीजा प्रयोगथी जेम चढेलुं झेर पाछुं उतरे छे, तेम प्रकृतिनो रस मंद करी नांखवामां आवे तो तेनुं बळ ओछुं थाय छे. एक प्रकृति बंध करे के बीजी प्रकृतिओ तेमांथी भाग ले; एवो तेमां स्वभाव रहेलो छे.

४. मूळ कर्मप्रकृतिनो क्षय थयो न होय त्यांसुधी उत्तर कर्मप्रकृतिनो बंध विच्छेद थयो होय तोपण तेनो बंध मूळ प्रकृतिमां रहेला रसने लीधे पडी शके छे, ते आश्चर्य जेवुं छे.

५. अनंतानुबंधी कर्मप्रकृतिनी स्थिति ४० कोडाकोडिनी, अने मोहनीय (दर्शनमोहनीय)नी ७० कोडाकोडिनी छे.

(२३) अषाड वद ९ शुक्र. १९५६.

१. आयुनो बंध एक आवता भवनो आत्मा करी शके. तेथी वधारे भवनो न करी शके.

२. कर्मग्रन्थना बंधचक्रमां आठे कर्मप्रकृति जे बतावी छे तेनी उत्तर प्रकृतिओ एक जीव-आश्रयी अपवाद साथे बंध उदयादिमां छे, परंतु तेमां आयु अपवादरूपे छे. ते एवी रीते के मिथ्यात्वगुणस्थानकवर्त्ती जीवने बंधमां चार आयुनी प्रकृतिनो (अपवाद) जणाव्यो छे. तेमां एम समजवानुं नथी के चालता पर्यायमां चारे गतिना आयुनो बंध करे; परंतु आयुनो बंध करवा माटे वर्त्तमानपर्यायमां ए गुणस्थानकवर्त्ती जीवने चार गति खुली छे. तेमां चारमांथी एक एक गतिनो बंध करी शके. ते ज प्रमाणे जे पर्यायमां जीव होय तेने ते आयुनो उदय होय. मतलब के चार गतिमांथी वर्त्तमान एक गतिनो उदय होई शके; ने उदीरणा पण तेनी ज होई शके.

३. जे प्रकृति उदयमां होय ते शिवाय बीजी प्रकृतिनी उदीरणा करी शके; ने तेटलो वखत उदयमान् प्रकृति रोकाई जाय; ने पछी उदयमां आवे.

४. ७० केडाकोडिनो मोटामां मोटो स्थितिबंध छे. तेमां असंख्याता भव थाय. वळी पाछो

तेवो ने तेवो क्रमे क्रमे बंध पडतो जाय. एवा अनंत बंधनी अपेक्षाए अनंताभव कहेवाय; पण अगाउ कह्या प्रमाणे ज भवनो बंध पडे.

(२४) अषाड वद १० शनि. १९५१.

१. विशिष्ट मुख्यपणे मुख्यपणावाचक शब्द छे.

२. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अंतराय ए त्रण प्रकृति उपशमभावमां होई शके ज नहीं, क्षयोपशमभावे ज होय. ए प्रकृति जो उपशमभावे होय तो आत्मा जडवत् थई जाय; अने क्रिया पण करी शके नहीं; अथवा तो तेनाथी प्रवर्त्तन पण थई शके नहीं. ज्ञाननुं काम जाणवानुं छे, दर्शननुं काम देखवानुं छे अने वीर्यनुं काम प्रवर्त्तवानुं छे.

वीर्य बे प्रकारे प्रवर्त्ती शके छे:– १. अभिसंधि. २. अनभिसंधि.

अभिसंधि=आत्मानी प्रेरणाथी वीर्यनुं प्रवर्त्तवुं थाय ते. अनभिसंधि=कषायथी वीर्यनुं प्रवर्त्तवुं थाय ते. ज्ञानदर्शनमां भूल थती नथी. परंतु उदयभावे रहेला दर्शनमोहने लीधे भूल थवाथी एटले औरनुं तौर जणावाथी वीर्यनी प्रवृत्ति विपरीतपणे थाय छे, जो सम्यक्पणे थाय तो सिद्धपर्याय पामे. आत्मा कोई पण वखते क्रिया वगरनो होई शकतो नथी. ज्यां सुधी योगो छे त्यांसुधी क्रिया करे छे ते पोतानी वीर्यशक्तिथी करे छे. ते क्रिया जोवामां आवती नथी; पण परिणाम उपरथी जाणवामां आवे छे. खाधेलो खोराक निद्रामां पची जाय छे एम सवारे उठतां जणाय छे. निद्रा सारी आवी हती इत्यादिक बोलीए छीए ते थयेली क्रिया समजायाथी बोलवामां आवे छे. चाळीश वर्षनी उमरे आंकडा गणतां आवडे तो शुं ते पहेलां आंकडा नहोता एम कांई कही शकाशे? नहीं ज. पोताने तेनुं ज्ञान नहोतुं तेथी एम कहे. आ ज प्रमाणे ज्ञान दर्शननुं समजवानुं छे. आत्मानां ज्ञान दर्शन अने वीर्य थोडां घणां पण खुल्लां रहेतां होवाथी आत्मा क्रियामां प्रवर्त्ती शके. वीर्य चळाचळ हमेशां रह्या करे छे. कर्मग्रंथ वांचवाथी विशेष स्पष्ट थशे. आटला खुलासाथी बहु लाभ थशे.

३. पारिणामिकभावे हमेशा जीवत्वपणुं छे; एटले जीव जीवपणे परिणमे, अने सिद्धत्व क्षायिकभावे होय, कारण के प्रकृतिओनो क्षय करवाथी सिद्धपर्याय पमाय छे.

४. मोहनीयकर्म उदयिकभावे होय.

५. वाणिया अक्षर बोडा लखे छे, पण आंकडा बोडा लखता नथी. त्यां तो बहु स्पष्टपणे लखे छे. तेवी रीते कथानुयोगमां ज्ञानीओए वखते बोडुं लख्युं होय तो भले. बाकी कर्मप्रकृतिमां तो चोकस आंकडा लख्या छे. तेमां जरा तफावत आववा नथी दीधो.

(२५) अषाड वद ११ रवि. १९५६.

१. ज्ञान ए दोरो परोवेल सोय जेवुं छे एम उत्तराध्ययनसूत्रमां कहेलुं छे. दोरो परोवेल सोय खोवाती नथी तेम ज्ञान होवाथी संसारमां भूलुं पडातुं नथी.

(२६) अषाड वद १२ सोम. १९५६.

१. प्रतिहार=तीर्थंकरनुं धर्मराज्यपणुं बतावनार. प्रतिहार=दरवान.

२. स्थूळ, अल्प स्थूळ, तेथी पण स्थूळ, दूर, दूरमां दूर, तेथी पण दूर; एम जणाय छे. अने ते उपरथी सूक्ष्म, सूक्ष्ममां सूक्ष्म आदिनुं ज्ञान कोईकने पण होवानुं सिद्ध थई शके छे.

३. "नग्न" ए "आत्ममग्न"

४. उपहत=हणायला. अनुपहत=नहीं हणायला. उपष्टंभजन्य=आधारभूत. अभिधेय=वस्तुधर्म कही शकाय एवो. पाठांतर=एक पाठनी जगोए बीजो पाठ आवे ते. अर्थांतर=कहेवानो हेतु बदलाई जाय ते. विषम=यथायोग्य नहीं, फेरफारवाळुं, वत्तुंओछुं. आत्मद्रव्य ए सामान्य विशेष उभयात्मक सत्तावाळुं छे. सामान्य चैतनसत्ता ए दर्शन. सविशेष चैतनसत्ता ए ज्ञान.

५. सत्तासमुद्भूत=सम्यक्प्रकारे सत्तानुं उदयभूत थवुं, प्रकाशवुं, स्फुरवुं, जणावुं ते.

६. दर्शन=जगत्ना कोई पण पदार्थनुं भेदरूप रसगंधरहित निराकार प्रतिबिंबित थवुं, तेनुं अस्तित्व जणावुं; निर्विकल्पपणे कांई छे एम आरसीना झळकारानी पेठे सामा पदार्थनो भास थवो ए "दर्शन." विकल्प थाय त्यां "ज्ञान" थाय.

७. दर्शनावरणीय कर्मना आवरणने लईने दर्शन अवगाढपणे अवरायुं होवाथी, चैतनमां मूढता थई गई, अने त्यांथी शून्यवाद शरू थयो.

८. दर्शन रोकाय त्यां ज्ञान पण रोकाय.

९. दर्शन अने ज्ञाननी वहेंचण करवामां आवी छे. ज्ञान दर्शनना कांई कटका थई जूदा पडी शके एम नथी. ए आत्माना गुणो छे. रूपियाना बे अर्धा तेज रीते आठ आना दर्शन, अने आठ आना ज्ञान छे.

१०. तीर्थंकरने एक समये दर्शन अने ते ज समये ज्ञान एम बे उपयोग दिगम्बरमत प्रमाणे छे, श्वेताम्बरमत प्रमाणे नथी. १२ मा गुणस्थानके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अंतराय एम त्रण प्रकृतिनो क्षय एक साथे थाय छे; अने उत्पन्न थती लब्धि पण साथे थाय छे. जो एक समये न थतुं होय तो एकबीजी प्रकृतिए खमवुं जोईए. श्वेताम्बर कहे छे के ज्ञान सत्तामां रहेवुं जोईए, कारण एक समये बे उपयोग न होय; पण दिगम्बरनी तेथी जूदी मान्यता छे.

११. शून्यवाद=कांई नथी एम माननार, ए बौध धर्मनो एक फांटो छे. आयतन=कोई पण पदार्थनुं स्थळ, पात्र. कूटस्थ=अचळ, न खसी शके एवो. तटस्थ=कांठे; ते स्थळे. मध्यस्थ=वच्चमां.

(२७) अषाड वद १३ भोम. १९५६.

१. चयोपचय=जवुं जवुं, पण प्रसंगवशात् आववुं जवुं, गमनागमन. माणसना जवा आववाने लागु पडे नहीं. श्वासोच्छ्वास इत्यादि सूक्ष्म क्रियाने लागु पडे. चयविचय=जवुं आववुं.

२. आत्मानुं ज्ञान ज्यारे चिंतामां रोकाय छे त्यारे नवा परमाणु ग्रहण थई शकता नथी; ने जे होय छे तेनुं जवुं थाय छे तेथी शरीरनुं वजन घटी जाय छे.

३. श्री आचारांगसूत्रना पहेला अध्ययन शस्त्रपरिज्ञामां अने श्री षड्दर्शनसमुच्चयमां मनुष्य अने वनस्पतिना धर्मनी तुलना करी वनस्पतिमां आत्मा होवानुं सिद्ध करी बताव्युं छे, ते एवी रीते के बन्ने जन्मे छे, वधे छे, आहार ले छे, परमाणु ले छे, मूके छे, मरे छे, इत्यादि.

(२८) श्रावण सुद ३ रवि. १९५६.

१. साधु=सामान्यपणे ग्रहवास त्यागी मूळगुणना धारक ते. यति=ध्यानमां स्थिर थई श्रेणि मांडनार. मुनि=जेने अवधि, मनःपर्यव ज्ञान होय तथा केवळज्ञान होय ते. ऋषि=बहु ऋद्धि धारी होय ते. ऋषिना चार भेद. १. राज्य. २. ब्रह्म. ३. देव. ४. परम. राजर्षि=ऋद्धिवाळा. ब्रह्मर्षि=अक्षीण महान् ऋद्धिवाळा. देवर्षि=आकाशगामी देव. परमर्षि=केवळज्ञानी.

(२९) श्रावण सुद १० सोम. १९५६.

१. अभव्य जीव एटले जे जीव उत्कट रसे परिणमे अने तेथी कर्मो बांध्या करे, अने तेने लीधे तेनो मोक्ष न थाय. भव्य एटले जे जीवनुं वीर्य शांतरसे परिणमे ने तेथी नवो कर्मबंध न थतां मोक्ष थाय. जे जीवनो वळांक उत्कट रसे परिणमवानो होय तेनुं वीर्य ते प्रमाणे परिणमे तेथी ज्ञानीना ज्ञानमां अभव्य लाग्या. आत्मानी परमशांत दशाए 'मोक्ष', अने उत्कट दशाए 'अमोक्ष.' ज्ञानीए द्रव्यना स्वभावनी अपेक्षाए भव्य अभव्य कह्या छे. जीवनुं वीर्य उत्कट रसे परिणमतां सिद्धपर्याय पामी शके नहीं एम ज्ञानीए कहेलुं छे. भजना=अंशे; होय वा न होय. वंचक=(मन, वचन, कायाए) छेतरनार.

(३०) श्रा. वद ८ शनि. १९५६.

१. कम्म दवेहिं सम्मम्, संजोगो जो होई जीवस्स;
सो बंधो नायव्वो, तस वियोगो भवे मोखो.

अर्थः—कर्मद्रव्यनी एटले पुद्गलद्रव्यनी साथे जीवनो संबंध थवो ते बंध. तेनो वियोग थवो ते मोक्ष.

संमम्=सारी रीते संबंध थवो, खरेखरी रीते संबंध थवो, जेम तेम कल्पना करी संबंध थयानुं मानी लेवुं तेम नहीं.

२. प्रदेश अने प्रकृतिबंध मन वचन कायाना योगवडे थाय. स्थिति अने अनुभागबंध कषायवडे थाय.

३. विपाक एटले अनुभागवडे फळपरिपक्वता थाय छे ते. सर्व कर्मनुं मूळ अनुभाग छे, तेमां जेवो रस तीव्र तीव्रतर मंद मंदतर पड्यो, तेवो उदयमां आवे छे. तेमां फेरफार

के भूल थती नथी. कुलडीमां पैसा, रूपिया, सोनामोहोर, आदिने दृष्टांते. जेम एक कुलडीमां घणा वखत पहेला रूपिया, पैसा, सोनामोहोर नाखी होय ते ज्यारे काढो त्यारे तेने ते ठेकाणे ते ज धातुरूपे नीकळे छे तेमां जगोनी तेम ज तेनी स्थितिनो फेरफार थतो नथी. एटले के पैसा रूपिया थता नथी, तेम रूपिया पैसा थई जता नथी. ते ज प्रमाणे बांधेलुं कर्म द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव प्रमाणे उदयमां आवे छे.

४. आत्माना होवापणा विषे जेने शंका पडे ते 'चार्वाक' कहेवाय.

५. तेरमे गुणस्थानके तीर्थंकरादिने एक समयनो बंध होय. मुख्यत्वे करी वखते अगीआरमे गुणस्थानके अकषायीने पण एक समयनो बंध होई शके.

६. पवन पाणीनी निर्मळतानो भंग करी शकतो नथी; पण तेने चलायमान करी शके छे. तेम आत्माना ज्ञानमां कांई निर्मळता ओछी थती नथी, पण योगनुं चलायमानपणुं छे तेथी रसविना एक समयनो बंध कह्यो.

७. जो के कषायनो रस पुण्य तथा पापरूप छे तोपण तेनो स्वभाव कडवो छे.

८. पुण्य पण खाराशमांथी थाय छे. पुण्यनो चोठाणियो रस नथी, कारण के एकांत शातानो उदय नथी. कषायना भेद बे. १ प्रशस्तराग. २ अप्रशस्तराग. कषायवगर बंध नथी.

९. आर्त्तध्याननो समावेश मुख्यकरीने कषायमां थई शके, 'प्रमाद'नो 'चारित्रमोह'मां अने 'योग'नो 'नामकर्म'मां थई शके.

१०. श्रवण ए पवननी लहेरमाफक छे. ते आवे छे, अने चाल्युं जाय छे.

११. मनन करवाथी छाप बेसे छे, अने निदिध्यासन करवाथी ग्रहण थाय छे.

१२. वधारे श्रवण करवाथी मननशक्ति मंद थती जोवामां आवे छे.

१३. प्राकृतजन्य एटले लोकमां कहेवानुं वाक्य, ज्ञानीनुं वाक्य नहीं.

१४. आत्मा समय समय उपयोगी छतां अवकाशनी खामी अथवा कामना बोजाने लईने तेने आत्मासंबंधी विचार करवानो वखत मळी शकतो नथी एम कहेवुं ए प्राकृतजन्य 'लौकिक' वचन छे. जो खावानो पीवानो उंघवा इत्यादिनो वखत मळ्यो ने काम कर्युं ते पण आत्माना उपयोगविना नथी थयुं, तो पछी खास जे सुखनी आवश्यकता छे, ने जे मनुष्यजन्मनुं कर्त्तव्य छे तेमां वखत न मळ्यो ए वचन ज्ञानी कोई काळे साचुं मानी शके नहीं. एनो अर्थ एटलो ज छे के बीजां इन्द्रियादिक सुखनां कामो जरूरनां लाग्यां छे अने ते विना दुःखी थवाना डरनी कल्पना छे. आत्मिक सुखना विचारनुं काम कर्याविना अनंतो काळ दुःख भोगववुं पडशे, अने अनंत संसार भ्रमण करवो पडशे ए वात जरूरनी नथी लागती! मतलब आ चैतन्ये कृत्रिम मान्युं छे, साचुं मान्युं नथी.

१५. सम्यग्दृष्टि पुरुषो कर्याविना चाले नहीं एवा उदयने लीधे लोकव्यवहार निर्दोषपणे लज्जायमानपणे करे छे. प्रवृत्ति करवी जोईए तेथी शुभाशुभ जेम बनवानुं हशे तेम बनशे एवी दृढ मान्यतानी साथे उपकक प्रवृत्ति करे छे.

१६. बीजा पदार्थो उपर उपयोग आपीए तो आत्मानी शक्ति आविर्भाव थाय छे. तो सिद्धि लब्धि आदि शंकाने पात्र नथी. प्राप्त थती नथी तेनुं कारण आत्मा निरावरण नथी करी शकातो ए छे. ए शक्ति बधी साची छे. चैतन्यमां चमत्कार जोईए, तेनो शुद्ध रस प्रगटवो जोईए. एवी सिद्धिवाळा पुरुषो अशातानी शाता करी शके छे, तेम छतां तेनी अपेक्षा करता नथी. ते वेदवामां ज निर्जरा समजे छे.

१७. तेम जीवोमां उल्लासमान वीर्य के पुरुषार्थ नथी. वीर्य मंद पड्युं त्यां उपाय नथी.

१८. अशातानो उदय न होय त्यारे काम करी लेवुं एम ज्ञानीपुरुषोए जीवनुं असामर्थ्यवानपणुं जोईने कहेलुं छे. के जेथी तेनो उदय आव्ये चळे नहीं.

१९. सम्यग्दृष्टि पुरुषने नाखुदानी माफक पवन विरुद्ध होवाथी वहाण मरडी रस्तो बदलवो पडे छे तेथी तेओ पोते लीधेलो रस्तो खरो नथी एम समजे छे; तेम ज्ञानीपुरुषो उदय-विशेषने लईने व्यवहारमां पण अंतरात्मदृष्टि चुकता नथी.

२०. उपाधिमां उपाधि राखवी. समाधिमां समाधि राखवी. अंग्रेजोनी माफक कामटाणे काम, अने आरामटाणे आराम. एक बीजाने सेळभेळ करी देवां न जोईए.

२१. व्यवहारमां आत्मकर्त्तव्य करता रहेवुं. सुख, दुःख धनप्राप्तिअप्राप्ति ए शुभाशुभ तथा लाभांतरायना उदय ऊपर आधार राखे छे. शुभना उदयनी साथे अगाउथी अशुभना उदयनुं पुस्तक वांच्युं होय तो शोक न थाय. शुभना उदय वखते शत्रु मित्र थई जाय छे, अने अशुभना उदय वखते मित्र शत्रु थई जाय छे. सुखदुःखनुं खरूं कारण कर्म ज छे. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षामां कह्युं छे के कोई माणस करज लेवा आवे तेने करज चुकवी आप्याथी माथा उपरथी बोजो ओछो थतां केवो हर्ष थाय छे? ते प्रमाणे पुद्गल द्रव्यरूपी शुभाशुभ करज जे काळे उदयमां आवे ते काळे सम्यक्प्रकारे वेदी चुकवी देवाथी निर्जरा थाय छे ने नवुं करज थतुं नथी, तो ज्ञानीपुरुषे कर्मरूपी करजमांथी मुक्त थवाने हर्षायमानपणे तैयार थई रहेवुं जोईए; कारण ते दीधा वगर छूटको थवानो नथी.

२२. सुखदुःख जे द्रव्य क्षेत्र काळ भावे उदय आववानुं होय तेमां इन्द्रादि पण फेरफार करवाने शक्तिवान नथी.

२३. करणानुयोगमां ज्ञानिए अंतर्मुहूर्त्त आत्मानो अप्रमत्त उपयोग मान्यो छे.

२४. करणानुयोगमां सिद्धान्तनो समावेश थाय छे.

२५. चरणानुयोगमां व्यवहारमां आचरी शके तेनो समावेश कर्यो छे.

२६. सर्वविरतिमुनिने ब्रह्मचर्यव्रतनी प्रतिज्ञा ज्ञानी आपे छे ते चरणानुयोगनी अपेक्षाए; पण करणानुयोगनी अपेक्षाए नहीं; कारण के करणानुयोग प्रमाणे नवमा गुणस्थानके वेदोदयनो क्षय थई शके छे, त्यांसुधी थई शकतो नथी.

८६५. वडवाण कॅप. भाद्रपद वद. १९५१.

(१)

(१) मोक्षमाळाना पाठ अमे मापि मापीने लख्या छे.

फरी आवृत्ति अंगे सुख उपजे तेम प्रवर्तो.* केटलांक वाक्य (अंडर् लाईन) नीचे लींटी दोरी छे, तेम करवा जरूर नथी.

श्रोता–वांचकने बनतां सुधी आपणा अभिप्राये न दोरवा लक्ष राखवुं. श्रोता–वांचकमां पोतानी मेळे अभिप्राय उगवा देवो. सारासार तोल करवानुं वांचनार–श्रोताना पोताना पर छोडी देवुं. आपणे तेमने दोरी तेमने पोताने उगी शके एवा अभिप्रायने थंभी न देवो.

प्रज्ञावबोधभाग मोक्षमाळाना १०८ मणका अत्रे लखावशुं.

(२) परम सत्श्रुतना† प्रचार रूप एक योजना धारी छे. ते प्रचार थई परमार्थ मार्ग प्रकाश पामे तेम थशे.

(२)

श्री मोक्षमाळाना प्रज्ञावबोध भागनी संकलना.

१. वाचकने प्रेरणा.
२. जिन देव.
३. निर्ग्रंथ.
४. दयानी परम धर्मता.
५. साचुं ब्राह्मणपणुं.
६. मैत्री आदि चार भावना.
७. सत्शास्त्रनो उपकार.
८. प्रमादना स्वरूपनो विशेष विचार.
९. त्रण मनोरथ.
१०. चार सुख शय्या.
११. व्यावहारिक जीवोना भेद.
१२. त्रण आत्मा.
१३. सम्यग्दर्शन.
१४. महात्माओनी असंगता.
१५. सर्वोत्कृष्ट सिद्धि.
१६. अनेकांतनी प्रमाणता.
१७. मनभ्रांति.
१८. तप.
१९. ज्ञान.
२०. क्रिया.
२१. आरंभ परिग्रहनी निवृत्ति उपर ज्ञानीए आपेलो घणो भार.
२२. दान.
२३. नियमितपणुं.
२४. जिनागमस्तुति.
२५. नवतत्त्वनुं सामान्य संक्षेप स्वरूप.
२६. सार्वजनिक श्रेय.
२७. सद्गुण.
२८. देशधर्मविषे विचार.
२९. मौन.
३०. शरीर.
३१. पुनर्जन्म.
३२. पंचमहाव्रतविषे विचार.
३३. देशबोध.
३४. प्रशस्तयोग.
३५. सरळपणुं.
३६. निरभिमानपणुं.
३७. ब्रह्मचर्यनुं सर्वोत्कृष्टपणुं.
३८. आज्ञा.
३९. समाधि मरण.

---

* आंक ८४६ तथा ८५३ (१). † श्री परमश्रुतप्रभावक मंडळनी योजना थई, अने प्रज्ञावबोध मोक्षमाळानी संकलना लखावी. म. कि.

४०. वैतालिय अध्ययन. ४१. संयोगनुं अनित्यपणुं. ४२. महात्माओनी अनंत समता.
४३. माथे न जोईए. ४४. (चार) उदयादि भंग. ४५. जिनमतनिराकरण.
४६. महामोहनीय स्थानक. ४७. तीर्थंकरपद संप्राप्ति स्थानक. ४८. माया.
४९. परिषहजय. ५०. वीरत्व. ५१. सद्गुरु स्तुति.
५२. पांच परमपदविषे विशेष विचार. ५३. अविरति. ५४. अध्यात्म.
५५. मंत्र. ५६. छ पद निश्चय. ५७. मोक्षमार्गनी अविरोधता.
५८. सनातन धर्म. ५९. सूक्ष्म तत्त्वप्रतीति. ६०. समिति गुप्ति.
६१. कर्मना नियमो. ६२. महत्पुरुषोनी अनंत दया. ६३. निर्जराक्रम.
६४. आकांक्षा स्थानके केम वर्त्तवुं? ६५. मुनिधर्मयोग्यता. ६६. प्रत्यक्ष अने परोक्ष.
६७. उन्मत्तता. ६८. एक अंतर्मुहूर्त्त. ६९. दर्शन स्तुति.
७०. विभाव. ७१. रसास्वाद. ७२. अहिंसा अने स्वच्छंदता.
७३. अल्प शिथीळपणाथी महादोषना जन्म. ७४. पारमार्थिक सत्य. ७५. आत्मभावना.
७६. जिनभावना. ७७ थी ९०. महत्पुरुष चरित्र. ९१ थी १००. (भागमां वधारो.*)
१०१–१०६. हितार्थी प्रश्नो. १०७–१०८. समाप्ति अवसर.

८६६. वढवाण कॅम्प. का. सुद ५ रवि. १९५७.

ॐ. वर्त्तमान दुषमकाळ वर्त्ते छे. मनुष्योनां मन पण दुषम ज जोवामां आवे छे. घणुं करीने **परमार्थथी शुष्क अंतःकरणवाळा परमार्थनो देखाव करी स्वेच्छाए वर्त्ते छे.**

एवा वखतमां केनो संग करवो, केनी साथे केटलुं काम पाडवुं, केनी साथे केटलुं बोलवुं, केनी साथे पोताना केटला कार्य व्यवहारनुं स्वरूप विदित करी शकाय,–ए बधुं लक्षमां राखवानो वखत छे. नहीं तो सद्वृत्तिवान जीवने ए बधां कारणो हानि कर्त्ता थाय छे. ॐ शांतिः.

---

* कोई विषयना एक करतां वधारे भागरूप पाठ करवा पडे तो ते माटे आ दश वधाराना. आंक ६९४ (१२), ६९० (३) (४), १४७ (३) वगेरे पण आवी संकलना (सांकळियुं) छे. म. कि.

वर्ष ३४ मुं.

८६७. मुंबई. माटुंगा. मागशर. १९५७.

श्री 'शांतसुधारस'नुं पण फरी विवेचनरूप भाषांतर करवा योग्य छे. ते करशो.

८६८. मुंबई. शिव. मागशर वद १९५७.

देवागमनभोयानचामरादिविभूतयः
मायाविष्वपि दृश्यंते नातस्त्वमसि नो महान्.

स्तुतिकार श्री संमतभद्रसूरिने वीतराग देव जाणे कहेता होय, हे संमतभद्र, आ अमारां अष्टप्रातिहार्य आदि विभूति तुं जो, अमारूं महत्व जो. त्यारे सिंह गुफामांथी गंभीर पदे बहार् निकळतां त्राड पाडे तेम श्री संमतभद्रसूरि त्राड पाडता कहे छेः-

देवताओनुं आववुं, आकाशमां विचरवुं, चामरादि विभूतिनुं भोगववुं, चामरादि वैभवथी विंझावुं,-ए तो मायावी एवा इंद्रजाळीआ पण बतावी शके छे. तारा पासे देवोनुं आववुं थाय छे, वा आकाशमां विचरवुं वा चामर छत्र आदि विभूति भोगवे छे माटे तुं अमारा मनने महान्! ना, ना. ए माटे तुं अमारा मनने महान् नहीं. तेटलाथी तारूं महत्व नहीं. एवुं महत्व तो मायावी इंद्रजाळिया पण देखाडी शके.

त्यारे सद्देवनुं महत्व वास्तविक शुं? तो के **वीतरागपणुं.** एम आगळ बतावे छे.

आ श्री संमतभद्रसूरि वि० सं० बीजा सैकामां थया. तेओ स्वेतांबर दिगंबर बंनेमा एक सरखा सन्मानित छे. तेओए **देवागमस्तोत्र** (उपर जणावेल स्तुति आ स्तोत्रनुं प्रथम पद छे) अथवा **आप्तमीमांसा** रचेल छे. **तत्त्वार्थसूत्र** ना मंगलाचरणनी टीका करतां आ स्तोत्र (देवागम) लखायो छे. अने ते पर अष्टसहस्री टीका तथा चोरोशी हजार श्लोकपुर 'गंधहस्तीमहाभाष्य' टीका रचायां छे.

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां;
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये.

आ एनुं प्रथम मंगल स्तोत्र छे.

मोक्षमार्गना नेता, कर्मरूपी पर्वतना भेत्ता (भेदनार), विश्व (समग्र) तत्त्वना ज्ञाता (जाणनार),-तेने ते गुणोनी प्राप्तिअर्थे वंदुं छुं.

आप्तमीमांसा, योगबिंदु, अने उपमितिभवप्रपंचकथानुं गुजराती भाषांतर करशो. योगबिंदुनुं भाषांतर थयेल छे, उपमितिभवप्रपंचनुं थाय छे; पण ते बंने फरी करवा योग्य छे, ते करशो. धीमे धीमे थशे.

(२) लोककल्याण हितरूप छे अने ते कर्त्तव्य छे. पोतानी योग्यतानी न्यूनताथी अने जोखमदारी न समजाई शकावाथी अपकार न थाय ए पण लक्ष राखवानो छे.

८६९. मुंबई. शिव. मागशर वद ८. १९५७.

ॐ मदनरेखानो अधिकार उत्तराध्ययनना नवमा अध्ययनने विषे नमिराज ऋषिनुं चरित्र आप्युं छे, तेनी टीकामां छे.

ऋषिभद्रपुत्रनो अधिकार भगवतीसूत्रना शतकने उद्देशे आवेलो छे.

आ बंने अधिकार अथवा बीजा तेवा घणा अधिकार आत्मोपकारी पुरुषप्रत्ये वंदनादि भक्तिनुं निरूपण करे छे. पण जनमंडळना कल्याणनो विचार करतां तेवो विषय चर्चवाथी तमारे दूर रहेवुं योग्य छे.

अवसर पण तेवो ज छे. माटे तमारे ए अधिकारादि चर्चवामां तदन शांत रहेवुं. पण बीजी रीते जेम ते लोकोनी तमारा प्रत्ये उत्तम लागणी किंवा भावना थाय तेम वर्त्तवुं, के जे पूर्वापर घणा जीवोना हितनो ज हेतु थाय.

ज्यां परमार्थना जिज्ञासुपुरुषोनुं मंडळ होय त्यां शास्त्रप्रमाण आदि चर्चवा योग्य छे; नहीं तो घणुं करी तेमांथी श्रेय थतुं नथी.

आ मात्र नानो परिषह छे. **योग्य उपायथी प्रवर्त्तवुं; पण उद्वेगवाळुं चित्त न राखवुं.**

८७०. वढवाण कॅम्प. फा. सुद ६ शनि. १९५७.

ॐ. जे अधिकारी संसारथी विराम पामी मुनिश्रीनां चरणकमळ योगे विचरवा इच्छे छे, ते अधिकारीने दीक्षा आपवामां मुनिश्रीने बीजो प्रतिबंधनो कंई हेतु नथी.

ते अधिकारीए वडीलोनो संतोष संपादन करी आज्ञा मेळववी योग्य छे, जेथी मुनिश्रीनां चरणकमळमां दीक्षित थवामां बीजो विक्षेप न रहे.

आ अथवा बीजा कोई अधिकारीने (१) संसारथी उपरामवृत्ति थई होय अने (२) ते आत्मार्थ साधक छे एवुं जणातुं होय तो तेने दीक्षा आपवामां मुनिवरो अधिकारी छे. **मात्र त्यागनार अने त्याग देनारना श्रेयनो मार्ग वृद्धिमान रहे एवी दृष्टिथी ते प्रवृत्ति जोईए.**

घणुंकरी आजे राजकोटप्रत्ये गमन थशे. **प्रवचनसार** ग्रंथ लखाय छे, ते अवसरे प्राप्त थवा योग्य छे. शांतिः.

८७१. राजकोट. फा. वद ३ शुक्र. १९५७.

घणी त्वराथी प्रवास पूरो करवानो हतो. त्यां वच्चे सहरानुं रण संप्राप्त थयुं.

माथे घणो बोजो रह्यो हतो ते आत्मवीर्ये करी जेम अल्पकाळे वेदी लेवाय तेम प्रघटना करतां पगे निकाचित उदयमान थाक ग्रहण कर्यो.

जे स्वरूप छे ते अन्यथा थतुं नथी ए ज अद्भुत आश्चर्य छे. अव्याबाध स्थिरता छे.

प्रकृति उदयानुसार कंईक अशाता मुख्यतो वेदी शाताप्रत्ये. ॐ शांतिः.

८७२. राजकोट. फा. वद १३ सोम. १९५७.

ॐ. शरीर संबंधमां बीजीवार आजे अप्राकृत क्रम शरू थयो.

ज्ञानिओनो सनातन सन्मार्ग जयवंत वर्त्तो.

८७३. राजकोट. चैत्र सुद २ शुक्र. १९५७.

ॐ अनंत शांतमूर्त्ति एवा चंद्रप्रभस्वामिने
नमो नमः.

वेदनीय तथारूप उदयमानपणे वेदवामां हर्ष शोक शो? ॐ शांतिः.

८७४. राजकोट. चैत्र सुद ९. १९५७.

अंतिम संदेशो.

परमार्थमार्ग अथवा शुद्ध आत्मपद प्रकाश.

ॐ श्री जिनपरमात्मने नमः

(१)
इच्छे छे जे जोगी जन, अनंत सुखस्वरूप;
मूळ शुद्ध ते आत्मपद, सयोगी जिनस्वरूप. १.
आत्मस्वभाव अगम्य ते, अवलंबन आधार;
जिनपदथी दर्शावियो, तेह स्वरूप प्रकार. २.
जिनपद निजपद ऐक्यता, भेदभाव नहीं कांई;
लक्ष थवाने तेहनो, कह्यां शास्त्र सुखदाई. ३.
जिन प्रवचन दुर्गम्यता, थाके अति मतिमान;
अवलंबन श्रीसद्गुरु, सुगम अने सुख खाण. ४.
उपासना जिनचरणनी, अतिशय भक्तिसहीत;
मुनिजन संगति रति अति, संयम योग घटीत. ५.
गुणप्रमोद अतिशय रहे, रहे अंतर्मुख योग;
प्राप्ति श्री सद्गुरुवडे, जिन दर्शन अनुयोग. ६.
प्रवचन समुद्र बिंदुमां, उलटी* आवे एम;
पूर्व चौदनी लब्धिनुं, उदाहरण पण तेम. ७.
विषय विकार सहीत जे, रह्या मतिना योग;
परिणामनी विषमता, तेने योग अयोग. ८.
मंद विषय ने सरळता, सह आज्ञा सुविचार;
करुणा कोमळतादि गुण, प्रथम भूमिका धार. ९.
रोक्या शब्दादिक विषय, संयम साधन राग;
जगत् इष्ट नहीं आत्मथी, मध्य पात्र महाभाग्य. १०.
नहीं तृष्णा जीव्यातणी, मरण योग नहीं क्षोभ;
महापात्र ते मार्गना, परम योग जितलोभ. ११.

(२)
आव्ये बहु समदेशमां, छाया जाय समाई;
आव्ये तेम स्वभावमां, मन स्वरूप पण जाई. १.
उपजे मोहविकल्पथी, समस्त आ संसार;
अंतर्मुख अवलोकतां, विलय थतां नहीं वार. २.

(३) सुख धाम अनंत सुसंत चहि, दिन रात्र रहे तद् ध्यानमंहि,
परशांति अनंत सुधामय जे, प्रणमुं पद ते वर ते जय ते. १.

---

* पाठांतर 'उछळी'. म कि.

श्रीमद् राजचन्द्र

वर्ष ३३ मु.　　　　　　　　　　वि. सं. १९५६

Lakshmi Art, Bombay 8

वर्ष २२ थी ३४ पर्यंत.

८७५.

[सूची:–(१) हाथनोंध प्रणे प्राप्त साधनसाथे मेळवी प्रथम आवृत्ति मुजब आपीछे.

(२) नोंधोमां मुख्यपणे तत्त्वज्ञान, द्रव्यानुयोग आदिने लगतां प्रश्नो, अनुप्रेक्षायोग्य विचार, स्वआत्मदशासंबंधी विचारणा, ईहापोह, संक्षिप्त नोंध, दर्शनमीमांसा, जुदां जुदां तत्त्वदर्शननी तुलनात्मक पर्यालोचनानी संक्षेप नोंध, निराकरण, मार्ग प्रकाश, शास्त्रयोजना, संकलना इत्यादि नोंधो छे.

(३) समय अने विषयनी अनुसंधिपूर्वक ते सर्व यथायोग्य सुसंगतरूपे ग्रंथमां दाखल करवामां आवेल छे; तथापि सळंग पण ते नोंधो जेम बुकमां छे तेम अत्रे आपी छे. ए नोंधो मोटा भागे काळानुक्रमे नथी. जे वखते जे विचार के प्रश्न स्फुर्या ते वखते जे बुक अने तेनुं जे पानुं कोरूं हाथ लाग्युं ते पर ते टांकी दीधेल छे; एटले पाछळथी लखायेल आगलां पानांपर अने आगळ लखायलुं पाछलां पानांपर पण छे; वच्चमां कोरां पानां पण छे. ता. २०–९–२५. म. कि.]

हाथनोंध १ ली.

१. [हाथनोंध पृष्ठ १.]

प्रत्येके प्रत्येक पदार्थनो अत्यंत विवेक करी आ जीवने तेनाथी व्यावृत्त करवो एम निर्ग्रंथ कहे छे.

शुद्ध एवा स्फटिकने विषे अन्य रंगनुं प्रतिभासवुं थवाथी तेनुं जेम मूळ स्वरूप लक्षगत थतुं नथी, तेम शुद्ध निर्मळ एवुं आ चेतन अन्य संयोगना तादात्म्यवत् अध्यासे पोताना स्वरूपनो लक्ष पामतुं नथी. यत्किंचित् पर्यायांतरथी ए ज प्रकारे जैन, वेदांत, सांख्य, योगादि कहे छे.

२.

जीवनां अस्तित्वपणांनो तो कोई काळे पण संशय प्राप्त नहीं थाय.

जीवनां नित्यपणांनो–त्रिकाळ होवापणांनो कोई काळे पण संशय प्राप्त नहीं थाय.

जीवनां चैतन्यपणांनो–त्रिकाळ होवापणांनो कोई काळे पण संशय प्राप्त नहीं थाय.

तेने कोई पण प्रकारे बंध दशा वर्त्ते छे ए वातनो कोई काळे पण संशय प्राप्त नहीं थाय.

ते बंधनी निवृत्ति कोई पण प्रकारे निःसंशय घटे छे, ए वातनो कोई काळे पण संशय प्राप्त नहीं थाय.

मोक्षपद छे ए वातनो कोई पण काळे संशय नहीं थाय.

३. [पृ. २.]

जीवनुं व्यापकपणुं, परिणामपणुं, कर्मसंबंध, मोक्षक्षेत्र शा शा प्रकारे घटवा योग्य छे ते विचार्याविना तथाप्रकारे समाधि न थाय. गुण अने गुणीनो भेद समजवा योग्य प्रकारे छे ?

जीवनुं व्यापकपणुं, सामान्यविशेषात्मकता, परिणामीपणुं, लोकालोकज्ञायकपणुं, कर्मसंबंधता, मोक्षक्षेत्र ए पूर्वापर अविरोधथी शी रीते सिद्ध छे ?

एक ज जीवनामनो पदार्थ जुदां जुदां दर्शनो, संप्रदायो अने मतो जुदे जुदे स्वरूपे कहे छे. तेनो कर्मसंबंध अने मोक्ष पण जुदे जुदे स्वरूपे कहे छे. एथी निर्णय करवो दुर्घट केम नथी ?

४. [पृ. ३.]

सहज.

जे पुरुष आ ग्रंथमां सहज नोंध करे छे, ते पुरुष माटे प्रथम सहज ते ज पुरुष लखे छे.

तेनी हमणा एवी दशा अंतरंगमां रही छे के कंईक विना सर्व संसारी इच्छानी पण तेणे विस्मृति करी नाखी छे.

ते कंईक पाम्यो पण छे, अने पूर्णनो परम मुमुक्षु छे. छेला मार्गनो निःशंक जिज्ञासु छे.

हमणां जे आवरणो तेने उदय आव्यां छे, ते आवरणोथी एने खेद नथी, परंतु वस्तुभावमां थती मंदतानो खेद छे.

ते धर्मनी विधि, अर्थनी विधि, कामनी विधि, अने तेने आधारे मोक्षनी विधिने प्रकाशी शके तेवो छे. घणा ज थोडा पुरुषोने प्राप्त थयो हशे एवो ए काळनो क्षयोपशमी पुरुष छे.

तेने पोतानी स्मृति माटे गर्व नथी तर्क माटे गर्व नथी. तेम ते माटे तेनो पक्षपात पण नथी, तेम छतां कंईक बहार राखवुं पडे छे तेने माटे खेद छे.

तेनुं अत्यारे एक विषय विना बीजा विषयप्रति ठेकाणुं नथी. ते पुरुष जो के तीक्ष्ण उपयोगवाळो छे, तथापि ते तीक्ष्ण उपयोग बीजा कोई पण विषयमां वापरवा ते प्रीति धरावतो नथी [पृ. ८]

५. [पृ. ९.]

एकवार ते स्वभुवनमां बेठो हतो. जगत्मां कोण सुखी छे, ते जोउं तो खरो पछी आपणे आपण माटे विचार. एनी ए जिज्ञासा पूर्ण करवा अथवा पोते ते संग्रहस्थान जोवा घणा पुरुषो-(आत्माओ)-घणा पदार्थो तेनी समीपे आव्या.

"एमां कोई जड पदार्थ हतो नहीं." "कोई एकलो आत्मा जोवामां आव्यो नहीं."

मात्र केटलाक देहधारियो हता; जेओ मारी निवृत्तिने माटे आव्या होय एम ते पुरुषने शंका थई.

वायु, अग्नि, के पाणी, भूमि ए कोई केम आव्युं नथी?

(नेपथ्य) तेओ सुखनो विचार पण करी शकतां नथी. दुःखथी बिचारां पराधीन छे.

बे इंद्रिय जीवो केम आव्या नथी?

(नेपथ्य) एने माटे पण ए ज कारण छे. आ चक्षुथी जुओ. तेओ बिचारांने केटलुं बधुं दुःख छे.

तेनो कंप-तेनो थरथराट-पराधीनपणुं इत्यादिक जोई शकाय तेवुं न होतुं-ते बहु दुःखी हता. [पृ. १०.]

(नेपथ्य) ए ज चक्षुथी हवे तमे आखुं जगत् जोई ल्यो. पछी बीजी वात करो.

ठीक त्यारे. दर्शन थयुं, आनंद पाम्यो; पण पाछो खेद जन्म्यो.

(नेपथ्य) हवे खेद कां करो छो?

मने दर्शन थयुं ते शुं सम्यक् हतुं?

"हा."

सम्यक् होय तो पछी चक्रवर्त्यादिक ते दुःखी केम देखाय?

"दुःखी होय ते दुःखी, अने सुखी होय ते सुखी देखाय."

चक्रवर्ति तो दुःखी नहीं होय?

"जेम दर्शन थयुं तेम श्रद्धो. विशेष जोवुं होय तो चालो मारी साथे."

चक्रवर्तिनां अंतःकरणमां प्रवेश कर्यो.

अंतःकरण जोईने पेलुं दर्शन सम्यक् हतुं एम मे मान्युं. तेनुं अंतःकरण बहु दुःखी हतुं. अनंत भयना पर्यायथी ते थरथरतुं हतुं. काळ आयुष्यनी दोरीने गळी जतो हतो. हाड मांसमां तेनी वृत्ति हती. कांकरामां तेनी प्रीति हती. क्रोध, माननो ते उपासक हतो. बहु दुःख. [पृ. ११.]

वारु, आ देवोनुं दर्शन पण सम्यक् समजवुं.

"निश्चय करवा माटे इंद्रना अंतःकरणमां प्रवेश करीए."

चालो त्यारे-

(ते इंद्रनी भव्यताथी भूल खाधी.) ते पण परम दुःखी हतो. बिचारो च्यवीने कोई बिभत्स स्थळमां जन्मवानो हतो माटे खेद करतो हतो. तेनामां सम्यक्दृष्टि नामनी देवी वसी हती. ते तेने खेदमां विश्रांति हती. ए महादुःख शीवाय तेनां बीजां घणांय अव्यक्त दुःख हतां.

पण, (नेपथ्य)-आ जड एकलां के आत्मा एकला जगत्मां नथी शुं के?-तेओए मारां आमंत्रणने सन्मान आप्युं नथी.

"जडने ज्ञान नहीं होवाथी तमारूं आमंत्रण ते बिचारां क्यांथी स्वीकारे? सिद्ध (एकात्मभावि) तमारूं आमंत्रण स्वीकारी शकता नथी. तेनी तेमने कंई दरकार नथी."

एटली बधी बेदरकारी ? आमंत्रणने तो मान्य करवुं जोईए; तमे शुं कहो छो ?

"एने आमंत्रण–अनामंत्रणथी कंई संबंध नथी. [पृ. १२.]

तेओ परिपूर्ण स्वरूपसुखमां विराजमान छे." ए मने बतावो. एकदम–बहु त्वराथी.

"तेनुं दर्शन बहु दुर्लभ छे. ल्यो आ अंजन आंजी दर्शन प्रवेश मेळां करी जुओ."

अहो ! आ बहु सुखी छे. एने भय पण नथी. शोक पण नथी. हास्य पण नथी. वृद्धता नथी. रोग नथी. आधिए नथी. व्याधिए नथी. उपाधिए नथी. ए बधुंय नथी. पण . . . . अनंत अनंत सच्चिदानंद सिद्धिथी तेओ पूर्ण छे. आपणने एवा थवुं छे.

"क्रमे करीने थई शकशो."

ते क्रम भ्रम अहीं चालशे नहीं. अहीं तो तुरत ते ज पद जोईए.

"जरा शांत थाओ. समता राखो; अने क्रमने अंगीकार करो. नहींतो ते पदयुक्त थवुं नहीं संभवे."

"थवुं नहीं संभवे" ए तमारां वचन तमे पाछां ल्यो, क्रम त्वराथी बतावो, अने ते पदमां तुरत मोकलो.

"घणा माणसो आव्या छे. तेमने अहीं बो– [पृ. १३.]

लावो. तेमांथी तमने क्रम मळी शकशे."

इच्छयुं के तेओ आव्या;–

तमे मारूं आमंत्रण स्वीकारी आव्या ते माटे तमारो उपकार मानुं छउं. तमे सुखी छो. ए वात खरी छे शुं ? तमारूं पद शुं सुखवाळुं गणाय छे एम ?

'तमारूं आमंत्रण स्वीकारवुं, न स्वीकारवुं एवुं अमने कंई बंधन नथी. अमे सुखी छीए के दुःखी तेवुं बताववाने पण अमारूं अहीं आगमन नथी. अमारां पदनी व्याख्या करवा माटे पण आगमन नथी. तमारां कल्याणने अर्थे अमारूं आगमन छे.' एक वृद्ध पुरुषे कह्युं.

कृपा करीने त्वराथी कहो, आप मारूं शुं कल्याण करशो ते. अने आवेला पुरुषोनुं ओळखाण पाडो.

तेमणे प्रथम ओळखाण पाडी.

आ वर्गमां ४–५–६–७–८–९–१०–१२ ए अंकवाळा मुख्ये मनुष्यो छे. ते सघळा तमे जे पदने प्रिय गण्युं तेना आराधक योगीओ छे.

४ थी ते पद ज सुखरूप छे, अने बाकीनी जगत्– [पृ. १४.]

व्यवस्था अमे जेम मानीए छीए तेम माने छे. ते पदनी अंतरंगनी तेनी अभिलाषा छे पण तेओ प्रयत्न करी शकता नथी; कारण थोडो वखत सुधी तेमने अंतराय छे.

अंतराय शी ? करवा माटे तत्पर थाय एटले थवुं.

वृद्धः–तमे त्वरा न करो. तेनुं समाधान हमणा ज तमने मळी शकशे–मळी जशे.

ठीक–आपनी ते वातने सम्मत थउं छउं.

वृद्धः–आ '५' ना अंकवाळो–ए कंईक प्रयत्न पण करे छे. बाकी "४" ना प्रमाणे छे.

'६' सर्व प्रकारे प्रयत्न करे छे. पण प्रमत्तदशाथी प्रयत्नमां मंदता आवी जाय छे.

"७" सर्व प्रकारे अप्रमत्तप्रयत्नि छे.

"८–९–१०" तेना करतां क्रमे उज्वळ, पण ते ज जातिना छे. "११" ना अंकवाळा पतित थई जाय छे माटे अहीं तेनुं आगमन नथी. दर्शन थवा माटे बारमे ज हुं–हमणा हुं ते पदने संपूर्ण जोवानो छुं;–परिपूर्णता पामवानो छुं. आयुष्यस्थिति पूरी थये तमे जोयेलुं पद–तेमां एक मने पण जोशो.— [पृ. १५.]

पिताजी.–तमे महाभाग्य छो.

आवा अंक केटला छे ?

वृद्धः–त्रण अंक प्रथमना तमने अनुकूळ न आवे. अगियारमानुं पण तेम ज. "१३–१४" तमारी पासे आवे एवुं तेमने निमित्त रह्युं नथी. "१३"यत्किंचित् आवे, पण पू० क० होय तो तेओनुं आगमन थाय. नहीं तो नहीं. चौदमानुं आगमन कारण मागशे नहीं. कारण नथी.

(नेपथ्य) "तमे ए सघळांनां अंतरमां प्रवेश करो. हुं सहायक थउं छउं."

चालो-४ थी ११+१२ सुधी क्रमे क्रमे सुखनी उत्तरोत्तर चढती लहरीओ छूटती हती. वधु शुं कहीए! मने ते बहु प्रिय लाग्युं; अने ए ज मारूं पोतानुं लाग्युं.

वृद्धे मारा मनोगत भाव जाणीने कह्युं: ए ज तमारो कल्याणमार्ग. जाओ तो भले; अने आवो तो आ समुदाय रह्यो.

उठीने भळी गयो.

(स्वविचारभुवन, द्वार प्रथम.)

६. [पृ. १७.]

कायानुं	नियमितपणुं.
वचननुं	स्याद्वादपणुं.
मननुं	औदासीन्यपणुं.
आत्मानुं	मुक्तपणुं.

(आ छेल्ली समजण.)

७. [पृ. १८.]

आत्मसाधन.

द्रव्य-हुं एक छुं, असंग छुं, सर्व परभाववी मुक्त छुं.

क्षेत्र-असंख्यात निजअवगाहना प्रमाण छुं.

काळ-अजर, अमर, शाश्वत छुं. स्वपर्यायपरिणामी समयात्मक छुं.

भाव-शुद्ध चैतन्यमात्र निर्विकल्प द्रष्टा छुं.

८. [पृ. १९.]

वचन संयम-	वचन संयम-	वचन संयम.
मनो संयम-	मनो संयम-	मनो संयम.
काय संयम-	काय संयम-	काय संयम.

काय संयम.

इंद्रिय संक्षेपता,	आसन स्थिरता.
इंद्रिय स्थिरता,	सउपयोग यथासूत्र प्रवृत्ति.

वचन संयम.

मौनता,	सउपयोग यथासूत्र प्रवृत्ति.
वचनसंक्षेप.	वचनगुणातिशयता.

मनो संयम.

मनो संक्षेपता,	मनःस्थिरता.
आत्मचिंतनता.	

द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव.

संयम कारण निमित्तरूप द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भाव.

द्रव्य—संयमित देह.

क्षेत्र—निवृत्तिवाळां क्षेत्रे स्थिति-विहार.

काळ—यथासूत्र काळ.

भाव—यथासूत्र निवृत्तिसाधनविचार.

९.

सुखने इच्छतो न होय ते नास्तिक, कां सिद्ध, कां जड. [पृ. २१.]

१०. [पृ. २५.]

ए ज स्थिति—ए ज भाव अने ए ज स्वरूप.

गमे तो कल्पना करी बीजी वाट ल्यो. यथार्थ जोईतो होय तो आ . . लो.

विभंग ज्ञान—दर्शन अन्य दर्शनमां मानवामां आव्युं छे. एमां मुख्य प्रवर्तकोए जे धर्ममार्ग बोध्यो छे, ते सम्यक् थवा स्यात् मुद्रा जोईए.

स्यात् मुद्रा ते स्वरूपस्थित आत्मा छे. श्रुतज्ञाननी अपेक्षाए स्वरूपस्थित आत्माए कहेली शिक्षा छे.

नाना प्रकारना नय, नाना प्रकारनां प्रमाण, नाना प्रकारनी भंगजाल, नाना प्रकारना अनुयोग ए सघळां लक्षणारूप छे. लक्ष एक सच्चिदानंद छे

दृष्टिविष गया पछी गमे ते शास्त्र, गमे ते अक्षर, गमे ते कथन, गमे ते वचन, गमे ते स्थळ प्राये अहितनुं कारण थतुं नथी.

पुनर्जन्म छे—जरूर छे—ए माटे हुं अनुभवथी हा कहेवामां अचळ छुं.

आ काळमां मारुं जन्मवुं मानुं तो दुःखदायक छे, अने मानुं तो सुखदायक पण छे. [पृ. २६.]

एवुं हवे कोई वांचन रह्युं नथी के जे वांची जोईए. छीए ते पामीए ए जेना संगमां रह्युं छे ते संगनी आ काळमां न्यूनता थई पडी छे.

विकराळ काळ!— . . . विकराळ कर्म! . . . विकराळ आत्मा! . . .

जेम . . पण एम . . . .

हवे ध्यान राखो. ए ज कल्याण.

११. [पृ. २७.]

एटलुं ज शोधाय तो बधुं पामशो; खचित एमां ज छे. मने चोक्स अनुभव छे. सत्य कहुं छुं. यथार्थ कहुं छुं. निःशंक मानो.

ए स्वरूप माटे सहज सहज कोई स्थळे लखी वाळ्युं छे.

१२. [पृ. २९.]

मारग साचा मिल गया, छूट गये संदेह;
होता सो तो जल गया; भिन्न किया निज देह.
समज पिछें सब सरल है, बिनू समज मुशकील;
ये मुशकीली क्या कहुं?
खोज पिंड ब्रह्मांडका, पत्ता तो लग जाय;
येहि ब्रह्मांडि वासना, जब जावे तब...
आप आपकुं भुल गया, इनसें क्या अंधेर?
समर समर अब हसत हैं, नहिं भुलेंगे फेर.
जहां कलपना—जलपना, तहां मानुं दुख छांई,
मिटे कलपना—जलपना, तब वस्तू तिन पाई.
हे जीव! क्या इच्छत हवे? है इच्छा दुःख मूल;
जब इच्छाका नाश तब, मिटे अनादी भूल.
ऐसी क्यांसे मति भई, आप आप है नाहिं,
आपनकुं जब भुल गये, अवर कहांसें लाई.
आप आप ए शोधसें, आप आप मिल जाय; [पृ. ३०.]
आप मिलन नय बापको;

१३. [पृ. ३१.]

एकवार ते स्वभुवनमां बेठो हतो . . . . प्रकाश हतो;-अंबाश हती.

मंत्रिये आवीने तेने कह्युं. आप शुं विचारणामां परिश्रम लो छो ? ते योग्य होय तो आ दीनने दर्शावी उपकृत करशो.

१४. [पृ. ३५.]

होत आसवा परिसवा, नहिं इनमे संदेह;
मात्र दृष्टिकी भूल है; भूल, गये गत एहि.
रचना जिन उपदेशकी, परमोत्तम तिनु काल;
इनमें सब मत रहत हैं, करतें निज संभाल.
जिन सोही हे आतमा; अन्य होई सो कर्म;
कर्म कटे सो जिन बचन, तत्वग्यानिको मर्म.
जब जान्यो निजरूपकों, तब जान्यो सब लोक;
नहिं जान्यो निजरूप तो, सब जान्यो सो फोक.
एहि दिशाकी मूढता, है नहिं जिनपे भाव;
जिनसें भाव बिनु कबू, नहिं छूटत दुखदाव.
व्यवहारसें देव जिन, निहचेसें है आप;
ए हि बचनसें समज ले; जिनप्रवचनकी छाप.
एहि नहीं हे कल्पना, एही नहीं विभंग,
जब जागेगे आतमा, तब लागेगे रंग.

१५. [पृ. ३७.]

अनुभव.

१६. [पृ. ३९.]

ए त्यागी पण नथी, अत्यागी पण नथी, ए रागी पण नथी. वीतरागी पण नथी.

पोतानो क्रम निश्चळ करो. तेनी चो बाजु निवृत्त भूमिका राखो.

आ दर्शन थाय छे ते कां वृथा जाय छे ? एनो विचार पुनः पुनः विचारतां मूर्छा आवे छे.

संतजनोए पोतानो क्रम मूक्यो नथी. मूक्यो छे ते परम असमाधिने पाम्या छे.

संतपणुं अति अति दुर्लभ छे. आव्या पछी संत मळवा दुर्लभ छे. संतपणानी जिज्ञासावाळा अनेक छे. परंतु संतपणुं दुर्लभ ते दुर्लभ ज छे !

१७. [पृ. ४३.]

प्रकाश भुवन.

खचित ते सत्य छे. एम ज स्थिति छे. तमे आ भणी वळो-

तेओए रूपकथी कह्युं छे. भिन्न भिन्न प्रकारे तेथी बोध थयो छे, अने थाय छे; परंतु ते विभंगरूप छे.

आ बोध सम्यक् छे. तथापि घणो ज सूक्ष्म अने मोह टळ्ये प्राप्त थाय तेवो छे.

सम्यक् बोध पण पूर्ण स्थितिमां रह्यो नथी. तोपण जे छे ते योग्य छे.

ए समजीने हवे घटतो मार्ग ल्यो.

कारण शोधो मा, ना कहो मा, कल्पना करो मा. एम ज छे.

ए पुरुष यथार्थ वक्ता हतो. अयथार्थ कहेवानुं तेमने कोई निमित्त नहोतुं.

१८. [पृ. ४७.]

ते दशा शाथी अवराई ? अने ते दशा वर्धमान केम न थई ?

लोकना प्रसंगथी, मानेच्छाथी, अजागृतपणाथी क्रियादि परिषहनो जय न करवाथी.

जे क्रियाने विषे जीवने रंग लागे छे, तेने त्यां ज स्थिति होय छे, एवो जे जिननो अभिप्राय ते सत्य छे.

त्रीश महा मोहनीयनां स्थानक श्री तीर्थकरे कह्यां छे ते साचां छे.

अनंता ज्ञानीपुरुषोए जेनुं प्रायश्चित्त कह्युं नथी, जेना त्यागनो एकांत अभिप्राय आप्यो छे एवो जे काम तेथी जे मुंझाया नथी, ते ज परमात्मा छे.

१९. [पृ. ४९.]

कोई ब्रह्मरसना भोगी,
कोई ब्रह्मरसना भोगी.
जाणे कोई वीरला योगी,
कोई ब्रह्मरसना भोगी.

२०. [पृ. ५१.]

२-२-३मा-१९५१

द्रव्य,	एक लक्ष
क्षेत्र,	मोहमयी.
काल	-मा. व. ८-१
भाव	उदय भाव.

द्रव्य-	एक लक्ष	उदासीन.
क्षेत्र-	मोहमयि	
काळ	८-१	इच्छा.
भाव-	उदयभाव.	प्रारब्ध.

२१. [पृ. ५२.]

सामान्य चेतन	सामान्य चैतन्य
विशेष चेतन	विशेष चैतन्य
निर्विशेष चेतन	(चैतन्य)

स्वभाविक अनेक आत्मा (जीव) निर्ग्रंथ.

सोपाधिक अनेक आत्मा (जीव) वेदांत.

२२. [पृ. ५३.]

चक्षु अप्राप्यकारी.

मन अप्राप्यकारी.

चेतननुं बाह्य आगमन (गमन नहीं ते.)

२३. [पृ. ५५.]

ज्ञानी पुरुषोने समये समये अनंता संयमपरिणाम वर्धमान थाय छे, एम सर्वज्ञे कह्युं छे ते सत्य छे.

ते संयम, विचारनी तीक्ष्ण परिणतिथी तथा ब्रह्मरसप्रत्ये स्थिरपणाथी उत्पन्न थाय छे.

२४.

श्री तीर्थंकर आत्माने संकोच विकाशनुं भाजन योगदशामां माने छे, ते सिद्धांत विशेषे करी विचारवा योग्य छे.

२५. [पृ. ५६.]

ध्यान.

ध्यान-ध्यान.

ध्यान-ध्यान-ध्यान.

ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान.

ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान.

ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान.

ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान-ध्यान.

२६. [पृ. ५७.]

चिद् धातुमय, परमशांत, अडग एकाग्र; एक स्वभावमय असंख्यात प्रदेशात्मक पुरुषाकार चिदानंदघन तेनुं ध्यान करो.

ज्ञा० व०
द० व०
मो०
अं०

नो आत्यंतिक अभाव. प्रदेशसंबंध पामेलां पूर्व निष्पन्न-सत्ताप्राप्त उदयप्राप्त-उदीरणाप्राप्त चार एवां ना० गो० आ० वेदनीय वेदवाथी. अभाव जेने छे एवुं शुद्धस्वरूप जिन चिद्मूर्ति-सर्वलोकालोकभासक चमत्कारनुं धाम.

२७. [पृ. ५८.]

विश्व अनादि छे. जीव अनादि छे.

परमाणु पुद्गलो अनादि छे. जीव अने कर्मनो संबंध अनादि छे.

संयोगीभावमां तादात्म्य अध्यास होवाथी जीव जन्म मरणादि दुःखोने अनुभवे छे.

२८. [पृ. ५९.]

पांच अस्तिकायरूप लोक एटले विश्व छे. चैतन्य लक्षण जीव छे.

वर्ण गंध रस स्पर्शमान परमाणुओ छे ते संबंध स्वरूपथी नथी. विभावरूप छे.

२९. [पृ. ६०]

शरीरने विषे आत्मभावना प्रथम थती होय तो थवा देवी, क्रमे करी प्राणमां आत्मभावना करवी, पछी इंद्रियोमां आत्मभावना करवी, पछी संकल्प विकल्परूप परिणाममां आत्मभावना करवी, पछी स्थिर ज्ञानमां आत्मभावना करवी. त्यां सर्व प्रकारनी अन्यालंबनरहित स्थिति करवी.

३०. [पृ. ६१.]

प्राण,	सोहं	
वाणी,		तेनुं ध्यान करवुं
रस.	अनहद	

संवत् १९५३ ना का. वदी १२ सोमवार.

३१. [पृ. ६१.]

जिन	मुख्य	आचार्य.
सिद्धांत	पद्धति	धर्म.
शांत रस	अहिंसा	मुख्य.

लिंगादि	व्यवहार	जिनमुद्रा सूचक.
मतांतर	समावेश.	
शांत रस	प्रवहन.	
जिन	अन्यने	धर्म प्राप्ति.
लोकादि स्वरूप—	संशयनी	निवृत्ति समाधान.
जिन	प्रतिमा	कारण.

कांईक गृहव्यवहार शांत करी. परी–गृहादि कार्यथी निवृत्त थवुं.

अप्रमत्त गुणस्थानक पर्यंत पहोंचवुं. केवल भूमिकानुं सहज परिणामी ध्यान—

३२. [पृ. ६३.]

१. धन्य रे दीवस आ अहो,
जागी जे रे शांति अपूर्व रे;
दश वर्षे रे धारा उलसी,
मट्यो उदय कर्मनो गर्व रे. धन्य०

२. ओगणीससें ने एकतालिसें.
आव्यो अपूर्व अनुसार रे,
ओगणीससें ने बेतालीसे,
अद्भुत वैराग्य धार रे. धन्य०

३. ओगणीससें ने सुडतालीसे,
समकीत शुद्ध प्रकाश्युं रे,
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निजस्वरूप अवभास्युं रे. धन्य०

४. त्यां आव्यो रे उदय कारमो,
परीग्रह कार्य प्रपंच रे,
जेम जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे एक रंच रे. धन्य०

५. वधतुं एम ज चालियुं, [पृ. ६४.]
हवे दीसे क्षीण कांई रे,
क्रमे करीने रे ते जशे,
एम भासे मनमांहि रे. धन्य०

६. यथाहेतु जे चित्तनो,
सत्यधर्मनो उद्धार रे,
थशे अवश्य आ देहथी,
एम थयो निरधार रे. धन्य०

७. आवी अपूर्व वृत्ति अहो,
थशे अप्रमत्त योग रे,
केवळ लगभग भूमिका,
स्पर्शीने देह वियोग रे. धन्य०

८. अवश्य कर्मनो भोग छे.
भोगववो (बाकी रह्यो) अवशेष रे,
तेथी देह एक ज धारिने
जाशुं स्वरूप स्वदेश रे. धन्य०

३३. [पृ. ६७.]

कम्म दव्वेहिं सम्मं, संजोगो जो होई जीवस्स, सो बंधो नायव्वो, तस्स वियोगो भव मोक्खो.

३४. [पृ. ७३.]

सम्यक्‌दर्शनस्वरूप एवां नीचे लख्यां श्रीजिननां उपदेशेलां छ पद आत्मार्थि जीवे अतिशय करी विचारवां घटे छे.

आत्मा छे, केमके प्रमाणे करीने तेनुं प्रसिद्धपणुं छे; ए अस्तिपद.

आत्मा नित्य छे; ए नित्यपद.

आत्मानुं जे स्वरूप छे ते कोई पण प्रकारे उत्पन्न थवुं संभवतुं नथी, तेम तेनो विनाश संभवतो नथी.

आत्मा कर्मनो कर्त्ता छे; ए कर्त्ता पद.

आत्मा कर्मनो भोक्ता छे. [पृ. ७४.]

ते आत्मानी मुक्ति थई शके छे.

मोक्ष थई शके एवा प्रकार प्रसिद्ध छे.

३५. [पृ. ८०.]

आत्मा—	वेदांत,	जिन,	सांख्य,	योग,	नैयायिक,	बौध.
नित्य—	+	,,	+	+	+	,,
अनित्य	+	,,	+	+	+	+

परिणामी.

अपरिणामी.

साक्षी.

साक्षी–कर्त्ता.

३६. [पृ. ८१.]

सांख्य कहे छे के बुद्धि जड छे. पातंजली, वेदांत एम ज कहे छे.

जिन कहे छे के बुद्धि चेतन छे.

वेदांत कहे छे के आत्मा एक ज छे.

जिन कहे छे के आत्मा अनंत छे.

जाति एक छे. सांख्य पण तेम ज कहे छे;

पातंजली पण तेम ज कहे छे.

वेदांत कहे छे के आ समस्त विश्व वंध्यापुत्रवत् छे.

जिन कहे छे के आ समस्त विश्व शाश्वत छे.

पातंजली कहे छे के नित्यमुक्त एवो एक ईश्वर होवो जोईए.

सांख्य ना कहे छे. जिन ना कहे छे.

३७.

श्रीमान् महावीरस्वामी जेवाए अप्रसिद्ध पद राखी गृहवासरूप वेद्यो–गृहवासथी निवृत्त थये पण साडाबार जेवा दीर्घ काळ सुधी मौन आचर्युं. निद्रा तजी विषम परिषह सह्या एनो हेतु शो? अने आ जीव आम वर्ते छे, तथा आम कहे छे एनो हेतु शो?

जे पुरुष सद्गुरुनी उपासना विना निज कल्पनाए आत्मस्वरूपनो निर्धार करे ते मात्र पोताना स्वछंदना उदयने वेदे छे, एम विचारवुं घटे छे.

जे जीव सत्पुरुषना गुणनो विचार न करे, अने पोतानी कल्पनाना आश्रये वर्त्ते ते जीव सहजमात्रमां भववृद्धि उत्पन्न करे छे, केमके अमर थवाने माटे झेर पीए छे.

३८.

सर्व संग महाश्रवरूप तीर्थंकरे कह्यो छे, ते सत्य छे.

आवी मिश्र गुणस्थानक जेवी स्थिति क्यां सुधी राखवी? जे वात चित्तमां नहीं ते करवी, अने जे चित्तमां छे तेमां उदास रहेवुं एवो व्यवहार शी रीते थई शके?

वैश्यवेषे अने निर्ग्रंथभावे वसतां कोटी कोटी विचार थया करे छे

* वेष अने ते वेषसंबंधी व्यवहार जोई लोकदृष्टि तेवुं माने ए खरुं छे, अने निर्ग्रन्थ भावे वर्त्ततुं चित्त ते व्यवहारमां यथार्थ न प्रवर्त्ति शके ए पण सत्य छे; जे माटे एवा बे प्रकारनी एक स्थिति करी वर्त्ति शकातुं नथी, केमके प्रथम प्रकारे वर्त्ततां निर्ग्रंथभावथी उदास रहेवुं पडे तो ज यथार्थ व्यवहार साचवी शकाय एम छे, अने निर्ग्रंथभावे वसीए तो पछी ते व्यवहार गमे तेवो थाय तेनी उपेक्षा करवी घटे, जो उपेक्षा न करवामां आवे तो निर्ग्रंथभाव हानि पाम्या विना रहे नहीं. [पृ. ९०.]

ते व्यवहार त्याग्या विना अथवा अत्यंत अल्प कर्या विना निर्ग्रंथता यथार्थ रहे नहीं, अने उदयरूप होवाथी व्यवहार त्याग्यो जतो नथी.

आ सर्व विभावयोग मट्याविना अमारूं चित्त बीजा कोई उपाये संतोष पामे एम लागतुं नथी.

ते विभावयोग बे प्रकारे छे. एक पूर्वे निष्पन्न करेलो एवो उदयस्वरूप, अने बीजो आत्मबुद्धिए करी रंजनपणे करवामां आवतो भावस्वरूप.

आत्मभावे विभावसंबंधी योग तेनी उपेक्षा ज श्रेयभूत लागे छे. नित्य ते विचारवामां आवे छे, ते विभावपणे वर्त्ततो आत्मभाव घणो परिक्षीण कर्यो छे, अने हजी पण ते ज परिणति वर्ते छे.

ते संपूर्ण विभावयोग निवृत्त कर्या विना चित्त विश्रांति पामे एम जणातुं नथी, अने हाल तो ते कारणे करी विशेष क्लेश वेदन करवो पडे छे, केमके उदय विभाव क्रियानो छे अने इच्छा आत्मभावमां स्थिति करवानी छे. [पृ. ९१.]

तथापि एम रहे छे के, उदयनुं विशेष काळसुधी वर्त्तवुं रहे तो आत्मभाव विशेष चंचळ परिणामने पामशे; केमके आत्मभाव विशेष संधान करवानो अवकाश उदयनी प्रवृत्तिने लीधे प्राप्त न थई शके, अने तेथी ते आत्मभाव कंई पण अजागृतपणाने पामे.

जे आत्मभाव उत्पन्न थयो छे, ते आत्मभावपर जो विशेष लक्ष करवामां आवे तो अल्प काळमां तेनुं विशेष वर्धमानपणुं थाय, अने विशेष जागृतावस्था उत्पन्न थाय,--अने थोडा काळमां हितकारी एवी उग्र आत्मदशा प्रगटे; अने जो उदयनी स्थिति प्रमाणे उदयनो काळ रहेवा देवानो विचार करवामां आवे तो हवे आत्मशिथिलता थवानो प्रसंग आवशे, एम लागे छे; केमके दीर्घ काळनो आत्मभाव होवाथी अत्यारसुधी उदयबळ गमे तेवुं छतां ते आत्मभाव हणायो नथी, तथापि कंईक कंईक तेनी अजागृतावस्था थवा देवानो वखत आव्यो छे; एम छतां पण हवे केवळ उदयपर ध्यान आपवामां आवशे तो शिथिलभाव उत्पन्न थशे.— [पृ. ९२.]

ज्ञानीपुरुषो उदयवश देहादि धर्म निवृत्ते छे. ए रीते प्रवृत्ति करी होय तो आत्मभाव हणावो न जोईए; ए माटे ते वात लक्ष राखी उदय वेदवो घटे छे एम विचार पण हमणा घटतो नथी, केमके ज्ञाननां तारतम्य करतां उदयबळ वधतुं जोवामां आवे तो जरूर त्यां ज्ञानीए पण जागृत दशा करवी घटे, एम श्री सर्वज्ञे कह्युं छे.

अत्यंत दुषम काळ छे तेने लीधे अने हतपुण्य लोकोए भरतक्षेत्र घेर्युं छे तेने लीधे परमसत्संग—सत्संग के सरळ परिणामी जीवोनो समागम पण दुर्लभ छे, एम जाणी जेम अल्प काळमां सावधान थवाय तेम करवुं घटे छे.

३९. [पृ. ९३.]

मौनदशा धारण करवी?

व्यवहारनो उदय एवो छे के ते धारण करेली दशा लोकोने कषायनुं निमित्त थाय, तेम व्यवहारनी प्रवृत्ति बने नहीं.

त्यारे ते व्यवहार निवृत्त करवो ?

ते पण विचारतां बनवुं कठण लागे छे, केमके तेनी कंईक स्थिति वेदवानुं चित्त रह्या करे छे. पछी ते शिथिलताथी-उदयथी के परेच्छाथी के सर्वज्ञ दृष्टथी, एम छतां पण अल्पकाळमां आ व्यवहारने संक्षेप करवा चित्त छे.

ते व्यवहार केवा प्रकारे संक्षेप थई शकशे ?

केमके तेनो विस्तार विशेषपणे जोवामां आवे छे. व्यापार स्वरूपे, कुटुंब प्रतिबंध, युवावस्था प्रतिबंध, दयास्वरूपे, विकार स्वरूपे, उदय स्वरूपे-ए आदि कारणे ते व्यवहार विस्ताररूप जणाय छे. [पृ. ९४.]

हुं एम जाणुं छउं के अनंतकाळथी अप्राप्तवत् एवुं आत्मस्वरूप केवळज्ञान केवळदर्शनस्वरूपे अंतर्मुहूर्तमां उत्पन्न कर्युं छे, तो पछी वर्ष छ मास काळमां आटलो आ व्यवहार केम निवृत्त नहीं थई शके ? मात्र जागृतिना उपयोगांतरथी तेनी स्थिति छे, अने ते उपयोगनां बळने नित्य विचार्येथी अल्पकाळमां ते व्यवहार निवृत्त थई शकवायोग्य छे. तोपण तेनी केवा प्रकारे निवृत्ति करवी, ए हजी विशेषपणे मारे विचारवुं घटे छे; एम मानुं छउं, केमके वीर्यने विषे कंई पण मंद दशा वर्त्ते छे. ते मंद दशानो हेतु शो ?

उदय बळे प्राप्त थयो एवो परिचय मात्र परिचय, एम कहेवामां कई बाध छे ? ते परिचयनी विशेष विशेष अरुचि रहे छे, ते छतां ते परिचय करवो रह्यो छे. ते परिचयनो दोष कही शकाय नहीं, पण निजदोष कही शकाय. अरुचि होवाथी इच्छारूप दोष नही कहेतां उदयरूप दोष कह्यो छे.

४०. [पृ. ९६.]

घणो विचार करी नीचेनुं समाधान थाय छे.

एकांत द्रव्य, एकांत क्षेत्र, एकांत काळ अने एकांत भावरूप संयम आराध्या विना चित्तनी शांति नहीं थाय एम लागे छे. एवो निश्चय रहे छे.

ते योग हजी कंई दूर संभवे छे, केमके उदयनुं बळ जोतां ते निवृत्त थतां कंईक विशेष काळ जशे.

४१. [पृ. ९७.]

महासुद ७ शनीवार-विक्रम संवत् १९५१ त्यार पछी दोढ वर्षथी वधारे स्थिति नहीं.

अने तेटला काळमां त्यार पछी जीवनकाळ की रीते वेदवो ते विचारवानुं बनशे—

४२. [पृ. ९८.]

अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाईयं,

४३. [पृ. १००.]

काम, मान अने उतावळ ए त्रणनो विशेष संयम करवो घटे छे—

४४. [पृ. १०१.]

हे जीव ! असारभूत लागता एवा आ व्यवसायथी हवे निवृत्त था, निवृत्त !

ते व्यवसाय करवाने विषे गमे तेटलो बळवान प्रारब्धोदय देखातो होय तो पण तेथी निवृत्त था, निवृत्त !

जो के श्री सर्वज्ञे एम कह्युं छे के चौदमे गुणठाणे वर्त्ततो एवो जीव पण प्रारब्ध वेद्याविना मुक्त थई शके नहीं, तोपण तुं ते उदयनो आश्रयरूप होवाथी निज दोष जाणी तेने अत्यंत तीव्रपणे विचारी तेथी निवृत्त था, निवृत्त !

केवळ मात्र प्रारब्ध होय, अने अन्य कर्म दशा वर्त्तती न होय तो ते प्रारब्ध सहेजे निवृत्त थवा देवानुं बने छे, एम परम पुरुषे स्वीकार्युं छे, पण ते केवळ प्रारब्ध त्यारे कही शकाय के ज्यारे प्राणांतपर्यंत निष्ठाभेद दृष्टि न थाय, अने तने सर्व प्रसंगमां एम बने छे, एवुं ज्यांसुधी केवळ निश्चय न थाय त्यांसुधी श्रेय ए छे के, तेने विषे त्यागबुद्धि भजवी, आ वात विचारी हे जीव हवे तुं अल्पकाळमां निवृत्त था निवृत्त !

४५. [पृ. १०२.]

हे जीव, हवे तुं संग निवृत्तिरूप काळनी प्रतिज्ञा कर, प्रतिज्ञा कर !

केवळसंगनिवृत्तिरूप प्रतिज्ञानो विशेष अवकाश जोवामां आवे तो अंशसंगनिवृत्तिरूप एवो आ व्यवसाय तेने त्याग !

जे ज्ञानदशामां त्यागात्याग कंई संभवे नहीं ते ज्ञानदशानी सिद्धि छे जेने विषे एवो तुं सर्वसंगत्यागदशा अल्पकाळ वेदीश तो संपूर्ण जगत् प्रसंगमां वर्त्ते तो पण तने बाधरूप न थाय. ए प्रकार वर्त्ते छत्ते पण निवृत्ति ज प्रशस्त सर्वज्ञे कही छे, केमके ऋषभादि सर्व परम पुरुषे छेवटे एम ज कर्युं छे.

४६. [पृ. १०३.]

सं० १९५१ ना वैशाख शुद ५ शोमे–सायंकाळथी प्रत्याख्यान.

सं० १९५१ ना वैशाख शुद १४ भोमे.

४७. [पृ. १०५.]

क्षयोपशमी ज्ञान विकळ थतां शी वार?

४८. [पृ. १०६.]

जेम निर्मळतारे रत्न स्फटिक तणी
तेम ज जीव स्वभावरे.
ते जिन वीरे रे धर्म प्रकाशियो.
प्रबळ कषाय अभाव रे.

४९. [पृ. १०८.]

वीतरागदर्शन

उद्देश प्रकरण
सर्वज्ञमीमांसा.
षट् दर्शन अवलोकन.
वीतराग अभिप्राय विचार.
व्यवहारप्रकरण.
मुनिधर्म.
आगारधर्म.
मतमतांतरनिराकरण.
उपसंहार.

५०. [पृ. ११०.]

नव तत्त्वविवेचन.
गुणस्थानकविवेचन.
कर्मप्रकृतिविवेचन.
विचारपद्धति.
श्रवणादिविवेचन.
बोधबीजसंपत्ति.
जीवाजीवविभक्ति.
शुद्धात्मपदभावना.

५१. [पृ. १११.]

अंग
उपांग.
मूळ.

छेद.

आशय प्रकाशिता टीका.

व्यवहार हेतु.
परमार्थ हेतु.
परमार्थ गौणतानी प्रसिद्धि.
व्यवहार विस्तारनुं पर्यवसान
अनेकांतदृष्टि हेतु.
स्वगत मतांतर निवृत्तिप्रयत्न.
उपक्रम उपसंहार अविसंधि लोकवर्णन स्थूलत्व हेतु.
वर्तमान काळे आत्मसाधनभूमिका.
वीतरागदर्शन व्याख्यानो अनुक्रम.

५२. [पृ. ११३.]

मूळ.

लोक संस्थान?
धर्म अधर्म अस्तिकायरूप द्रव्य?
स्वाभाविक अभव्यत्व?
अनादि अनंत सिद्धि?
अनादि अनंतनुं ज्ञान शी रीते?
आत्मा संकोचे विकाशे?
सिद्ध ऊर्ध्वगमन-चेतन, खंडवत् शामाटे नहीं?
केवळज्ञानमां लोकालोकनुं ज्ञातृत्व शी रीते?
लोकस्थिति मर्यादा हेतु?
शाश्वत वस्तु लक्षण?

उत्तर.

ते ते स्थानवर्त्ति सूर्य चंद्रादि वस्तु,
अथवा नियमित गति हेतु?
दुसम सुसमादि काळ?
मनुष्य ऊंचत्वादि प्रमाण?
अग्निकायादिनुं निमित्त योगे एकदम उत्पन्न थवुं?
एक सिद्ध त्यां अनंत सिद्ध अवगाहना?

५३. [पृ. ११४.]

हेतु अव्यक्तव्य?
एकमां पर्यवसान शी रीते थई शके छे?
अथवा थतुं नथी?
व्यवहार रचना करी छे एम कोई हेतुथी सिद्ध थाय छे?

५४. [पृ. ११५.]

स्वस्थिति-आत्मदशा संबंधे विचार.
तथा तेनुं पर्यवसान?

त्यार पछी लोकोपकारप्रवृत्ति?
लोकोपकारप्रवृत्तिनुं धोरण.
वर्त्तमानमां केम वर्त्तवुं उचित छे?
(हालमां)

५५. [पृ. ११७.]

आत्मपरिणामनी विशेष स्थिरता थवा वाणी अने कायानो संयम सउपयोगपणे करवो घटे छे—

५६. [पृ. ११८.]

त्रणे काळमां जे वस्तु जात्यंतर थाय नहीं तेने श्री जिन द्रव्य कहे छे.

कोई पण द्रव्य परपरिणामे परिणमे नहीं. स्वपणानो त्याग करी शके नहीं

प्रत्येक द्रव्य (द्रव्य-क्षेत्र-काळ-भावथी) स्वपरिणामी छे.

नियत अनादि मर्यादापणे वर्त्ते छे.

जे चेतन छे, ते कोई दिवस अचेतन थाय नहीं; जे अचेतन छे, ते कोई दिवस चेतन थाय नहीं.

५७. [पृ. १२०.]

हे योग,

५८. [पृ. १२१.]

एक चैतन्यमां आ सर्व शी रीते घटे छे?

५९. [पृ. १२२.]

जो आ जीवे ते विभाव परिणाम क्षीण न कर्या तो आ ज भवने विषे ते प्रत्यक्ष दुःख वेदशे.

६०. [पृ. १२४.]

जे जे प्रकारे आत्माने चिंतन कर्यो होय ते ते प्रकारे ते प्रतिभासे छे.

विषयार्त्तपणाथी मूढताने पामेली विचारशक्तिवाळा जीवने आत्मानुं नित्यपणुं भासतुं नथी, एम घणुंकरीने देखाय छे, तेम थाय छे, ते यथार्थ छे; केमके अनित्य एवा विषयने विषे आत्मबुद्धि होवाथी पोतानुं पण अनित्यपणुं भासे छे.

विचारवानने आत्मा विचारवान लागे छे. शून्यपणे चिंतन करनारने आत्मा शून्य लागे छे, अनित्यपणे चिंतन करनारने अनित्य लागे छे, नित्यपणे चिंतन करनारने नित्य लागे छे.

चेतननी उत्पत्तिना कंई पण संयोगो देखाता नथी, तेथी चेतन अनुत्पन्न छे. ते चेतन विनाश पामवानो कंई अनुभव थतो नथी, माटे अविनाशी छे.–नित्य अनुभवस्वरूप होवाथी नित्य छे.

समये समये परिणामांतर प्राप्त थवाथी अनित्य छे.

स्वस्वरूपनो त्याग करवाने अयोग्य होवाथी मूळ द्रव्य छे.

६१. [पृ. १२६.]

सर्व करतां वीतरागनां वचनने संपूर्ण प्रतीतिनुं स्थान कहेवुं घटे छे, केमके ज्यां रागादि दोषनो संपूर्ण क्षय होय त्यां संपूर्ण ज्ञानस्वभाव प्रगटवायोग्य नियम घटे छे.

श्री जिनने सर्व करतां उत्कृष्ट वीतरागता संभवे छे. प्रत्यक्ष तेमनां वचननुं प्रमाण छे माटे. जे कोई पुरुषने जेटले अंशे वीतरागता संभवे छे, तेटले अंशे ते पुरुषनुं वाक्य मान्यता योग्य छे.

सांख्यादि दर्शने बंध, मोक्षनी जे जे व्याख्या उपदेशी छे, तेथी बळवान प्रमाणसिद्ध व्याख्या श्री जिनवीतरागे कही छे, एम जाणुं छउं.

शं० जे जिने द्वैतनुं निरूपण कर्युं छे, आत्माने खंड द्रव्यवत् कह्यो छे, कर्त्ता भोक्ता कह्यो छे, अने निर्विकल्प समाधिने अंतरायमां मुख्य कारण थाय एवी पदार्थव्याख्या कही छे, ते जिननी शिक्षा बळवान प्रमाणसिद्ध छे एम केम कही शकाय? केवळ अद्वैत—अने [पृ. १२७.]

सहजे निर्विकल्प समाधिनुं कारण एवो जे वेदांतादि मार्ग तेनुं ते करतां अवश्य विशेष प्रमाणसिद्धपणुं संभवे छे.

उ० यद्यपि एकवार तमे कहो छो तेम गणीए, पण सर्व दर्शननी शिक्षा करतां जिननी कहेली बंध मोक्षना स्वरूपनी शिक्षा जेटली अविकळ प्रतिभासे छे, तेटली बीजा दर्शननी प्रतिभासती नथी.—अने जे अविकळ शिक्षा ते ज प्रमाणसिद्ध छे.

शं० एम जो तमे धारो छो तो कोई रीते निर्णयनो समय नहीं आवे, केमके सर्व दर्शनमां जे जे दर्शनने विषे जेनी स्थिति छे ते ते दर्शन माटे अविकळता माने छे.

उ० यद्यपि एम होय तो तेथी अविकळता न ठरे, जेनुं प्रमाणे करी अविकळपणुं होय ते ज अविकळ ठरे.

प्र० जे प्रमाणे करी तमे जिननी शिक्षाने अविकळ जाणो छो ते प्रकारने तमे कहो; अने जे प्रकारे वेदांतादिनुं विकळपणुं तमने संभवे छे, ते पण कहो.

६२. [पृ. १३०.]

प्रत्यक्ष अनेक प्रकारनां दुःखने तथा दुःखी प्राणीओने जोईने, तेम ज जगत्नी विचित्र रचना जाणीने तेम थवानो हेतु शो छे? तथा ते दुःखनुं मूळ स्वरूप शुं छे? अने तेनी निवृत्ति कया प्रकारे थई शकवा योग्य छे? तेम ज जगत्नी विचित्ररचनानुं अंतर्स्वरूप शुं छे—ए आदि प्रकारने विषे विचारदशा उत्पन्न थई छे जेने एवा मुमुक्षु पुरुष तेमणे, पूर्व पुरुषोए उपर कह्या ते विचारो विषे जे कंई समाधान आण्युं हतुं, अथवा मान्युं हतुं, ते विचारना समाधान प्रत्ये पण यथाशक्ति आलोचना करी. ते आलोचना करतां विविध प्रकारना मतमतांतर तथा अभिप्रायसंबंधी यथाशक्ति विशेष विचार कर्यो. तेम ज नाना प्रकारना रामानुजादि संप्रदायनो विचार कर्यो. तथा वेदांतादि दर्शननो विचार कर्यो. ते आलोचनाविषे अनेक प्रकारे ते दर्शनना स्वरूपनुं मथन कर्युं, अने प्रसंगे प्रसंगे मथननी योग्यताने प्राप्त थयेलुं एवुं जैनदर्शन ते संबंधी घणा प्रकारे जे मथन थयुं, ते मथनथी ते दर्शनने सिद्ध थवा अर्थे—पूर्वापर विरोध जेवा लागे छे एवा नीचे लख्या छे ते कारणो देखायां.

६३. [पृ. १३२.]

धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय अरूपी छतां रूपीने सामर्थ्य आपे छे, अने ए त्रण द्रव्य स्वभावपरिणामी कह्यां छे, त्यारे ए अरूपी छतां रूपीने सहायक केम थई शके?

धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय एकक्षेत्रावगाही छे, अने परस्पर विरुद्धतावाळा तेना स्वभाव छे, छतां तेमां विरोध, गति पामेली वस्तुप्रत्ये स्थितिसहायकतारूपे अने स्थिति पामेली वस्तुप्रत्ये गति सहायकतारूपे थई शा माटे आवे नहीं?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आत्मा एक ए त्रण समान असंख्यात प्रदेशी छे, तेनो कंई बीजो रहस्यार्थ छे?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायनी अवगाहना अमुक अमूर्त्ताकारे छे, तेम होवामां कंई रहस्यार्थ छे?

लोकसंस्थान सदैव एक स्वरूपे रहेवामां कंई रहस्यार्थ छे?

एक तारो पण घटवध थतो नथी, एवी अनादिस्थिति शा हेतुथी मानवी?

शाश्वतपणानी व्याख्या शुं? आत्मा, के परमाणु कदापि शाश्वत मानवामां मूळ द्रव्यत्व कारण छे; पण तारा, चंद्र, विमानादिमां तेवुं शुं कारण छे?

६४. [पृ. १३३.]

सिद्ध आत्मा लोकालोकप्रकाशक छे, पण लोकालोकव्यापक नथी, व्यापक तो स्वअवगाहनाप्रमाण छे. जे मनुष्यदेहे सिद्धि पाम्या तेना त्रीजा भाग उणे ते प्रदेश घन छे, एटले आत्मद्रव्य लोकालोकव्यापक नथी पण लोकालोकप्रकाशक एटले लोकालोकज्ञायक छे, लोकालोक प्रत्ये आत्मा जतो नथी, अने लोकालोक कंई आत्मामां आवतां नथी, सर्वे पोतपोतानी अवगाहनामां स्वसत्तामां रह्यां छे, तेम छतां आत्माने तेनुं ज्ञानदर्शन शी रीते थाय छे?

अत्रे जो एवुं दृष्टांत कहेवामां आवे के जेम आरीसामां वस्तु प्रतिबिंबित थाय छे, तेम आत्मामां पण लोकालोक प्रकाशित थाय छे, प्रतिबिंबित थाय छे तो ए समाधान पण अविरोध देखातुं नथी, केमके आरीसामां तो वीस्रसा परिणामीपुद्गळ रश्मी(?)थी प्रतिबिंब थाय छे.

आत्मानो अगुरु लघु धर्म छे, ते धर्मने देखतां आत्मा सर्व पदार्थने जाणे छे, केमके सर्व द्रव्यमां अगुरु लघु गुण समान छे. एम कहेवामां आवे छे, त्यां अगुरु लघु धर्मनो अर्थ शुं समजवो?

६५. [पृ. १३६.]

आहारनो जय,

आसननो जय,

निद्रानो जय,

वाक्संयम,

जिनोपदिष्ट आत्मध्यान.

,, आत्मध्यान शी रीते?

ज्ञान प्रमाण ध्यान थई शके, माटे ज्ञानतारतम्यता जोईए.

शुं विचारतां, शुं मानतां, शी दशा थतां चोथुं गुणस्थानक कहेवाय?

शाथी चोथे गुणस्थानकेथी तेरमे गुणस्थानके आवे?

६६. [पृ. १४८.]

वर्त्तमानकाळनी पेठे आ जगत् सर्व काळ छे.

पूर्वकाळे न होय तो वर्त्तमानकाळे तेनुं होवुं पण होय नहीं.

वर्त्तमानकाळे छे तो भविष्यकाळमां ते अत्यंत विनाश पामे नहीं.

पदार्थमात्र परिणामी होवाथी आ जगत् पर्यायांतर देखाय छे; पण मूळपणे तेनुं सदा वर्त्तमानपणुं छे.

६७. [पृ. १५०.]

जे वस्तु समयमात्र छे, ते सर्व काळ छे.

जे भाव छे ते छे, जे भाव नथी ते नथी.

बे प्रकारनो पदार्थ स्वभावविभावपूर्वक स्पष्ट देखाय छे. जड स्वभाव, चेतन स्वभाव.

६८. [पृ. १५२.]

गुणातिशयता शुं?

ते केम आराधाय?

केवलज्ञानमां अतिशयता शुं?

तीर्थंकरमां अतिशयता शुं? विशेष हेतु शो?

जो जिनसम्मत केवलज्ञान लोकालोकज्ञायक मानीए तो ते केवलज्ञानमां आहार, निहार, विहारादि किया शी रीते संभवे?

वर्त्तमानमां तेनी आ क्षेत्रे अप्राप्ति तेनो हेतु शो?

६९. [पृ. १५४.]

मति,

श्रुत,

अवधि,

मनःपर्यव,

परमावधि,

केवळ,

७०. [पृ. १५५.]

परमावधिज्ञान उत्पन्न थया पछी केवळज्ञान उत्पन्न छे, ए रहस्य अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे.

अनादि अनंतकाळनुं, अनंत एवा अलोकनुं ? गणितथी अतीत अथवा असंख्यातथी पर एवो जीवसमूह, परमाणुसमूह अनंत छतां अनंतपणानो साक्षात्कार थाय ते गणितातीतपणुं छतां शी रीते साक्षात् अनंतपणुं जणाय ? ए विरोधनी शांति उपर कह्यां ते रहस्यथी थवायोग्य समजाय छे.

वळी केवळज्ञान निर्विकल्प छे, उपयोगनो प्रयोग करवो पडतो नथी. सहज उपयोगे ते ज्ञान छे; ते पण रहस्य अनुप्रेक्षा करवायोग्य छे.

केमके प्रथम सिद्ध कोण ? प्रथम जीवपर्याय कयो ? प्रथम परमाणु-पर्याय कयो ? ए केवळज्ञानगोचर पण अनादि ज जणाय छे; अर्थात् केवळज्ञान तेनी आदि पामतुं नथी, अने केवळज्ञानथी कंई छानुं नथी ए बे वात परस्पर विरोधी छे, तेनुं समाधान परमावधिनी अनुप्रेक्षाथी तथा सहज उपयोगनी अनुप्रेक्षाथी समजावायोग्य रस्तो देखाय छे.

७१. [पृ. १५६.]

कंई पण छे ?
शुं छे ?
शा प्रकारे छे ?
जाणवा योग्य छे ?
जाणवानुं फळ शुं छे ?
बंधनो हेतु शो छे ? [पृ. १५७.]

पुद्गलनिमित्त बंध के जीवना दोषथी बंध ?

जे प्रकारे मानो ते प्रकारे बंध न टाळी शकाय एवो सिद्ध थाय छे, माटे मोक्षपदनी हानि थाय छे. तेनुं नास्तित्व ठरे छे.

अमूर्त्तता ते कंई वस्तुता के अवस्तुता ?

अमूर्त्तता जो वस्तुता तो कंई महत्त्ववान के तेम नहीं ?

मूर्त्त एवां पुद्गलनो अने अमूर्त्त एवा जीवनो संयोग केम घटे ? [पृ. १५८.]

धर्म अधर्म अने जीव द्रव्यनुं क्षेत्रव्यापीपणुं जे प्रकारे जिन कहे छे ते प्रमाणे मानतां ते द्रव्य उत्पन्नस्वभावीवत् सिद्ध थवा जाय छे, केमके मध्यमपरिणामीपणुं छे.

धर्म, अधर्म अने आकाश ए वस्तु द्रव्यपणे एक जाति अने गुणपणे भिन्न जाति एम मानवा योग्य छे, के द्रव्यता पण भिन्न भिन्न मानवा योग्य छे.

द्रव्य एटले शुं ? गुणपर्यायविना तेनुं बीजुं शुं स्वरूप छे ? [पृ. १५९.]

केवळज्ञान सर्व, द्रव्य, क्षेत्र, काळभावनुं ज्ञायक ठरे तो सर्व वस्तु नियत मर्यादामां आवी जाय-अनंतपणुं न ठरे, केमके अनंतपणुं-अनादिपणुं समज्युं जतुं नथी-अर्थात् केवळज्ञानमां तेनुं कयि रीते प्रतिभासवुं थाय ? तेनो विचार बराबर बंध बेसतो नथी.

७२. [पृ. १६२.]

जैन जेने सर्वप्रकाशता कहे छे, तेने वेदांत सर्वव्यापकता कहे छे.

दृष्ट वस्तुपरथी अदृष्टनो विचार अनुसंधान करवो घटे.

जिनने अभिप्राये आत्मा मानतां अत्र लख्या छे ते प्रसंगोप्रत्ये वधारे विचार करवो—

१. असंख्यात प्रदेशनुं मूळ परिमाण.
२. संकोच विकाश थई शके एवो आत्मा मान्यो छे ते संकोच, विकाश अरूपीने विषे होवायोग्य छे ? तथा केवा प्रकारे होवायोग्य छे.
३. निगोद अवस्थाविषे विशेष कारण कंई छे ?
४. सर्व द्रव्य क्षेत्रादिनी प्रकाशकता ते रूप केवळज्ञानस्वभावी आत्मा छे, के स्वस्वरूपावस्थान निजज्ञानमय केवळज्ञान छे ?

५. आत्मामां योगे विपरिणाम छे ? स्वभावे विपरिणाम छे ? विपरिणाम आत्मानी मूळ सत्ता छे? संयोगी सत्ता छे? ते सत्तानुं कयुं द्रव्य मूळ कारण छे ?

[पृ. १६३.]

६. हीनाधिक अवस्था चेतन पामे तेने विषे कंई विशेष कारण छे? स्वस्वभावनुं ? पुद्गळ संयोगनुं के तेथी व्यतिरिक्त?
७. जे प्रमाणे मोक्षपदे आत्मता प्रगटे ते प्रमाणे मूळ द्रव्य मानीए तो लोकव्यापकप्रमाण आत्मा न थवानुं कारण शुं?
८. ज्ञान गुण अने आत्मा गुणी ए घटना घटाववा जतां आत्मा कथंचित् ज्ञानव्यतिरिक्त मानवो ते केवी अपेक्षाए ? जडत्वभावे के अन्यगुण अपेक्षाए ?
९. मध्यम परिणामवाळी वस्तुनुं नित्यपणुं शी रीते संभवे छे ?
१०. शुद्धचेतनमां अनेकनी संख्यानो भेद शा कारणे घटे छे ?

७३. [पृ. १६५.]

जेनाथी मार्ग प्रवर्त्त्यो छे, एवा मोटा पुरुषना विचार, बळ, निर्भयतादि गुणो पण मोटा हता.

एक राज्य प्राप्त करवामां जे पराक्रम घटे छे, ते करतां अपूर्व अभिप्राय सहित धर्मसंतति प्रवर्त्तवामां विशेष पराक्रम घटे छे.

तथारूप शक्ति थोडा वखत पूर्वे अत्र जणाती हती, हाल तेमां विकळता जोवामां आवे छे तेनो हेतु शो होवो जोईए ते विचारवायोग्य छे.

दर्शननी रीते आ काळमां धर्म प्रवर्त्ते एथी जीवोनुं कल्याण छे के संप्रदायनी रीते प्रवर्त्ते तो जीवोनुं कल्याण छे ते वात विचारवायोग्य छे.

संप्रदायनी रीते घणा जीवोने ते मार्ग ग्रहण थवा योग्य थाय, दर्शननी रीते वीरल जीवोने ग्रहण थाय.

जो जिनने अभिमते मार्ग निरूपण करवायोग्य गणवामां आवे, तो ते संप्रदायना प्रकारे निरूपण थवो विशेष असंभवित छे, केमके तेनी रचनानुं सांप्रदायिक स्वरूप थवुं कठण छे.

दर्शननी अपेक्षाए कोईक जीवने उपकारी थाय. एटलो विरोध आवे छे.

७४. [पृ. १६६.]

जे कोई मोटा पुरुष थया छे तेओ प्रथमथी स्वस्वरूप (निजशक्ति) समजी शकता हता, अने भावि महत्कार्यनां बीजने प्रथमथी अव्यक्तपणे वाव्या रहेता हता—अथवा स्वाचरण अविरोध जेवुं राखता हता.

अत्रे ते प्रकार विशेष विरोधमां पड्यो होय एम देखाय छे. ते विरोधमां कारणो पण अत्रे लख्यां छे.

१. विशेष संसारीनी रीति जेवो व्यवहार वर्त्ततो होवाथी.
२. ब्रह्मचर्यनुं धारण.

७५. [पृ. १६७.]

सोहं (आश्चर्यकारक) महापुरुषोए गवेषणा करी छे.

कल्पित परिणतिथी जीवने विरमवुं आटलुं बधुं कठण थई पड्युं छे तेनो हेतु शो होवो जोईए ?

आत्माना ध्याननो मुख्य प्रकार कयो कही शकाय ?

ते ध्याननुं स्वरूप शा प्रकारे ?

आत्मानुं स्वरूप शा प्रकारे ?

केवळज्ञान जिनागममां प्ररूप्युं छे ते यथायोग्य छे के, वेदांते प्ररूप्युं छे ते यथायोग्य छे ?

७६. [पृ. १६८.]

प्रेरणापूर्वक स्पष्ट गमनागम क्रिया आत्माना असंख्यात प्रदेशप्रमाणपणा माटे विशेष विचारवायोग्य छे.

प्र०—परमाणु एक प्रदेशात्मक, आकाश अनंत प्रदेशात्मक मानवामां जे हेतु छे, ते हेतु आत्माना असंख्यात प्रदेशपणा माटे यथातथ्य सिद्ध थतो नथी. मध्यम परिणामी वस्तु अनुत्पन्न जोवामां आवती नथी माटे.

उ०—

७७. [पृ. १६९.]

अमूर्त्तपणानी व्याख्या शुं ?
अनंतपणानी व्याख्या शुं ?
आकाशनुं अवगाहकधर्मपणुं शा प्रकारे ?
मूर्त्तामूर्त्तनो बंध आज थतो नथी तो अनादिथी केम थई शके ? वस्तुस्वभाव एम अन्यथा केम मानी शकाय ?
क्रोधादिभाव जीवमां परिणामीपणे छे, निवृत्तपणे छे ?
परिणामीपणे जो कहीए तो स्वाभाविक धर्म थाय, स्वाभाविक धर्मनुं टळवापणुं क्यांय अनुभूत थतुं नथी.
निवर्त्तपणे जो गणीए तो साक्षात् बंध जे प्रकारे जिन कहे छे, ते प्रमाणे मानतां विरोध आववो संभवे छे.

७८. [पृ. १७०.]

जिनने अभिमत केवळदर्शन अने वेदांतने अभिमत ब्रह्म एमां भेद शो छे ?

७९. [पृ. १७१.]

जिनने अभिमते.
आत्मा—असंख्यात प्रदेशी—(०) संकोच विकाशनुं भाजन-अरूपी लोक प्रमाण प्रदेशात्मक [पृ. १७२.]

८०.

जिन.

मध्यम परिमाणनुं नित्यपणुं, क्रोधादिनुं पारिणामिकपणुं (?) आत्मामां केम घटे ? कर्म बंधनो हेतु आत्मा, के पुद्गल, के उभय के कंई एथी पण अन्य प्रकार ? मुक्तिमां आत्मघन ? द्रव्यनुं गुणथी अतिरिक्तपणुं शुं ? बधा गुण मळी एक द्रव्य के ते विना बीजुं द्रव्यनुं कंई विशेष स्वरूप छे ? सर्व द्रव्यनुं वस्तुत्व गुण बाद करी विचारीए तो एक छे के केम ? आत्मा गुणी ज्ञान गुण एम कहेवाथी कथंचित् आत्मानुं ज्ञानराहित्यपणुं खरुं के नहीं ? जो ज्ञानराहित्यआत्मपणुं स्वीकारीए तो जड बने ? चारित्र-वीर्यादि गुण कहीए तो ज्ञानथी तेनुं जूदापणुं होवाथी ते जड टरे तेनुं समाधान शा प्रकारे घटे छे ? अभव्यत्व पारिणामिक भावे शा माटे घटे ? धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय-आकाश अने जीव द्रव्य दृष्टिए जोईए तो एक वस्तु खरी के नहीं ? द्रव्यपणुं शुं ? धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशनुं स्वरूप विशेष शी रीते प्रतिपादन थई शके छे ? लोक असंख्य प्रदेशी अने द्वीप समुद्र असंख्याता ते आदि विरोधनुं समाधान शा प्रकारे छे ?

८१. [पृ. १७३.]

आत्मामां पारिणामिकता ? मुक्तिमां पण सर्व पदार्थनुं प्रतिभासवुं ? अनादि अनंतनुं ज्ञान क्या प्रकारे थवा योग्य छे ?

वेदांत.

आत्मा एक, अनादि माया, बंधमोक्षनुं प्रतिपादन ए तमे कहो छो एम घटी शकतां नथी.

आनंद अने चैतन्यमां श्री कपिलदेवजीए विरोध कह्यो छे तेनुं शुं समाधान छे ? यथायोग्य समाधान वेदांतमां जोवामां आवतुं नथी.

आत्मा नानाविना बंध, मोक्ष होवायोग्य ज नथी. ते तो छे, एम छतां कल्पित कहेवाथी पण उपदेशादि कार्य करवा योग्य ठरतां नथी.

८२. [पृ. १७४.]

जैनमार्ग.

१ लोक संस्थान,
२ धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य.
३ अरूपीपणुं.
४ सुसम दुसमादिकाळ.

५ ते ते काळे भारतादिनी स्थिति–मनुष्य उंचत्वादिप्रमाण.
६ निगोद सूक्ष्म.
७ भव्य अभव्य नामे बे प्रकारे जीव.
८ विभाव दशा पारिणामिक भावे.
९ प्रदेश अने समय तेनुं व्यावहारिक पारमार्थिक कंई स्वरूप.
१० गुण समुदायथी जूदुं कंई द्रव्यत्व.
११ प्रदेश समुदायनुं वस्तुत्व.
१२ रुप, रस, गंध, स्पर्शथी जूदुं एवुं कंई पण परमाणुपणुं.
१३ प्रदेशनुं संकोचावुं, विकाशावुं.
१४ तेथी घनपणुं के पातळापणुं.
१५ अस्पर्शगति.
१६ एक समय अत्र अने सिद्धक्षेत्र होवापणुं.–अथवा ते ज समये लोकांतगमन.
१७ सिद्धसंबंधी अवगाह.
१८ अवधि, मनःपर्यव अने केवळनी व्यावहारिक पारमार्थिक कंई व्याख्या;—जीवनी अपेक्षा तथा दृश्य पदार्थनी अपेक्षाए.
"मतिश्रुतनी व्याख्या–ते प्रकारे." [पृ. १७५.]
१९ केवळज्ञाननी बीजी कंई व्याख्या.
२० क्षेत्रप्रमाणनी बीजी कंई व्याख्या.
२१ समस्त विश्वनो एक अद्वैत तत्त्वपर विचार.
२२ केवळज्ञानविना जीवस्वरूपनुं बीजा कोई ज्ञाने ग्रहण प्रत्यक्षपणे.
२३ विभावनुं उपादान कारण.
२४ तेम तथाप्रकारनो समाधानयोग्य कोई प्रकार.
२५ आ काळने विषे दश बोलनुं व्यवच्छेदपणुं–तेनो अन्य कंई पण परमार्थ.
२६ बीजभूत अने संपूर्ण एम केवळज्ञान बे प्रकारे.
२७ वीर्यादि आत्मगुण गण्या छे तेमां चेतनपणुं.
२८ ज्ञानथी जूदुं एवुं आत्मत्व.
२९ जीवनो स्पष्ट अनुभव थवाना ध्याननो मुख्य प्रकार–वर्त्तमानकाळने विषे.
३० तेमां पण सर्वोत्कृष्ट मुख्य प्रकार.
३१ अतिशयनुं स्वरूप.
३२ लब्धि (केटलीक) अद्वैततत्त्व मानतां सिद्ध थाय एवी मान्य छे.
३३ लोकदर्शननो सुगम मार्ग–वर्त्तमानकाळे; कंई पण. [पृ. १७९.]
३४ देहांतदर्शननो सुगम मार्ग–वर्त्तमानकाळे.
३५ सिद्धत्वपर्याय सादि अनंत, अने मोक्ष अनादि अनंत०
३६ परिणामी पदार्थ–निरंतर स्वाकार परिणामी होय तो पण अव्यवस्थित परिणामीपणुं. अनादिथी होय ते केवळज्ञानने विषे भास्यमान. पदार्थने विषे शी रीते घटमान.

८३. [पृ. १८०.]

१ कर्मव्यवस्था.
२ सर्वज्ञता.

३ पारिणामिकता.

४ नाना प्रकारना विचार अने समाधान.

५ अन्यथी न्यून पराभवता.

६ ज्यां ज्यां अन्य विकळ छे त्यां त्यां अविकळ आ   अविकळ देखाय त्यां अन्यनुं क्वचित् अविकळपणुं-नहीं तो नहीं.

८४. [पृ. १८१.]

मोहमयि क्षेत्रसंबंधी उपाधि परित्यागवाने आठ महिना अने दश दिवस बाकी छे; अने ते परित्याग थई शकवायोग्य छे. बीजे क्षेत्रे उपाधि (व्यापार) करवाना अभिप्रायथी मोहमयि क्षेत्रनी उपाधिनो त्याग करवानो विचार रहे छे, एम नथी. पण ज्यांसुधी सर्वसंगपरित्यागरूप योग निरावरण थाय नहीं त्यांसुधी जे गृहाश्रम वर्ते ते गृहाश्रममां काळ व्यतीत करवाविषेनो विचार कर्त्तव्य छे. क्षेत्रनो विचार कर्त्तव्य छे. जे व्यवहारमां वर्त्तवुं ते व्यवहारनो विचार कर्त्तव्य छे, केमके पूर्वापर अविरोधपणुं नहींतो रहेवुं कठण छे.

८५. [पृ. १८२.]

भू.—	ब्रह्म.
स्थापना.—	ध्यान.
मुखः—	योगबळ.
ब्रह्मग्रहण.	निर्ग्रंथादिसंप्रदाय.
ध्यान.	निरूपण.
योगबळ.	भू. स्थापना मुख सर्वदर्शन अविरोध.
स्वायु स्थिति.	
आत्मबळ.	

८६. [पृ. १८३.]

सो धम्मो जथ्थ दया दसद्द दोसा न जस्स सो देवो; सोहु गुरू जो नाणी आरंभपरिग्रहाविरओ.

८७. [पृ. १८७.]

अकिंचिनपणाथी विचरतां   एकांत मौनथी जिन सदृश ध्यानथी तन्मयात्मस्वरूप एवो क्यारे थईश?

८८.

एकवार   विक्षेप शम्याविना बहु समीप आवी शकवा योग्य अपूर्व संयम प्रगटशे नहीं. केम, क्यां, स्थिति करीए?

हाथनोंध २ जी.

१. [पृ. ३.]

राग, द्वेष अने अज्ञाननो आत्यंतिक अभाव करी जे सहज शुद्ध आत्मस्वरूपमां स्थित थया ते स्वरूप अमारुं स्मरण, ध्यान अने पामवा योग्य स्थान छे.

२. [पृ. ५.]

सर्वज्ञपदनुं ध्यान करो.

३. [पृ. ७.]

शुद्ध चैतन्य
अनंत आत्मद्रव्य
केवलज्ञान स्वरूप
शक्तिरूपे
ते
जेने संपूर्ण व्यक्त थयुं छे, तथा व्यक्त थवानो
जे पुरुषो मार्ग पाम्या छे ते पुरुषोने
अत्यंत भक्तिथी नमस्कार.

४. [पृ. ९.]

नमो जिणाणं जिदभवाण
जिनतत्त्वसंक्षेप.

अनंत अवकाश छे.
तेमां जड चेतनात्मक विश्व रह्युं छे.
विश्वमर्यादा बे अमूर्त द्रव्यथी छे.
जेने धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवी संज्ञा छे.
जीव, अने परमाणुपुद्गल ए बे द्रव्य सक्रिय छे.
सर्व द्रव्य द्रव्यत्वे शाश्वत छे
अनंत जीव छे.
अनंत अनंत परमाणुपुद्गल छे.
धर्मास्तिकाय एक छे.
अधर्मास्तिकाय एक छे.
काळ द्रव्य छे.
विश्वप्रमाण क्षेत्रावगाह करी शके एवो एकेक जीव छे.

५. [पृ. १३.]

नमो जिणाणं जिदभवाणं
जेनी प्रत्यक्ष दशा ज बोधरूप छे, ते महत्पुरुषने धन्य छे.

जे मतभेदे आ जीव ग्रहायो छे, ते ज मतभेद ज तेना स्वरूपने मुख्य आवरण छे.

वीतरागपुरुषना समागमविना, उपासनाविना, आ जीवने मुमुक्षुता केम उत्पन्न थाय? सम्यक्ज्ञान क्यांथी थाय? सम्यक्दर्शन क्यांथी थाय? सम्यक्चारित्र क्यांथी थाय? केमके ए त्रणे वस्तु अन्य स्थानके होती नथी.

वीतरागपुरुषना अभाव जेवो वर्त्तमान काळ वर्ते छे. हे मुमुक्षु!

वीतरागपद वारंवार विचार करवायोग्य छे, उपासना करवायोग्य छे. ध्यान करवायोग्य छे.

६. [पृ. १५.]

जीवने बंधनना मुख्य हेतु बेः
राग अने द्वेष.
रागने अभावे द्वेषनो अभाव थाय.
रागनुं मुख्यपणुं छे.
रागने लीधे ज संयोगमां आत्मा तन्मयवृत्तिमान् छे.
ते ज कर्म मुख्यपणे छे.

जेम जेम राग द्वेष मंद, तेम तेम कर्मबंध मंद, अने जेम जेम राग द्वेष तीव्र, तेम तेम कर्मबंध तीव्र. राग द्वेषनो अभाव त्यां कर्मबंधनो सांपरायिक अभाव.

राग द्वेष थवानुं मुख्य कारण—

मिथ्यात्व एटले

असम्यक्‌दर्शन छे.

सम्यक्‌ज्ञानथी सम्यक्‌दर्शन थाय छे.

तेथी असम्यक्‌दर्शन निवृत्ति पामे छे.

ते जीवने सम्यक्‌चारित्र प्रगटे छे.

जे वीतरागदशा छे.

संपूर्ण वीतरागदशा जेने वर्ते छे ते चरमशरीरि जाणीए छैये.

७. [पृ. १७.]

हे जीव ! स्थिर दृष्टिथी करीने तुं अंतरंगमां जो, तो सर्व परद्रव्यथी मुक्त एवुं तारूं स्वरूप तने परम प्रसिद्ध अनुभवाशे.

हे जीव ! असम्यक्‌दर्शनने लीधे ते स्वरूप तने भासतुं नथी. ते स्वरूपमां तने शंका छे; व्यामोह अने भय छे.

सम्यक्‌दर्शननो योग प्राप्त करवाथी ते अभासनादिनी निवृत्ति थशे.

हे सम्यक्‌दर्शनी ! सम्यक्‌चारित्र ज सम्यक्‌दर्शननुं फळ घटे छे, माटे तेमां अप्रमत्त था.

जे प्रमत्तभाव उत्पन्न करे छे ते कर्मबंधनी तने सुप्रतीतिनो हेतु छे.

हे सम्यक्‌चारित्री ! हवे शिथिलपणुं घटतुं नथी. घणो अंतराय हतो ते निवृत्त थयो; तो हवे निरंतराय पदमां शिथिलता शा माटे करे छे ?

८. [पृ. २१.]

दुःखनो अभाव करवाने सर्व जीव इच्छे छे.

दुःखनो आत्यंतिक अभाव केम थाय ? ते नहीं जणावाथी दुःख उत्पन्न थाय. ते मार्गने दुःखथी मूकावानो उपाय जीव समजे छे.

जन्म, जरा, मरण मुख्यपणे दुःख छे. तेनुं बीज कर्म छे. कर्मनुं बीज राग द्वेष छे, अथवा आ प्रमाणे पांच कारण छे.

मिथ्यात्व

अविरति

प्रमाद

कषाय

योग

पहेला कारणनो अभाव थये बीजानो अभाव, पछी त्रीजानो, पछी चोथानो, अने छेवटे पांचमा कारणनो एम अभाव थवानो क्रम छे.

मिथ्यात्व मुख्य मोह छे.

अविरति गौण मोह छे.

प्रमाद, अने कषाय अविरतिमां अंतर्भावी शके छे. योग सहचारीपणे उत्पन्न थाय छे. चारे व्यतीत थया पछी पण पूर्व हेतुथी योग होई शके.

९. [पृ. २५.]

हे मुनिओ ! ज्यांसुधी केवल समवस्थानरूप सहज स्थिति स्वभाविक न थाय त्यांसुधी तमे ध्यानअने स्वाध्यायमां लीन रहो.

जीव केवल स्वभाविक स्थितिमां स्थित थाय त्यां कंई करवुं रह्युं नथी.

ज्यां जीवनां परिणाम वर्धमान, हीयमान थया करे छे त्यां ध्यान कर्तव्य छे. अर्थात् ध्यानलीनपणे सर्व बाह्यद्रव्यना परिचयथी वीराम पामी निजस्वरूपना लक्षमां रहेवुं उचित छे.

उदयना धकाथी ते ध्यान ज्यारे ज्यारे छूटी जाम त्यारे त्यारे तेनुं अनुसंधान घणी त्वराथी करवु.

वच्चेना अवकाशमां स्वाध्यायमां लीनता करवी. सर्व परद्रव्यमां एक समय पण उपयोग संग न पामे एवी दशाने जीवा भजे त्यारे केवळज्ञान उत्पन्न थाय.

१०. [पृ. २७.]

एकांत आत्मवृत्ति.
एकांत आत्मा.
केवळ एक आत्मा.
केवळ एक आत्मा ज.
केवळ मात्र आत्मा.
केवळ मात्र आत्मा ज.
आत्मा ज.
शुद्धात्मा ज.
सहजात्मा ज.
निर्विकल्प, शब्दातीत सहज स्वरूप आत्मा ज.

११. [पृ. २९.]

७–१२–५४
३१–११–२२

आम काळ व्यतीत थवा देवो योग्य नथी. समये समय आत्मोपयोगे उपकारी करीने निवृत्त थवा देवा योग्य छे.

अहो! आ देहनी रचना; अहो! चेतन; अहो! तेनुं सामर्थ्य; अहो ज्ञानी; अहो तेनी गवेषणा! अहो तेमनुं ध्यान! अहो तेमनी समाधि! अहो तेमनो संयम! अहो, तेमनो अप्रमत्तभाव! अहो, तेमनी परम जागृति! अहो, तेमनो वीतराग स्वभाव! अहो, तेमनुं निरावरण ज्ञान! अहो, तेमना योगनी शांति! अहो तेमना वचनादि योगनो उदय!

हे आत्मा! आ बधुं तने सुप्रतीत थयुं छतां प्रमत्तभाव केम? मंद प्रयत्न केम? जघन्यमंद जागृति केम? शिथिलता केम? मुंझवण केम? अंतरायनो हेतु शो?

अप्रमत्त था, अप्रमत्त था.

परम जागृत स्वभाव भज, परम जागृत स्वभाव भज.

१२. [पृ. ३०]

तीव्र वैराग्य, परम आर्जव, बाह्याभ्यतर त्याग.
आहारनो जय.
आसननो जय.
निद्रानो जय.
योगनो जय.

आरंभपरिग्रहविरति ब्रह्मचर्य प्रत्ये प्रतिनिवास.
एकांतवास.
अष्टांगयोग.
सर्वज्ञध्यान.
आत्म इहा.

आत्मोपयोग.

मूळ आत्मोपयोग.

अप्रमत्त उपयोग.

केवल उपयोग.

केवल आत्मा.

अचिंत्य सिद्धस्वरूप.

१३. [पृ. ३१.]

जिनचैतन्यप्रतिमा.

सर्वांगसंयम.

एकांत स्थिरसंयम.

एकांत शुद्धसंयम.

केवळ बाह्यभाव निरपेक्षता.

आत्मतत्त्वविचार.
जगत्तत्त्वविचार.
जिनदर्शनतत्त्वविचार.
बीजदर्शनतत्त्वविचार. } समाधान.

धर्मसुगमता.
लोकानुग्रह. } पद्धति

यथास्थित शुद्ध सनातन
सर्वोत्कृष्ट जयवंत
धर्मनो उदय. } वृत्ति

१४. [पृ. ३२.]

स्वपर परमोपकारक परमार्थमय सत्यधर्म जयवंत वर्तो.

आश्चर्यकारक भेद पडी गया छे.

खंडित छे.

संपूर्ण करवानुं साधन दुर्गम्य देखाय छे.

ते प्रभावने विषे महत् अंतराय छे.

देशकाळादि घणां प्रतिकूळ छे.

वीतरागोनो मत लोकप्रतिकूळ थई पड्यो छे.

रूढीथी जे लोको तेने माने छे तेना लक्षमां पण ते प्रतीत जणातो नथी, अथवा अन्यमतने वीतरागोनो मत समजी प्रवर्ये जाय छे.

यथार्थ वीतरागोनो मत समजवानी तेमनामां योग्यतानी घणी खामी छे.

दृष्टिरागनुं प्रबळ राज्य वर्ते छे.

वेषादि व्यवहारमां मोटी विटंबना करी मोक्षमार्गनो अंतराय करी बेठा छे.

तुच्छ पामर पुरुषो विराधक वृत्तिना धणी अग्रभागे वर्ते छे.

किंचित् सत्य बहार आवतां पण तेमने प्राणघाततुल्य दुःख लागतुं होय एम देखाय छे.

१५. [पृ. ३४.]

त्यारे तमे शामाटे ते धर्मनो उद्धार इच्छो छो?

परम कारुण्य स्वभावथी.

ते सद्धर्म प्रत्येनी परम भक्तिथी.

१६. [पृ. ३५.]

एवंभूत दृष्टिथी ऋजुसूत्र स्थिति कर.
ऋजुसूत्र दृष्टिथी एवंभूत स्थिति कर.
नैगम दृष्टिथी एवंभूत प्राप्ति कर.
एवंभूत दृष्टिथी नैगम विशुद्ध कर.
संग्रह दृष्टिथी एवंभूत था.
एवंभूत दृष्टिथी संग्रह विशुद्ध कर.
व्यवहार दृष्टिथी एवंभूतप्रत्ये जा.
एवंभूत दृष्टिथी व्यवहारविनिवृत्ति कर.
शब्द दृष्टिथी एवभूत प्रत्ये जा.
एवंभूत दृष्टिथी शब्द निर्विकल्प कर.
समभिरुढ दृष्टिथी एवंभूत अवलोक.
एवंभूत दृष्टिथी समभिरुढ स्थिति कर.
एवंभूत दृष्टिथी एवंभूत था.
एवंभूत स्थितिथी एवंभूत दृष्टि शमाव.
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

१७. [पृ. ३७.]

हुं असंग शुद्धचेतन छुं. वचनातीत निर्विकल्प एकांत शुद्धअनुभवस्वरूप छु
हुं परम शुद्ध, अखंड चिद् धातु छुं.
अचिद् धातुना संयोग रसनो आ आभास तो जुओ ?
आश्चर्यवत्, आश्चर्यरूप, घटना छे.
कंई पण अन्य विकल्पनो अवकाश नथी.
स्थिति पण एम ज छे.

१८. [पृ. ३९.]

परानुग्रह परमकारुण्यवृत्ति करतां पण प्रथम चैतन्य जिनप्रतिमा था.
चैतन्य जिनप्रतिमा था.

तेवो काळ छे ?
ते विषे निर्विकल्प था.
तेवो क्षेत्र योग छे ?
गवेष.
तेवुं पराक्रम छे ?
अप्रमत्त शूरवीर था.
तेटलुं आयुषबळ छे ?
शुं लखवुं ? शुं कहेवुं ?
अंतर्मुख उपयोग करीने जो.
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः.

१९. [पृ. ४१.]

हे काम ! हे मान ! हे संगउदय !
हे वचनवर्गणा, हे मोह, हे मोहदया !

हे शिथिलता, तमे शा माटे अंतराय करो छो ?

परम अनुग्रह करीने हवे अनुकूळ थाव ! अनुकूळ थाव.

२०. [पृ. ४५.]

हे सर्वोत्कृष्ट सुखना हेतुभूत सम्यक्‌दर्शन ! तने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार हो.

आ अनादि अनंत संसारमां अनंत अनंत जीवो तारा आश्रयविना अनंत अनंत दुःखने अनुभवे छे.

तारा परमानुग्रहथी स्वस्वरूपमां रुचि थई. परम वीतराग स्वभावप्रत्ये परम निश्चय आव्यो. कृतकृत्य थवानो मार्ग ग्रहण थयो.

हे जिन वीतराग ! तमने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार करूं छुं. तमे आ पामरप्रत्ये अनंत अनंत उपकार कर्यो छे.

हे कुंदकुंदादि आचार्यो ! तमारां वचनो पण स्वरूपानुसंधानने विषे आ पामरने परमउपकारभूत थयां छे. ते माटे हुं तमने अतिशय भक्तिथी नमस्कार करूं छुं.

हे श्री सोभाग ! तारा सत्समागमना अनुग्रहथी आत्मदशानुं स्मरण थयुं ते अर्थे तने नमस्कार करूं छुं.

२१. [पृ. ४७.]

जेम भगवान् जिने निरूपण कर्युं छे तेम ज सर्व पदार्थनुं स्वरूप छे.

भगवान जिने उपदेशेलो आत्मानो समाधिमार्ग श्री गुरुना अनुग्रहथी जाणी, परमप्रयत्नथी उपासना करो.

२२. [पृ. ४९.]

बंध विहाणविमुक्कं, वंदिअ सिरि वद्धमाणजिणचंदं.

सिरि वीर जिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासओ वुच्छं,

कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भण्णए कम्मं.

कम्मदव्वेहिं सम्मं, संजोगो जो होइ जीवस्स,

सो बंधो नायव्वो, तस्स वियोगो भवे मोक्खो.

२३. [पृ. ५१.]

केवल समवस्थित शुद्ध चेतन मोक्ष.

ते स्वभावनुं अनुसंधान ते मोक्षमार्ग.

प्रतीतिरूपे ते मार्ग ज्यां शरू थाय छे त्यां सम्यक्‌दर्शन.

देश आचरणरूपे ते पंचम गुणस्थानक.

सर्व आचरणरूपे ते छट्ठुं गुणस्थानक.

अप्रमत्तपणे ते आचरणमां स्थिति ते सप्तम.

अपूर्व आत्मजागृति ते अष्टम.

सत्तागत स्थूल कषायबळपूर्वक स्वस्वरूप स्थिति ते नवम.

" सूक्ष्म " " दशम.

" उपशांत " " एकादश.

" क्षीण " " द्वादश.

हाथनोंध ३ जी.

१. [पृ. ३.]

ॐ नमः.

सर्वज्ञ. जिन. वीतराग.

सर्वज्ञ छे.

राग द्वेषनो आत्यंतिक क्षय थई शके छे.
ज्ञानने प्रतिबंधक राग द्वेष छे.
ज्ञान, जीवनो स्वत्वभूत धर्म छे.
जीव, एक अखंड संपूर्ण द्रव्य होवाथी तेनुं ज्ञानसामर्थ्य संपूर्ण छे.

२. [पृ. ७.]

सर्वज्ञपद वारंवार श्रवण करवायोग्य, वांचवायोग्य, विचार करवायोग्य, लक्ष करवायोग्य, अने स्वानुभवसिद्ध करवायोग्य छे.

३. [पृ. ९.]

सर्वज्ञ देव. सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु. निर्ग्रंथ गुरु.
उपशम मूळ धर्म. दया मूळ धर्म.

सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु.
सिद्धांत मूळ धर्म.

सर्वज्ञ देव.
निर्ग्रंथ गुरु.
जिनाज्ञा मूळ धर्म.

सर्वज्ञनुं स्वरूप.
निर्ग्रंथनुं स्वरूप.
धर्मनुं स्वरूप
सम्यक् क्रियावाद.

४. [पृ. ११.]

ॐ नमः.

प्रदेश
समय
परमाणु }

द्रव्य
गुण
पर्याय }

जड
चेतन }

५. [पृ. १३.]

ॐ नमः.

मूळ द्रव्य शाश्वत.
मूळ द्रव्यः-जीव अजीव.
पर्यायः—अशाश्वत.
अनादि नित्य पर्यायः-मेरु आदि.

६. [पृ. १५.]

ॐ नमः.

सर्व जीव सुखने इच्छे छे.
दुःख सर्वने अप्रिय छे.

दुःखथी मुक्त थवा सर्व जीव इच्छे छे.
वास्तविक तेनुं स्वरूप न समजावाथी ते दुःख मटतुं नथी.
ते दुःखना आत्यंतिक अभावनुं नाम मोक्ष कहीए छीए. [पृ. १६.]
अत्यंत वीतराग थयाविना आत्यंतिक मोक्ष होय नहीं
सम्यग्ज्ञानविना वीतराग थई शकाय नहीं.
सम्यग्दर्शनविना ज्ञान असम्यक् कहेवाय छे.
वस्तुनी जे स्वभावे स्थिति छे, ते स्वभावे ते वस्तुनी स्थिति समजावी तेने **सम्यग्ज्ञान** कहीए छीए.
सम्यग्ज्ञान दर्शनथी प्रतीत थयेला आत्मभावे वर्त्तवुं ते **चारित्र** छे
ए त्रणेनी एकताथी मोक्ष थाय.
जीव स्वाभाविक छे.
परमाणु स्वाभाविक छे.
जीव अनंत छे.
परमाणु अनंत छे.
जीव अने पुद्गळनो संयोग अनादि छे.
ज्यांसुधी जीवने पुद्गळ संबंध छे, त्यांसुधी सकर्म जीव कहेवाय.
भावकर्मनो कर्त्ता जीव छे.
भावकर्मनुं बीजुं नाम विभाव कहेवाय छे.
भावकर्मना हेतुथी जीव पुद्गळ ग्रहे छे.
तेथी तैजसादि शरीर अने औदारिकादि शरीरनो योग थाय छे.
भावकर्मथी विमुख थाय तो निजभावपरिणामी थाय. [पृ. १७.]
सम्यग्दर्शनविना वास्तविकपणे जीव भावकर्मथी विमुख न थई शके.
सम्यग्दर्शन थवानो मुख्य हेतु जिनवचनथी तत्त्वार्थप्रतीति थई ते छे.

७. [पृ. १९.]

हुं केवळ शुद्ध चैतन्यस्वरूप सहज निज अनुभवस्वरूप छुं
व्यवहारदृष्टिथी मात्र आ वचननो वक्ता छुं.
परमार्थथी तो मात्र ते वचनथी व्यंजित मूळ अर्थरूप छुं.
तमाराथी जगत् भिन्न छे, अभिन्न छे, भिन्नाभिन्न छे.
भिन्न, अभिन्न, भिन्नाभिन्न, एवो अवकाश स्वरूपमां नथी
व्यवहारदृष्टिथी तेनुं निरूपण करीए छीए.

—जगत् मारा विषे भासमान होवाथी अभिन्न छे. पण जगत् जगत्स्वरूपे छे, हुं स्वस्वरूपे छुं, तेथी जगत् माराथी केवळ भिन्न छे. ते बे दृष्टिथी जगत् माराथी भिन्नाभिन्न छे.

ॐ शुद्ध निर्विकल्प चैतन्य.

८. [पृ. २३.]

ॐ नमः

केवळज्ञान.
एक ज्ञान.
सर्व अन्य भावना संसर्गरहित एकांत शुद्ध ज्ञान.
सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काळ भावनुं सर्व प्रकारथी एक समये ज्ञान.
ते केवळज्ञाननुं अमे ध्यान करीए छीए.
निजस्वभावरूप छे.

स्वत्वभूत छे.
निरावरण छे.
अभेद छे.
निर्विकल्प छे.
सर्व भावनुं उत्कृष्ट प्रकाशक छे.

९. [पृ. २४.]

हुं केवळ ज्ञानस्वरूप छुं,
एम सम्यक् प्रतीत थाय छे.
तेम थवाना हेतुओ सुप्रतीत छे.
सर्व इंद्रियोनो संयम करी, सर्व पर द्रव्यथी निजस्वरूप व्यावृत्त करी, योगने अचळ करी, उपयोगथी उपयोगनी एकता करवाथी केवळज्ञान थाय.

१०. [पृ. २७.]

आकाशवाणी.

तप करो; तप करो; शुद्ध चैतन्यनुं ध्यान करो; शुद्ध चैतन्यनुं ध्यान करो.

११. [पृ. २९.]

हुं एक [illegible] असंग छुं; सर्व परभावथी मुक्त छुं.
असंख्यात प्रदेशात्मक निज अवगाहना प्रमाण छुं. अजन्म, अजर, अमर, शाश्वत छुं. स्वपर्यायपरिणामी समयात्मक छुं.
शुद्ध चैतन्यस्वरूप मात्र निर्विकल्प द्रष्टा छुं.

१२. [पृ. ३१.]

शुद्ध चैतन्य.
शुद्ध चैतन्य. शुद्ध चैतन्य.
सद्भावनी प्रतीति-सम्यग्दर्शन
शुद्धात्मपद.

ज्ञाननी सीमा कई?
निरावरण ज्ञाननी स्थिति शुं?
अद्वैत एकांते घटे छे?
ध्यान अने अध्ययन.
उ० अप०

१३. [पृ. ३५.]

ॐ.

"ठाणांगसूत्र"मां नीचे दर्शावेलुं सूत्र शुं उपकार थवा नाख्युं छे ते विचारो.

एगे समणे भगवं महावीरे इमीसेणं ऊसप्पिणीए चउवीसं तित्थयराणं चरिमे तित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे सव्वदुःखप्पहीणे ।

१४. [पृ. ३७.]

आभ्यंतर भान अवधूत.

विदेहिवत्.

जिनकल्पीवत्

सर्व परभाव अने विभावथी व्यावृत्त.

निज स्वभावना भानसहित, अवधूतवत् विदेहिवत् जिन कल्पीवत् विचरता पुरुष भगवानना स्वरूपनुं ध्यान करिये छैये.

१५. [पृ. ३९.]

प्रवृत्तिनां कार्योप्रत्ये विरति.

संग अने स्नेहपाशनुं त्रोडवुं (अतिशय वसमुं छतां पण करवुं, केमके बीजो कोई उपाय नथी.)

आशंकाः—जे स्नेह राखे छे, तेना प्रत्ये आवी क्रूर दृष्टिथी वर्त्तवुं ते कृतघ्नता अथवा निर्दयता नथी?

समाधान—

१६. [पृ. ४०.]

स्वरूपबोध.

योगनिरोध.

सर्वधर्म स्वाधीनता.

धर्ममूर्त्तिता.

सर्वप्रदेश संपूर्ण गुणात्मकता.

सर्वांगसंयम.

लोकप्रत्ये निष्कारण अनुग्रह.

१७. [पृ. ४३.]

ॐ नमः

सर्वज्ञ–वीतराग देव.

(सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावनो–सर्व प्रकारे जाणनार, रागद्वेषादि सर्व विभाव जेणे क्षीण कर्या छे ते **ईश्वर.**)

ते पद मनुष्यदेहने विषे संप्राप्त थवायोग्य छे. संपूर्ण वीतराग थाय, ते संपूर्ण सर्वज्ञ थाय.

संपूर्ण वीतराग थई शकाय एवा हेतुओ सुप्रतीत थाय छे.

१८. [पृ. ४५.]

प्रत्यक्ष निज अनुभवस्वरूप छुं, तेमां संशय शो?

ते अनुभवमां जे विशेष विषे न्यूनाधिकपणुं थाय छे, ते जो मटे तो केवळ अखंडाकार स्वानुभव स्थिति वर्त्ते.

अप्रमत्त उपयोगे तेम थई शके.

अप्रमत्त उपयोग थवाना हेतुओ सुप्रतीत छे. तेम वर्त्ते जवाय छे ते प्रत्यक्ष सुप्रतीत छे.

अविच्छिन्न तेवी धारा वर्त्ते तो अद्भुत अनंत ज्ञानस्वरूप अनुभव सुस्पष्ट समवस्थित वर्त्ते—

१९. [पृ. ४७.]

सर्व चारित्र वशीभूत करवाने माटे, सर्व प्रमाद टाळवाने माटे, आत्मामां अखंड वृत्ति रहेवाने माटे, मोक्षसंबंधी सर्व प्रकारना साधनना जयने अर्थे "**ब्रह्मचर्य**" अद्भुत अनुपम सहायकारी छे, अथवा मूळभूत छे.

२०. [पृ. ४९.]

ॐ नमः.

संयम.

२१. [पृ. ५०.]

जागृत सत्ता.

ज्ञायक सत्ता.

आत्मस्वरूप.

२२. [पृ. ५१.]

सर्वज्ञोपदिष्ट आत्मा सद्गुरुकृपाए जाणीने निरंतर तेना ध्यानना अर्थे विचरवुं, संयम तपपूर्वकः—

२३. [पृ. ५२.]

अहो ! सर्वोत्कृष्ट शांत रसमय सन्मार्गः—
अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांत रसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञदेवः—
अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांत रस सुप्रतीत कराव्यो एवा परमकृपाळु सद्गुरुदेव—
आ विश्वमां सर्वकाळ तमे जयवंत वर्तो, जयवंत वर्तो.

२४. [पृ. ५४.]

ॐ नमः.

विश्व अनादि छे.
आकाश सर्वव्यापक छे.
तेमां लोक रह्यो छे.
जड चेतनात्मक संपूर्ण भरपूर लोक छे.
धर्म, अधर्म, आकाश, काळ अने पुद्गळ ए जड द्रव्य छे.
जीव द्रव्य चेतन छे.
धर्म, अधर्म, आकाश, काळ ए चार अमूर्त द्रव्य छे.
वस्तुताए काळ उपचारिक द्रव्य छे.
धर्म, अधर्म, आकाश एकेक द्रव्य छे.
काळ, पुद्गळ अने जीव अनंत द्रव्य छे.
द्रव्य गुणपर्यायात्मक छे. [पृ. ५५.]

२५. [पृ. ५७.]

परम गुणमय चरित्र जोईए. बळवान असंगादि भाव.

परम निर्दोष श्रुत.
परम प्रतीति.
परम पराक्रम.
परम इंद्रियजय.
१ मूळनुं विशेषपणुं.
२ मार्गनी शरुआतथी अंतपर्यंतनी अद्भुत संकळना.
३ निर्विवाद—
४ मुनिधर्मप्रकाश.
५ गृहस्थधर्मप्रकाश.
६ निर्ग्रंथ परिभाषा निधि—
७ श्रुत समुद्र प्रवेश मार्ग.

२६. [पृ. ५८.]

स्वपर उपकारनुं महत्कार्य हवे करी ले ! त्वराथी करी ले !

अप्रमत्त था—अप्रमत्त था.

शुं काळनो क्षणवारनो पण भरूसो आर्य पुरुषोए कर्यो छे ?

हे प्रमाद ! ! हवे तुं जा, जा.

हे ब्रह्मचर्य ! हवे तुं प्रसन्न था, प्रसन्न था.

हे व्यवहारोदय ! हवे प्रबळथी उदय आवीने पण तुं शांत था, शांत.

हे दीर्घसूत्रता ! सुविचारनुं, धीरजनुं, गंभीरपणानुं परिणाम तुं शा माटे थवा इच्छे छे ?

हे बोधबीज ! तुं अत्यंत हस्तामलकवत् वर्त, वर्त.

हे ज्ञान ! तुं दुर्गम्यने पण हवे सुगम स्वभावमां लावी मूक.

हे चारित्र ! परम अनुग्रह कर, परम अनुग्रह कर. [पृ. ५९.]

हे योग ! तमे स्थिर थाओ; स्थिर थाओ !

हे ध्यान ! तुं निजस्वभावाकार था, निजस्वभावाकार था.

हे व्यग्रता ! तुं जती रहे, जती रहे.

हे अल्प के मध्य अल्प कषाय ! हवे तमे उपशम थाओ. क्षीण थाओ. अमारे कांई तमारा प्रत्ये रुचि रही नथी.

हे सर्वज्ञपद ! यथार्थ सुप्रतीतपणे तुं हृदयावेश कर, हृदयावेश कर.

हे असंग निर्ग्रंथपद ! तुं स्वाभाविक व्यवहाररूप था !

हे परम करुणामय सर्व परमहितना मूळ वीतराग धर्म ! प्रसन्न था, प्रसन्न.

हे आत्मा ! तुं निजस्वभावाकार वृत्तिमां ज अभिमुख था ! अभिमुख था.

हे वचनसमिति ! हे काय अचपळता ! [पृ. ६१.]

हे एकांत वास ! अने असंगता ! तमे पण प्रसन्न थाओ ! प्रसन्न थाओ !

खळभळी रहेली एवी जे आभ्यंतर वर्गणा ते कां तो अभ्यंतर वेदी लेवी. कां तो तेने स्वच्छ पुट दई उपशम करी देवी.

जेम निस्पृहता बळवान तेम ध्यान बळवान थई शके—कार्य बळवान थई शके.

२७. [पृ ६३.]

इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुणसंसुद्धं णेयाउयं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं विज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं सव्वदुक्खपहीणमग्गं । एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्व दुक्खाणमंतं करंति तहा तमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो । णिसियामो तहा सुयट्ठामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठामो तहा उट्ठाए उट्ठेमोत्ति पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामोत्ति.

२८.

द्वि० आ० शु० १. १९५४.

ॐ नमः.

सर्व विकल्पनो, तर्कनो त्याग करीने

मननो वचननो कायानो इंद्रियनो आहारनो निद्रानो	जय करीने

निर्विकल्पपणे अंतर्मुखवृत्ति करी आत्मध्यान करवुं. मात्र अनाबाध अनुभव स्वरूपमां लीनता थवा देवी, बीजी चिंतवना न करवी. जे जे तर्कादि उठे, ते नहीं लंबावतां उपशमावी देवा.

समाप्त श्रीमद् राजचंद्र ग्रंथ. ॐ.

प्रथम आवृत्तिमांनो आंक बीजी आवृत्तिमां कियो छे तेनो क्रम.

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.	प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.	प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.	प्रथम आवृत्ति आंक	बीजी आवृत्ति आंक.
१	१	४२	२३	८२	१२७	१२२	१८७
२	२	४३	२८	८३	१२६	१२३	१७७
३	३	४४	३१	८४	१२८	१२४	१८९
४	३७	४५	३२	८५	१२९	१२५	१९२
* ५	१३९	४६	३३	८६	१३०	१२६	१९६
६	१४०	४७	३४	८७	१३२ (२)	१२७	१८० (१)
७	७	४८	३५	८८	१३६ (१)	१२८	१९४
८	५७	४९	३९	८९	१३७	१२९	२८५
९	५८	५०	३६	९०	१८३	१३०	१९५
१०	१४१	५१	१०२	९१	७४	१३१	१८१
११	८०	५२	२६	९२	१४४	१३२	२१५
१२	८६	५३	४९	९३	१४५	१३३	१६८
१३	८८	५४	५३	९४	१४७ (१)	१३४	१७३ (१)
१४	९०	५५	९३	९५	१४६	१३५	२०६
१५	९१	५६	५४	९६	१४९	१३६	२२३
१६	५	५७	५५	९७	{ १९३	१३७	५६१
१७	०	५८	५२		१५५	१३८	२४२
१८	४	५९	५६	९८	१५६	१३९	१९७
१९	५०	६०	{ ६४	९९	१५७	१४०	१९८
२०	१४२		१४३	१००	१५८	१४१	१९९
२१	८२	६१	८७	१०१	१५९	१४२	२००
२२	६	६२	३६	१०२	१६०	१४३	२०१
२३	२७	६३	७२	१०३	१६१	१४४	२०३
२४	२०	६४	८५	१०४	१६३	१४५	२०४
२५	६८	६५	१०१	१०५	१६७	१४६	२०५
२६	९	६६	१०३	१०६	१६४	१४७	२०७
२७	१४८ (१)	६७	१०५	१०७	१६५	१४८	२०८
२८	६९	६८	११७	१०८	१६९	१४९	२०९
२९	७०	६९	४५	१०९	१७०	१५०	२१०
३०	६५	७०	१११	११०	१७१	१५१	२११
३१	७५	७१	११२	१११	१७२	१५२	२१३
३२	७६	७२	११४	११२	१७४	१५३	२१६ (१)
३३	७९	७३	११८	११३	१८८	१५४	२१७
३४	७७	७४	११९	११४	१७८	१५५	२१८
३५	७८	७५	१२१	११५	१७९	१५६	२२०
३६	८	७६	१२०	११६	१७६	१५७	२२१
३७	५१	७७	१२२	११७	१७९	१५८	२२९
३८	७	७८	११५	११८	१८२	१५९	२२४
३९	८६	७९	१२३	११९	१८४	१६०	२२५
४०	४८	८०	१२४	१२०	१८५	१६१	२१९ (१)
४१	२२	८१	१२५	१२१	१८६	१६२	२२६ (१-२)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१६३	२३०
१६४	२३१
१६५	२३२
१६६	२३३
१६७	२३५
१६८	२३६
१६९	२३७
१७०	२३८
१७१	२३९
१७२	२४३
१७३	२४४
१७४	२४१ (१)
१७५	२४५
१७६	२४७
१७७	२१९ (२)
१७८	२४०
१७९	२५३
१८०	२५६
१८१	३०४
१८२	३३०
१८३	२५८
१८४	२५९
१८५	२६०
१८६	२६३
१८७	२६४ (१)
१८८	२६१
१८९	२६६
१९०	२६७
१९१	२६८
१९२	२६९
१९३	२७० (१)
१९४	२७१
१९५	२७२
१९६	२७३
१९७	२७० (३)
१९८	२७६
१९९	२७४
२००	२८० (१)
२०१	२८४
२०२	२८८
२०३	२८९ (१)
२०४	२८९ (२)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
२०५	२८९ (१)
२०६	२९०
२०७	{
२०८	२९१
२०९	}
२१०	२९४
२११	२९३ (१)
२१२	२६७
२१३	२९३ (२)
२१४	२९३ (३)
२१५	२९५
२१६	२९६
२१७	२९७
२१८	२९८ (१)
२१९	२९८ (२)
२२०	२९९
२२१	२८६
२२२	३०१
२२३	३०२
२२४	३०३ (१)
२२५	३०८
२२६	{ २६५ ७१३ (३)
२२७	३०९
२२८	३१२
२२९	३१४
२३०	३१६
२३१	{ ३७८ (२) ३१७ ३१९
२३२	३१८ (१)
२३३	३२०
२३४	३२३
२३५	३२४
२३६	३२८
२३७	३३२
२३८	१५१
२३९	३१८ (२)
२४०	३२९
२४१	३३४
२४२	३३६
२४३	३३७ (१)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
२४४	३३९
२४५	३०६
२४६	३१५
२४७	२७९
२४८	{ ३०५ २७८
२४९	३२५
२५०	२५५
२५१	३२१
२५२	३२२
२५३	३४२ (१)
२५४	२७० (२)
२५५	३७९
२५६	३१३
२५७	३४९
२५८	३५०
२५९	२६४ (१)
२६०	३५३
२६१	३५५
२६२	३५६
२६३	३५७ (१)
२६४	३५८ (३)
२६५	३५९
२६६	३६० (१)
२६७	३६८
२६८	३६१
२६९	३६२
२७०	४९८
२७१	३६३
२७२	३६७
२७३	३६५
२७४	३६० (२)
२७५	३६९
२७६	३७०
२७७	३७१
२७८	३७३
२७९	३७५
२८०	३७६
२८१	३७७
२८२	३७८ (१)
२८३	३८०
२८४	३८३

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
२८५	५४१
२८६	३८२
२८७	३८४
२८८	३८७ (२)
२८९	३४० } (१) (२)
२९०	४०० (१)
२९१	३४० (१)
२९२	४०४
२९३	३२६
२९४	४०५
२९५	३४८ (१)
२९६	३४१
२९७	३८५
२९८	३८६
२९९	३९३
३००	३९४
३०१	३९५
३०२	३९६
३०३	३९७
३०४	३९८ (१)
३०४	३९९
३०५	४०२
३०६	४०१
३०७	४०९
३०८	४११
३०९	४१२
३१०	४१३
३११	४१४
३१२	४२० (१)
३१३	४२१
३१४	४२२ (१)
३१५	४२३
३१६	४२४
३१७	४२५
३१८	४२६
३१९	४२७
३२०	४३०
३२१	४३१ (१)
३२२	४०८ (१)
३२३	४१६
३२४	४३२
३२५	३१० (१)

પ્રથમ આવૃત્તિ આંક.	બીજી આવૃત્તિ આંક.
૩૨૬	૩૧૦ (૨)
૩૨૭	૩૧૦ (૩)
૩૨૮	૪૬૮
૩૨૯	૪૩૩
૩૩૦	૪૩૫ (૧)
* ૩૩૧	૪૪૩
૩૩૨	૪૪૪
૩૩૩	૪૪૫
૩૩૪	૩૦૦
૩૩૫	૫૩૭
૩૩૬	૪૪૭
૩૩૭	૪૪૯
૩૩૮	૪૫૨
૩૩૯	૪૫૩
૩૪૦	૪૫૫ (૧)
૩૪૧	{ ૩૫૮ (૨) { ૪૬૪
૩૪૨	૪૭૧
૩૪૩	૪૬૫
૩૪૪	૪૭૫
૩૪૫	૪૭૬
૩૪૬	૪૭૮
૩૪૭	૪૮૦
૩૪૮	૫૦૩
૩૪૯	૪૮૨
૩૫૦	૪૮૪
૩૫૧	૪૭૯
૩૫૨	૪૮૫
૩૫૩	૪૮૮
૩૫૪	૪૯૦
૩૫૫	૪૯૧
૩૫૬	૫૦૬
૩૫૭	૫૦૫
૩૫૮	૪૮૩
૩૫૯	{ ૪૦૬ { ૫૦૭
૩૬૦	૫૧૦
૩૬૧	૫૧૧
૩૬૨	૫૧૬
૩૬૩	૮૧૮
૩૬૪	૫૧૭
૩૬૫	૬૧૯

પ્રથમ આવૃત્તિ આંક.	બીજી આવૃત્તિ આંક.
૩૬૬	૫૧૫
૩૬૭	૫૨૦
૩૬૮	૫૨૧
૩૬૯	૫૨૩
૩૭૦	૫૨૫
૩૭૧	૫૨૬
૩૭૨	૫૨૯
૩૭૩	૫૩૧ (૧)
૩૭૪	૫૩૨
૩૭૫	૫૩૪
૩૭૬	૫૩૯
૩૭૭	૫૪૦
૩૭૮	૫૪૯
૩૭૯	૫૪૮
૩૮૦	૫૫૦
૩૮૧	૫૫૧
૩૮૨	૫૫૨
૩૮૩	૫૫૩
૩૮૪	૪૮૧
૩૮૫	૪૧૮
૩૮૬	૪૬૧
૩૮૭	૨૭૭
૩૮૮	૫૮૧
૩૮૯	૩૮૯
૩૯૦	૫૬૨
૩૯૧	૫૬૩
૩૯૨	૫૬૩ (૩)
૩૯૩	૫૬૪
૩૯૪	૫૬૫
૩૯૫	૫૬૬
૩૯૬	૫૬૭
૩૯૭	૫૬૮
૩૯૮	૫૬૯
૩૯૯	૫૭૫
૪૦૦	૫૭૬
૪૦૧	૫૭૭
૪૦૨	૫૭૮
૪૦૩	૫૭૯
૪૦૪	૫૮૦
૪૦૫	૫૮૬
૪૦૬	૫૮૭
૪૦૭	૫૮૮

પ્રથમ આવૃત્તિ આંક.	બીજી આવૃત્તિ આંક.
૪૦૮	૫૮૯
૪૦૯	૫૯૦
૪૧૦	૫૯૧
૪૧૧	૪૯૬
૪૧૨	૫૯૨
૪૧૩	૫૯૩
૪૧૪	૫૯૪
૪૧૫	૫૯૬
૪૧૬	૫૯૭
૪૧૭	૫૯૮
૪૧૮	૬૨૦
૪૧૯	૬૨૧
૪૨૦	૬૨૨
૪૨૧	૬૨૪
૪૨૨	૫૨૮
૪૨૩	૬૩૧
૪૨૪	૬૩૨
૪૨૫	૬૩૪
૪૨૬	૬૩૩
૪૨૭	૬૩૩
૪૨૮	૬૪૫
૪૨૯	૬૪૬
૪૩૦	૬૪૭
૪૩૧	૬૬૦
૪૩૨	૨૨૭
૪૩૩	૬૬૦
૪૩૪	૬૬૦
૪૩૫	૬૬૦
૪૩૬	૬૬૦
૪૩૭	૬૬૦
૪૩૮	૬૬૦
૪૩૯	૬૬૦
૪૪૦	૬૬૦
૪૪૧	૬૬૩ (૨)
૪૪૨	૬૬૩ (૩)
૪૪૩	૫૧૮
૪૪૪	૬૬૪
૪૪૫	૩૪૮
૪૪૬	૧૯
૪૪૭	૬૨૯
૪૪૮	૧૩૮
૪૪૯	૬૨૯

પ્રથમ આવૃત્તિ આંક.	બીજી આવૃત્તિ આંક.
૪૫૦	૭૬૬
૪૫૧	૫૫૬
૪૫૨	૬૪૧
૪૫૩	૪૯૩
૪૫૪	૫૬૦
૪૫૫	૪૮૬
૪૫૬	૪૬૨
૪૫૭	૪૯૯
૪૫૮	૫૧૯ (૧)
૪૫૯	૬૯૩
૪૬૦	૧૩૮
૪૬૧	૬૬૬
૪૬૨	૬૬૭
૪૬૩	૬૬૯
૪૬૪	૬૭૦
૪૬૫	૬૭૧
૪૬૬	૬૭૨
૪૬૭	૬૭૩
૪૬૮	૬૭૪
૪૬૯	૬૭૫
૪૭૦	૬૭૬
૪૭૧	૬૭૮
૪૭૨	૬૭૯
૪૭૩	૬૮૦
૪૭૪	૬૮૧
૪૭૫	૬૮૨
૪૭૬	૬૮૩
૪૭૭	૬૮૪
૪૭૮	૬૮૫
૪૭૯	૬૮૬
૪૮૦	૬૮૮
૪૮૧	૬૮૯
૪૮૨	૬૯૦
૪૮૩	૭૦૩
૪૮૪	૭૦૪
૪૮૫	૭૦૪
૪૮૬	૭૦૭
૪૮૭	૭૦૮
૪૮૮	૭૦૯
૪૮૯	૭૧૧
૪૯૦	૭૧૨
૪૯૧	૭૧૪
૪૯૨	૭૧૫

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
४९३	७१६
४९४	७१७
४९५	७१९
४९६	७२०
४९७	७२१
४९८	७२२
४९९	७२३
५००	७२४
५०१	७२८
५०२	७३०
५०३	७३३
५०४	७३४ (३)
५०५	७३४ (१)
५०६	७३७
५०७	७३८
५०८	८३३ (१)
५०९	४०७
५१०	७४१
५११	७४३
५१२	७४४
५१३	७४८
५१४	७५१
५१५	७५४
५१६	७६०
५१७	७६०
५१८	७६०
५१९	७६२
५२०	७६४
५२१	७१३ (१)
५२२	७६७
५२३	७१३ (२)
५२४	६९२ (१)
५२५	६९२ (२)
५२६	७८१
५२७	७८७
५२८	७९६
५२९	७९७
५३०	७९८

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
५३१	७००
५३२	६९४ (२)
५३३	७९९
५३४	८११
५३५	८२१ (१)
५३६	८२१ (२)
५३७	८२२
५३८	८२४
५३९	८२५
५४०	८२७ (१)
५४१	८२८ (१)
५४२	६९४ (८)
५४३	४९२
५४४	४५६
५४५	७१३ (४)
५४६	८२९
५४७	८३९
५४८	७४९
५४९	८४० (१)
५५०	८४५
५५१	८४६
५५२	८४९
५५३	८५३ (१)
५५४	८५० (१)
५५५	८५३ (२)
५५६	८५५ (१)
५५७	८५६ (१)
५५८	८६२
५५९	८१७
५६०	८२९
५६१	६९६ (६)
५६२	६९४ (३)
५६३	७५९
५६४	६९४ (४)
५६५	५०९
५६६	६९४ (१०)
५६७	६९४ (११)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
५६८	६९४ (९)
५६९	८५४
५७०	६४२
५७१	३११
५७२	६२८
५७३	६६८
५७४	६९४ (७)
५७५	६९४ (१२)
५७६	८७१
५७७	८७४
उपदेश छाया. पृ. ४०७-१ थी ४०७-५६ सुधी	६४३ पृ. ४९६ थी ५५० सुधी
व्याख्यानसार. पृ. ४६१ थी ४९० सुधी.	७५३ पृ. ६६३ थी ६९४ सुधी
उपदेशसार. पृ. ५०९ थी ५३६ सुधी.	८६४ पृ. ७४२ थी ७६९ सुधी

वृद्धि पत्र (१)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१	४६१
२	६९४ (१)

वृद्धि पत्र (२)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१	४९३
२	४७४
३	१७३ (२)
४	३३८ (२)
५	४६६
६	८६९
७	५४५

(पृ. १८६-१ थी १८६-१६)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१	२९
२	३८
३	४०

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
४	४१
५	४२
६	४४
७	६२
८	१०७
९	११३
१०	१५३
११	२१२

रोजनिशी.

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१३	६६
१४	६७
१५	७१
१६	७३
१७	८९
१८	९२
१९	९४
२०	९५
२१	९६
२२	९७
२३	९८
२४	९९
२५	१००
२६	१०४
२७	१०६
२८	१०६ (२)
२९	१३२ (१)
३०	१३५ (१)

(पृ. ३२२-१ थी ३२२-४)

प्रथम आवृत्ति आंक.	बीजी आवृत्ति आंक.
१	४६७
२	४९४
३	५२२
४	५२४

हाथ नोंधो.

यथाक्रम अंदर आवी गई छे, तेमज सळंग छेवटे आपी छे. पृ. ७७५ थी ८०८ सुधी.

[illegible]